बराहीन अहमदिया

ख़ुदाई किताब क़ुर्आन और मुहम्मदी नुबुव्वत की
सच्चाई पर आधारित अहमदिया तर्क

भाग पंचम

लेखक
हज़रत मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
मसीह मौऊद व महदी माहूद अलैहिस्सलाम

BARAHIN-E-AHMADIYYA

Hadrat Mirza Ghulam Ahmad[as] of Qadian Claimed to be the same Promised Messiah and Mahdi that the Holy Prophet Muhammad[sa] prophesied would come to rejuvenate Islam and restore its original Iustre.

During his early Life, Mirza Ghulam Ahmad[as] saw a dream in which he handed a book of his own authorship to the Holy Prophet[as]. As soon as the book touched the Holy Prophet's blessed hand, it transformed into a beautiful, honey-filled fruit which was then used to revive a dead person lying nearby.

The Promised Messiah[as] was inspired with the following interpretation:

> Allah the Almighty then put it in my mind that the dead person in my dream was Islam and that Allah the Almighty would revive it at my hands through the spiritual power of the Holy Prophet,may peace and blessings of Allah be upon him.

It is this very book - *Barahin-e-Ahmadiyya* - which is to be instrumental in revitalizing Islam in the Latter days in accordance with the grand prophecy of the Holy Prophet[sa]. Its subject matter is of universal importance and, as such, it will prove to be a source of Lasting value for all readers. The significance of Barahin-e-Ahmadiyya cannot be overstated.

جاء الحق و زھق الباطل ان الباطل کان زھوقًا

آنا نکہ بر دعا وئ ما حملہ ہا کنند — وزراہِ جہل عربدہ ہا برملا کنند

گر یک نظر کنند درین نسخۂ کتاب — ہست ایں یقین کہ ترکِ عناد و ابا کنند

باور نمی کنم کہ نیا یند عذر خواہ — ویں امرِ دیگر است کہ ترکِ حیا کنند

बराहीन अहमदिया

भाग पंचम

بالبراھین الاحمدیّہ علیٰ حقیقۃ کتاب اللہ القراٰن والنبوّۃ المحمدیۃ

लेखक

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी

मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्स्लाम

नाम किताब	: बराहीन अहमदिया (भाग-पंचम)
Name of Book	: BARAHIN-E-AHMADIYYA (Part - V)
लेखक	: मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी
	मसीह मौऊद व महदी मा'हूद अलैहिस्सलाम
Author	: MIRZA GHULAM AHMAD QADIANI
	The Promised Messiah and Mahdi[as]
अनुवादक	: डॉ. अन्सार अहमद, एम.ए.एम.फिल. पी.एच.डी, पी.जी. डी.टी, मौलवी फ़ाज़िल
Translated by	: DR. ANSAR AHMAD, M.A. M.Phil., PhD, PGDT, Hon. in Arabic
संख्या	: 1000
Quantity	: 1000
कम्पोज़र	: तस्नीम अहमद बट्ट
Composed by	: TASNEEM AHMAD BHAT
संस्करण	: प्रथम (हिन्दी) मार्च 2019
Edition	: First (Hindi) March 2019
प्रकाशक	: नज़ारत नश्र-व-इशाअत, क़ादियान
Publisher	: Nazārat Nashr-o-Isha'at, Qadian
प्रेस	: फ़ज़्ले उमर प्रिंटिंग प्रेस क़ादियान
Printed at	: Fazl-e-Umar Printing Press, Qadian,
	Distt. Gurdaspur, Punjab, India

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

परिचय

(सय्यिद अब्दुल हयी साहिब फ़ाज़िल, एम.ए.)

अल्लाह तआला का हज़ार हज़ार धन्यवाद है कि हमें "रूहानी ख़ज़ायन" की इक्कीसवीं जिल्द पाठकों की सेवा में प्रस्तुत करने की सामर्थ्य मिली। यह जिल्द (भाग) हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलातु वस्सलाम की अध्यात्म ज्ञानों से भरपूर पुस्तक बराहीन अहमदिया भाग पंचम पर आधारित है।

बराहीन अहमदिया - भाग-पंचम

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अपने दावे से पूर्व इस्लाम की सच्चाई पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा की ओर से होने और नुबुव्वत-ए-मुहम्मदिया की सच्चाई के सिद्ध करने में पचास भागों पर आधारित एक पुस्तक लिखने का इरादा किया था। अत: इसके चार भाग 1880, 1882, 1884 में प्रकाशित हुए और हिन्दुस्तान के मुसलमानों के सामान्य तथा विशिष्ट ने इस्लाम की प्रतिरक्षा में इसे एक अद्वितीय पुस्तक ठहराया। अत: मौलवी मुहम्मद हुसैन बटालवी ने यहां तक लिखा :-

"हमारी राय में यह पुस्तक इस युग में और वर्तमान हालत की दृष्टि से ऐसी पुस्तक है जिसका उदाहरण आज तक इस्लाम में प्रकाशित नहीं हुआ।"

(इशाअतुस्सुन्न: जिल्द-7, पृष्ठ-169)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने घोषणा की कि यदि इस्लाम के शत्रु बराहीन

अहमदिया में वर्णित इस्लाम की सच्चाई के तर्कों के 1/3 या 1/4 या 1/5 का भी उत्तर देदें तो उन्हें दस हज़ार रुपए इनाम दिया जाएगा। परन्तु किसी को मुकाबले पर आने की हिम्मत न हुई और यदि कोई मुकाबले पर आया भी तो वह हुज़ूर की भविष्यवाणियों के अनुसार अल्लाह तआला के प्रकोपी चमत्कारों का निशाना बन गया।

इन चारों भागों के प्रकाशन के बाद अल्लाह तआला की हिकमत, हित और विशेष इरादे से इस पुस्तक के शेष भागों का प्रकाशन लम्बे समय तक स्थगित रहा। यद्यपि इस्लाम की सच्चाई और नुबुव्वत-ए-मुहम्मदिया की सच्चाई पर हुज़ूर की अस्सी के लगभग पुस्तकें सार्वजनिक मंच पर आईं।

अन्त में 1905 ई. में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने बराहीन अहमदिया का पांचवां भाग लिखना आरंभ किया। तेईस वर्ष के पश्चात् इस लम्बे स्थगन का कारण अल्लाह तआला की हिकमतें और हित थे। हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम फ़रमाते हैं :-

(1) "बराहीन अहमदिया के हर चार भाग कि जो प्रकाशित हो चुके हैं वे ऐसे मामलों पर आधारित थे कि जब तक वे मामले प्रकटन में न आ जाते तब तक बराहीन अहमदिया के हर चार भाग के तर्क गुप्त और छुपे रहते। और अवश्य था कि बराहीने अहमदिया का लिखना उस समय तक स्थगित रहे जब तक कि समय के लम्बे होने से वे गुप्त मामले खुल जाएं और तो तर्क उन भागों में दर्ज हैं वे प्रकट हो जाएं। क्योंकि बराहीन अहमदिया के हर चार भागों में जो ख़ुदा का कलाम अर्थात् उसका इल्हाम जगह-जगह छुपा हुआ है जो इस खाकसार पर हुआ वह इस बात का मुहताज था कि उसकी व्याख्या की जाए तथा इस बात का मुहताज था कि जो भविष्यवाणियां उसमें दर्ज हैं उनकी सच्चाई लोगों पर प्रकट हो जाए। इसलिए दूरदर्शी और सर्वज्ञ ख़ुदा ने उस समय तक बराहीन अहमदिया का छपना स्थगित रखा कि जब तक वे समस्त भविष्यवाणियां प्रकटन में आ गईं।"

(बराहीन अहमदिया भाग-पंचम, रूहानी ख़ज़ायन जिल्द 21, पृष्ठ 9,10)

(4) तथा भाग पंचम की समाप्ति पर फ़रमाते हैं :-

"अतः यह भाग पंचम वास्तव में पहले भागों के लिए बतौर व्याख्या के है और ऐसी व्याख्या करना मेरे अधिकार से बाहर था जब तक ख़ुदा तआला समस्त सामान अपने हाथ से उपलब्ध न करता .....।"

(बराहीन अहमदिया भाग पंचम जिल्द-21, पृष्ठ-411)

विषय

पुस्तक के प्रारंभ में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने सच्चे और ज़िन्दा धर्म का परस्पर अन्तर करने वाली विशेषताएं वर्णन की हैं और उल्लेख फ़रमाया है कि सच्चे धर्म में अल्लाह तआला कथनीय और क्रियात्मक चमत्कारों का अस्तित्व आवश्यक है। क्योंकि उनके बिना अल्लाह तआला की मा'रिफ़त पूर्ण रूप से नहीं होती और पूर्ण मा'रिफ़त के बिना पाप से मुक्ति प्राप्त करना असंभव है। अतः इस सिलसिले में हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने चमत्कार की असल वास्तविकता और आवश्यकता के वर्णन में पृथक अध्याय लिखा है (पृष्ठ 59) और लिखा है कि सच्चे और झूठे धर्मों का परस्पर अन्तर चमत्कार ही हैं। और अध्याय द्वितीय में उन निशानों का कुछ विरण वर्णन किया है जो पच्चीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में दर्ज भविष्यवाणियों के अनुसार प्रकटन में आए। इस सिलसिले में हुज़ूर ने अपने सैकड़ों इल्हामों की घटनात्मक गवाहियां और ख़ुदाई समर्थनों से व्याख्या की है। ये समस्त घटनाएं इस्लाम और आंहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम की सच्चाई के अतिरिक्त हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के ख़ुदा की ओर से होने का भी सबूत हैं। इसी लिए हुज़ूर ने पुस्तक के इस भाग का नाम "नुसरतुल हक़" भी लिखा है।

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम के पुस्तक के अन्त में वर्णन किया है कि -

"नबियों के नामों का रहस्य भी जो पहले चार भागों में गुप्त था

अर्थात् वे नबियों के नाम जो मेरी ओर सम्बद्ध किए गए थे उनकी वास्तविकता भी यथायोग्य प्रकट हो गई।"

(बराहीन अहमदिया भाग-पंचम रूहानी ख़ज़ायन जिल्द-21, पृष्ठ 412)

हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम ने अध्याय द्वितीय में नबियों के नामों के तहत सूरह अलकहफ़ की उन आयतों की अनुपम और उत्तम व्याख्या की है जो ज़ुलक़रनैन के संबंध में वर्णित हैं। (पृष्ठ 118 से 126)

बराहीन अहमदिया भाग-पंचम का परिशिष्ट

बराहीन अहमदिया भाग पंचम का परिशिष्ट ऐतराज करने वालों के कुछ ऐतराज़ों के उत्तरों पर आधारित है। सर्वप्रथम हुज़ूर ने एक साहिब मुहम्मद इकरामुल्लाह शाहजहांपुरी ऐतराज़ों को लिया है जो उन्होंने हुज़ूर के इल्हाम عَفَتِ الدِّيَارُ محلها و مقامها पर सर्फ़ी-व-नहवी (व्याकरण संबंधी) शब्द कोशीय और घटनात्मक दृष्टि से किए हैं। (पृष्ठ-153) इसके बाद इसी इल्हाम पर एक अन्य साहिब के ऐतराज़ों का उत्तर है। (पृष्ठ 183) इस सिलसिले में हुज़ूर ने मध्य में सूरह अलमोमिनून की प्रारंभिक आयतों की अत्यन्त अध्यात्म ज्ञानों से भरपूर व्याख्या वर्णन करके इन्सानी पैदायश रूहानी और शारीरिक की छः श्रेणियों का वर्णन किया है और उसे पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान संबंधी चमत्कार ठहराया है। हुज़ूर लिखते हैं :-

"यह जो अल्लाह तआला ने मोमिन के रूहानी अस्तित्व की छः श्रेणियों का वर्णन करके उनके मुकाबले पर भौतिक अस्तित्व की छः श्रेणियां दिखाई हैं यह एक ज्ञान संबंधी चमत्कार है।"

(पृष्ठ-228)

"मैं सच-सच कहता हूं कि इस प्रकार का ज्ञान संबंधी चमत्कार मैंने पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी किताब में नहीं पाया।"

(पृष्ठ - 229)

तीसरे नम्बर पर मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन बटालवी के कुछ उन सन्देहों का निवारण किया गया है जो उन्होंने हज़रत मसीह मौऊद अलैहिस्सलाम की भूकम्पों से संबंधित भविष्यवाणियों के बारे में प्रकाशित किए थे।

मौलवी मुहम्मद हुसैन के प्रश्नों के उत्तरों में हुज़ूर ने मसीह की मृत्यु की समस्या पर भी बौद्धिक और पुस्तकीय रंग में बहस की है और फिर मौलवी साहिब को सम्बोधित करके एक लम्बी अरबी नज़्म लिखी है जिस में हुज़ूर ने अपनी सच्चाई के तर्क विस्तारपूर्वक वर्णन किए हैं और मौलवी साहिब को सम्बोधित करके फ़रमाया है:-

وانت الذی قد قال فی تقریظہٖ　　کمثل المؤلف لیس فینا غضنفرٌ
کمثلک مع علمٍ بحالی۔ و فطنۃٍ　　عجبتُ لہٗ یبغی الھدٰی ثم یاطرٌ
قَطعتَ ودادًا قد غرسناہ فی الصبا　　و لیس فؤادی فی الوداد یقصِّرٌ

(बराहीन अहमदिया भाग पंचम पृष्ठ-335)

अनुवाद - और तू वही है जिस ने अपने रीव्यू में लिखा था कि इस लेखक के समान हम में कोई भी धर्म के मार्ग में शेर नहीं। तुझ जैसा व्यक्ति मेरी दशा से परिचित और बुद्धिमान, आश्चर्य है कि वह हिदायत पर आकर फिर सद्मार्ग छोड़ दे। तूने उस मित्रता को काट दिया जिसका वृक्ष हमने बचपन के दिनों में लगाया था परन्तु मेरे हृदय ने मित्रता में कोई कमी नहीं की।

चौथे नम्बर पर हुज़ूर ने मौलवी सय्यिद मुहम्मद अब्दुल वाहिद साहिब टीचर-व-क़ाज़ी ब्रह्मणबड़िया के कुछ सन्देहों का निवारण किया है। (पृष्ठ - 336)

और अन्त में मौलवी रशीद अहमद गंगोही की पुस्तक "अलख़िताबुल मलीह फ़ी तहक़ीकिल महदी वल मसीह" का उत्तर हुज़ूर ने लिखा है और विस्तार के साथ हज़रत ईसा बिन मरयम की मृत्यु को पवित्र क़ुर्आन की अनेकों आयतों से सिद्ध किया है।

समापन

परिशिष्ट के बाद समापन का प्रारंभ है जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम लिखने का इरादा रखते थे। पुस्तक के अन्त में याददाश्तों के अध्ययन से संक्षिप्त रंग में इस निबंध की एक झलक दिखाई देती है।

हुज़ूर ने वर्णन किया है कि वह समापन को निम्नलिखित चार फस्लों पर विभाजित करना चाहते हैं :-

प्रथम फ़स्ल - इस्लाम की वास्तविकता के वर्णन में

द्वितीय फ़स्ल - पवित्र क़ुर्आन को उच्च और पूर्ण शिक्षा के वर्णन में

तृतीय फ़स्ल - उन निशानों के वर्णन में जिन के प्रकटन का बराहीन अहमदिया में वादा था और ख़ुदा ने मेरे हाथ पर वे प्रकट किए।

चतुर्थ फ़स्ल - उन इल्हामों की व्याख्या में जिन में मेरा नाम ईसा रखा गया है या दूसरे नबियों के नाम से मुझे नामित किया है या ऐसा ही तथा कुछ इल्हामी वाक्य जो व्याख्या के योग्य हैं।

पुस्तक के अन्त में वे विभिन्न याददाश्तें भी दर्ज हैं जो हज़रत अक़्दस अलैहिस्सलाम ने इस निबन्ध के बारे में लिखी थीं और आपके मसौदों से मिलीं। ये याददाश्तें यद्यपि केवल संकेत हैं तथापि उनका अध्ययन भी लाभ से रिक्त नहीं।

ख़ाकसार

सय्यिद अब्दुल हयी

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

भूमिका

बराहीन अहमदिया

भाग-पंचम

بحمد اللہ کہ آخر ایں کتابم   مکمل شد بفضلِ آن جنابم

(ख़ुदा का धन्यवाद कि उसकी कृपा से अन्ततः यह पुस्तक पूर्ण हुई।)

तत्पश्चात् स्पष्ट हो कि यह बराहीन अहमदिया का पंचम भाग है जो इस भूमिका के पश्चात् लिखा जाएगा। ख़ुदा तआला की स्वेच्छा और नीति से ऐसा संयोग हुआ कि इस पुस्तक के चार भाग प्रकाशित हो कर फिर लगभग तेईस वर्ष तक इस पुस्तक का प्रकाशन स्थगित रहा और अति अद्भुत यह कि इस अवधि में मैंने लगभग अस्सी पुस्तकें लिखीं जिनमें से कुछ काफी मोटी थीं परन्तु इस पुस्तक को पूर्ण करने की ओर ध्यान आकृष्ट न हुआ तथा कई बार हृदय में यह दर्द पैदा भी हुआ की बराहीन अहमदिया के स्थगित रहने पर एक लम्बा समय गुज़र गया परन्तु नितान्त सतत् प्रयास तथा क्रेताओं की ओर से भी पुस्तक की सशक्त मांग की गई तथा इस लम्बी अवधि और इतने दीर्घ स्थगन-अन्तराल पर विरोधियों की ओर से भी मुझ पर वे आपत्तियां की गईं जो बदगुमानी और अपशब्दों की मलिनता से सीमा से अधिक लिप्त थीं तथा वे लम्बे अन्तराल के कारण हृदयों में पैदा हो सकती हैं परन्तु फिर भी प्रारब्ध के हितों ने मुझे यह सामर्थ्य न दिया कि मैं इस पुस्तक को पूर्ण कर सकता। इस से स्पष्ट है कि प्रारब्ध वास्तव में एक ऐसी वस्तु है जिसकी परिधि से बाहर निकल जाना मनुष्य के अधिकार में नहीं है। मुझे इस बात पर खेद है अपितु इस बात की कल्पना से हृदय करुणा से भर जाता है कि इस पुस्तक के बहुत से क्रेता पुस्तक की पूर्णता से पूर्व ही संसार से कूच कर गए, परन्तु

जैसा कि मैं उल्लेख कर चुका हूं कि मनुष्य ख़ुदा के प्रारब्ध के अधीन है। यदि ख़ुदा की इच्छा मानव इच्छा के अनुकूल न हो तो मनुष्य हज़ार प्रयास करे अपनी इच्छा को पूर्ण नहीं कर सकता, परन्तु जब ख़ुदा की इच्छा का समय आ जाता है तो वही बातें जो बहुत कठिन दिखाई देती थीं नितान्त सरलता से उपलब्ध हो जाती हैं।

यहां स्वाभाविक तौर पर यह प्रश्न उठता है कि चूंकि ख़ुदा तआला के समस्त कार्यों में दूरदर्शिता और भलाई होती है तो इस महान धार्मिक सेवा की पुस्तक में जिसमें इस्लाम के समस्त विरोधियों का खण्डन अभीष्ट था क्या नीति थी कि वह पुस्तक पूर्ण होने से लगभग तेईस वर्ष तक स्थगित रही। इसका सही उत्तर ख़ुदा ही जानता है। कोई मनुष्य उसके समस्त रहस्यों को अपनी परिधि में नहीं ले सकता, परन्तु जहां तक मेरा विचार है वह यह है कि बराहीन अहमदिया के चारों भाग जो प्रकाशित हो चुके थे वे ऐसी बातों पर आधारित थे कि जब तक वे बातें प्रकट न हो जातीं तब तक बराहीन अहमदिया के चारों भागों के सबूत गुप्त और छुपे रहते। आवश्यक था कि बराहीन अहमदिया का लिखना उस समय तक स्थगित रहे जब तक कि लम्बे अन्तराल से वे गुप्त बातें प्रकट हो जाएं और उन भागों में जिन सबूतों का उल्लेख है वे प्रकट हो जाएं क्योंकि बराहीन अहमदिया के चारों भागों में जो ख़ुदा का कलाम अर्थात् उसका इल्हाम अनेकों स्थानों पर छुपा हुआ है जो इस ख़ाकसार पर हुआ, वह इस बात का मुहताज था कि उस की व्याख्या की जाए तथा इस बात का मुहताज था कि उसमें जिन भविष्यवाणियों का उल्लेख है लोगों पर उन की सच्चाई प्रकट हो जाए। अत: इसलिए नीतिवान और बहुत ज्ञान रखने वाले ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया का प्रकाशन उस समय तक स्थगित रखा जब तक कि वे समस्त भविष्यवाणियां प्रकटन में आ गईं। और स्मरण रहे कि किसी धर्म का सत्य सिद्ध करने के लिए अर्थात् इस बात के सबूत के लिए कि वह धर्म ख़ुदा की ओर से है उसमें दो प्रकार की विजय का पाया जाना आवश्यक है।

प्रथम यह कि वह धर्म अपनी आस्थाओं और अपनी शिक्षा तथा अपने आदेशों की

दृष्टि से ऐसा सर्वांगपूर्ण और दोषरहित हो कि उस से बढ़कर बुद्धि कल्पना न कर सके तथा उसमें कोई दोष या कमी दृष्टिगोचर न हो तथा उस विशेषता में वह प्रत्येक धर्म पर विजय पाने वाला हो अर्थात् उन विशेषताओं में कोई धर्म उसके समान न हो जैसा कि क़ुर्आन करीम ने यह स्वयं दावा किया है कि -

اَلْيَوْمَ اَكْمَلْتُ لَكُمْ دِيْنَكُمْ وَ اَتْمَمْتُ عَلَيْكُمْ نِعْمَتِيْ
وَ رَضِيْتُ لَكُمُ الْاِسْلَامَ دِيْنًا[1]

अर्थात् आज मैंने तुम्हारे लिए अपना धर्म पूर्ण कर दिया और तुम पर अपनी ने'मत को पूरा कर दिया और मैंने पसन्द किया कि इस्लाम तुम्हारा धर्म हो अर्थात् वह वास्तविकता जो इस्लाम शब्द में पाई जाती है जिसकी व्याख्या स्वयं ख़ुदा तआला ने इस्लाम शब्द के बारे में वर्णन की है उस वास्तविकता पर तुम दृढ़ हो जाओ।

इस आयत में स्पष्ट तौर पर यह वर्णन है कि पवित्र क़ुर्आन ने ही पूर्ण शिक्षा प्रदान की है और क़ुर्आन करीम का ही ऐसा युग था जिसमें पूर्ण शिक्षा प्रदान की जाती। अत: यह पूर्ण शिक्षा का दावा जो पवित्र क़ुर्आन ने किया यह उसी का अधिकार था, इसके अतिरिक्त किसी आकाशीय किताब ने ऐसा दावा नहीं किया, जैसा कि दर्शकों पर प्रकट है कि तौरात और इन्जील दोनों इस दावे से पृथक हैं क्योंकि तौरात में ख़ुदा तआला का यह कथन मौजूद है कि <u>मैं तुम्हारे भाइयों में से एक नबी खड़ा करूंगा और उसके मुख में अपना कलाम डालूंगा और जो व्यक्ति उसके कलाम को न सुनेगा मैं उस से पूछताछ करूंगा।</u> अत: नितान्त स्पष्ट है कि यदि भावी युग की आवश्यकताओं की दृष्टि से तौरात का सुनना पर्याप्त होता तो कुछ आवश्यकता न थी कि कोई अन्य नबी आता और ख़ुदा की पकड़ से मुक्ति पाना उस कलाम के सुनने पर निर्भर होता जो उस पर उतरता। इसी प्रकार इन्जील ने किसी स्थान में दावा नहीं किया कि इंजील की शिक्षा पूर्ण और सर्वांगपूर्ण है अपितु नितान्त स्पष्ट इक़रार किया है कि और <u>बहुत सी बातें उल्लेखनीय</u>

---

① अलमाइदह - 4

थीं परन्तु तुम सहन नहीं कर सकते परन्तु जब **फारक़लीत** आएगा तो वह सब कुछ वर्णन करेगा। अब देखना चाहिए कि हज़रत मूसा ने अपनी तौरात को अपूर्ण स्वीकार करके आने वाले नबी की शिक्षा की ओर ध्यानाकर्षण कराया। इसी प्रकार हज़रत ईसा ने भी अपनी शिक्षा का अपूर्ण होना स्वीकार करके यह बहाना प्रस्तुत कर दिया कि अभी पूर्ण शिक्षा वर्णन करने का समय नहीं है परन्तु जब फ़ारक़लीत आएगा तो वह पूर्ण शिक्षा वर्णन कर देगा, परन्तु पवित्र क़ुर्आन ने तौरात और इंजील की भांति किसी अन्य का हवाला नहीं दिया अपितु अपनी पूर्ण शिक्षा की समस्त संसार में घोषणा कर दी और फ़रमाया कि

اَلۡيَوۡمَ اَكۡمَلۡتُ لَكُمۡ دِيۡنَكُمۡ وَاَتۡمَمۡتُ عَلَيۡكُمۡ نِعۡمَتِىۡ وَرَضِيۡتُ لَكُمُ الۡاِسۡلَامَ دِيۡنًا ①

इस से स्पष्ट है कि पूर्ण शिक्षा का दावा करने वाला केवल पवित्र क़ुर्आन ही है और हम यथा अवसर वर्णन करेंगे कि जैसा कि पवित्र क़ुर्आन ने दावा किया है उसी प्रकार उस ने उस दावे को पूर्ण करके भी दिखा दिया है और उसने एक ऐसी पूर्ण शिक्षा प्रस्तुत की है जिसे न तौरात प्रस्तुत कर सकी और न इंजील वर्णन कर सकी। अत: इस्लाम की सच्चाई सिद्ध करने के लिए यह एक बड़ा सबूत है कि वह शिक्षा की दृष्टि से **प्रत्येक धर्म पर विजय पाने वाला** है और पूर्ण शिक्षा की दृष्टि से कोई धर्म उसका मुक़ाबला नहीं कर सकता।

द्वितीय - विजय का दूसरा प्रकार (भेद) जो इस्लाम में पाया जाता है जिसमें कोई धर्म उसका भागीदार नहीं और जो उसकी सच्चाई पर पूर्ण तौर पर मुहर लगाता है, उसकी जीवित बरकतें और **चमत्कार** हैं जिन से अन्य धर्म पूर्णतया वंचित हैं। ये ऐसे पूर्ण निशान हैं कि इनके माध्यम से न केवल इस्लाम अन्य धर्मों पर विजय पाता है अपितु **अपना पूर्ण प्रकाश** दिखा कर हृदयों को अपनी ओर आकर्षित कर लेता है। स्मरण रहे कि

① अलमाइदह - 4

इस्लाम की सच्चाई का प्रथम सबूत जिसका हमने अभी उल्लेख किया है अर्थात् पूर्ण शिक्षा वास्तव में इस बात को समझने के लिए कि इस्लाम धर्म ख़ुदा की ओर से है एक खुला-खुला सबूत नहीं है क्योंकि एक पक्षपाती इन्कारी जो दूरदर्शी नहीं है कह सकता है कि संभव है कि एक पूर्ण शिक्षा भी हो और फिर ख़ुदा तआला की ओर से न हो। अत: यद्यपि यह सबूत एक मनीषी सत्याभिलाषी को बहुत से सन्देहों से मुक्ति दिला कर विश्वास के निकट कर देता है परन्तु जब तक उसके साथ उपरोक्त दूसरा सबूत संलग्न न हो ईमान के चर्मोत्कर्ष तक नहीं पहुंचा सकता तथा इन दोनों सबूतों के मिलाने से सच्चे धर्म का प्रकाश चरम सीमा तक पहुंच जाता है, यद्यपि सच्चा धर्म अपने अन्दर सहस्रों लक्षण और प्रकाश रखता है परन्तु ये दोनों तर्क किसी अन्य तर्क के बिना सत्याभिलाषी के हृदय को विश्वास रूपी जल से तृप्त कर देते हैं और झुठलाने वालों पर पूर्णतया समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करते हैं। इसलिए इन दोनों प्रकार के तर्कों के विद्यमान होने के पश्चात् किसी अन्य तर्क की आवश्यकता नहीं रहती। मैंने पहले इरादा किया था कि इस्लाम की सच्चाई सिद्ध करने के लिए बराहीन अहमदिया में तीन सौ तर्कों का उल्लेख करूं, परन्तु जब मैंने ध्यानपूर्वक देखा तो ज्ञात हुआ कि ये दो प्रकार के तर्क सहस्रों निशानों के स्थानापन्न हैं। अत: ख़ुदा ने मेरे हृदय को इस इरादे से फेर दिया तथा उपरोक्त तर्कों के लिखने के लिए मेरे सीने को खोल दिया। यदि मैं बराहीन अहमदिया को पूर्ण करने में शीघ्रता करता तो संभव न था कि इस ढंग से इस्लाम की सच्चाई प्रकट कर सकता क्योंकि बराहीन अहमदिया के पहले भागों में बहुत सारी भविष्यवाणियां हैं जो इस्लाम की सच्चाई पर अटल सबूत हैं परन्तु अभी वह समय नहीं आया था कि ख़ुदा तआला के वे कथित निशान स्पष्ट तौर पर प्रकट होते। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि चमत्कारों और निशानों का उल्लेख करना मनुष्य के अधिकार में नहीं और वास्तव में सच्चे धर्म की पहचान का यही एक बड़ा माध्यम है कि जिसमें बरकतें और चमत्कार पाए जाएं, क्योंकि जैसा कि मैंने अभी वर्णन किया है केवल पूर्ण शिक्षा का होना सच्चे

धर्म के लिए पूर्ण और स्पष्ट लक्षण नहीं है जो संतुष्टि की अन्तिम श्रेणी तक पहुंचा सके। अत: इन्शाल्लाह तआला तो मैं यही दोनों प्रकार के तर्क इस पुस्तक में लिखकर इस पुस्तक को पूरा करूंगा, यद्यपि बराहीन अहमदिया के पहले भागों में निशानों के प्रकटन का वादा दिया गया था, परन्तु मेरे अधिकार में न था कि अपने सामर्थ्य से कोई निशान प्रकट कर सकता तथा कई बातें पहले भागों में थीं जिन की व्याख्या मेरे सामर्थ्य से बाहर थी, परन्तु जब तेईस वर्ष के पश्चात् वह समय आ गया तो ख़ुदा तआला की ओर से समस्त सामान उपलब्ध हो गए और उस वादे के अनुसार जो बराहीन अहमदिया के पहले भागों में लिखा था पवित्र क़ुर्आन की वास्तविकताएं और आध्यात्मिक ज्ञान मुझ पर प्रकट किए गए। जैसा कि अल्लाह तआला ने फ़रमाया - اَلرَّحۡمٰنُ عَلَّمَ الۡقُرۡاٰنَ① इसी प्रकार बड़े-बड़े निशान प्रकट किए गए।

जो लोग सच्चे हृदय से ख़ुदा के अभिलाषी हैं वे भलीभांति जानते हैं कि ख़ुदा की मा'रिफ़त ख़ुदा के द्वारा ही प्राप्त हो सकती है और ख़ुदा को ख़ुदा के साथ ही पहचान सकते हैं तथा ख़ुदा अपना समझाने का प्रयास स्वयं ही पूरा कर सकता है मनुष्य के अधिकार में नहीं तथा मनुष्य कभी किसी बहाने से पाप से विमुख हो कर उसका सानिध्य प्राप्त नहीं कर सकता जब तक कि पूर्ण मा'रिफ़त प्राप्त न हो, यहां कोई कफ़्फ़ारा लाभप्रद नहीं तथा कोई उपाय ऐसा नहीं जो पाप से पवित्र कर सके, उस पूर्ण मा'रिफ़त के अतिरिक्त जो पूर्ण प्रेम तथा पूर्ण भय को जन्म देती है तथा पूर्ण प्रेम एवं पूर्ण भ्रम यही दोनों बातें हैं जो पाप से रोकती हैं क्योंकि भय और प्रेम की गन्दी अग्नि जब भड़कती है तो पाप के कूड़ा-करकट को जलाकर भस्म कर देती है और यह पवित्र अग्नि तथा पाप की अग्नि दोनों इकट्ठी हो ही नहीं सकतीं। अत: मनुष्य न बुराई से रुक सकता है और न प्रेम में उन्नति कर सकता है जब तक कि उसे पूर्ण मा'रिफ़त प्राप्त न हो और पूर्ण मा'रिफ़त प्राप्त नहीं होती जब तक कि मनुष्य को ख़ुदा तआला की ओर से जीवित

---

① अर्रहमान - 2,3

बरकतें तथा चमत्कार न दिए जाएं। यही एक ऐसा माध्यम सच्चे धर्म को पहचानने का है जो समस्त विरोधियों का मुख बन्द कर देता है और ऐसा धर्म जो उपरोक्त दोनों प्रकार के तर्क अपने अन्दर रखता है अर्थात् ऐसा धर्म कि उसकी शिक्षा प्रत्येक दृष्टि से पूर्ण है जिसमें कोई कमी नहीं और यह भी कि ख़ुदा निशानों तथा चमत्कारों के द्वारा उसकी सच्चाई की गवाही देता है उस धर्म को वही व्यक्ति छोड़ता है जो ख़ुदा तआला की कुछ भी परवाह नहीं करता तथा आख़िरत (परलोक) के दिन पर अस्थायी जीवन और लोगों के झूठे सम्बन्धों को प्राथमिकता देता है। वह ख़ुदा जो आज भी ऐसा ही सामर्थ्यवान है जैसा कि आज से दस हज़ार वर्ष पूर्व सामर्थ्यवान था उस पर इस प्रकार से ईमान प्राप्त हो सकता है कि उसकी ताज़ा बरकतों तथा ताज़ा चमत्कारों और प्रकृति के ताज़ा कार्यों का ज्ञान प्राप्त हो अन्यथा यह कहना पड़ेगा कि यह वह ख़ुदा नहीं है जो पहले था या उसमें वे शक्तियां अब मौजूद नहीं हैं जो पहले थीं। इसलिए इन लोगों का ईमान कुछ भी वस्तु नहीं जो ख़ुदा की ताज़ा बरकतों तथा ताज़ा चमत्कारों को देखने से वंचित हैं और समझते हैं कि उसकी शक्तियां आगे नहीं अपितु पीछे रह गई हैं।

अन्ततः यह भी स्मरण रहे कि जो बराहीन अहमदिया के शेष भाग छापने में तेईस वर्ष का विलम्ब रहा, यह विलम्ब निरर्थक और व्यर्थ न था अपितु इसमें यह दूरदर्शिता थी कि ताकि उस समय तक पांचवां भाग संसार में प्रकाशित न हो जब तक कि वे समस्त बातें प्रकट न हो जाएं जिनके सम्बन्ध में बराहीन अहमदिया के पहले भागों में भविष्यवाणियां हैं, क्योंकि बराहीन अहमदिया के पहले भाग महान भविष्यवाणियों से भरे हुए हैं तथा पांचवें भाग का महान उद्देश्य यही था कि वे वादा दी गई भविष्यवाणियां प्रकट हों। यह ख़ुदा का एक विशेष निशान है कि उसने मात्र अपनी कृपा से इस समय तक मुझे जीवित रखा यहां तक कि वे **निशान** प्रकट हो गए। तब वह समय आ गया कि पांचवां भाग लिखा जाए तथा इस पांचवें भाग के समय जो ख़ुदा की सहायता प्रकट हुई, अवश्य था कि बतौर कृतज्ञता उसका वर्णन किया जाए। अतः इस बात को व्यक्त

करने के लिए मैंने बराहीन अहमदिया के पंचम भाग को लिखने के समय जिसे वास्तव में इस पुस्तक का नया जन्म कहना चाहिए। इस भाग का नाम **नुसरतुल हक़** भी रख दिया ताकि वह नाम हमेशा के लिए इस बात का निशान हो कि सैकड़ों बाधाओं एवं विघ्नों के बावजूद मात्र ख़ुदा तआला की सहायता तथा सहयोग ने इस भाग को लिखा गया। अतः इस भाग के कुछ प्रारंभिक पृष्ठों के प्रत्येक पृष्ठ के प्रारंभ में नुसरतुलहक़ लिखा गया परन्तु फिर इस विचार से ताकि स्मरण कराया जाए कि यह वही बराहीन अहमदिया है जिसके पहले चार भाग प्रकाशित हो चुके हैं तत्पश्चात् प्रत्येक पृष्ठ के सर पर बराहीन अहमदिया भाग पंचम लिखा गया। पहले पचास भाग लिखने का इरादा था किन्तु पचास से पांच को पर्याप्त समझा गया और चूंकि पचास और पांच की संख्या में केवल एक बिन्दु का अन्तर है इसलिए पांच भागों से वह वादा पूरा हो गया।

इस विलम्ब का दूसरा कारण जो तेईस वर्ष तक भाग पंचम लिखा न गया यह था कि ख़ुदा तआला चाहता था कि उन लोगों के हार्दिक विचार प्रकट करे जिनके हृदय कुधारणा के रोग से ग्रस्त थे और ऐसा ही प्रकट हुआ क्योंकि इतने लम्बे विलम्ब के पश्चात् ना समझ लोग कुधारणा में बढ़ गए यहां तक कि कुछ अपवित्र स्वभाव लोग गालियों पर उतर आए और इस पुस्तक के चार भाग जो प्रकाशित हो चुके थे कुछ तो विभिन्न मूल्यों पर बेचे गए थे और कुछ मुफ़्त बांटे गए थे अतः जिन लोगों ने मूल्य दिए थे अधिकांश ने गालियां भी दीं और अपना मूल्य भी वापस लिया। यदि वे अपनी जल्दबाज़ी से ऐसा न करते तो उनके लिए अच्छा होता परन्तु इतने विलम्ब से उनकी स्वाभाविक स्थिति की परीक्षा हो गई।

इस विलम्ब का एक यह भी कारण था कि ताकि ख़ुदा अपने बन्दों पर प्रकट करे कि यह कारोबार उसकी इच्छा के अनुसार है और ये समस्त इल्हाम जो बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में लिखे गए हैं ये उसी की ओर से हैं न कि इन्सान की ओर से, क्योंकि यदि यह पुस्तक ख़ुदा तआला की इच्छा के अनुसार न होती और ये समस्त

इल्हाम उसकी ओर से न होते तो यह बात न्यायवान और पुनीत ख़ुदा की आदत के विपरीत थी कि जो व्यक्ति उसके निकट झूठ गढ़ने वाला है और उसने यह पाप किया है कि अपनी ओर से बातें बना कर उसका नाम ख़ुदा की वह्यी तथा ख़ुदा का इल्हाम रखा है उसे तेईस वर्ष तक छूट दे ताकि वह अपनी पुस्तक बराहीन अहमदिया के शेष भाग को जहां तक ख़ुदा की इच्छा हो और न केवल इतना ही अपितु ख़ुदा उस पर यह भी उपकार करे कि जो बातें इसे पूर्ण करने के लिए मनुष्य के अधिकार से बाहर थीं उनको अपनी ओर से पूर्ण कर दे। स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला ऐसे व्यक्ति के साथ आनन्द एवं उपकार का यह व्यवहार नहीं करता जिसको जानता है कि वह झूठ गढ़ने वाला है। अत: इतने विलम्ब और देर से यह निशान भी प्रकट हो गया कि ख़ुदा की सहायता और समर्थन मेरे लिए सिद्ध हो गया। इस लम्बे अन्तराल (मुद्दत) में बहुत से काफ़िर, दज्जाल तथा कज़्ज़ाब कहने वाले जो मुझे इस्लाम के दायरे से बाहर करते थे और मुबाहले के रंग में झूठे पर बद्दुआएं करते थे संसार से गुज़र गए परन्तु ख़ुदा ने मुझे जीवित रखा तथा मेरा वह समर्थन किया कि झूठों की तो चर्चा ही क्या संसार में बहुत ही कम सच्चे और सत्यनिष्ठ गुज़रे होंगे जिन का ऐसा समर्थन किया गया हो। अत: यह ख़ुदा तआला का खुला-खुला निशान है किन्तु उनके लिए जो आंख बन्द नहीं करते और **ख़ुदा तआला के निशानों को स्वीकार करने के लिए तैयार हैं।**

मिर्ज़ा ग़ुलाम अहमद क़ादियानी मसीह मौऊद

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

है शुक्र रब्बे अज़्ज़ो जल्ल ख़ारिज अज़ बयां
जिसकी कलाम से हमें उसका मिला निशां
वह रोशनी जो पाते हैं हम इस किताब में
होगी नहीं कभी वह हज़ार आफ़ताब में
उस से हमारा पाक दिल व सीना हो गया
वह अपने मुंह का आप ही आईना हो गया
उसने दरख़्ते दिल को मआरिफ़ का फल दिया
हर सीना शक से धो दिया हर दिल बदल दिया
उससे ख़ुदा का चेहरा नमूदार हो गया
शैतां का मकरो वसवसा बेकार हो गया
वह रह जो ज़ाते अज़्ज़ो जल्ल को दिखाती है
वह रह जो दिल को पाको मुतह्हर बनाती है
वह रह जो यार गुमशुदा को खींच लाती है
वह राह जो जामे पाक यक़ीं का पिलाती है
वह रह जो उसके होने पै मुहकम दलील है
वह रह जो उसके पाने की कामिल सबील है
उसने हर एक को वही रस्ता दिखा दिया
जितने शुकूको शुब्ह थे सबको मिटा दिया
अफ़सुर्दगी जो सीनों में थी दूर हो गई
ज़ुल्मत जो थी दिलों में वह सब नूर हो गई
जो दौर था ख़िज़ां का वह बदला बहार से
चलने लगी नसीम इनायाते यार से

जाड़े की रुत ज़हूर से उसके पलट गई
इश्क़े ख़ुदा की आग हर इक दिल में अट गई।
जितने दरख़्त ज़िन्दा थे वह सब हुए हरे,
फल इस क़दर पड़ा कि वे मेवों से लद गए।
मौजों से उसके पर्दे वसावस के फट गए,
जो कुफ़्र और फ़िस्क़ के टीले थे कट गए
क़ुआं ख़ुदा नुमा है ख़ुदा का कलाम है,
बे उसके मारिफ़त का चमन ना तमाम है।
जो लोग शक की सर्दियों से थरथराते हैं,
उस आफ़ताब से वह अजब धूप पाते हैं।
दुनिया में जिस क़दर है मज़ाहिब का शोरो शर
सब क़िस्सागो हैं नूर नहीं एक ज़र्रा भर
पर यह कलाम नूरे ख़ुदा को दिखाता है,
उसकी तरफ़ निशानों के जल्वे से लाता है।
जिस दीं का सिर्फ़ क़िस्सों पै सारा मदार है,
वह दीं नहीं है एक फ़साना गुज़ार है।
सच पूछिए तो क़िस्सों का क्या एतिबार है,
क़िस्सों में झूठ और ख़ता बेशुमार है।
है दीं वही कि सिर्फ़ वह इक क़िस्सागो नहीं,
ज़िन्दा निशानों से है दिखाता रह-ए-यक़ीं।
है दीं वही कि जिस का ख़ुदा आप हो अयां
ख़ुद अपनी क़ुदरतों से दिखावे कि हैं कहां।

जो मौ'जिज़ात सुनते हो क़िस्सों के रंग में
उनको तो पेश करते हैं जब बहसो जंग में।
जितने हैं फ़िर्क़े सब का यही कारोबार है,
क़िस्सों में मौ'जिज़ों का बयां बारबार है।
पर अपने दीं का कुछ भी दिखाते नहीं निशां,
गोया वह रब्बे अर्ज़ो समां अब है नातवां।
गोया अब उसमें ताकतो क़ुदरत नहीं रही,
वह सल्तनत, वह ज़ोर, वह शौकत नहीं रही।
या यह कि अब ख़ुदा में वह रहमत नहीं रही,
नीयत बदल गई है वह शफ़क़त नहीं रही।
ऐसा गुमां ख़ता है कि वह ज़ात पाक है
ऐसे गुमां की नौबत आख़िर हलाक है।
सच है यही कि ऐसे मज़ाहिब ही मर गए,
अब उन में कुछ नहीं है कि जां से गुज़र गए।
पाबन्द ऐसे दीनों के दुनिया परस्त हैं,
ग़ाफ़िल हैं ज़ौक़े यार से दुनिया में मस्त हैं।
मक़्सूद उन का जीने से दुनिया कमाना है,
मोमिन नहीं हैं वह कि क़दम फ़ासिक़ाना है।
तुम देखते हो कैसे दिलों पर हैं उनके ज़ंग,
दुनिया ही हो गई है ग़र्ज़, दीं से आए तंग।
वह दीं ही चीज़ क्या है कि जो रहनुमा नहीं,
ऐसा ख़ुदा है उसका कि गोया ख़ुदा नहीं।

फिर उस से सच्ची राह की अज़्मत ही क्या रही,
और ख़ास वजह सफ़्वत-ए-मिल्लत ही क्या रही।
नूरे ख़ुदा की उसमें अलामत ही क्या रही,
तौहीद ख़ुश्क रह गई ने'मत ही क्या रही।
लोगो सुनो ! कि ज़िन्दा ख़ुदा वह ख़ुदा नहीं,
जिसमें हमेशा आदत-ए-क़ुदरत नुमा नहीं।
मुर्दा परस्त हैं वह जो क़िस्सा परस्त हैं,
पस इसलिए वह मौरिदे ज़िल्लो शिकस्त हैं।
बिन देखे दिल को दोस्तो पड़ती नहीं है कल,
क़िस्सों से कैसे पाक हो यह नफ़्से पुर ख़लल।
कुछ कम नहीं यहूदियों में ये कहानियां,
पर देखो कैसे हो गए शैतां से हम इनां।
हर दम निशाने ताज़ा का मुहताज है बशर
क़िस्सों के मौ'जिज़ात का होता है कब असर।
क्योंकर मिले फ़सानों से वह दिलबरे अज़ल,
गर इक निशां हो मिलता है सब ज़िन्दगी का फल।
क़िस्सों का ये असर है कि दिल पुर फ़साद है,
ईमां ज़ुबां पै, सीने में हक़ से इनाद है।
दुनिया की हिर्सो आज़ में ये दिल हैं मर गए,
ग़फ़्लत में सारी उम्र बसर अपनी कर गए।
ए सोने वालो जागो कि वक़्ते बहार है,
अब देखो आ के दर पै हमारे वह यार है।

क्या ज़िन्दगी का ज़ौक़ अगर वह नहीं मिला,
ला'नत है ऐसे जीने पै गर उस से हैं जुदा।
उस रुख़ को देखना ही तो है अस्ल मुद्दआ,
जन्नत भी है यही कि मिले यारे आश्ना।
ऐ हुब्बे जाह वालो यह रहने की जा नहीं,
इस में तो पहले लोगों से कोई रहा नहीं।
देखो तो जा के उनके मक़ाबिर को इक नज़र,
सोचो कि अब सलफ़ हैं तुम्हारे गए किधर।
इक दिन वही मक़ाम तुम्हारा मक़ाम है,
इक दिन यह सुब्ह ज़िन्दगी की तुम पै शाम है।
इक दिन तुम्हारा लोग जनाज़ा उठाएंगे,
फिर दफ़्न करके घर में तअस्सुफ़ से आएंगे।
ऐ लोगो ! ऐशे दुनिया को हरगिज़ वफ़ा नहीं,
क्या तुम को ख़ौफ़े मर्ग व ख़याले फ़ना नहीं।
सोचो कि बाप दादे तुम्हारे किधर गए,
किसने बुला लिया वह सभी क्यों गुज़र गए।
वह दिन भी एक दिन तुम्हें यारो नसीब है,
ख़ुश मत रहो कि कूच की नौबत क़रीब है।
ढूंढो वह राह जिस से दिलो सीना पाक हो,
नफ़्से दनी ख़ुदा की इताअत में ख़ाक हो।
मिलती नहीं अज़ीज़ो फ़क़त क़िस्सों से यह राह,
वह रोशनी निशानों से आती है गाह गाह।

वह लग़्व दीं है जिसमें फ़क़त क़िस्सा जात हैं,
उन से रहें अलग जो सईदुस्सिफ़ात हैं।
सद हैफ़ इस ज़माने में क़िस्सों पै है मदार,
क़िस्सों पै सारा दीं की सच्चाई का इनहिसार।
पर नक़्दे मौ'जिज़ात का कुछ भी निशां नहीं,
पस यह ख़ुदाए क़िस्सा ख़ुदाए जहां नहीं।
दुनिया को ऐसे क़िस्सों ने यक्सर तबाह किया,
मुश्रिक बना के कुफ़्र दिया रूसियह किया।
जिसको तलाश है कि मिले उसको किर्दिगार,
उसके लिए हराम है क़िस्सों पै हो निसार।
उसका तो फ़र्ज़ है कि वह ढूंढे ख़ुदा का नूर,
ता होवे शक्को शुब्ह सभी उसके दिल से दूर।
ता उसके दिल पै नूरे यक़ीं का नुज़ूल हो,
ता वह जनाबे अज़्ज़ व जल में क़ुबूल हो।
क़िस्सों से पाक होना कभी क्या मजाल है,
सच जानो यह तरीक़ सरासर मुहाल है।
क़िस्सों से कब निजात मिले है गुनाह से,
मुमकिन नहीं विसाले ख़ुदा ऐसी राह से।
मुर्दे से कब उम्मीद कि वह ज़िन्दा कर सके,
उस से तो ख़ुद मुहाल कि रह भी गुज़र सके।
वह रह जो ज़ाते अज़्ज़ व जल को दिखाती है,
वह रह जो दिल को पाको मुतह्हर बनाती है।

वह रह जो यारे गुमशुदा को ढूंढ लाती है,
वह रह जो जामे पाक यक़ीं का पिलाती है।
वह ताज़ा क़ुदरतें जो ख़ुदा पर दलील हैं,
वह ज़िन्दा ताक़तें जो यक़ीं की सबील हैं।
ज़ाहिर है यह कि क़िस्सों में उनका असर नहीं,
अफ़्साना गो को राहे ख़ुदा की ख़बर नहीं।
उस बे निशां की चेहरा नुमाई निशां से है,
सच है कि सब सुबूते ख़ुदाई निशां से है।
कोई बताए हम को कि ग़ैरों में यह कहां,
क़िस्सों की चाश्नी में हलावत का क्या निशां।
ये ऐसे मज़्हबों में कहां है दिखाइए,
वरना गुज़ाफ़ किस्सों पै हरगिज़ न जाइए।
जब से कि क़िस्से हो गए मक़्सूद राह में,
आगे क़दम है क़ौम का हर दम गुनाह में।
तुम देखते हो क़ौम में इफ़्फ़त नहीं रही,
वह सिद्क़ वह सफ़ा वह तहारत नहीं रही।
मोमिन के जो निशां हैं वह हालत नहीं रही,
उस यारे बे निशां की मुहब्बत नहीं रही।
इक सैल चल रहा है गुनाहों का ज़ोर से,
सुनते नहीं हैं कुछ भी मआसी के शोर से।
क्यों बढ़ गए ज़मीं पै बुरे काम इस क़दर,
क्यों हो गए अज़ीज़ो ! ये सब लोग कोरो कर।

क्यों अब तुम्हारे दिल में वह सिद्क़ो सफ़ा नहीं,
क्यों इस क़दर है फ़िस्क़ कि ख़ौफ़ो हया नहीं।
क्यों ज़िन्दगी की चाल सभी फ़ासिक़ाना है,
कुछ इक नज़र करो कि यह कैसा ज़माना है।
इसका सबब यही है कि ग़फ़लत ही छा गई,
दुनिया-ए-दूं कि दिल में मुहब्बत समा गई।
तक़्वा के जामे जितने थे सब चाक हो गए,
जितने ख़्याल दिल में थे नापाक हो गए।
हर दम के ख़ुब्सो फ़िस्क़ से दिल पर पड़े हिजाब,
आंखों से उन की छिप गया ईमां का आफ़ताब।
जिसको ख़ुदा-ए-अज़्ज़ व जल पर यक़ीं नहीं,
उस बद नसीब शख़्स का कोई भी दीं नहीं।
पर वह सईद जो कि निशानों को पाते हैं,
वह उस से मिल के दिल को उसी से मिलाते हैं।
वह उसके हो गए हैं उसी से वह जीते हैं,
हर दम उसी के हाथ से इक जाम पीते हैं।
जिस मै को पी लिया है वह उस मै से मस्त हैं,
सब दुश्मन उन के उनके मुक़ाबिल में पस्त हैं।
कुछ ऐसे मस्त हैं वह रुख़े ख़ूबे यार से,
डरते कभी नहीं हैं वह दुश्मन के वार से।
उन से ख़ुदा के काम सभी मौ'जिज़ाना हैं,
यह इसलिए कि आशिक़े यारे यगाना हैं।

उनको ख़ुदा ने ग़ैरों से बख़्शी है इम्तियाज़,
उनके लिए निशां को दिखाता है कारसाज़।
जब दुश्मनों के हाथ से वह तंग आते हैं,
जब बद शिआर लोग उन्हें कुछ सताते हैं।
जब उनके मारने के लिए चाल चलते हैं,
जब उन से जंग करने को बाहर निकलते हैं।
तब वह ख़ुदा-ए-पाक निशां को दिखाता है,
ग़ैरों पै अपना रोब निशां से जमाता है।
कहता है यह तो बन्द-ए-आली जनाब है,
मुझ से लड़ो अगर तुम्हें लड़ने की ताब है।
उस ज़ात पाक से जो कोई दिल लगाता है,
आख़िर वह उसके रहम को ऐसा ही पाता है।
जिनको निशान-ए-हज़रते बारी हुआ नसीब,
वह उस जनाब पाक से हर दम हुए क़रीब।
खींचे गए कुछ ऐसे कि दुनिया से सो गए,
कुछ ऐसा नूर देखा कि उसके ही हो गए।
बिन देखे कैसे पाक हो इन्सां गुनाह से,
इस चाह से निकलते हैं लोग उसकी चाह से।
तस्वीर शेर से न डरे कोई गोसपन्द,
नै मार-ए-मुर्दा से है कुछ अन्देश-ए-गज़न्द।
फिर वह ख़ुदा जो मुर्दे की मानिन्द है पड़ा,
पस क्या उम्मीद ऐसे से और ख़ौफ़ उससे क्या।

ऐसे ख़ुदा के ख़ौफ़ से दिल कैसे पाक हो,
सीने में उसके इश्क़ से क्योंकर तपाक हो।
बिन देखे किस तरह किसी महरुख़ पै आए दिल,
क्योंकर कोई ख़्याली सनम से लगाए दिल।
दीदार गर नहीं है तो गुफ़्तार ही सही,
हुस्नो जमाले यार के आसार ही सही।
जब तक ख़ुदा-ए-ज़िन्दा की तुम को ख़बर नहीं,
बे क़ैद और दिलेर हो कुछ दिल में डर नहीं।
सौ रोग की दवा यही वस्ले इलाही है,
इस क़ैद में हर एक गुनाह से रिहाई है।
पर जिस ख़ुदा के होने का कुछ भी नहीं निशां,
क्योंकर निसार ऐसे पै हो जाए कोई जां।
हर चीज़ में ख़ुदा की ज़िया का ज़हूर है,
पर फिर भी ग़ाफ़िलों से वह दिलदार दूर है।
जो ख़ाक में मिले उसे मिलता है आश्ना,
ऐ आज़माने वाले यह नुस्ख़ा भी आज़्मा।
आशिक़ जो हैं वह यार को मर मर के पाते हैं,
जब मर गए तो उसकी तरफ़ खींचे जाते हैं।
यह राह तंग है पै यही एक राह है,
दिलबर की मरने वालों पै हर दम निगाह है।
नापाक ज़िन्दगी है जो दूरी में कट गई,
दीवार ज़ुहदे ख़ुश्क की आख़िर को फट गई।

ज़िन्दा वही हैं जो कि ख़ुदा के क़रीब हैं,
मक़्बूल बन के उसके अज़ीज़ो हबीब हैं।
वह दूर हैं ख़ुदा से जो तक़्वा से दूर हैं,
हर दम असीरे नख़वतो किब्रो ग़ुरूर हैं।
तक़्वा यही है यारो कि नख़वत को छोड़ दो,
किब्रो ग़ुरूरो बुख़्ल की आदत को छोड़ दो।
इस बे सबात घर की मुहब्बत को छोड़ दो,
उस यार के लिए रहे इश्रत को छोड़ दो।
लानत की है यह राह सो ला'नत को छोड़ दो।
वरना ख़याले हज़रते इज़्ज़त को छोड़ दो।
तल्ख़ी की ज़िन्दगी को करो सिद्क़ से क़ुबूल,
ता तुम पै हो मलाइक-ए-अर्श का नुज़ूल।
इस्लाम चीज़ क्या है ख़ुदा के लिए फ़ना,
तर्के रिज़ाए ख़्वेश पए मर्ज़िए ख़ुदा।
जो मर गए उन्हीं के नसीबों में है हयात,
इस राह में ज़िन्दगी नहीं मिलती बजुज़ ममात।
शोख़ी व किब्र देवे लईं का शिआर है,
आदम की नस्ल वह है जो वह ख़ाकसार है।
ऐ किर्मे ख़ाक छोड़ दे किब्रो ग़ुरूर को,
ज़ेबा है किब्र हज़रते रब्बे ग़यूर को।
बदतर बनो हर एक से अपने ख़्याल में,
शायद इसी से दख़्ल हो दारुल विसाल में।

छोड़ो ग़ुरूरो किब्र कि तक़्वा इसी में है,
हो जाओ ख़ाक मर्ज़िए मौला इसी में है।
तक़्वा की जड़ ख़ुदा के लिए ख़ाकसारी है,
इफ़्फ़त जो शर्ते दीं है वह तक़्वा में सारी है।
जो लोग बदगुमानी को शेवः बनाते हैं,
तक़्वा की राह से वह बहुत दूर जाते हैं।
बे इहतियात उनकी ज़ुबां वार करती है,
इक दम में उस अलीम को बेज़ार करती है।
इक बात कह के अपने अमल सारे खोते हैं,
फिर शोख़ियों का बीज हर इक वक्त बोते हैं।
कुछ ऐसे सो गए हैं हमारे यह हम वतन,
उठते नहीं हैं हम ने तो सौ सौ किए जतन।
सब उज़्व सुस्त हो गए ग़फ़्लत ही छा गई,
क़ुव्वत तमाम नोके ज़ुबां में ही आ गई।
या बद ज़ुबां दिखाते हैं या हैं वह बदगुमां,
बाक़ी ख़बर नहीं है कि इस्लाम है कहां।
तुम देख कर भी बद को बचो बदगुमान से,
डरते रहो इक़ाबे ख़ुदा-ए-जहान से।
शायद तुम्हारी आंख ही कर जाए कुछ ख़ता,
शायद वह बद न हो जो तुम्हें है वह बदनुमां।
शायद तुम्हारी फ़हम का ही कुछ क़सूर हो,
शायद वह आज़मायशे रब्बे ग़फ़ूर हो।

फिर तुम तो बद गुमानी से अपनी हुए हलाक,
ख़ुद सर पै अपने ले लिया ख़श्मे ख़ुदा-ए-पाक।
गर ऐसे तुम दिलेरियों में बे हया हुए,
फिर इत्तिक़ा के सोचो कि मा'ने ही क्या हुए।
मूसा भी बदगुमानी से शार्मिंदा हो गया,
क़ुर्आं में ख़िज़्र ने जो किया था पढ़ो ज़रा।
बन्दों में अपने भेद ख़ुदा के हैं सद हज़ार
तुम को न इल्म है न हक़ीक़त है आश्कार।
पस तुम तो एक बात के कहने से मर गए,
यह कैसी अक़्ल थी कि बराहे ख़तर गए।
बदबख़्त तर तमाम जहां से वही हुआ,
जो एक बात कह के ही दोज़ख़ में जा गिरा।
पस तुम बचाओ अपनी ज़ुबां को फ़साद से,
डरते रहो उक़ूबते रब्बिल इबाद से।
दो उज़्व अपने जो कोई डर कर बचाएगा,
सीधा ख़ुदा के फ़ज़्ल से जन्नत में जाएगा।
वह इक ज़बां है उज़्व निहानी है दूसरा,
यह है हदीसे सय्यिदिना सय्यदुल वरा।
पर वह जो मुझ को काज़िबो मक्कार कहते हैं,
और मुफ़्तरी व काफ़िरो बदकार कहते हैं।
उनके लिए तो बस है ख़ुदा का यही निशां,
यानी वह फ़ज़्ल उसके जो मुझ पर हैं हर ज़मां।

देखो ख़ुदा ने एक जहां को झुका दिया,
गुमनाम पाके शुहर ए आलम बना दिया।
जो कुछ मेरी मुराद थी सब कुछ दिखा दिया,
मैं इक ग़रीब था मुझे बे इन्तिहा दिया।
दुनिया की ने'मतों से कोई भी नहीं रही,
जो उसने मुझ को अपनी इनायात से न दी।
ऐसे बदों से उसके हों ऐसे मामलात,
क्या यह नहीं करामतो आदत से बढ़ के बात।
जो मुफ़तरी है उस से यह क्यों इत्तिहाद है,
किसको नज़ीर ऐसी इनायत की याद है।
मुझ पर हर इक ने वार किया अपने रंग में,
आख़िर ज़लील हो गए अंजामे जंग में।
इन कीनों में किसी को भी अरमां नहीं रहा,
सब की मुराद थी कि मैं देखूं रहे फ़ना।
थे चाहते कि मुझ को दिखाएं अदम की राह,
या हाकिमों से फांसी दिला कर करें तबाह।
या कम से कम यह हो कि मैं ज़न्दां में जा पड़ूं,
या यह कि ज़िल्लतों से मैं हो जाऊं सरनगूं।
या मुख़बरी से उनकी कोई और ही बला,
आ जाए मुझ पै या कोई मक़्बूल हो दुआ।
पस ऐसे ही इरादों से करके मुक़द्दमात,
चाहा गया कि दिन मेरा हो जाए मुझ पै रात।

कोशिश भी वह हुई कि जहां में न हो कभी,
फिर इत्तिफ़ाक़ वह कि ज़मां में न हो कभी।
मुझ को हलाक करने को सब एक हो गए,
समझा गया मैं बद पै, वह सब नेक हो गए।
आख़िर को वह ख़ुदा जो करीमो क़दीर है,
जो आलिमुल क़ुलूब व अलीमो ख़बीर है।
उतरा मेरी मदद के लिए करके अहद याद,
पस रह गए वह सारे सियहरू व नामुराद।
कुछ ऐसा फ़ज़्ल हज़रत रब्बुल वरा हुआ।
सब दुश्मनों के देख के औसां हुए ख़ता।
इक क़तरा उसके फ़ज़्ल ने दरिया बना दिया,
मैं ख़ाक था उसी ने सुरैया बना दिया।
मैं था ग़रीबो बेकसो गुमनामो बे हुनर,
कोई न जानता था कि है क़ादियां किधर।
लोगों की इस तरफ़ को ज़रा भी नज़र न थी,
मेरे वुजूद की भी किसी को ख़बर न थी।
अब देखते हो कैसा रुजूए जहां हुआ,
इक मर्जए ख़वास यही क़ादियां हुआ।
पर फिर भी जिनकी आंख तअस्सुब से बन्द है,
उनकी नज़र में हाल मेरा ना पसन्द है।
मैं मुफ़्तरी हूं उनकी निगाहो ख़्याल में,
दुनिया की ख़ैर है मेरी मौतो ज़वाल में।

ला'नत है मुफ़्तरी पै ख़ुदा की किताब में,
इज़्ज़त नहीं है ज़र्रा भी उस की जनाब में।
तौरेत में भी नीज़ कलामे मजीद में,
लिखा गया है रंगे वईदे शदीद में।
कोई अगर ख़ुदा पै करे कुछ भी इफ़्तिरा,
होगा वह क़त्ल, है यही इस जुर्म की सज़ा।
फिर यह अजीब ग़फ़्लते रब्बे क़दीर है,
देखे है एक को कि वह ऐसा शरीर है।
पच्चीस साल से है वह मशग़ूल इफ़्तिरा,
हर दिन हर एक रात यही काम है रहा।
हर रोज़ अपने दिल से बनाता है एक बात,
कहता है यह ख़ुदा ने कहा मुझको आज रात।
फिर भी वह ऐसे शोख़ को देता नहीं सज़ा,
गोया नहीं है याद जो पहले से कह चुका।
फिर यह अजीब तर है कि जब हामियाने दीं,
ऐसे के क़त्ल करने को फ़ाइल हों या मईं।
करता नहीं है उनकी मदद वक़्ते इन्तिज़ाम,
ता मुफ़्तरी के क़त्ल से क़िस्सा ही हो तमाम।
अपना तो उसका वादा रहा सारा ताक़ पर,
औरों की सई व जुहद पै भी कुछ नहीं नज़र।
क्या वह ख़ुदा नहीं है जो फ़ुर्क़ां का है ख़ुदा,
फिर क्यों वह मुफ़्तरी से करे इस क़दर वफ़ा।

आख़िर यह बात क्या है कि है एक मुफ़्तरी,
करता है हर मक़ाम मैं उसको ख़ुदा बरी।
जब दुश्मन उसको पेच में कोशिश से लाते हैं,
कोशिश भी इस क़दर कि वह बस मर ही जाते हैं।
इस इत्तिफ़ाक़ करके वह बातें बनाते हैं,
सौ झूठ और फ़रेब की तुहमत लगाते हैं।
फिर भी वह ना मुराद मक़ासिद में रहते हैं,
जाता है बे असर वह जो सौ बार कहते हैं।
ज़िल्लत हैं चाहते - यहां इकराम होता है,
क्या मुफ़्तरी का ऐसा ही अंजाम होता है।
ए क़ौम के सरआमदः ए हामियाने दीं,
सोचो कि क्यों ख़ुदा तुम्हें देता मदद नहीं।
तुम में न रहम है न अदालत न इत्तिक़ा,
पस इस सबब से साथ तुम्हारे नहीं ख़ुदा।
होगा तुम्हें क्लार्क का भी वक्त ख़ूब याद,
जब मुझ पै की थी तुहमते खूं अज़ रहे फ़साद।
जब आप लोग उस से मिले थे बदीं ख़्याल,
ता आप की मदद से उसे सहल हो जिदाल।
पर वह ख़ुदा जो आजिज़ो मिस्कीं का है ख़ुदा,
हाकिम के दिल को मेरी तरफ़ उसने कर दिया।
तुम ने तो मुझ को क़त्ल कराने की ठानी थी,
यह बात अपने दिल में बहुत सहल जानी थी।

थे चाहते सलीब पै यह शख्स खींचा जाए,
ता तुम को एक फ़ख़्र से यह बात हाथ आए।
झूठा था, मुफ़्तरी था तभी यह मिली सज़ा,
आख़िर मेरी मदद के लिए ख़ुद उठा ख़ुदा।
डगलस पै सारा हाल बरियत का खुल गया,
इज़्ज़त के साथ तब मैं वहां से बरी हुआ।
इल्ज़ाम मुझ पै क़त्ल का था सख़्त था यह काम,
था एक पादरी की तरफ से यह इत्तिहाम।
जितने गवाह थे वह थे सब मेरे बरख़िलाफ़,
इक मौलवी भी था जो यही मारता था लाफ़।
देखो यह शख़्स अब तो सज़ा अपनी पाएगा,
अब बिन सज़ा-ए-सख़्त यह बचकर न जाएगा।
इतनी शहादतें हैं कि अब खुल गया क़ुसूर,
अब क़ैद या सलीब है इक बात है ज़रूर।
बा'ज़ों को बद्दुआ में भी था एक इनहिमाक़,
इतनी दुआ कि घिस गई सज्दे में उनकी नाक।
अल्क़िस्सा ज़ुहद की न रही कुछ भी इन्तिहा,
इक सू था मगर एक तरफ सज्दओ दुआ।
आख़िर ख़ुदा ने दी मुझे इस आग से निजात,
दुश्मन थे जितने उनकी तरफ की न इल्तिफ़ात।
कैसा यह फ़ज़्ल उस से नमूदार हो गया,
इक मुफ़्तरी का वह भी मददगार हो गया।

उसका तो फ़र्ज़ था कि वह वादे को करके याद,
ख़ुद मारता वह गर्दन-ए-कज़्ज़ाब बद निहाद।
गर उस से रह गया था कि वह ख़ुद दिखाए हाथ,
इतना तो सहल था कि तुम्हारा बटाए हाथ।
यह बात क्या हुई कि तुम से अलग रहा,
कुछ भी मदद न की न सुनी कोई भी दुआ।
जो मुफ़्तरी था उसको तो आज़ाद कर दिया,
सब काम अपनी क़ौम का बरबाद कर दिया।
सब जिद्दोजुहदो सई अकारत चली गई,
कोशिश थी जिस क़दर वह बग़ारत चली गई।
क्या "रास्ती की फ़त्ह" नहीं वा'द-ए-ख़ुदा,
देखो तो खोलकर सुख़न-ए-पाक किब्रिया।
फिर क्यों यह बात मेरी ही निस्बत पलट गई,
या ख़ुद तुम्हारी चादरे तक़्वा ही फट गई।
क्या यह अजब नहीं है कि जब तुम ही यार हो,
फिर मेरे फ़ायदे का ही सब कारोबार हो।
फिर यह नहीं कि हो गई है सिर्फ़ एक बात,
पाता हूं हर क़दम में ख़ुदा के तफ़ज़्ज़ुलात।
देखो वह भीं का शख़्स करमदीं है जिसका नाम,
लड़ने में जिसने नींद भी अपने पै की हराम।
जिसकी मदद के वास्ते लोगों में जोश था,
जिसका हर एक दुश्मने हक़्क़ ऐबपोश था।

जिसका रफ़ीक़ हो गया हर ज़ालिमो ग़बी,
जिसकी मदद के वास्ते आए थे मौलवी।
उनमें से ऐसे थे जो बढ़-बढ़ के आते थे,
अपना बयां लिखाने में कर्तब दिखाते थे।
हुशियारी मुस्तग़ीस भी अपनी दिखाता था,
सौ सौ ख़िलाफ़ वाक़िआ बातें बनाता था।
पर अपने बद अमल की सज़ा को वह पा गया,
साथ उस के यह कि नाम भी काज़िब रखा गया।
कज़्ज़ाब नाम उसका दफ़ातर में रह गया,
चालाकियों का फ़ख़्र जो रखता था बह गया।
ऐ होशो अक़्ल वालो यह इब्रत का है मक़ाम,
चालाकियां तो हीच हैं तक़्वा से होवे काम।
जो मुत्तक़ी है उसका ख़ुदा ख़ुद नसीर है,
अंजाम फ़ासिक़ों का अज़ाबे सईर है।
जड़ है हर एक ख़ैरो सआदत की इत्तिक़ा,
जिसकी यह जड़ रही है अमल उसका सब रहा।
मोमिन ही फ़त्ह पाते हैं अंजाम कार में,
ऐसा ही पाओगे सुख़ने किर्दिगार में।
कोई भी मुफ़्तरी हमें दुनिया में अब दिखा,
जिस पर यह फ़ज़्ल हो यह इनायात यह अता।
इस बद अमल की क़त्ल सज़ा है न यह कि पीत,
पस किस तरह ख़ुदा को पसन्द आ गई यह रीत।

क्या था यही मुआमला पादाशे इफ़्तिरा,
क्या मुफ़्तरी के बारे में वादा यही हुआ।
क्यों एक मुफ़्तरी का वह ऐसा है आश्नां,
या बेख़बर है ऐब से धोके में आ गया।
आख़िर कोई तो बात है जिससे हुआ वह यार,
बदकार से तो कोई भी करता नहीं है प्यार।
तुम बद बना के फिर भी गिरफ़्तार हो गए,
ये भी तो हैं निशां जो नमूदार हो गए।
ताहम वह दूसरे भी निशां हैं हमारे पास,
लिखते हैं अब ख़ुदा की इनायत से बे हिरास।
जिस दिल में रच गया है मुहब्बत से उसका नाम,
वह ख़ुद निशां है नीज़ निशां सारे उसके काम।
क्या-क्या न हम ने नाम रखाए ज़माना से,
मुर्दों से नीज़ फ़िर्क़-ए-नादां ज़नाना से।
उनके गुमां में हम बदो बदहाल हो गए,
उनकी नज़र में काफ़िरो दज्जाल हो गए।
हम मुफ़्तरी भी बन गए उनकी निगाह में,
बे दीं हुए फ़साद किया हक़ की राह में।
पर ऐसे कुफ़्र पर तो फ़िदा है हमारी जां,
जिस से मिले ख़ुदा-ए-जहानो जहानियां।
ला'नत है ऐसे दीं पै कि उस कुफ़्र से है कम,
सौ शुक्र है कि हो गए ग़ालिब के यार हम।

होता है किर्दगार इसी रह से दस्तगीर,
क्या जाने क़द्र उसका जो क़िस्सों में है असीर।
वह्यी-ए-ख़ुदा इसी रह-ए-फ़र्रुख़ से पाते हैं,
दिलबर का बांकपन भी इसी से दिखाते हैं।
ऐ मुद्दई नहीं है तेरे साथ किर्दगार
यह कुफ्र तेरे दीं से है बेहतर हज़ार बार।

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नह्मदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

हज़ार हज़ार धन्यवाद उस दयालु ख़ुदा का है जिसने ऐसा धर्म हमें प्रदान किया जो ख़ुदा की पहचान और ख़ुदा के भय का एक ऐसा माध्यम है जिसका उदाहरण कभी और किसी युग में नहीं पाया गया और हज़ारों दरूद उस मासूम नबी पर जिसके माध्यम से हम इस पवित्र धर्म में सम्मिलित हुए और हज़ारों रहमतें नबी करीम[स.अ.व.] के सहाबा पर हों जिन्होंने अपने रक्त से इस बाग़ की सिंचाई की।

इस्लाम एक ऐसा बरकत वाला तथा ख़ुदा को दिखाने वाला धर्म है कि यदि कोई व्यक्ति सच्चे तौर पर इसका पालन करे तथा इन शिक्षाओं, निर्देशों तथा वसीयतों पर पाबन्द हो जाए जो ख़ुदा तआला की पवित्र वाणी क़ुर्आन शरीफ़ में लिखी हैं तो वह इसी लोक में ख़ुदा को देख लेगा। वह ख़ुदा जो संसार की दृष्टि से हज़ारों पर्दों में है उसकी पहचान के लिए क़ुर्आन की शिक्षा के अतिरिक्त अन्य कोई भी माध्यम नहीं। पवित्र क़ुर्आन बौद्धिक रंग में तथा आकाशीय निशानों के रंग में नितान्त सरल और आसान ढंग से ख़ुदा तआला की ओर मार्ग-प्रदर्शन करता है तथा इसमें एक बरकत और आकर्षण शक्ति है जो ख़ुदा के अभिलाषी को प्रतिपल ख़ुदा की ओर खींचती तथा प्रकाश, सांत्वना और सन्तुष्टि प्रदान करती है तथा पवित्र क़ुर्आन पर सच्चा ईमान लाने वाला केवल दार्शनिकों की भांति यह गुमान नहीं रखता कि इस नीतिपूर्ण जगत का बनाने वाला कोई होना चाहिए अपितु वह एक व्यक्तिगत प्रतिभा प्राप्त करके तथा एक पवित्र दर्शन से सम्मानित होकर विश्वास की आंख से देख लेता है कि वास्तव में वह रचयिता मौजूद है और इस पवित्र कलाम का प्रकाश प्राप्त करने वाला मात्र नीरस तर्क शास्त्रियों की भांति यह गुमान नहीं रखता कि ख़ुदा एक और भागीदार रहित है, अपितु सैकड़ों चमकते हुए निशानों के साथ जो उसका हाथ पकड़ कर अंधकार से निकालते हैं वास्तविक तौर

पर देख लेता है कि वास्तव में अस्तित्व एवं विशेषताओं में ख़ुदा का कोई भी भागीदार नहीं और न मात्र इतना ही अपितु वह क्रियात्मक तौर पर संसार को दिखा देता है कि वह ख़ुदा को ऐसा ही समझता है तथा उसके हृदय में ख़ुदा के एकत्त्व (एक होना) की महानता ऐसी समा जाती है कि वह ख़ुदा की इच्छा के आगे सम्पूर्ण संसार को एक मरे हुए कीड़े के समान अपितु सर्वथा कुछ वस्तु नहीं तथा न होने जैसा समझता है।

मानव स्वभाव एक ऐसे वृक्ष के समान है जिसके एक भाग की शाखाएं मलिनता एवं मूत्र के गढ़े में डूबी हैं तथा दूसरे भाग की शाखाएं एक ऐसे पक्के जलकुण्ड (हौज़) में पड़ती हैं जो केवड़ा, गुलाब तथा अन्य उत्तम सुगन्धों से भरा है। प्रत्येक भाग की ओर से जब कोई वायु चलती है तो दुर्गन्ध या सुगन्ध को जैसी अवस्था हो फैला देती है। इसी प्रकार हर ओर से काम भावनाओं की वायु दुर्गन्ध प्रकट करती है और रहमानी सुगन्धों की वायु गुप्त सुगंध को प्रकटन एवं प्रतिबिम्ब का लिबास पहनाती है। अत: यदि रहमानी वायु के चलने में जो आकाश से उतरती है बाधा हो जाए तो मनुष्य प्रत्येक ओर से काम भावनाओं की प्रचंड एवं तीव्र हवाओं के थप्पड़ खाकर तथा उनकी दुर्गन्धों के नीचे दब कर ख़ुदा तआला से इस प्रकार मुख फेर लेता है कि साक्षात् शैतान बन जाता है और नर्क के सबसे निचले तल में गिराया जाता है तथा उसके अन्दर कोई नेकी नहीं रहती और कुफ्र, पाप, दुराचार, दुष्कर्म तथा समस्त कमीनगियों के विषों से अन्तत: तबाह हो जाता है और उसका जीवन नारकी होता है। मृत्योपरान्त नर्क में गिरता है और यदि ख़ुदा तआला की कृपा सहायक हो तथा ख़ुदा की सुगंधें उसके शुद्धिकरण एवं सुगंधित करने के लिए आकाश से चलें और उसकी आत्मा (रूह) को अपने विशेष प्रशिक्षण (तरबियत) से प्रतिक्षण प्रकाश, ताज़गी तथा पवित्र शक्ति प्रदान करें तो वह उच्च शक्ति से शक्ति पाकर इतना ऊपर की ओर खींचा जाता है कि फ़रिश्तों के स्थान से भी ऊपर चला जाता है। इससे सिद्ध होता है कि मनुष्य में नीचे गिरने का भी तत्त्व है और ऊपर उठाए जाने का भी। किसी ने इस बारे में सच कहा है -

हज़रते इन्सां कि हद्दे मुश्तरिक़ रा जामे अस्त,

मी तवानद शुद मसीहा मी तवानद ख़र शुदन।

परन्तु यहां कठिनाई यह है कि मनुष्य के लिए नीचे जाना सरल बात है मानो एक स्वाभाविक बात है जैसा कि तुम देखते हो एक पत्थर ऊपर को बहुत कठिनाई से जाता है तथा किसी दूसरे के बल का मुहताज है परन्तु नीचे की ओर स्वयं गिर जाता है और किसी के बल का मुहताज नहीं। अत: मनुष्य ऊपर जाने के लिए एक शक्तिशाली हाथ का मुहताज है। इसी आवश्यकता ने अंबिया तथा ख़ुदा के कलाम की आवश्यकता सिद्ध की है। यद्यपि संसार के लोग सच्चे धर्म को परखने के बारे में जटिल से जटिल बहसों में पड़ गए हैं और फिर भी किसी अभीष्ट लक्ष्य तक नहीं पहुंचे, किन्तु सच बात यह है कि जो धर्म मानवीय अंधेपन के दूर करने तथा आकाशीय बरकतों को प्रदान करने के लिए इस सीमा तक सफल हो सके जो उसके अनुयायी के व्यावहारिक जीवन में ख़ुदा के अस्तित्व का इक़रार तथा मानवजाति की सहानुभूति का प्रमाण स्पष्ट हो वही धर्म सच्चा है और वही है जो अपने सच्चे अनुयायी को उस अभीष्ट लक्ष्य तक पहुंचा सकता है जिसकी रूह (आत्मा) को उसकी प्यास दी गई है। अधिकांश लोग ऐसे काल्पनिक ख़ुदा पर ईमान लाते हैं जिसकी क़ुदरतें आगे नहीं अपितु पीछे रह गई हैं और जिसकी शक्ति और बल केवल क़िस्सों एवं कहानियों के रूप में वर्णन की जाती है। अत: यही कारण होता है कि ऐसा काल्पनिक ख़ुदा उनको पाप से रोक नहीं सकता अपितु ऐसे धर्म के अनुसरण में जैसे-जैसे दुराचार एवं दुष्कर्म पर साहस और दिलेरी पैदा होती जाती है और कामभावनाएं ऐसी तेज़ी में आती हैं कि जैसे एक दरिया का बांध टूट कर उसका जल इधर-उधर फैल जाता है तथा कई घरों तथा खेतों को नष्ट कर देता है। वह जीवित ख़ुदा जो शक्तिशाली निशानों की किरणें अपने साथ रखता है और अपने अस्तित्व को ताज़ा से ताज़ा चमत्कारों तथा शक्तियों से सिद्ध करता रहता है, वही है जिस का पाना और पूछना पाप से रोकता है और सच्चा चैन एवं शान्ति और धैर्य प्रदान करता है, दृढ़ता

तथा हार्दिक वीरता प्रदान करता है वह अग्नि बन कर पापों को भस्म कर देता है और पानी बन कर संसार-पूजा की इच्छाओं को धो डालता है। धर्म इसी का नाम है जो उस को तलाश करें और तलाश में पागल हो जाएं।

स्मरण रहे कि केवल नीरस विवाद, गाली-गलौज तथा अपशब्द जो अभिमान के कारण धर्म के नाम पर प्रकट किया जाता है तथा अपने आन्तरिक दुराचारों को दूर नहीं किया जाता और उस वास्तविक प्रियतम से सच्चा सम्बन्ध पैदा नहीं किया जाता और एक सदस्य दूसरे सदस्य पर न मानवता से अपितु कुत्तों की भांति आक्रमण करता है तथा धार्मिक सहायता की आड़ में प्रत्येक प्रकार की कामभावना संबंधी नीचता का प्रदर्शन करता है कि यह गन्दा ढंग जो सर्वथा हड्डियां हैं इस योग्य नहीं कि उस का नाम धर्म रखा जाए। खेद ऐसे लोग नहीं जानते कि हम संसार में क्यों आए तथा इस संक्षिप्त जीवन का मूल और बड़ा उद्देश्य क्या है अपितु वे हमेशा अंधे और अपवित्र स्वभाव रहकर केवल द्वेषपूर्ण भावनाओं का नाम धर्म रखते हैं और ऐसे काल्पनिक ख़ुदा के समर्थन में संसार में दुष्चरित्रता दिखाते तथा गालियां देते हैं जिसके अस्तित्व का उनके पास कोई प्रमाण नहीं। वह धर्म किस काम का है जो जीवित ख़ुदा का उपासक नहीं अपितु ऐसा ख़ुदा एक मुर्दे का जनाज़ा (अर्थी) है जो केवल दूसरों के सहारे से चल रहा है, सहारा अलग हुआ और वह पृथ्वी पर गिरा। ऐसे धर्म से यदि उनको कुछ प्राप्त है तो केवल द्वेष और ख़ुदा का वास्तविक भय तथा मानव जाति की सच्ची हमदर्दी जो सर्वश्रेष्ठ आचरण है बिल्कुल उनकी प्रकृति से सर्वथा समाप्त हो जाती है और यदि ऐसे व्यक्ति का उनसे सामना हो जो उनके धर्म और आस्था का विरोधी हो तो मात्र इतने ही विरोध को हृदय में रख कर उसके प्राण, धन तथा सम्मान के शत्रु हो जाते हैं और यदि उनके बारे में किसी अन्य जाति के व्यक्ति का काम पड़ जाए तो न्याय और ख़ुदा के भय को हाथ से देकर चाहते हैं कि उसे बिल्कुल मिटा दें तथा वह दया और न्याय तथा हमदर्दी जो मानव प्रकृति की उच्चतम श्रेष्ठता है बिल्कुल उनके स्वभावों से सर्वथा

समाप्त हो जाती है तथा द्वेष से जोश से उनके अन्दर एक अपवित्र पशुता समा जाती है तथा धर्म का मूल उद्देश्य क्या है नहीं जानते। धर्म के वास्तविक अशुभचिन्तक तथा क़ौम के वही दुराचारी लोग होते हैं जो वास्तविकता और सच्चा अध्यात्म ज्ञान तथा सच्ची पवित्रता की कुछ परवाह नहीं रखते और केवल कामवासना संबंधी आवेगों का नाम धर्म रखते हैं। समस्त समय व्यर्थ लड़ाई-झगड़ों तथा गन्दी बातों में व्यय करते हैं और जो समय ख़ुदा के साथ अकेले में व्यय करना चाहिए वह उन्हें स्वप्न में भी उनको प्राप्त नहीं होता। बुज़ुर्गों की निन्दा, तिरस्कार तथा अपमान करना उन का काम होता है और स्वयं उनका आन्तरिक कामवासना संबंधी अपवित्रताओं से इतना भरा हुआ होता है जैसा कि शौचालय मलिनता से। जीभ पर बक-बक बहुत किन्तु हृदय ख़ुदा से दूर तथा संसार की गन्दगियों में लिप्त, इस पर क़ौम के सुधारक होने का दावा -

ख़ुफ्तः रा ख़ुफ्तः के कुनद बेदार

ऐसे लोग न भयभीत हृदय से किसी की बात सुन सकते हैं और न सहनशीलता से उत्तर दे सकते हैं। उनके विचार में सम्पूर्ण इस्लाम आरोपों का निशाना है। कोई बात भी अच्छी नहीं और अद्‌भुत यह कि वह इस अवस्था पर प्रसन्न होते हैं तथा किसी अन्य जाति के मनुष्य पर कोई दुष्टतापूर्ण हाथ डालकर समझते हैं कि हमने बहुत पुण्य का कार्य किया है या बड़ा साहस और वीरता दिखाई है, किन्तु खेद कि वर्तमान युग में अधिकांश जातियां इसी द्वेष का नाम धर्म समझती हैं और हम इस खराब आदत से सामान्य मुसलमानों को भी बाहर नहीं रखते अत: वे ख़ुदा के निकट अधिक पकड़ योग्य हैं, क्योंकि उन्हें वह धर्म दिया गया था जिसका नाम इस्लाम है, जिसके अर्थ ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में स्वयं प्रकट किए हैं। जैसा कि कहा - بَلٰى ۚ مَنْ اَسْلَمَ وَجْهَهٗ لِلّٰهِ وَهُوَ مُحْسِنٌ[1] अर्थात् इस्लाम के दो भाग हैं - (1) यह कि ख़ुदा की प्रसन्नता में ऐसा लीन हो जाना कि अपनी प्रसन्नता छोड़कर उसकी प्रसन्नता चाहने के

---

[1] अलबक़रह - 113

लिए उसकी चौखट पर सर रख देना।

(2) सामान्य रूप से समस्त मानवजाति से नेकी करना।

अत: यह धर्म कैसा प्रिय, नेक तथा पवित्र सिद्धान्तों पर आधारित था जिसकी शिक्षाओं से वे बहुत दूर हो गए और यह विनाश उस समय पैदा हुआ जबकि पवित्र क़ुर्आन की शिक्षा से जानबूझ कर या ग़लती से मुख फेरा गया क्योंकि मुख फेरना बाह्य हो या अर्थ संबंधी ख़ुदा के वरदान से वंचित कर देता है। यहां हमारा अभिप्राय शाब्दिक तौर पर मुख फेरने से यह है कि एक व्यक्ति ख़ुदा तआला के कलाम से सर्वथा इन्कारी हो। आन्तरिक मुख फेरने से अभिप्राय यह है कि प्रत्यक्षत: इन्कारी तो न हो किन्तु, रस्म, आदत, कामवासना संबंधी उद्देश्य तथा दूसरों के कथनों के नीचे दब कर ऐसा हो जाए कि ख़ुदा तआला के कलाम की कुछ भी परवाह न करे।

अत: ये दो दुष्ट रोग हैं जिन से बचने के लिए सच्चे धर्म का अनुसरण करने की आवश्यकता है अर्थात् प्रथम यह रोग कि ख़ुदा को एक भागीदार रहित, सर्वगुण सम्पन्न एवं पूर्ण सामर्थ्यवान स्वीकार न करके उसके अनिवार्य अधिकारों से मुख फेर लेना और एक कृतघ्न मनुष्य की भांति उसके उन वरदानों से इन्कार करना जो तन-मन के कण-कण में संलग्न हैं। दूसरे यह कि मानव जाति के अधिकारों की आदयगी में कमी करना तथा प्रत्येक व्यक्ति जो अपने धर्म और जाति से पृथक हो या उसका विरोधी हो उसको कष्ट देने के लिए एक विषैले सांप के समान बन जाना तथा समस्त मानवाधिकारों को एक ही बार में नष्ट कर देना। ऐसे मनुष्य वास्तव में मुर्दा हैं तथा जीवित ख़ुदा से अपरिचित। जीवित ईमान लाना कदापि संभव नहीं जब तक मनुष्य जीवित ख़ुदा की झलकियां तथा महान आयतों से लाभान्वित न हो। यों तो नास्तिक लोगों के अतिरिक्त समस्त संसार किसी न किसी रूप से ख़ुदा तआला के अस्तित्व को मानता है किन्तु चूंकि वह मानना अपना स्वनिर्मित विचार है और जीवित ख़ुदा की अपनी व्यक्तिगत झलक से नहीं है। इसलिए ऐसे विचार से जीवित ईमान प्राप्त नहीं हो सकता, जब तक ख़ुदा तआला की

ओर से انا الموجود (मैं मौजूद हूं) की आवाज़ वैभवशाली शक्तियों के साथ चमत्कारिक रूप में तथा स्वभाव से हटकर सुनाई न दे और क्रियात्मक तौर पर उसके साथ अन्य शक्तिशाली निशान न हों उस समय तक उस जीवित ख़ुदा पर ईमान आ नहीं सकता। ऐसे लोग मात्र सुनी सुनाई बातों का नाम ख़ुदा या परमेश्वर रखते हैं और केवल गले पड़ा ढोल बजा रहे हैं और अपनी जान-पहचान की सीमा से अधिक शेखी बघारना अपना व्यवसाय बना रखा है।

वास्तविक ख़ुदा की समस्त पहचान इसी में निर्भर है कि उस जीवित ख़ुदा तक पहुंच हो जाए कि जो अपने सानिध्य प्राप्त मनुष्यों से नितान्त सफाई से वार्तालाप करता है तथा अपने प्रतापी एवं आनंदमय कलाम से उनको धैर्य और आराम प्रदान करता है तथा जिस प्रकार एक मनुष्य दूसरे मनुष्य से बोलता है उसी प्रकार निश्चित तौर पर जो सन्देह एवं शंका से पूर्णतया पवित्र है उन से बातें करता है, उनकी बात सुनता है और उसका उत्तर देता है तथा उनकी दुआओं को सुनकर दुआ स्वीकार करने से उनको सूचित करता है और एक ओर आनन्दमय और वैभवशाली कथन से तथा दूसरी ओर चमत्कारपूर्ण कार्य से और अपने शक्तिशाली एवं महान निशानों से उन पर सिद्ध कर देता है कि मैं ही ख़ुदा हूं। वह प्रथम भविष्यवाणी के तौर पर उनसे अपने समर्थन, सहयोग तथा विशेष प्रकार की सहायता के वादे करता है और फिर दूसरी ओर अपने वादों की प्रतिष्ठा बढ़ाने के लिए एक संसार को उनके विरुद्ध कर देता है और वे लोग अपनी सम्पूर्ण शक्ति, समस्त छल-प्रपंच तथा प्रत्येक प्रकार की योजनाओं से प्रयास करते हैं कि ख़ुदा के उन वादों को टाल दें जो उसके मान्य पुरुषों के समर्थन, सहयोग और विजय के बारे में हैं। ख़ुदा उन सम्पूर्ण प्रयासों को नष्ट करता है। वे उपद्रव का बीज बोते हैं और ख़ुदा उसकी जड़ बाहर निकाल फेंकता है। वे अग्नि लगाते हैं और ख़ुदा उसे बुझा देता है। वे नाख़ूनों तक का ज़ोर लगाते हैं अन्ततः ख़ुदा उनकी योजनाओं को उन्हीं पर उल्टा कर मारता है। ख़ुदा के मान्य और सत्यनिष्ठ नितान्त सीधे और सरल

स्वभाव तथा ख़ुदा तआला के सामने उन बच्चों के समान होते हैं जो मां के आंचल में हों। संसार उन से शत्रुता करता है क्योंकि वे संसार में से नहीं होते, तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के छल-प्रपंच उनके समूल विनाश के लिए किए जाते हैं, क़ौमें उनको कष्ट देने के लिए एकमत हो जाती हैं और समस्त अयोग्य लोग एक ही धनुष से उनकी ओर बाण चलाते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार के झूठ और लांछन लगाए जाते हैं ताकि किसी प्रकार वे नष्ट हो जाएं तथा उनका निशान न रहे किन्तु अन्ततः ख़ुदा तआला अपनी बातों को पूर्ण करके दिखा देता है। इसी प्रकार उनके जीवन में यह मामला उन से जारी रहता है कि एक ओर वे सही स्पष्ट और निश्चित वार्तालाप से सम्मानित किए जाते हैं और परोक्ष की बातें जिनका ज्ञान मनुष्यों की शक्ति से बाहर है उन पर दयालु एवं सामर्थ्यवान ख़ुदा अपने स्पष्ट कलाम के माध्यम से प्रकट करता रहता है और दूसरी ओर चमत्कारपूर्ण कार्यों से जो उन बातों को सच करके दिखाते हैं, उनके विश्वास को बहुत ही मांगलिक और शुभ किया जाता है तथा मानव स्वभाव जितनी मांग करता है कि ख़ुदा की निश्चित पहचान के लिए इतना पहचान करने का ज्ञान चाहिए वह ज्ञान कथनीय तथा क्रियात्मक झलक से पूर्ण किया जाता है, यहां तक कि एक कण के बराबर भी अंधकार मध्य में नहीं रहता। यह ख़ुदा है जिसकी इन कथनीय और क्रियात्मक झलकियों के पश्चात् जो हज़ारों इनाम अपने अन्दर रखती हैं और हृदय पर नितान्त शक्तिशाली प्रभाव करती हैं मनुष्य को सच्चा और जीवित ईमान प्राप्त होता है और ख़ुदा से एक सच्चा एवं पवित्र संबंध होकर कामवासना संबंधी अपवित्रताएं दूर हो जाती हैं तथा समस्त कमज़ोरियां दूर हो कर आकाशीय प्रकाश की तीव्र किरणों से आन्तरिक अंधकार समाप्त होता है और एक अद्भुत परिवर्तन प्रकट होता है।

अतः जो धर्म उस ख़ुदा को जिसका इन विशेषताओं से विशेष्य होना सिद्ध है प्रस्तुत नहीं करता और ईमान को केवल पूर्वकालीन क़िस्सों-कहानियों तथा ऐसी बातों तक सीमित रखता है जो देखने और कहने में नहीं आई हैं। वह धर्म कदापि सच्चा धर्म नहीं

है तथा ऐसे काल्पनिक ख़ुदा का अनुसरण ऐसा ही है जैसे एक मुर्दे से आशा रखना कि जीवितों जैसे कार्य करेगा। ऐसे ख़ुदा का होना या न होना बराबर है जो हमेशा ताज़ा तौर पर अपने अस्तित्व को स्वयं सिद्ध नहीं करता। मानो वह एक मूर्ति है जो न बोलती है और न सुनती है और न प्रश्न का उत्तर देती है और न अपनी सामर्थ्यवान शक्ति का ऐसे तौर पर प्रदर्शन कर सकती है जो एक पक्का नास्तिक भी उसमें सन्देह न कर सके।

स्मरण रखना चाहिए कि जैसे हमें प्रकाश प्रदान करने के लिए प्रतिदिन ताज़ा तौर पर सूर्य निकलता है और हम इतने क़िस्से से कुछ लाभ नहीं उठा सकते और न कुछ सांत्वना पा सकते हैं कि हम अंधेरे में हों और प्रकाश का नामो निशान न हो और यह कहा जाए कि सूर्य तो है परन्तु वह किसी पूर्व युग में उदय होता था और अब वह सदैव के लिए छिपा हुआ है ऐसा ही वह वास्तविक सूर्य जो हृदयों को प्रकाशमान करता है प्रतिदिन ताज़ा से ताज़ा उदय होता है और अपनी कथनीय एवं क्रियात्मक झलकियों से मनुष्य को भाग देता है। वही ख़ुदा है और वही धर्म सच्चा जो ऐसे ख़ुदा के अस्तित्व का शुभ सन्देश देता है और ख़ुदा का दर्शन कराता है, उसी जीवित ख़ुदा से हृदय पवित्र होता है।

यह आशा मत रखो कि कोई अन्य योजना मानवीय प्रवृत्ति को पवित्र कर सके। जिस प्रकार अंधकार को केवल प्रकाश ही दूर करता है। इसी प्रकार पाप के अंधकार का उपचार केवल वे ख़ुदा की कथनीय एवं क्रियात्मक झलकियां हैं जो चमत्कारीय रूप में तीव्र किरणों के साथ ख़ुदा की ओर से किसी भाग्यशाली हृदय पर उतरती हैं तथा उसको दिखा देती हैं कि ख़ुदा है और समस्त सन्देहों की अपवित्रता को दूर कर देती हैं तथा धैर्य और संतोष प्रदान करती हैं। अत: उस उच्चतम शक्ति के शक्तिशाली आकर्षण से वह भाग्यशाली आकाश की ओर उठाया जाता है। इसके अतिरिक्त जितने और उपचार प्रस्तुत किए जाते हैं समस्त व्यर्थ बनावट है। हां पूर्ण तौर पर पवित्र होने के लिए केवल मा'रिफ़त ही पर्याप्त नहीं अपितु उसके साथ दर्द से भरी दुआओं का क्रम भी जारी

रहना आवश्यक है, क्योंकि ख़ुदा तआला बेपरवाह निःस्पृह है। उसके वरदानों को अपनी ओर खींचने के लिए ऐसी दुआओं की नितान्त आवश्यकता है जो रोना, सत्य और निष्ठा तथा हृदय की पीड़ा से भरपूर हों। तुम देखते हो कि दूध पीता बच्चा यद्यपि अपनी मां को भलीभांति पहचानता है और उससे प्रेम भी रखता है। एक ओर बच्चा कष्टदायक भूख से रोता है और दूसरी ओर उसके रोने का मां के हृदय पर प्रभाव पड़ता है तथा दूध उतरता है। अतएव इसी प्रकार ख़ुदा तआला के सामने प्रत्येक अभिलाषी को अपने रोने और गिड़गिड़ाने से अपनी रूहानी (आध्यात्मिक) भूख-प्यास का प्रमाण देना चाहिए ताकि वह रूहानी दूध उतरे और उसे तृप्त करे।

अतः पवित्र एवं शुद्ध होने के लिए केवल मा'रिफ़त पर्याप्त नहीं अपितु बच्चों की भांति कष्टपूर्ण रोना और गिड़गिड़ाना भी आवश्यक है। निराश मत हो और यह विचार मत करो कि हमारी प्रवृत्ति पापों से बहुत ग्रसित है। हमारी दुआएं क्या वस्तु हैं और क्या प्रभाव रखती हैं क्योंकि मानव प्रवृत्ति जो वास्तव में ख़ुदा के प्रेम के लिए पैदा की गई है वह यद्यपि पाप की अग्नि से अत्यधिक भड़क जाए फिर भी उसमें पश्चाताप की एक ऐसी शक्ति है जो उस अग्नि को बुझा सकती है। जैसा कि तुम देखते हो कि एक पानी को अग्नि से कैसा ही गर्म किया जाए किन्तु जब उसे अग्नि पर डाला जाए तो वह अग्नि को बुझा देगा।

यही एक उपाय है कि जब से ख़ुदा तआला ने मनुष्यों को पैदा किया है इसी उपाय से उनके हृदय पवित्र एवं शुद्ध होते रहे हैं अर्थात् इसके बिना जो जीवित ख़ुदा स्वयं अपनी कथनीय तथा क्रियात्मक झलक से अपने अस्तित्व, अपनी शक्ति तथा अपनी ख़ुदाई प्रकट करे और अपना चमकता हुआ रोब दिखाए अन्य किसी उपाय से मनुष्य पाप से पवित्र नहीं हो सकता।

बौद्धिक तौर पर भी यही बात प्रकट एवं सिद्ध है कि मनुष्य केवल उसी वस्तु को महत्त्व देता है और अपने हृदय में उसी का रोब जमाता है जिसकी प्रतिष्ठा एवं शक्ति

पूर्ण आध्यात्म ज्ञान के द्वारा वह ज्ञात कर लेता है। उदाहरणतया स्पष्ट है कि मनुष्य उस छिद्र में हाथ नहीं डालता जिसके बारे में उसे विश्वास हो कि उसमें सांप है और ऐसी वस्तु को कदापि नहीं खाता, जिसको विश्वास करता है कि वह विष है। फिर क्या कारण कि वह इस प्रकार ख़ुदा तआला से नहीं डरता और हज़ारों दुराचार दुष्कर्म धृष्टतापूर्वक करता है और यद्यपि वृद्धावस्था तक भी बारी पहुंच जाए फिर भी नहीं डरता। इसका कारण यही है कि वह वास्तविक प्रतिशोध लेने वाले के अस्तित्व एवं हस्ती से सर्वथा अपरिचित है जो पाप का दण्ड दे सकता है।

खेद कि अधिकांश मनुष्यों ने दुर्भाग्य से इस सिद्धान्त की ओर ध्यान नहीं दिया और पाप से पवित्र होने के लिए अपने हृदय से ऐसे व्यर्थ उपाय निकाले हैं कि वे पाप पर और भी अधिक दु:साहस करते हैं। उदाहरणतया यह विचार कि जैसे हज़रत ईसा[अ.] के सलीब दिए जाने पर ईमान लाना और उनको ख़ुदा समझना मनुष्य के समस्त पाप क्षमा हो जाने का कारण है। क्या ऐसे विचार से आशा की जा सकती है कि मनुष्य में पाप से सच्ची नफ़रत पैदा करे। बिल्कुल स्पष्ट है कि प्रत्येक विरोधी वस्तु अपनी विरोधी से दूर होती है। सर्दी को गर्मी दूर करती है और अंधकार के निवारण का उपचार प्रकाश है फिर यह उपचार किस प्रकार का है कि ज़ैद को सलीब दिए जाने से बकर पाप से मुक्त हो जाए अपितु यह मानवीय ग़लतियां हैं जो लापरवाही तथा संसार की पूजा करने के युग में हृदयों में समा जाती हैं तथा जिन अधम विचारों के कारण संसार में मूर्ति पूजा ने प्र-चलन पाया है, वास्तव में ऐसे ही कामवासना संबंधी उद्देश्यों के कारण यह विचार सलीब तथा कफ़्फ़ार: का ईसाइयों में रिवाज पा गया है।

मूल बात यह है कि मनुष्य की प्रवृत्ति कुछ ऐसी है कि ऐसे मार्ग को अधिक पसन्द कर लेती है जिसमें कोई मेहनत एवं कठिनाई नहीं परन्तु सच्ची पवित्रता बहुत से दु:ख और तपस्याओं को चाहती है तथा यह पवित्र जीवन प्राप्त नहीं हो सकता जब तक मनुष्य मृत्यु का प्याला न पी ले। अत: जैसा कि मनुष्य का स्वभाव है कि वह संकीर्ण एवं

कठिन मार्गों से बचता है तथा सरल और आसान उपाय ढूंढता है इसी प्रकार उन लोगों को यह उपाय सलीब जो केवल मुख का इक़रार है और रूह (आत्मा) पर किसी मेहनत का प्रभाव नहीं बहुत पसन्द आ गया है, जिसके कारण ख़ुदा तआला का प्रेम ठण्डा पड़ गया है तथा नहीं चाहते कि पापों से नफ़रत करके अपने अन्दर पवित्र परिवर्तन पैदा करें। वास्तव में सलीबी आस्था एक ऐसी आस्था है जो उन लोगों को प्रसन्न कर देती है जो सच्ची पवित्रता प्राप्त करना नहीं चाहते और किसी ऐसे नुस्ख़ः की खोज में रहते हैं कि अपवित्र जीवन भी मौजूद हो और पाप भी क्षमा हो जाएं। इसलिए वे बहुत सी गन्दगियों के बावजूद विचार कर लेते हैं कि मात्र मसीह के ख़ून पर ईमान लाने से पाप से पवित्र हो गए, किन्तु यह पवित्र होना वास्तव में ऐसा ही है जैसा कि एक फोड़ा जो पीप से भरा हुआ हो और बाहर से चमकता हुआ दिखाई दे और यदि विचार करने वाले लोग हों तो उस सलीबी नुस्ख़ः का ग़लत होना स्वयं सलीब के पुजारियों की परिस्थितियों से स्पष्ट हो सकता है कि वे कहां तक संसार-पूजा तथा लोभ-लालच को त्याग कर ख़ुदा तआला के प्रेम में लीन हो गए हैं। जो व्यक्ति यूरोपीय देशों का भ्रमण करे वह स्वयं देख लेगा कि उन लोगों में संसार का ऐश्वर्य निरंकुशता, मदिरापान, कामलोलुपता तथा अन्य दुराचार एवं दुष्कर्म किस स्तर तक पाए जाते हैं जो धर्म के महा समर्थक कहलाते हैं तथा जो इस देश के मूर्ख लोगों के समान नहीं अपितु शिक्षित एवं सभ्य हैं। सब से अधिक मसीह के ख़ून पर ज़ोर देने वाले पादरी लोग हैं अत: उनके अधिकांश लोग मदिरापान में जो समस्त बुराइयों की जड़ है ग्रस्त हैं अपितु कुछ की परिस्थितियां जो अख़बारों में प्रकाशित होती रहती हैं ऐसी लज्जाजनक हैं कि जिनका न कहना ही उचित है। अत: हम ने आज ही एक अख़बार में पढ़ा है कि विलायत से एक पादरी साहिब पकड़ा आ रहा है जिसने लड़कियों के साथ दुराचार किया है। उस पादरी साहिब का नाम डाक्टर सान्डी लैण्डज़ है। कथित पादरी साहिब भठिण्डारा नागपुर में मिशनरी अनाथालय के प्रिंसिपल थे। अगस्त की बात है। 24 अगस्त की रात को उनके कमरे में

एक लड़की पाई गई। उत्तर न दे सके। त्यागपत्र देकर चले जाने पर मालूम हुआ कि सत्रह लड़कियों से दुष्कर्म किया पुलिस के बयान में और भी नई-नई बातें सामने आईं। मालूम हुआ कि अवैध गर्भ भी गिराया। वारंट निकला, विलायत में गिरफ़्तार हुए। हिन्दुस्तान पहुंचने पर हाईकोर्ट बम्बई के सेशन कोर्ट में मुक़द्दमा चलेगा। देखो पायनियर तथा अख़बार-ए-आम 8 फ़रवरी 1905 ई. प्रथम कालम तथा 9 फरवरी 1905 ई. पृष्ठ-6 दूसरा कालम। अब स्पष्ट है कि जबकि ये लोग जो बड़े पुनीत पादरी कहलाते हैं तथा मसीह के ख़ून से लाभ उठाने में प्रथम स्थान पर हैं उन की यह दशा है तो दूसरे बेचारे इस नुस्ख़े से क्या लाभ उठाएंगे। अत: स्मरण रहे कि वास्तविक पवित्रता प्राप्त करने का यह उपाय कदापि नहीं है और समय आता जाता रहता है अपितु निकट है कि लोग इस ग़लत उपाय पर स्वयं सचेत हो जाएंगे। उपाय वही है जो हमने वर्णन किया है। प्रत्येक व्यक्ति जो ख़ुदा तआला की ओर से आया है इसी द्वार से प्रवेश किया है। हां यह द्वार बहुत संकीर्ण है और इसके अन्दर प्रवेश करने वाले बहुत थोड़े हैं क्योंकि इस द्वार की दहलीज़ मौत है तथा ख़ुदा को देखकर उसके मार्ग में अपनी सम्पूर्ण शक्ति तथा सम्पूर्ण अस्तित्व से खड़े हो जाना उसकी चौखट है। अत: बहुत ही थोड़े हैं जो इस द्वार में प्रवेश करना चाहते हैं। खेद कि हमारे देश में ईसाई सज्जनों को तो हज़रत मसीह के ख़ून के विचार ने इस द्वार से दूर डाल दिया और आर्य लोगों को आवागमन के विचार और तौब: स्वीकार न होने की आस्था ने इस द्वार से वंचित कर दिया क्योंकि उनके विचार में पाप के पश्चात् भिन्न-भिन्न प्रकार की योनियों में पड़ने के अतिरिक्त इस जीवन में पवित्र होने का अन्य कोई उपाय नहीं और तौब: अर्थात् ख़ुदा तआला की ओर एक मृत्यु की दशा बनाकर हार्दिक निष्ठा से लौटना और मृत्यु के समान स्थिति बना कर अपनी क़ुर्बानी स्वयं अदा करना उनके निकट एक व्यर्थ विचार है। अत: ये दोनों पक्ष उस वास्तविक मार्ग से वंचित हैं।

आर्यों के लिए और भी कठिनाइयां हैं कि उनके लिए ख़ुदा तआला पर विश्वास

करने का कोई भी मार्ग खुला नहीं। न बौद्धिक न आकाशीय। बौद्धिक इसलिए नहीं कि उनके विचार के अनुसार रूहें अपनी सम्पूर्ण शक्तियों सहित स्वयंभू हैं और प्रकृति अर्थात् संसार की वस्तुएं अपने सम्पूर्ण गुणों सहित स्वयंभू हैं तो फिर परमेश्वर के अस्तित्व पर कौन सा बौद्धिक तर्क रहा ? क्योंकि यदि सब कुछ स्वयंभू है तो फिर क्या कारण कि इन वस्तुओं का जोड़ स्वयंभू नहीं। अतएव यह धर्म नास्तिक विचारधारा से बहुत निकट है और यदि ख़ुदा ने इन लोगों को इस ग़लत मार्ग से तौब: प्राप्त न की तो किसी दिन सब नास्तिक हो जाएंगे। इसी प्रकार आकाशीय मार्ग से भी ख़ुदा तआला को पहचानने से वंचित हैं क्योंकि आकाशीय मार्ग से अभिप्राय आकाशीय निशान हैं जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर ताज़ा से ताज़ा निशान होते हैं जिनको जीवित ख़ुदा पर ईमान लाने वाला व्यक्ति देखता रहता है और निश्चित तौर पर उस का अधिकार प्रत्येक वस्तु पर देखता है। अत: ये लोग उन निशानों से बिल्कुल इन्कारी हैं। इसलिए ख़ुदा को पहचानने के दोनों द्वार इन लोगों पर बन्द हैं। हां मात्र द्वेष के तौर पर धार्मिक शास्त्रार्थों (बहसों) में बड़ा जोश दिखाते हैं। कठोर शब्द, गालियां और मुंह की चपलता में एक प्रकार से पादरी लोगों से भी कुछ अधिक अग्रसर हैं किन्तु ख़ुदा तआला की पहचान का ज्ञान उनको कदापि प्राप्त नहीं, क्योंकि प्रथम तो ख़ुदा तआला बौद्धिक तौर पर अपनी सृजन करने की विशेषता से पहचाना जाता है परन्तु उनके विचार में ख़ुदा तआला स्रष्टा नहीं है। अत: उत्पादों की दृष्टि से उनके पास उसके अस्तित्व पर कोई प्रमाण नहीं। ख़ुदा तआला को पहचानने का दूसरा मार्ग आकाशीय निशान हैं किन्तु वे उन से इन्कारी तथा उस मार्ग से सर्वथा वंचित हैं और केवल परमेश्वर के नाम के शब्द हाथ में हैं तथा उसके अस्तित्व से अनभिज्ञ। खेद ये लोग नहीं जानते कि मनुष्य अपने मुख से हज़ार बक-बक करे उस से क्या लाभ जब तक उसको अपने ख़ुदा की ऐसी पहचान प्राप्त न हो जाए जिससे उसके अधम जीवन पर मृत्यु आ जाए और उसका हृदय ख़ुदा तआला के प्रेम से भर जाए तथा उसे पाप से घृणा हो जाए।

यों तो प्रत्येक व्यक्ति दावा कर सकता है कि मैं ऐसा ही हूं किन्तु सच्चे उपासकों के ये लक्षण हैं कि ख़ुदा तआला से सच्चे प्रेम के कारण उनमें एक बरकत पैदा हो जाती है तथा ख़ुदा तआला की कथनीय एवं क्रियात्मक झलक उनके साथ हो जाती है अर्थात् वे ख़ुदा तआला से परस्पर वार्तालाप करने वाले हो जाते हैं और ख़ुदा तआला के चमत्कारिक कार्य उनमें प्रकट होते हैं और ख़ुदा तआला उन पर ऐसे बहुत से इल्हाम प्रकट करता है जिनमें भावी सहायताओं के वादे होते हैं और फिर दूसरे समय में वे सहायताएं प्रकट हो जाती हैं तथा इस प्रकार से वे अपने ख़ुदा को पहचान लेते हैं और विशेष निशानों के साथ अन्य से विशेष्य हो जाते हैं। उनको एक आकर्षण शक्ति दी जाती है जिस से लोग उन की ओर खींचे जाते हैं और ख़ुदा का प्रेम उनके मुख पर बरसता है और यदि वह अन्तर न हो तो फिर हर एक दुष्चरित्र जो गुप्त तौर पर व्यभिचारी, पापी, दुराचारी, मदिरापान करने वाला और अपवित्र स्वभाव हो नेक कहला सकता है। फिर वास्तविक नेक और इस कृत्रिम नेक में अन्तर क्या होगा। अत: अन्तर करने के लिए सदैव से ख़ुदा तआला का यह स्वभाव है कि सच्चों का चमत्कारिक जीवन होता है और ख़ुदा की सहायता उन के साथ रहती है और इस प्रकार से साथ होती है कि वह सर्वथा चमत्कार होता है।

स्मरण रखना चाहिए कि एक सच्चे का जीवन पृथ्वी और आकाश से प्राय: ख़ुदा तआला के अस्तित्व को सिद्ध करता है क्योंकि किसी ने नहीं देखा कि पृथ्वी और आकाश को ख़ुदा ने अपने हाथ से बनाया। केवल इस जगत की नीतिपूर्ण कारीगरी को देखकर और उसकी निर्माण प्रक्रिया को सुदृढ़ और अधिक मज़बूत पाकर सद्बुद्धि इस बात की आवश्यकता समझती है कि इन अद्वितीय रचनाओं का कोई रचयिता होना चाहिए किन्तु बुद्धि अपने आध्यात्म ज्ञान में उस सीमा तक नहीं पहुंचती कि वास्तव में वह रचयिता मौजूद भी है क्योंकि उसने उस रचयिता को बनाते नहीं देखा और बौद्धिक तौर पर ख़ुदा को पहचानने का समस्त आधार केवल रचयिता की आवश्यकता पर रखा गया है, न यह कि उस का होना देखा गया है परन्तु सच्चे का चमत्कारिक जीवन निश्चित तौर पर तथा

अवलोकन की पद्धति में ख़ुदा तआला के अस्तित्व को दिखाता है क्योंकि सच्चा अपनी सम्पूर्ण प्रारंभिक अवस्था में एक तुच्छ कण की भांति होता है या एक राई के बीज की तरह जिसको एक किसान ने बोया तथा नितान्त अधम स्थिति में पड़ा हुआ होता है तब वह्यी के द्वारा ख़ुदा संसार को सूचित करता है कि देखो मैं इसको बनाऊंगा, मैं सितारों की तरह इसमें चमक डालूंगा और आकाश की भांति इसे बुलन्द करूंगा तथा एक कण को एक पर्वत के समान कर दिखाऊंगा। तत्पश्चात् इस बात के बावजूद कि दुनिया के तमाम दुष्ट यह चाहते हैं कि वह ख़ुदा का इरादा स्थगन की अवस्था में रहे तथा नाख़ूनों तक ज़ोर लगाते हैं कि वह इरादा होने न पाए परन्तु वह रुक नहीं सकता जब तक पूर्ण न हो। ख़ुदा का हाथ समस्त बाधाओं को दूर करके उसे पूरा करता है। वह एक अज्ञात को अपनी भविष्यवाणी के अनुसार एक जमाअत बना देता है, वह समस्त जिज्ञासुओं को उसकी ओर आकृष्ट करता है। वह उस अज्ञात व्यक्ति को ऐसी ख्याति प्रदान करता है कि कभी उसके बाप-दादों को प्राप्त नहीं हुई, वह प्रत्येक मैदान में उसका हाथ पकड़ता है तथा प्रत्येक युद्ध में उसको विजय देता है और एक संसार को उसका दास करता है तथा लाखों लोगों को उसकी ओर खींच लाता है और उनके हृदयों में उसकी शिक्षा बैठा देता है, रूहुल क़ुदुस से उसकी सहायता करता है। वह उसके शत्रुओं का शत्रु और उसके मित्रों का मित्र हो जाता है और उसके शत्रु से वह स्वयं लड़ता है, इसीलिए मैंने कहा है कि सच्चे का चमत्कारिक जीवन आकाश एवं पृथ्वी से अधिक ख़ुदा तआला के अस्तित्व को सिद्ध करता है क्योंकि लोगों ने पृथ्वी और आकाश को ख़ुदा के हाथ से स्वयं बनते नहीं देखा परन्तु वे स्वयं अपनी आंखों से देख लेते हैं कि ख़ुदा सच्चे के प्रताप की इमारत को अपने हाथ से बनाता है। वह एक लम्बे समय पूर्व सूचना दे देता है कि मैं ऐसा करूंगा और उसे ऐसा बना दूंगा फिर कठिन बाधाओं तथा संभवत: अत्यधिक हस्तक्षेपों के बावजूद जो दुष्ट लोगों की ओर से होते हैं ऐसा ही करके दिखा देता है।

अत: यह निशान सत्याभिलाषी को दृढ़ विश्वास तक पहुंचाता है और वह ख़ुदा

तआला के अस्तित्व पर एक ठोस प्रमाण होता है परन्तु उनके लिए जो ख़ुदा तआला के अभिलाषी हैं और अभिमान नहीं करते और सच्चाई को पाकर विनयपूर्वक स्वीकार कर लेते हैं। इस युग में भी ख़ुदा तआला ने ऐसे बहुत से निशान एकत्र किए हैं। काश लोग उन पर विचार करते और स्वयं को विश्वास एवं मा'रिफ़त के दीपक से प्रकाशित करके मुक्ति के योग्य ठहरा देते, किन्तु दुष्ट मनुष्य को ख़ुदा के निशानों से मार्ग दर्शन प्राप्त करने का सौभाग्य नहीं। वह प्रकाश को देखकर आंखें बन्द कर लेता है ताकि ऐसा न हो कि प्रकाश उसकी आंखों को प्रकाशमान करे और मार्ग दिखाई दे। दुष्ट व्यक्ति हज़ार निशान देख कर उस से मुख फेर लेता है तथा एक बात जिसे वह अपनी ही मूर्खता से समझ नहीं सका बार-बार प्रस्तुत करता है। वह व्यक्ति जो ख़ुदा तआला की ओर से आता है उस पर यह अनिवार्य नहीं है कि ऐसे निशान दिखाए जिस से सितारे पृथ्वी पर गिरें या सूर्य पश्चिम से उदय हो या बकरी को मनुष्य बना कर दिखाए या लोगों के समक्ष आकाश पर चढ़ जाए और उन के समक्ष ही उतरे तथा आकाश से एक लिखी हुई किताब लाए जिसे लोग स्वयं हाथों में लेकर पढ़ लें या उसके समस्त मकान सोने के बन जाएं या लोगों के मरे हुए पूर्वज उसके हाथ से जीवित होकर कब्रों से बोलते और चिल्लाते हुए निकलें तथा अपने बेटों को ला'नत करें और धिक्कार करके कहें कि यह तो वास्तव में ख़ुदा का सच्चा रसूल था। यह तुम ने कैसा क्रोध किया कि उसके इन्कारी हो गए हम स्वयं अपनी आंखों से देख आए हैं कि उस पर ईमान लाने वाला सीधा स्वर्ग की ओर जाता है और उसका इन्कार करने वाला नितान्त अधम अवस्था में नर्क में डाला जाता है। शहर में जल्से करें और समस्त इन्कार करने वालों को उन जल्सों में बुलाएं और अपनी सन्तान को कहें कि तुम जानते हो कि हम तुम्हारे बाप-दादा हैं और तुम जानते हो कि हम उस व्यक्ति के कितने बड़े शत्रु थे परन्तु जब हम मर गए तो उसकी शत्रुता के कारण हम नर्क में डाले गए। देखो हमारे शरीर अग्नि में झुलसे हुए तथा काले हो रहे हैं और तुम्हारे सामने हम क़ब्रों से निकले हैं। तथापि गवाही दें कि यह व्यक्ति

ख़ुदा की ओर से तथा सच्चा नबी है। स्मरण रखो कि ऐसे भाषण मुर्दों ने कभी क़ब्रों से निकल कर नहीं दिए तथा कभी और किसी युग में ऐसे जल्से नहीं हुए कि कुछ लोगों के बाप-दादा क़ब्रों में से जीवित होकर निकल आएं हों। तब जल्से का एक स्थान निर्धारित हो कर शहर के समस्त लोग उन मुर्दों के सामने बुलाए गए हों तथा उन मुर्दों ने हज़ारों लोगों के सामने खड़े होकर उच्च स्वर में ये भाषण दिए हों कि हे दर्शक गण ! आप का धन्यवाद करते हैं कि आप हमारा भाषण सुनने के लिए आए। आप लोग जानते हैं और हमें भलीभांति पहचानते हैं कि हम अमुक-अमुक मुहल्ले के रहने वाले और अमुक-अमुक व्यक्ति के दादा, पड़दादा हैं तथा कुछ वर्ष हुए कि हम प्लेग या हैज़ा से या किसी अन्य रोग से मृत्यु पा गए थे और आप लोग हमारे जनाज़: में सम्मिलित थे और आप ने ही हमें दफ़्न किया था या जला दिया था। तत्पश्चात् आप लोगों ने उस महान नबी को जो हमारे सामने सदारत की कुर्सी पर विराजमान होकर उसे सुशोभित कर रहा है नितान्त तिरस्कार के साथ अस्वीकार किया तथा उसे झूठा समझा और उससे चाहा कि चमत्कार के तौर पर कुछ मुर्दे जीवित हों। तब उसकी दुआ से हम जीवित हो गए कि जो इस समय आप लोगों के सामने खड़े हैं। लोगो आंखें खोलकर देख लो कि हम वही हैं और हम से हमारे पूरे क़िस्से पूछ लो। हम इस समय जीवित होकर चश्मदीद गवाही देते हैं कि यह व्यक्ति वास्तव में सच्चा है और हम इसको न मानने के कारण नर्क में जलते हुए आए हैं। हमारी गवाही चश्मदीद गवाही है उसे स्वीकार करो ताकि तुम नर्क से बच जाओ। अब क्या कोई अन्तरात्मा, कान्शन्स, कोई ज़मीर, कोई हृदय का प्रकाश स्वीकार करता है कि किसी मुर्दे ने जीवित होकर ऐसा भाषण दिया और फिर लोगों ने स्वीकार न किया।

अतएव जो व्यक्ति अब भी नहीं समझता कि निशान किस सीमा तक प्रकट होते हैं वह स्वयं मुर्दा है किन्तु निशानों में ऐसे भाषण मुर्दों की ओर से आवश्यक हैं तो फिर ईमान का कुछ लाभ नहीं, क्योंकि ईमान उस सीमा तक ईमान कहलाता है कि एक बात

एक कारण से प्रत्यक्ष हो तथा एक कारण से गुप्त भी हो अर्थात् एक बारीक दृष्टि से उस का प्रमाण मिलता हो और यदि बारीक दृष्टि से न देखा जाए तो सरसरी तौर पर वास्तविकता गुप्त रह सकती है परन्तु जब सारा पर्दा ही खुल गया तो कौन है जो ऐसी खुली बात को स्वीकार नहीं करेगा। अतः चमत्कारों से अभिप्राय वे स्वभाव से हटकर विलक्षण मामले हैं जो बारीक और न्यायसंगत दृष्टि से सिद्ध हों तथा ख़ुदा के समर्थन के बिना दूसरे लोग ऐसे मामलों पर समर्थ न हो सकें। इसी कारण वे बातें विलक्षण (ख़ारिक आदत) कहलाती हैं किन्तु अनादि दुर्भाग्यशाली लोग उन चमत्कारिक मामलों से लाभ प्राप्त नहीं कर सकते, जिस प्रकार कि यहूदियों ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम से कई चमत्कार देखे परन्तु उन से कुछ लाभ न उठाया और इन्कार करने के लिए एक दूसरा पहलू ले लिया कि एक व्यक्ति की कुछ भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं, जैसा कि बारह तख़्तों की भविष्यवाणी जो हवारियों के लिए की गई थी। उनमें से एक मुर्तद हो गया। यहूदियों का बादशाह होने का दावा निराधार सिद्ध हुआ और फिर तावील (व्याख्या) की गई कि इससे मेरा अभिप्राय आकाशीय बादशाहत है और यह भी भविष्यवाणी हज़रत मसीह ने की थी कि अभी इस युग के लोग जीवित होंगे कि मैं फिर संसार में आऊंगा, किन्तु यह भविष्यवाणी भी स्पष्ट तौर पर झूठी सिद्ध हुई और फिर पहले नबियों ने मसीह के बारे में यह भविष्यवाणी की थी कि वह नहीं आएगा जब तक इल्यास दोबारा संसार में न आ जाए परन्तु इल्यास न आया और यसू इब्ने मरयम ने यों ही कथित मसीह होने का दावा कर दिया, हालांकि इल्यास दोबारा संसार में न आया और जब पूछा गया तो वादा दिए गए इल्यास के स्थान पर यूहन्ना अर्थात् यह्या नबी को इल्यास ठहरा दिया। ताकि किसी प्रकार मसीह मौऊद बन जाए हालांकि पहले नबियों ने आने वाले इल्यास के बारे में यह तावील कदापि नहीं की तथा स्वयं यूहन्ना नबी ने इल्यास से अभिप्राय वही इल्यास अभिप्राय रखा जो संसार से गुज़र आया था, परन्तु मसीह ने अर्थात् यसू बिन मरयम ने अपनी बात बनाने के लिए पहले नबियों और समस्त

सच्चों की सर्वसहमति के विपरीत इल्यास आने वाले से अभिप्राय अपने पीर यूहन्ना को ठहरा दिया और विचित्र यह कि यूहन्ना अपने इल्यास होने से स्वयं इन्कारी है तथापि यसू इब्ने मरयम ने बलात् उसे इल्यास ठहरा ही दिया।

अब विचार करने की बात है कि यहूदियों ने हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम के निशानों से कुछ भी लाभ न उठाया तथा अब तक कहते हैं कि उस से कोई चमत्कार नहीं हुआ, केवल छल और धोखा था। इसीलिए हज़रत मसीह को कहना पड़ा कि इस युग के हरामकार मुझ से चमत्कार मांगते हैं उन्हें कोई चमत्कार नहीं दिखाया जाएगा।

वास्तव में चमत्कारों का उदाहरण ऐसा है जैसे चांदनी रात का प्रकाश जिस के किसी भाग में कुछ बादल भी हो किन्तु वह व्यक्ति जिसे रतौंधी हो, जो रात को कुछ देख नहीं सकता उसके लिए उस चांदनी का कुछ लाभ नहीं। ऐसा तो कदापि नहीं हो सकता और न कभी हुआ कि इस संसार के चमत्कार उसी रूप में प्रकट हों जिस रूप में प्रलय में प्रकटन होगा। उदाहरणतया दो-तीन सौ मुर्दे जीवित हो जाएं और स्वर्ग के फल उनके पास हों तथा नर्काग्नि की चिन्गारियां भी पास रखते हों और शहर-शहर भ्रमण करें और एक नबी की सच्चाई पर जो जाति के अन्दर हो गवाही दें और लोग उनको पहचान लें कि वास्तव में ये लोग मर चुके थे और अब जीवित हो गए हैं, तथा उपदेशों और भाषणों से शोर मचाएं कि वास्तव में यह व्यक्ति जो नबी होने का दावा करता है सच्चा है। अतः स्मरण रहे कि ऐसे चमत्कार कभी प्रकट नहीं हुए और न भविष्य में क़यामत (प्रलय) से पहले कभी प्रकट होंगे और जो व्यक्ति दावा करता है कि ऐसे चमत्कार कभी प्रकट हो चुके हैं वह मात्र निराधार क़िस्सों से धोखा खाए हुए हैं और उसे अल्लाह के नियम का ज्ञान नहीं। यदि ऐसे चमत्कार प्रकट होते तो संसार संसार न रहता और समस्त पर्दे खुल जाते तथा ईमान लाने का लेशमात्र भी पुण्य शेष न रहता।

स्मरण रहे कि चमत्कार केवल सत्य और असत्य में अन्तर दिखाने के लिए सत्यनिष्ठ लोगों को दिया जाता है तथा चमत्कार का मूल उद्देश्य केवल इतना है कि

बुद्धिमानों तथा न्यायकर्ताओं के निकट सच्चे और झूठे में एक अन्तर स्थापित हो जाए तथा चमत्कार उसी सीमा तक प्रकट होता है कि जो परस्पर अन्तर स्थापित करने के लिए पर्याप्त हो तथा यह अनुमान प्रत्येक युग की आवश्यकता की स्थिति के अनुसार होता है तथा चमत्कार का प्रकार भी समय की स्थिति के अनुसार ही होता है। यह बात कदापि नहीं है कि प्रत्येक पक्षपाती, असभ्य तथा दुष्प्रकृति रखने वाला यद्यपि कैसा ही ख़ुदा की हिकमत के विपरीत और आवश्यकता से अधिक कोई चमत्कार मांगे तो वह बहरहाल दिखाना ही पड़े। यह ढंग जैसा कि ख़ुदा की इच्छा के विपरीत है वैसा ही मनुष्य की ईमानी अवस्था के लिए भी हानिप्रद है क्योंकि यदि चमत्कारों का क्षेत्र ऐसा विशाल कर दिया जाए कि जो कुछ क़यामत के समय पर निर्भर रखा गया है वह सब संसार में ही चमत्कार द्वारा प्रकट हो सके तो फिर क़यामत और संसार में कोई अन्तर न होगा, हालांकि इसी अन्तर के कारण जिन शुभ कर्मों तथा उचित आस्थाओं को जो संसार में ग्रहण की जाएं पुण्य प्राप्त होता है। वही आस्थाएं तथा कर्म यदि क़यामत में ग्रहण किए जाएं तो रत्ती भर भी पुण्य प्राप्त नहीं होगा जैसा कि समस्त नबियों की किताबों और पवित्र क़ुर्आन में भी वर्णन किया गया है कि क़यामत (प्रलय) के दिन किसी बात का स्वीकार करना या कोई कर्म करना लाभ नहीं देगा तथा उस समय ईमान लाना व्यर्थ होगा, क्योंकि ईमान उस सीमा तक ईमान कहलाता है जबकि किसी गुप्त बात को स्वीकार करना पड़े परन्तु जब कि पर्दा ही खुल गया और रूहानी (आध्यात्मिक) संसार का दिन चढ़ गया तथा ऐसी बातें निश्चित तौर पर प्रकट हो गईं कि ख़ुदा पर और प्रतिफल के दिन पर सन्देह करने का कोई भी कारण रहा तो फिर किसी बात को उस समय मानना जिसको दूसरे शब्दों में ईमान कहते हैं केवल प्राप्त को प्राप्त करना होगा। अत: निशान इस श्रेणी पर खुली खुली वस्तु नहीं है जिसको मानने के लिए समस्त संसार बिना मतभेद के तथा बिना किसी बहाने तथा बिना किसी वाद-विवाद के विवश हो जाए और किसी स्वभाव के मनुष्य को उसके निशान होने में आपत्ति न रहे तथा किसी मूर्ख

से मूर्ख मनुष्य पर भी वह बात संदिग्ध न रहे।

अत: निशान और चमत्कार प्रत्येक स्वभाव के लिए एक व्यापक बात नहीं जो देखते ही स्वीकार करना आवश्यक हो अपितु निशानों से वही बुद्धिमान और न्यायकर्ता, सत्यनिष्ठ एवं ईमानदार लोग लाभ उठाते हैं जो अपने विवेक तथा दूरदर्शी और बारीक दृष्टि तथा न्यायप्रियता, ख़ुदा से भय तथा संयम द्वारा देख लेते हैं कि वे ऐसे मामले हैं जो संसार की साधारण बातों में से नहीं हैं और न एक झूठा उनके दिखाने पर समर्थ हो सकता है तथा वे समझ लेते हैं कि ये मामले मानवीय दिखावे से बहुत दूर हैं तथा मानवीय पहुंच से ऊपर हैं और उनमें एक ऐसी विशेषता तथा मुख्य लक्षण हैं जिस पर मनुष्य की साधारण शक्तियां और बनावटी योजनाएं सामर्थ्य नहीं पा सकते और वे अपनी बारीक समझ तथा विवेक के प्रकाश से इस तह तक पहुंच जाते हैं कि उनके अन्दर एक प्रकाश है और ख़ुदा के हाथ की एक सुगंध है जिस पर छल-कपट या चालाकी का सन्देह नहीं हो सकता। अत: जिस प्रकार सूर्य के प्रकाश पर विश्वास करने के लिए केवल वह प्रकाश ही पर्याप्त नहीं अपितु आंख के प्रकाश की भी आवश्यकता है ताकि उस प्रकाश को देख सके। इसी प्रकार चमत्कार के प्रकाश पर विश्वास लाने के लिए मात्र चमत्कार ही पर्याप्त नहीं है अपितु विवेक के प्रकाश की भी आवश्यकता है और जब तक चमत्कार देखने वाले की प्रकृति में सही विवेक और सद्बुद्धि का प्रकाश न हो तब तक उन का स्वीकार करना असंभव है। किन्तु दुर्भाग्यशाली मनुष्य जिसे यह विवेक का प्रकाश प्रदान नहीं किया गया वह ऐसे चमत्कारों से जो केवल विशेष सीमा तक हैं सांत्वना नहीं पाता और बार-बार यही प्रश्न करता है कि ऐसे चमत्कार के अतिरिक्त मैं किसी चमत्कार को स्वीकार नहीं कर सकता कि जो क़यामत का नमूना हो जाए। उदाहरणतया कोई व्यक्ति मेरे सामने आकाश पर चढ़ जाए और फिर मेरे सामने ही आकाश से उतरे तथा अपने साथ कोई ऐसी किताब लाए जो उतरने के समय उसके हाथ में हो और केवल इसी पर बस नहीं अपितु तब स्वीकार करेंगे जब

हम इस किताब को हाथ में लेकर देख लें और पढ़ लें या चन्द्रमा का टुकड़ा या सूर्य का टुकड़ा अपने साथ लाए जो पृथ्वी को प्रकाशित कर सके या उसके साथ आकाश से फ़रिश्तें उतरें जो फ़रिश्तों के समान विलक्षण कार्य करके दिखाएं या दस-बीस मुर्दे उसकी दुआ से जीवित हो जाएं और वे पहचाने जाएं कि अमुक-अमुक व्यक्ति के बाप-दादा हैं जो अमुक तिथि को मर गए थे और केवल यही पर्याप्त नहीं उसके साथ यह भी आवश्यक है कि वह सामान्य शहरों में सभाएं आयोजित करके भाषण दें तथा उच्च स्वर से कह दें कि वास्तव में हम मुर्दे हैं जो दोबारा जीवित होकर संसार में आए हैं और हम इसलिए आए हैं ताकि गवाही दें कि अमुक धर्म सच्चा है या अमुक व्यक्ति जो दावा करता है कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से हूं वह सच कहता है और हम ख़ुदा तआला के मुख से सुनकर आए हैं कि वह सच्चा है।

यह वे स्वनिर्मित चमत्कार हैं जो अधिकतर अनपढ़ लोग ईमान की वास्तविकता से पूर्णतया अपरिचित हैं मांगा करते हैं या इसी प्रकार के अन्य निरर्थक चमत्कार मांगा करते हैं जो ख़ुदा तआला की वास्तविक इच्छा से बहुत दूर हैं, जैसा कि एक अवधि गुज़री कि आर्यों में से लेखराम नाम एक व्यक्ति ने भी क़ादियान में आकर मुझ से ऐसे ही निशान मांगे थे और बहुत समझाया गया कि निशानों का मूल उद्देश्य केवल सत्य और असत्य में अन्तर करना है और केवल अन्तर दिखाने की सीमा तक वे प्रकट होते हैं परन्तु उसे द्वेष ने इतना अधिक नासमझ और मंदबुद्धि कर रखा था कि वह इस वास्तविकता को समझता ही नहीं था। अन्ततः वह निशानों से इन्कार करने के कारण लाहौर में ख़ुदा के निशान का ही निशाना हो गया और जैसा कि उसके पक्ष में उसकी स्वयं बनाई हुई भविष्यवाणी के मुकाबले पर यह भविष्यवाणी मैंने की थी कि वह छः वर्ष के अन्दर मारा जाएगा। ऐसा ही प्रकट हुआ और उस प्रारब्ध को जिस के बारे में पांच वर्ष पूर्व लाखों लोगों में घोषणा की गई थी कोई रोक न सका तथा इस्लाम और आर्य धर्म में एक विशेष निशान प्रकट हो गया क्योंकि मेरी ओर से यह दावा था कि

इस्लाम धर्म सच्चा है और लेखराम की ओर से यह दावा था कि आर्य धर्म सच्चा है। लेखराम ने अपने दावे के समर्थन में अपनी पुस्तक में जो अब तक मौजूद है मेरे बारे में यह प्रकाशित किया था कि मुझे परमेश्वर के इल्हाम से मालूम हुआ है कि यह व्यक्ति तीन वर्ष में हैज़ा के रोग से मर जाएगा। इसके मुकाबले पर मैंने ख़ुदा तआला से निश्चित सूचना पाकर यह विज्ञापन दिया था कि लेखराम छः वर्ष के अन्दर मारा जाएगा और उसके मारे जाने का दिन और तिथि निर्धारित कर दी थी। अतः ऐसा ही प्रकट हुआ। यह विशेष निशान है जो इस्लाम धर्म की सच्चाई पर गवाही देता है किन्तु खेद है कि आर्य सज्जनों ने इस से कोई लाभ नहीं उठाया।

अतः सच्चा धर्म केवल बुद्धि का भिखारी नहीं होता कि यह उसके लिए दोष है तथा इससे सन्देह होता है कि बुद्धिमानों की बातें चुरा कर लिखी गई हैं क्योंकि संसार में बुद्धिमान कम नहीं गुज़रे हैं अपितु वह बौद्धिक तर्कों के अतिरिक्त धर्म की व्यक्तिगत विशेषता भी प्रकट करता है जो आकाशीय निशान हैं और यही सच्चे धर्म का वास्तविक लक्षण है। हां यह सच है कि जो जनसाधारण और मूर्ख लोग कुछ धर्मों या लोगों के बारे में स्वनिर्मित चमत्कार प्रकाशित करते हैं जो नितान्त अतिशयोक्तिपूर्ण बातें होती हैं। वह किसी धर्म का गौरव नहीं हैं अपितु लज्जा और दोष का स्थान हैं। इन काल्पनिक चमत्कारों के साथ जितने हज़रत ईसा[अ.] आरोपित किए गए हैं उसका उदाहरण किसी अन्य नबी में नहीं पाया जाता। यहां तक कि मूर्ख लोग विचार करते हैं कि हज़रत ईसा[अ.] ने हज़ारों अपितु लाखों मुर्दे जीवित कर डाले थे, यहां तक कि इंजीलों में भी ये अतिशयोक्तिजनक बातें लिखी हैं कि एक बार सम्पूर्ण कब्रिस्तान जो हज़ारों वर्षों से चला आता था सब का सब जीवित हो गया था और समस्त मुर्दे जीवित होकर शहर में आ गए थे।

अब एक बुद्धिमान अनुमान लगा सकता है कि करोड़ों लोग जीवित होकर शहर में आ गए और अपने पुत्रों तथा पौत्रों को आकर समस्त क़िस्से सुनाए और हज़रत ईसा[अ.]

की सच्चाई की पुष्टि की परन्तु इसके बावजूद यहूदी ईमान नहीं लाए तथा इस स्तर की निर्दयता को कौन सहन करेगा। वास्तव में यदि हज़ारों मुर्दे जीवित करना हज़रत ईसा का व्यवसाय था तो जैसा कि बुद्धि की दृष्टि से समझा जाता है वे समस्त मुर्दे बहरे और गूंगे तो नहीं होंगे और जिन लोगों को ऐसे चमत्कार दिखाए जाते थे कोई उन मुर्दों में से उन का भाई होगा, कोई पिता, कोई पुत्र, कोई मां, कोई दादी, कोई दादा, कोई निकट संबंधी तथा प्रियजन। इसलिए हज़रत ईसा[अ.] के लिए तो काफ़िरों को मोमिन बनाने का एक विशाल मार्ग खुल गया था। मुर्दे यहूदियों के रिश्तेदार उनके साथ-साथ फिरते होंगे और हज़रत ईसा[अ.] ने कई शहरों में उनके भाषण कराए होंगे। ऐसे भाषण नितान्त रमणीक और रुचिकर होते होंगे, जब एक मुर्दा खड़ा होकर दर्शकों को सुनाता होगा कि हे दर्शको ! इस समय आप लोगों में ऐसे बहुत से लोग मौजूद होंगे जो मुझे पहचानते हैं जिन्होंने मुझे अपने हाथ से दफ़्न किया था। अब मैं ख़ुदा के मुख से सुनकर आया हूं कि ईसा मसीह सच्चा है और उसी ने मुझे जीवित किया तो बड़ा आनन्द आता होगा। स्पष्ट है कि ऐसे मुर्दों के भाषणों से यहूदी जाति के लोगों के हृदयों पर अत्यधिक प्रभाव पड़ते होंगे और हज़ारों, लाखों यहूदी ईमान लाते होंगे किन्तु पवित्र क़ुर्आन और इंजील से सिद्ध है कि यहूदियों ने हज़रत ईसा[अ.] को अस्वीकार कर दिया था तथा प्रजा के सुधार में समस्त नबियों में उनका नम्बर सबसे गिरा हुआ था और लगभग समस्त यहूदी उनको एक धोखेबाज़ और झूठा समझते थे।

अब बुद्धिमान विचार करे कि क्या ऐसे महान और विलक्षण चमत्कारों का यही परिणाम होना चाहिए था जबकि हज़ारों मुर्दों ने जीवित होकर हज़रत ईसा[अ.] की सच्चाई की गवाही भी दे दी तथा यह भी कह दिया कि हम स्वर्ग को देख आए हैं। उसमें केवल ईसाई हैं जो हज़रत ईसा के मानने वाले हैं और नर्क को देखा तो उसमें यहूदी हैं जो हज़रत ईसा के इन्कार करने वाले हैं, अत: इन सब बातों के पश्चात् किसी की मजाल थी कि हज़रत ईसा की सच्चाई में तनिक भी सन्देह करता। यदि कोई सन्देह करता तो

उनके बाप-दादा जो जीवित होकर आए थे उन को जान से मार देते कि हे अपवित्र लोगो ! हमारी गवाही और फिर भी सन्देह। अतः निश्चित समझो कि ऐसे चमत्कार केवल बनावट हैं। चमत्कार की वस्तु स्थिति में सन्देह नहीं परन्तु वह उतनी ही होती है जैसा कि हम आगे विस्तारपूर्वक वर्णन करेंगे।

यहां मुसलमानों पर नितान्त खेद है कि वे हज़रत ईसा[अ.] की ओर ऐसे चमत्कार सम्बद्ध करते हैं जो पवित्र क़ुर्आन की वर्णित पद्धति के विपरीत हैं तथा उस मार्ग पर चलते हैं जिसका आगे कूचा ही बन्द है और न केवल यह कि हज़रत ईसा[अ.] के बारे में ईसाइयों की प्राचीन कहानियों पर ईमान लाए हुए हैं अपितु भविष्य के लिए समस्त संसार से पृथक होकर किसी समय आकाश से उन का उतरना मानते हैं तथा कहते हैं कि भविष्य में अन्तिम युग में (हालांकि संसार की आयु की दृष्टि से जो सात हज़ार है यही अन्तिम युग है) हज़रत ईसा[अ.] आकाश के फ़रिश्तों के साथ उतरेंगे और एक बड़ा तमाशा होगा तथा लाखों लोगों की भीड़ होगी तथा आकाश की ओर दृष्टि होगी और लोग दूर से देख कर कहेंगे कि वह आए वह आए तथा दमिश्क़ में एक सफेद मीनार के पास उतरेंगे, किन्तु आश्चर्य है कि वह ग़रीब और असहाय मनुष्य जो अपनी नुबुव्वत सिद्ध करने के लिए इल्यास नबी को दोबारा संसार में न ला सका, यहां तक कि सलीब पर लटकाया गया उसके बारे में ऐसे-ऐसे चमत्कार वर्णन किए जाते हैं। यदि ये बातें स्वीकार करने योग्य हैं तो फिर क्यों हज़रत सय्यद अब्दुल क़ादिर जैलानी का यह चमत्कार जो लोगों में बहुत प्रसिद्ध हो रहा है स्वीकार नहीं किया जाता कि एक नौका जो बारात सहित नदी में डूब गई थी उन्होंने बारह वर्ष के पश्चात् निकाली थी और सब लोग जीवित थे तथा उन के साथ बाजे और नगाड़े बज रहे थे। इसी प्रकार यह दूसरा चमत्कार कि एक बार मौत का फ़रिश्ता उनके किसी मुरीद की रूह बिना आज्ञा निकाल कर ले गया था, उन्होंने उड़कर आकाश पर उसको जा पकड़ा तथा उसकी टांग पर लाठी मारी और हड्डी तोड़ दी। उस दिन की जितनी रूहें निकाली गई थीं सब छोड़ दीं और वे दोबारा

जीवित हो गईं। फ़रिश्ता रोता हुआ ख़ुदा तआला के पास गया। अल्लाह तआला ने कहा कि अब्दुल क़ादिर प्रेमपात्रता के स्थान में है उसके काम के बारे में कोई हस्तक्षेप नहीं होगा। यदि वह समस्त पूर्वकालीन मुर्दे जीवित कर देता तब भी उस का अधिकार था।

अब जिस अवस्था में ऐसे ख्याति प्राप्त चमत्कारों को स्वीकार नहीं किया गया जिनके स्वीकार करने में कुछ हानि न थी तो फिर क्यों ऐसे व्यक्ति की ओर वे बातें सम्बद्ध की जाती हैं जो न केवल पवित्र क़ुर्आन की इच्छा के विरुद्ध है अपितु ईसा की उपासना के शिर्क को इससे सहायता मिलती है, जिसने चालीस करोड़ लोगों को ख़ुदा तआला की तौहीद (एकेश्वरवाद) से वंचित कर दिया है। मैं नहीं समझ सकता कि हज़रत ईसा इब्ने मरयम को दूसरे नबियों पर क्या अधिकता और क्या विशिष्टता है। फिर उसे एक विशिष्टता देना जो शिर्क की जड़ है कितनी स्पष्ट पथभ्रष्टता (गुमराही) है जिस से एक बड़ी जाति बरबाद हो चुकी है। हाय अफ़सोस कि उन्होंने केवल कृत्रिम कफ़्फ़ारा (बदला) पर भरोसा करके स्वयं को तबाह किया तथा यह विचार न किया कि नफ़्स के अग्निरूपी दरिया से वही पार होगा जो अपनी नौका अपने हाथ से बनाएगा और वही मज़दूरी लेगा जो अपना काम स्वयं करेगा तथा हानि से वही बचेगा जो अपना भार स्वयं उठाएगा। यह कैसी मूर्खता है कि एक निराश्रय मनुष्य दूसरे मनुष्य पर अपनी सफलता के लिए भरोसा करे तथा किसी की शारीरिक शक्ति को अपने रूहानी जीवन के लिए लाभप्रद समझे। ख़ुदा का कानून है कि उसने किसी मनुष्य को किसी बात में विशेषता नहीं दी तथा कोई मनुष्य नहीं कह सकता कि मुझ में एक ऐसी बात है जो अन्य मनुष्यों में नहीं। यदि ऐसा होता तो ऐसे मनुष्य को निश्चित तौर पर उपास्य (मा'बूद) ठहराने के लिए नींव पड़ जाती। हमारे नबी[स.अ.व.] के समय में कुछ ईसाइयों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की यह विशेषता प्रस्तुत की थी कि वह बिना बाप के पैदा हुए हैं तो अल्लाह तआला ने तुरन्त पवित्र क़ुर्आन की इस आयत में उत्तर दिया -

اِنَّ مَثَلَ عِيۡسٰى عِنۡدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنۡ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنۡ فَيَكُوۡنُ ۞ ①

अर्थात् "ईसा का उदाहरण आदम के उदाहरण के समान है। ख़ुदा ने उसे मिट्टी से पैदा किया फिर उसको कहा कि हो जा। अत: वह हो गया।"

ऐसा ही ईसा बिन मरयम मरयम के रक्त और मरयम के रज से पैदा हुआ और फिर ख़ुदा ने कहा कि हो जा। अत: वह हो गया। अतएव इस इतनी बात में कौन सी ख़ुदाई और कौन सी विशेषता उसमें पैदा हो गई। वर्षा ऋतु में हज़ारों कीड़े-मकोड़े बिना मां-बाप के पृथ्वी से स्वयं पैदा हो जाते हैं कोई उनको ख़ुदा नहीं ठहराता कोई उनकी उपासना नहीं करता, कोई उनके आगे सर नहीं झुकाता फिर अकारण हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में इतना शोर करना यदि मूर्खता नहीं तो और क्या है तथा यह कहना कि वह अब तक जीवित हैं और दूसरे नबी सब मृत्यु पा चुके हैं। यह पवित्र क़ुर्आन का विरोध है। अल्लाह तआला तो पवित्र क़ुर्आन में स्पष्टतापूर्वक उनकी मृत्यु वर्णन करता है फिर वह जीवित क्योंकर हुए तथा पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध होता है कि वह दोबारा कदापि नहीं आएंगे। जैसा कि आयत फَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِىۡ② से यह दोनों मतलब सिद्ध होते हैं क्योंकि इस सम्पूर्ण आयत की प्रारंभिक तथा अन्तिम आयतों के साथ ये अर्थ हैं कि ख़ुदा क़यामत के दिन हज़रत ईसा[अ.] से कहेगा कि क्या तूने ही लोगों को कहा था कि मुझे और मेरी मां को अपना उपास्य ठहराना, तो वह उत्तर देंगे कि जब तक मैं अपनी जाति में था तो मैं उनकी परिस्थितियों से परिचित था और गवाह था। फिर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर तू ही उन की परिस्थितियों से परिचित था अर्थात् मृत्यु के पश्चात् मुझे उनकी परिस्थितियों की कुछ भी ख़बर नहीं।

अब इस आयत से स्पष्ट तौर पर दो बातें सिद्ध होती हैं। प्रथम यह कि हज़रत ईसा[अ.] इस आयत में इक़रार करते हैं कि जब तक मैं उनमें था मैं उनका संरक्षक था और वे मेरे

---

① आले इमरान - 60

② अलमाइदह - 118

सामने बिगड़े नहीं अपितु मेरी मृत्यु के पश्चात् बिगड़े हैं। अतः अब यदि मान लिया जाए कि हज़रत ईसा[अ.] अब तक आकाश पर जीवित हैं तो साथ ही इक़रार करना पड़ेगा कि **अब तक ईसाई भी बिगड़े नहीं** क्योंकि इस आयत में ईसाइयों का बिगड़ना आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ का एक परिणाम ठहराया गया है अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर निर्भर रखा गया है परन्तु जब कि प्रकट है कि ईसाई बिगड़ चुके हैं तो साथ ही मानना पड़ता है कि हज़रत ईसा[अ.] भी मृत्यु पा चुके हैं अन्यथा क़ुर्आन की आयत का असत्य होना अनिवार्य होता है। दूसरे यह कि आयत में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ईसाइयों के बिगड़ने के सम्बन्ध में अपना अज्ञान होना प्रकट करेंगे तथा कहेंगे कि मुझे तो उस समय तक उनकी परिस्थितियों के बारे में ज्ञान था जब कि मैं उनमें था और फिर जब मुझे मृत्यु दी गई तब से मैं उनकी परिस्थितियों से बिल्कुल अनभिज्ञ हूं, मुझे मालूम नहीं कि मेरे पीछे क्या हुआ। अतः स्पष्ट है कि उनका यह कहना इस अवस्था में कि वह प्रलय से पूर्व इस संसार में दोबारा किसी समय आए होते और ईसाइयों की पथभ्रष्टता (गुमराही) पर सूचना पाते केवल झूठ ठहरता है और इस का उत्तर तो ख़ुदा तआला की ओर से यह होना चाहिए कि हे धृष्ट (गुस्ताख़) ! मेरे सामने और मेरी अदालत में क्यों झूठ बोलता है और क्यों केवल झूठ के तौर पर कहता है कि मुझे उनके बिगड़ने की कुछ भी ख़बर नहीं। अब स्पष्ट है कि हालांकि तुझे मालूम है कि मैंने प्रलय से पूर्व तुझे दोबारा संसार में भेजा था और तूने ईसाइयों से युद्ध किए थे और उनकी सलीब तोड़ी थी उनके सुअरों का वध किया था और फिर मेरे सामने इतना झूठ कि जैसे तुझे कुछ भी ख़बर नहीं। अब स्पष्ट है कि ऐसी आस्था में कि जैसे हज़रत ईसा[अ.] दोबारा संसार में आएंगे उनका कितना घोर अपमान है और नऊज़ुबिल्लाह इससे वह झूठे ठहरते हैं।

यदि यह कहो कि फिर इन हदीसों के क्या अर्थ करें जिनमें लिखा है कि ईसा बिन मरयम उतरेगा। इसका उत्तर यह है कि उसी प्रकार अर्थ कर लो जिस प्रकार हज़रत ईसा ने इल्यास के दोबारा आने के बारे में अर्थ किए थे। हदीसों में स्पष्ट तौर पर लिखा है कि

वह ईसा इसी उम्मत में से होगा कोई अन्य व्यक्ति नहीं होगा और यह नहीं लिखा कि दोबारा आएगा अपितु यह लिखा है कि "नाज़िल होगा" (उतरेगा) यदि दोबारा आना अभीष्ट होता तो उस स्थान पर रुजू (लौटना) का शब्द होना चाहिए था और यदि कल्पना के तौर पर कोई हदीस पवित्र क़ुर्आन से विपरीत होती तो वह रद्द करने योग्य थी न यह कि किसी हदीस से पवित्र क़ुर्आन को रद्द किया जाए। यहां स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन यहूदियों एवं ईसाइयों की ग़लतियों तथा मतभेदों को दूर करने के लिए आया है और पवित्र क़ुर्आन की किसी आयत के अर्थ करते समय जो यहूदियों तथा ईसाइयों के सम्बन्ध में हो तो यह अवश्य देख लेना चाहिए कि उनमें क्या विवाद था जिस का पवित्र क़ुर्आन निर्णय करना चाहता है। अब इस सिद्धान्त को दृष्टिगत रखकर इस आयत के अर्थ कि

مَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ وَلٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ۭ وَاِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ۭ
مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ﴿۱۵۸﴾ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ۭ ①

बड़ी सरलता से एक न्यायप्रिय समझ सकता है क्योंकि यहूदियों की आस्थानुसार जो व्यक्ति सलीब के द्वारा क़त्ल किया जाए वह ला'नती होता है और उसका रफ़ा रूहानी ख़ुदा तआला की ओर नहीं होता वह शैतान की ओर जाता है। अब ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में यह निर्णय करना था जो हज़रत ईसा[अ.] का रूहानी (आध्यात्मिक) रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर हुआ अथवा नहीं हुआ। अतः ख़ुदा ने प्रथम यहूदियों के इस भ्रम को मिटाया कि हज़रत ईसा सलीब द्वारा क़त्ल हो चुके हैं और कहा कि यह यहूदियों का एक भ्रम था कि ख़ुदा ने उन के हृदयों में डाल दिया। ईसा सलीब द्वारा क़त्ल नहीं हुए कि उनको ला'नती ठहराया जाए अपितु उसका रूहानी रफ़ा हुआ जैसा कि अन्य मोमिनों का होता है। स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला को इस व्यर्थ बहस और निर्णय की आवश्यकता न थी कि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर गया या न गया, क्योंकि यहूदियों का यह विवादित मामला न था तथा यहूदियों की यह आस्था नहीं है

① अन्निसा - 158,159

कि जो व्यक्ति सलीब पर मारा जाए वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर नहीं जाता क्योंकि इस से तो यह अनिवार्य होता है कि जो व्यक्ति सलीब पर न मारा जाए वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाता है। न यहूदियों की यह आस्था है कि बेईमान ला'नती व्यक्ति शरीर के साथ आकाश पर नहीं जाता परन्तु मोमिन पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाता है क्योंकि मूसा जो यहूदियों के विचार में सबसे बड़ा नबी था उसके बारे में भी यहूदियों की यह आस्था नहीं है कि वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला गया। अत: समस्त विवाद तो रूहानी रफ़ा का था। यहूदियों की ओर से अपनी आस्थानुसार यह बहस थी कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत ईसा[अ.] ला'नती हैं क्योंकि उनका रूहानी रफ़ा नहीं हुआ कारण यह कि वह सलीब द्वारा मारे गए। इसी ग़लती को ख़ुदा तआला ने दूर करना था। अत: ख़ुदा तआला ने यह फैसला कर दिया है कि ईसा[अ.] ला'नती नहीं है अपितु उस का रूहानी रफ़ा अन्य मोमिनों की भांति हो गया।

स्मरण रहे कि 'मलऊन' का शब्द मर्फ़ूअ के मुकाबले पर आता है जबकि मर्फ़ूअ का अर्थ आध्यात्मिक तौर पर मर्फ़ूअ (उठाया गया) हो। अत: जो लोग हज़रत ईसा[अ.] को सलीब पर मारे जाने के कारण मल्ऊन (धिक्कृत) ठहराते हैं उनके विचार में मल्ऊन का अर्थ केवल इतना है कि ऐसे व्यक्ति का रफ़ा रूहानी नहीं होता। ईसाइयों ने भी अपनी ग़लती से तीन दिन के लिए हज़रत ईसा को मल्ऊन मान लिया अर्थात् तीन दिन तक उस का रूहानी रफ़ा नहीं हुआ तथा उनकी आस्थानुसार हज़रत ईसा[अ.] मल्ऊन होने की अवस्था में पाताल में गए और साथ में कोई शरीर न था फिर मर्फ़ूअ (उठाए जाना) होने की अवस्था में शरीर की क्यों आवश्यकता हुई। दोनों अवस्थाएं एक समान होनी चाहिएं। यह हमारी ओर से ईसाइयों पर आरोप है कि वे भी रफ़ा के बारे में ग़लती में फंस गए। वे अब तक इस बात के इक़रारी हैं कि सलीब का परिणाम तौरात के अनुसार एक आध्यात्मिक (रूहानी) बात थी अर्थात् ला'नती होना जिसे दूसरे शब्दों में रफ़ा का न होना कहते हैं। अत: उनकी आस्थानुसार रफ़ा न होना रूहानी तौर पर ही हुआ। इस अवस्था

में रफ़ा भी रूहानी (आध्यात्मिक) होना चाहिए था ताकि समानता स्थापित रहे। ईसाई लोग मानते हैं कि हज़रत ईसा ला'नती होने की अवस्था में केवल आध्यात्मिक तौर पर पाताल और नर्क की ओर गए उस समय उन के साथ कोई शरीर न था, फिर जब कि यह स्थिति है तो उठाए जाने की अवस्था में शरीर की आवश्यकता क्यों पड़ी तथा शरीर को क्यों साथ मिलाया गया। हालांकि प्राचीन काल से तौरात के मानने वाले समस्त नबी तथा यहूदियों के समस्त फ़क़ीह (धर्म शास्त्री) सलीबी ला'नत के यही अर्थ करते चले आए हैं कि आध्यात्मिक तौर पर रफ़ा न हो और अब भी यही करते हैं कि जो व्यक्ति सलीब के द्वारा मारा जाए उस का ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा नहीं होता। ला'नत का अर्थ रफ़ा न होना है। बहरहाल जबकि ख़ुदा तआला ने यहूदियों का आरोप दूर करना था और यहूदी अब तक रफ़ा न होने का अभिप्राय आध्यात्मिक अर्थ लेते हैं अर्थात् यह कहते हैं कि हज़रत ईसा[अ.] का आध्यात्मिक रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर नहीं हुआ तथा वह झूठा था। तो ख़ुदा तआला इस बात को छोड़ कर दूसरी ओर क्यों चला गया। जैसे नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा तआला ने यहूदियों का मूल विवाद समझा ही नहीं और ऐसे जज के समान फैसला किया जो सर्वथा मिसल के वृत्तान्त के विरुद्ध फैसला लिख देता है। ऐसी शंका यदि जान बूझ कर ख़ुदा तआला के बारे में की जाए तो फिर कुफ्र में क्या सन्देह है।

फिर इसके अतिरिक्त हम कहते हैं कि यदि मान भी लिया जाए कि ख़ुदा तआला ने यहूदियों के मूल विवाद की इस स्थान पर परवाह न करके एक नई बात वर्णन कर दी है जिस का वर्णन करना केवल एक व्यर्थ और अनावश्यक बात थी अर्थात् यह कि हज़रत ईसा[अ.] को शरीर के साथ दूसरे आकाश पर बैठाया गया तो फिर इस विचार का खण्डन इस प्रकार होता है कि प्रथम तो पवित्र क़ुर्आन में कहीं नहीं लिखा कि हज़रत ईसा को पार्थिव शरीर के साथ दूसरे आकाश पर बैठाया गया अपितु पवित्र क़ुर्आन के शब्द तो ये हैं कि بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ अर्थात् ख़ुदा ने ईसा को अपनी ओर उठा लिया। अत: विचार करो कि क्या ख़ुदा दूसरे आकाश पर साक्षात् वस्तुओं के समान बैठा हुआ

है ? और स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा हमेशा रूहानी ही होता है और ऐसा ही समस्त नबियों की शिक्षा है ख़ुदा शरीर नहीं है ताकि शारीरिक रफ़ा उसकी ओर हो। सम्पूर्ण क़ुर्आन में यही वर्णन शैली है कि जब किसी के विषय में कहा जाता है कि वह ख़ुदा की ओर गया या ख़ुदा की ओर उसका रफ़ा हुआ तो उसके अर्थ यही होते हैं कि आध्यात्मिक तौर पर उसका रफ़ा हुआ जैसा कि इस आयत में भी यही अर्थ हैं जो अल्लाह तआला कहता है ① يَاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ارْجِعِيٓ اِلٰى رَبِّكِ---- कि हे सात्विक वृत्ति (नफ़्से मुतमइन्न:) ! अपने प्रतिपालक की ओर वापस आ जा। क्या इस के ये अर्थ हैं कि पार्थिव शरीर के साथ आ जा ?

इसके अतिरिक्त यहां यह प्रश्न होगा कि यदि इस स्थान पर आध्यात्मिक रफ़ा का वर्णन नहीं है तथा इस स्थान पर उस विवाद का निर्णय नहीं किया गया जो यहूदियों ने हज़रत मसीह के आध्यात्मिक रफ़ा के बारे में इन्कार किया था और नऊज़ुबिल्लाह ला'नती ठहराया था तो फिर पवित्र क़ुर्आन के किस स्थान में यहूदियों के इस आरोप का उत्तर दिया गया है जिसका उत्तर देना ख़ुदा के वादे के अनुसार आवश्यक था ? अत: इस सम्पूर्ण वर्णन से स्पष्ट है कि हज़रत ईसा के रफ़ा को शारीरिक रफ़ा ठहराना सर्वथा हठधर्मी और मूर्खता है अपितु यह वही रफ़ा है जो प्रत्येक मोमिन के लिए ख़ुदा के वादे के अनुसार मृत्यु के पश्चात् होना आवश्यक है तथा काफ़िर के लिए आदेश है कि ② لَا تُفَتَّحُ لَهُمْ اَبْوَابُ السَّمَآءِ अर्थात् उन के लिए आकाश के द्वार नहीं खोले जाएंगे अर्थात् उन का रफ़ा नहीं होगा। जैसा कि दूसरे स्थान पर कहा है - ③ مُّفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ अत: सीधी बात को उल्टा देना संयम एवं पवित्रता के विपरीत तथा एक प्रकार से ख़ुदा के कलाम में अक्षरांतरण है। सब जानते हैं कि हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] के समय में समस्त

① अलफज्र - 28,29

② अलआ'राफ़ - 41

③ साद - 51

सहाबा का इज्माअ (सर्वसहमति) हो चुका है कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं तथा सहाबा[रज़ि.] के युग में आयत وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوۡلٌ ۚ قَدۡ خَلَتۡ مِنۡ قَبۡلِهِ الرُّسُلُ[1] के यही अर्थ किए गए। अर्थात् समस्त रसूल मृत्यु पा चुके हैं। अतः क्या हज़रत ईसा रसूल नहीं थे जो मृत्यु से बाहर रह गए। फिर इस इज्माअ के बावजूद फ़ैज़ आ'वज के युग का अनुसरण करना ईमानदारी से दूर है। इमाम मालिक[रह.] का भी मत था कि हज़रत ईसा मृत्यु पा गए हैं। अतः जबकि पहले इमामों का यह मत है तो दूसरों का भी मत होगा और जिन बुज़ुर्गों ने इस वास्तविकता को समझने में ग़लती की वह ग़लती ख़ुदा तआला के निकट क्षमा करने योग्य है। इस धर्म में बहुत से रहस्य ऐसे थे कि मध्यकाल में गुप्त हो गए थे, किन्तु मसीह मौऊद के समय में उन ग़लतियों का खुल जाना आवश्यक था क्योंकि वह निर्णायक (हकम) होकर आया। यदि मध्यकाल में ये ग़लतियां न होतीं तो फिर मसीह मौऊद का आना व्यर्थ तथा प्रतीक्षा करना भी व्यर्थ था, क्योंकि मसीह मौऊद मुजद्दिद है और मुजद्दिद गलतियों को सुधारने के लिए ही आया करते हैं। वह जिसका नाम आंहज़रत[स.अ.व.] ने **हकम** रखा है वह किस बात का **हकम** है यदि कोई सुधार उसके हाथ से न हो। यही सच है। मुबारक वे जो स्वीकार करें और ख़ुदा से डरें।

अब हम पुनः अपने विषय की ओर लौटते हुए कहते हैं कि चमत्कार और करामतें जो जनसामान्य ने हज़रत ईसा की ओर सम्बद्ध की हैं वे ख़ुदा के नियम (सुन्नत) से सर्वथा विपरीत हैं, जैसे एक पक्ष ने सिरे से चमत्कारों का इन्कार करके स्वयं को कमी की सीमा तक पहुंचा दिया है इसी प्रकार उनकी तुलना में दूसरे पक्ष ने चमत्कारों के बारे में अत्यन्त अतिशयोक्ति करके अपनी बात को अधिकता की सीमा तक पहुंचा दिया है तथा मध्यमार्ग को दोनों पक्षों ने त्याग दिया है। स्पष्ट है कि यदि चमत्कार न हों तो फिर ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर कोई ठोस एवं निश्चित लक्षण शेष नहीं रहता और यदि चमत्कार इस रंग के हों जिन का अभी वर्णन किया गया है तो फिर ईमान के फल समाप्त

---

① आले इमरान - 145

हो जाते हैं और ईमान ईमान नहीं रहता और नौबत शिर्क तक पहुंचती है तथा हज़रत ईसा[अ.] तो विचित्र तौर पर मूर्खों का निशाना हुए हैं। उनके जीवन के समय में तो अधर्मी यहूदियों ने उन का नाम काफ़िर, कज़्ज़ाब (महाझूठा), धोखेबाज़ तथा झूठ बनाने वाला रखा तथा उनके आध्यात्मिक (रूहानी) रफ़ा से इन्कार किया। फिर जब वह मृत्यु पा गए तो लोगों ने जिन पर मानव-पूजा के आचरण का प्रभुत्व था उनको ख़ुदा बना दिया तथा यहूदी तो रूहानी रफ़ा से ही इन्कारी थे। अब उनके मुकाबले पर शारीरिक रफ़ा की आस्था हुई और यह बात प्रसिद्ध की गई कि वह शरीर के साथ आकाश पर चढ़ गए हैं। जैसा पहले नबी तो आध्यात्मिक तौर पर मृत्योपरान्त आकाश पर चढ़ते थे परन्तु ईसा[अ.] जीवित होने की अवस्था में ही पार्थिव शरीर, लिबास इत्यादि समस्त शारीरिक, आवश्यकताओं के साथ आकाश पर जा बैठे, जैसे यह यहूदियों की हठ तथा इन्कार का जो रूहानी रफ़ा से इन्कार करने वाले थे नितान्त अतिशयोक्तिपूर्ण एक उत्तर बनाया गया और यह उत्तर सर्वथा अनुचित था क्योंकि यहूदियों को रूहानी रफ़ा से कोई मतलब न था यह समस्या उनकी शरीअत की थी कि जो लोग सलीब पर मरते हैं वे ला'नती, काफ़िर तथा बेईमान होते हैं। उनका रूहानी रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर नहीं होता और यहूदियों की आस्था थी कि प्रत्येक मोमिन जब मृत्यु पाता है तो उसकी रूह (आत्मा) को फ़रिश्ते आकाश की ओर ले जाते हैं तथा उसके लिए आकाश के द्वार खोले जाते हैं परन्तु काफ़िर की रूह आकाश की ओर नहीं उठाई जाती और काफ़िर मल्ऊन (धिक्कृत) होता है। उसकी रूह नीचे की ओर जाती है और वे लोग हज़रत ईसा के सलीब पाने के कारण तथा कुछ मतभेदों पर अपने फ़त्वों में हज़रत ईसा[अ.] को काफ़िर ठहरा चुके थे, क्योंकि उनके विचार में हज़रत ईसा[अ.] सलीब द्वारा क़त्ल हो गए थे तथा तौरात में यह स्पष्ट आदेश था कि जो व्यक्ति सलीब द्वारा मारा जाए वह ला'नती होता है। अत: इन कारणों से उन्होंने हज़रत ईसा को काफ़िर ठहराया था तथा उनके रूहानी रफ़ा से इन्कारी हो गए थे। यहूदियों के निकट यह योजना उपहास योग्य थी कि जैसे

हज़रत मसीह शरीर के साथ आकाश पर चले गए। वास्तव में यह झूठ उन लोगों ने बनाया था जो तौरात के ज्ञान से अपरिचित थे और स्वयं में यह विचार अत्यन्त निरर्थक था जिस से ख़ुदा तआला पर आरोप आता था क्योंकि जिस स्थिति में हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम यहूदियों के समस्त फ़िर्क़ों तक जो विभिन्न फ़िर्क़ों में विभाजित हो चुके थे अपने प्रचार को अभी तक पहुंचा नहीं सके थे तथा उनके हाथ से अभी एक फ़िर्क़े को भी हिदायत नहीं हुई थी। ऐसी परिस्थिति में प्रचार के कार्य को अधूरा छोड़ कर हज़रत ईसा का आकाश पर चढ़ जाना हिकमत के सरासर विरुद्ध तथा अपने मूल कर्त्तव्य की अवहेलना करना था और स्वयं स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला का उन्हें निरर्थक तौर पर आकाश पर बैठा देना एक व्यर्थ एवं बेकार कार्य है जो ख़ुदा तआला की ओर कदापि सम्बद्ध नहीं हो सकता।

अतः हज़रत ईसा[अ.] पर यह एक लांछन है कि जैसे वह पार्थिव शरीर के साथ आसमान पर चले गए। इसलिए जैसा कि हज़रत ईसा के जीवन काल में भी उनके शत्रुओं ने केवल लांछन के तौर पर उनको काफ़िर और कज़्ज़ाब ठहरा दिया उसी प्रकार उनकी प्रशंसा में अतिशयोक्ति करने वालों ने जो मूर्ख मित्र थे किसी के कथनानुसार - कि पीरां न परिन्द मुरीदां पीरान्द (पीर नहीं उड़ते मुरीद उन्हें उड़ाया करते हैं) उनको पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ा दिया और न केवल इतना अपितु उनको ख़ुदा ही बना दिया और फिर जब और भी समय बीत गया तो यह आस्था भी बनाई गई कि वह उसी पार्थिव शरीर के साथ पुनः आकाश से उतरेंगे और अन्तिम युग उन्हीं का होगा और वही ख़ातमुल अंबिया होंगे। अतः जितनी झूठी करामतें और झूठे चमत्कार हज़रत ईसा[अ.] की ओर सम्बद्ध किए गए हैं किसी अन्य नबी में उसका उदाहरण नहीं पाया जाता तथा विचित्रतम यह कि समस्त काल्पनिक चमत्कारों के बावजूद धर्म के प्रसार में किसी को जो निराशा और असफलता हो सकती है वे सब से प्रथम नम्बर पर हैं किसी अन्य नबी में इतनी असफलता का उदाहरण तलाश करना व्यर्थ है परन्तु स्मरण रहे कि अब

उनके नाम पर जो धर्म संसार में फैल रहा है यह उनका धर्म नहीं है। उनकी शिक्षा में सुअर खाना तथा तीन ख़ुदा बनाने का आदेश अब तक इंजीलों में नहीं पाया जाता अपितु यह वही अनेकेश्वरवादी शिक्षा है जिसका नबियों ने विरोध किया था। तौरात के दो ही बड़े भारी और अनश्वर आदेश थे। प्रथम यह कि मनुष्य को ख़ुदा न बनाया। दूसरे यह कि सुअर को न खाना। अत: दोनों आदेश मुक़द्दस पोलूस की शिक्षा से तोड़ दिए गए। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

अब हम वर्णन करना चाहते हैं कि चमत्कार क्या वस्तु है और चमत्कार की आवश्यकता क्यों है। अत: हम पुस्तक के प्रथम अध्याय में चमत्कार की मूल वास्तविकता और आवश्यकता वर्णन करेंगे तथा दूसरे अध्याय में अपने दावे के अनुसार उन चमत्कारों के कुछ नमूने वर्णन कर देंगे तथा तीसरा अध्याय समापन का होगा जिस पर पुस्तक का अन्त होगा।

प्रथम अध्याय

चमत्कार की मूल वास्तविकता और आवश्यकता का वर्णन

चमत्कार की मूल वास्तविकता यह है कि चमत्कार ऐसी विलक्षण बात को कहते हैं कि विरोधी पक्ष उसका उदाहरण प्रस्तुत करने से असमर्थ हो जाए चाहे वह बात प्रत्यक्षतया मानव शक्तियों के अन्दर ही विदित हो जैसा कि पवित्र क़ुर्आन का चमत्कार जो अरब देश के समस्त लोगों के सामने प्रस्तुत किया गया था। अतः वह यद्यपि सरसरी दृष्टि से मानव शक्तियों के अन्दर विदित होता था परन्तु उसका उदाहरण प्रस्तुत करने से अरब के समस्त लोग असमर्थ हो गए। इसलिए चमत्कार की वास्तविकता समझने के लिए पवित्र क़ुर्आन का कलाम नितान्त प्रकाशमान उदाहरण है कि प्रत्यक्षतः वह भी एक कलाम है जैसा कि मनुष्य का कलाम होता है किन्तु वह अपनी सरस वर्णन की दृष्टि से तथा अत्यन्त रसिकता, शुद्धता तथा सुन्दर इबारत की दृष्टि से जो प्रत्येक स्थान पर सच और नीति की पाबन्दी को अनिवार्य रखता है तथा प्रकाशमान तर्कों की दृष्टि से जो समस्त संसार के विरोधात्मक तर्कों पर विजयी हो गया तथा शक्तिशाली भविष्यवाणियों की दृष्टि से एक ऐसा अद्वितीय चमत्कार है जो तेरह सौ वर्ष गुज़रने के बावजूद अब तक कोई विरोधी उसका मुकाबला नहीं कर सका और न किसी में शक्ति है कि करे। पवित्र क़ुर्आन को सम्पूर्ण संसार की पुस्तकों से यह विशेषता प्राप्त है कि वह चमत्कारिक भविष्यवाणियों को भी चमत्कारिक इबारत में जो उच्च श्रेणी की सरसता एवं सुबोधता से भरपूर तथा सच और नीति से परिपूर्ण है वर्णन करता है। अतः चमत्कार का मूल एवं महान उद्देश्य सत्य-असत्य, सच्चे और झूठे में एक अन्तर दिखाना है तथा ऐसी विशेष

बात का नाम चमत्कार या दूसरे शब्दों में निशान है। निशान एक ऐसी आवश्यक बात है कि उसके बिना ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर भी पूर्ण विश्वास करना संभव नहीं और न वह फल प्राप्त होना संभव है जो पूर्ण विश्वास से प्राप्त हो सकता है। यह तो स्पष्ट है कि धर्म की मूल सच्चाई ख़ुदा तआला के अस्तित्व की पहचान से सम्बद्ध है। सच्चे धर्म के आवश्यक और महत्त्वपूर्ण साधनों में से यह बात है कि उसमें ऐसे निशान पाए जाएं जो ख़ुदा तआला के अस्तित्व को ठोस एवं निश्चित तौर पर सिद्ध करें तथा वह धर्म अपने अन्दर ऐसी ज़बरदस्त शक्ति रखता हो जो अपने अनुयायी का ख़ुदा तआला के हाथ से हाथ मिला दे। और हम वर्णन कर चुके हैं कि केवल रचनाओं पर दृष्टि डालकर केवल रचयिता की आवश्यकता का ही आभास करना और उसके वास्तविक अस्तित्व पर अवगत न होना यह ख़ुदा को पूर्ण रूप से पहचान लेने के लिए पर्याप्त नहीं है और इसी सीमा तक ठहरने वाले ख़ुदा तआला से कोई सच्चा सम्बन्ध प्राप्त नहीं कर सकते और न अपने हृदय को कामभावनाओं से पवित्र कर सकते हैं। इससे यदि कुछ समझा जाता है तो मात्र इतना कि इस सुदृढ़ एवं उत्तम निर्माण प्रणाली का कोई निर्माता होना चाहिए, न यह कि वास्तव में वह निर्माता है भी। स्पष्ट है कि केवल आवश्यकता का आभास करना एक अनुमान है जो देखने का स्थान नहीं ले सकता और न उससे देखने के पवित्र परिणाम पैदा हो सकते हैं। अतः जो धर्म मनुष्य की ख़ुदा से पहचान पर व्यय होना चाहिए जो अपूर्णता के स्तर तक छोड़ता है वह उसकी क्रियात्मक अवस्था का उपचारक नहीं है। इसलिए वास्तव में ऐसा धर्म एक मुर्दा धर्म है जिससे किसी पवित्र परिवर्तन की आशा रखना एक झूठी अभिलाषा है।

स्पष्ट है कि केवल बौद्धिक तर्क धर्म की सच्चाई के लिए पूर्ण साक्ष्य नहीं हो सकते और यह ऐसी मुहर नहीं है कि कोई धोखेबाज़ उसके बनाने पर समर्थ न हो अपितु यह तो बुद्धि के सार्वजनिक झरने की एक भिक्षावृत्ति समझी जा सकती है। फिर इस बात का निर्णय कौन करे कि बौद्धिक बातें जो एक पुस्तक ने लिखीं वास्तव में वे इल्हामी हैं या

किसी अन्य पुस्तक से चोरी करके लिखी गई हैं और यदि मान भी लें कि वे चुराई हुई नहीं हैं तो फिर भी वे ख़ुदा तआला के अस्तित्व पर कब अकाट्य प्रमाण हो सकती हैं, और कब किसी सत्याभिलाषी का हृदय इस बात पर पूर्ण सन्तुष्टि पा सकता है कि केवल वही बौद्धिक बातें निश्चित तौर पर ख़ुदा का दर्शन करने वाले निशान हैं और कब यह सन्तोष भी हो सकता है कि वे बातें ग़लती से पूर्णतया पृथक हैं। अतः यदि एक धर्म केवल कुछ बातों को बुद्धि या दर्शनशास्त्र की ओर सम्बद्ध करके अपनी सच्चाई का कारण वर्णन करता है तथा आकाशीय निशानों और विलक्षण बातों को दिखाने से असमर्थ है तो ऐसे धर्म का अनुयायी धोखा खाया हुआ अथवा धोखा देने वाला है और वह अंधकार में मरेगा।

इसलिए केवल बौद्धिक तर्कों द्वारा तो ख़ुदा तआला का अस्तित्व भी निश्चित तौर पर सिद्ध नहीं हो सकता, कहां यह कि उस से किसी धर्म की सच्चाई सिद्ध हो जाए तथा जब तक एक धर्म इस बात का उत्तरदायी न हो कि वह ख़ुदा के अस्तित्व को निश्चित तौर पर सिद्ध करके दिखाए तब तक वह धर्म कुछ वस्तु नहीं तथा दुर्भाग्यशाली है वह मनुष्य जो ऐसे धर्म पर मुग्ध हो। प्रत्येक वह धर्म जो अपने मस्तक पर ला'नत का दाग़ रखता है जो मनुष्य के आध्यात्म ज्ञान को उस स्तर तक नहीं पहुंचा सकता जिस से वह मानो ख़ुदा का दर्शन कर ले और कामवासना का अंधकार रूहानी अवस्था से परिवर्तित हो जाए और ख़ुदा के ताज़ा निशानों से ताज़ा ईमान प्राप्त हो जाए, न केवल डींगों के तौर पर अपितु वास्तविक तौर पर एक पवित्र जीवन प्राप्त हो जाए। मनुष्य को सच्ची पवित्रता प्राप्त करने के लिए इस बात की अत्यधिक आवश्यकता है कि उसे उस जीवित ख़ुदा का पता लग जाए जो अवज्ञाकारी को एक पल में तबाह कर सकता है तथा जिसकी प्रसन्नता के अन्तर्गत चलना एक नक़द स्वर्ग है तथा जिस प्रकार एक धर्म के लिए केवल बौद्धिक तौर पर अपनी उत्तमता दिखाना पर्याप्त नहीं है ऐसा ही एक प्रत्यक्ष सत्यनिष्ठ के लिए केवल यह दावा पर्याप्त नहीं है कि वह ख़ुदा तआला के आदेशों पर चलता है अपितु उसके लिए एक विशेष निशान चाहिए जो उसकी सच्चाई पर साक्षी हो,

क्योंकि ऐसा दावा तो लगभग प्रत्येक कर सकता है कि वह ख़ुदा तआला से प्रेम रखता है और उसका दामन समस्त दुराचार और दुष्कर्मों से पवित्र है परन्तु ऐसे दावे पर सन्तोष क्यों कर हो कि वास्तव में वस्तु स्थिति ऐसी ही है। यदि किसी में दानशीलता का तत्त्व है तो प्रसिद्धि के उद्देश्य से भी हो सकता है। यदि कोई उपासक तथा संयमी है तो दिखावा भी उसका कारण हो सकता है और यदि कोई दुराचार एवं दुष्कर्म से बच गया है तो दरिद्रता भी उसका कारण हो सकती है तथा यह भी संभव है कि केवल लोगों के डांट फटकार के भय से कोई संयमी बन बैठे तथा ख़ुदा की श्रेष्ठता का उसके हृदय पर कुछ भी प्रभाव न हो। अत: स्पष्ट है कि यदि उत्तम आचरण हो भी तथापि वास्तविक पवित्रता पर पूर्ण प्रमाण नहीं हो सकता। कदाचित् पार्श्व में कोई अन्य कर्म हों। इसलिए वास्तविक सच्चाई के लिए ख़ुदा तआला का साक्ष्य आवश्यक है जो अन्तर्यामी है और यदि ऐसा न हो तो संसार में पवित्र-अपवित्र की परिस्थितियां संदिग्ध हो जाती हैं और शान्ति जाती रहती है। इसलिए परस्पर अन्तर की अत्यन्त आवश्यकता है तथा जिस धर्म ने सत्यनिष्ठ के लिए कोई विशिष्ट लिबास प्रदान नहीं किया तो निश्चित समझो कि वह धर्म ठीक नहीं है तथा प्रकाश से सर्वथा रिक्त है। जो पुस्तक ख़ुदा की ओर से हो वह अपने अन्दर स्वयं भी एक विशेषता रखती है और अपने अनुयायी को भी परस्पर अन्तर करने वाला एक निशान प्रदान करती है।

इसलिए परस्पर अन्तर करने वाले विशेष निशान के बिना न सत्य धर्म और असत्य धर्म में कोई स्पष्ट मतभेद उत्पन्न हो सकता है और न एक सत्यनिष्ठ और धोखेबाज़ के मध्य कोई स्पष्ट अन्तर प्रकट हो सकता है, क्योंकि संभव है कि एक व्यक्ति वास्तव में दुराचारी एवं दुष्चरित्र हो परन्तु उसकी दुष्चरित्रताएं प्रकट न हों। अत: यदि ऐसी अवस्था में वह भी सच्चाई का दावा करे जैसा कि ऐसे दावे संसार में पाए जाते हैं तो फिर ख़ुदा तआला की ओर से वास्तविक सत्यनिष्ठ के लिए एक चमकता हुआ कौन सा निशान है जिस से वह अपने मक्कारों से पृथक का पृथक दिखाई दे और प्रकाशमान दिन के

समान पहचान लिया जाए। हालांकि अनादिकाल से और जब से कि संसार की नींव डाली गई है ख़ुदा का नियम इसी प्रकार से जारी है और यही प्रकृति का नियम है कि समस्त उत्तम और खराब वस्तुओं में परस्पर अन्तर करने वाला एक निशान रखा गया है, जैसा कि तुम देखते हो प्रत्यक्षत: सोना और पीतल समरूप हैं यहां तक कि केवल मूर्ख इस से धोखा भी खा जाते हैं परन्तु नीतिवान ख़ुदा ने सोने में परस्पर अन्तर करने वाला एक निशान भी रखा है जिसे सुनार तुरन्त पहचान लेते हैं तथा बहुत से सफेद और चमकते हुए पत्थर ऐसे हैं कि जो हीरे से बड़े ही समरूप हैं तथा कुछ मूर्ख उसे हीरा समझकर हज़ारों रुपए की हानि उठा लेते हैं परन्तु संसार के रचयिता ने हीरे के लिए ऐसा अन्तर करने वाला विशेष निशान रखा हुआ है जिसे एक दक्ष जौहरी पहचान सकता है। इसी प्रकार संसार के समस्त जवाहिरात तथा उत्तम वस्तुओं को देख लो कि यद्यपि प्रत्यक्ष दृष्टि में कई रद्‌दी और तुच्छ स्तर की वस्तुएं उन से रूप में मिल जाती हैं किन्तु प्रत्येक पवित्र और योग्य जौहर अपने विशेष निशान से अपनी विशेषता को प्रकट कर देता है। यदि ऐसा न होता तो संसार में अन्याय फैल जाता तथा स्वयं मनुष्य को देखो यद्यपि वह शक्ल में बहुत से जानवरों से समानता रखता है जैसा कि बन्दर से, तथापि उस में अन्तर करने वाला एक विशेष निशान है जिसके कारण हम किसी बन्दर को मनुष्य नहीं कह सकते। फिर जबकि इस भौतिक संसार में जो अस्थायी तथा नश्वर है और जिसकी हानि भी आख़िरत (परलोक) की तुलना में कुछ वस्तु नहीं है। प्रत्येक उत्तम और कोमल जौहर के लिए नीतिवान ख़ुदा ने अन्तर करने वाला विशेष निशान स्थापित कर दिया है, जिसके कारण वह जौहर सरलतापूर्वक पहचाना जाता हे। तो फिर धर्म जिसकी गलती नर्क तक पहुंचाती है तथा इसी प्रकार एक सच्चे एवं ख़ुदा के वली का अस्तित्व जिस का इन्कार अनश्वर दुर्भाग्य के गड्ढे में डालता है क्योंकर विश्वास किया जाए कि उनको पहचानने के लिए कोई भी निश्चित और ठोस निशान नहीं। अत: ऐसे व्यक्ति से अधिक मूर्ख और धूर्त कौन है कि जो विचार करता है कि सच्चे धर्म तथा सच्चे

सत्यनिष्ठ के ख़ुदा ने कोई अन्तर करने वाला विशेष निशान स्थापित नहीं किया। हालांकि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में स्वयं कहता है कि ख़ुदा की किताब जो धर्म का आधार है अपने अन्दर अन्तर करने वाला विशेष निशान रखती है जिसका सदृश कोई प्रस्तुत नहीं कर सकता तथा वह कहता है कि प्रत्येक मोमिन को फ़ुर्क़ान प्रदान होता है अर्थात् सत्य और असत्य में अन्तर करने वाला निशान जिस से वह पहचाना जाता है। अत: निश्चय ही समझो कि सच्चा धर्म तथा वास्तविक सत्यनिष्ठ ज़रूर अपने साथ अन्तर करने वाला विशेष निशान अवश्य रखता है। इसी का नाम दूसरे शब्दों में चमत्कार करामत तथा विलक्षण निशान है।

हमारे इतने वर्णन से सिद्ध हो गया कि सच्चा धर्म इस बात का अवश्य मुहताज है कि उसमें कोई ऐसी चमत्कारिक विशेषता हो कि जो अन्य धर्मों में न पाई जाए तथा सच्चा सत्यनिष्ठ इस बात का अवश्य मुहताज है कि कुछ ऐसे ख़ुदाई समर्थन उसके साथ हों कि जिनका उदाहरण दूसरों में कदापि न मिल सके ताकि कमज़ोर नींव वाला मनुष्य जो तुच्छ से तुच्छ सन्देह से ठोकर खाता है स्वीकार करने की दौलत से वंचित न रहे। विचार करके देखो कि जिस अवस्था में मनुष्यों की लापरवाही तथा भ्रम पूजा की यह दशा है कि इसके बावजूद कि ख़ुदा के सच्चे रसूलों से सैकड़ों निशान प्रकट होते हैं तथा प्रत्येक पहलू से ख़ुदा उनकी सहायता करता है फिर भी वे अपने दुर्भाग्य से सन्देहों में ग्रस्त हो जाते हैं तथा हज़ारों निशानों से कुछ भी लाभ न उठाकर भिन्न-भिन्न प्रकार की कुधारणाओं में पड़ जाते हैं। अत: इस स्थिति में उनकी क्या दशा होती कि ख़ुदा के एक मामूर के लिए आकाश से काई अन्तर करने वाला विशेष निशान न मिलता और केवल ऐसा नीरस संयम तथा प्रत्यक्ष इबादत (उपासना) दिखाने पर निर्भर होता और इस प्रकार कुधारणाओं का द्वार भी खुला होता। अत: ख़ुदा जो कृपालु एवं दयालु है उसने न चाहा कि उसके एक मान्य धर्म या एक मान्य बन्दे का इन्कार करके संसार का विनाश हो जाए। इसलिए उसने सच्चे धर्म पर अनश्वर निशानों की मुहर लगा दी तथा सच्चे सत्यनिष्ठ को अपने विलक्षण

कामों के साथ स्वीकारिता का निशान प्रदान किया। सच तो यह है कि ख़ुदा ने मान्य धर्म तथा मान्य पुरुष को अन्तर करने वाले विशेष निशान प्रदान करने में कोई भी कमी नहीं छोड़ी तथा सूर्य से भी अधिक उनको चमका कर दिखा दी तथा उनके समर्थन में वे कार्य दिखाए जिनका उदाहरण संसार में देखने या सुनने में नहीं आता। ख़ुदा वास्तव में है किन्तु उसका चेहरा देखने का दर्पण वे मुख हैं जिन पर उसकी प्रेम-वृष्टियां हुईं जिन के साथ ख़ुदा ने ऐसा वार्तालाप किया कि जैसे एक मित्र अपने मित्र से। वह प्रेम के प्रभुत्व से शिर्क के निशान को मिटाकर तौहीद (एकेश्वरवाद) की पूर्ण वास्तविकता तक पहुंचे, क्योंकि तौहीद केवल यही नहीं है कि पृथक रह कर ख़ुदा को एक जानता। इस तौहीद को तो शैतान भी मानता है अपितु इसके साथ यह भी आवश्यक है कि क्रियात्मक रूप में अर्थात् प्रेम के पूर्ण आवेग से अपनी हस्ती को लीन करके ख़ुदा की तौहीद (एकत्त्व) को अपने ऊपर ले लेना यही पूर्ण तौहीद (एकेश्वरवाद) है जिस पर मोक्ष निर्भर है जिसे ख़ुदा के वली पाते हैं। अतः यह कहना अनुचित न होगा कि ख़ुदा उन में उतरता है, क्योंकि रिक्त स्थान स्वयं को स्वाभाविक तौर पर भरना चाहता है परन्तु वह उतरना शारीरिक तौर पर नहीं है अपितु इस प्रकार से है जो कैसा और कितने से ऊपर है अतः ख़ुदा की विशेष झलक से वास्तविक सत्यनिष्ठों में वे बरकतें पैदा हो जाती हैं जो ख़ुदा में हैं तथा उनका जीवन चमत्कारिक जीवन हो जाता है। वे परिवर्तित किए जाते हैं तथा उनका अस्तित्व एक नया अस्तित्व हो जाता है जिसे संसार देख नहीं सकता, परन्तु सौभाग्यशाली लोग उसके लक्षणों को देखते हैं। चूंकि अब वह झलक मौजूद है और ख़ुदाई समर्थन से ऐसे लक्षण प्रकट हैं। जो हम में और हमारे ग़ैरों में अन्तर करते हैं। इसलिए हम कुछ ऐसे निशानों का उल्लेख करके सत्याभिलाषियों को ख़ुदा तआला की ओर बुलाते हैं जो रसूलों के बारे में ख़ुदा की सुन्नत है और उपद्रवी पक्षपात करने वालों पर ख़ुदा तआला के समझाने के अन्तिम प्रयास का पूर्ण करते हैं।

وَمَا تَوْفِيْقِىْ اِلَّا بِاللّٰهِ الْكَرِيْمِ الْقَدِيْر

द्वितीय अध्याय

उन निशानों के वर्णन में जो उन भविष्यवाणियों द्वारा प्रकट हुए जो आज से पच्चीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में लिखकर प्रकाशित की गई थीं।

स्पष्ट हो कि बराहीन अहमदिया मेरी लिखी पुस्तकों में से वह पुस्तक है जो सन् 1880 ई. में अर्थात् 1297 हिज्री में प्रकाशित हुई थी। इस पुस्तक के लिखने के समय में जैसा कि स्वयं पुस्तक से प्रकट होता है मैं एक ऐसी अप्रसिद्ध अवस्था में था कि ऐसे बहुत कम लोग होंगे जो मेरे अस्तित्व से भी परिचित होंगे। अत: उस युग में मैं अकेला मनुष्य था जिसके साथ किसी अन्य का कोई सम्बन्ध न था तथा मेरा जीवन एक एकान्तवास में व्यतीत होता था और इसी पर मैं सन्तुष्ट और प्रसन्न था कि अचानक अनादि अनुकम्पा से मेरे लिए यह घटना हुई कि सहसा सायंकाल इसी मकान में और बिल्कुल इसी स्थान पर जहां इन कुछ पंक्तियों के लिखने के समय मेरा क़दम है, मुझे ख़ुदा तआला की ओर से कुछ हल्की सी ऊंघ होकर यह वह्यी हुई :-

يَا اَحْمَدُ بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكَ مَا رَمَيْتَ اِذْ رَمَيْتَ وَلٰكِنَّ اللّٰهَ رَمٰى اَلرَّحْمٰنُ عَلَّمَ الْقُرْاٰنَ لِتُنْذِرَ قَوْمًا مَا اُنْذِرَ اٰبَآءُهُمْ وَلِتَسْتَبِيْنَ سَبِيْلَ الْمُجْرِمِيْنَ۔ قُلْ اِنِّيْ اُمِرْتُ وَاَنَا اَوَّلُ الْمُؤْمِنِيْنَ۔ (1)

अर्थात् हे अहमद ! ख़ुदा ने तुझ में बरकत रख दी, जो कुछ तूने चलाया तूने नहीं चलाया अपितु ख़ुदा ने चलाया। वह ख़ुदा है जिसने तुझे क़ुर्आन सिखाया अर्थात् उसके वास्तविक अर्थों पर तुझे सूचित किया(2) ताकि तू उन लोगों को डराए जिनके बाप-दादे

---

(1) देखो बराहीन अहमदिया प्रथम संस्करण पृष्ठ 239

(2) क़ुर्आन करीम के लिए तीन झलकियां हैं, वह हमारे सरदार हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] के द्वारा उतरा और सहाबा[रज़ि.] के द्वारा उसने संसार में प्रचार पाया और

नहीं डराए गए। और ताकि अपराधियों का मार्ग खुल जाए और तेरे इन्कार करने के कारण उन पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाए। इन लोगों को कह दो कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से होकर आया हूं और मैं वह हूं जो सर्वप्रथम ईमान लाया।

इस वह्यी के उतरने पर मुझे एक ओर तो ख़ुदा तआला की अपार कृपाओं का धन्यवाद करना पड़ा कि एक मुझ जैसे मनुष्य को जो अपने अन्दर कोई भी योग्यता नहीं रखता इस महान सेवा से गौरवान्वित किया और दूसरी ओर ख़ुदा की उस अकेली वह्यी से यह चिन्ता लग गई कि प्रत्येक मामूर के लिए ख़ुदा की सुन्नत (नियम) के अनुसार जमाअत का होना आवश्यक है ताकि धार्मिक आवश्यकताओं मे जो सामने आती हैं खर्च हो और ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार शत्रुओं का होना भी आवश्यक है और फिर उन पर विजय भी आवश्यक है ताकि उनके उपद्रव से सुरक्षित रहें तथा बुलाने की बात में प्रभाव भी आवश्यक है ताकि सच्चाई पर प्रमाण हो तथा सुपुर्द की गई सेवा में असफलता न हो।

इन बातों में जैसा कि कल्पना की गई बड़ी कठिनाइयों का सामना दिखाई दिया तथा बहुत भयावह स्थिति दिखाई दी, क्योंकि जबकि मैंने स्वयं को देखा तो नितान्त अज्ञात एवं सामान्य मनुष्यों में से एक मनुष्य पाया। कारण यह कि न तो मैं कोई ख़ानदानी पीरज़ादा तथा किसी गद्दी से सम्बन्ध रखता था ताकि मुझ पर उन लोगों की आस्था हो जाती और वे मेरे चारों ओर एकत्र हो जाते जो मेरे बाप-दादा के मुरीद थे और कार्य सरल हो जाता और न मैं किसी प्रसिद्ध प्रकाण्ड विद्वान की नस्ल में से था ताकि पूर्वजों के सैकड़ों शिष्यों का मेरे साथ सम्बन्ध होता और न मैं किसी प्रकाण्ड विद्वान से नियमित शिक्षा प्राप्त तथा

मसीह मौऊद के माध्यम से उसके बहुत से गुप्त रहस्य प्रकट हुए وَلِكُلِّ اَمْرٍ وَقْتٌ مَعْلُوْمٌ और जैसा कि आकाश से उतरा था वैसा ही आकाश तक उसका प्रकाश पहुंचा तथा आंहज़रत[स.अ.व.] के समय में उसके समस्त आदेश पूर्ण हुए और सहाबा रज़ियल्लाहो अन्हुम के समय में उनके प्रत्येक पहलू का प्रकाशन पूर्ण हुआ और मसीह मौऊद के समय में उसकी आध्यात्मिक श्रेष्ठताओं और रहस्यों का प्रकटन पूर्ण हुआ। (इसी से)

प्रमाण प्राप्त था ताकि मुझे अपनी ज्ञान संबंधी पूंजी पर ही भरोसा होता और न मैं किसी स्थान का राजा या नवाब या शासक था ताकि मेरे शासन के भय से हज़ारों लोग मेरे अधीन हो जाते अपितु मैं एक निर्धन और वीरान (जंगल) के गांव का निवासी तथा उन विशेष लोगों से सर्वथा पृथक था, जो संसार के लौटने का स्थान होते हैं या हो सकते हैं।

अतः किसी प्रकार का ऐसा सम्मान और प्रसिद्धि तथा ख्याति मुझे प्राप्त न थी जिस पर मैं दृष्टि रखकर इस बात को अपने लिए आसान समझता कि यह प्रचार और दा'वत का कार्य मुझ से हो सकेगा। अतः स्वाभाविक तौर पर यह कार्य मुझे बहुत कठिन तथा प्रत्यक्षतया स्थिति असंभव और दुर्लभ सी प्रतीत हुई। इसके अतिरिक्त अन्य कठिनाइयां यह ज्ञात हुईं कि कुछ बातें इस प्रचार में ऐसी थीं कि कदापि आशा न थी कि जाति उनको स्वीकार कर सके तथा जाति पर तो इतनी सी भी आशा न थी कि वह इस बात को भी स्वीकार कर सकें कि नबुव्वत के युग के पश्चात् बिना शरीअत वाली वह्यी का सिलसिला समाप्त नहीं हुआ तथा प्रलय (क़यामत) तक शेष है अपितु स्पष्ट तौर पर ज्ञात होता था कि उनकी ओर से वह्यी के दावे पर काफ़िर कहने का इनाम मिलेगा तथा समस्त उलेमा सहमत होकर कष्ट पहुंचाने तथा उन्मूलन करने की घात में लग जाएंगे, क्योंकि उनके विचार में हमारे सरदार जनाब पूर्ण शरण रसूलुल्लाह[स.अ.व.] के पश्चात् ख़ुदा की वह्यी पर प्रलय तक मुहर लग गई है तथा सर्वथा असंभव है कि अब किसी से ख़ुदा का वार्तालाप एवं सम्बोधन हो और अब प्रलय तक मर्हूमा उम्मत इस प्रकार की दया से वंचित की गई है कि ख़ुदा तआला उन को अपना परस्पर वार्तालाप करने वाला बनाकर उनके आध्यात्म ज्ञान (मा'रिफ़त) में उन्नति प्रदान करे और अपने अस्तित्व पर सीधे तौर पर उनको सूचित करे अपितु वह केवल अनुसरण के तौर पर गले में पड़ा ढोल बजा रहे हैं और शुहूदी[1] तौर पर उनको लेशमात्र मा'रिफ़त प्राप्त नहीं। हां केवल इतनी

---

[1] शुहूदी - सूफ़ियों की परिभाषा में वह श्रेणी जिसमें ख़ुदा की झलक हर वस्तु बिल्कुल ख़ुदा दिखाई दे। इस विचारधारा का मानने वाला शुहूदी कहलाता है। (अनुवादक)

व्यर्थ पद्धति पर उनमें से कुछ लोगों की आस्था है कि इल्हाम तो सदाचारी लोगों को होता है परन्तु नहीं कह सकते कि वह इल्हाम रहमानी (ख़ुदा का) है या शैतानी है, किन्तु स्पष्ट है कि ऐसा इल्हाम जो शैतान की ओर भी सम्बद्ध हो सकता है ख़ुदा के उन इनामों में गणना नहीं हो सकती जो मनुष्य के ईमान को लाभप्रद हो सकते हैं अपितु संदिग्ध होना तथा शैतानी कलाम का सदृश होना उसके साथ एक ऐसा ला'नत का दाग़ है जो नर्क तक पहुंचा सकता है और यदि ख़ुदा ने किसी मनुष्य के लिए صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ की दुआ स्वीकार की है तथा उसे इनाम प्राप्त लोगों में सम्मिलित किया है तो अपने वादे के अनुसार अवश्य उस रूहानी इनाम से भाग दिया है जो निश्चित तौर पर ख़ुदा तआला का वार्तालाप एवं संबोधन है।

अत: यह ही वह बात थी कि इस अंधे संसार में जाति के लिए एक जोश और प्रकोप दिखाने का अवसर था। अत: मुझ जैसे निराश्रय अकेले के लिए इन समस्त बातों का एकत्र होना प्रत्यक्षत: असफलता का एक लक्षण[1] था अपितु एक बड़ी विफलता का सामना था क्योंकि कोई पहलू भी अनुकूल न था। प्रथम धन की आवश्यकता होती है। इसलिए इस ख़ुदा की वह्यी के समय हमारी समस्त सम्पत्तियां तबाह हो चुकी थीं

---

① मेरे प्रचार की कठिनाइयों में से एक रसूल होने, ख़ुदा की वह्यी तथा मसीह मौऊद होने का दावा था। इसी के सम्बन्ध में मेरी घबराहट प्रकट करने के लिए यह इल्हाम हुआ था - فَاَجَاءَهُ الْمَخَاضُ اِلٰى جِذْعِ النَّخْلَةِ۔ قَالَ يَا لَيْتَنِيْ مِتُّ قَبْلَ هٰذَا وَ كُنْتُ نَسْيًا مَنْسِيًّا मख़ाज से अभिप्राय यहां वे बातें हैं जिनसे भयावह परिणाम जन्म लेते हैं और جِذْعِ النَّخْلَةِ से अभिप्राय वे लोग हैं जो मुसलमानों की सन्तान परन्तु केवल नाम के मुसलमान हैं। मुहावरे के साथ अनुवाद यह है कि पीड़ाजनक दा'वत जिस का परिणाम जाति का शत्रु हो जाना था उस मामूर को क़ौम के लोगों की ओर लाई जो खजूर की शुष्क टहनी या जड़ के समान है। जब उसने भयभीत होकर कहा कि काश मैं इससे पूर्व मर जाता और भूला-बिसरा हो जाता। (इसी से)

और एक भी ऐसा व्यक्ति साथ न था जो आर्थिक सहायता कर सकता। दूसरे मैं ऐसे किसी प्रतिष्ठित खानदान में से नहीं था कि किसी पर मेरा प्रभाव पड़ सकता। प्रत्येक ओर से बाल और पंख टूटे हुए थे। अत: इस ख़ुदा की वह्यी के पश्चात् मुझे जितनी हैरानी हुई वह मेरे लिए एक स्वाभाविक बात थी और मुझे इस बात की आवश्यकता थी कि मेरे जीवन को स्थापित रखने के लिए ख़ुदा तआला महान वादों से मुझे सांत्वना देता ताकि मैं चिन्ताओं की अधिकता से मर न जाता। अत: मैं किस मुख से दयालु तथा सामर्थ्यवान ख़ुदा का आभार प्रकट करूं कि उसने ऐसा ही किया तथा मेरी लाचारी और बेचैनी के समय में मुझे शुभ सन्देशों वाली भविष्यवाणियों के साथ थाम लिया और इसके पश्चात् अपने समस्त वादों को पूरा किया। यदि वह ख़ुदा तआला के समर्थन और सहायताएं भविष्यवाणियों की प्राथमिकता के बिना यों ही प्रकट होतीं तो भाग्य और संयोग पर चरितार्थ की जातीं, परन्तु अब वे ऐसे विलक्षण निशान हैं कि उनसे वही इन्कार करेगा जो अपने अन्दर शैतानी स्वभाव रखता होगा।

तत्पश्चात् ख़ुदा ने अपने समस्त वादों को पूरा किया जो एक दीर्घ समय पहले भविष्यवाणी के तौर पर किए थे तथा भिन्न-भिन्न प्रकार के समर्थन और भिन्न-भिन्न प्रकार की सहायताएं कीं तथा जिन कठिनाइयों की कल्पना से निकट था कि मेरी कमर टूट जाए तथा जिन चिन्ताओं के कारण मुझे भय था कि मैं मर जाऊं उन समस्त कठिनाइयों और चिन्ताओं का निवारण किया। और जैसा कि वादा किया था वैसा ही प्रकट हुआ, यद्यपि वह भविष्यवाणियों की प्राथमिकता के बिना भी मेरी सहायता तथा समर्थन कर सकता था परन्तु उसने ऐसा न किया अपितु एक युग तथा ऐसी निराशा के समय में मेरी सहायता एवं समर्थन के लिए भविष्यवाणियां कीं कि वह युग आंहज़रत[स.अ.व.] के उस युग से समरूप था जबकि आप मक्का की गलियों में अकेले फिरते थे और कोई आप के साथ न था तथा सफलता का कोई उपाय दिखाई नहीं देता था। इसी प्रकार वे भविष्यवाणियां जो मेरी अप्रसिद्धि के युग में की गईं उस युग की दृष्टि में उपहास योग्य

तथा अनुमान से दूर थीं तथा एक पागल की बड़ बड़ के समान थीं। किसे मालूम था कि जैसा उन भविष्यवाणियों में वादा किया गया है वास्तव में किसी युग में हज़ारों लोग क़ादियान में मेरे पास आएंगे और कई लाख लोग मेरी बैअत कर लेंगे तथा मैं अकेला नहीं रहूंगा जैसा कि उस युग में अकेला था तथा ख़ुदा ने अप्रसिद्धि तथा अकेलेपन के युग में ये सूचनाएं दीं ताकि वह एक बुद्धिमान तथा सत्याभिलाषी की दृष्टि में महान निशान हों और ताकि सच्चाई के जिज्ञासु हार्दिक विश्वास के साथ समझ लें कि यह कारोबार मनुष्य की ओर से नहीं है और न संभव है कि मनुष्य की ओर से हो। उस युग में कि मैं एक अप्रसिद्ध, अकेला और अत्यन्त निम्न श्रेणी की हैसियत का मनुष्य था और इतनी कम हैसियत का व्यक्ति था कि उल्लेखनीय नहीं था और किसी ऐसे प्रतिष्ठित ख़ानदान से न था कि जिसके बारे में आशा हो कि उस पर लोग सरलतापूर्वक एकत्र हो जाएंगे। ऐसे समय में तथा ऐसी स्थिति में कौन मनुष्य ऐसी भविष्यवाणियां कर सकता था जो बराहीन अहमदिया में आज से पच्चीस वर्ष[1] पूर्व प्रकाशित हो चुकी हैं जिन में से बतौर नमूना हम नीचे लिखते हैं :-

اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰہِ وَالْفَتْحُ وَانْتَھٰی اَمْرُ الزَّمَانِ اِلَیْنَا اَلَیْسَ ھٰذَا بِالْحَقِّ وَلَا تَیْئَسْ مِنْ رَوْحِ اللّٰہِ۔ اَلَا اِنَّ رَوْحَ اللّٰہِ قَرِیْبٌ۔ اَلَا اِنَّ نَصْرَ اللّٰہِ قَرِیْبٌ یَاتِیْکَ مِنْ کُلِّ فَجٍّ عَمِیْقٍ۔ یَاتُوْنَ مِنْ کُلِّ فَجٍّ عَمِیْقٍ۔ یَنْصُرُکَ اللّٰہُ مِنْ عِنْدِہٖ یَنْصُرُکَ رِجَالٌ نُوْحِیْ اِلَیْھِمْ مِنَ السَّمَاءِ اِنَّکَ بِاَعْیُنِنَا ۔ یَرْفَعُ اللّٰہُ ذِکْرَکَ وَیُتِمُّ نِعْمَتَہٗ عَلَیْکَ فِی الدُّنْیَا وَالْاٰخِرَۃِ۔ اَنْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَۃِ تَوْحِیْدِیْ وَتَفْرِیْدِیْ فَحَانَ اَنْ تُعَانَ۔ وَتُعْرَفُ بَیْنَ النَّاسِ۔ ھَلْ اَتٰی عَلَی الْاِنْسَانِ حِیْنٌ مِّنَ الدَّھْرِ لَمْ یَکُنْ شَیْئًا مَّذْکُوْرًا۔ وَبَشِّرِ الَّذِیْنَ اٰمَنُوْا اَنَّ لَھُمْ قَدَمَ صِدْقٍ عِنْدَ رَبِّھِمْ وَاتْلُ عَلَیْھِمْ مَا اُوْحِیَ اِلَیْکَ مِنْ رَّبِّکَ

---

1 वास्तव में बहुत सी भविष्यवाणियां बराहीन अहमदिया की ऐसी हैं जिस पर आज तीस वर्ष का समय गुज़र चुका है परन्तु बराहीन अहमदिया में पच्चीस वर्ष लिखे जाने की तिथि है न कि भविष्यवाणी का वास्तविक समय। (इसी से)

وَلَا تُصَعِّرْ لِخَلْقِ اللّٰهِ وَلَا تَسْـَٔمْ مِنَ النَّاسِ اَصْحَابُ الصُّفَّهِ۔ وَمَا اَدْرَاكَ مَا اَصْحَابُ الصُّفَّهِ تَرٰى اَعْيُنُهُمْ تَفِيْضُ مِنَ الدَّمْعِ يُصَلُّوْنَ عَلَيْكَ رَبَّنَا اِنَّنَا سَمِعْنَا مُنَادِيًا يُّنَادِيْ لِلْاِيْمَانِ۔ اٰمَنُوْا

देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ - 240 से 242 तक

अनुवाद :- "जिस समय ख़ुदा की सहायता और विजय आएगी और युग हमारी ओर लौटेगा उस समय कहा जाएगा कि क्या यह कारोबार ख़ुदा की ओर से न था। ख़ुदा की दया से निराश न हो अर्थात् यह विचार मत कर कि मैं तो एक अज्ञात और अकेला तथा लोगों में से एक व्यक्ति हूं यह क्योंकर होगा कि मेरे साथ एक संसार एकत्र हो जाएगा क्योंकि ख़ुदा इरादा कर चुका है कि ऐसा ही होगा और उसकी सहायता समीप है तथा जिन मार्गों से वह आर्थिक सहायता आएगी तथा श्रद्धापूर्ण पत्र आएंगे वे सड़कें टूट जाएंगी और गहरी हो जाएंगी अर्थात् हर प्रकार का धन प्रचुरता के साथ आएगा तथा दूर-दूर से आएगा और दूर-दूर से मुरीदों के पत्र आएंगे और लोग इतनी अधिक संख्या में आएंगे कि जिन मार्गों पर वे चलेंगे उन मार्गों में गड्ढे पड़ जाएंगे। ख़ुदा तआला अपने पास से तेरी सहायता करेगा। तेरी सहायता वे लोग करेंगे जिन के हृदयों में हम स्वयं आकाश से इल्हाम करेंगे। तू हमारी आंखों के सामने है, तेरी चर्चा को ख़ुदा ऊंचा करेगा तथा लोक और परलोक में अपनी ने'मत तुझ पर पूरी करेगा। तू मुझ से ऐसा है जैसा कि मेरी तौहीद और तफ़्रीद (अकेला होना)। अत: समय चला आता है कि तेरी सहायता की जाएगी तथा समस्त जगत में तेरे नाम को ख्याति दी जाएगी और तू इससे आश्चर्य क्यों करता है कि ख़ुदा ऐसा करेगा। क्या तुझ पर वह समय नहीं आया कि तू नापैद मात्र था और तेरे अस्तित्व का संसार में नामो निशान न था। फिर क्या यह ख़ुदा की शक्ति से दूर है कि तेरे ऐसे समर्थन करे तथा ये वादे पूरे करके दिखा दे। और तू उन लोगों को जो ईमान लाए यह शुभ समाचार सुना कि उनका कदम ख़ुदा के यहां निष्ठा का क़दम है। अत: उनको वह वह्यी सुना दे जो तेरी ओर तेरे रब्ब से हुई और स्मरण रख कि वह

समय आता है कि लोग प्रचुरता के साथ तेरी ओर लौटेंगे। इसलिए तुझ पर अनिवार्य है कि तू उन से बुरा व्यवहार न करे तथा तुझ पर अनिवार्य है कि तू उनकी प्रचुरता को देख कर थक न जाए और ऐसे लोग भी होंगे जो अपने देशों से प्रवास (हिजरत) करके तेरे कमरों में आकर आबाद होंगे। वही हैं जो ख़ुदा के यहां अस्हाबुस्सुफ्फ: कहलाते हैं। तू जानता है कि वे किस प्रतिष्ठा तथा किस ईमान के लोग होंगे जो अस्हाबुस्सुफ़्फ़: के नाम से नामित हैं वे बहुत सुदृढ़ ईमान वाले होंगे। तू देखेगा कि उनकी आंखों से आंसू जारी होंगे। वे तुझ पर दरूद भेजेंगे तथा कहेंगे कि हे हमारे ख़ुदा ! हमने एक आवाज़ देने वाले की आवाज़ सुनी जो ईमान की ओर बुलाता है। अत: हम ईमान लाए। इन समस्त भविष्यवाणियों को तुम लिख लो कि समय पर पूरी होंगी।"

इन कुछ पंक्तियों में जो भविष्यवाणियां हैं वे इतने अधिक निशानों पर आधारित हैं कि दस लाख से अधिक होंगे और निशान भी ऐसे खुले-खुले हैं जो प्रथम श्रेणी के विलक्षण निशान हैं। अत: हम प्रथम वर्णन की स्पष्टता के लिए भविष्यवाणियों के प्रकारों का वर्णन करते हैं। तत्पश्चात् यह प्रमाण देंगे कि ये भविष्यवाणियां पूरी हो गई हैं और वास्तव में ये विलक्षण निशान हैं तथा यदि बहुत ही कठोरता तथा अधिक से अधिक सावधानीपूर्वक भी उनकी गणना की जाए तब भी यह निशान जो प्रकट हुए दस लाख से अधिक होंगे।

भविष्यवाणियों के प्रकारों में से (1) प्रथम वह भविष्यवाणी है जिसकी ओर ख़ुदा की वह्यी وَانْتَهٰى اَمْرُ الزَّمَانِ اِلَيْنَا संकेत है अर्थात् अल्लाह तआला कहता है कि विरोधियों से हमारा युद्ध होगा। विरोधी चाहेंगे कि इस सिलसिले में असफलता रहे तथा लोग इस ओर प्रवृत्त न हों और न स्वीकार करें परन्तु हम चाहेंगे कि लोग प्रवृत्त हों। अन्ततः हमारा ही इरादा पूरा होगा तथा लोग इस ओर प्रवृत्त हो जाएंगे तथा वे क़बूल करते जाएंगे।

(2) दूसरी भविष्यवाणियों में यह सूचना दी गई है कि ख़ुदा कहता है कि दूर-दूर से आर्थिक सहायता भेजी जाएगी और दूर-दूर से पत्र आएंगे तथा इतनी निरन्तरता और

अधिकता के साथ आर्थिक सहायता पहुंचेगी कि जिन मार्गों से वह आर्थिक सहायता आएगी वे सड़कें गहरी हो जाएंगी।

(3) तीसरी भविष्यवाणी यह है कि ख़ुदा कहता है कि लोग इतनी श्रद्धा तथा आस्था से क़ादियान में आएंगे कि जिन सड़कों से वे आएंगे वे सड़कें टूट जाएंगी।

(4) चौथी भविष्यवाणी यह है कि ख़ुदा का कथन है लोग तुझे मारने और तबाह करने के लिए प्रयत्न करेंगे परन्तु हम तेरे रक्षक रहेंगे।

(5) पांचवीं भविष्यवाणी यह है कि ख़ुदा तआला कहता है कि मैं संसार में तुझे ख्याति दूंगा और तू दूर-दूर तक प्रसिद्ध हो जाएगा और तेरी सहायता की जाएगी।

(6) छठी भविष्यवाणी यह है कि ख़ुदा तआला कहता है कि लोग इतनी अधिक संख्या में आएंगे कि निकट है कि तू थक जाए या भीड़ की अधिकता के कारण तू उन से दुर्व्यवहार करे।

(7) सातवीं भविष्यवाणी यह है कि ख़ुदा कहता है कि बहुत से लोग अपने अपने देशों से तेरे पास क़ादियान में हिजरत (प्रवास) करके आएंगे और तुम्हारे घरों के किसी भाग में रहेंगे तथा अस्हाबुस्सुफ़्फ़ः कहलाएंगे।

ये सात भविष्यवाणियां हैं जिन की सूचना ख़ुदा की वह्यी के इन वाक्यों में दी गई है तथा प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि इस युग में ये सातों भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं क्योंकि उलेमा और पीरज़ादों ने कुफ़्र के फ़त्वे तैयार करके तथा भांति-भांति की योजनाएं बना कर नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया ताकि मेरी ओर कोई न आए तथा शर्म को त्याग कर ख़ुदा तआला से युद्ध किया तथा छल-कपट और धोखा देने में कोई कमी नहीं छोड़ी। कुछ लोगों ने मेरे बारे में ख़बरें दीं ताकि किसी प्रकार सरकार को ही भड़काएं तथा कुछ ने मूर्ख मुसलमानों को भड़काया ताकि वे कष्ट देते रहें, परन्तु अन्ततः वे सब असफल रहे और यह पौधा पृथ्वी में गुप्त न रह सका तथा एक जमाअत की स्थिति पैदा हो गई जिसे सिद्ध करने की कुछ आवश्यकता नहीं कि बहुत व्यापक बात है। फिर दूसरी

भविष्यवाणी यह थी कि हर ओर से आर्थिक सहायता आएगी। यह आर्थिक सहायता अब तक पचास हज़ार से अधिक आ चुकी है अपितु मैं विश्वास रखता हूं कि एक लाख के निकट पहुंच गई है। इसके प्रमाण के लिए डाकखाना के रजिस्टर पर्याप्त हैं और फिर **तीसरी भविष्यवाणी** यह थी कि लोग बहुत बड़ी संख्या में आएंगे। अत: इतनी अधिक संख्या में आए कि यदि प्रतिदिन उन का आना और विशेष अवसरों पर उनके समूहों का अनुमान लगाया जाए तो उनकी संख्या कई लाख तक पहुंचती है। अत: घटना को पुलिस विभाग के वे कर्मचारी भलीभांति जानते हैं जिनको इस ओर ध्यान रखने का आदेश है तथा क़ादियान के समस्त लोग जानते हैं।

और फिर चौथी भविष्यवाणी यह थी कि ख़ुदा कहता है कि हम लोगों के आक्रमणों से बचाएंगे और तू हमारी आंखों के सामने है। अत: इस का भी प्रकटन हो चुका। डाक्टर मार्टिन क्लार्क के मुकद्दमे में यह इरादा किया गया था कि मैं फांसी दिया जाऊं और करमदीन जिसने अकारण मुझ पर फौजदारी मुकद्दमे किए उसका भी यही इरादा था कि मैं किसी प्रकार कठोर क़ैद का दण्ड पाऊं और वह इस मुक़द्दमाबाज़ी में अकेला न था अपितु कई मौलवी और ईर्ष्यालु सांसारिक लोग उसके साथ सम्मिलित थे तथा उसके लिए चन्दे होते थे परन्तु ख़ुदा ने मुझे बचा लिया और अपनी भविष्यवाणियों को सच्चा करके दिखा दिया। फिर **पांचवीं भविष्यवाणी** यह थी कि ख़ुदा संसार में सम्मान के साथ तुझे ख्याति देगा। अत: इस का पूरा होना वर्णन का मुहताज नहीं।

छठी भविष्यवाणी यह थी कि लोग इतनी अधिक संख्या में आएंगे कि संभव है कि तू उनके भेंट करने से थक जाए या अतिथि सत्कार की अधिकता के कारण दुर्व्यवहार करे। अत: इस भविष्यवाणी का घटित होना बहुत स्पष्ट है तथा जिन लोगों को क़ादियान में आने का संयोग होता रहा है वे मेहमानों के आगमन की बहुलता को देख कर गवाही दे सकते हैं कि वास्तव में प्राय: इतनी अधिक संख्या में एकत्र होते हैं और मिलने और भेंट करने के लिए इतना संघर्ष होता है कि यदि यह वसीयत दृष्टिगत

न हो तो संभव है कि मानव होने की कमज़ोरी दुर्व्यवहार की ओर ले जाए या अतिथि सत्कार में विकार पैदा हो जाए। समस्त लोगों के साथ विनम्रता से हाथ मिलाना तथा सैकड़ों लोगों के समूह के बावजूद प्रत्येक के साथ पूरे शिष्टाचार से व्यवहार करना ख़ुदा की सहायता के बिना प्रत्येक का कार्य नहीं।

सातवीं भविष्यवाणी उन अस्हाबे सुफ़्फ़: के बारे में है जो हिजरत (प्रवास) करके क़ादियान में आ गए। जिस का मन चाहे आकर देख ले।

ये सात प्रकार के निशान हैं जिन में से प्रत्येक निशान हज़ारों निशानों का संग्रह है। उदाहरणतया यह भविष्यवाणी कि يَاتِيۡكَ مِنۡ كُلِّ فَجٍّ عَمِيۡقٍ जिसके अर्थ ये हैं कि प्रत्येक स्थान से तथा सुदूर देशों से नक़द राशि तथा अनाज की सहायता आएगी तथा पत्र भी आएंगे। अब ऐसी स्थिति में प्रत्येक स्थान से जो अब तक कोई रुपया आता है या वस्त्र तथा अन्य उपहार आते हैं ये स्वयं में एक निशान हैं क्योंकि ऐसे समय में उन समस्त बातों की सूचना दी गई थी जबकि मानव बुद्धि इस सहायता की अधिकता को अनुमान से दूर तथा दुर्लभ समझती थी। इसी प्रकार यह दूसरी भविष्यवाणी अर्थात् يَاتُوۡنَ مِنۡ كُلِّ فَجٍّ عَمِيۡقٍ जिसके अर्थ ये हैं कि लोग दूर-दूर से तेरे पास आएंगे यहां तक कि वे सड़कें टूट जाएंगी जिन पर वे चलेंगे। इस युग में यह भविष्यवाणी भी पूरी हो गई। अत: अब तक कई लाख लोग क़ादियान में आ चुके हैं और यदि इसके साथ पत्र भी सम्मिलित किए जाएं जिनके बाहुल्य की सूचना भी समय से पूर्व अप्रसिद्ध की अवस्था में दी गई थी तो कदाचित् यह अनुमान करोड़ तक पहुंच जाएगा परन्तु हम आर्थिक सहायता तथा बैअत करने वालों के आगमन को पर्याप्त समझ कर उन निशानों को लगभग दस लाख निशान ठहराते हैं। निर्लज्ज मनुष्य को जीभ को काबू में लाना तो किसी नबी के लिए संभव नहीं हुआ, परन्तु वे लोग जो सत्य के अभिलाषी हैं वे समझ सकते हैं कि ऐसे अख्याति (गुमनामी) के युग में जिस पर लगभग पच्चीस वर्ष गुज़र गए जब कि मैं कुछ भी वस्तु न था किसी प्रकार की प्रसिद्धि न रखता था और पीरों के किसी बुज़ुर्ग खानदान से न था

ताकि प्रजा का आगमन आसान होता। इतने अधिक खुले तौर पर भावी युग के उत्थान और उन्नति की सूचना और फिर उन वस्तुओं की उसी प्रकार एक लम्बी अवधि गुज़रने के पश्चात् उसी प्रकार हो जाना क्या किसी मनुष्य से हो सकता है तथा क्या संभव है कि कोई महाझूठा और झूठ घड़ने वाला ऐसा कर सके। मैं स्वीकार नहीं कर सकता कि जो व्यक्ति पहले न्याय की दृष्टि से उस युग की ओर दृष्टि उठाकर देखे जबकि बराहीन अहमदिया लिखी गई थी और अभी प्रकाशित भी नहीं हुई थी तथा एक अदालती छान-बीन के तौर पर स्वयं घटनास्थल पर आकर पूछताछ करे कि उस युग में मैं क्या वस्तु था और किस सीमा तक अज्ञातवास और गुमनामी के कोने में पड़ा हुआ था तथा कैसे तिरस्कृत एवं वियोगी के समान लोगों के संबंधों से पृथक था। तत्पश्चात् उन भविष्यवाणियों को जो वर्तमान युग में पूरी हो गईं ध्यानपूर्वक देखे और विचार करे तो उसे उन भविष्यवाणियों की सच्चाई पर ऐसा विश्वास हो जाएगा कि जैसे दिन चढ़ जाएगा, परन्तु कृपणता, ईर्ष्या, अभिमान तथा अहंकार की स्थिति में किसी को क्या मतलब जो इतना परिश्रम करे अपितु वह तो झुठलाने के मार्ग को अपनाएगा जो बहुत सरल कार्य है तथा प्रयास करेगा कि किसी प्रकार उन निशानों के स्वीकार करने से वंचित रहे।

بجز فضلِ خداوندی چہ درمانے ضلالت را نہ بخشد سود اعجاز ے تہید ستان قسمت را

ख़ुदा की कृपा के अतिरिक्त गुमराही का क्या उपचार है। अभागों को तो चमत्कार भी लाभ नहीं देता।

اگر برآسماں صد ماہتاب وصدخورے تابد نہ بیند روز روشن آنکہ گم کردہ بصارت را

यदि आकाश पर सैकड़ों चन्द्रमा और सूर्य चमकने लगें तो जिसकी दृष्टि जाती रही है वह प्रकाशमान दिन को नहीं देख सकता

تو اے دانابترس از آنکہ سوئے او نخواہی رفت بہ دنیا دل چہ مے بندی چہ دانی وقتِ رحلت را

हे मनीषी तू उस ख़ुदा से डर जिसकी ओर तुझे जाना है। संसार से क्या हृदय लगाता है क्या तू मृत्यु का समय जानता है।

مشواز بہر دنیا سرکشِ فرمانِ احدیت   مخراز بہروزے چند اے مسکیں تو شقوت را

संसार के लिए तू एक ख़ुदा के आदेश से उद्दण्डता न कर। हे असहाय तू कुछ दिनों के आनन्द के लिए दुर्भाग्य न खरीद।

اگر خواہی کہ یابی در دو عالم جاہ و دولت را   خدارا باش وازول پیشہ ٔ خود گیر طاعت را

यदि तू चाहता है कि दोनों लोकों में सम्मान और दौलत प्राप्त करे तो ख़ुदा का हो जा तथा हृदय से उसका आज्ञाकारी बन।

غلامِ درگہش باش وبعالم بادشاہی کن   نباشد بیم از غیرے پرستاران حضرت را

उसके दरबार का दास बन और संसार पर शासन कर कि ख़ुदा के उपासकों को उसके अतिरिक्त से भय नहीं होता।

تواز دل سوئے یار خود بیاتا نیز یارآید   محبت مے کشدباجذبِ روحانی محبت را

तू हार्दिक तौर पर अपने यार की ओर आ जा कि फिर वह भी तेरी ओर आए क्योंकि आध्यात्मिक आकर्षण के कारण एक प्रेम दूसरे प्रेम को खींचता है।

خدادر نصرتِ آنکس بود کوناصر دین ست   ہمیں افتاد آئین از ازل درگاہِ عزّت را

ख़ुदा उसकी सहायता में लगा रहता है जो उस के धर्म का सहायक हो। सदैव से ख़ुदा तआला के दरबार का यही नियम है।

اگر باورنمے آید بخواں ایں واقعاتم را   کہ تابینی تو درہر مشکلم انواعِ نصرت را

यदि तुझे विश्वास नहीं आता तो मेरी इन घटनाओं का अध्ययन कर ताकि तू मेरी प्रत्येक कठिनाई के समय ख़ुदा की सहायता को देख ले।

ہر آں کو یابد از درگاہ از خدمت ہمے یابد　　　کہ غفلت را سزائے ہست و اجرے ہست خدمت را

जो व्यक्ति भी उसके दरबार से कुछ पाता है वह सेवा से पाता है क्योंकि प्रत्येक लापरवाही के लिए दण्ड है और प्रत्येक सेवा के लिए प्रतिफल।

من اندر کارِ خود حیرانم و رازش نمے دانم　　　کہ من بے خدمت دیدم چنیں نعماء و حشمت را

परन्तु मैं अपने मामले में हैरान हूं तथा उसका रहस्य नहीं जानता क्योंकि किसी सेवा के बिना ऐसी ने'मतें और सम्मान मुझे मिले।

نہاں اندر نہاں اندر نہاں اندر نہاں ہستم　　　کجا باشد خبر از ما گرفتارانِ نخوت را

मैं गुप्त से गुप्त से गुप्त से गुप्त हूं। अत: हमारे बारे में अभिमानी लोगों को क्या ख़बर हो सकती है।

ندائے رحمت از درگاہ باری بشنوم ہردم　　　اگر کرمے کند لعنت چہ وزن آں ہرزہ لعنت را

मैं ख़ुदा के दरबार से हर पल रहमत की आवाज़ सुनता रहता हूं यदि कोई कीड़ा मुझ पर ला'नत करे तो उस बेहूदा ला'नत की क्या वास्तविकता है।

اگر درحلقۂ اہل خدا داخل شوی یا نے　　　نوشتیم از رہ شفقت کہ ماموریم دعوت را

तेरी इच्छा है चाहे तू वलियों की जमाअत में सम्मिलित हो या न हो हमने हमदर्दी के कारण यह लिखा है क्योंकि हम तो तब्लीग़ के लिए मामूर हैं।[1]

ये भविष्यवाणियां जो अभी हम लिख चुके हैं केवल बराहीन अहमदिया के उसी स्थान में नहीं लिखी गई हैं अपितु ख़ुदा तआला ने बड़े ज़ोर के साथ तथा उसे व्यक्त करने के उद्देश्य से कि यह इरादा आकाश पर निर्णय पा चुका है अनेकों स्थान पर दोबार तीसरी बार बराहीन अहमदिया के विभिन्न स्थानों में उनका वर्णन किया है तथा कुछ अन्य भविष्यवाणियां भी वर्णन की हैं जो उनसे पृथक हैं। अत: हम सत्याभिलाषियों को पूर्णतया सन्तुष्ट करने के

① उपरोक्त सभी शे'रों का हिन्दी अनुवाद हज़रत डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब[रज़ि.] के दुर्रेसमीन फ़ारसी के उर्दू अनुवाद से किया गया है। (अनुवादक)

लिए वे भविष्यवाणियां भी यहां लिख देते हैं। स्मरण रहे कि यहां केवल इतना ही चमत्कार नहीं कि वे भविष्यवाणियां शत्रुओं के कठोर विरोध के बावजूद एक दीर्घ अवधि के पश्चात् पूरी हो गईं अपितु इसके साथ यह भी चमत्कार है कि जैसा कि प्रारंभ में मुझे ख़ुदा की यह वह्यी हुई थी जो इस पुस्तक में लिखी जा चुकी है अर्थात् यह कि يَا اَحْمَدُ بَارَكَ اللّٰهُ فِيْكَ जिस के अर्थ हैं कि हे अहमद ! ख़ुदा तेरी आयु और काम में बरकत देगा। इसी प्रकार ख़ुदा ने मुझे मृत्यु से सुरक्षित रखा, यहां तक कि वे समस्त भविष्यवाणियां पूर्ण करके दिखा दीं तथा उन समस्त रोगों एवं बीमारियों के बावजूद जो मुझे लगी हुई हैं जो दो पीली चादरों की भांति एक ऊपरी भाग में और एक शरीर के निचले भाग में हैं जैसा कि मसीह मौऊद के लिए प्रमाणित सूचनाओं में यह लक्षण बताया गया है परन्तु फिर भी ख़ुदा तआला ने अपनी कृपा से जैसा कि वादा किया था मेरी आयु में बरकत दी। बड़े-बड़े रोगों से मैं जीवित रह गया तथा कई शत्रु भी योजनाएं बनाते रहे कि किसी प्रकार मैं किसी उलझन में पड़ कर इस संसार से कूच कर जाऊं परन्तु वे अपने छलों में असफल रहे और मेरे ख़ुदा का हाथ मेरे साथ रहा तथा उसकी पवित्र वह्यी जिस पर मैं ऐसा ही ईमान लाता हूं जैसा कि ख़ुदा तआला की समस्त पुस्तकों पर मुझे प्रतिदिन सांत्वना देती रही। अतः ये ख़ुदा के निशान हैं जिन के देखने से उसका चेहरा दिखाई देता है। मुबारक वे जो उन पर विचार करें और ख़ुदा के साथ लड़ने से डरें। यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो स्वयं नष्ट हो जाता और उसका इस प्रकार अन्त हो जाता जैसे कि एक काग़ज़ लपेट दिया जाए, परन्तु यह सब कुछ ख़ुदा की ओर से है जिसने आकाश बनाए तथा पृथ्वी को पैदा किया। क्या मनुष्य को अधिकार है कि उस पर आपत्ति करे कि तूने ऐसा क्यों किया तथा ऐसा क्यों न किया और क्या वह ऐसा है कि अपने कार्यों के बारे में पूछा जाए ? क्या इन्सान का ज्ञान उसके ज्ञान से बढ़ कर है। क्या वह नहीं जानता कि मसीह के उतरने की भविष्यवाणी के क्या अर्थ थे ?

अब नीचे वे भविष्यवाणियां लिखी जाती हैं जो पहली भविष्यवाणियों के समर्थन तथा ज़ोर देकर की गई हैं और वह ये हैं :-

بورکت یا احمد وکان ما بارك الله فيك حقاً فيك شانك عجيب واجرك قريب۔ الارض والسماء معك كما هو معی۔ سبحان الله تبارك وتعالیٰ زاد مجدك ينقطع اٰباءك ويبدء منك۔وما كان الله ليتركك حتیٰ يميز الخبيث من الطيب۔ والله غالب علیٰ امرہٖ ولكن اكثر الناس لا يعلمون۔ اذا جاء نصر الله والفتح وتمّت كلمة ربك۔هذا الذی كنتم بہ تستعجلون۔ اردتُ ان استخلف فخلقت ادم۔ دنی فتدلّٰی فكان قاب قوسين او ادنی۔ يحيی الدين ويقيم الشريعة

देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 486 से 496 तक।

अनुवाद :- हे अहमद ! तुझे बरकत दी गई और यह बरकत तेरा ही अधिकार था, तेरी शान अद्‌भुत है और तेरा प्रतिफल निकट है अर्थात् वे समस्त वादे जो किए गए थे वे शीघ्र पूरे होंगे। अत: पूरे हो गए। पुन: कहता है - कि पृथ्वी और आकाश तेरे साथ हैं जैसा कि वे मेरे साथ हैं। यह इस बात की ओर संकेत है कि भविष्य में बहुत अधिक मान्यता प्रकट होगी और पृथ्वी के लोग लौटेंगे और आकाशीय फ़रिश्ते साथ होंगे जैसा कि आजकल प्रकट हुआ। पुन: कहता है - पवित्र है वह ख़ुदा जो बहुत बरकतों वाला और बहुत बुलन्द है। उसने तेरी बन्दगी को अधिक किया तेरे बाप-दादे का नाम समाप्त हो जाएगा और अब से सिलसिला तुझ से प्रारंभ होगा और संसार में तेरी नस्ल फैलेगी और क़ौमों में तेरी प्रसिद्धि हो जाएगी तथा ख़ानदान की इमारत का प्रथम पत्थर तू होगा। ख़ुदा ऐसा नहीं है कि तुझे छोड़ दे जब तक पवित्र तथा अपवित्र में अन्तर करके न दिखाए और ख़ुदा अपनी प्रत्येक बात पर विजयी है परन्तु अधिकांश लोग ख़ुदा की शक्ति से अनभिज्ञ हैं। इन भविष्यवाणियों में बहुत सी नस्ल का वादा दिया जैसा कि हज़रत इब्राहीम को दिया था। अत: इस वादे के कारण मुझे ये चार बेटे दिए जो अब मौजूद हैं तथा इन भविष्यवाणियों को कि मैं तुझे नहीं छोड़ूंगा जब तक कि पवित्र एवं अपवित्र में अन्तर न कर लूं इस युग में प्रकट कर दिया। अत: तुम देखते हो कि तुम्हारे घोर विरोध तथा विरोधात्मक दुआओं के बावजूद उसने मुझे नहीं छोड़ा तथा हर मैदान में वह मेरा समर्थक रहा। प्रत्येक पत्थर

जो मुझ पर चलाया गया उसने अपने हाथों पर लिया, प्रत्येक तीर जो मुझे मारा गया उसने वही तीर शत्रुओं की ओर लौटा दिया। मैं निराश्रय था उसने मुझे शरण दी। मैं अकेला था, उसने मुझे अपने दामन में ले लिया। मैं कुछ भी वस्तु न था मुझे उसने सम्मानपूर्वक प्रसिद्धि दी तथा लाखों लोगों को मेरा श्रद्धालु बना दिया। फिर वह उसी पवित्र वह्यी में फ़रमाता है कि जब मेरी सहायता तुम्हें पहुंचेगी और मेरे मुख की बातें पूरी हो जाएंगी अर्थात् ख़ुदा की प्रजा का तेरी ओर आना हो जाएगा तथा आर्थिक सहायताएं प्रकट होंगी तब इन्कार करने वालों से कहा जाएगा कि देखो क्या वे बातें पूरी नहीं हो गईं जिनके बारे में तुम जल्दी करते थे। अतः आज वह सब बातें पूरी हो गईं। इस बात के वर्णन करने की आवश्यकता नहीं कि ख़ुदा ने अपने प्रण को स्मरण करके लाखों लोगों को मेरी ओर प्रवृत्त कर दिया और वह आर्थिक सहायताएं कीं जो किसी के स्वप्नों और कल्पनाओं में भी न थीं। अतः हे विरोधियो ! ख़ुदा तुम पर दया करे और तुम्हारी आंखें खोले। तनिक विचार करो कि क्या ये मानव छल हो सकते हैं। ये वादे तो बराहीन अहमदिया के लिखे जाने के समय में किए गए थे जबकि क़ौम के सामने उनकी चर्चा करना भी उपहासयोग्य था तथा मेरी हैसियत का इतना भी महत्त्व न था जैसा कि राई के दाने का होता है। तुम में से कौन है जो मुझे इस वर्णन में दोषी ठहरा सकता है, तुम में से कौन है जो यह सिद्ध कर सकता है कि उस समय भी इन हज़ारों लोगों में से कोई मेरी ओर आता था। मैं तो बराहीन अहमदिया के छपने के समय ऐसा गुमनाम व्यक्ति था कि अमृतसर में एक पादरी के प्रेस में जिसका नाम रजब अली था मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया छपती थी और मैं उसके प्रूफ़ देखने के लिए तथा पुस्तक को छपवाने के लिए अकेला अमृतसर जाता और अकेला वापस आता था और कोई मुझे आते जाते न पूछता कि तू कौन है और न मुझ से किसी का परिचय था और न मैं कोई सम्माननीय हैसियत का मालिक था। मेरी इस अवस्था के क़ादियान के आर्य भी साक्षी हैं। जिन में से एक व्यक्ति शरमपत नामक अब तक क़ादियान में मौजूद है जो कुछ बार मेरे साथ अमृतसर में पादरी रजब अली के प्रेस में गया था जिस के प्रेस में मेरी पुस्तक

बराहीन अहमदिया छपती थी तथा ये समस्त भविष्यवाणियां उसका कातिब (लिपिक) लिखता था और वह पादरी स्वयं हैरानी से भविष्यवाणियों को पढ़कर बातें करता था कि यह कैसे हो सकता है कि एक ऐसे साधारण व्यक्ति की ओर एक संसार लौट पड़ेगा, परन्तु चूंकि वे बातें ख़ुदा की ओर से थीं मेरी नहीं थीं इसलिए वे अपने समय पर पूर्ण हो गईं और पूर्ण हो रही हैं। एक समय में मानव दृष्टि ने उस से आश्चर्य किया तथा दूसरे समय में देख भी लिया। फिर शेष अनुवाद यह है कि ख़ुदा तआला फ़रमाता है - कि मैंने इरादा किया कि संसार में अपना एक ख़लीफ़ा बनाऊं। अत: मैंने इस आदम को पैदा किया। इस ख़ुदा की वह्यी में मेरा नाम आदम रखा गया, क्योंकि मानव नस्ल के ख़राब हो जाने के युग में मैं पैदा किया गया जैसे एक युग में जबकि पृथ्वी मनुष्यों से खाली थी और जैसा कि आदम जुड़वां पैदा किया गया मैं भी जुड़वां ही पैदा हुआ था मेरे साथ एक लड़की थी जो मुझ से पहले पैदा हुई और मैं बाद में। यह इस बात की ओर संकेत था कि मुझ पर कामिल इन्सानियत के सिलसिले का अन्त है और मेरा नाम आदम रखने में और भी एक संकेत था जो उस दूसरे इल्हाम में अर्थात् उस ख़ुदा की वह्यी में जो क़ुर्आनी इबारत में मुझे हुई। उसका विवरण यह है और वह वह्यी यह है :-

قَالَ اِنِّیْ جَاعِلٌ فِی الْاَرْضِ خَلِیْفَۃً ۔ قَالُوْۤا اَتَجْعَلُ فِیْہَا مَنْ یُّفْسِدُ فِیْہَا ۔ قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ

अर्थात् मेरे बारे में ख़ुदा ने मेरे ही द्वारा बराहीन अहमदिया में सूचना दी कि मैं आदम के रंग पर एक ख़लीफ़ा पैदा करता हूं। तब इस ख़बर को सुनकर कुछ विरोधियों ने मेरी परिस्थितियों को कुछ ऐसी आस्थाओं के विपरीत पाकर अपने हृदयों में कहा कि हे मेरे ख़ुदा ! क्या तू ऐसे मनुष्य को अपना ख़लीफ़ा बनाएगा कि जो एक उपद्रवी व्यक्ति है जो अकारण जाति में फूट डालता है और उलेमा की मान्यताओं से बाहर जाता है। तब ख़ुदा ने उत्तर दिया कि जो मुझे ज्ञात है तुम्हें ज्ञात नहीं। यह ख़ुदा का कलाम है कि जो मुझ पर उतरा और वास्तव में मेरे और मेरे ख़ुदा के मध्य ऐसे सूक्ष्म रहस्य हैं जिन को

संसार नहीं जानता और मेरा ख़ुदा से एक अकथनीय गुप्त सम्बन्ध है और इस युग के लोग उस से अनभिज्ञ हैं। अत: यही अर्थ हैं इस ख़ुदा की वह्यी के قَالَ اِنِّیۡۤ اَعۡلَمُ مَا لَا تَعۡلَمُوۡنَ शेष अनुवाद यह है - ख़ुदा तआला कहता है कि यह व्यक्ति मुझ से निकट हुआ तथा उसने मेरा पूर्ण सानिध्य पाया। तत्पश्चात् प्रजा से सहानुभूति के लिए उनकी ओर आकृष्ट हुआ तथा मुझ में और प्रजा में एक माध्यम हो गया जैसा कि दो धनुषों में प्रत्यंचा हो तथा इसलिए कि वह मध्य स्थान पर है, वह धर्म को नए सिरे से जीवित करेगा और शरीअत को स्थापित कर देगा अर्थात् कुछ ग़लतियां जो मुसलमानों में प्रचलित हो गई हैं तथा अकारण आंहज़रत[स.अ.व.] की ओर उन ग़लतियों को सम्बद्ध किया जाता है। उन समस्त ग़लतियों को एक निर्णायक (हकम) के पद पर होकर दूर कर देगा तथा शरीअत को जैसा कि प्रारंभ में सीधी थी सीधी करके दिखा देगा।

अत: इन्हीं भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में बराहीन अहमदिया में और भी इल्हाम हैं जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है :-

نُصرتَ وقالوا لَاتَ حین مناص۔ اَمۡ یقولون نحن جمیع منتصر۔ سَیُھزم الجمع ویولون الدبر۔ وان یروا اٰیۃً یُعرضوا ویقولوا سحر مستمر۔ قل ان کنتم تحبون اللّٰہ فاتبعونی یحببکم اللّٰہ۔ واعلموا اَنّ اللّٰہ یحیی الارض بعد موتھا ۔ ومن کان لِلّٰہ کان اللّٰہ لہ ۔ قل ان افتریتہ فعلیّ اجرام شدید۔ یا احمدی انت مرادی ومعی غرستک کرامتک بیدی ۔ أ کان للنّاس عجبًا ۔ قل ھو اللّٰہ عجیب ۔ لا یُسئل عمّا یفعل وھم یُسۡئلون۔ وقالوا انّی لک ھٰذا ان ھٰذا الّا اختلاق۔ قل اللّٰہ ثمّ ذرھُم فِیۡ خوضھم یلعبون۔ وَلا تخاطبنی فی الذین ظلموا انھم مغرقون۔ یظلّ ربّک علیک ویغیثک ویرحمک۔ وان لم یعصمک الناس یعصمک اللّٰہ من عندہٖ۔ یعصمک اللّٰہ من عندہ وان لم یعصمک الناس۔ واذیمکربک الّذی کفّر[1]۔ اوقدلی یاھامان۔

---

1 यह शब्द کفّر और کفر दोनों प्रकार से पढ़ा जाता है क्योंकि काफ़िर कहने वाला बहरहाल इन्कारी भी होगा और जो व्यक्ति इस दावे से इन्कार करता है वह बहरहाल

تبّت یدا ابی لھبٍ وتبّ ما کان لہ ان یدخل فیھا اِلّا خائفًا وَمَا اصابك فمن اللہ۔ الفتنۃ ھٰھنا فاصبرکما صبر اولوا العزم۔ اَلا انّھا فتنۃ من اللہ لیحبّ حبًّا جمًّا عطاءً غیر مجذوذ۔ شاتان تذبحان۔ وکلّ من علیھا فان۔ عسٰی ان تکرھوا شیئًا وھو خیرلکم واللہ یعلم وانتم لا تعلمون۔

(बराहीन अहमदिया भाग-4, पृष्ठ 497 से 511 तक)

अनुवाद - तुझे सहायता दी जाएगी और ख़ुदा का सहयोग तेरे साथ ऐसा सहयोग कि सच्चाई की वास्तविकता स्पष्ट हो जाएगी तब विरोधी कहेंगे कि अब पलायन का स्थान नहीं। वे कहेंगे कि हम एक भारी जमाअत हैं जो प्रतिशोध ले सकते हैं किन्तु शीघ्र ही वे भाग जाएंगे और मुख फेर लेंगे। ख़ुदा के निशान को देखकर कहेंगे कि यह छल है जो बहुत सुदृढ़ है[1]। तू उन से कह दे कि यदि ख़ुदा तआला से प्रेम रखते हो तो आओ मेरा अनुसरण करो ताकि ख़ुदा भी तुम से प्रेम करे और निश्चय ही समझो कि ख़ुदा इस पृथ्वी को अर्थात् इस पृथ्वी के निवासियों को जो मर चुके हैं पुनः जीवित करेगा अर्थात् बहुत से लोग हिदायत पाएंगे तथा एक रूहानी क्रान्ति जन्म लेगी और बहुत से लोग इस जमाअत में प्रवेश करेंगे और जो ख़ुदा का हो ख़ुदा उसके लिए हो जाता है। उनको कह

काफ़िर ठहराएगा और हामान का शब्द हैमान की ओर संकेत करता है और हैमान उसको कहते हैं जो किसी घाटी में अकेला हैरान फिरे। (इसी से)

① यह आयत अर्थात् وَاِنْ يَّرَوْا اٰيَةً يُّعْرِضُوْا وَيَقُوْلُوْا سِحْرٌ مُّسْتَمِرٌّ[2] पवित्र क़ुर्आन के उस स्थान की है जहां चांद फटने के चमत्कार का वर्णन है। अतः इस आयत को इस अवसर पर वर्णन करना इस बात की ओर संकेत था कि यहां भी कोई क़मरी (चन्द्रमा से सम्बन्धित) निशान प्रकट होगा। अतः वह निशान अद्भुत प्रकार का चन्द्र-ग्रहण था जो रमज़ान के महीने में प्रकट हुआ। कुछ उलेमा लिखते हैं कि चन्द्रमा फटने का चमत्कार भी एक प्रकार का ग्रहण ही था। (इसी से)

② अलक़मर-3

दे कि यदि मैंने ख़ुदा पर झूठ बांधा है तो मैंने एक बड़ा पाप किया है जिसका दण्ड मुझे मिलेगा अर्थात् ख़ुदा पर झूठ बांधने वाला इसी संसार में दण्ड पाता है और सफल नहीं होता और उस का समस्त किया-कराया अन्ततः बिगड़ जाता है परन्तु सच्चा सफल हो जाता है तथा सच्चे की जड़ पाताल में है पुनः कहा कि हे अहमद ! तू मेरी मनोकामना है और मेरे साथ है मैंने तेरी महानता का वृक्ष अपने हाथ से लगाया अर्थात् तू सच्चा है और मेरी ओर से है। इसलिए मैं तुझे लोगों में बहुत प्रतिष्ठा तथा सम्मान प्रदान करूंगा और यह कार्य विशेष तौर पर मेरे हाथ से होगा न किसी अन्य के हाथ से। इसलिए इस कार्य को कोई भी नष्ट नहीं कर सकेगा। यह भविष्यकाल के लिए एक भविष्यवाणी थी जो अब पूरी हो गई। पुनः कहता है कि क्या लोगों को इस बात पर आश्चर्य है तथा सोचते हैं कि ऐसा क्योंकर होगा, तो तू उनको उत्तर दे कि चमत्कार दिखाना ख़ुदा का कार्य है। वह अपने कार्यों के संबंध में पूछा नहीं जाता तथा लोग पूछे जाते हैं तथा कहते हैं कि यह पद तुझे क्योंकर मिलेगा, यह तो तेरी अपनी बनावट विदित होती है। कह, नहीं ये वादे ख़ुदा की ओर से हैं और फिर उन्हें उनके खेल-कूद में छोड़ दे अर्थात् जो कुधारणा कर रहे हैं करते रहें। अन्ततः देख लेंगे कि ये ख़ुदा की बातें हैं या मनुष्य की। जो लोग अत्याचारी हैं और अपने अत्याचार को नहीं छोड़ते उनके बारे में मुझ से वार्तालाप न कर कि मैं उन्हें डुबो दूंगा। यह एक नितान्त भयावह भविष्यवाणी है कि डुबोने का वादा किया गया है। मालूम नहीं कि किस प्रकार से डुबोया जाएगा। क्या नूह की जाति की भांति या लूत की जाति की भांति जो भयंकर भूकम्प से पृथ्वी में डुबो दिए गए थे। फिर अल्लाह तआला कहता है कि तुझ पर तेरा रब्ब अपनी छाया डालेगा और तेरा आर्तनाद सुनेगा तथा तुझ पर दया करेगा, यद्यपि लोग तुझे बचाना न चाहें परन्तु ख़ुदा तुझे बचाएगा। ख़ुदा तुझे अवश्य बचाएगा यद्यपि लोग फंसाने का इरादा करें। यह भवष्यिवाणी उन मुकद्दमों के बारे में है जो डाक्टर मार्टिन क्लार्क और करमदीन इत्यादि की ओर से मुझ पर फौजदारी की धारा के तहत हुए थे और लेखराम के क़त्ल होने के

समय भी मुझे फंसाने के लिए प्रयत्न किए गए थे तथा उन मुक़द्दमों में इरादा किया गया था कि मुझे फांसी दी जाए या क़ैद में डाला जाए। अतः ख़ुदा तआला इस भविष्यवाणी में कहता है कि मैं उनको उनके इरादों में असफल रखूंगा और उन के प्रहारों से मैं तुझे अवश्य बचाऊंगा। अतः चौबीस वर्ष के पश्चात् वे समस्त भविष्यवाणियां पूरी हो गईं। पुनः कहता है कि उस छल करने वाले के छल को याद कर जो तुझे काफ़िर ठहराएगा और तेरे दावे से इन्कार करेगा, वह अपने एक साथी से फ़त्वा लेगा ताकि लोगों को उस से भड़काए। तबाह हो गए दोनों हाथ अबीलहब[1] के जिन से वह फ़त्वा लिखा था। लिखने में यद्यपि एक हाथ का काम है परन्तु दूसरा भी उसकी सहायता करता है और तबाह होने से यह अभिप्राय है कि वह अपने फ़त्वा लेने के उद्देश्य में असफल रहेगा और फिर कहता है कि वह भी तबाह हो गया अर्थात् उसने बहुत बड़ा पाप किया जो वास्तव में तबाही है इसलिए उसका मुख संसार की ओर कर दिया गया और ईमान की मधुरता उससे जाती रही। उसके लिए उचित न था कि वह मामले में हस्तक्षेप करता परन्तु डरते, डरते। अर्थात् यदि कुछ सन्देह था तो गुप्त तौर पर निवारण करता और सभ्यतापूर्वक निवारण करता, न यह कि शत्रु बनकर मैदान में निकलता। पुनः कहा कि जो तुझे कष्ट पहुंचेगा वह ख़ुदा की ओर से है अर्थात् यदि ख़ुदा न चाहता तो यह उपद्रव फैलाना उसकी मजाल न थी। पुनः कहा कि उस समय संसार में बहुत शोर होगा और भारी उपद्रव होगा। अतः तुझे चाहिए कि धैर्य धारण करे जैसा कि दृढ़ प्रतिज्ञ पैग़म्बर धैर्य धारण करते रहे, किन्तु स्मरण रख कि यह उपद्रव उस व्यक्ति की ओर से नहीं होगा अपितु ख़ुदा तआला की ओर से होगा ताकि वह तुझ से अधिक प्रेम करे और यह प्रेम ख़ुदा की ओर से वह ने'मत है जो फिर तुझ से छीनी नहीं जाएगी। फिर एक और भविष्यवाणी करके कहा कि दो बकरियां ज़िब्ह की जाएंगी अर्थात् मियां अब्दुर्रहमान

---

[1] यहां अबीलहब के अर्थ हैं अग्नि भड़कने का बाप अर्थात् इस देश में काफ़िर कहने की जो अग्नि भड़केगी वास्तव में उसका बाप वह होगा जिसने यह फ़त्वा लिखा। (इसी से)

और मौलवी अब्दुल लतीफ़ जो काबुल में संगसार[1] किए गए और प्रत्येक जो धरती पर है अन्ततः मरेगा परन्तु उन दोनों का ज़िब्ह किया जाना अन्ततः तुम्हारे लिए अच्छाई का फल लाएगा और शहीद होने की घटनाओं के हित जो ख़ुदा को मालूम हैं वे तुम्हें मालूम नहीं अर्थात् ख़ुदा जानता है कि इन मौतों से उस देश काबुल में क्या-क्या अच्छाई पैदा होगी। इससे पहली भविष्यवाणी उस फ़त्वः चाहने के बारे में है जो मौलवी मुहम्मद हुसैन के हाथ से तथा मौलवी नज़ीर हुसैन के फ़त्वः लिखने से प्रकट हुआ जिस से एक संसार में शोर उठा तथा सब ने हमारा संबंध त्याग दिया तथा काफ़िर, बेईमान और दज्जाल कहना पुण्य का कारण समझा। उसके साथ यह जो वादा है कि ख़ुदा उसके पश्चात् बहुत प्रेम करेगा यह ख़ुदा की प्रजा का मुख मेरी ओर होने का संकेत है क्योंकि ख़ुदा का प्रेम प्रजा के प्रेम को चाहता है और ख़ुदा की प्रसन्नता चाहती है कि संसार के सदाचारी भाग्यशाली लोग भी प्रसन्न हो जाएं तथा अन्तिम कथित भविष्यवाणी में जो बकरियों के ज़िब्ह किए जाने का वर्णन है यह उस घटना की ओर संकेत है जो काबुल के देश में प्रकट हुई। अर्थात् हमारी जमाअत में से एक व्यक्ति मौलवी अब्दुर्रहमान नामक सदाचारी युवा था तथा दूसरे मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहिब जो अत्यन्त मान्य पुरुष थे। काबुल के अमीर के आदेश से संगसार किए गए मात्र इस आरोप से कि वे दोनों हमारी जमाअत में क्यों सम्मिलित हो गए। इस घटना को लगभग दो वर्ष गुज़र चुके हैं[2]। अब

---

①किसी अपराधी को कमर तक पृथ्वी में गाड़ कर पत्थर मार-मार कर उसको मार डालना। (अनुवादक)

②यह शहीद होने की घटना बिरादरम मौलवी अब्दुल लतीफ़ साहिब (स्वर्गीय) और स्वर्गीय शैख़ अब्दुर्रहमान साहिब एक ऐसी अप्रत्याशित घटना थी कि जब तक घटित न हो गई हमारा ध्यान उस ओर न गया कि वास्तव में ख़ुदा की वह्यी के ये अर्थ हैं कि हमारे दो सच्चे मुरीद वास्तव में ज़िब्ह किए जाएंगे अपितु इस स्थिति को असंभव समझकर मात्र विवेचन के तौर पर व्याख्या की ओर झुकाव होता रहा और व्याख्यात्मक

यह स्थान न्याय की दृष्टि से देखने का है कि क्योंकर संभव है कि ऐसे ग़ैब (परोक्ष) की बातें जो गुप्त से गुप्त थीं उस व्यक्ति की ओर सम्बद्ध हो सकें जो झूठ घड़ने वाला हो। हालांकि ख़ुदा तआला अपने प्रिय कलाम में कहता है कि प्रत्येक मोमिन पर पूर्ण ग़ैब के मामले प्रकट नहीं किए जाते अपितु मात्र उन बन्दों पर जो मान्यता तथा चयन किए हुए की श्रेणी रखते हैं प्रकट होते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में एक स्थान पर कहता है -

لَا يُظْهِرُ عَلٰى غَيْبِهٖۤ اَحَدًا اِلَّا مَنِ ارْتَضٰى مِنْ رَّسُوْلٍ[1]

अर्थात् अल्लाह तआला अपने ग़ैब पर किसी को विजयी नहीं होने देता परन्तु उन लोगों को जो उसके रसूल और उसके दरबार के चुने हुए हों।

खेद का स्थान है कि कुछ मूर्ख मौलवी तथा विद्वान कहला कर कुछ अज़ाब की भविष्यवाणियों के सम्बन्ध में जिनमें से कुछ पूरी हो गईं तथा कुछ पूरी होने को हैं आपत्ति प्रस्तुत करते हैं तथा नहीं जानते कि ख़ुदा तआला अपने अज़ाब के बारे में अधिकार रखता

चरित्रार्थ विचार में आते रहे क्योंकि मनुष्य का अपना ज्ञान तथा विवेचन गलती से रिक्त नहीं, किन्तु जब ये दोनों घटनाएं बिल्कुल भविष्यवाणी के प्रत्यक्ष शब्दों के अनुसार यथावत् प्रकट हो गईं तथा इस जमाअत के दो मान्य पुरुष बड़ी निर्दयतापूर्वक काबुल में शहीद किए गए तो अटल विश्वास के समान ख़ुदा की वह्यी के अर्थ विदित हो गए। फिर उस वह्यी की पूर्ण इबारत को दृष्टि उठा कर देखा तो आंख खुल गई और अद्भुत रुचि पैदा हुई तथा ज्ञात हुआ कि जहां तक स्पष्टीकरण संभव है ख़ुदा ने स्पष्ट तौर पर उस भविष्यवाणी को वर्णन कर दिया है तथा ऐसे शब्द लिए हैं तथा ऐसे वाक्य वर्णन किए हैं कि वे किसी अन्य पर चरितार्थ हो ही नहीं सकते। सुब्हान अल्लाह ! इससे सिद्ध होता है उसने कैसे उन गुप्त बातों को एक लम्बे समय पूर्व बराहीन अहमदिया में स्पष्टतापूर्वक वर्णन कर दिया। (इसी से)

1 अलजिन्न - 27,28

है चाहे उसे पूरा करे या स्थगित कर दे। यही मत समस्त नबियों का है और इसी पर विपत्ति टल जाने का सिलसिला स्थापित किया गया है, क्योंकि एक विपत्ति जिसके बारे में ख़ुदा तआला ने इरादा किया है चाहे उस विपत्ति को किसी नबी पर प्रकट करके भविष्यवाणी के रूप में प्रकट कर दे और चाहे गुप्त रखे, वह बहरहाल विपत्ति ही है। अत: यदि वह किसी प्रकार टल नहीं सकती तो फिर दान-पुण्य और दुआ की क्यों प्रेरणा दी है।

तत्पश्चात् अन्य भविष्यवाणियां हैं जो इन भविष्यवाणियों की समर्थक हैं जिनका हम नीचे उल्लेख करते हैं और वे ये हैं :-

وَلا تهنوا وَلا تحزنوا اليس الله بكاف عبده۔ الم تعلم انّ الله علٰى كلّ شيءٍ قدير۔ وان يتخذونك اِلّا هزوا۔ أَهٰذا الّذى بعث الله۔ قل انّما انا بشر مثلكم يوحٰى اِلىّ انّما اِلٰهُكُمْ اِله وَّاحدٌ والخَيْر كلّهٗ فى القراٰن۔ قل ان هُدَى الله هوالهُدٰى ۔ رَبِّ اِنّى مغلوبٌ فانتصر۔ ايلى ايلى لما سبقتنى۔ يا عبد القادر اِنّى معك غرست لك بيدَى رحمتى وقدرتى۔ ونجّيناك من الغمّ وفتنّاك فتونا۔ انا بُدّك اللازم۔ اَنَا مُحْيِيْكَ نَفختُ فيك مِن لّدنِّى روح الصّدق۔ وَأَلقيت عليك محبّة مِّنّى وَلتصنع علٰى عينى۔ كزرع اخرج شَطْأَهٗ فَاستغلظ فاستوٰى علٰى سوقهٖ ۔ اِنّا فتحنالك فتحا مُّبِيْنًا ليغفرلك الله ماتقدّم من ذنبك وَمَا تَأَخّر

देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ - 511 से 515 तक।

अनुवाद व्याख्या सहित :- और तुम सुस्त मत बनो तथा चिन्ता मत करो। क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं अर्थात् यदि समस्त लोग शत्रु हो जाएं तो ख़ुदा अपनी ओर से सहायता करेगा। पुन: कहा कि क्या तू जानता नहीं कि ख़ुदा प्रत्येक वस्तु पर सामर्थ्यवान है उसके आगे कोई बात अनहोनी नहीं। अतएव वह सामर्थ्यवान है कि वह अकेले अख्यात व्यक्ति को इतनी अधिक उन्नति दे कि लाखों लोग उसके प्रेमी और श्रद्धालु हो जाएं। यह वह भविष्यवाणी है जो पच्चीस वर्ष के पश्चात् इस युग में पूरी हुई। पुन: कहा - कि इन लोगों ने तुझे उपहास का निशाना बना रखा है। वे कटाक्ष करते हुए कहते हैं कि क्या यही

वह व्यक्ति है जिसको ख़ुदा ने हम में तब्लीग़ (प्रचार) के लिए खड़ा किया। उन्हें कह दे कि मैं तो तुम्हारे समान एक मनुष्य हूं मुझे यह वह्यी (ईशवाणी) होती है कि तुम्हारा ख़ुदा एक ख़ुदा है तथा प्रत्येक नेकी और भलाई क़ुर्आन में है। उनको कह दे कि तुम्हारे विचार क्या वस्तु हैं। हिदायत वही है जो ख़ुदा तआला सीधे तौर पर स्वयं देता है वरन् मनुष्य अपने ग़लत विवेचनों से ख़ुदा की किताब के अर्थ बिगाड़ देता है तथा कुछ का कुछ समझ लेता है। वह ख़ुदा ही है जो ग़लती नहीं करता। इसलिए हिदायत उसी की हिदायत है। लोगों के अपने काल्पनिक अर्थ भरोसे के योग्य नहीं हैं और पुन: कहा - कि यह दुआ कर कि हे ख़ुदा में पराजित हूं, वे बहुत हैं और मैं अकेला हूं, वे एक गिरोह हैं तू मेरी ओर से मुकाबले के लिए स्वयं खड़ा हो जा। हे मेरे ख़ुदा ! हे मेरे ख़ुदा ! तूने मुझे क्यों छोड़ दिया। यह भावी युगों की विपत्तियों के बारे में एक भविष्यवाणी है कि एक ऐसा युग आएगा कि विरोध का बहुत शोर उठेगा और वह अकेलेपन और अख्याति का युग होगा और विरोध करने के लिए एक संसार उठ खड़ा होगा तथा प्रत्यक्ष डगमगाहट देखकर मानव होने के नाते विचार आएगा कि ख़ुदा ने अपनी सहायता को छोड़ दिया है। अत: ख़ुदा तआला उस भावी युग को स्मरण कराता है कि उस समय ख़ुदा दुआओं को स्वीकार करेगा और वह अवस्था नहीं रहेगी और हृदय इस ओर प्रवृत्त हो जाएंगे। अतएव ऐसा ही हुआ तथा अत्यधिक उपद्रव के पश्चात् जो काफ़िर ठहराने के फ़त्व: से उठा था अन्तत: हृदय उस ओर आकृष्ट हो गए। पुन: कहा - हे अब्दुल कादिर ! मैं तेरे साथ हूं। मैंने तेरे लिए अपनी दया एवं क़ुदरत का वृक्ष लगाया और मैं तुझे प्रत्येक चिन्ता से मुक्ति दूंगा किन्तु इस से पूर्व कई उपद्रव तेरे मार्ग में फैलाऊंगा ताकि तुझे भली भांति परखा जाए और ताकि उपद्रवों के समयों में तेरी दृढ़ता प्रकट हो। मैं तेरा अनिवार्य उपचार हूं तथा मैं तेरी पीड़ाओं का इलाज हूं और मैं ही हूं जिसने तुझे जीवित किया। मैंने अपनी ओर से तुझ में सच्चाई की रूह फूंक दी तथा मैंने अपनी ओर से तुझ पर प्रेम डाल दिया अर्थात् तुझ में एक ऐसी विशेषता रख दी कि प्रत्येक जो भाग्यशाली होगा वह तुझ से प्रेम करेगा और तेरी ओर खींचा जाएगा।

मैंने ऐसा किया ताकि तू मेरी आंखों के सामने पोषण पाए और मेरे सामने तेरा पालन-पोषण तथा वृद्धि हो। तू उस बीज के समान है जो पृथ्वी में बोया गया, वह एक छोटा सा दाना था जो मिट्टी में गुप्त था फिर उस की हरियाली निकली तथा वह दिन-प्रतिदिन बढ़ता गया यहां तक कि वह बहुत मोटा हो गया और उसकी शाखाएं फैल गईं और वह एक पूर्ण वृक्ष होकर उसका तना अपने पैरों पर खड़ा हो गया। यह भविष्य की उन्नति के लिए एक भविष्यवाणी है, इसमें बताया गया है कि इस समय तो तू एक दाने के समान है जो पृथ्वी में बोया गया और मिट्टी में छिप गया, परन्तु भविष्य में यह प्रारब्ध है कि इस दाने से हरियाली निकले। वह बढ़ता जाएगा यहां तक कि एक बड़ा वृक्ष बन जाएगा तथा मोटा हो जाएगा और अपने पैरों पर स्थापित हो जाएगा। कोई आंधी उसे हानि नहीं पहुंचा सकेगी। यह भविष्यवाणी इस युग से पच्चीस वर्ष पूर्व संसार में प्रकाशित हो चुकी है। पुनः कहा - ख़ुदा तुझे एक बड़ी तथा स्पष्ट विजय देगा ताकि वह तेरे पहले गुनाह (पाप) क्षमा करे और बाद के पाप भी। यहां ख़ुदा की इस वह्यी के संबंध में एक प्रश्न पैदा होता है कि विजय का पाप के क्षमा करने से क्या सम्बन्ध है। प्रत्यक्षत: इन दोनों वाक्यों का आपस में कोई मेल नहीं परन्तु वास्तव में इन दोनों वाक्यों का परस्पर बहुत अधिक संबंध है। अत: व्याख्या इस ख़ुदा की वह्यी की यह है कि इस अन्धे संसार में ख़ुदा के मामूरों, नबियों और रसूलों की जितनी आलोचनाएं की गई हैं तथा उनकी प्रतिष्ठा तथा कार्यों के बारे में जितने आक्षेप होते हैं, कुधारणाएं होती हैं और भांति भांति की बातें की जाती हैं वे संसार में किसी के संबंध में नहीं होतीं तथा ख़ुदा ने ऐसा ही इरादा किया है ताकि दुर्भाग्यशाली लोगों की दृष्टि से गुप्त रखे और वे उनकी दृष्टि में आक्षेप के पात्र ठहर जाएं क्योंकि वे एक महान दौलत हैं और महान दौलत को अयोग्य लोगों से गुप्त रखना उत्तम है। इसी कारण ख़ुदा तआला उन लोगों को जो अनादि दुर्भाग्य रखते हैं उस चुने हुए गिरोह के बारे में भिन्न-भिन्न प्रकार के सन्देहों में डाल देता है ताकि वे उस दौलत को स्वीकार करने से वंचित रह जाएं। यह ख़ुदा का नियम उन लोगों के बारे में है जो ख़ुदा तआला की ओर से इमाम, रसूल तथा नबी होकर

आते हैं। यही कारण है कि हज़रत मूसा अलैहिस्सलाम, हज़रत ईसा[अ.] तथा हमारे नबी[स.अ.व.] के बारे में सत्य के शत्रुओं ने भिन्न-भिन्न प्रकार के आरोप किए हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार की निन्दा की है, वे बातें किसी साधारण सदाचारी के बारे में कदापि नहीं की गईं। कौन सा लांछन है जो उन पर लगाया नहीं गया तथा कौन सी आलोचना है जो उनकी नहीं की गई। अत: चूंकि समस्त लांछनों का समुचित उत्तर देना एक अवास्तविक बात थी और अवास्तविक का निर्णय कठिन होता है और अंधकारमय प्रकृति के लोग उससे सन्तुष्ट नहीं होते। इसलिए ख़ुदा तआला ने अवास्तविक मार्ग धारण नहीं किया और निशानों का मार्ग अपनाया और अपने नबियों को बरी करने के लिए अपने समर्थनपूर्ण निशानों तथा महान सहायताओं को पर्याप्त समझा, क्योंकि प्रत्येक मूर्ख और अपवित्र व्यक्ति भी सलरतापूर्वक समझ सकता है कि यदि वह नऊज़ुबिल्लाह ऐसे ही कामवासना में लिप्त, झूठ घड़ने वाले तथा अपवित्र प्रकृति रखने वाले होते तो संभव न था कि उनकी सहायता के लिए ऐसे बड़े-बड़े निशान दिखाए जाते। इसलिए ख़ुदा तआला ने अपने अनादि नियम के अनुसार बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरे बारे में भी यही वह्यी की जिसका ऊपर वर्णन किया जा चुका है जिसके अर्थ ये हैं कि ख़ुदा तआला बड़ी-बड़ी विजयें तथा तेरे समर्थन में वैभवशाली निशान दिखाएगा ताकि वे आरोप जो संसार के अंधे लोगों ने मेरे प्राथमिक जीवन के बारे में अथवा जीवन के अन्तिम भाग के बारे में किए हैं उन सब का उत्तर पैदा हो जाए[1] ; क्योंकि समस्त भेदों के ज्ञाता की साक्ष्य से बढ़कर अन्य कोई साक्ष्य नहीं और

---

① ख़ुदा ने मुझ पर प्रकट किया है कि जीवन का अन्तिम भाग यही है जो अब गुज़र रहा है जैसा कि अरबी में ख़ुदा की यह वह्यी है -

قَرُبَ اَجَلُكَ الْمُقَدَّر وَلَا نُبْقِيْ لَكَ مِنَ الْمُخْزِيَاتِ ذِكْرًا

अर्थात् तेरी निश्चित आयु अब निकट है और हम तेरे विषय में एक बात भी ऐसी शेष नहीं छोड़ेंगे जो बदनामी और निन्दा एवं लांछन का कारण हो। इसी कारण उसने मुझे सामर्थ्य दी कि बराहीन अहमदिया का पांचवां भाग प्रकाशित किया जाए।

'ज़ंब' का शब्द इस दृष्टि से बोला गया है कि आरोपी और आलोचक जो आक्रमण करते हैं कि वे अपने हृदयों में रसूलों के बारे में उन आलोचनाओं को एक ज़ंब ठहराकर आक्रमण करते हैं। अतः इसके ये अर्थ हुए कि ज़ंब (दोष) तेरी ओर सम्बद्ध किया गया है न यह कि वास्तव में कोई ज़ंब है और यह बात स्वयं शिष्टाचार से दूर है कि मनुष्य उस ख़ुदा की वह्यी (ईशवाणी) के यह अर्थ करे कि वास्तव में कोई ज़ंब (दोष) है जिसे ख़ुदा तआला ने क्षमा कर दिया अपितु उसके ये अर्थ हैं कि जो कुछ ज़ंब ने नाम पर उनकी ओर सम्बद्ध किया गया और उसको प्रसिद्ध किया गया, उस ग़लत प्रसिद्धि को एक महान निशान से ढक दिया जाएगा। मूर्ख लोग नहीं जानते कि ख़ुदा किन अर्थों से अपने मान्य पुरुषों की ओर ज़ंब को अर्थात् पाप को सम्बद्ध करता है क्योंकि वास्तविक पाप जो ख़ुदा तआला की अवज्ञा करना है वह तो तौबः से पूर्व दण्डनीय है न यह कि ख़ुदा तआला को स्वयं ही इस बात की चिन्ता लग जाए कि मैं कोई ऐसा निशान दिखाऊंगा ताकि वे आलोचनापूर्ण विचार तथा दोष ढूंढने के भ्रम स्वयं गुप्त और लुप्त हो जाएं और उनकी चर्चा करने वाला अपमानित हो जाए। यही कारण है कि इमाम और सूफ़ी लोग लिखते हैं कि ख़ुदा तआला ने नबियों के बारे में जिन दोषों के बारे में वर्णन किया है जैसा कि आदम[अ.] का दाना खाना यदि तिरस्कार के तौर पर उन का वर्णन किया जाए तो यह कुफ्र और ईमान के समाप्त होने का कारण है। क्योंकि वे मान्य पुरुष हैं और संसार जिस बात को ज़ंब समझता है वे उस से सुरक्षित हैं और उन से शत्रुता करना ख़ुदा तआला के आक्रमण का निशाना बनना है जैसा कि सही हदीस में है - ومن عَادٰی وَلِیًّا لی فقد اٰذنَتُہٗ لِلْحَرْب अर्थात् जो व्यक्ति मेरे वली का शत्रु हो तो मैं उसको चेतावनी देता हूं कि अब मेरी लड़ाई के लिए तैयार हो जा। इसलिए पवित्र आत्मा लोग ख़ुदा के बहुत प्रिय होते हैं और उस से

इसी प्रकार महा प्रतापी और तेजस्वी ख़ुदा ने अपनी इस वह्यी में मेरी मृत्यु के निकट होने की ओर संकेत किया। समस्त घटनाओं तथा प्रकृति के चमत्कारों को दिखाने के पश्चात् तेरी घटना होगी। (इसी से)

नितान्त घनिष्ठ सम्बन्ध रखते हैं उनके दोष ढूंढना और आलोचना करने में कोई भलाई नहीं है और विनाश के लिए इससे निकटतम कोई भी द्वार नहीं कि मनुष्य अंधा बनकर ख़ुदा के प्रियजनों का शत्रु हो जाए।

और स्मरण रहे कि क्षमा के केवल यही अर्थ नहीं कि जो पाप हो जाए उसे क्षमा कर देना अपितु यह भी अर्थ है कि पाप को शक्ति स्थल से कर्म स्थल की ओर न आने देना और हृदय में ऐसा विचार पैदा ही न करना। इस भविष्यवाणियों में भी बारम्बार ख़ुदा तआला ने सूचना दी है कि एक अख्याति (गुमनामी) की अवस्था को ख़ुदा तआला ख्याति की अवस्था में परिवर्तित कर देगा और यद्यपि कि कितने ही उपद्रव पैदा होंगे ख़ुदा तआला उन सबसे मुक्ति देगा और जैसे आयु के प्रथम भाग में दोष ढूंढने वाले और आलोचक थे आयु के अन्तिम भाग में भी ऐसे ही होंगे किन्तु ख़ुदा तआला एक ऐसी स्पष्ट विजय प्रकट करेगा कि इन आलोचकों तथा दोष ढूंढने वालों का मुख बन्द हो जाएगा या उन के प्रभाव से लोग सुरक्षित रहेंगे। यह मनुष्य की विशेषता है कि हज़ार निशानों से भी इतनी हिदायत (मार्गदर्शन) पाने के लिए तैयार नहीं होता जितना कि दोष निकालने वालों की दुष्टता से प्रभावित होकर इन्कारी होने को तैयार हो जाता है। इसलिए ख़ुदा की इस वह्यी में इस शैली में प्रकट नहीं किया कि मैं निशान दिखाऊंगा अपितु कहा कि मैं तुझे एक महान विजय प्रदान करूंगा अर्थात् कोई ऐसा निशान दिखाऊंगा जो हृदयों पर विजय प्राप्त करेगा और तुम्हारी श्रेष्ठता प्रकट करेगा और कहा कि यह आयु के अन्तिम युग में होगा। अतः मैं **बलपूर्वक कहता हूं** कि यह भविष्यवाणी इसी युग के लिए है तथा मैं देखता हूं कि दोषारोपण और आलोचनाएं सीमा से अधिक हो गई हैं। अतः मैं आशान्वित हूं कि शीघ्र ही एक बड़ा निशान प्रकट होगा जो हृदयों पर विजय प्राप्त करेगा और मुर्दा हृदयों को जो बार-बार मरते हैं पुनः जीवित करेगा - इस पर ख़ुदा की प्रशंसा और फिर इस भविष्यवाणी के समर्थन में अन्य भविष्यवाणियां बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में हैं जो पच्चीस वर्ष के पश्चात् इस युग में पूरी हुई हैं और वे ये हैं :-

اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدہٗ فَبَرَّأَہُ اللّٰہُ مِمَّا قَالُوْا وَکَانَ عِنْدَ اللّٰہِ وَجِیْھًا۔ اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عبدہٗ فَلَمَّا تَجَلّٰی رَبّہٗ لِلْجَبَل جَعَلَہٗ دَکًّا۔ وَاللّٰہُ مُوْھِنُ کَیْدِ الْکَافِرِیْنَ۔ اَلَیْسَ اللّٰہُ بِکَافٍ عَبْدہٗ وَلِنَجْعَلَہٗ اٰیَۃً لِّلنَّاسِ وَرَحْمَۃً مِّنّا وَکَانَ اَمْرًا مَقْضِیًّا قَوْلَ الْحَقِّ الَّذِی فِیْہِ تَمْتَرُوْنَ۔ لَا یُصدّق السفیہ اِلّا سیفۃ الھلاک عدوٌّ لی وعدوٌّ لک قل أَتٰی امر اللّٰہ فلا تَسْتَعْجِلُوْہ اِذَا جَاءَ نَصْرُ اللّٰہ اَلَسْتُ بِرَبِّکُمْ قَالُوْا بلٰی۔ بخرام کہ وقتِ تو نزدیک رسید و پائے محمدیاں بر منار بلند تر محکم افتاد۔ पाक मुहम्मद मुस्तफ़ा नबियों का सरदार। ख़ुदा तेरे समस्त कार्य ठीक कर देगा और तेरी समस्त मनोकामनाएं तुझे देगा। ھو الّذی ینزل الغیث بعد ما قنطوا وینشر رحمتہ۔ یجتبی اِلَیْہِ من یّشاء مِنْ عبادہٖ۔ وکذالک مَنَنَّا عَلٰی یُوْسف لنصرف عنہ السُّوء والفحشاء ولتنذر قومًا مَّا اُنذر اٰباء ھم فھم غافلون۔ قل عندی شھادۃ من اللّٰہ فھل انتم مؤمنون۔ انّ مَعِی ربّی سیھدین۔ ربّ السِّجنُ احبّ الیّ ممّا یَدْعُوْنَنِی اِلَیْہِ ربِّ نجّنی من غَمّی

(देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ - 516 से 554 तक)

अनुवाद :- क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है। अत: वह उन समस्त आरोपों से उसे बरी करेगा जो उस पर लगाए जाएंगे और वह ख़ुदा के यहां स्थान रखता है। क्या ख़ुदा अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं। अत: वह पर्वत को उसको बरी करने के लिए साक्षी लाएगा और पर्वत पर जब उसकी झलक का प्रदर्शन होगा तो वह उसे टुकड़े-टुकड़े कर देगा और उस निशान से इन्कारियों की योजनाओं को शिथिल कर देगा। क्या वह अपने बन्दे के लिए पर्याप्त नहीं है अर्थात् ख़ुदा के निशान पर्याप्त हैं किसी अन्य की साक्ष्य की आवश्यकता नहीं और यह पर्वत का टुकड़े-टुकड़े करना लोगों के लिए एक निशान बनाएंगे और हमारा यह निशान दया का कारण होगा कि इससे बहुत से लोग लाभ प्राप्त करेंगे[1] और यह बात पहले से निश्चित थी। यह वह सच्ची बात है जिस के प्रकट होने

---

[1] स्मरण रहे कि बराहीन अहमदिया में जो ख़ुदा तआला के वाक्यों का अनुवाद है वह समय से पूर्व होने के कारण किसी स्थान पर संक्षिप्त है और किसी स्थान पर बौद्धिक रूप

से पूर्व तुम सन्देहग्रस्त थे। कमीना मनुष्य तो किसी निशान को नहीं मानता सिवाए मौत के निशान के। वह मेरा और तेरा शत्रु है इन कमीनों को कह दे कि मौत का निशान भी आएगा और संसार में एक महामारी पड़ेगी। अत: तुम मुझ से शीघ्रता न करो कि यह सब कुछ अपने समय पर प्रकट होगा। यह ताऊन तथा भयंकर भूकम्प के बारे में भविष्यवाणी है कि जो इस युग से पच्चीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी है। फिर ख़ुदा तआला कहता है कि जब[1] मैं देश में भयावह और विनाशकारी निशान भेजकर अपने मामूर तथा रसूल की सहायता करूंगा तो इन्कार करने वालों को कहा जाएगा कि अब बताओ क्या मैं तुम्हारा प्रतिपालक हूं या नहीं ? अर्थात् वह दिन बड़े कठिन और संकट के होंगे और उन दिनों में बड़े भयावह निशान प्रकट होंगे तथा निशानों को देख कर बहुत से सियाह दिल तथा टेढ़ी प्रकृति वाले लोग सच्चाई की ओर लौटेंगे। ख़ुदा का यह चुना हुआ व्यक्ति

की दृष्टि से कोई शब्द वास्तविकता से फेरा गया है अर्थात् केवल प्रत्यक्ष से हटकर प्रकट किया गया और चूंकि ख़ुदा का मूल कलाम मौजूद है उसके अध्ययनकर्ताओं को चाहिए कि किसी ऐसी व्याख्या की परवाह न करें जो भविष्यवाणी प्रकट होने से पूर्व की गई हो, उसे विवेचन की ग़लती समझ लें क्योंकि भविष्यवाणी की वास्तविक व्याख्या का वह समय होता है जिस समय वह भविष्यवाणी प्रकट हो। (इसी से)

1 यह भविष्यवाणी उन लोगों के बारे में है जो इस मामूर और ख़ुदा के रसूल की वह्यी को मनुष्य का बनाया हुआ झूठ अथवा शैतानी भ्रम समझते हैं तथा यह नहीं मानते कि वही हमारा ख़ुदा है जो बराहीन अहमदिया के समय से आज तक इस लेखक पर अपनी वह्यी उतार रहा है। इस आयत में ख़ुदा तआला वादा करता है कि अन्त में उनसे स्वीकार कराके छोड़ूंगा तथा उनको इक़रार करना पड़ेगा। वह जो बराहीन अहमदिया के समय से अन्त तक इस लेखक पर वह्यी करता रहा है वही इस संसार का ख़ुदा है उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं। इसमें यह संकेत भी पाया जाता है कि कोई बड़ा निशान प्रकट होगा जिस से बड़े-बड़े इन्कार करने वालों के शीष (सिर) झुक जाएंगे। (इसी से)

जो उनके मध्य प्रकट हुआ है उस पर ईमान ले आएंगे। फिर महाप्रतापी ख़ुदा उपरोक्त वह्यी में सम्बोधित करके कहता है कि तू प्रसन्नता और चुस्ती से पृथ्वी पर चल कि अब तेरा समय निकट आ गया और मुहम्मदियों का पांव एक बहुत बुलन्द और सुदृढ़ मीनार पर पड़ गया। मुहम्मदियों के शब्द से अभिप्राय इस सिलसिले के मुसलमान हैं अन्यथा ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी के अनुसार जो बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी है अन्य फ़िर्क़े जो मुसलमान कहलाते हैं दिन-प्रतिदिन पतनशील होंगे तथा इसी प्रकार वे फ़िर्क़े जो इस्लाम से बाहर हैं जैसा कि ख़ुदा का उस वह्यी में जो बराहीन अहमदिया में प्रकाशित हो चुकी है स्पष्ट तौर पर कहा है —

يَا عِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ وَمُطَهِّرُكَ مِنَ الَّذِيْنَ كَفَرُوا① وَجَاعِلُ الَّذِيْنَ اتَّبَعُوْكَ فَوْقَ الَّذِيْنَ كَفَرُوْا اِلٰى يَوْمِ الْقِيَامَةِ۔

अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और अपनी ओर उठाऊंगा और तेरी बरकत प्रकट करूंगा और तेरे अनुयायियों को तेरे इन्कार करने वालों पर क़यामत तक विजयी रखूंगा। यहां इस ख़ुदा की वह्यी में ईसा से अभिप्राय मैं हूं और ताबिईन अर्थात् अनुयायियों से अभिप्राय मेरी जमाअत है। पवित्र क़ुर्आन में यह भविष्यवाणी हज़रत ईसा[अ.] के बारे में है तथा पराजित जाति से अभिप्राय यहूदी हैं जो दिन-प्रतिदिन कम होते गए। अत: इस आयत को दोबारा मेरे और मेरी जमाअत के लिए उतारना इस बात की ओर संकेत है कि निश्चित यों है कि वे लोग जो इस जमाअत से बाहर हैं वे दिन-प्रतिदिन कम होते जाएंगे तथा मुसलमानों के समस्त फ़िर्क़े जो इस सिलसिले से बाहर हैं वे दिन-प्रतिदिन कम होकर इस जमाअत में सम्मिलित होते जाएंगे या समाप्त होते जाएंगे जिस प्रकार कि यहूदी घटते-घटते इतने कम हो गए कि बहुत ही कम रह गए। इसी प्रकार इस जमाअत के विरोधियों का

---

① यह वाक्य लिखने वाले की भूल से बराहीन अहमदिया में रह गया है जिसके ये अर्थ हैं कि इन्कार करने वालों के प्रत्येक आरोप तथा लांछन से तेरा दामन पवित्र कर दूंगा। यह इल्हाम कई बार हो चुका है। (इसी से)

अंजाम होगा तथा इस जमाअत के लोग अपनी संख्या और धर्म की शक्ति की दृष्टि से सब पर विजयी हो जाएंगे यह भविष्यवाणी विलक्षण तौर पर पूर्ण हो रही है, क्योंकि जब बराहीन अहमदिया में यह भविष्यवाणी प्रकाशित हुई थी उस समय तो मेरी यह अवस्था अप्रसिद्धि की थी कि एक व्यक्ति भी नहीं कह सकता कि वह मेरा अनुयायी था। अब ख़ुदा तआला की कृपा से इस जमाअत की संख्या कई लाख तक पहुंच गई है तथा इस उन्नति की तीव्र गति है जिसका कारण वे आकाशीय आपदाएं भी हैं जो इस देश को मृत्यु का शिकार बना रही हैं। इस के पश्चात् ख़ुदा की शेष वह्यी यह है कि हज़रत मुहम्मद मुस्तफ़ा[स.अ.व.] समस्त नबियों के सरदार हैं। पुनः कहा कि ख़ुदा तेरे समस्त कार्य ठीक कर देगा और तेरी समस्त मनोकामनाएं तुझे देगा। स्पष्ट रहे कि ये भविष्यवाणियां नितान्त उच्च स्तरीय हैं क्योंकि ऐसे समय में की गईं जबकि कोई कार्य भी ठीक न था और कोई मनोकामना प्राप्त न थी और अब इस युग में पच्चीस वर्षोपरान्त इतनी मनोकामनाएं पूर्ण और प्राप्त हो गईं कि जिनकी गणना करना कठिन है। ख़ुदा ने इस वीराने को अर्थात् क़ादियान को बड़ी बस्ती बना दिया कि प्रत्येक देश के लोग यहां आकर एकत्र होते हैं और वे कार्य दिखाए कि कोई बुद्धि नहीं कह सकती थी कि ऐसा प्रकट हो जाएगा। लाखों लोगों ने मुझे स्वीकार कर लिया तथा यह देश हमारी जमाअत से भर गया और न केवल इतना अपितु अरब देश, शाम, मिस्र, रोम, फारस, अमरीका तथा यूरोप इत्यादि देशों में यह बीज बोया गया तथा इन देशों के बहुत से लोग इस जमाअत में सम्मिलित हो गए तथा आशा की जाती है कि वह समय आता जाता है अपितु निकट है कि इन उपरोक्त कथित देशों के लोग भी इस आकाशीय प्रकाश से पूर्ण भाग प्राप्त करेंगे। मूर्ख शत्रु जो मौलवी कहलाते हैं उनकी कमरें टूट गईं और वे आकाशीय इरादे को अपने छल, कपट तथा प्रपंचों द्वारा रोक न सके तथा वे इस बात से निराश हो गए कि वे इस जमाअत को मिटा सकें तथा जिन कार्यों को वे बिगाड़ना चाहते थे वे समस्त कार्य ठीक हो गए। इस पर ख़ुदा की प्रशंसा तथा आभार।

तत्पश्चात् ख़ुदा तआला भावी युग के लोगों के अनुचित आरोपों के बारे में एक विशेष

भविष्यवाणी करके मुझे यूसुफ़ ठहराता है जैसा कि वह कहता है -

هو الذی ینزل الغیث من بعد ما قنطوا وینشر رحمته یجتبی الیه من یشاء من عبادہٖ وکذالک مَنَنّا علٰی یوسف لِنُصْرِفَ عَنْہُ السُّوءَ وَالْفَحْشَاءَ وَلِتُنْذِرَ قومًا مّا اُنذر اٰباء هم فهم غافلون۔ قل عندی شهادة من الله فهل انتم مؤمنون انّ معی ربّی سیهدین۔ ربّ السجن احبّ الیّ ممّا یدعوننی الیه۔ ربّ نجّنی من غمّی۔

इन आयतों को जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 516 से 554 तक लिखित हैं। मैं अभी पहले भी उल्लेख कर चुका हूं परन्तु वर्णन की स्पष्टता के लिए दोबारा यथासमय लिखी गई ताकि भविष्यवाणी के समझने में कुछ कठिनाई न हो।

अनुवाद - इस ख़ुदा की वह्यी का अनुवाद यह है कि ख़ुदा वह ख़ुदा है जो वर्षा को उस समय उतारता है जबकि लोग बारिश से निराश हो जाते हैं। तब निराशा के पश्चात् अपनी दयावृष्टि करता है और अपने बन्दों में से जिस बन्दे को चाहता है रसूल और नबी के लिए चुन लेता है तथा हमने इसी प्रकार इस यूसुफ़ पर उपकार किया ताकि हम उनसे उन बुराई और निर्लज्जता की बातों को दूर करें और फेर दें जो उसके बारे में बतौर आरोप की जाएंगी अर्थात् ख़ुदा तआला किसी लांछन और आरोप के समय जो उसके नबियों और रसूलों के बारे में की जाती हैं। यह प्रकृति का नियम है कि प्रथम वे दोषारोपण करने वालों, आलोचकों तथा कुधारणा रखने वाले लोगों को पूर्णतया अवसर देता है ताकि वे जो चाहें बकवास करें और जिस प्रकार चाहें कोई लांछन लगाएं अत: वे लोग बहुत प्रसन्न होकर आक्रमण करते हैं तथा अपने आक्रमणों पर बहुत भरोसा करते हैं यहां तक कि सत्यनिष्ठों की जमाअत ऐसे आक्रमणों से भयभीत होती है तथा मानव होने की कमज़ोरी के कारण इस बात से निराश हो जाते हैं कि ख़ुदा की दया वृष्टि उस झूठ बनाए हुए दाग़ को धो दे और ख़ुदा तआला का भी यह स्वभाव है कि दयावृष्टि उतारता तो है तथा अपनी दया को फैलाता है परन्तु प्रथम वह किसी अवधि तक लोगों को निराश कर देता है ताकि वह लोगों के ईमान की परीक्षा ले। अत: इसी प्रकार ख़ुदा तआला के नबी और रसूल पर जो लोग ईमान लाते हैं उनकी परीक्षा हो जाती है। दुष्ट लोगों की ओर

से ख़ुदा तआला के नबियों पर अनुचित आक्रमण होते हैं यहां तक कि वे पापी एवं दुराचारी ठहराए जाते हैं। ख़ुदा तआला का स्वभाव इस प्रकार का है कि आक्षेपियों को आक्षेप करने के लिए बहुत सी ढील देता है यहां तक कि वे अपनी आलोचनाओं तथा दोषारोपण की बातों को बहुत सुदृढ़ समझने लगते हैं और उन पर प्रसन्न होते तथा गर्व करते हैं तथा इन बातों से मोमिनों के हृदयों को कठोर आघात पहुंचाता है यहां तक कि उनकी कमर टूटती है और उनकी कठिन परीक्षा ली जाती है फिर ख़ुदा तआला की सहायता की वर्षा होती है तथा समस्त झूठी बनाई गई बातों के पृष्ठों को धो डालता है और अपने नबियों के पवित्र एवं चुने हुए पद को सिद्ध कर देता है। इस भविष्यवाणी का सारांश यह है कि इसी प्रकार हम इस यूसुफ़ का बरी होना प्रकट करेंगे कि प्रथम दुष्ट लोग उस पर अनुचित आरोप लगाएंगे जैसा कि यूसुफ़ बिन याक़ूब पर आरोप लगाया गया था परन्तु अन्ततः ख़ुदा ने एक व्यक्ति को उसके बरी होने के लिए एक गवाह ठहराया तथा उस गवाही ने यूसुफ़ को उस आरोप से बरी कर दिया। अतः ख़ुदा तआला कहता है कि यहां भी मैं ऐसा ही करूंगा जैसा कि उसका कथन है -

قُلْ عِنْدِیْ شَھَادَۃٌ مِّنَ اللّٰہِ فَھَلْ اَنْتُمْ مُؤْمِنُوْنَ۔ اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَھْدِیْنِ۔

अर्थात् हे यूसुफ़ ! जो लोग तुझ पर आरोप लगाते हैं उनको कह दे कि अपने बरी होने के लिए ख़ुदा तआला की साक्ष्य अपने पास रखता हूं। अतएव क्या तुम उस साक्ष्य को स्वीकार करोगे अथवा नहीं ? तथा उनको यह भी कह दे कि मैं तुम्हारे किसी आरोप से दोषी नहीं हो सकता क्योंकि मेरे साथ मेरा ख़ुदा है वह मेरे बरी होने के लिए कोई मार्ग पैदा कर देगा[1]। स्मरण रहे कि जब यूसुफ़ बिन याक़ूब पर ज़ुलैख़ा ने अनुचित आरोप

---

[1] यह आयत अर्थात् اِنَّ مَعِیَ رَبِّیْ سَیَھْدِیْنِ (अश्शौअरा - 63) जिस का अनुवाद यह है कि मेरे साथ मेरा ख़ुदा है वह मुक्ति का कोई मार्ग दिखा देगा। यह पवित्र क़ुर्आन में हज़रत मूसा के वृत्तान्त में है जबकि फ़िरऔन ने उनका पीछा किया था तथा बनी इस्राईल ने समझा था कि अब हम पकड़े गए हैं। अतः ख़ुदा तआला संकेत करता है कि ऐसे कमज़ोर इस जमाअत में भी होंगे जिन की सन्तुष्टि के लिए कहा जाएगा कि घबराओ मत। ख़ुदा तुम्हें उन आरोपों से बरी

लगाया था तो उस अवसर पर ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में कहता है - وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنْ اَهْلِهَا① अर्थात् ज़ुलैख़ा के निकट संबंधियों में से एक व्यक्ति ने यूसुफ़ के बरी होने की साक्ष्य दी परन्तु यहां अल्लाह तआला कहता है कि मैं इस यूसुफ़ के लिए स्वयं साक्ष्य दूंगा। अत: इस से बढ़कर और क्या साक्ष्य होगी कि आज से पच्चीस वर्ष पूर्व ख़ुदा तआला ने इन आरोपों से अवगत किया है जो अत्याचारी और दुष्ट लोग मुझ पर लगाते हैं तथा यूसुफ़ बिन याक़ूब के लिए केवल एक मनुष्य ने साक्ष्य दी परन्तु मेरे लिए ख़ुदा ने चाहा कि स्वयं साक्ष्य दे और यूसुफ़ बिन याक़ूब पर आरोप लगाने के लिए एक स्त्री ने पहल की परन्तु मुझ पर वे लोग आरोप लगाते हैं जो स्त्रियों से भी निकृष्ट हैं तथा اِنَّ كَيْدَ كُنَّ عَظِيْم② के चरितार्थ हैं। फिर इस भविष्यवाणी के अन्तिम भाग की इबारत यह है -

رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَيَّ مِمَّا يَدْعُوْنَنِيْٓ اِلَيْهِ③

अर्थात् हे मेरे रब्ब ! मुझे तो क़ैद उत्तम है उन बातों से जो ये स्त्रियां मुझे से चाहती हैं। सारांश यह है कि यदि कोई स्त्री ऐसी इच्छा करे तो मैं अपने स्वयं के लिए इस बात से क़ैद होना अधिक प्रिय समझता हूं। यह यूसुफ़ बिन याक़ूब[अ.] की दुआ थी। जिस दुआ के कारण वह क़ैद हो गए तथा मेरा भी यही कहना है जिसे ख़ुदा तआला ने आज से पच्चीस वर्ष पूर्व बराहीन अहमदिया में लिख दिया। अन्तर केवल इतना है कि यूसुफ़ बिन याक़ूब अपनी इस दुआ के कारण क़ैद हो गया परन्तु ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-10 में मेरे बारे में कहा يَعْصِمُكَ اللّٰهُ مِنْ عِنْدِهٖ وَاِنْ لَّمْ يَعْصِمُكَ النَّاس अर्थात् ख़ुदा

करने के लिए कोई मार्ग बता देगा जैसा कि उसने यूसुफ़ बिन याक़ूब को दिखा दिया जबकि एक कपटी स्त्री में पहले ही मूल घटना के विपरीत बातें यूसुफ़ के बारे में अपने पति को सुनाईं। (इसी से)

① यूसुफ़ - 27

② यूसुफ़ - 29

③ यूसुफ़ - 34

तआला स्वयं तुझे बचाएगा यद्यपि लोग तुझे फंसाने पर तत्पर हों। अत: ऐसा ही हुआ कि करमदीन नामक व्यक्ति के फ़ौजदारी मुकद्दमे में एक हिन्दू मजिस्ट्रेट का इरादा था कि मुझे कारावास का दण्ड दे परन्तु ख़ुदा तआला ने किसी ग़ैबी (परोक्ष) सामान से उसके हृदय को इस इरादे से रोक दिया और यह भी प्रकट किया कि वह अन्तत: दण्ड देने के इरादे से सर्वथा असफल रहेगा। अत: इस उम्मत का यूसुफ़ अर्थात् यह विनीत इस्राईली यूसुफ़ से बढ़कर है क्योंकि यह यूसुफ़ क़ैद की दुआ करके भी क़ैद से बचाया गया परन्तु यूसुफ़ बिन याक़ूब क़ैद में डाला गया। इस उम्मत के यूसुफ़ के बरी होने के लिए पच्चीस वर्ष पूर्व ही ख़ुदा ने स्वयं साक्ष्य दे दी तथा और भी निशान दिखाए परन्तु यूसुफ़ बिन याक़ूब को अपने बरी होने के लिए मानवीय साक्ष्य की आवश्यकता हुई। इन भविष्यवाणियों की साक्ष्य के पश्चात् भीषण भूकम्प ने भी साक्ष्य दी जिसकी ग्यारह महीने पूर्व मैंने ख़बर दी थी क्योंकि भूकम्प की भविष्यवाणी के साथ यह वह्यी भी हुई थी قل عندی شهادة من الله فهل انتم مؤمنون[1] अत: ये दो गवाह हो गए और न मालूम बाद में उनके कितने गवाह हैं।

अतएव वह ख़ुदा जो कुधारणाओं के अपवित्र विचारों का भी ज्ञान रखता है उसने मुझे यूसुफ़ ठहरा कर और मेरे बारे में मेरे मुख से यूसुफ़[अ.] का वह कथन नक़ल करके जो सूरह यूसुफ़ में आ चुका है अर्थात् यह कि رَبِّ السِّجْنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدْعُوْنَنِیْۤ اِلَیْهِ[2] भावी युग के बारे में एक भविष्यवाणी की है ताकि वह मेरी आन्तरिक परिस्थितियों को लोगों पर प्रकट करे यद्यपि मैं यह स्वभाव नहीं रखता तथा स्वाभाविक तौर पर इस बात से घृणा

---

① यहां पर ख़ुदा तआला का यह कहना कि قل عندی شهادة من الله فهل انتم مؤمنون अर्थात् उन को कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की साक्ष्य है जो मनुष्यों की साक्ष्य पर प्राथमिकता रखती है। वह यही साक्ष्य है कि ख़ुदा ने एक लम्बे समय पूर्व इन अनुचित आरोपों की सूचना दी। (इसी से)

② यूसुफ़ - 34

करता हूं कि लोगों के समक्ष अपनी हार्दिक पवित्रता प्रकट करूं अपितु यूसुफ़ के समान मेरा भी यही कथन है कि وَمَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَۃٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ① परन्तु ख़ुदा की कृपाओं एवं उपकारों को मैं कहां छिपाऊं और मैं क्योंकर इसे गुप्त कर दूं। उसकी तो इतनी कृपाएं हैं कि मैं गिन भी नहीं सकता। क्या अद्भुत कृपा है कि ऐसे समय में जबकि कुधारणाएं चरम सीमा तक पहुंच गई हैं ख़ुदा ने मेरे लिए भयावह निशान दिखाए। उदाहरणतया विचार करो कि वह भीषण भूकम्प जिसकी 31 मई 1904 ई. को मुझे सूचना दी गई, जिसने हज़ारों लोगों को एक क्षण में तबाह कर दिया तथा पर्वतों को गुफाओं के समान बना दिया। उसके आने की किस को ख़बर थी, किस ज्योतिषी ने मुझ से पूर्व यह भविष्यवाणी की थी वह ख़ुदा ही था जिसने लगभग एक वर्ष पूर्व मुझे ख़बर दी। उसी समय लाखों लोगों में अख़बारों द्वारा प्रकाशित की गई। ख़ुदा ने कहा कि मैं निशान के तौर पर यह भूकम्प प्रकट करूंगा ताकि भाग्यशाली लोगों की आंख खुले परन्तु मेरे विचार में बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणियां इस से कम नहीं हैं जिन में इस भीषण भूकम्प की भी सूचना है और यूसुफ़ ठहराने की यह भविष्यवाणी एक ऐसी भविष्यवाणी है जिसने इस युग के नितान्त गन्दे आक्रमणों की आज से पच्चीस वर्ष पूर्व सूचना दी है ये वे अपवित्र आक्रमण हैं जो मूर्ख विरोधियों के अन्तिम हथियार हैं तत्पश्चात् निर्णय का दिन है और जैसा कि मैंने वर्णन किया है इस अवसर पर ख़ुदा का यह कहना कि

قُلۡ عِنۡدِیۡ شَهَادَۃٌ مِّنَ اللّٰهِ فَهَلۡ اَنۡتُمۡ مُؤۡمِنُوۡنَ

यह उस साक्ष्य से अधिक शक्तिशाली है जो सूरह यूसुफ़ में यह आयत है

وَشَهِدَ شَاهِدٌ مِّنۡ اَهۡلِهَا②

स्पष्ट है कि ख़ुदा की साक्ष्य और मनुष्य की साक्ष्य बराबर नहीं हो सकती। अत: वह साक्ष्य यही साक्ष्य है कि वह जो अन्तर्यामी है वह पच्चीस वर्ष पूर्व मुझे यूसुफ़ ठहरा कर

---

① यूसुफ़ - 54

② यूसुफ़ - 27

उसकी घटनाओं को मुझ पर चरितार्थ करता है और ऐसी विशिष्तापूर्ण शब्द वर्णन करता है जिस से वास्तविकता स्पष्ट होती है जैसा कि उस का मेरी ओर से यह رَبِّ السِّجۡنُ اَحَبُّ اِلَیَّ مِمَّا یَدۡعُوۡنَنِیۡۤ اِلَیۡہِ[1] प्रकट कर रहा है कि यह किसी भावी घटना की ओर संकेत है। परन्तु चूंकि यूसुफ़ भी दुष्ट लोगों की कुधारणाओं से नहीं बच सका तो फिर ऐसे लोगों पर मुझे भी खेद करना व्यर्थ है जो मुझ पर कुधारणा करें। प्रत्येक जो मुझ पर प्रहार करता है वह जलती हुई अग्नि में अपना हाथ डालता है क्योंकि वह प्रहार मुझ पर नहीं अपितु उस पर प्रहार करता है जिसने मुझे भेजा है वही कहता है कि انی مهین من اراد اِهانتك अर्थात् मैं उसे अपमानित करूंगा जो तेरा अपमान चाहता है। ऐसा व्यक्ति ख़ुदा तआला की आंख से गुप्त नहीं।[2] यह मत सोचो कि वह मेरे निशानों का प्रदर्शन बन्द कर देगा। नहीं वह निशानों पर निशान दिखाएगा तथा मेरे लिए अपनी वे गवाहियां देगा जिन से पृथ्वी भर जाएगी। वे भयावह निशान दिखाएगा और भयभीत करने वाले काम करेगा। उसने एक समय तक इन परिस्थितियों को देखा और धैर्य करता रहा परन्तु अब वह उस मेह के समान जो मौसम पर गरजता अवश्य है। गरजेगा और दुष्ट रूहों को अपने गिरने वाली बिजली का स्वाद चखाएगा। वे दुष्ट जो उस से नहीं डरते तथा चपलताओं में सीमा से अधिक बढ़ जाते हैं वे अपने अपवित्र विचारों तथा बुरे कार्यों को लोगों से छिपाते हैं परन्तु ख़ुदा उन्हें देखता है। क्या दुष्ट मनुष्य ख़ुदा के इरादों पर विजय पा सकता है? क्या वह उस से लड़कर विजयी हो सकता है? तथा यह जो अल्लाह तआला ने मुझे यूसुफ़ ठहरा कर जो कहा -

قُلۡ عِنۡدِیۡ شَھَادَۃٌ مِّنَ اللّٰہِ فَھَلۡ اَنۡتُمۡ مُؤۡمِنُوۡنَ

जिसके अर्थ ये हैं कि उन को कह दे कि मेरे पास ख़ुदा की गवाही है जो मनुष्यों की गवाहियों पर विजयी है अत: क्या तुम इस गवाही को मानते हो या नहीं? इस वाक्य का

---

① यूसुफ़ - 34

② यह आयत कि انی معی ربی سیهدین (अश्शौअरा - 63) बुलन्द आवाज़ से बता रही है कि फिरऔनी विशेषताओं वाले लोग अपने अनुचित लांछनों पर गर्व करेंगे, परन्तु ख़ुदा अपने बन्दे को मुक्ति देगा। फिर आक्रमण करने वालों के आगे एक दरिया है जिसमें उनका अन्त हो जाएगा। इसी से।

अर्थ यह है कि हे उपद्रवियो तथा आरोप लगाने वालो ! यदि तुम ख़ुदा की उस गवाही को स्वीकार नहीं करते जो उसने आज से पच्चीस वर्ष पूर्व दी तो फिर ख़ुदा किसी अन्य निशान से गवाही देगा जिस से तुम एक कठोर पकड़ में पड़ोगे तब रोना और दांत पीसना होगा। अत: मैं देखता हूं कि ख़ुदा की दूसरी गवाहियां भी प्रारंभ हो गईं और ख़ुदा ने मुझे अपने इल्हाम द्वारा यह भी सूचना दी है कि जो व्यक्ति तेरी ओर बाण चलाएगा मैं उसी बाण से उसका अन्त कर दूंगा। ख़ुदा की उस वह्यी में जो मुझे यूसुफ़ ठहराया गया है यह भी एक वाक्य है कि

وَلِتُنْذِرَ قَوْمًا مَّآ اُنْذِرَ اٰبَآءُهُمْ فَهُمْ غٰفِلُوْنَ۔

इस आयत में अर्थ पहली आयत को साथ मिलाने से ये हैं कि हमने इस यूसुफ़ पर उपकार किया कि स्वयं उसके बरी होने की गवाही दी ताकि वह बुराई और निर्लज्जता जो उसकी ओर सम्बद्ध की जाएगी उसको हम उस से फेर दें और दूर कर दें तथा हम यह इसलिए करेंगे ताकि डराने और प्रचार करने में हानि न हो क्योंकि ख़ुदा के रसूलों तथा नबियों और मामूरों पर यह जो अंधा संसार भांति-भांति के आरोप लगाता है यदि उन का निवारण न किया जाए तो इससे प्रचार और डराने का काम शिथिल हो जाता है अपितु रुक जाता है तथा उनकी बातें हृदयों को प्रभावित नहीं करतीं और बौद्धिक रंग के उत्तर हृदयों के ज़ंग को भली भांति दूर नहीं कर सकते। अत: इस से आशंका होती है कि लोग अपनी कुधारणाओं के कारण तबाह न हो जाएं तथा नर्क का ईंधन न बन जाएं। इसलिए वह ख़ुदा जो दयालु एवं कृपालु है जो अपनी प्रजा को व्यर्थ नहीं करना चाहता अपने शक्तिशाली निशानों के साथ अपने नबियों की शुद्धता एवं पवित्रता तथा चुने हुए की गवाही देता है और जो व्यक्ति इन गवाहियों को पाकर भी अपनी कुधारणाओं को नहीं त्यागता उसके विनाश की ख़ुदा को कुछ भी परवाह नहीं। ख़ुदा उसका शत्रु हो जाता है और उसके सामने स्वयं खड़ा हो जाता है। दुष्ट मनुष्य विचार करता है कि मेरे छल संसार के हृदयों पर बुरा प्रभाव डालेंगे परन्तु ख़ुदा कहता है कि हे मूर्ख ! क्या तेरे छल मेरे छल को दूर करने वाले यत्नों से बढ़कर हैं ? मैं तेरे ही हाथों को

तेरे अपमान का कारण बनाऊंगा और तुझे तेरे मित्रों के ही समक्ष अपमानित करके दिखाऊंगा। यहां मुझे यूसुफ़ ठहराने से एक अन्य उद्देश्य भी निहित है कि यूसुफ़ ने मिस्र में पहुंच कर कई प्रकार के अपमान सहन किए थे जो वास्तव में उसकी श्रेणियों की उन्नति की एक नींव थी परन्तु प्रारंभ में यूसुफ़ मूर्खों की दृष्टि में और तिरस्कृत हो गया था और अन्ततः ख़ुदा ने उसे ऐसा सम्मान दिया कि उसे उसी देश का राजा बनाकर दुर्भिक्ष के दिनों में वही लोग उसके दास की भांति बना दिए जो दासता का दाग़ भी उसकी ओर सम्बद्ध करते थे। अतः ख़ुदा तआला मुझे यूसुफ़ ठहरा कर यह संकेत करता है कि इस स्थान पर भी मैं ऐसा ही करूंगा। इस्लाम और ग़ैर इस्लाम में रूहानी आजीविका का दुर्भिक्ष डाल दूंगा और रूहानी जीवन के अभिलाषी इस सिलसिले के अतिरिक्त कहीं आराम न पाएंगे और प्रत्येक फ़िर्क़े से आकाशीय बरकतें छीन ली जाएंगी तथा इसी दरबार के दास पर जो बोल रहा है प्रत्येक निशान का इनाम होगा। अतः वे लोग जो इस रूहानी मृत्यु से सुरक्षित रहना चाहेंगे वे इसी उच्च हस्ती के दास की ओर लौटेंगे और यूसुफ़ की भांति यह सम्मान एवं प्रतिष्ठा उसी अपमान के प्रतिफल स्वरूप प्रदान की जाएगी अपितु प्रदान की गई। जिस अपमान को इन दिनों अपूर्ण बुद्धि वाले लोगों ने पूर्णता तक पहुंचाया है और यद्यपि मैं पृथ्वी के शासन के लिए नहीं आया, परन्तु मेरे लिए आकाश पर शासन है जिसे संसार नहीं देखता तथा मुझे ख़ुदा ने सूचना दी है कि अन्ततः बड़े-बड़े उपद्रवी और दुष्ट तुझे पहचान लेंगे। जैसा कि कहता है -

يَخِرُّونَ عَلَى الْأَذْقَانِ سُجَّدًا۔ رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا إِنَّا كُنَّا خَاطِئِينَ۔ لَا تَثْرِيْبَ عَلَيْكُمُ الْيَوْمَ يَغْفِرُ اللّٰهُ لَكُمْ وَهُوَ أَرْحَمُ الرَّاحِمِينَ①۔

और मैंने कश्फ़ी तौर पर देखा कि पृथ्वी ने मुझ से बात की और कहा - يَا وَلِيَّ اللّٰهِ

---

① **अनुवाद** :- ठोढ़ियों पर सज्दह करते हुए यह कहते हुए गिरेंगे कि हे मेरे ख़ुदा हम गलतियां करने वाले थे हम ने पाप किया। हमारे पाप क्षमा कर। अतः ख़ुदा कहेगा कि तुम पर कोई डांट-डपट नहीं क्योंकि तुम ईमान ले आए। ख़ुदा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा कि वह दयालुओं में सर्वाधिक दयालु है। यहां भी ख़ुदा ने لا تثریب के शब्द के साथ मुझे यूसुफ़ ही ठहराया था। (इसी से)

كُنْتُ لَا اَعْـرِ فُك अर्थात् हे अल्लाह के वली ! मैं इस से पूर्व तुझे नहीं पहचानती थी। पृथ्वी से अभिप्राय यहां पृथ्वी पर रहने वाले हैं। मुबारक वह जो भयावह दिन से पूर्व मुझे स्वीकार करे क्योंकि वह अमन में आएगा, परन्तु जो व्यक्ति शक्तिशाली निशानों के पश्चात् मुझे स्वीकार करे उसके ईमान का रत्ती भर भी मूल्य नहीं।

اکنوں ہزار عُذر بیارے گناہ را
مرشوئے کردہ رانبود زیب دخترے

फिर अन्य भविष्यवाणियां हैं जो उपरोक्त भविष्यवाणियों के समर्थन में बराहीन अहमदिया में लिखी हैं जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - هو شعنا نعسا I LOVE YOU, I SHALL GIVE YOU A LARGE PARTY OF ISLAM ثلّة من الاولین و ثلّة من الاٰخرین मैं अपनी चमक दिखाऊंगा। अपनी शक्ति प्रदर्शन से तुझे उठाऊंगा। संसार में एक नज़ीर (डराने वाला) आया परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया किन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े ज़बरदस्त आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा -

الفتنة ھٰھنا فاصبر کما صبر اولوالعزم ۔ یا داؤد عامل بالناس رفقًا واحسانًا وامّا بنعمة ربّک فحدّث ۔ اشکر نعمتی رئیت خدیجتی ۔ انک الیوم لذو حظٍ عظیم ۔ ماودّعک ربّک وما قلٰی ۔ الم نشرح لک صدرک ۔ الم نجعل لک سھولةً فی کلّ امر ۔ بیت الفکر وبیت الذکر ومن دخلہ کان اٰمنا ۔ مبارک ومبارک وکل امرٍ مبارک یجعل فیہ ۔ یریدون ان یطفئُوا نور اللہ قل اللہ حافظہ ۔ عنایة اللہ حافظک ۔ نحن نزّلناہ وانا لہ لحافظون ۔ اللہ خیر حافظا وھو ارحم الراحمین ۔ ویُخوّفونک من دونہ ائمّة الکفر ۔ لاتخف انک انت الاعلٰی ۔ ینصرک اللہ فی مواطن ۔ کتب اللہ لأغلبن انا ورسلی ۔ اعمل ما شئت فانی قد غفرت لک ۔ انت منّی بمنزلة لا یعلمھا الخلق ۔ وقالوا ان ھو الّا افک افترٰی ۔ وما سمعنا بھٰذا فی اٰبائنا الاولین ۔ ولقد کرمنا بنی اٰدم و فَضَّلنا بعضھم علٰی بعض ۔ اجتبیناھم واصطفیناھم کذالک لیکون اٰیةً للمؤمنین ۔ ام حسبتم انّ اصحابَ الکھف والرقیم

كانوامن اٰياتنا عجبًا۔ قل هو الله عجيب ۔ كلّ يوم هو فى شان ففهّمناها سليمان۔ وجحدوابهاواستيقنتهاانفسهم ظلمًا وعلوّا۔ قل جاءكم نورٌ من الله فلا تكفروا ان كنتم مؤمنين۔ سلام على ابراهيم۔ صافيناه ونجيناه من الغم۔ تفردنا[1] بذالك۔ فاتخذوا من مقام ابراهيم مُصلّى۔

(देखिए बराहीन अहमदिया पृष्ठ 556 से 561)

अनुवाद - हे ख़ुदा ! मैं दुआ करता हूं कि मुझे मुक्ति दे तथा कठिनाइयों से मुक्त कर। हम ने मुक्ति दे दी। ये दोनों वाक्य इब्रानी भाषा में हैं और यह एक भविष्यवाणी है जो दुआ के रूप में की गई और फिर दुआ का स्वीकार होना प्रकट किया गया। इसका मूल सार यह है कि जो मौजूद कठिनाइयां हैं अर्थात् अकेलापन, विवशता, दरिद्रता किसी भावी समय में उन्हें दूर कर दिया जाएगा। अतः पच्चीस वर्ष के उपरान्त यह भविष्यवाणी पूरी हुई और इस युग में उन कठिनाइयों का नाम तथा निशान तक न रहा। फिर दूसरी भविष्यवाणी अंग्रेज़ी भाषा में है तथा मैं इस भाषा से परिचित नहीं। यह भी एक चमत्कार है कि इस भाषा में ख़ुदा की वह्यी उतरी। अनुवाद यह है कि मैं तुम से प्रेम करता हूं, मैं तुम्हें इस्लाम का एक बड़ा गिरोह दूंगा। उनमें से एक गिरोह तो पूर्वकालीन मुसलमानों में से होगा तथा दूसरा गिरोह उन लोगों में से होगा जो दूसरी जातियों में से होंगे अर्थात् हिन्दुओं में से या यूरोप के ईसाइयों में से या अमरीका के ईसाइयों में से या किसी अन्य जाति में से। अतः हिन्दू धर्म के गिरोह में से बहुत से लोग इस्लाम से सम्मानित होकर हमारी जमाअत में सम्मिलित हो गए हैं जिनमें से एक शैख़ अब्दुर्रहीम हैं जो यहां क़ादियान में ठहरे हुए हैं जिन्होंने अरबी की पुस्तकें भी पढ़ ली हैं। पवित्र क़ुर्आन तथा हदीस की पुस्तकों आदि को पढ़ लिया है और अरबी में विशेष महारत प्राप्त कर ली है। दूसरे शैख़ फ़ज़्ल हक़ जो इस ज़िले के रईस हैं और उनका पिता जागीरदार है। तीसरे शैख़ अब्दुल्लाह (दीवान चन्द) जो डाक्टरी का

---

[1] अर्थात् सच्चा, शुद्ध तथा पूर्ण प्रेम जो हमें इस बन्दे से है दूसरों को नहीं। हम इस बात में अकेले हैं। मूल बात यह है कि प्रेम मा'रिफ़त के अनुसार होता है। (इसी से)

लम्बा अनुभव रखते हैं तथा क़ादियान में वही कार्य करते हैं तथा इस जमाअत के लिए इसी काम पर क़ादियान में नियुक्त हैं। इसी प्रकार अन्य कई लोग हैं जो अपने-अपने देशों में रहते हैं। इसी प्रकार यूरोप या अमरीका के प्राचीन ईसाइयों में भी थोड़े समय से हमारे सिलसिले का प्रचलन होता जाता है। अतः कुछ समय पूर्व ही एक प्रतिष्ठित अंग्रेज़ न्यूयार्क निवासी जो संयुक्त राज्य अमरीका में है जिसका पहला नाम एफ. एल. एण्डरसन ह नं. 200-202 वर्थ स्ट्रीट। इस्लाम स्वीकार करने के पश्चात् उसका नाम हसन रखा गया है वह हमारी जमाअत अर्थात् सिलसिला अहमदिया में सम्मिलित है तथा उसने अपने हाथ से पत्र लिखकर अपना नाम इस जमाअत में दर्ज कराया है तथा हमारी अंग्रेज़ी में अनुवादित पुस्तकें पढ़ता है। पवित्र क़ुर्आन को अरबी में पढ़ लेता है और लिख भी सकता है। इसी प्रकार अन्य कई अंग्रेज़ उन देशों में इस सिलसिले के प्रशंसक हैं तथा इस से अपनी सहमति प्रकट करते हैं बेकर जिन का नाम है ए. जार्ज बेकर नं. 404 सीस कोहिना एवेन्यू फ़िलाडेलफ़िया अमरीका। "रीव्यू आफ़ रेलीजेन्ज़" पत्रिका में मेरा नाम और चर्चा पढ़कर अपने पत्र में ये शब्द लिखते हैं :-

"मुझे आप के इमाम के विचारों के साथ बिल्कुल सहमति है। उन्होंने इस्लाम को संसार के समक्ष बिल्कुल उसी रूप में प्रस्तुत किया है जिस रूप में हज़रत नबी मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने प्रस्तुत किया था।"

एक स्त्री अमरीका से मेरे बारे में अपने पत्र में लिखती है कि -

"मैं हर समय उनकी तस्वीर को देखते रहना पसन्द करती हूं। यह तस्वीर बिल्कुल मसीह की तस्वीर मालूम होती है"

और इसी प्रकार हमारे एक मित्र की पत्नी जिसका पहला नाम एल्ज़ाबिथ था जो इंग्लैण्ड की रहने वाली है इस जमाअत में सम्मिलित हो चुकी है। इसी प्रकार अन्य कई पत्र अमरीका, इंग्लैण्ड, रूस आदि देशों से निरन्तर आ रहे हैं और वे सारे पत्र ईर्ष्यालु इन्कारियों के मुख बन्द करने के लिए सुरक्षित रखे जाते हैं। एक भी नष्ट नहीं किया गया

तथा दिन-प्रतिदिन इन देशों में हमारे साथ सम्बन्ध पैदा करने के लिए स्वाभाविक तौर पर एक जोश पैदा हो रहा है तथा आश्चर्य है कि वे स्वयं हमारे सिलसिले से अवगत होते जाते हैं तथा दयालु, कृपालु और नीतिवान ख़ुदा उनके हृदयों में एक प्यार, मुहब्बत तथा सुधारणा पैदा करता जाता है और स्पष्ट तौर पर विदित हो रहा है कि यूरोप और अमरीका के लोग हमारे सिलसिले में प्रवेश करने के लिए तैयारी कर रहे हैं और वे इस सिलसिले को बड़े आदर की दृष्टि से देखते हैं जैसा कि एक अत्यन्त प्यासा तथा बहुत भूखा जो भूख-प्यास की तीव्रता के कारण मृत्यु के कगार पर हो और सहसा उसे पानी और खाना मिल जाए। इसी प्रकार वे इस सिलसिले के प्रकट होने से प्रसन्नता प्रकट करते हैं। वास्तविकता यह है कि इस युग में इस्लाम के रूप को न्यूनाधिकता की बाढ़ ने बिगाड़ दिया था। एक फ़िर्क़ा जो केवल मुख से इस्लाम का दावा करता है वह सर्वथा इस्लामी बरकतों से इन्कारी हो चुका था तथा चमत्कारों एवं भविष्यवाणियों से न केवल इन्कार अपितु दिन-रात उपहास करता था और आख़िरत की घटनाओं की मूल वास्तविकता न समझ कर उस से भी उपहास और इन्कार से पेश आता था तथा इस्लामी इबादतों से जिनसे रूहानियत (आध्यात्मिकता) के द्वार खुलते हैं पृथक होना चाहता था। परिणामस्वरूप नास्तिकता के बहुत निकट जा रहा था और नाममात्र का मुसलमान था। वह बात जो इस्लाम तथा अन्य धर्मों में अन्तर करने वाली है कि कोई व्यक्ति अपनी शक्ति से अपने धर्म में विशेष निशान का वह भाग सम्मिलित कर ही नहीं सकता उससे वह बिल्कुल अनभिज्ञ था। यह तो न्यूनता वालों का हाल था तथा दूसरे पक्ष ने अधिकता का मार्ग धारण कर लिया था अर्थात् ऐसे निराधार क़िस्से तथा व्यर्थ कहानियां जो ख़ुदा की किताब के विपरीत हैं जैसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का दोबारा संसार में आना अपने धर्म का अंग बना दिया था हालांकि ख़ुदा तआला स्पष्ट शब्दों से पवित्र क़ुर्आन में उनकी मृत्यु प्रकट करता है और हदीसों में स्पष्टतापूर्वक लिखा गया है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा जैसा कि मूसा के सिलसिले का मसीह उसी जाति में से था न कि आकाश से आया

था। अतः इस न्यूनाधिकता का निवारण करने के लिए ख़ुदा ने पृथ्वी पर यह सिलसिला स्थापित किया जो अपनी सच्चाई, सुन्दरता तथा संतुलन के कारण प्रत्येक हृदय रखने वाले को पसन्द आता है। अतः यह भविष्यवाणी कि पुराने मुसलमानों में से एक गिरोह इस सिलसिले में सम्मिलित होगा और एक गिरोह नए मुसलमानों में से अर्थात् यूरोप, अमरीका तथा अन्य काफ़िर जातियों में से स्वयं को इस सिलसिले में लाएगा। इस युग से पच्चीस वर्ष पश्चात् कि जब ख़बर दी गई पूरी हुई। स्मरण रखो कि जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं। अरबी भाषा में इस भविष्यवाणी के ये शब्द हैं जो ख़ुदा की वह्यी ने मुझ पर प्रकट किए जो बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में आज से पच्चीस वर्ष पूर्व प्रकाशित हो चुके हैं - ثُلّةٌ من الاوّلين و ثُلّةٌ من الاٰخرين अर्थात् इस सिलसिले में प्रवेश करने वाले दो गिरोह होंगे। एक पुराने मुसलमान जिन का नाम 'अव्वलीन' रखा गया है जो अब तक तीन लाख के लगभग इस सिलसिले में प्रवेश कर चुके हैं और दूसरे नए मुसलमान जो अन्य जातियों में से इस्लाम में प्रवेश करेंगे अर्थात् हिन्दुओं, सिखों तथा यूरोप और अमरीका के ईसाइयों में से तथा वह भी एक गिरोह इस सिलसिले में प्रवेश कर चुका है और प्रवेश करते जाते हैं। इसी युग के बारे में जो मेरा युग है ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में सूचना देता है जिसके अनुवाद का सार यह है कि अन्तिम दिनों में भांति-भांति के धर्म पैदा हो जाएंगे और एक धर्म दूसरे धर्म पर आक्रमण करेगा जैसे कि एक जलधारा दूसरी जलधारा पर पड़ती है अर्थात् द्वेष बहुत बढ़ जाएगा और लोग सत्य की अभिलाषा को त्याग कर अकारण अपने धर्मों का समर्थन करेंगे तथा द्वेष एवं ईर्ष्या संतुलन की सीमा पार कर जाएंगे कि एक जाति दूसरी जाति को निगल लेना चाहेगी। तब उन्हीं दिनों में आकाश से एक फ़िर्क़े की नींव डाली जाएगी और ख़ुदा अपने मुख से उस फ़िर्क़े की सहायता के लिए एक बिगुल बजाएगा और उस बिगुल की आवाज़ से प्रत्येक भाग्यशाली उस फ़िर्क़े की ओर खिंचा आएगा सिवाए उन लोगों के जो अनादि दुर्भाग्यशाली हैं जो नर्क को भरने के लिए पैदा किए गए हैं इसमें पवित्र क़ुर्आन के शब्द ये हैं —

وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَجَمَعْنٰهُمْ جَمْعًا[1]

और यह बात कि वह नफ़ख़ (फूंका) क्या होगा, कैसा होगा उसका विवरण समय-समय पर स्वयं प्रकट होता जाएगा। संक्षेप में केवल इतना कह सकते हैं कि योग्यताओं को गति देने के लिए कुछ आकाशीय कारवाई प्रकट होगी और भयावह निशान प्रकट होंगे, तब भाग्यशाली लोग जाग उठेंगे कि यह क्या हुआ चाहता है, क्या यह वही युग नहीं जो प्रलय के निकट है जिसकी नबियों ने ख़बर दी है ? क्या यह वही मनुष्य नहीं जिसके बारे में सूचना दी गई थी कि वह इस उम्मत में से मसीह होकर आएगा जो ईसा बिन मरयम कहलाएगा। तब जिस के हृदय में तनिक सा भी सौभाग्य तथा अच्छाई का तत्त्व है ख़ुदा तआला के भयानक निशानों को देखकर डरेगा और महान शक्ति उसे खींच कर सच्चाई की ओर ले आएगी और उसके समस्त द्वेष और ईर्ष्याएं यों भस्म हो जाएंगे जैसा कि एक तिनका भड़कती हुई अग्नि में पड़ कर भस्म हो जाता है। अत: उस समय प्रत्येक भाग्यशाली ख़ुदा की आवाज़ सुन लेगा और उसकी ओर खींचा जाएगा और देख लेगा कि अब पृथ्वी और आकाश दूसरे रूप में हैं। न वह पृथ्वी है और न वह आकाश। जैसा कि मुझे इससे पूर्व एक कश्फ़ी अवस्था में दिखाया गया था कि मैंने एक नई पृथ्वी और नया आकाश बनाया। ऐसा ही शीघ्र होने वाला है और कश्फ़ी रूप में यह बनाना मेरी ओर सम्बद्ध किया गया क्योंकि ख़ुदा ने मुझे इस युग के लिए भेजा है। इसलिए इस नए आकाश और नई पृथ्वी का कारण मैं ही हुआ तथा ऐसे रूपक ख़ुदा के कलाम में बहुत हैं परन्तु यहां कदाचित् कुछ मूर्खों के सामने ये विपत्तियां आएं कि यद्यपि यह तो सही मुस्लिम और बुख़ारी में आ चुका है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा और पवित्र क़ुर्आन में सूरह नूर में مِنْكُمْ का शब्द इसी की ओर संकेत करता है कि प्रत्येक ख़लीफ़ा इसी उम्मत में से होगा और आयत - كَمَا اسْتَخْلَفَ الَّذِيْنَ مِنْ قَبْلِهِمْ[2] भी इसी की ओर संकेत

---

① अलकहफ़ - 100

② अन्नूर - 56

कर रही है जिससे स्पष्ट है कि कोई बात असाधारण नहीं होगी अपितु जिस प्रकार इस्लाम के प्रारंभिक युग में हमारे नबी[स.अ.व.] मूसा के मसील (समरूप) हैं जैसा कि आयत كَمَا اَرْسَلْنَا اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا[1] से स्पष्ट है इसी प्रकार इस्लाम के अन्तिम युग में दोनों सिलसिलों मूस्वी तथा मुहम्मदी का प्रथम और अन्तिम में अनुकूलता करने के लिए ईसा के मसील (समरूप) की आवश्यकता थी, जिसके बारे में बुख़ारी की हदीस اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ और मुस्लिम की हदीस اَمُّكُمْ مِنْكُمْ स्पष्टतापूर्वक ख़बर दे रही है परन्तु इसी उम्मत में से ईसा बनने वाला इब्ने मरयम क्योंकर कहला सके, वह तो मरयम का बेटा नहीं है। हालांकि हदीसों में इब्ने मरयम का शब्द आया है। अत: स्मरण रहे कि यह भ्रम जो मूर्खों के हृदयों को पकड़ता है। पवित्र क़ुर्आन में सूरह तहरीम में इस भ्रम का निवारण कर दिया गया है जैसा कि सूरह तहरीम में इस उम्मत के कुछ लोगों को मरयम से समानता दी गई है फिर उसमें ईसा की रूह के फूंकने का वर्णन किया गया है जिसमें स्पष्ट तौर पर संकेत किया गया है कि इस उम्मत में से कोई मनुष्य प्रथम मरयम के पद पर होगा फिर उस मरयम में रूह फूंकी जाएगी तब वह इस पद से स्थान्तरित होकर इब्ने मरयम कहलाएगा। यदि कोई मुझ से प्रश्न करे कि यदि यही सच है तो फिर तुम्हारे इल्हामों में भी इस की ओर कोई संकेत होना चाहिए था। इसके उत्तर में मैं कहता हूं कि आज से पच्चीस वर्ष पूर्व यही व्याख्या मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया से पहले भागों में मौजूद है और न केवल संकेत अपितु पूर्ण स्पष्टीकरण के साथ पुस्तक बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में एक सूक्ष्म रूपक के तौर पर मुझे इब्ने मरयम ठहराया गया है। चाहिए कि प्रथम वह पुस्तक अपने हाथ में ले लो फिर देखो कि उसके प्रारंभ में पहले मेरा नाम ख़ुदा तआला ने मरयम रखा है और कहा - يَا مَرْيَمُ اسْكُنْ اَنْتَ وَ زَوْجُكَ الْجَنَّةَ अर्थात् हे मरयम तू और तेरे मित्र स्वर्ग में प्रवेश करो। फिर आगे कई पृष्ठों के पश्चात् जो एक लम्बी अवधि के बाद लिखे गए थे ख़ुदा तआला ने कहा है -

① अलमुज़्ज़म्मिल - 16

يَا مَرْيَمُ نَفَخْتُ فِيْكَ مِنْ لَّدُنِّيْ رُوحَ الصِّدْقِ

अर्थात् हे मरयम मैंने तुझ में सच्चाई की रूह फूंक दी। अत: यह रूह फूंकना जैसे रूहानी हमल (गर्भ) था, क्योंकि यहां वही शब्द प्रयोग किए गए हैं जो मरयम सिद्दीक़ा के बारे में प्रयुक्त किए गए थे। जब मरयम सिद्दीक़ा में रूह फूंकी गई थी तो उसके यही अर्थ थे कि उसको गर्भ हो गया था जिस गर्भ से ईसा पैदा हुआ। अत: यहां भी इसी प्रकार कहा कि तुझ में रूह फूंकी गई जैसे यह रूहानी (आध्यात्मिक) गर्भ था। फिर आगे चल कर किताब के अन्त में मुझे ईसा करके पुकारा गया क्योंकि ख़ुदा के फूंकने के बाद मरयमी अवस्था ईसा बनने के लिए तैयार हुई जिसे रूपक के रंग में गर्भ कहा गया। फिर अन्तत: उसी मरयमी अवस्था से ईसा पैदा हो गया। इसी रहस्य के लिए पुस्तक के अन्त में मेरा नाम ईसा रखा गया और पुस्तक के आरंभ में मरयम नाम रखा गया। अब शर्म और लज्जा, न्याय और संयम की आंख से प्रथम सूरह तहरीम में इस आयत पर विचार करो जिसमें इस उम्मत के कुछ लोगों को मरयम से समानता दी गई है और फिर मरयम में रूह फूंकने की चर्चा की गई है जो इस गर्भ की ओर संकेत करता है जिस से ईसा पैदा होने वाला है। तत्पश्चात् बराहीन अहमदिया के पहले भागों के ये समस्त स्थान पढ़ो और ख़ुदा तआला से डर कर भयभीत रहो कि उसने किस प्रकार पहले मेरा नाम मरयम रखा और फिर मरयम में रूह फूंकने का वर्णन किया और पुस्तक के अन्त में उसी मरयम के रूहानी गर्भ से मुझे ईसा बना दिया। यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो मनुष्य को यह सामर्थ्य कदापि न थी कि दावे से एक लम्बे समय पूर्व ये सूक्ष्म आध्यात्म ज्ञान पहले से भविष्यवाणी के तौर पर अपनी किताब में सम्मिलित कर देता। तू स्वयं गवाह हो कि उस समय और इस समय में मुझे इस आयत का ज्ञान तक न था कि मैं इस तौर पर ईसा मसीह बनाया जाऊंगा अपितु मैं भी तुम्हारी भांति मानव होने के नाते सीमित ज्ञान के कारण यही आस्था रखता था कि ईसा इब्ने मरयम आकाश से उतरेगा और इस बात के बावजूद कि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में मेरा नाम ईसा रखा और जो पवित्र क़ुर्आन की आयतें भविष्यवाणी

के तौर पर हज़रत ईसा की ओर सम्बद्ध कर दीं और यह भी कह दिया कि तुम्हारे आने की ख़बर क़ुर्आन और हदीस में मौजूद है किन्तु फिर भी मैं सतर्क न हुआ और बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में मैंने वही ग़लत आस्था अपनी राय के तौर पर लिख दी तथा प्रकाशित कर दी कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम आकाश से उतरेंगे और मेरी आंखें उस समय तक बिल्कुल बन्द रहीं जब तक कि ख़ुदा ने बार-बार खोल कर मुझे न समझाया कि इस्राईली ईसा इब्ने मरयम तो मृत्यु पा चुका है तथा वापस नहीं आएगा। इस युग और इस उम्मत के लिए तू ही ईसा इब्ने मरयम है। यह मेरी ग़लत राय जो बराहीन अहमदिया के पहले भागों में लिखी गई यह भी ख़ुदा तआला का एक निशान था जो मेरी सादगी और बनावट के अभाव का गवाह था, परन्तु अब मैं इस कठोर हृदय जाति का क्या इलाज करूं कि न क़सम को मानते हैं, न निशानों पर ईमान लाते हैं और न ख़ुदा तआला के निर्देशों पर विचार करते हैं। आकाश ने भी निशान दिखाए और पृथ्वी ने भी किन्तु उनकी आंखें बन्द हैं। अब न मालूम ख़ुदा उन्हें क्या दिखाएगा।

यहां यह भी स्मरण रखना आवश्यक है कि ख़ुदा तआला ने मेरा नाम ईसा ही नहीं रखा अपितु प्रारंभ से अन्त तक जितने नबियों के नाम थे वे सब मेरे नाम रख दिए हैं। अतः बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम आदम रखा है जैसा कि अल्लाह तआला कहता है - اَرَدْتُ اَنْ اَسْتَخْلِفَ فَخَلَقْتُ اٰدمَ देखो बराहीन अहमदिया पहले भाग पृष्ठ-492 फिर दूसरे स्थान पर कहता है - سُبْحَانَ الَّذِیْ اَسْرٰی بِعَبْدِہٖ لَیْلًا خلَقَ اٰدمَ فَاَکْرَمَہٗ देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ - 504। दोनों वाक्यों के अर्थ ये हैं कि मैंने इरादा किया कि अपना ख़लीफ़ा बनाऊं तो मैंने आदम को पैदा किया अर्थात् इस विनीत को। फिर कहा - पवित्र है वह अस्तित्व जिसने अपने बन्दे को एक ही रात में सम्पूर्ण सैर करा दी पैदा किया उस आदम को फिर उसको श्रेष्ठता दी। एक ही रात में सैर कराने से उद्देश्य यह है कि उसकी समस्त पूर्णता एक ही रात में कर दी और केवल चार पहर में उसके व्यवहार को पूर्णता तक पहुंचाया और ख़ुदा ने जो मेरा नाम आदम रखा, उसका एक कारण यह है कि इस युग में सामान्यतः मानव-जाति की

रूहानियत पर मृत्यु आ गई थी अतः ख़ुदा ने मुझे नवीन जीवन के सिलसिले का आदम ठहराया। इस संक्षिप्त वाक्य में यह भविष्यवाणी गुप्त है कि जैसा कि आदम की नस्ल समस्त संसार में फैल गई ऐसा ही मेरी यह रूहानी नस्ल तथा प्रत्यक्ष नस्ल भी समस्त संसार में फैलेगी। दूसरा कारण यह है कि जैसा कि फ़रिश्तों ने आदम के ख़लीफ़ा बनाने पर आपत्ति की थी तथा ख़ुदा ने उस आपत्ति का खण्डन करके कहा कि आदम की परिस्थितियां जो मुझे मालूम हैं वे तुम्हें मालूम नहीं। यही घटना मुझ पर चरितार्थ होती है क्योंकि बराहीन अहमदिया के पहले भागों में ख़ुदा की यह वह्यी दर्ज है कि लोग मेरे बारे में ऐसी ही आपत्तियां खड़ी करेंगे जैसी कि आदम[अ.] पर की थीं। जैसा कि ख़ुदा तआला का कथन है - وَاِنْ يَّتَّخِذُوْنَكَ اِلَّا هُزُوًا اَهٰذَا الَّذِیْ بَعَثَ اللّٰهُ ۔ جَاهِلٌ اَوْ مَجْنُوْنٌ अर्थात् तुझे लोग उपहास का निशाना बना लेंगे और कहेंगे कि क्या यही व्यक्ति ख़ुदा ने भेजा है। यह तो मूर्ख है या पागल है। इसके उत्तर में अल्लाह तआला उन्हीं बराहीन अहमदिया के भागों में कहता है اَنْتَ مِنِّیْ بِمَنْزِلَةٍ لَا يَعْلَمُهَا الْخَلْقُ अर्थात् तेरा मेरे यहां वह स्थान है जिसे संसार नहीं जानता। यह उत्तर इसी प्रकार का है जैसा कि आदम के बारे में पवित्र क़ुर्आन में है - قَالَ اِنِّیْۤ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ[1] अपितु यही आयतें यथावत् यद्यपि बराहीन अहमदिया के पहले भागों में नहीं परन्तु दूसरी पुस्तकों में मेरे बारे में ख़ुदा की वह्यी होकर प्रकाशित हो चुकी हैं। तीसरी आदम से मुझे यह भी समानता है कि आदम जुड़वां तौर पर पैदा हुआ और मैं भी जुड़वां पैदा हुआ पहले लड़की पैदा हुई उसके बाद मैं। और इसके साथ ही मैं अपने पिता श्री के लिए ख़ातमुलवलद था। मेरे बाद कोई बच्चा पैदा नहीं हुआ। मैं जुमा के दिन पैदा हुआ था तथा आदम का हव्वा से पूर्व पैदा होना इस बात की ओर संकेत था कि वह दुनिया के सिलसिले का प्रथम स्रोत है और मेरा अपनी जुड़वां बहन से बाद में पैदा होना इस बात का संकेत था कि मैं संसार के सिलसिले के अन्त पर आया हूं। अतः छठे हज़ार के अन्त में मेरा जन्म हैं और चन्द्रमा के हिसाब के अनुसार अब सातवां हज़ार जा रहा है।

इसी प्रकार बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम नूह भी रखा

---

① अलबक़रह - 31

है और मेरे बारे में कहा है - وَلَا تُخَاطِبْنِی فِی الَّذِیْنَ ظَلَمُوْا اِنَّھُمْ مُغْرَقُوْن अर्थात् मेरी आंखों के सामने नौका बना और अत्याचारियों की सिफ़ारिश के बारे में मुझ से कोई बात न कर कि मैं उनको डुबो दूंगा। ख़ुदा ने नूह के युग में अत्याचारियों को लगभग एक हज़ार वर्ष तक छूट दी थी और अब भी ख़ैरुल क़ुरून की तीन सदियों को पृथक रख कर हज़ार वर्ष ही हो जाता है। इस हिसाब से अब यह युग उस समय पर आ पहुंचता है जबकि नूह की जाति अज़ाब से तबाह की गई थी और ख़ुदा ने मुझे कहा - اِصْنَعِ الْفُلْکَ بِاَعْیُنِنَا وَوَحْیِنَا۔ اِنَّ الَّذِیْنَ یُبَایِعُوْنَکَ اِنَّمَا یُبَایِعُوْنَ اللّٰہَ یَدُ اللّٰہِ فَوْقَ اَیْدِیْھِمْ अर्थात् मेरी आंखों के सामने और मेरे आदेशानुसार नौका बना। वे लोग जो तुझ से बैअत करते हैं वे न तुझ से अपितु ख़ुदा से बैअत करते हैं। यह ख़ुदा का हाथ है जो उनके हाथों पर है। यही बैअत की नौका है जो मनुष्यों के प्राण और ईमान बचाने के लिए है। किन्तु बैअत से अभिप्राय वह बैअत नहीं जो केवल मुख से होती है और हृदय उस से लापरवाह अपितु पृथक है। बैअत के अर्थ बेच देने के हैं। अत: जो व्यक्ति वास्तव में अपने प्राण, माल और सामान को इस मार्ग में बेचता नहीं मैं सच-सच कहता हूं कि वह ख़ुदा की दृष्टि में बैअत में सम्मिलित नहीं अपितु मैं देखता हूं कि अभी तक दिखावे की बैअत करने वाले ऐसे बहुत से हैं कि सुधारणा का तत्त्व भी उनमें अभी तक पूर्ण नहीं और एक कमज़ोर बच्चे की भांति प्रत्येक परीक्षा के समय ठोकर खाते हैं और कुछ दुर्भाग्यशाली ऐसे हैं कि दुष्ट लोगों की बातों से शीघ्र प्रभावित हो जाते हैं और कुधारणा की ओर ऐसे दौड़ते हैं जैसे कुत्ता मुर्दार की ओर। अत: मैं क्योंकर कहूं कि वे वास्तविक तौर पर बैअत में सम्मिलित हैं। मुझे कभी-कभी ऐसे लोगों का ज्ञान भी दिया जाता है परन्तु आज्ञा नहीं दी जाती कि उनको सूचित करूं। कई छोटे बड़े किए जाएंगे और कई बड़े हैं जो छोटे किए जाएंगे। इसलिए भय का स्थान है।

इसी प्रकार बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम इब्राहीम भी रखा गया है जैसा कि कहा - سَلَامٌ عَلَیْکَ یَا اِبْرَاھِیْم (देखो बराहीन अहमदिया पृष्ठ-558)

अर्थात् हे इब्राहीम ! तुझ पर सलाम। इब्राहीम अलैहिस्सलाम को ख़ुदा तआला ने बहुत बरकतें दी थीं और वह हमेशा शत्रुओं के आक्रमणों से सुरक्षित रहा। अत: मेरा नाम इब्राहीम रखकर ख़ुदा तआला यह संकेत करता है कि इसी प्रकार इस इब्राहीम को बरकतें दी जाएंगी और विरोधी उसे कुछ हानि नहीं पहुंचा सकेंगे। जैसा कि इसी बराहीन अहमदिया के पहले भागों में अल्लाह तआला मुझे संबोधित करके कहता है - بُوْرِكْتَ يَا اَحْمَدُ وَ كَانَ مَا بَارَكَ اللهُ فِيْكَ حقًّا فِيْك अर्थात् हे अहमद ! तुझे मुबारक किया गया और यह तेरा ही अधिकार था। बराहीन अहमदिया के इन्हीं पहले भागों में अल्लाह तआला एक स्थान पर मुझे सम्बोधित करके कहता है कि तुझे इतनी बरकत दूंगा कि बादशाह तेरे कपड़ों से बरकत ढूंढेंगे और जिस प्रकार इब्राहीम से ख़ुदा ने ख़ानदान (वंश) आरंभ किया इसी प्रकार अल्लाह तआला बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरे बारे में कहता है - سُبْحَانَ اللهِ زَادَ مَجْدُكَ يَنْقَطِعُ اٰبَاءُكَ وَ يُبْدَءُ مِنْكَ अर्थात् ख़ुदा पवित्र है जिसने तेरी प्रतिष्ठा को बढ़ाया, वह तेरे बाप-दादा की चर्चा समाप्त कर देगा और खानदान का आरंभ तुझ से करेगा। इब्राहीम से ख़ुदा का प्रेम ऐसा शुद्ध था कि उसने उसकी सुरक्षा के लिए बड़े-बड़े कार्य दिखाए और चिन्ता के समय इब्राहीम को स्वयं सांत्वना दी। इसी प्रकार अल्लाह तआला ने बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम इब्राहीम रख कर कहा है - سَلَامٌ علٰى ابراهيم صَافيْنَاهُ وَنَجَّيْنَاه مِنَ الْغَمِّ تفرّدنا بِذالك (पृष्ठ-651) अर्थात् इस इब्राहीम पर सलाम। उससे हमारा प्रेम शुद्ध है जिसमें कोई मलिनता नहीं और हम उसे चिन्ता से मुक्ति देंगे। यह प्रेम हम से ही विशिष्ट है कोई दूसरा उसका ऐसा प्रेमी नहीं। और फिर बराहीन अहमदिया के पहले भागों में एक अन्य स्थान पर मेरा नाम इब्राहीम रखा है जैसा कि उसका कथन है - يا ابراهيم أعرض عن هٰذا اِنَّه عَمَلٌ غَيْرُ صَالِحٍ اِنَّما اَنْتَ مُذكِّر وَمَا اَنْتَ عَلَيْهِم بِمُصَيْطِرٍ (पृष्ठ - 510) अर्थात् हे इब्राहीम ! उस व्यक्ति से पृथक हो जा यह अच्छा व्यक्ति नहीं है और तेरा कार्य स्मरण कराना है तू उन पर निगरान (दारोग़ा) तो नहीं। हज़रत इब्राहीम को अपनी जाति के कुछ

लोगों से तथा निकट संबंधों से सम्बन्ध विच्छेद करना पड़ा था। अत: ऐसा ही प्रकट हुआ। फिर बराहीन अहमदिया के पहले भागों में एक स्थान में मेरा नाम इब्राहीम रखा है जैसा कि वह कहता है - و نظر نا اِلَیۡکَ وَ قُلۡنَا یَا نَارُ کُوۡنِیۡ بَرۡدًا وَّ سَلامًا عَلٰی ابراھیم देखिए पृष्ठ-240 अर्थात् हम ने इस इब्राहीम की ओर दृष्टि की और कहा कि हे अग्नि ! इब्राहीम के लिए शीतल एवं सुरक्षा वाली हो जा। यह भावी युग के लिए एक भविष्यवाणी है और जहां तक इस समय मेरा विचार है यह उन भयावह मुकद्दमों के लिए ख़ुशखबरी है जिन में जान और सम्मान के नष्ट होने की आशंका थी जैसा कि मार्टिन क्लार्क का मुझ पर क़त्ल करने की याचना और करमदीन का मुकद्दमा और अग्नि से अभिप्राय यहां वह अग्नि है जो अधिकारियों के क्रोध के भड़कने से पैदा होती है। कथन का सारांश यह है कि हम क्रोध और आक्रोश की अग्नि को शीतल कर देंगे और सुरक्षापूर्वक मुक्ति होगी। इसी प्रकार बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम यूसुफ़ भी रखा गया है तथा समानता का विवरण पहले गुज़र चुका है इसी प्रकार बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम मूसा रखा गया जैसा कि अल्लाह तआला कहता है - تلطّف بالنّاس وَ ترحّم علیھم انت فیھم بمنزلة موسٰی وَ اصۡبِرۡ عَلٰی مَا یَقُولون (देखिए पृष्ठ - 508) अर्थात् लोगों से नम्रता तथा आदर-सत्कारपूर्वक व्यवहार कर। तू उनमें मूसा के समान है और उनकी हृदय को पीड़ा पहुंचाने वाली बातों पर धैर्य करता रह। अर्थात् मूसा बड़ा शालीन था और हमेशा बनी इस्राईल प्रतिदिन मुर्तद (धर्म से विमुख) होते थे तथा मूसा पर आक्रमण करते और प्राय: उस पर कई अश्लीलतापूर्ण आरोप लगाते थे, परन्तु मूसा हमेशा धैर्य करता था तथा उनका सिफारिश करने वाला था। मूसा उनको एक जलते हुए तन्दूर से निकाल लाया और फ़िरऔन के हाथ से मुक्ति दी तथा मूसा ने फ़िरऔन के सामने बड़े-बड़े भयावह चमत्कार दिखाए। अत: इस नाम के रखने में यह भविष्यवाणी भी है कि ऐसा ही यहां भी होगा। इसी प्रकार ख़ुदा ने बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम **दाऊद** भी रखा जिसका विवरण शीघ्र ही यथास्थान आएगा। इसी प्रकार बराहीन अहमदिया के पहले भागों

में ख़ुदा तआला ने मेरा नाम **सुलेमान** भी रखा। उसका विवरण भी शीघ्र आएगा। इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में मेरा नाम अहमद और मुहम्मद भी रखा और यह इस बात की ओर संकेत है जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ख़ातम-ए-नुबुव्वत हैं वैसा ही यह विनीत (ख़ाकसार) ख़ातम-ए-विलायत है। तत्पश्चात् बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में मेरे बारे में यह भी कहा - جَرِیُّ اللّٰہِ فِیۡ حُلَلِ الۡاَنۡبِیَاء अर्थात् ख़ुदा का रसूल पूर्वकालीन समस्त नबियों की शैलियों में। ख़ुदा की इस वह्यी का अर्थ यह है कि आदम से लेकर अन्त तक संसार में ख़ुदा तआला की ओर से जितने नबी आए हैं चाहे वे इस्राईली हैं या ग़ैर इस्राईली, उन सब की विशेष घटना या विशेष गुणों में से इस विनीत को कुछ भाग दिया गया है और एक भी नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसकी विशेषताओं तथा घटनाओं में से इस विनीत को भाग नहीं दिया गया। प्रत्येक नबी की प्रकृति का निशान मेरी प्रकृति में है। इसी के बारे में ख़ुदा ने मुझे सूचना दी। इसमें यह भी संकेत पाया जाता है कि समस्त नबियों के प्राणों के शत्रु तथा कट्टर विरोधी जो शत्रुता में चरम सीमा को पहुंच गए थे जिनको भिन्न-भिन्न प्रकार के अज़ाबों से तबाह किया गया, इस युग के अधिकतर लोग भी उन से समानता रखते हैं यदि वे पश्चाताप न करें। अत: इस ख़ुदा की वह्यी में यह बताना अभीष्ट है कि यह युग सदाचारी और दुराचारी लोगों के गुणों का संग्रहीता है और यदि ख़ुदा तआला दया न करे तो इस युग के दुष्ट लोग समस्त पूर्व युगों के अज़ाबों के पात्र हैं अर्थात् इस युग में समस्त पूर्वकालीन अजाब एकत्र हो सकते हैं और जैसा कि पहली उम्मतों में कोई जाति प्लेग से मरी, कोई पृथ्वी पर गिरने वाली बिजली से और कोई जाति भूकम्प से तथा कोई जाति पानी के तूफ़ान से और कोई जाति आंधी के तूफान से और कोई जाति पृथ्वी के धंसने से। इसी प्रकार इस युग के लोगों को ऐसे अज़ाबों से डरना चाहिए। यदि वे अपना सुधार न करें। क्योंकि अधिकांश लोगों में यह समस्त तत्त्व मौजूद हैं केवल ख़ुदा के आदेश ने छूट दे रखी है और वह वाक्य कि جری اللّٰہ فی حُلَلِ الانبیاء बहुत विवरण चाहता है जिसका यह पंचम भाग उसे नहीं उठा

सकता केवल संक्षेप में इतना पर्याप्त है कि प्रत्येक पूर्वकालीन नबी की आदत और विशेषता और घटनाओं में से कुछ मुझ में है और जो कुछ ख़ुदा तआला ने पूर्वकालीन नबियों के साथ भिन्न-भिन्न प्रकारों में सहायता एवं समर्थन के मामले किए हैं उन मामलों का सदृश भी मेरे साथ प्रकट किया गया है और किया जाएगा। यह बात केवल इस्राईली नबियों के साथ विशिष्ट नहीं अपितु समस्त संसार में जो नबी गुज़रे हैं उनके उदाहरण और उनकी घटनाएं मेरे अन्दर और मेरे साथ मौजूद हैं तथा हिन्दुओं में जो एक नबी गुज़रा है जिसका नाम **कृष्ण** था वह भी इसमें सम्मिलित है। खेद कि जैसे दाऊद नबी पर दुष्ट लोगों ने दुराचार और दुष्कर्म के आरोप लगाए ऐसे ही आरोप कृष्ण पर भी लगाए गए हैं और जैसा कि दाऊद ख़ुदा तआला का पहलवान और बड़ा शूरवीर था और ख़ुदा उस से प्रेम करता था वैसा ही आर्यावर्त में कृष्ण था। अतः यह कहना उचित है कि आर्यावर्त का दाऊद कृष्ण ही था क्योंकि युग अपने अन्दर एक कालचक्र (समय का चक्र) रखता है और सदाचारी हों अथवा दुराचारी हों संसार में बार-बार उनके समरूप पैदा होते रहते हैं और इस युग में ख़ुदा ने चाहा कि जितने सदाचारी और सत्यनिष्ठ पुनीत नबी गुज़र चुके हैं उनके आदर्श एक ही व्यक्ति के अस्तित्व में प्रकट किए जाएं। अतः **वह मैं हूं**। इसी प्रकार इस युग में समस्त दुराचारियों के सदृश भी प्रकट हुए। फ़िरऔन हो या वे यहूदी हों जिन्होंने हज़रत मसीह को सलीब पर चढ़ाया अथवा अबू जहल हो सब के उदाहरण इस समय मौजूद हैं जैसा कि अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में याजूज, माजूज के वर्णन के समय इसी की ओर संकेत किया है।

इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने मेरा नाम ज़ुलक़रनैन भी रखा क्योंकि ख़ुदा तआला की मेरे बारे में यह पवित्र वह्यी कि جری اللہ فی حُلَلِ الانبیاء जिसके ये अर्थ हैं कि ख़ुदा का रसूल सम्पूर्ण नबियों की शैलियों में यह चाहती है कि मुझ में 'ज़ुलक़रनैन' की भी विशेषताएं हों क्योंकि सूरह कहफ़ से सिद्ध है कि ज़ुलक़रनैन भी वह्यी वाला था। ख़ुदा तआला ने

उसके बारे में कहा है - قُلْنَا يٰذَا الْقَرْنَيْنِ[1] अतः इस ख़ुदा की वह्यी के अनुसार कि جری اللہ فی حُلَلِ الانبیاء इस उम्मत के लिए **ज़ुलक़रनैन** मैं हूं और पवित्र क़ुर्आन में नमूने के तौर पर मेरे बारे में भविष्यवाणी मौजूद है परन्तु उनके लिए जो विवेक रखते हैं। यह तो स्पष्ट है कि ज़ुलक़रनैन वह होता है जो दो सदियों को पाने वाला हो और मेरे बारे में यह बात बड़ी अद्‌भुत है कि इस युग के लोगों ने जितनी अपने-अपने तौर पर सदियों का विभाजन कर रखा है उन समस्त विभाजनों के अनुसार जब देखा जाए तो स्पष्ट होगा कि मैंने प्रत्येक क़ौम की दो सदियों को पा लिया है। मेरी आयु इस समय लगभग सड़सठ है। अतः स्पष्ट है कि इस हिसाब से जैसा कि मैंने दो हिज्री सदियों को भी पा लिया है और ऐसा ही दो ईसाई सदियों को पा लिया और ऐसा ही दो हिन्दी सदियों को भी जिन का सन् विक्रमादित्य से आरंभ होता है और मैंने यथासंभव प्राचीन काल के समस्त देशों पूर्वी एवं पश्चिमी की निर्धारित सदियों का निरीक्षण किया है कोई जाति ऐसी नहीं जिसकी निर्धारित सदियों में से मैंने दो सदियां (शताब्दियां) न पाईं हों तथा कुछ हदीसों में भी आ चुका है कि आने वाले मसीह का एक यह भी लक्षण है कि वह ज़ुलक़रनैन होगा। अतः ख़ुदा की वह्यी के स्पष्ट वर्णन के अनुसार मैं **ज़ुलक़रनैन** हूं और जो कुछ ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन को उन आयतों के बारे में जो सूरह कहफ़ में ज़ुलक़रनैन के क़िस्से के बारे में हैं मुझ पर भविष्यवाणी के रूप में अर्थ खोले हैं। मैं नीचे उनका वर्णन करता हूं। परन्तु स्मरण रहे कि पहले अर्थों से इन्कार नहीं है वे भूतकाल से संबंधित हैं और ये भविष्यकाल के संबंध में। पवित्र क़ुर्आन मात्र कहानीकार के समान नहीं है अपितु उस के प्रत्येक वृत्तान्त के नीचे एक भविष्यवाणी है और ज़ुलक़रनैन का क़िस्सा मसीह मौऊद के युग के लिए अपने अन्दर एक भविष्यवाणी रखता है। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन की यह इबारत है - وَ يَسْـَٔلُوْنَكَ عَنْ ذِی الْقَرْنَيْنِ ؕ قُلْ سَاَتْلُوْا عَلَيْكُمْ مِّنْهُ ذِكْرًا[2] (अलकहफ़-84) अर्थात् ये लोग तुझ

[1] अलकहफ़ - 87

[2] यह इस बात की ओर संकेत है कि ज़ुलक़रनैन की चर्चा केवल भूतकाल से सम्बद्ध

से ज़ुलक़रनैन का हाल पूछते हैं। उनको कह कि मैं अभी ज़ुलक़रनैन का थोड़ा सा वर्णन तुम को सुनाऊंगा, तत्पश्चात् कहा إِنَّا مَكَّنَّا لَهُ فِي الْأَرْضِ وَآتَيْنَاهُ مِنْ كُلِّ شَيْءٍ سَبَبًا[1] अर्थात् हम इसे अर्थात् मसीह मौऊद को जो ज़ुलक़रनैन भी कहलाएगा संसार में ऐसा सुदृढ़ करेंगे कि कोई उसे हानि नहीं पहुंचा सकेगा और हम हर प्रकार से उसे संसाधन दे देंगे और उसकी कार्यवाहियों को सरल और आसान कर देंगे। स्मरण रहे कि यह वह्यी बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में भी मेरे संबंध में हुई है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - أَلَمْ نَجْعَلْ لَّكَ سَهُوْلَةً فِي كُلِّ امرٍ अर्थात् क्या हम ने प्रत्येक काम में तेरे लिए आसानी नहीं कर दी। अर्थात् क्या हम ने वह समस्त सामान तेरे लिए उपलब्ध नहीं कर दिए जो प्रचार और सत्य के प्रकाशन के लिए आवश्यक थे। जैसा कि स्पष्ट है कि उसने मेरे लिए प्रचार और सत्य के प्रकाशन के लिए वे सामान उपलब्ध कर दिए जो किसी नबी के समय में मौजूद न थे। समस्त जातियों के आवागमन और यातायात के मार्ग खोले गए। यात्राएं करने के लिए वे सुविधाएं कर दी गईं कि वर्षों के मार्ग दिनों में तय होने लगे तथा सूचना-प्रसारण के वे माध्यम पैदा हुए कि सहस्त्रों कोस की सूचना कुछ मिनटों में आने लगीं। प्रत्येक जाति की वे पुस्तकें प्रकाशित हुईं जो गुप्त और छिपी हुई थीं तथा प्रत्येक वस्तु की उपलब्धि के लिए एक कारण पैदा किया गया। पुस्तकों के लिखने में जो-जो कठिनाइयां थीं छापागृहों (प्रैसों) से उनका निवारण हो गया यहां तक कि ऐसी-ऐसी मशीने निकली हैं कि उनके माध्यम से दस दिनों में किसी लेख को इतनी अधिक मात्रा में छाप सकते हैं कि पूर्व युगों में वे लेख दस वर्ष में भी लिपिबद्ध नहीं हो सकते थे और फिर उन्हें प्रकाशित करने के इतने आश्चर्यजनक सामान आविष्कृत हो गए हैं कि एक लेख केवल चालीस दिन में सम्पूर्ण विश्व की आबादी में प्रकाशित हो सकता है और इस युग से पूर्व एक व्यक्ति

नहीं अपितु भविष्यकाल में भी एक ज़ुलक़रनैन आने वाला है और भूतकाल की चर्चा तो एक छोटी सी बात है। (इसी से)

[1] अलकहफ़ - 85

इस शर्त के साथ कि उसकी आयु भी लम्बी हो सौ वर्ष तक भी इस विशाल प्रकाशन पर समर्थ नहीं हो सकता था। तत्पश्चात् अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में कहता है -

فَاَتْبَعَ سَبَبًا ﴿۸۶﴾ حَتّٰۤی اِذَا بَلَغَ مَغۡرِبَ الشَّمۡسِ وَجَدَهَا تَغۡرُبُ فِیۡ عَیۡنٍ حَمِئَۃٍ وَّ وَجَدَ عِنۡدَهَا قَوۡمًا ۬ؕ قُلۡنَا یٰذَا الۡقَرۡنَیۡنِ اِمَّاۤ اَنۡ تُعَذِّبَ وَ اِمَّاۤ اَنۡ تَتَّخِذَ فِیۡهِمۡ حُسۡنًا ﴿۸۷﴾ قَالَ اَمَّا مَنۡ ظَلَمَ فَسَوۡفَ نُعَذِّبُهٗ ثُمَّ یُرَدُّ اِلٰی رَبِّهٖ فَیُعَذِّبُهٗ عَذَابًا نُّکۡرًا ﴿۸۸﴾ وَ اَمَّا مَنۡ اٰمَنَ وَ عَمِلَ صَالِحًا فَلَهٗ جَزَآءَ ۨالۡحُسۡنٰی ۚ وَ سَنَقُوۡلُ لَهٗ مِنۡ اَمۡرِنَا یُسۡرًا ﴿ؕ۸۹﴾ [1]

अर्थात् जब ज़ुलक़रनैन को जो मसीह मौऊद है हर प्रकार के सामान दिए जाएंगे। अत: वह एक सामान के पीछे पड़ेगा अर्थात् वह पश्चिमी देशों के सुधार के लिए कटिबद्ध होगा तथा वह देखेगा कि सत्य का सूर्य और सच्चाई एक कीचड़ के झरने में अस्त हो गई और उस दूषित झरने तथा अंधकार के पास एक जाति को पाएगा जो पश्चिमी जाति कहलाएगी अर्थात् पश्चिमी देशों में ईसाइयत के धर्मानुयायियों को नितान्त घोर अन्धकार में देखेगा। न उनके सामने सूर्य होगा जिससे वे प्रकाश प्राप्त कर सकें और न उनके पास शुद्ध जल होगा जिसे वे पिएं। अर्थात् उनकी ज्ञान और व्यवहार संबंधी स्थिति अत्यन्त ख़राब होगी और वह रूहानी प्रकाश तथा रूहानी पानी से वंचित होंगे। तब हम ज़ुलक़रनैन अर्थात् मसीह मौऊद को कहेंगे कि तेरे अधिकार में है चाहे तू इनको अज़ाब दे अर्थात् अज़ाब आने के लिए बद्दुआ करे (जैसा कि सही हदीसों में वर्णन है) या उन के साथ सद्व्यवहार का आचरण करे। तब ज़ुलक़रनैन अर्थात् मसीह मौऊद उत्तर देगा कि हम उसी को दण्ड दिलाना चाहते हैं जो अत्याचारी हो। वह संसार में भी हमारी बद्-दुआ से दण्डित होगा और फिर आख़िरत में कठोर अज़ाब देखेगा। किन्तु जो व्यक्ति सच्चाई से विमुख नहीं होगा और अच्छे कार्य करेगा उसे अच्छा प्रतिफल दिया जाएगा और उसे उन्हीं कार्यों के करने का आदेश होगा जो सरल हैं और आसानी से हो सकते हैं। अत: यह मसीह मौऊद के पक्ष में भविष्यवाणी है कि वह ऐसे समय में आएगा जबकि पश्चिमी देशों के लोग घोर अन्धकार

[1] अलकहफ़ - 86 से 89

में पड़े होंगे और सत्य का सूर्य उनके सामने से बिल्कुल अस्त हो जाएगा तथा एक गन्दे और दुर्गन्धयुक्त झरने में अस्त होगा। अर्थात् सच्चाई की बजाए दुर्गन्धयुक्त आस्थाएं एवं कर्म उनमें फैले हुए होंगे और वही उनका पानी होगा जिसको वे पीते होंगे तथा प्रकाश का नामो निशान न होगा, अंधकार में पड़े होंगे। स्पष्ट है कि यही स्थिति आजकल ईसाई धर्म की है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन ने स्पष्ट किया है और ईसाइयत का विशाल केन्द्र पाश्चात्य देश हैं।

पुनः अल्लाह तआला कहता है -

ثُمَّ اَتْبَعَ سَبَبًا ﴿٩٠﴾ حَتّٰٓى اِذَا بَلَغَ مَطْلِعَ الشَّمْسِ وَجَدَهَا تَطْلُعُ عَلٰى قَوْمٍ لَّمْ نَجْعَلْ لَّهُمْ مِّنْ دُوْنِهَا سِتْرًا ﴿٩١﴾ كَذٰلِكَ ۭ وَقَدْ اَحَطْنَا بِمَا لَدَيْهِ خُبْرًا ﴿٩٢﴾ [1]

अर्थात् फिर ज़ुलक़रनैन जो मसीह मौऊद है जिसे प्रत्येक सामान प्रदान किया जाएगा एक और सामान के पीछे पड़ेगा अर्थात् पूर्वी देशों के लोगों की स्थिति पर दृष्टि डालेगा और वह स्थल जिस से सच्चाई का सूर्य निकलता है उसे ऐसा पाएगा कि एक ऐसी मूर्ख जाति पर सूर्य उदय हुआ है जिनके पास धूप से बचने के लिए कुछ भी सामान नहीं। अर्थात् वे लोग केवल बाह्य रूप पर मुग्धता तथा बाहुल्य की धूप से जलते होंगे तथा वास्तविकता से अपरिचित होंगे और ज़ुलक़रनैन अर्थात् मसीह मौऊद के पास वास्तविक आराम का सामान सब कुछ होगा जिसे हम भलीभांति जानते हैं परन्तु वे लोग स्वीकार नहीं करेंगे और उन लोगों के पास संतुलन की सीमा से बढ़ जाने की धूप से बचने के लिए कुछ भी शरण नहीं होगी। न घर न छायादार वृक्ष, न कपड़े जो गर्मी से सुरक्षित रख सकें। इसलिए जो सच्चाई का सूर्य उदय होगा उनके विनाश का कारण हो जाएगा। यह उन लोगों के लिए एक उदाहरण है कि हिदायत के सूर्य का प्रकाश तो उनके सामने मौजूद है और उस गिरोह के समान नहीं हैं जिनका सूर्य अस्त हो चुका है। किन्तु उन लोगों को इस हिदायत के सूर्य से इसके अतिरिक्त कोई लाभ नहीं कि धूप से उनकी खाल जल जाए तथा रंग काला हो

---

[1] अलकहफ़ - 90 से 92

जाए और आंखों का प्रकाश भी जाता रहे[1]। इस विभाजन से इस बात की ओर संकेत है कि मसीह मौऊद का अपने निर्धारित कर्त्तव्य को पूर्ण करने के लिए तीन प्रकार का दौर होगा। प्रथम - उस जाति पर दृष्टि डालेगा जो हिदायत के सूर्य को खो बैठे हैं तथा एक अंधकार और कीचड़ के झरने में बैठे हैं। दूसरा दौरा उसका उन लोगों पर होगा जो नंग-धड़ंग सूर्य के सामने बैठे हैं अर्थात् शिष्टाचार, लज्जा, सत्कार एवं सुधारणा से काम नहीं लेते बिल्कुल भौतिकवादी हैं जैसे सूर्य के साथ लड़ना चाहते हैं। अतः वे भी सूर्य के वरदान से वंचित हैं और उनको सूर्य से जलने के अतिरिक्त और कोई भाग नहीं। यह उन मुसलमानों की ओर संकेत है जिन में मसीह मौऊद प्रकट तो हुआ, परन्तु वे इन्कार और मुकाबले से पेश आए और लज्जा, शिष्टता तथा सुधारणा से काम न लिया। इसलिए कल्याण से वंचित रह गए। इसके पश्चात् ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में कहता है -

ثُمَّ اَتۡبَعَ سَبَبًا ﴿۹۳﴾ حَتّٰۤی اِذَا بَلَغَ بَیۡنَ السَّدَّیۡنِ وَجَدَ مِنۡ دُوۡنِہِمَا قَوۡمًا ۙ لَّا یَکَادُوۡنَ یَفۡقَہُوۡنَ قَوۡلًا ﴿۹۴﴾ قَالُوۡا یٰذَا الۡقَرۡنَیۡنِ اِنَّ یَاۡجُوۡجَ وَ مَاۡجُوۡجَ مُفۡسِدُوۡنَ فِی الۡاَرۡضِ فَہَلۡ نَجۡعَلُ لَکَ خَرۡجًا عَلٰۤی اَنۡ تَجۡعَلَ بَیۡنَنَا وَ بَیۡنَہُمۡ سَدًّا ﴿۹۵﴾ قَالَ مَا مَکَّنِّیۡ فِیۡہِ رَبِّیۡ خَیۡرٌ فَاَعِیۡنُوۡنِیۡ بِقُوَّۃٍ اَجۡعَلۡ بَیۡنَکُمۡ وَ بَیۡنَہُمۡ رَدۡمًا ﴿۹۶﴾ اٰتُوۡنِیۡ زُبَرَ الۡحَدِیۡدِ ؕ

---

① यहां ख़ुदा तआला को यह प्रकट करना अभीष्ट है कि मसीह मौऊद के समय तीन गिरोह होंगे। एक गिरोह कमी का मार्ग धारण करेगा जो प्रकाश को सर्वथा खो बैठेगा और दूसरा गिरोह संतुलन की सीमा से बढ़ जाने का मार्ग धारण करेगा जो आदर-सत्कार, विनय एवं विनम्रता के प्रकाश से लाभ प्राप्त नहीं करेगा अपितु उद्दण्डतापूर्वक मुकाबला करने वाले की भांति आध्यात्मिक धूप के सामने मात्र नग्न होने की स्थिति में खड़ा होगा। किन्तु तीसरा गिरोह मध्यवर्ती स्थिति में होगा वे मसीह मौऊद से चाहेंगे कि किसी प्रकार याजूज माजूज के आक्रमणों से बच जाएं। और याजूज माजूज अजीज के शब्द से निकला है। अर्थात् वह जाति जो अग्नि के प्रयोग करने में अभ्यस्त है। (इसी से)

حَتّٰۤى اِذَا سَاوٰى بَيۡنَ الصَّدَفَيۡنِ قَالَ انۡفُخُوۡا ؕ حَتّٰۤى اِذَا جَعَلَهٗ نَارًا ۙ قَالَ اٰتُوۡنِیۡۤ اُفۡرِغۡ عَلَيۡهِ قِطۡرًا ؕ﴿۹۶﴾ فَمَا اسۡطَاعُوۡۤا اَنۡ يَّظۡهَرُوۡهُ وَ مَا اسۡتَطَاعُوۡا لَهٗ نَقۡبًا ﴿۹۷﴾ قَالَ هٰذَا رَحۡمَةٌ مِّنۡ رَّبِّیۡ ۚ فَاِذَا جَآءَ وَعۡدُ رَبِّیۡ جَعَلَهٗ دَكَّآءَ ۚ وَ كَانَ وَعۡدُ رَبِّیۡ حَقًّا ؕ﴿۹۸﴾ وَ تَرَكۡنَا بَعۡضَهُمۡ يَوۡمَئِذٍ يَّمُوۡجُ فِیۡ بَعۡضٍ وَّ نُفِخَ فِی الصُّوۡرِ فَجَمَعۡنٰهُمۡ جَمۡعًا ۙ﴿۹۹﴾ وَّ عَرَضۡنَا جَهَنَّمَ يَوۡمَئِذٍ لِّلۡكٰفِرِيۡنَ عَرۡضَا ۙ﴿۱۰۰﴾ الَّذِيۡنَ كَانَتۡ اَعۡيُنُهُمۡ فِیۡ غِطَآءٍ عَنۡ ذِكۡرِیۡ وَ كَانُوۡا لَا يَسۡتَطِيۡعُوۡنَ سَمۡعًا ﴿۱۰۱﴾ اَفَحَسِبَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا اَنۡ يَّتَّخِذُوۡا عِبَادِیۡ مِنۡ دُوۡنِیۡۤ اَوۡلِيَآءَ ؕ اِنَّـاۤ اَعۡتَدۡنَا جَهَنَّمَ لِلۡكٰفِرِيۡنَ نُزُلًا ﴿۱۰۲﴾ ①

फिर ज़ुलक़रनैन अर्थात् मसीह मौऊद एक और सामान के पीछे पड़ेगा और जब वह एक ऐसे स्थान पर पहुंचेगा अर्थात् जब वह एक ऐसा नाज़ुक युग पाएगा जिसको दो अवरोधकों का मध्य कहना चाहिए अर्थात् दो पर्वतों के बीच। तात्पर्य यह कि ऐसा समय पाएगा जबकि दो तरफा भय में लोग पड़े होंगे तथा पथभ्रष्टता की शक्ति शासन की शक्ति के साथ मिल कर भयानक दृश्य दिखाएगी तो उन दोनों शक्तियों के अधीन एक जाति को पाएगा जो उसकी बात को कठिनाईपूर्वक समझेंगे। अर्थात् ग़लत धारणाओं में ग्रस्त होंगे तथा ग़लत आस्थाओं के कारण उस हिदायत (मार्ग-दर्शन) को कठिनाई से समझेंगे जो वह प्रस्तुत करेगा किन्तु अन्ततः समझ लेंगे और हिदायत पा लेंगे। यह तीसरी जाति है जो मसीह मौऊद के निर्देशनों से लाभान्वित होगी। तब वे उसको कहेंगे कि हे ज़ुलक़रनैन ! याजूज और माजूज ने पृथ्वी पर उपद्रव मचा रखा है। अतः यदि आप चाहें तो हम आप के लिए चन्दा एकत्र कर दें ताकि आप हमारे और उनके मध्य कोई अवरोध बना दें। वह उत्तर में कहेगा कि जिस बात पर ख़ुदा ने मुझे शक्ति प्रदान की है वह तुम्हारे चन्दों से उत्तम है। हां यदि तुमने कुछ सहायता करनी हो तो अपनी सामर्थ्य के अनुसार करो ताकि मैं तुम्हारे और उनके मध्य एक दीवार खींच दूं। अर्थात् उन पर ऐसे तौर पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण कर दूं

① अलकहफ़ - 93 से 103 तक

ताकि वे तुम पर कोई लांछनपूर्ण निन्दा और डांट फटकार तथा आरोप का प्रहार न कर सकें। लोहे की शिलाएं मुझे लाकर दो ताकि आवागमन के मार्गों को बन्द किया जाए। अर्थात् स्वयं को मेरी शिक्षा एवं प्रमाणों पर दृढ़तापूर्वक स्थापित करो और पूर्ण दृढ़ता धारण करो और इस प्रकार से स्वयं लोहे की शिला बन कर विरोधात्मक आक्रमणों को रोको और फिर शिलाओं में अग्नि फूंको यहां तक कि वे स्वयं अग्नि बन जाएं। अर्थात् ख़ुदा का प्रेम अपने अन्दर इतना भड़काओ कि स्वयं ख़ुदा का रूप धारण कर लो। स्मरण रखना चाहिए कि ख़ुदा तआला से अत्यन्त प्रेम का यही लक्षण है कि प्रियतम के प्रतिबिंब के तौर पर ख़ुदा की विशेषताएं पैदा हो जाएं और जब तक ऐसा प्रकट न हो तब तक प्रेम का दावा झूठ है। पूर्ण प्रेम का उदाहरण बिल्कुल लोहे की वह स्थिति है जब उसे अग्नि में डाला जाए और उस पर अग्नि इतना प्रभाव डाले कि वह स्वयं अग्नि बन जाए। अत: यद्यपि वह अपनी वास्तविकता में लोहा है अग्नि नहीं है। किन्तु चूंकि अग्नि उस पर चरम सीमा तक प्रभावी हो गई है। इसलिए अग्नि के गुण उससे प्रकट होते हैं। वह अग्नि की भांति जला सकता है। अग्नि के समान उसमें प्रकाश है। अत: ख़ुदाई प्रेम का यथार्थ यही है कि मनुष्य उस रंग में रंगीन हो जाए और यदि इस्लाम इस वास्तविकता तक नहीं पहुंचा सकता तो वह कुछ वस्तु न था। किन्तु इस्लाम इस वास्तविकता तक पहुंचाता है। प्रथम मनुष्य को चाहिए कि अपनी दृढ़ता और ईमान की दृढ़ता में लोहे की भांति बन जाए, क्योंकि यदि ईमानी स्थिति कूड़ा-कर्कट की भांति है तो अग्नि उसको छूते ही भस्म कर देगी, फिर वह अग्नि का द्योतक क्योंकर बन सकता है। खेद ! कुछ मूर्खों ने दासता के उस संबंध को जो प्रतिपालन के साथ है जिससे प्रतिबिंब स्वरूप ख़ुदा की विशेषताएं बन्दे में पैदा होती हैं न समझ कर मेरी इस ख़ुदा की वह्यी पर आक्षेप किया है कि

إِنَّمَا أَمْرُكَ إِذَا أَرَدْتَ شَيْئًا أَنْ تَقُوْلَ لَهُ كُنْ فَيَكُوْن

अर्थात् तेरी यह बात है कि जब तू एक बात को कहे हो जा तो वह हो जाती है। यह

ख़ुदा तआला का कलाम है जो मुझ पर उतरा, यह मेरी ओर से नहीं है तथा इसकी पुष्टि इस्लाम के महान सूफी कर चुके हैं जैसा कि सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी[रज़ि.] ने भी "फ़ुतूहुलग़ैब" में यही लिखा है और विचित्रतम यह कि सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी[रज़ि.] ने भी यही आयत प्रस्तुत की है। खेद लोगों ने केवल रस्मी ईमान को पर्याप्त समझ लिया है तथा पूर्ण मा'रिफ़त की अभिलाषा उनके विचार में कुफ्र है और समझते हैं कि यही हमारे लिए पर्याप्त है, हालांकि वह कुछ भी नहीं तथा उससे इन्कारी हैं कि किसी से रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के पश्चात् ख़ुदा तआला का वार्तालाप और संबोधन निश्चित एवं वास्तविक तौर पर हो सकता है। हां उनका का इतना विचार तो है कि हृदयों में इल्क़ा होता है किन्तु मालूम नहीं कि वह इल्क़ा शैतानी है या रहमानी है तथा नहीं समझते कि ऐसे इल्क़ा से ईमान की स्थिति को लाभ क्या हुआ और कौन सी उन्नति हुई अपितु ऐसा इल्क़ा तो एक कठोर आज़मायश है जिसमें पाप की आशंका तथा ईमान जाने का ख़तरा है, क्योंकि ऐसी संदिग्ध वह्यी में जिसके बारे में ज्ञात नहीं कि शैतान की ओर से है या रहमान (ख़ुदा) की ओर से है। किसी को दृढ़तापूर्वक आदेश हो कि यह कार्य कर। अत: यदि उसने वह कार्य न किया इस विचार से कि कदाचित् यह शैतान ने आदेश दिया है और वास्तव में वह ख़ुदा का आदेश था तो यह विमुखता पाप का कारण हुई। यदि उस आदेश को पूर्ण किया और वास्तव में वह आदेश शैतान की ओर से था तो उस से ईमान गया। अत: ऐसे इल्हाम पाने वालों से वे लोग अच्छे रहे जो ऐसे ख़तरनाक इल्हामों से जिन में शैतान भी भागीदार हो सकता है वंचित हैं। ऐसी आस्था की स्थिति में बुद्धि भी कोई फैसला नहीं कर सकती। संभव है कि ख़ुदा का कोई इल्हाम ऐसा हो जैसा कि मूसा अलैहिस्सलाम की मां का था जिसके पालन करने में एक बच्चे की जान खतरे में पड़ी थी या जैसा कि प्रत्यक्षतया एक पवित्र प्राण का अकारण वध किया और चूंकि ऐसी बातें प्रत्यक्षत: शरीअत के विपरीत हैं, इसलिए शैतानी हस्तक्षेप की संभावना से उस पर कौन अमल करेगा तथा अवज्ञा के कारण पाप में गिरेगा और संभव है कि ला'नती

शैतान कोई ऐसा आदेश दे कि प्रत्यक्ष में शरीअत के विपरीत ज्ञात न हो और वास्तव में बहुत उपद्रव तथा विनाश का कारण हो या गुप्त तौर पर ऐसी बातें हों जो ईमान जाने का कारण हों। अत: ऐसे वार्तालाप एवं संबोधन से क्या लाभ हुआ।

फिर उपरोक्त आयतों के पश्चात् अल्लाह तआला कहता है कि ज़ुलक़रनैन अर्थात् मसीह मौऊद उस जाति को जो याजूज माजूज से डरती है कहेगा कि मुझे तांबा ला दो कि मैं उसे पिघला कर उस दीवार पर उंडेल दूंगा। तत्पश्चात् याजूज, माजूज में शक्ति नहीं होगी कि ऐसी दीवार पर चढ़ सकें या उसमें छेद कर सकें। स्मरण रहे कि लोहा यद्यपि बहुत देर तक अग्नि में रखकर अग्नि का रूप धारण करता है परन्तु कठिनाई से पिघलता है परन्तु तांबा शीघ्र पिघल जाता है और साधक के लिए ख़ुदा तआला के मार्ग में पिघलना भी आवश्यक है। अत: यह इस बात की ओर संकेत है कि ऐसे तैयार हृदय और नर्म स्वभाव लाओ कि जो ख़ुदा तआला के निशानों को देखकर पिघल जाएं, क्योंकि कठोर हृदयों पर ख़ुदा तआला के निशान कुछ प्रभाव नहीं करते, परन्तु मनुष्य शैतानी आक्रमण से सुरक्षित तब होता है कि प्रथम दृढ़ता में लोहे के समान हो, फिर वह लोहा ख़ुदा तआला के प्रेम की अग्नि से अग्नि का रूप धारण कर ले और फिर हृदय पिघल कर उस लोहे पर पड़े और उसको बिखरने और अस्त-व्यस्त होने से थाम ले। साधना पूर्ण होने के लिए ये तीन ही शर्तें हैं जो शैतानी आक्रमणों से सुरक्षित रहने के लिए सिकन्दर[1] की बनाई हुई दीवार हैं और उस दीवार पर शैतानी रूह नहीं चढ़ सकती और न उसमें छेद कर सकती है। पुन: कहा कि यह ख़ुदा की दया से होगा और यह सब कुछ उसका हाथ करेगा। मानवीय योजनाओं का उसमें हस्तक्षेप नहीं होगा और जब प्रलय के दिन समीप आ जाएंगे तो फिर दोबारा उपद्रव आरंभ हो जाएगा। यह ख़ुदा का वादा है। पुन: कहा - कि ज़ुलक़रनैन के युग में जो मसीह मौऊद है प्रत्येक जाति अपने धर्म

---

① सद्दे सिकन्दरी - कांसे की वह दीवार जिसके बारे में कहा जाता है कि सिकन्दर बादशाह ने तातार और चीन के मध्य बनाई थी। (अनुवादक)

की सहायता के लिए उठेगी और जिस प्रकार एक जलधारा दूसरी जलधारा पर पड़ती है एक-दूसरे पर आक्रमण करेंगे, इतने में आकाश पर बिगुल बजाया जाएगा अर्थात् आकाश का ख़ुदा मसीह मौऊद को अवतरित करके एक तीसरी जाति पैदा कर देगा और उनकी सहायता के लिए बड़े-बड़े निशान दिखाएगा यहां तक कि समस्त सदाचारी लोगों को एक धर्म पर अर्थात् इस्लाम पर एकत्र कर देगा और वे मसीह की आवाज़ सुनेंगे तथा उसकी ओर दौड़ेंगे। तब एक ही चरवाहा और एक ही रेवड़ होगा और वे दिन बड़े ही कठोर होंगे और ख़ुदा भयावह निशानों के साथ अपना चेहरा प्रकट कर देगा और जो लोग कुफ्र पर आग्रह करते हैं वे इसी संसार में भिन्न-भिन्न प्रकार की विपत्तियों के कारण नर्क का मुख देख लेंगे। ख़ुदा कहता है कि ये वही लोग हैं जिन की आंखें मेरे कलाम से पर्दे में थीं और जिन के कान मेरे आदेश को सुन नहीं सकते थे। क्या उन इन्कार करने वालों ने यह समझ रखा था कि यह सरल बात है कि असहाय बन्दों को ख़ुदा बना दिया जाए और मैं निलंबित हो जाऊं। इसलिए हम उनके आतिथ्य के लिए इसी संसार में नर्क को प्रकट कर देंगे अर्थात् बड़े-बड़े भयंकर निशान प्रकट होंगे और ये समस्त निशान उसके मसीह मौऊद की सच्चाई पर साक्ष्य देंगे। उस कृपालु की कृपा को देखो कि ये इनाम उस मुट्ठी भर धूल पर हैं जिसको विरोधी काफ़िर और दज्जाल कहते हैं।

ऐ ख़ुदा ऐ कारसाज़ो ऐब पोशो किर्दिगार,
ऐ मेरे प्यारे मेरे मुहसिन मेरे परवरदिगार।
किस तरह तेरा करूं ऐ ज़ुलमिनन शुकरो सिपास,
वह ज़ुबां लाऊं कहां से जिस से हो यह कारोबार।
बद गुमानों से बचाया मुझ को ख़ुद बन कर गवाह,
कर दिया दुश्मन को इक हम्ले से मग़लूब और ख़्वार।
काम जो करते हैं तेरी रह में पाते हैं जज़ा,

मुझ से क्या देखा कि यह लुत्फ़ो करम है बार-बार।
तेरे कामों से मुझे हैरत है ऐ मेरे करीम,
किस अमल पर मुझ को दी है ख़ल्अते क़ुर्बो जवार।
किरमे ख़ाकी हूं मेरे प्यारे न आदमज़ाद हूं
हूं बशर की जाए नफ़रत और इन्सानों की आर।
यह सरासर फ़ज़्लो इहसां है कि मैं आया पसन्द,
वरना दरगाह में तेरी कुछ कम न थे ख़िदमत गुज़ार।
दोस्ती का दम जो भरते थे वह सब दुश्मन हुए,
पर न छोड़ा साथ तूने ऐ मेरे हाजत बरार।
ऐ मेरे यारे यगानः ऐ मेरी जां की पनह,
बस है तू मेरे लिए मुझ को नहीं तुझ बिन क़रार।
मैं तो मर कर ख़ाक होता गर न होता तेरा लुत्फ़,
फिर ख़ुदा जाने कहां यह फेंक दी जाती ग़ुबार।
ऐ फ़िदा हो तेरी रह में मेरा जिस्मो जानो दिल,
मैं नहीं पाता कि तुझ सा कोई करता हो प्यार।
इब्तिदा से तेरे ही साए में मेरे दिन कटे,
गोद में तेरी रहा मैं मिस्ले तिफ़्ले शीर ख़्वार।
नस्ले इन्सां में नहीं देखी वफ़ा जो तुझ में है,
तेरे बिन देखा नहीं कोई भी यारे ग़म गुसार।
लोग कहते हैं कि नालायक़ नहीं होता क़ुबूल,
मैं तो नालायक़ भी होकर पा गया दरगह में बार।
इस क़दर मुझ पर हुईं तेरी इनायातो करम
जिन का मुश्किल है कि ता रोज़े क़यामत हो शुमार।

आस्मां मेरे लिए तू ने बनाया इक गवाह,
चांद और सूरज हुए मेरे लिए तारीको तार।
तू ने ताऊं को भी भेजा मेरी नुसरत के लिए,
ता वह पूरे हों निशां जो हैं सचाई का मदार।
हो गए बेकार सब हीले जब आई वह बला,
सारी तदबीरों का ख़ाक: उड़ गया मिस्ले ग़ुबार।
सर ज़मीन-ए-हिन्द में ऐसी है शुहरत मुझ को दी,
जैसे होवे बर्क़ का इक दम में हर जा इन्तिशार।
फिर दोबारा है उतारा तूने आदम को यहां,
ता वह नख़्ले रास्ती इस मुल्क में लावे समार।
लोग सौ बक-बक करें पर तेरे मक़्सद और हैं,
तेरी बातों के फ़रिश्ते भी नहीं हैं राज़दार।
हाथ में तेरे है हर ख़ुसरानो नफ़ओ उस्रो युस्र,
तू ही करता है किसी को बेनवा या बख़्तियार।
जिसको चाहे तख़्त शाही पर बिठा देता है तू,
जिसको चाहे तख़्त से नीचे गिरा दे करके ख़्वार।
मैं भी हूं तेरे निशानों से जहां में इक निशां,
जिस को तूने कर दिया है क़ौमो दीं का इफ़्तिख़ार।
फ़ानियों की जाहो हश्मत पर बला आए हज़ार,
सल्तनत तेरी है जो रहती है दाइम बरक़रार।
इज़्ज़तो ज़िल्लत ये तेरे हुक्म पर मौक़ूफ़ हैं,
तेरे फ़रमां से ख़िज़ां आती है और बादे बहार।
मेरे जैसे को जहां में तूने रौशन कर दिया,

कौन जाने ऐ मेरे मालिक तेरे भेदों की सार,
तेरे ऐ मेरे मुरब्बी क्या अजायब काम हैं,
गर्चे भागें जब्र से देता है क़िस्मत के समार।
इब्तिदा से गोश-ए-ख़ल्वत रहा मुझ को पसन्द,
शुहरतों से मुझ को नफ़रत थी हर इक अज़मत से आर।
पर मुझे तूने ही अपने हाथ से ज़ाहिर किया,
मैंने कब मांगा था यह तेरा ही है सब बर्गो बार।
इसमें मेरा जुर्म क्या जब मुझ को यह फ़रमां मिला,
कौन हूं ता रद्द करूं हुक्मे शहे ज़िलइक़्तिदार।
अब तो जो फ़र्मां मिला उसका अदा करना है काम,
गर्चे मैं हूं बस ज़ईफो नातवानो दिल फ़िगार।
दावते हर हर्ज़ागो कुछ ख़िदमत-ए-आसां नहीं,
हर क़दम में कोहे मारां हर गुज़र में दश्ते ख़ार।
चर्ख़ तक पहुंचे हैं मेरे ना'रा हाए रोज़ो शब,
पर नहीं पहुंची दिलों तक जाहिलों के यह पुकार।
क़ब्ज़-ए-तक़्दीर में दिल हैं अगर चाहे ख़ुदा,
फेर दे मेरी तरफ़ आ जाएं फिर बे इख़्तियार।
गर करे मौ'जिज़ नुमाई एक दम में नर्म हो,
वह दिले संगीं जो होवे मिस्ले संगे कोहसार।
हाए मेरी क़ौम ने तक्ज़ीब करके क्या लिया,
ज़लज़लों से हो गए सद्हा मसाकिन मिस्ले ग़ार।
शर्त तक़्वा थी कि वह करते नज़र इस वक्त पर,
शर्त यह भी थी कि वह करते सब्र कुछ दिन और क़रार।

क्या वह सारे मर्हले तै कर चुके थे इल्म के,
क्या न थी आंखों के आगे कोई रह तारीको तार।
दिल में जो अर्मां थे वह दिल में हमारे रह गए,
दुश्मने जां बन गए जिन पर नज़र थी बार-बार।
ऐसे कुछ बिगड़े कि अब बनता नज़र आता नहीं,
आह क्या समझे थे हम और क्या हुआ है आश्कार।
किस के आगे हम कहें इस दर्दे दिल का माजरा,
उनको है मिलने से नफ़रत बात सुनना दरकिनार।
क्या करूं, क्यों कर करूं मैं अपनी जां ज़ेरो ज़बर,
किस तरह मेरी तरफ देखें जो रखते हैं नकार।
इस क़दर ज़ाहिर हुए हैं फ़ज़्ले हक़ से मौ'जिज़ात,
देखने से जिन के शैतां भी हुआ है दिल फ़िगार।
पर नहीं अक्सर मुख़ालिफ़ लोगों को शर्मो हया,
देख कर सौ सौ निशां फिर भी है तो हैं कारोबार।
साफ़ दिल को कसरते ऐजाज़ की हाजत नहीं,
इक निशां काफ़ी है गर दिल में है ख़ौफ़े किर्दिगार।
दिन चढ़ा है दुश्मनाने दीं का हम पर रात है,
ऐ मेरे सूरज निकल बाहर कि मैं हूं बे क़रार।
ऐ मेरे प्यारे फ़िदा हो तुझ पै हर ज़र्रा मेरा,
फेर दे मेरी तरफ ऐ सारबां जग की मुहार।
कुछ ख़बर ले तेरे कूचे में यह किस का शोर है,
ख़ाक में होगा यह सर गर तू न आया बन के यार।

फ़ज़्ल के हाथों से अब इस वक़्त कर मेरी मदद,
किश्ति-ए-इस्लाम ता हो जाए इस तूफ़ा से पार।
मेरे सुक़्मो ऐब से अब कीजिए क़तए-नज़र,
ता न ख़ुश हो दुश्मने दीं जिस पै है ला'नत की मार।
मेरे ज़ख़्मों पर लगा मरहम कि मैं रंजूर हूं,
मेरी फ़रियादों को सुन मैं हो गया ज़ारो नज़ार।
देख सकता ही नहीं मैं ज़ो'फ़े दीने मुस्तफ़ा,
मुझ को कर ऐ मेरे सुल्तां कामयाबो कामगार।
क्या सुलाएगा मुझे तू ख़ाक में क़ब्ल अज़ मुराद,
ये तो तेरे पर नहीं उम्मीद ऐ मेरे हिसार।
या इलाही फ़ज़्ल कर इस्लाम पर और ख़ुद बचा,
इस शिकस्ता नाव के बन्दों की अब सुन ले पुकार।
क़ौम में फ़िस्को फ़ुजूरो मा'सियत का ज़ोर है,
छा रहा है अब्रे यास और रात है तारीको तार।
एक आलम मर गया है तेरे पानी के बग़ैर,
फेर दे अब मेरे मौला इस तरफ़ दरिया की धार।
अब नहीं हैं होश अपने इन मसाइब में बजा,
रहम कर बन्दों पै अपने ता वह होवें रुस्तगार।
किस तरह निपटें कोई तद्बीर कुछ बनती नहीं,
बे तरह फैली हैं ये आफ़ात हर सू हर किनार।
डूबने को है यह किश्ती आ मेरे ऐ ना ख़ुदा,
आ गया इस क़ौम पर वक़्ते ख़िज़ां अन्दर बहार।

नूरे दिल जाता रहा और अक़्ल मोटी हो गई,
अपनी कज राई पै हर दिल कर रहा है एतिबार।
जिसको हम ने क़तरए साफ़ी था समझा और तक़ी,
ग़ौर से देखा तो कीड़े उसमें भी पाए हज़ार।
दूरबीने मा'रिफ़त से गन्द निकला हर तरफ़,
इस वबा ने खाए हर शाख़े ईमां के समार।
ऐ ख़ुदा बिन तेरे हो यह आबपाशी किस तरह,
जल गया है बाग़े तक़्वा दीं की है अब इक मज़ार।
तेरे हाथों से मेरे प्यारे अगर कुछ हो तो हो,
वरना फ़ित्नः का क़दम बढ़ता है हर दम सैलवार।
इक निशां दिखला कि अब दीं हो गया है बे निशां
इक नज़र कर इस तरफ ता कुछ नज़र आवे बहार।
क्या कहूं दुनिया के लोगों की कि कैसे सो गए,
किस क़दर है हक़ से नफ़रत और नाहक़ से प्यार।
अक़्ल पर पर्दे पड़े सौ सौ निशां को देख कर,
नूर से होकर अलग चाहा कि होवें अहले नार।
गर न होती बदगुमानी कुफ़्र भी होता फ़ना,
उस का होवे सत्यानास इस से बिगड़े होशियार।
बदगुमानी से तो राई के भी बनते हैं पहाड़,
पर के इक रेशे से हो जाती है कौवों की क़तार।
हद से क्यों बढ़ते हो लोगो कुछ करो ख़ौफ़े ख़ुदा,
क्या नहीं तुम देखते नुसरत ख़ुदा की बार-बार।

क्या ख़ुदा ने अतक़िया की औनो नुसरत छोड़ दी,
एक फ़ासिक़ और काफ़िर से वह क्यों करता है प्यार।
एक बद किर्दार की ताईद में इतने निशां,
क्यों दिखाता है वह क्या है बदकुनों का रिश्तेदार।
क्या बदलता है वह अब उस सुन्नतो क़ानून को,
जिस का था पाबन्द वह अज़ इब्तिदाए रोज़गार।
आंख गर फूटी तो क्या कानों में भी कुछ पड़ गया,
क्या ख़ुदा धोखे में है और तुम हो मेरे राज़दार।
जिसके दावे की सरासर इफ़्तिरा पर है बिना,
उसकी यह ताईद हो फिर झूठ सच में क्या निखार।
क्या ख़ुदा भूला रहा तुम को हक़ीक़त मिल गई,
क्या रहा वह बेख़बर और तुम ने देखा हाले ज़ार।
बद गुमानी ने तुम्हें मजनूनो अंधा कर दिया,
वर्ना थे मेरी सदाक़त पर बराहीं बेशुमार।
जहल की तारीकियां और सूए-ज़न की तुंद बाद,
जब इकट्ठे हों तो फिर ईमां उड़े जैसे ग़ुबार।
ज़हर के पीने से क्या अंजाम जुज़ मौतो फ़ना,
बदगुमानी ज़हर है उस से बचो ए दीं शिआर।
कांटे अपनी राह में बोते हैं ऐसे बदगुमां,
जिनकी आदत में नहीं शर्मो शकेवो इस्तिबार।
यह ग़लत कारी बशर की बदनसीबी की है जड़,
पर मुक़द्दर को बदल देना है किसके इख़्तियार।

सख़्त जां हैं हम किसी के बुग़्ज़ की परवा नहीं,
दिल क़वी रखते हैं हमदर्दों की है हम को सहार।
जो ख़ुदा का है उसे ललकारना अच्छा नहीं,
हाथ शेरों पर न डाल ऐ रूबए ज़ारो नज़ार।
है सरे रह पर मेरे वह ख़ुद खड़ा मौला करीम,
पस न बैठो मेरी रह में ऐ शरीराने दियार।
सुन्नतुल्लाह है कि वह ख़ुद फ़र्क़ को दिखलाए है,
ता अयां हो कौन पाक और कौन है मुरदार ख़्वार।
मुझ को पर्दे में नज़र आता है इक मेरा मुईन,
तेग़ को खींचे हुए उस पर कि जो करता है वार।
दुश्मने ग़ाफ़िल अगर देखे वह बाज़ू वह सिलाह,
होश हो जाएं ख़ता और भूल जाए सब नक़ार।
इस जहां से क्या कोई दावर नहीं और दादगर,
फिर शरीरुन्नफ़्स ज़ालिम को कहां जाए फ़रार।
क्यों अजब करते हो गर मैं आ गया होकर मसीह,
ख़ुद मसीहाई का दम भरती है यह बादे बहार।
आस्मां पर दा'वते हक़ के लिए इक जोश है,
हो रहा है नेक तब्ओं पर फ़रिश्तों का उतार।
आ रहा है इस तरफ अहरारे यूरोप का मिज़ाज,
नब्ज़ फिर चलने लगी मुर्दों की नागह ज़िन्दावार।
कहते हैं तस्लीस को अब अहले दानिश अलविदा
फिर हुए हैं चश्मए तौहीद पर अज़ जां निसार।

बाग़ में मिल्लत के है कोई गुले रा'ना खिला,
आई है बादे सबा गुलज़ार से मस्ताना वार।
आ रही है अब तो ख़ुशबू मेरे यूसुफ़ की मुझे,
गो कहो दीवाना मैं करता हूं उसका इन्तिज़ार।
हर तरफ हर मुल्क में है बुत परस्ती का ज़वाल,
कुछ नहीं इन्सां परस्ती को कोई इज़्ज़ो वक़ार।
आस्मां से है चली तौहीदे ख़ालिक़ की हवा,
दिल हमारे साथ हैं गो मुंह करें बक-बक हज़ार।
इस्मऊ सौतस्समां जाअल मसीह जाअल मसीह,
नीज़ बिश्नो अज़ ज़मीं आमद इमामे कामगार।
आस्मां बारिद निशां अलवक्त मी गोयद ज़मीं,
ईं दो शाहिद अज़ पए मन नारा ज़न चूं बे क़रार।
अब इसी गुलशन में लोगो राहतो आराम है,
वक्त है जल्द आओ ऐ आवारगाने दश्ते ख़ार।
इक ज़मां के बाद अब आई है यह ठण्डी हवा,
फिर ख़ुदा जाने कि कब आवें ये दिन और यह बहार।
ऐ मुकज़्ज़िब कोई इस तक्ज़ीब का है इन्तिहा,
कब तलक तू ख़ूए शैतां को करेगा इख़्तियार।
मिल्लते अहमद की मालिक ने जो डाली थी बिना,
आज पूरी हो रही है ऐ अज़ीज़ाने दियार।
गुल्शने अहमद बना है मस्कने बादे सबा,
जिसकी तहरीकों से सुनता है बशर गुफ़्तारे यार।

वर्ना वह मिल्लत वह रह वह रस्म वह दीं चीज़ क्या,
साया अफ़्गान जिस पै नूरे हक़ नहीं ख़ुर्शीद वार।
देख कर लोगों के कीने दिल मेरा ख़ूं हो गया,
क़स्द करते हैं कि हो पामाल दुर्रे शाहवार।
हम तो हर दम चढ़ रहे हैं इक बुलन्दी की तरफ़,
वह बुलाते हैं कि हो जाएं निहां हम ज़ेरे ग़ार।
नूरे दिल जाता रहा इक रस्म दीं की रह गई,
फिर भी कहते हैं कि कोई मुस्लिहे दीं क्या बकार।
राग वह गाते हैं जिसको आस्मां गाता नहीं,
वह इरादे हैं कि जो हैं बर ख़िलाफ़े शहर यार।
हाए मारे आस्तीं वह बन गए दीं के लिए,
वह तो फ़र्बा हो गए पर दीं हुआ ज़ारो नज़ार।
इन ग़मों से दोस्तो ख़म हो गई मेरी कमर,
मैं तो मर जाता अगर होता न फ़ज़्ले किर्दिगार।
इस तपिश को मेरी वह जाने कि रखता है तपिश,
इस अलम को मेरे वह समझे कि है वह दिलफ़िगार।
कौन रोता है कि जिस से आस्मां भी रो पड़ा,
महरो माह की आंख ग़म से हो गई तारीको तार।
मुफ़्तरी कहते हुए उन को हया आती नहीं,
कैसे आलिम हैं कि उस आलम से हैं ये बर किनार।
ग़ैर क्या जाने कि दिलबर से हमें क्या जोड़ है,
वह हमारा हो गया उसके हुए हम जां निसार।

मैं कभी आदम, कभी मूसा कभी याक़ूब हूं,
नीज़ इब्राहीम हूं नस्लें हैं मेरी बेशुमार।
इक शजर हूं जिसको दाऊदी सिफ़त के फल लगे,
मैं हुआ दाऊद और जालूत है मेरा शिकार।
पर मसीहा बन के मैं भी देखता रूए सलीब,
गर न होता नाम अहमद जिस पै मेरा सब मदार।
दुश्मनो ! हम उसकी रह मैं मर रहे हैं हर घड़ी,
क्या करोगे तुम हमारी नेस्ती का इन्तिज़ार।
सर से मेरे पांव तक वह यार मुझ में है निहां,
ऐ मेरे बदख़्वाह करना होश करके मुझ पै वार।
क्या करूं तारीफ़ हुस्ने यार की और क्या लिखूं,
इक अदा से हो गया मैं सैले नफ़्से दूं से पार।
इस क़दर इरफ़ां बढ़ा मेरा कि काफ़िर हो गया,
आंख में उसकी कि है वह दूर तक अज़ सिहने यार।
उस रुख़े रोशन से मेरी आंख भी रोशन हुई,
हो गए असरार उस दिलबर के मुझ पर आश्कार।
क़ौम के लोगो ! इधर आओ कि निकला आफ़्ताब,
वादिए ज़ुल्मत में क्या बैठे हो तुम लैलो नहार।
क्या तमाशा है कि मैं काफ़िर हूं तुम मोमिन हुए,
फिर भी इस काफ़िर का हामी है वह मक़्बूलों का यार।
क्या अचंबी बात है काफ़िर की करता है मदद,
वह ख़ुदा जो चाहिए था मोमिनों का दोस्तदार।

अहले तक़्वा था करमदीं भी तुम्हारी आंख में,
जिसने नाहक़ ज़ुल्म की रह से किया था मुझ पै वार।
बे मुआविन मैं न था थी नुसरते हक़ मेरे साथ,
फ़त्ह की देती थी वह्ये हक़ बशारत बार-बार।
पर मुझे उसने न देखा आंख उसकी बंद थी,
फिर सज़ा पाकर लगाया सुरमए दुंबाला दार।
नाम भी कज़्ज़ाब उस का दफ़्तरों में रह गया,
अब मिटा सकता नहीं यह नाम ता रोज़े शुमार।
अब कहो किस की हुई नुसरत जनाबे पाक से,
क्यों तुम्हारा मुत्तक़ी पकड़ा गया हो कर के ख़्वार।
फिर इधर भी कुछ नज़र करना ख़ुदा के ख़ौफ़ से,
कैसे मेरे यार ने मुझ को बचाया बार-बार।
क़त्ल की ठानी शरीरों ने चलाए तीरे मक्र,
बन गए शैतां के चेले और नस्ले होनहार।
फिर लगाया नाख़ुनों तक ज़ोर बन कर इक गिरोह,
पर न आया कोई भी मंसूबा उनको साज़वार।
हम निगह में उनकी दज्जाल और बेईमां हुए,
आतिशे तकफ़ीर के उड़ते रहे पैहम शरार।
अब ज़रा सोचो दियानत से कि यह क्या बात है,
हाथ किस का है कि रद्द करती है वह दुश्मन का वार।
क्यों नहीं तुम सोचते कैसे हैं ये परदे पड़े,
दिल में उठता है मेरे रह रह के अब सौ सौ बुख़ार।

यह अगर इन्सां का होता कारोबार ऐ नाक़िसां,
ऐसे काज़िब के लिए काफ़ी था वह परवरदिगार।
कुछ न थी हाजत तुम्हारी ने तुम्हारे मक्र की,
ख़ुद मुझे नाबूद करता वह जहां का शहरयार।
पाको बरतर है वह झूठों का नहीं होता नसीर,
वर्ना उठ जाए अमां फिर सच्चे होवें शर्मसार।
इस क़दर नुसरत कहां होती है इक कज़्ज़ाब की,
क्या तुम्हें कुछ डर नहीं है करते हो बढ़ बढ़ के वार।
है कोई काज़िब जहां में लाओ लोगो कुछ नज़ीर,
मेरे जैसी जिसकी ताईदें हुई हों बार-बार।
आफ़ताबे सुब्ह निकला अब भी सोते हैं ये लोग,
दिन से हैं बेज़ार और रातों से वे करते हैं प्यार।
रोशनी से बुग़्ज़ और ज़ुल्मत पै वे क़ुरबान हैं,
ऐसे भी शबपर न होंगे गर्चें तुम ढूंढो हज़ार।
सर पै इक सूरज चमकता है मगर आंखें हैं बन्द,
मरते हैं बिन आब वह और दर पै नहरे ख़ुशगवार।
तुर्फ़ा कैफ़ीयत है उन लोगों की जो मुन्किर हुए,
यूं तो हर दम मशग़ला है गालियां लैलो नहार।
पर अगर पूछें कि ऐसे काज़िबों के नाम लो,
जिन की नुसरत सालहा से कर रहा हो किर्दिगार।
मुर्दा हो जाते हैं उसका कुछ नहीं देते जवाब,
ज़र्द हो जाता है मुंह जैसे कोई हो सोगवार।

उनकी क़िस्मत में नहीं दीं के लिए कोई घड़ी,
हो गए मफ़्तूने दुनिया देखकर उसका सिंगार।
जी चुराना रास्ती से क्या यह दीं का काम है,
क्या यही है जुहदो तक़्वा क्या यही राहे ख़ियार।
क्या क़सम खाई है या कुछ पेच क़िस्मत में पड़ा,
रोज़े रोशन छोड़ कर हैं आशिक़े शब हाए तार।
अंबिया के तौर पर हुज्जत हुई उन पर तमाम,
उनके जो हम्ले हैं उनमें सब नबी है हिस्सेदार।
मेरी निस्बत जो कहें कीं से वह सब पर आता है,
छोड़ देंगे क्या वह सब को कुफ़्र करके इख़्तियार।
मुझ को काफ़िर कह के अपने कुफ़्र पर करते हैं मुहर,
यह तो है सब शक्ल उनकी हम तो हैं आईना वार।
साठ से हैं कुछ बरस मेरे हैं ज़्यादा इस घड़ी,
साल है अब तीसवां दावे पे अज़ रूए शुमार।
था बरस चालीस का मैं इस मुसाफ़िर खानः में,
जबकि मैंने वह्यो रब्बानी से पाया इफ़्तिख़ार।
इस क़दर यह ज़िन्दगी क्या इफ़्तिरा में कट गई,
फिर अजब तर यह कि नुसरत के हुए जारी बिहार।
हर क़दम में मेरे मौला ने दिए मुझ को निशां,
हर अदुव पर हुज्जते हक़ की पड़ी है ज़ुलफ़िक़ार।
ने'मतें वह दीं मेरे मौला ने अपने फ़ज़्ल से,
जिन से हैं मा'निए अत्मम्तो अलैकुम आश्कार।

साया भी हो जाए है औक़ाते ज़ुल्मत में जुदा,
पर रहा वह हर अंधेरे में रफ़ीक़ो ग़मगुसार।
इस क़दर नुसरत तो काज़िब की नहीं होती कभी,
गर नहीं बावर नज़ीरें इस की तुम लाओ दो चार।
फिर अगर नाचार हो इस से कि दो कोई नज़ीर,
उस मुहैमिन से डरो जो बादशाहे हर दो बार।
यह कहां से सुन लिया तुमने कि तुम आज़ाद हो,
कुछ नहीं तुम पर उक़ूबत गो करो इसियां हज़ार।
नार-ए इन्ना ज़लम्ना सुन्नते अबरार है,
ज़हर मुंह की मत दिखाओ तुम नहीं हो नस्ले मार।
जिस्म को मल-मल के धोना यह तो कुछ मुश्किल नहीं,
दिल को जो धोवे वही है पाक निज़्दे किर्दिगार।
अपने ईमां को ज़रा पर्दा उठाकर देखना,
मुझ को काफ़िर कहते-कहते ख़ुद न हों अज़ अहले नार।
गर हया हो सोच कर देखें कि यह क्या राज़ है,
वह मेरी ज़िल्लत को चाहें, पा रहा हूं मैं वक़ार।
क्या बिगाड़ा अपने मकरों से हमारा आज तक,
अज़्दहा बन-बन के आए हो गए फिर सूसमार।
ऐ फ़क़ीहो आलिमो ! मुझ को समझ आता नहीं,
यह निशाने सिद्क़ पाकर फिर यह कीं और यह नक़ार।
सिद्क़ को जब पाया अस्हाबे रसूलुल्लाह ने,
उस पै मालो जानो तन बढ़-बढ़ के करते थे निसार।

फिर अजब यह इल्म यह तन्क़ीदे आसारो हदीस,
देख कर सौ सौ निशां फिर कर रहे हो तुम फ़रार।
बहस करना तुम से क्या हासिल अगर तुम में नहीं,
रूहे इन्साफ़ो ख़ुदा तर्सी कि है दीं का मदार।
क्या मुझे तुम छोड़ते हो जाहे दुनिया के लिए,
जाहे दुनिया कब तलक दुनिया है ख़ुद ना पायदार।
कौन दर पर्दा मुझे देता है हर मैदां में फ़त्ह,
कौन है जो तुम को हर दम कर रहा है शर्मसार।
तुम तो कहते थे कि यह नाबूद हो जाएगा जल्द,
यह हमारे हाथ के नीचे है इक अद्ना शिकार।
बात यह फिर क्या हुई किस ने मेरी ताईद की,
ख़ाइबो ख़ासिर रहे तुम हो गया मैं कामगार।
इक ज़माना था कि मेरा नाम भी मस्तूर था,
क़ादियां भी थी निहां ऐसी कि गोया ज़ेरे ग़ार।
कोई भी वाक़िफ़ न था मुझ से न मेरा मौ'तक़िद,
लेकिन अब देखो कि चर्चा किस क़दर है हर किनार।
उस ज़माने में ख़ुदा ने दी थी शुहरत की ख़बर,
जो कि अब पूरी हुई बार अज़ मुरूरे रोज़गार।
खोल कर देखो बराहीं जो कि है मेरी किताब,
उसमें है यह पेशगोई पढ़ लो उसको एक बार।
अब ज़रा सोचो कि क्या यह आदमी का काम है,
इस क़दर अम्रे निहां पर किस बशर को इक़्तिदार।

क़ुदरते रहमानो मकरे आदमी में फ़र्क़ है,
जो न समझे वह ग़बी अज़ फ़र्क़ ता पा है हिसार।
सोच लो ऐ सोचने वालो कि अब भी वक़्त है,
राहे हिर्मां छोड़ दो रहमत के हो उम्मीदवार।
सोच लो यह हाथ किस का था कि मेरे साथ था,
कि के फ़र्मां से मैं मक़्सद पा गया और तुम हो ख़्वार।
यह भी कुछ ईमां है यारो हम को समझाए कोई,
जिसका हर मैदां में फल हिर्मां है और ज़िल्लत की मार।
ग़ुल मचाते हैं कि यह काफ़िर है और दज्जाल है,
मैं तो ख़ुद रखता हूं उनके दीं से और ईमां से आर।
गर यही दीं है जो है उनके ख़साइल से अयां,
मैं तो इक कौड़ी को भी लेता नहीं हूं जींनहार।
जानो दिल से हम निसारे मिल्लते इस्लाम हैं,
लेक दीं वह रह नहीं जिस पर चलें अहले नक़ार।
वाह रे जोशे जहालत ख़ूब दिखलाए हैं रंग,
झूठ की ताईद में हम्ले करें दीवाना वार।
नाज़ मत कर अपने ईमां पर कि यह ईमां नहीं,
इसको हीरा मत गुमां कर है यह संगे कोहसार।
पीटना होगा दो हाथों से कि है है मर गए,
जबकि ईमां के तुम्हारे गंद होंगे आश्कार।
है यह घर गिरने पै ऐ मग़रूर ले जल्दी ख़बर,
ता न दब जाएं तेरे अहलो अयालो रिश्तेदार।

यह अजब बदक़िस्मती है किस क़दर दा'वत हुई,
पर उतरता ही नहीं है जामे ग़फ़लत का ख़ुमार।
होश में आते नहीं सौ-सौ तरह कोशिश हुई,
ऐसे कुछ सोए कि फिर होते नहीं हैं होशियार।
दिन बुरे आए इकट्ठे हो गए क़हतो वबा,
अब तलक तौबा नहीं अब देखिए अंजाम कार।
है ग़ज़ब कहते हैं अब वह्यो ख़ुदा मफ़्क़ूद है,
अब क़यामत तक है इस उम्मत का क़िस्सों पर मदार।
यह अक़ीदा बर ख़िलाफ़े गुफ़्तए दादार है,
पर उतारे कौन बरसों का गले से अपने हार।
वह ख़ुदा अब भी बनाता है जिसे चाहे कलीम,
अब भी उस से बोलता है जिस से वह करता है प्यार।
गौहरे वह्ये ख़ुदा क्यों तोड़ता है होश कर,
इक यही दीं के लिए है जाए इज़्ज़ो इफ़्तिख़ार।
यह वह गुल है जिसका सानी बाग़ में कोई नहीं,
यह वह ख़ुशबू है कि कुरबां उस पै हो मुश्के ततार।
यह है वह है मिफ़्ताह जिस से आस्मां के दर खुलें,
यह वह आईना है जिस से देख लें रूए निगार।
बस यही हथियार है जिस से हमारी फ़त्ह है,
बस यही इक क़स्त्र है जो आफ़ियत का है हिसार।
है ख़ुदा दानी का आला भी यही इस्लाम में,
महज़ क़िस्सों से न हो कोई बशर तूफ़ां से पार।

है यही वह्ये ख़ुदा इरफ़ाने मौला का निशां,
जिस को यह कामिल मिले उसको मिले वह दोस्तदार।
वाह रे बाग़े मुहब्बत मौत जिसकी रह गुज़र,
वस्ले यार उसका समर पर इर्द-गिर्द उसके हैं ख़ार।
ऐसे दिल पर दाग़े ला'नत से अज़ल से ता अबद,
जो नहीं उसकी तलब में बेख़ुदो दीवाना वार।
पर जो दुनिया के बने कीड़े वह क्या ढूंढें उसे,
दीं उसे मिलता है जो दीं के लिए हो बे क़रार।
हर तरफ आवाज़ देना है हमारा काम आज,
जिसकी फ़ितरत नेक है आएगा वह अंजाम कार।
याद वह दिन जबकि कहते थे ये सब अरकाने दीं,
महदिए मौऊदे हक़ अब जल्द होगा आश्कार।
कौन था जिसकी तमन्ना यह न थी इक जोश से,
कौन था जिसको न था उस आने वाले से प्यार।
फिर वह दिन जब आ गए और चौदहवीं आई सदी,
सब से अव्वल हो गए मुन्किर यही दीं के मनार।
फिर दोबारा आ गई अहबार में रस्मे यहूद,
फिर मसीहे वक्त के दुश्मन हुए थे जुब्बा दार।
था नविश्तों में यही अज़ इब्तिदा ता इन्तिहा,
फिर मिटे क्योंकर कि है तक़्दीर ने नक़्शे जिदार।
मैं तो आया इस जहां में इब्ने मरयम की तरह,
मैं नहीं मामूर अज़ बहरे जिहादो कारज़ार।

पर अगर आता कोई जैसी उन्हें उम्मीद थी,
और करता जंग और देता ग़नीमत बे शुमार।
ऐसे महदी के लिए मैदां खुला था क़ौम में,
फिर तो उस पर जमा होते एक दम में सद हज़ार।
पर यह था रहमे ख़ुदावन्दी कि मैं ज़ाहिर हुआ,
आग आती गर न मैं आता तो फिर जाता क़रार।
आग भी फिर आ गई जब देख कर इतने निशां,
क़ौम ने मुझ को कहा कज़्ज़ाब है और बद शिआर।
है यक़ीं यह आग कुछ मुद्दत तलक जाती नहीं,
हां मगर तौबा करें बासद नियाज़ो इन्किसार।
यह नहीं इक इत्तिफ़ाक़ी अम्र ता होता इलाज,
है ख़ुदा के हुक्म से ये सब तबाही और तबार।
वह ख़ुदा जिस ने बनाया आदमी और दीं दिया,
वह नहीं राज़ी कि बेदीनी हो उनका कारोबार।
बे ख़ुदा बे जुहदो तक़्वा बेदियानत बे सफ़ा,
बन है यह दुनियाए दूं ताऊं करे उसमें शिकार।
सैदे ताऊं मत बनो पूरे बनो तुम मुत्तक़ी,
यह जो ईमां है ज़ुबां का कुछ नहीं आता बकार।
मौत से गर ख़ुद हो बेडर कुछ करो बच्चों पै रहम,
अम्न की रह पर चलो बन को करो मत इख़्तियार।
बन के रहने वालो ! तुम हरगिज़ नहीं हो आदमी,
कोई है रूबा कोई ख़िंज़ीर और कोई है मार।

इन दिलों को ख़ुद बदल दे ऐ मेरे क़ादिर ख़ुदा,
तू तो रब्बुलआलमीं है और सब का शहरयार।
तेरे आगे महव या इस्बात ना मुमकिन नहीं,
जोड़ना या तोड़ना यह काम तेरे इख़्तियार।
टूटे कामों को बना दे जब निगाहे फ़ज़्ल हो,
फिर बना कर तोड़ दे इक दम में कर दे तार तार।
तू ही बिगड़ी को बनावे तोड़ दे जब बन चुका,
तेरे भेदों को न पावे सौ करे कोई विचार।
जब कोई दिल ज़ुल्मते इसियां में होवे मुब्तिला,
तेरे बिन रोशन न होवे गो चढ़े सूरज हज़ार।
इस जहां में ख़्वाहिशे आज़ादगी बेसूद है,
इक तेरी क़ैदे मुहब्बत है जो कर दे रुस्तगार,
दिल जो ख़ाली हो गुदाज़े इश्क़ से वह दिल है क्या,
दिल वह है जिसको नहीं बे दिलबरे यक्ता क़रार।
फ़क्र की मंज़िल का है अव्वल क़दम नफ़िए वुजूद,
पस करो इस नफ़्स को ज़ेरो ज़बर अज़ बहरे यार।
तल्ख़ होता है समर जब तक कि हो वह ना तमाम,
इस तरह ईमां भी है जब तक न हो कामिल प्यार।
तेरे मुंह की भूख ने दिल को किया ज़ेरो ज़बर,
ऐ मेरे फ़िर्दौसे आ'ला अब गिरा मुझ पर सिमार।
ऐ ख़ुदा ऐ चारा साज़े दर्द हम को ख़ुद बचा,
ऐ मेरे ज़ख़्मों के मरहम देख मेरा दिल फ़िगार।

बाग़ में तेरी मुहब्बत के अजब देखे हैं फल,
मिलते हैं मुश्किल से ऐसे सेब और ऐसे अनार।
तेरे बिन ऐ मेरी जां यह ज़िन्दगी क्या ख़ाक है,
ऐसे जीने से तो बेहतर मर के हो जाना ग़ुबार।
गर न हो तेरी इनायत सब इबादत हेच है,
फ़ज़्ल पर तेरे है सब जुहदो अमल का इन्हिसार।
जिन पै है तेरी इनायत वे बदी से दूर हैं,
रह में हक़ की क़ुव्वतें उनकी चलीं बन कर क़तार।
छुट गए शैतां से जो थे तेरी उल्फ़त के असीर,
जो हुए तेरे लिए बे बर्गो बर पाई बहार।
सब प्यासों से नकौतर तेरे मुंह की है प्यास,
जिस का दिल इससे बिरियां पा गया वह आबशार।
जिन को तेरी धुन लगी आख़िर वह तुझ को जा मिला,
जिस को बेचैनी है यह वह पा गया आख़िर क़रार।
आशिक़ी की है अलामत गिरियओ दामाने दश्त,
क्या मुबारक आंख जो तेरे लिए हो अश्क बार।
तेरी दरगह में नहीं रहता कोई भी बेनसीब,
शर्त रह पर सब्र है और तर्के नामे इज़्तिरार।
मैं तो तेरे हुक्म से आया मगर अफ़सोस है,
चल रही है वह हवा जो रख़्ना अन्दाज़े बहार।
जीफ़ए दुनिया पर अक्सर गिर गए दुनिया के लोग,
ज़िन्दगी क्या ख़ाक उनकी जो कि हैं मुरदार ख़्वार।

दिल को देकर हाथ से दुनिया भी आख़िर जाती है,
कोई आसूदा नहीं बिन आशिक़ो शैदाए यार।
रंग तक़्वा से कोई रंगत नहीं है ख़ूबतर,
है यही ईमां का ज़ेवर है यही दीं का सिंगार।
सौ चढ़े सूरज नहीं बिन रूए दिलबर रोशनी,
यह जहां बे वस्ल दिलबर है शबे तारीको तार।
ऐ मेरे प्यारे जहां में तू ही है इक बेनज़ीर,
जो तेरे मज्नूं हक़ीक़त में वही हैं होशियार।
इस जहां को छोड़ना है तेरे दीवानों का काम,
नक़द पा लेते हैं वह और दूसरे उम्मीदवार।
कौन है जिस के अमल हों पाक बे अन्वारे इश्क़,
कौन करता है वफ़ा बिन उसके जिसका दिल फ़िगार।
ग़ैर होकर ग़ैर पर मरना किसी को क्या ग़रज़,
कौन दीवाना बने इस राह में लैलो-नहार।
कौन छोड़े ख़्वाबे शीरीं कौन छोड़े अक्लो शुर्ब,
कौन ले ख़ारे मुग़ीलां छोड़ कर फूलों का हार।
इश्क़ है जिस से हों तय ये सारे जंगल पुर ख़तर,
इश्क़ है जो सर झुका दे ज़ेरे तेग़े आबदार।
पर हज़ार अफ़सोस दुनिया की तरफ हैं झुक गए,
वे जो कहते थे कि हैं यह ख़ान-ए-नापायदार।
जिसको देखो आजकल वह शोख़ियों में ताक़ है,
आह रिहलत कर गए वह सब जो थे तक़्वाशिआर।

मिंबरों पर उनके सारा गालियों का वा'ज़ है,
मज्लिसों में उनकी हरदम सब्बो ग़ीबत कारोबार।
जिस तरफ देखो यही दुनिया ही मक़्सद हो गई,
हर तरफ उस के लिए रग़बत दिलाएं बार-बार।
एक कांटा भी अगर दीं के लिए उनको लगे,
चीख कर उससे वे भागें शेर से जैसे हिमार।
हर ज़मां शिक्वा ज़ुबां पर है अगर नाकाम हैं,
दीं की कुछ परवा नहीं दुनिया के ग़म में सोगवार।
लोग कुछ बातें करें मेरी तो बातें और हैं,
मैं फ़िदा-ए-यार हूं गो तेग़ खींचें सद हज़ार।
ऐ मेरे प्यारे बता तू किस तरह ख़ुशनूद हो,
नेक दिन होगा वही जब तुझ पे होवें हम निसार।
जिस तरह तू दूर है लोगों से मैं भी दूर हूं,
है नहीं कोई भी जो हो मेरे दिल का राज़दार।
नेकज़न करना तरीक़-ए-सालिहाने क़ौम है,
लेक सौ पर्दे में हों उन से नहीं हूं आश्कार।
बे ख़बर दोनों हैं जो कहते हैं बद या नेक मर्द,
मेरे बातिन की नहीं उनको ख़बर इक ज़र्रा वार।
इब्ने मरयम हूं मगर उतरा नहीं मैं चर्ख़ से,
नीज़ महदी हूं मगर बे तेग़ और बे कारज़ार।
मुल्क से मुझ को नहीं मतलब न जंगों से है काम,
काम मेरा है दिलों को फ़तह करना ने दियार।

ताजो तख़्ते हिन्द क़ैसर को मुबारक हो मदाम,
उनकी शाही में मैं पाता हूं रिफ़ाहे रोज़गार।
मुझको क्या मुल्कों से मेरा मुल्क है सब से जुदा,
मुझ को क्या ताजों से मेरा ताज है रिज़्वाने यार।
हम तो बसते हैं फ़लक पर इस ज़मीं को क्या करें,
आस्मां के रहने वालों को ज़मीं से क्या निक़ार।
मुल्के रूहानी की शाही की नहीं कोई नज़ीर,
गो बहुत दुनिया में गुज़रे हैं अमीरो ताजदार।
दाग़े ला'नत है तलब करना ज़मीं का इज़्ज़ो जाह,
जिस का जी चाहे करे इस दाग़ से वह तन फ़िगार।
काम क्या इज़्ज़त से हम को शुहरतों से क्या ग़रज़,
गर वह ज़िल्लत से हो राज़ी उस पै सौ इज़्ज़त निसार।
हम उसी के हो गए हैं जो हमारा हो गया,
छोड़ कर दुनिया-ए-दूं को हम ने पाया वह निगार।
देखता हूं अपने दिल को अर्शे रब्बिल आलमीन,
क़ुर्ब इतना बढ़ गया जिस से है उतरा मुझ में यार।
दोस्ती भी है अजब जिस से हों आख़िर दो सती,
आ मिली उल्फ़त से उल्फ़त हो के दो दिल पर सवार।
देख लो मेल-व-मुहब्बत में अजब तासीर है,
एक दिल करता है झुक कर दूसरे दिल को शिकार।
कोई रह नज़्दीक तर राहे मुहब्बत से नहीं,
तय करें इस राह से सालिक हज़ारों दश्ते ख़ार।

उसके पाने का यही ऐ दोस्तो इक राज़ है,
कीमिया है जिस से हाथ आ जाएगा ज़र बेशुमार।
तीर तासीरे मुहब्बत का ख़ता जाता नहीं,
तीर अन्दाज़ो ! न होना सुस्त इसमें जीनहार।
है यही इक आग ता तुम को बचाए आग से,
है यही पानी कि निकलें जिस से सदहा आबशार।
इससे ख़ुद आकर मिलेगा तुम से वह यारे अज़ल,
इससे तुम इरफ़ाने हक़ से पहनोगे फूलों के हार।
वह किताबे पाको बरतर जिसका फ़ुर्क़ां नाम है,
वह यही देती है तालिब को बशारत बार-बार।
जिनको है इन्कार इस से सख़्त नादां हैं वे लोग,
आदमी क्योंकर कहें जब उनमें है हुमुक़े हिमार।
क्या यही इस्लाम का है दूसरे दीनों पे फ़ख़्र,
कर दिया क़िस्सों पे सारा ख़त्म दीं का कारोबार।
मग़ज़े-फ़ुर्क़ां ने मुतह्हर क्या यही है ज़ुहदे ख़ुश्क,
क्या यही चूहा है निकला खोद कर यह कोहसार।
गर यही इस्लाम है बस हो गई उम्मत हलाक,
किस तरह रह मिल सके जब दीन ही हो तारीको तार।
मुंह को अपने क्यों बिगाड़ा नाउम्मीदों की तरह,
फ़ैज़ के दर खुल रहे हैं अपने दामन को पसार।
किस तरह के तुम बशर हो देखते हो सद निशां,
फिर वही ज़िद्दो तअस्सुब और वही कीनो नक़ार।

बात सब पूरी हुई पर तुम वही नाक़िस रहे,
बाग़ में होकर भी क़िस्मत में नहीं दीं के सिमार।
देख लो वह सारी बातें कैसी पूरी हो गई,
जिन का होना था बईद अज़ अक़्लो फ़हमो इफ़्तिकार।
उस ज़माने में ज़रा सोचो कि मैं क्या चीज़ था,
जिस ज़माने में बराहीं का दिया था इश्तिहार।
फिर ज़रा सोचो कि अब चर्चा मेरा कैसा हुआ,
किस तरह सुरअत से शुहरत हो गई दर हर दियार।
जानता था कौन क्या इज़्ज़त थी पब्लिक में मुझे,
किस जमाअत की थी मुझ से कुछ इरादत या पियार।
थे रुजू-ए-ख़ल्क़ के अस्बाब मालो इल्मो हुक्म,
ख़ानदाने फ़क्र भी था बाइसे इज़्ज़ो वक़ार।
लेक इन चारों से मैं महरूम था और बेनसीब,
एक इन्सां था कि ख़ारिज़ अज़ हिसाबो अज़ शुमार।
फिर रखाया नाम काफ़िर हो गया मतऊने ख़ल्क़,
कुफ्र के फ़त्वों ने मुझ को कर दिया बे ऐतिबार।
इस पे भी मेरे ख़ुदा ने याद करके अपना क़ौल,
मरजए आलम बनाया मुझ को और दीं का मदार।
सारे मन्सूबे जो थे मेरी तबाही के लिए,
कर दिए उसने तबह जैसे कि हो गर्दो ग़ुबार।
सोच कर देखो कि क्या यह आदमी का काम है,
कोई बतलाए नज़ीर इसकी अगर करना है वार।

मक्र इन्सां को मिटा देता है इन्साने दिगर,
पर ख़ुदा का काम कब बिगड़े किसी से ज़ीनहार।
मुफ़्तरी होता है आख़िर इस जहां में रूसियाह,
जल्द तर होता है बरहम इफ़्तिरा का कारोबार।
इफ़्तिरा की ऐसी दुम लम्बी नहीं होती कभी,
जो हो मिस्ले मुद्दते फ़ख़रिर्रुसुल फ़ख़रिल ख़ियार।
हसरतों से मेरा दिल पुर है क्यों मुन्किर हो तुम,
यह घटा अब झूम-झूम आती है दिल पर बार-बार।
ये अजब आंखें हैं सूरज भी नज़र आता नहीं,
कुछ नहीं छोड़ा हसद ने अक़्ल और सोच और विचार।
क़ौम की बद क़िस्मती इस सर्कशी से खुल गई,
पर वही होता है जो तक़्दीर से पाया क़रार।
क़ौम में ऐसे भी पाता हूं जो हैं दुनिया के किर्म,
मक़्सद उनकी ज़ीस्त का है शहवतो ख़म्रो क़मार।
मक्र के बल चल रही है उनकी गाड़ी रोज़ो शब,
नफ़्सो शैतां ने उठाया है उन्हें जैसे कहार।
दीं के कामों में तो उनके लड़खड़ाते हैं क़दम,
लेक दुनिया के लिए हैं नौजवानो होशियार।
हिल्लतो हुरमत की कुछ पर्वा नहीं बाक़ी रही,
ठूंस कर मुरदार पेटों में नहीं लेते डकार।
लाफ़े जुहदो रास्ती और पाप दिल में है भरा,
है ज़ुबां में सब शरफ़ और नीच दिल जैसे चमार।

ऐ अज़ीज़ो कब तलक चल सकती है काग़ज़ की नाव,
एक दिन है ग़र्क़ होना बादो चश्मे अश्कबार।
जाविदानी ज़िन्दगी है मौत के अन्दर निहां,
गुलशन-ए-दिलबर की रह है वादिए ग़ुर्बत के ख़ार।
ऐ ख़ुदा कमज़ोर हैं हम अपने हाथों से उठा,
नातवां हम हैं हमारा ख़ुदा उठा ले सारा बार।
तेरी अज़्मत के करिश्मे देखता हूं हर घड़ी,
तेरी क़ुदरत देख कर देखा जहां को मुर्दा वार।
काम दिखलाए जो तूने मेरी नुसरत के लिए,
फिरते हैं आंखों के आगे हर ज़मां वह कारोबार।
किस तरह तूने सच्चाई को मेरी साबित किया,
मैं तेरे क़ुर्बां मेरी जां तेरे कामों पर निसार।
है अजब एक ख़ासियत तेरे जमालो हुस्न में,
जिसने इक चमकार से मुझ को किया दीवाना वार।
ऐ मेरे प्यारे ज़लालत में पड़ी है मेरी क़ौम,
तेरी क़ुदरत से नहीं कुछ दूर गर पाएं सुधार।
मुझ को काफ़िर कहते हैं मैं भी उन्हें मोमिन कहूं,
गर न हो परहेज़ करना झूठ से दीं का शिआर।
मुझ पे ऐ वाइज़ नज़र की यार ने तुझ पर न की,
हैफ़ उस ईमां पे जिस से कुफ़्र बेहतर लाख बार।
रौज़-ए-आदम कि था वह ना मुकम्मल अब तलक,
मेरे आने से हुआ कामिल बजुम्ला बर्गो बार।

वह ख़ुदा जिस ने नबी को था ज़रे ख़ालिस दिया,
ज़ेवरे दीं को बनाता है वह अब मिस्ले सुनार।
वह दिखाता है कि दीं में कुछ नहीं इकराहो जब्र,
दीं तो ख़ुद खींचे है दिल मिस्ले बुते सीमीं इज़ार।
पस यही है रम्ज़ जो उसने किया मना अज़ जिहाद,
ता उठावे दीं की राह से जो उठा था इक ग़ुबार।
ता दिखा दे मुन्किरों को दीं की ज़ाती ख़ूबियां,
जिन से हों शर्मिंदा जो इस्लाम पर करते हैं वार।
कहते हैं यूरोप के नादां यह नबी कामिल नहीं,
वहशियों में दीं को फैलाना यह क्या मुश्किल था कार।
पर बनाना आदमी वहशी को है इक मौजिज़:,
मा'निए राज़े नुबुव्वत है इसी से आशकार।
नूर लाए आस्मां से ख़ुद भी वह इक नूर थे,
क़ौमे वह्शी में अगर पैदा हुए क्या जाए आर।
रौशनी में महरे ताबां की भला क्या फ़र्क़ हो,
गर्चे निकले रोम की सरहद से या अज़ ज़ंगबार।
ऐ मेरे प्यारो शकीबो सब्र की आदत करो,
वह अगर फैलाएं बदबू तुम बनो मुश्के ततार।
नफ़्स को मारो कि उस जैसा कोई दुश्मन नहीं,
चुपके-चुपके करता है पैदा वह सामाने दिमार।
जिसने नफ़्से दूं को हिम्मत करके ज़ेरे पा किया,
चीज़ क्या हैं उसके आगे रुस्तमो इस्फ़न्दयार।

गालियां सुन कर दुआ दो पाके दुख आराम दो,
किब्र की आदत जो देखो तुम दिखाओ इन्किसार।
तुम न घबराओ अगर वह गालियां दें हर घड़ी,
छोड़ दो उनको कि छपवाएं वह ऐसे इश्तिहार।
चुप रहो तुम देखकर उनके रिसालों में सितम,
दम न मारो गर वह मारें और कर दें हाले ज़ार।
देख कर लोगों का जोशो ग़ैज़ मत कुछ ग़म करो,
शिद्दते गर्मी का है मुहताज बाराने बहार।
इफ़्तिरा उन की निगाहों में हमारा काम है,
यह ख़्याल अल्लाहो अकबर किस क़दर है ना बकार।
ख़ैर ख़्वाही में जहां की खूं किया हमने जिगर,
जंग भी थी सुलह की नीयत से और कीं से फ़रार।
पाक दिल पर बदगुमानी है यह शक़्वत का निशां,
अब तो आंखें बन्द हैं देखेंगे फिर अंजाम कार।
जबकि कहते हैं कि काज़िब फूलते-फलते नहीं,
फिर मुझे कहते हैं काज़िब देख कर मेरे सिमार।
क्या तुम्हारी आंख सब कुछ देखकर अंधी हुई,
कुछ तो उस दिन से डरो यारो कि है रोज़े शुमार।
आंख रखते हो ज़रा सोचो कि यह क्या राज़ है,
किस तरह मुमकिन कि वह क़ुद्दूस हो काज़िब का यार।
यह करम मुझ पर है क्यों कोई तो इसमें बात है,
बे सबब हरगिज़ नहीं यह कारोबारे किर्दिगार।

मुझ को ख़ुद उसने दिया है चश्मए तौहीद पाक,
ता लगावे अज़ सरे नौ बाग़े दीं में लाला ज़ार।
दौश पर मेरे वह चादर है कि दी उस यार ने,
फिर अगर क़ुदरत है ऐ मुन्किर तो यह चादर उतार।
ख़ैरगी से बदगुमानी इस क़दर अच्छी नहीं,
इन दिनों में जबकि है शोरे क़यामत आश्कार।
एक तूफ़ां है ख़ुदा के क़हर का अब जोश पर,
नूह की कश्ती में जो बैठे वही हो रुस्तगार।
सिद्क़ से मेरी तरफ आओ इसी में ख़ैर है,
हैं दरिन्दे हर तरफ़ मैं आफ़ियत का हूं हिसार।
पुश्तए दीवारे दीं और मामन-ए-इस्लाम हूं,
नारसा है दस्ते दुश्मन ता बफ़र्क़े ईं जिदार।
जाहिलों में इस क़दर क्यों बदगुमानी बढ़ गई,
कुछ बुरे आए हैं दिन या पड़ गई ला'नत की मार।
कुछ तो समझें बात को यह दिल में अरमां ही रहा,
वाह रे शैतां अजब उनको किया अपना शिकार।
ऐ कि हर दम बदगुमानी तेरा कारोबार है,
दूसरी क़ुव्वत कहां गुम हो गई ऐ होशियार।
मैं अगर काज़िब हूं कज़्ज़ाबों की देखूंगा सज़ा,
पर अगर सादिक़ हूं फिर क्या उज़्र है रोज़े शुमार।
इस तअस्सुब पर नज़र करना कि मैं इस्लाम पर,
हूं फ़िदा फिर भी मुझे कहते हैं काफ़िर बार-बार।

मैं वह पानी हूं कि आया आस्मां से वक़्त पर,
मै वह हूं नूरे ख़ुदा जिस से हुआ दिन आशकार।
हाए वह तक़्वा जो कहते थे कहां मख़्फ़ी हुई,
सारबाने नफ़्से दूं ने किस तरफ फेरी मुहार।
काम जो दिखलाए उस ख़ल्लाक़ ने मेरे लिए,
क्या वह कर सकता है जो हो मुफ़्तरी शैतां का यार।
मैंने रोते-रोते दामन कर दिया तर दर्द से,
अब तलक तुम में वही ख़ुश्की रही बा हाले ज़ार।
हाए यह क्या हो गया अक़्लों पे क्या पत्थर पड़े,
हो गया आंखों के आगे उनके दिन तारीको तार।
या किसी मख़्फ़ी गुनाह से शामते आमाल है,
जिस से अक़्लें हो गईं बेकार और इक मुर्दावार।
गर्दनों पर उनकी है सब आम लोगों का गुनाह,
जिन के वअज़ों से जहां के आ गया दिल में ग़ुबार।
ऐसे कुछ सोए कि फिर जागे नहीं हैं अब तलक,
ऐसे कुछ भूले कि फिर निसियां हुआ गर्दन का हार।
नौए इन्सां में बदी का तुख़्म बोना ज़ुल्म है,
वह बदी आती है उस पर जो हो उसका काश्तकार।
छोड़ कर फ़ुर्क़ां को आसारे मुख़ालिफ़ पर जमे,
सर पे मुस्लिम और बुख़ारी के दिया नाहक़ का बार।
जबकि है इम्काने किज़्बो कजरवी अख़बार में,
फिर हिमाक़त है कि रखें सब उन्हीं पर इन्हिसार।

जबकि हमने नूरे हक़ देखा है अपनी आंख से,
जबकि ख़ुद वह्ये ख़ुदा ने दी ख़बर यह बार-बार।
फिर यक़ीं को छोड़ कर हम क्यों गुमानों पर चलें,
ख़ुद कहो रोयत है बेहतर या नुक़ूले पुर ग़ुबार।
तफ़्रिक़ा इस्लाम में नक़्लों की कसरत से हुआ,
जिस से ज़ाहिर है कि राहे नक़्ल है बे ऐतिबार।
नक़्ल की थी इक ख़ताकारी मसीहा की हयात,
जिस से दीं नसरानियत का हो गया ख़िदमत गुज़ार।
सद हज़ारां आफ़तें नाज़िल हुईं इस्लाम पर,
हो गए शैतां के चेले गर्दने दीं पर सवार।
मौते ईसा[अ.] की शहादत दी ख़ुदा ने साफ़-साफ़,
फिर अहादीसे मुख़ालिफ़ रखती हैं क्या ऐतिबार।
गर गुमां सेहत का हो फिर क़ाबिले तावील हैं,
क्या हदीसों के लिए फ़ुर्क़ां पे कर सकते हो वार।
वह ख़ुदा जिस ने निशानों से मुझे तम्ग़ा दिया,
अब भी वह ताईदे फ़ुर्क़ां कर रहा है बार-बार।
सर को पीटो ! आस्मां से अब कोई आता नहीं,
उम्रे दुनिया से भी अब है आ गया हफ़्तम हज़ार।[1]

---

[1] पहली पुस्तकों तथा सही हदीसों से सिद्ध है कि संसार की आयु हज़रत आदम[अ.] से सात हज़ार वर्ष तक है। इसी की ओर पवित्र क़ुर्आन इस आयत में संकेत करता है कि اِنَّ یَومًا عِنۡدَ رَبِّکَ کَاَلۡفِ سَنَۃٍ مِّمَّا تَعُدُّوۡنَ (अलहज्र - 48) अर्थात् ख़ुदा का एक दिन तुम्हारे हज़ार वर्ष के बराबर है और ख़ुदा तआला ने मेरे हृदय पर यह इल्हाम किया है कि आंहज़रत[स.अ.व.] के युग तक हज़रत आदम से चन्द्रमा के हिसाब से इतनी ही अवधि

उसके आते-आते दीं का हो गया क़िस्सा तमाम,
क्या वह तब आएगा जब देखेगा इस दीं का मज़ार।
कश्तिए इस्लाम बे लुत्फ़े ख़ुदा अब ग़र्क है,
ऐ जुनूं कुछ काम कर बेकार हैं अक़्लों के वार।
मुझ को दे इक फ़ौक़े आदत ऐ ख़ुदा जोशो तपिश,
जिस से हो जाऊं मैं ग़म में दीं के इक दीवानावार।
वह लगा दे आग मेरे दिल में मिल्लत के लिए,
शोले पहुंचें जिस से हर दम आस्मां तक बेशुमार।
ऐ ख़ुदा तेरे लिए हर ज़र्रा हो मेरा फ़िदा,
मुझ को दिखला दे बहारे दीं कि मैं हूं अश्कबार।
ख़ाकसारी को हमारी देख ऐ दाना-ए-राज़,
काम तेरा काम है हम हो गए अब बेक़रार।
इक करम कर फेर दे लोगों को फ़ुर्क़ां की तरफ,
नीज़ दे तौफ़ीक़ ता वह कुछ करें सोच और विचार।
एक फ़ुर्क़ां है जो शक और रैब से वह पाक है,
बाद इसके ज़न्ने ग़ालिब को हैं करते इख़्तियार।

शेष हाशिया - गुज़री थी जो इस सूरह के अक्षरों की संख्या के अबजद के हिसाब से ज्ञात होती है तथा इसके अनुसार हज़रत आदम[अ.] से अब सातवां हज़ार चन्द्रमा के हिसाब से है जो संसार की समाप्ति को सिद्ध करता है और यह हिसाब जो सूरह "अलअस्र" के अक्षरों की संख्या के निकालने से मालूम होता है। यहूदियों तथा ईसाइयों के हिसाब से लगभग पूर्णरूपेण मिलता है। केवल चन्द्र और सूर्य के हिसाब को दृष्टिगत रख लेना चाहिए। उनकी पुस्तकों से पाया जाता है कि मसीह मौऊद का छठे हज़ार में आना आवश्यक है तथा कई वर्ष हो गए कि छठा हज़ार गुज़र गया। (इसी से)

फिर यह नक़्लें भी अगर मेरी तरफ से पेश हों,
तंग हो जाए मुख़ालिफ़ पर मजाले कारज़ार।
बाग़ मुरझाया हुआ था गिर गए थे सब समर,
मैं ख़ुदा का फ़ज़्ल लाया फिर हुए पैदा सिमार।
मरहमे ईसा ने दी थी महज़ ईसा को शिफ़ा,
मेरी मरहम से शिफ़ा पाएगा हर मुल्को दियार।
झांकते थे नूर को वह रौज़न-ए-दीवार से,
लेक जब दर खुल गए फिर हो गए शप्पर शिआर।
वह ख़ज़ायन जो हज़ारों साल से मदफ़ून थे,
अब मैं देता हूं अगर कोई मिले उम्मीदवार।
पर हुए दीं के लिए ये लोग मारे आस्तीं,
दुश्मनों को ख़ुश किया और हो गया आज़ुर्दा यार।
ग़ुल मचाते हैं कि यह काफ़िर है और दज्जाल है,
पाक को नापाक समझे हो गए मुर्दार ख़्वार।
गो वह काफ़िर कह के हम से दूर तर हैं जा पड़े,
उनके ग़म में हम तो फिर भी हैं हज़ीं व दिलफ़िगार।
हम ने यह माना कि उनके दिल हैं पत्थर हो गए,
फिर भी पत्थर से निकल सकती है दीं दारी की नार।
कैसे ही वह सख़्त दिल हों हम नहीं हैं नाउम्मीद,
आयते ला तैयसू रखती है दिल को उस्तवार।
पेशा है रोना हमारा पेश रब्बे ज़ुलमिनन,
यह शजर आख़िर कभी इस नहर से लाएंगे बार।
जिन में आया है मसीहे वक़्त वह मुन्किर हुए,

मर गए थे इस तमन्ना में ख़वासे हर दियार।
मैं नहीं कहता कि मेरी जां है सब से पाकतर,
मैं नहीं कहता कि यह मेरे अमल के हैं सिमार।
मैं नहीं रखता था इस दावे से इक ज़र्रा ख़बर,
खोल कर देखो बराहीं को कि तो हो ऐतिबार।
गर कहे कोई कि यह मन्सब था शायाने क़ुरैश,
वह ख़ुदा से पूछ ले मेरा नहीं यह कारोबार।
मुझ को बस है वह ख़ुदा उहदों की कुछ पर्वा नहीं,
हो सके तो ख़ुद बनो महदी बहुक्मे किर्दिगार।

इफ़्तिरा ला'नत है और हर मुफ़्तरी मलऊन है,
फिर लईं वह भी है जो सादिक़ से रखता है नक़ार।

तिश्ना बैठे हो किनारे जूए शीरीं हैफ़ है,
सर ज़मीने हिन्द में चलती है नहरे ख़ुशगवार।

इन निशानों[1] को ज़रा सोचो कि किस के काम हैं,
क्या ज़रूरत है कि दिखलाओ ग़ज़ब दीवानावार।

मुफ़्त में मुल्ज़िम ख़ुदा के मत बनो ऐ मुन्किरो,
यह ख़ुदा का है न है यह मुफ़्तरी का कारोबार।

---

[1] अब तक ख़ुदा तआला के कई हज़ार निशान मेरे हाथ पर प्रकट हो चुके हैं। पृथ्वी ने भी मेरे लिए निशान दिखाए तथा आकाश ने भी और मित्रों में भी प्रकट हुए तथा शत्रुओं में भी जिनके कई हज़ार लोग साक्षी हैं और उन निशानों को यदि विवरण के साथ पृथक-पृथक गिना जाए तो वे समस्त निशान लगभग दस लाख तक पहुंचते हैं। इस पर समस्त प्रशंसा ख़ुदा के लिए है। (इसी से)

यह फ़ुतूहाते नुमायां यह तवातुर से निशां,
क्या ये मुमकिन है बशर से क्या यह मक्कारों का कार।
ऐसी सुर्अत से यह शुहरत नागहां सालों के बाद,
क्या नहीं साबित यह करती सिद्क़े क़ौले किर्दिगार।
कुछ तो सोचो होश करके क्या यह मामूली है बात,
जिसका चर्चा कर रहा है हर बशर और हर दियार।
मिट गए हीले तुम्हारे हो गई हुज्जत तमाम,
अब कहो किस पर हुई ऐ मुन्किरो ला'नत की मार।
बन्दए दरगाह हूं और बन्दगी से काम है,
कुछ नहीं है फ़त्ह से मतलब न दिल में ख़ौफ़े हार।
मत करो बक-बक बहुत उसकी दिलों पर है नज़र,
देखता है पाकिए दिल को न बातों की संवार।
कैसे पत्थर पड़ गए है है तुम्हारी अक़्ल पर,
दीं है मुंह में गुर्ग के तुम गुर्ग के ख़ुद पासदार।
हर तरफ से पड़ रहे हैं दीने अहमद पर तबर,
क्या नहीं तुम देखते क़ौमों को और उन के वह वार।
कौन सी आंखें जो उसको देखकर रोती नहीं,
कौन से दिल हैं जो इस ग़म से नहीं हैं बेक़रार।
खा रहा है दीं तमांचे हाथ से क़ौमों के आज,
इक तज़लज़ुल में पड़ा इस्लाम का आली मनार।
यह मुसीबत क्या नहीं पहुंची ख़ुदा के अर्श तक,
क्या यह शम्सुद्दीं निहां हो जाएगा अब ज़ेरे ग़ार।

जंगे रूहानी है अब इस ख़ादिमो शैतान का,
दिल घटा जाता है या रब सख़्त है यह कारज़ार।
हर नबी-ए-वक़्त ने इस जंग की दी थी ख़बर,
कर गए वह सब दुआएं बादो चश्मे अश्क बार।
ऐ ख़ुदा शैतां पे मुझ को फ़त्ह दे रहमत के साथ,
वह इकट्ठी कर रहा है अपनी फ़ौजें बेशुमार।
जंग यह बढ़कर है जंगे रूस और जापान से,
मैं ग़रीब और है मुक़ाबिल पर हरीफ़े नामदार।
दिल निकल जाता है क़ाबू से यह मुश्किल सोच कर,
ऐ मेरी जां की पनह फ़ौजे मलाइक को उतार।
बिस्तरे राहत कहां इन फ़िक्र के अय्याम में,
ग़म से हर दिन हो रहा है बदतर अज़ शब हाए तार।
लश्करे शैतां के नर्ग़े में जहां है घिर गया,
बात मुश्किल हो गई क़ुदरत दिखा ऐ मेरे यार।
नस्ले इन्सां से मदद अब मांगना बेकार है,
अब हमारी है तेरी दरगाह में यारब पुकार।
क्यों करेंगे वे मदद उनको मदद से क्या ग़रज़,
हम तो काफ़िर हो चुके उनकी नज़र में बार-बार।
पर मुझे रह-रह के आता है तअज्जुब क़ौम से,
क्यों नहीं वह देखते जो हो रहा है आशकार।
शुक्र लिल्लाह मेरी भी आहें नहीं ख़ाली गईं,
कुछ बनी ताऊं की सूरत कुछ ज़लाज़िल के बुख़ार।

इक तरफ ताऊने ख़ूनी खा रहा है मुल्क को,
हो रहे हैं सद हज़ारां आदमी उस का शिकार।
दूसरे मंगल के दिन आया था ऐसा ज़लज़ला,
जिस से इक महशर का आलम था बसद शोरो पुकार।
एक ही दम में हज़ारों इस जहां से चल दिए,
जिस क़दर घर गिर गए उनका करूं क्योंकर शुमार।
या तो वह आली मकां थे ज़ीनतो ज़ेबे जुलूस,
या हुए इक ढेर ईंटों के पुरअज़ गर्दो ग़ुबार।
हश्र जिसको कहते हैं इक दम में बर्पा हो गया,
हर तरफ में मर्ग की आवाज़ थी और इज़्तिरार।
दब गए नीचे पहाड़ों के कई देहातो शहर,
मर गए लाखों बशर और हो गए दुनिया से पार।
इस निशां को देख कर फिर भी नहीं है नर्म दिल,
पस ख़ुदा जाने कि अब किस हश्र का है इंतिज़ार।
वह जो कहलाते थे सूफ़ी कीं में सब से बढ़ गए,
क्या यही आदत थी शैख़े ग़ज़नवी की यादगार।
कहते हैं लोगों को हम भी ज़ुब्दतुल अबरार हैं,
पड़ती है हम पर भी कुछ-कुछ वह्ये रहमां की फुवार।
पर वही ना फ़हम मुल्हम अव्वलुल आ'दा हुए,
आ गया चर्ख़े बरीं से उनको तक्फ़ीरों का तार।
सब निशां बेकार उनके बुग़्ज़ के आगे हुए,
हो गया तीरे तअस्सुब उनके दिल में वार पार।

देखते हरगिज़ नहीं क़ुदरत को उस सत्तार की,
गो सुनावें उन को वह अपनी बजाते हैं सितार।
सूफ़िया अब हीच है तेरी तरह तेरी तराह,
आस्मां से आ गई मेरी शहादत बार-बार।
क़ुदरते हक़ है कि तुम भी मेरे दुश्मन हो गए,
या मुहब्बत के वह दिन थे या हुआ ऐसा नक़ार।
धो दिए दिल से वह सारे सुहबते देरीं के रंग,
फूल बन कर एक मुद्दत तक हुए आख़िर को ख़ार।
जिस क़दर नक़्दे तआरुफ़ था वह खो बैठे तमाम,
आह क्या यह दिल में गुज़रा हूं मैं इस से दिल फ़िगार।
आस्मां पर शोर है पर कुछ नहीं तुम को ख़बर,
दिन तो रौशन था मगर है बढ़ गई गर्दो ग़ुबार।
इक निशां है आने वाला आज से कुछ दिन के बाद,
आज 15 अप्रैल 1905
जिस से गर्दिश खाएंगे देहातो शहर और मुर्ग़ज़ार।
आएगा कहरे ख़ुदा से ख़ल्क़ पर इक इन्क़िलाब,
इक बरहना से न यह होगा कि ता बांधे इज़ार।
यक बयक इक ज़लज़ले से सख़्त जुंबिश खाएंगे,[1]

---

[1] ख़ुदा तआला की वह्यी में भूकम्प का शब्द बार-बार है तथा कहा कि ऐसा भूकम्प होगा जो प्रलय का नमूना होगा अपितु प्रलय का भूकम्प उसको कहना चाहिए जिसकी ओर सूरह إِذَا زُلْزِلَتِ الْأَرْضُ زِلْزَالَهَا (अलज़िलज़ाल - 2) संकेत करती है। किन्तु मैं अभी तक इस भूकम्प के शब्द को ठोस विश्वास के साथ प्रत्यक्ष पर चरितार्थ नहीं कर सकता। संभव है यह साधारण भूकम्प न हो अपितु कोई और भयंकर आपदा हो जो प्रलय का दृश्य प्रदर्शित करे जिसका उदाहरण इस युग ने न देखा हो और प्राणों तथा

क्या बशर और क्या शजर और क्या हजर और क्या बिहार।
इक झपक में यह ज़मीं हो जाएगी ज़ेरो ज़बर,
नालियां ख़ूं की चलेंगी जैसे आबे रूदबार।
रात जो रखते थे पोशाके बरंगे यास्मन,
सुब्ह कर देगी उन्हें मिस्ले दरख़्ताने चिनार।
होश उड़ जाएंगे इन्सां के परिन्दों के हवास,
भूलेंगे नग़मों को अपने सब कबूतर और हज़ार।
बुलबुल
हर मुसाफ़िर पर वह साअत सख़्त है और वह घड़ी,
राह को भूलेंगे होकर मस्तो बेख़ुद राहवार।
ख़ून से मुर्दों के कोहिस्तान के आबे रवां,
सुर्ख़ हो जाएंगे जैसे हो शराबे अंजबार।

शेष हाशिया- इमारतों पर भयंकर तबाही आए। हां यदि ऐसा विलक्षण निशान प्रकट न हो और लोग खुले तौर पर अपना सुधार भी न करें तो इस स्थिति में मैं झूठा ठहरूंगा। परन्तु मैं बार-बार लिख चुका हूं कि यह भयंकर आपदा जिसे ख़ुदा तआला ने भूकम्प के शब्द से बताया है। केवल धर्म की भिन्नता पर कोई प्रभाव नहीं रखती और न हिन्दू या ईसाई होने के कारण किसी पर अज़ाब आ सकता है और न इस कारण आ सकता है कि कोई मेरी बैअत में सम्मिलित नहीं। ये समस्त लोग इस आशंका से सुरक्षित हैं। हां जो व्यक्ति चाहे किसी धर्म का अनुयायी हो, अपराधी पेशा होना अपना स्वभाव रखे तथा दुराचार और दुष्कर्म में लिप्त हो तथा व्यभिचारी, हत्यारा, चोर, अत्याचारी और अकारण अशुभचिन्तक, अपशब्द निकालने वाला तथा दुष्चरित्र हो उसको इससे भयभीत होना चाहिए और यदि तौबा करे तो उसको भी कुछ चिन्ता नहीं तथा प्रजा के शुभ आचरण एवं सच्चरित्र होने से यह अज़ाब टल सकता है, अटल नहीं है। (इसी से)

मुज़महिल हो जाएंगे इस ख़ौफ़ से सब जिन्नो इन्स,
ज़ार भी होगा तो होगा उस घड़ी बा हाले ज़ार।
इक नमूना क़हर का होगा वह रब्बानी निशां,
आस्मां हम्ले करेगा खींच कर अपनी कटार।
हां न कर जल्दी से इन्कार ऐ सफ़ीहे नाशनास,
इस पै है मेरी सच्चाई का सभी दारो मदार।
वह्ये हक़ की बात है होकर रहेगी बे ख़ता,
कुछ दिनों कर सब्र होकर मुत्तक़ी और बुर्दबार।
यह गुमां मत कर यह सब बद गुमानी है मआफ़,
क़र्ज़ है वापस मिलेगा तुझ को यह सारा उधार।

(परिशिष्ट बराहीन अहमदिया भाग पंचम)

बिस्मिल्लाहिर्रहमानिर्रहीम

नहमदुहू व नुसल्ली अला रसूलिहिल करीम

اے یار ازل بس است روئے تو مرا
بہتر زِ ہزار خلد کوئے تو مرا

हे अनादि ख़ुदा मेरे लिए तेरा चेहरा पर्याप्त है और तेरी गली मेरे लिए हज़ारों स्वर्गों से बढ़ कर है।

از مصلحتے دگر طرف بینم لیک
ہر لحظہ نگاہِ ہست سوئے تو مرا

मैं किसी हित के कारण अन्य ओर देख लेता हूं अन्यथा हर समय मेरी दृष्टि तेरी ही ओर लगी हुई है।

بر عزتِ من اگر کسے حملہ کند
صبر است طریق ہمچو خوئے تو مرا

यदि कोई मेरे सम्मान पर प्रहार करता है तो मेरी आदत की भांति मेरा आचरण भी धैर्य है।

من چیستم و چہ عزتم ہست مگر
جنگ است زِ بہرِ آبروئے تو مرا

मैं कौन हूं और मेरी क्या इज़्ज़त है परन्तु तेरी इज़्ज़त के लिए यह मेरा युद्ध है।[1]

मुहम्मद इकरामुल्लाह नामक एक व्यक्ति ने दैनिक पैसा अख़बार दिनांक 22 मई 1905 ई. मेरे उन विज्ञापनों के बारे में पहली बार तथा दूसरी बार के भूकम्प के संबंध में भविष्यवाणियां हैं कुछ आपत्तियां प्रकाशित की हैं तथा मेरे विचार में वे आरोप केवल

---

① उपरोक्त चारों फारसी शे'रों का अनुवाद डा. मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब[रज़ि.] के 'दुर्रे समीन' फ़ारसी के उर्दू अनुवाद का हिन्दी रूपांतरण है। (अनुवादक)

ईर्ष्या के कारण नहीं हैं अपितु अनभिज्ञता तथा नितान्त सीमित जानकारी भी इनका कारण है। क़ौम की दशा पर इसी कारण मुझे रोना आता है कि आरोप करने के समय कुछ विचार नहीं करते और उन्माद की भांति एक उत्तेजना पैदा हो जाती है या आत्मप्रदर्शन के कारण यह रुचि संलग्न हो जाती है कि किसी प्रकार आपत्तिकर्ता बनकर हमें प्रथम श्रेणी के विरोधियों में स्थान मिल जाए और या कम से कम योग्य और विद्वान समझे जाएं परन्तु योग्य कहलाने के स्थान पर स्वयं अपने हाथ से अपने दोषों को प्रकट करते हैं। अब न्यायवान लोग आरोपों को सुनें और उनके उत्तरों पर विचार करके देखें कि क्या ऐसी आपत्तियां कोई न्यायप्रिय जिसे कुछ भी बुद्धि और धर्म से कुछ भाग प्राप्त हुआ है कर सकता है। खेद कि ये लोग प्रथम स्वयं धोखा खाते हैं और फिर लोगों को धोखे में डालना चाहते हैं। इस मूर्खता का सारा कारण वह घोरतम ईर्ष्या है जो अपने अन्दर नर्काग्नि रखती है।

प्रथम आरोप का सांरांश — उसका कथन - अब हम मिर्ज़ा साहिब के कथन से सिद्ध करते हैं कि भूकम्प की भविष्यवाणी कोई महत्त्वपूर्ण वस्तु नहीं है क्योंकि वह अपनी पुस्तक इज़ाला औहाम में स्वयं लिखते हैं कि भूकम्प की भविष्यवाणी महत्त्व देने योग्य नहीं अपितु निरर्थक और विचारणीय नहीं।

उत्तर - स्पष्ट हो कि आरोपी ने यहां पर मेरी वह इबारत प्रस्तुत की है जो मैंने इंजील मती की एक भविष्यवाणी पर जो हज़रत मसीह की ओर सम्बद्ध की जाती है "इज़ाला औहाम" में लिखी है। इस स्थान पर पर्याप्त होगा कि वही इबारत भूकम्प के बारे में जो इंजील मती में हज़रत मसीह के नाम पर लिखी है जिस को मैंने "इज़ाला औहाम" में नक़ल किया है पब्लिक के समक्ष प्रस्तुत कर दी जाए और फिर वे इबारतें जो मेरी भविष्यवाणियों में दोनों भूकम्पों के बारे में विज्ञापनों के माध्यम से प्रकाशित हो चुकी हैं आमने-सामने यहां लिख दी जाएं ताकि दर्शक स्वयं समझ लें कि क्या इन दोनों भविष्यवाणियों का एक ही रूप है या उन में कुछ अंतर भी है तथा क्या मेरी भविष्यवाणी में भी भूकम्प के बारे में

केवल साधारण शब्द हैं जो प्रत्येक भूकम्प पर चरितार्थ हो सकते हैं जैसा कि इंजील मती के शब्द हैं या मेरी भविष्यवाणी विलक्षण भूकम्प की सूचना देती है। यहां इस बात का वर्णन करना भी अनुचित न होगा कि जिस देश में हज़रत मसीह थे अर्थात् शाम देश में, उस देश की प्राचीन समय से ऐसी स्थिति है कि उसमें हमेशा भूकम्प आया करते हैं जैसा कि कश्मीर में। हमेशा ताऊन भी उस देश में आया करती है। अत: उस देश के लिए यह चमत्कार नहीं है कि उसमें भूकम्प आए या ताऊन पैदा हो अपितु कोई बड़ा भूकम्प आना भी विचित्र बात नहीं है। हज़रत मसीह के जन्म से भी पूर्व उसमें भूकम्प आ चुके हैं तथा उनके जीवन में भी भीषण और हल्के भूकम्प आते रहे हैं। अत: साधारण बात के बारे में भविष्यवाणी क्या होगी ? परन्तु हम आगे चलकर वर्णन करेंगे कि यह भूकम्प जिसकी भविष्यवाणी मैंने की थी इस देश के लिए कोई साधारण बात न थी अपितु एक अनहोनी और विलक्षण बात थी जिसे देश के समस्त निवासियों ने विलक्षण ठहराया अपितु प्रलय का नमूना समझा और समस्त अंग्रेज़ अन्वेषकों ने भी यही साक्ष्य दी और पंजाब का इतिहास भी यही साक्ष्य देता है तथा प्राचीन इमारतें जो लगभग सोलह सौ वर्ष से सुरक्षित चली आईं और अपने व्यवहार से यही साक्ष्य दे रही हैं परन्तु सब को ज्ञात है कि शाम देश में तो इतने बाहुल्य के साथ भूकम्प आते हैं कि जब हज़रत मसीह की वह भविष्यवाणी लिखी गई तो संभवत: उस समय भी कोई भूकम्प आ रहा होगा।

अब हम नीचे वह भविष्यवाणी लिखते हैं जो भूकम्प आने के बारे में इंजील मती में लिखी गई है जिसे हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर सम्बद्ध किया गया है और वह यह है - "जाति-जाति पर और बादशाहत बादशाहत पर चढ़ आएगी तथा दुर्भिक्ष और महामारी पड़ेगी और जगह-जगह भूचाल आएंगे।" देखो इंजील मती बाब-24। यही भविष्यवाणी है जिसके बारे में मैंने इज़ाला औहाम में वह इबारत लिखी है जो आरोपकर्ता ने कथित अख़बार के पृष्ठ-5 कालम-1 पंक्ति 26 में लिखी है और वह यह है - क्या यह भी कुछ भविष्यवाणियां हैं कि भूकम्प आएंगे, महामारी पड़ेगी, युद्ध होंगे, दुर्भिक्ष पड़ेंगे।" आरोपकर्ता

मेरी इस इबारत को लिखकर इस से यह बात निकालते हैं कि जैसे मैंने इक़रार किया है कि भूकम्प के बारे में भविष्यवाणी करना कोई महत्त्वपूर्ण बात नहीं है। प्रत्येक बुद्धिमान समझ सकता है कि इस इबारत से मेरा यह उद्देश्य नहीं है जो आरोपक ने समझा है अपितु यह उद्देश्य है कि सामान्य तौर पर एक बात को प्रस्तुत करना जिसमें कोई चमत्कार नहीं और जिसमें कोई विलक्षण बात नहीं भविष्यवाणी के अर्थ में सम्मिलित नहीं हो सकती। उदाहरणतया यदि कोई भविष्यवाणी करे कि बरसात के दिनों में कुछ न कुछ वर्षाएं होंगी तो यह भविष्यवाणी नहीं कहला सकती क्योंकि ख़ुदा की आदत इसी प्रकार जारी है कि बरसात के महीने में कुछ न कुछ वर्षाएं हो जाया करती हैं। हां यदि कोई यह भविष्यवाणी करे कि अब की बार बरसात के दिनों में इतनी वर्षा होगी कि पृथ्वी में से झरने जारी हो जाएंगे और कुंए भर कर नहरों की भांति बहने लगेंगे और पिछले सौ वर्ष में ऐसी वर्षा का कोई उदाहरण नहीं होगा। तो इसका नाम अवश्य एक विलक्षण चमत्कार और भविष्यवाणी रखा जाएगा। अतः इसी सिद्धान्त के अनुसार मैंने इंजील मती बाब-24 की भविष्यवाणी पर आपत्ति की थी कि मात्र इतना कह देना कि भूकम्प आएंगे विशेषतः उस देश में जिसमें हमेशा भूकम्प आया करते हैं अपितु भीषण भूकम्प भी आते हैं। यह कोई ऐसी ख़बर नहीं है जिसका नाम भविष्यवाणी रखा जाए या उसे एक विलक्षण बात ठहराया जाए। अब देखना चाहिए कि क्या उन तीनों विज्ञापनों में भी जो मैंने भूकम्प के विषय में भविष्यवाणी के तौर पर प्रकाशित किए ऐसी ही साधारण सूचना पाई जाती है जिसमें कोई विलक्षण बात नहीं। यदि वास्तव में ऐसी ही है तो फिर भूकम्प के बारे में मेरी भविष्यवाणी भी एक साधारण बात होगी। भूकम्प के बारे में मेरे विज्ञापनों के शब्द ये हैं। 1 मई 1904 ई. में मुझे ख़ुदा तआला की ओर से यह वह्यी हुई थी जिसे मैंने अख़बार 'अलहकम' और अलबद्र में प्रकाशित करा दिया था - عَفَتِ الدِّیَارُ مَحَلُّهَا وَ مَقَامُهَا

अर्थात् इस देश का एक भाग मिट जाएगा। उसकी वे इमारतें जो अस्थायी निवास हैं तथा वे इमारतें जो स्थायी निवास स्थल हैं दोनों मिट जाएंगी, उनका नाम और निशान

नहीं रहेगा और अद्दियार (الديار) पर जो अलिफ़ लाम है वह सिद्ध करता है कि ख़ुदा तआला के ज्ञान में इस देश में से वे विशेष स्थान हैं जिन पर यह तबाही आएगी और वह विशेष भाग देश के घर हैं जो पृथ्वी से बराबर हो जाएंगे। यह कितनी विलक्षण और अद्‌भुत भविष्यवाणी है और कितनी धूमधाम से भविष्य की घटना का वर्णन है, जिसका सोलह सौ वर्ष तक भी इस देश में उदाहरण नहीं पाया जाता। अत: अंग्रेज़ी अख़बारों के पढ़ने से ज्ञात होगा कि भूगर्भशास्त्र के अन्वेषक इस देश के बारे में इस को विलक्षण घटना ठहराते हैं। यहां तक कि यूरोप के महान अन्वेषकों की साक्ष्य से प्रकाशित हो चुका है कि सोलह सौ वर्ष तक भी पंजाब में उस भूकम्प का उदाहरण नहीं पाया जाता और समस्त अख़बार इस विषय से भरे पड़े हैं कि यह भूकम्प प्रलय का नमूना था। अत: जबकि ख़ुदा की उस वह्यी में जो मुझ पर हुई यह विलक्षण लेख है कि इस घटना से इमारतें मिट जाएंगी और इस देश का एक भाग नष्ट हो जाएगा। अत: नितान्त खेद है कि ऐसी महान भविष्यवाणी को जो एक देश के विनाश की सूचना देती है इंजील की एक साधारण सूचना के बराबर ठहराया जाए कि भूकम्प आएंगे और वे भी उस देश में जो भूकम्पों का घर है। क्या किसी भविष्यवाणी के इस से अधिक भयभीत करने वाले शब्द हो सकते हैं। प्रत्येक न्यायप्रिय स्वयं विचार कर ले कि क्या इस देश पंजाब में भूकम्प की भविष्यवाणी के शब्द इससे अधिक विलक्षण हो सकते हैं जो ख़ुदा की वह्यी عفت الدّيار محلّها و مقامها में पाए जाते हैं। जिन के अर्थ ये हैं कि देश का एक भाग ऐसा तबाह हो जाएगा कि उसकी इमारतें सब मिट जाएंगी। न सरायें शेष रहेंगी न स्थायी तौर पर निवास के स्थान यहां एक निम्न स्तर का अरबी जानने वाला भी الديار के अलिफ़ लाम को मस्तिष्क में रख कर समझ सकता है कि الديار से इस देश का एक भाग अभिप्राय है और عفت के शब्द से यही अभिप्राय है कि देश के इस भाग के समस्त मकान ध्वस्त हो जाएंगे, मिट जाएंगे और ऐसे हो जाएंगे जैसे वे थे ही नहीं।[1]

---

①यदि किसी को इन अर्थों में सन्देह हो तो उसे ख़ुदा तआला की क़सम है कि किसी

अत: मुझे कोई समझा दे कि इस देश के लिए ऐसी घटना इस से पूर्व कब हुई थी ? अन्यथा ईमानदारी से दूर है कि मनुष्य निर्लज्ज होकर झूठ बोले और उस ख़ुदा का भय न करे जिस का हाथ हर समय दण्ड देने पर समर्थ है। फिर विज्ञापन **अलवसीयत** में जो 27 फ़रवरी 1905 ई. में भूकम्प से पूर्व प्रकाशित किया गया था यह इबारत दर्ज है :- इस समय जो अर्ध रात्रि के पश्चात् चार बज चुके हैं मैंने बतौर कश्फ़ देखा है कि पीड़ायुक्त मौतों से अदुभुत तौर पर प्रलय का शोर मचा हुआ है।

साथ ही यह भी इल्हाम हुआ - **कि मौता मौती लग रही है।**

अब विचार करो कि क्या एक भावी घटना की इन शब्दों में भविष्यवाणी करना कि वह प्रलय का नमूना होगी और उस से प्रलय का शोर मचेगा, वह भविष्यवाणी इस भविष्यवाणी के समान हो सकती है कि साधारण शब्दों में कहा जाए कि भूकम्प आएंगे विशेषत: शाम जैसे देश में जो अधिकतर भूकम्पों एवं ताऊन का घर है। यदि ख़ुदा तआला का भय हो तो ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी के इन्कार में इतनी दिलेरी क्योंकर हो। यह मुझ पर आक्रमण नहीं अपितु ख़ुदा तआला पर आक्रमण है जिसका वह कलाम है तथा यह कहना कि **عَفَتِ الدِّيَارُ مَحَلُّهَا وَمَقَامُهَا** यह लबीद बिन रबीआ के एक शे'र का प्रथम चरण (मिस्रा') है। यह भी ख़ुदा तआला पर धृष्टतापूर्ण आक्रमण है। वह प्रत्येक व्यक्ति के कथन का वारिस है।

लबीद हो या कोई और हो उसी की दी हुई सामर्थ्य से शे'र बनता है। इसलिए यदि उसने एक व्यक्ति के कलाम को लेकर बतौर वह्यी इल्क़ा कर दिया तो उस पर कोई

विरोधी अरबी जानने वाने को क़सम देकर पूछ लें कि क्या इस इल्हाम عَفَتِ الدِّيار में इमारतों का गिरना, मिट जाना और ऐसे मकानों का ध्वस्त होना जो अस्थायी आने-जाने के लिए होते हैं। जैसा कि धर्मशाला तथा कांगड़ा के पर्वत की लाटांवाली का मंदिर या स्थायी रहने के घरों का ध्वस्त होना सिद्ध नहीं होता ? स्पष्ट है कि ऐसे खुले तौर पर सिद्ध होता है जिससे आगे व्याख्या की आवश्यकता नहीं। (इसी से)

आक्षेप नहीं और यदि यह आक्षेप हो सकता है तो फिर इस बात का क्या उत्तर है कि पवित्र क़ुर्आन में जो यह आयत है فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ[1]

यह भी वास्तव में एक मनुष्य का कथन था। अर्थात् अब्दुल्लाह बिन अबी सरह का जो आरंभ में पवित्र क़ुर्आन की कुछ आयतों का कातिब (लिखने वाला) भी था फिर मुर्तद हो गया। वही उसका कलाम बिना न्यूनाधिकता के पवित्र क़ुर्आन में उतर गया और ख़ुदा की यह वह्यी عفت الديار محلها و مقامها उसके अक्षर पवित्र क़ुर्आन की पवित्र आयत के अक्षरों से भी अधिक नहीं हैं अर्थात् فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ से अपितु इसके इक्कीस अक्षर हैं परन्तु क़ुर्आनी आयत के बाईस अक्षर। फिर आक्षेप करने वाले का ख़ुदा की इस वह्यी पर यह कहावत सुनाना कि - "कहीं की ईंट कहीं का रोड़ा, भानुमती ने कुन्बा जोड़ा"[2] उसको थोड़ा विचार करना चाहिए कि उसने वास्तव में पवित्र क़ुर्आन पर प्रहार करके अपनी आख़िरत ठीक कर ली ? और पवित्र क़ुर्आन में केवल यही वह्यी नहीं जो इस बात का नमूना हो कि वह पहले इन्सानी कलाम था और फिर उस से ख़ुदा तआला की वह्यी का भावसाम्य हुआ। अपितु ऐसे बहुत से नमूने प्रस्तुत हो सकते हैं जहां इन्सानी कलाम से ख़ुदा तआला के कलाम का भावसाम्य हुआ। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन के अनेक स्थान पर हज़रत उमर[रज़ि.] के कलाम से भावसाम्य (तवारुद)[3] हुआ है जिस से उलेमा अनभिज्ञ नहीं है तथा जिनकी एक बड़ी सूची प्रस्तुत हो सकती

---

① अलमोमिनून - 15

② यद्यपि पाप हज़ारों प्रकार के होते हैं परन्तु नितान्त श्रेणी का ला'नती वह व्यक्ति है जो ख़ुदा तआला के पवित्र कलाम पर आक्षेप करे। मूर्ख शीघ्रता से तथा धृष्टता से तथा प्रसन्न होकर ख़ुदा तआला के कलाम पर आक्षेप करता है और उस पुनीत से लड़ता है किन्तु वह मर जाता तो इस से उत्तम था। (इसी से)

③ तवारुद - भावसाम्य : दो व्यक्तियों को एक ही बात या वाक्य सूझना। एक ही शे'र या चरण दो कवियों के मस्तिष्क में आना। (अनुवादक)

है इस से ज्ञात होता है कि आक्षेप करने वाला वास्तव में पवित्र क़ुर्आन का इन्कारी है। अन्यथा ऐसा धृष्टता एवं अशिष्टतापूर्ण वाक्य उसके मुख पर कदापि न आता। क्या कोई मोमिन ऐसा आक्षेप किसी पर कर सकता है ? कि वह आक्षेप बिल्कुल ऐसा ही पवित्र क़ुर्आन पर आता हो। नऊज़ुबिल्लाह कदापि नहीं।

फिर आक्षेपक का भविष्यवाणी عفت الديار पर एक यह भी आक्षेप है कि عفت का शब्द जो भूतकाल है उसका अनुवाद उस क्रिया के अर्थों में किया गया है जिसमें वर्तमान और भविष्य दोनों काल पाए जाते हैं। हालांकि उस का अनुवाद भूतकाल के अर्थों में करना चाहिए था। इस आक्षेप के साथ आक्षेपक ने बहुत धृष्टता दिखाई है जैसे विरोधात्मक आक्रमणों में उसको भारी सफलता प्राप्त हुई है। अब हम उसके किस-किस धोखा देने को प्रकट करें। जिस व्यक्ति ने 'काफ़िय:' या 'हिदायतुन्नह्व' भी पढ़ी होगी वह भली भांति जानता है कि भूतकाल, वर्तमान और भविष्य के अर्थों पर भी आ जाता है अपितु ऐसे स्थानों में जबकि आने वाली घटना बात करने वाले की दृष्टि में निश्चित तौर पर घटित होने वाली हो।[1] वर्तमान और भविष्य के अर्थों वाली क्रिया को भूतकाल पर लाते हैं ताकि इस बात का निश्चित तौर पर घटित होना प्रकट हो और पवित्र क़ुर्आन में उसके बहुत से उदाहरण हैं। जैसा कि अल्लाह तआला का

---

① उदाहरणतया जिस व्यक्ति को अधिक मात्रा में घातक विष दिया गया हो, वह कहता है कि मैं तो मर गया और प्रकट है कि मर गया भूतकाल की क्रिया है वर्तमान या भविष्यकाल की क्रिया नहीं है। इस से उसका तात्पर्य यह होता है कि मैं मर जाऊंगा और जैसे एक वकील जिसे एक शक्तिशाली और स्पष्ट उदाहरण चीफ़कोर्ट के फैसले का अपने आसामी के पक्ष में मिल गया है। वह प्रसन्न होकर कहता है कि बस अब हमने विजय पाली जबकि मुक़द्दम: अभी प्रस्ताव के अन्तर्गत है कोई फैसला नहीं लिखा गया। अत: इस का अर्थ यह होता है कि हम निश्चय ही विजय प्राप्त करेंगे। इसलिए वह भविष्य के स्थान पर भूतकाल की क्रिया प्रयुक्त करता है। (इसी से)

कथन है - وَنُفِخَ فِي الصُّوْرِ فَاِذَا هُمْ مِّنَ الْاَجْدَاثِ اِلٰى رَبِّهِمْ يَنْسِلُوْنَ[1] और जैसा कि वह कहता है وَاِذْ قَالَ اللّٰهُ يٰعِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ ءَاَنْتَ قُلْتَ لِلنَّاسِ اتَّخِذُوْنِيْ وَ اُمِّيَ اِلٰهَيْنِ مِنْ دُوْنِ اللّٰهِ[2] और जैसा कि कहता है قَالَ اللّٰهُ هٰذَا يَوْمُ يَنْفَعُ الصّٰدِقِيْنَ صِدْقُهُمْ[3] और जैसा कि कहता है وَنَزَعْنَا مَا فِيْ صُدُوْرِهِمْ مِّنْ غِلٍّ اِخْوَانًا عَلٰى سُرُرٍ مُّتَقٰبِلِيْنَ[4] और जैसा कि वह कहता है وَنَادٰٓى اَصْحٰبُ الْجَنَّةِ اَصْحٰبَ النَّارِ اَنْ قَدْ وَجَدْنَا مَا وَعَدَنَا رَبُّنَا حَقًّا فَهَلْ وَجَدْتُّمْ مَّا وَعَدَ رَبُّكُمْ حَقًّا قَالُوْا نَعَمْ[5] और जैसा कि वह कहता है تَبَّتْ يَدَآ اَبِيْ لَهَبٍ وَّتَبَّ مَآ اَغْنٰى عَنْهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ[6] और जैसा कि वह कहता है وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلَى النَّارِ[7] और जैसा कि वह कहता है وَلَوْ تَرٰٓى اِذْ وُقِفُوْا عَلٰى رَبِّهِمْ قَالَ اَلَيْسَ هٰذَا بِالْحَقِّ قَالُوْا بَلٰى وَرَبِّنَا[8]

अब आक्षेपक साहिब बताएं कि क्या ये क़ुर्आनी आयतें भूतकाल की क्रियाएं हैं या वर्तमान और भविष्य की। और यदि भूतकाल की क्रियाए हैं तो उनके अर्थ यहां वर्तमान के हैं या भूतकाल के। झूठ बोलने का दण्ड तो इतना ही पर्याप्त है कि आप का प्रहार केवल मुझ पर नहीं अपितु यह तो पवित्र क़ुर्आन पर भी प्रहार हो गया जैसे वह व्याकरण के नियम जो आप को ज्ञात हैं ख़ुदा को ज्ञात नहीं। इसी कारण ख़ुदा ने अनेकों स्थान पर ग़लतियां कीं और वर्तमान और भविष्य के स्थान पर भूतकाल को लिख दिया।

---

1 यासीन - 52

2 अलमाइदह - 117

3 अलमाइदह - 120

4 अलहिज्र - 48

5 अलआराफ़ - 45

6 अल्लहब - 2,3

7 अलअन्आम - 28

8 अलअन्आम - 31

फिर इसके साथ आप का एक अन्य आक्षेप भी है और वह यह है कि इस भविष्यवाणी अर्थात् عَفَتِ الدِّيَارُ مَحَلُّهَا وَ مَقَامُهَا में भूकम्प का शब्द कहां है। खेद उस आक्षेपक को यह ज्ञात नहीं कि भविष्यवाणी का अभीष्ट उद्देश्य तो इतना ही अर्थ है जो शब्दों से प्रकट होता है। उद्देश्य तो मात्र इतना है कि देश के एक भाग पर बड़ी तबाही आएगी। इस स्थान पर बुद्धिमान व्यक्ति स्वयं समझ सकता है कि मकानों का तबाह होना भूकम्प के द्वारा ही हुआ करता है। हां संभव है कि महावैभवशाली देश की तबाही तथा शहरों और मकानों का मिट जाना किसी और माध्यम से प्रकट हो परन्तु तब भी बहरहाल यह भविष्यवाणी सच्ची सिद्ध होगी और चूंकि ख़ुदा की सुन्नत के अनुसार इस तबाही का भूकम्प पर प्रमाणित होना अनिवार्य है इसलिए उस का वर्णन करना आवश्यक न था। परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि कुछ नादान जिनका स्वभाव नादानी और ईर्ष्या का अवलेह (चटनी) है ऐसा आक्षेप भी करेंगे, इसलिए उस ने भूकम्प का शब्द भी व्याख्या सहित लिख दिया। देखो पर्चा अलहकम दिनांक 24 दिसम्बर 1903 ई. और यद्यपि यह भविष्यवाणी भूकम्प की भविष्यवाणी से पृथक करके जो इससे पूर्व प्रकाशित हो चुकी है केवल इतना बताती है कि इस देश के कुछ भाग तबाह हो जाएंगे और भीष्ण तबाही आएगी तथा इमारतें मिट जाएंगी और बस्तियां न होने जैसी हो जाएंगी और यह नहीं बताती कि किस विशेष माध्यम से ये तबाहियां आएंगी, परन्तु जो व्यक्ति विचार करेगा कि शहर और बस्तियां किस माध्यम से पृथ्वी में धंसा करती हैं और सहसा इमारतें क्योंकर गिर जाती हैं। इस भविष्यवाणी के साथ इस भविष्यवाणी को भी पढ़ेगा जो इसी अख़बार में पांच माह पूर्व प्रकाशित हो चुकी है जिसके शब्द ये हैं कि "भूकम्प का धक्का" वह ऐसा करने से शर्म करेगा कि भविष्यवाणी में भूकम्प का वर्णन नहीं। हां हम यह अब भी कहते हैं कि ख़ुदा तआला के कलाम में रूपक भी होते हैं जैसा कि अल्लाह तआला कहता है [1] مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِى الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى (बनी इस्राईल - 73)

---

1 इस आयत के ये अर्थ हैं कि जो व्यक्ति इस संसार में अंधा है वह दूसरे संसार (परलोक) में भी अंधा ही होगा अर्थात् जिसे ख़ुदा के दर्शन इस लोक में नहीं उस लोक में भी नहीं। इस आयत

इसलिए संभव था कि भूकम्प से अभिप्राय अन्य कोई बड़ी आपदा होती जो अपने अन्दर पूर्ण रूप से भूकम्प का रूप रखती, परन्तु प्रत्यक्ष इबारत व्याख्या की अपेक्षा अधिक अधिकार रखती है। अत: वास्तव में भविष्यवाणी का क्षेत्र विशाल था किन्तु ख़ुदा तआला ने शत्रुओं का मुंह काला करने के लिए प्रत्यक्ष शब्दों की दृष्टि से भी पूरा कर दिया और संभव है कि इसके बाद कुछ हिस्से इस भविष्यवाणी के किसी अन्य रंग में भी प्रकट हों। परन्तु वह बात बहरहाल विलक्षण होगी जिसके बारे में यह भविष्यवाणी है। अत: यही भूकम्प जिसने पंजाब में इतनी क्षति पहुंचाई उसके बारे में छानबीन की दृष्टि से सिविल मिलिट्री गज़ट इत्यादि अख़बारों में प्रकाशित हो चुका है और यह बात सिद्ध हो चुकी है कि सोलह सौ वर्ष तक इस देश पंजाब में ऐसा कोई भूकम्प नहीं आया। अत: यह भविष्यवाणी निस्सन्देह प्रथम श्रेणी की विलक्षण बात की सूचना देती है तथा संभव है कि इसके पश्चात् भी कुछ ऐसी घटनाएं विभिन्न प्राकृतिक कारणों से प्रकट हों जो ऐसी तबाहियों का कारण हो जाएं जो विलक्षण हों। इसलिए यदि इस भविष्यवाणी के किसी भाग में भूकम्प का वर्णन भी न होता तब भी यह महान निशान था क्योंकि इस भविष्यवाणी में अभीष्ट मकानों और स्थानों की एक विलक्षण तबाही है जो अद्वितीय है भूकम्प से हो या अन्य किसी कारण से। अत: जबकि यह साक्ष्य मिल चुकी कि सोलह सौ वर्ष तक इस तबाही का पंजाब में कोई उदाहरण नहीं पाया जाता तो यह भविष्यवाणी एक साधारण बात न रही जो केवल मानव अटकल से हो सकती है। फिर जबकि इस भविष्यवाणी के पहले भाग में जो 24 दिसम्बर 1903 ई. में उसी अख़बार अलहकम में लिखी गई है, साफ और स्पष्ट शब्दों में भूकम्प का वर्णन भी प्रकाशित हो चुका है तो ऐसे ऐतराज़कर्ता की बुद्धि पर हंसें या रोएं जो कहता है कि भूकम्प की कोई भविष्यवाणी नहीं की।

अब स्मरण रहे कि ख़ुदा की वह्यी अर्थात् عَفَتِ الدِّيَارُ مَحَلُّهَا وَمَقَامُهَا यह वह कलाम है जो आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व ख़ुदा तआला ने लबीद बिन रबीआ

के यह अर्थ नहीं हैं कि जो बेचारे शारीरिक तौर पर इस संसार में अंधे हैं वे दूसरे संसार में भी अंधे ही होंगे। अत: यह रूपक है कि मूर्ख का नाम अंधा रखा गया। (इसी से)

अलआमिरी के हृदय में डाला था जो उसके उस क़सीद: का प्रथम चरण है जो सब्आ मुअल्लक़ा का चौथा क़सीदह है और लबीद ने इस्लाम का युग पाया था और इस्लाम से सम्मानित हो गया था और सहाबा[रज़ि.] में सम्मिलित था। इसलिए ख़ुदा तआला ने उसके कलाम को यह सम्मान प्रदान किया कि जो अन्तिम युग के बारे में एक महान भविष्यवाणी थी कि ऐसी-ऐसी तबाहियां होंगी जिन से एक देश तबाह होगा। वह उसके शे'र के चरण के शब्दों में बतौर वह्यी की गई जो उसके मुंह से निकली थी। अत: यह आश्चर्य सख़्त नादानी है कि एक कलाम जो मुसलमान के मुंह से निकला है वह ख़ुदा की वह्यी में क्यों सम्मिलित हुआ। क्योंकि जैसा कि हम अभी वर्णन कर चुके हैं वह कलाम जो अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के मुंह से निकला था अर्थात् فَتَبَارَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ[1] वही पवित्र क़ुर्आन में उतरा, जिसके कारण अब्दुल्लाह बिन अबी सरह मुर्तद होकर मक्का की ओर भाग गया[2]। अत: जबकि ख़ुदा तआला के कलाम का एक मुर्तद के कलाम से भावसाम्य (तवारुद) हुआ तो इससे क्यों आश्चर्य करना चाहिए कि लबीद जैसे महान सहाबी के कलाम से उसके कलाम का भावसाम्य हो जाए। ख़ुदा तआला जैसे प्रत्येक वस्तु का भी वारिस है, प्रत्येक पवित्र कलाम का वारिस है और प्रत्येक पवित्र कलाम उसी की सामर्थ्य से मुंह से निकलता है। अत: यदि ऐसा कलाम बतौर वह्यी उतर जाए तो इस बारे में वही व्यक्ति सन्देह करेगा जिसको इस्लाम में सन्देह हो। लबीद की विशेषताओं में से एक यह भी थी कि उसने न केवल आंहज़रत[स.अ.व.] का युग पाया, अपितु इस्लामी उन्नति का युग भी भलीभांति देखा और 41 हिज्री में एक सौ सत्तावन वर्ष की आयु पाकर स्वर्गवास हुआ। इसी प्रकार हज़रत उमर[रज़ि.] के कलाम से भी भावसाम्य (तवारुद) हुआ। जैसा कि अनस[रज़ि.] से रिवायत है - قال قال عمر وَافَقْتُ رَبِّيْ فِيْ اَرْبَعٍ

1 अलमोमिनून - 15

2 देखो तफ़्सीर अल्लामा अबीअस्सऊद अला हाशियतित्तफ़्सीरिलकबीर जिल्द-6, पृष्ठ-276, 277

अर्थात् चार बातें जो मेरे मुंह से निकलीं वही ख़ुदा तआला ने कहीं और यदि हम इस दयनीय उम्मत के आदरणीय वलियों का वर्णन करें कि दूसरों के कलाम कितनी अधिक मात्रा में बतौर इल्हाम उनके हृदयों पर इल्क़ा हुए तथा कुछ को मस्नवी रूमी के शे'र ख़ुदा की ओर से बतौर इल्हाम हृदय पर डाले गए तो यह वर्णन एक पृथक पुस्तक चाहता है और मैं जानता हूं कि जिस व्यक्ति को इस कूचे से थोड़ा सा भी ज्ञान होगा वह कभी इस बात को मुख पर नहीं लाएगा कि ख़ुदा के कलाम को मनुष्य के कलाम से भावसाम्य नहीं हो सकता, अपितु प्रत्येक व्यक्ति जो शरीअत के भाग का कुछ ज्ञान रखता है वह ऐसे वाक्य को कुफ्र का कारण समझेगा। क्योंकि इस आस्था से पवित्र क़ुर्आन से इन्कार करना अनिवार्य आता है। यहां एक समस्या भी है। हम चाहते हैं कि उसको भी हल कर दें। वह यह है कि यदि यह वैध है कि किसी मनुष्य के कलाम से ख़ुदा के कलाम का भावसाम्य (तवारुद) हो तो ऐसा होना पवित्र क़ुर्आन के चमत्कार होने का खण्डन करता है। परन्तु जैसा कि तफ़्सीर-ए-कबीर के लेखक तथा अन्य व्याख्याकारों ने लिखा है कि कोई आपत्ति का स्थान नहीं क्योंकि इतने थोड़े कलाम पर चमत्कार का आधार नहीं अन्यथा पवित्र क़ुर्आन के वाक्य भी वही हैं जो अन्य अरबों के मुख से निकले थे। चमत्कारी रूप पैदा होने के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा का कलाम कम से कम उस सूरह के बराबर हो जो पवित्र क़ुर्आन में सब से छोटी सूरह है या कम से कम दस आयतें हों क्योंकि इतनी मात्रा को पवित्र क़ुर्आन ने चमत्कार ठहराया है, परन्तु मैं कहता हूं कि यदि किसी व्यक्ति का कलाम ख़ुदा के कलाम में बतौर वह्यी के सम्मिलित हो जाए तो वह बहरहाल चमत्कार का रूप धारण कर सकता है। उदाहरणतया ख़ुदा की यही वह्यी - जब लबीद[रज़ि.] के मुख से शे'र के तौर पर निकली तो यह चमत्कार न थी परन्तु जब वह्यी के तौर पर प्रकट हुई तो अब चमत्कार हो गई। क्योंकि लबीद एक पूर्वकालिक घटना की स्थिति प्रस्तुत करता है जिसका वर्णन करना मानव-शक्ति के अन्दर सम्मिलित है किन्तु अब ख़ुदा तआला लबीद के कलाम से अपनी वह्यी का भावसाम्य करके भविष्य

की एक महान घटना की सूचना देता है जो मानव-शक्तियों से बाहर है। अत: वही कलाम जब लबीद की ओर सम्बद्ध किया जाए तो चमत्कार नहीं है। परन्तु जब ख़ुदा तआला की ओर सम्बद्ध किया जाए तो निस्सन्देह चमत्कार है। आज से एक वर्ष पूर्व इस बात को कौन जानता था कि इस देश का एक भाग सख़्त भूकम्प के कारण तबाह और वीरान हो जाएगा। यह किसको ख़बर थी कि इतने शहर और देहात सहसा पृथ्वी में धंस कर समस्त इमारतें मिट जाएंगी और इस पृथ्वी की स्थिति ऐसी हो जाएगी जैसे उसमें कभी कोई इमारत न थी। अत: इस बात का नाम तो चमत्कार है कि कोई ऐसी बात प्रकट हो जो इससे पूर्व किसी के विचार और कल्पना में न थी तथा संभावित तौर पर भी उसकी ओर किसी का विचार न था। क्या यह सच नहीं है कि इस देश के निवासियों ने इस भीषण भूकम्प को बड़े आश्चर्य की दृष्टि से देखा और उसे एक असाधारण तथा अनहोनी बात एवं प्रलय का नमूना ठहराया है ? क्या यह सच नहीं है कि यूरोप के अन्वेषकों ने यह निर्णय कर दिया है कि इस देश के इतिहास पर सोलह सौ वर्ष तक दृष्टि डाल कर सिद्ध होता है कि इससे पूर्व ऐसा भयानक तथा विनाशकारी भूकम्प इस देश में कभी नहीं आया। इसलिए अब वह्यी ने एक लम्बी अवधि पूर्व ऐसी असाधारण घटना की सूचना दी, क्या यह सूचना चमत्कार नहीं है ? क्या यह मानव-शक्तियों के अन्दर सम्मिलित है[1]। जिस

---

1 आक्षेपक साहिब ने जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं पैसा अख़बार में यह आक्षेप प्रकाशित किया है कि भविष्यवाणी - عَفَتِ الدّیار محلّھا و مقامھا में भूकम्प की कहां चर्चा है, हालांकि भूकम्प की चर्चा इस भविष्यवाणी से पांच माह पूर्व उसी अख़बार में प्रकाशित हो चुकी है तथा यह भविष्यवाणी उसी भूकम्प की विशेषताओं का वर्णन है। हमारे विरोधियों की यह सत्यनिष्ठा और ईमानदारी तथा यह बुद्धि और यह समझ है। क्या इन लोगों में कोई भी ऐसा मनुष्य नहीं कि अकेले में उस व्यक्ति को फटकारे तथा उसके कान खींचे कि पब्लिक को ऐसा धोखा क्यों दिया जबकि उसको भली भांति ज्ञात था कि अलहकम 24 दिसम्बर 1903 ई. में भूकम्प की भविष्यवाणी स्पष्ट शब्दों में

देश के लोगों ने अपितु उनके बाप-दादों ने भी लगभग दो हज़ार वर्ष[1] तक एक घटना को न देखा हो न सुना हो और न उनके विचार एवं गुमान में हो कि ऐसी घटना होने वाली है या संभावित है। फिर यदि कोई भविष्यवाणी घटना की सूचना दे और वह घटना यथावत् प्रकट हो जाए तो वह ख़बर न केवल चमत्कार कहलाएगी अपितु प्रथम श्रेणी का चमत्कार होगा।

फिर हम मूल उद्देश्य की ओर लौटते हुए लिखते हैं कि आक्षेपक ने एक महान भविष्यवाणी की श्रेष्ठता दूर करने के लिए और उसको समस्त लोगों की दृष्टि में निकृष्ट और अधम ठहराने के लिए इंजील की उस निरर्थक भविष्यवाणी से उसको समानता दी है जिसमें मात्र साधारण शब्दों में उल्लेख है कि भूकम्प आएंगे। किन्तु जो व्यक्ति तनिक आंख खोल कर मेरे विज्ञापनों की इबारत को पढ़ेगा उसे खेद के साथ कहना पड़ेगा कि आक्षेपक ने अकारण प्रकाशमान दिन पर पर्दा डालना चाहा है और एक भारी बेईमानी से काम लिया है। उसने मेरे विज्ञापनों को पढ़ लिया है तथा उसे भली भांति ज्ञान था कि मेरी भविष्यवाणी के शब्द जो भूकम्प के बारे में वर्णन किए गए हैं वे इंजील के शब्दों की तरह सुस्त और साधारण नहीं हैं तथापि उसने जानबूझ कर हठधर्मी को धारण कर लिया। किसे ज्ञात नहीं कि अरबी इल्हाम अर्थात् عفت الديار محلها ومقامها एक ऐसी चौंका देने वाली ख़बर भविष्यवाणी के तौर पर

मौजूद है जिसके भयावह परिणाम इल्हाम عفت الديار में वर्णन किए गए हैं और ये दोनों भविष्यवाणियां स्पष्ट और साफ शब्दों में "मवाहिबुर्रहमान" पृष्ठ-86 में मौजूद हैं जिसको प्रकाशित हुए ढाई वर्ष हो चुके हैं। (इसी से)

1 अख़बार सिविल मिलिट्री गज़ट में यह बात छान-बीन के बाद प्रकाशित की गई है कि हिन्दुओं का मन्दिर जो कांगड़ा में भूकम्प से मिट गया है यह मंदिर दो हज़ार वर्ष से चला आता था। अत: यदि ऐसा भूकम्प इससे पूर्व आया होता तो ये इमारतें पहले से ही मिट जातीं। (इसी से)

वर्णन करता है जिससे शरीर थरथराने लगें। क्या यह एक साधारण बात है कि शहर और देहात पृथ्वी में धंस जाएंगे। उर्दू में स्पष्ट किया गया है कि वह भूकम्प का धक्का होगा। देखो अख़बार अलहकम दिनांक 24 दिसम्बर 1903 ई. पृष्ठ-15, कालम-2 और फिर 1901 ई. में जो पत्रिका 'आमीन' प्रकाशित की गई थी उसमें लिखा गया है कि वह ऐसी घटना होगी कि उससे प्रलय याद आ जाएगी तथा[1] अलहकम 24 मार्च 1904 ई. में प्रकाशित की गई है कि झुठलाने वालों को एक निशान दिखाया जाएगा। फिर विज्ञापन 'अलइंज़ार' में लिखा है कि आने वाला भूकम्प प्रलय जैसा भूकम्प होगा। फिर 'अन्निदा' में लिखा है कि आने वाले भूकम्प से पृथ्वी उथल-पुथल हो जाएगी। फिर उसी में लिखा है कि यह महान घटना प्रलय की घटना को स्मरण कराएगी, फिर इसी से ख़ुदा तआला कहता है कि मैं तेरे लिए पृथ्वी पर उतरूंगा ताकि अपने निशान दिखाऊं। हम तेरे लिए भूकम्प का निशान दिखाएंगे और वे इमारतें जिनको लापरवाह लोग बनाते हैं या भविष्य में बनाएंगे गिरा देंगे तथा मैं वह निशान प्रकट करूंगा जिससे पृथ्वी कांप उठेगी। तब वह दिन संसार के लिए एक मातम का दिन होगा। फिर उस विज्ञापन में जिसका शीर्षक है "भूकम्प की ख़बर तीसरी बार" आने वाले भूकम्प के बारे में यह इबारत लिखी है कि वास्तव में यह सच है तथा बिल्कुल सच है और वह भूकम्प इस देश पर आने वाला है जो पहले किसी आंख ने नहीं देखा और न किसी कान ने सुना और न किसी हृदय में गुज़रा। अत: ईमानदारी से कहो कि इंजील में भूकम्प के बारे में इस प्रकार की इबारतें कहां हैं और यदि हैं तो वे प्रस्तुत करनी चाहिएं अन्यथा ख़ुदा तआला से भय करके इस सच को छिपाने को त्याग देना चाहिए।

उसका कथन - अनुवाद में भूकम्प का शब्द भी सम्मिलित कर दिया ताकि

---

1 ऐसा ही मेरी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' प्रकाशित 1902 ई. में एक सख़्त भूकम्प की सूचना है जिससे इमारतें गिरेंगी और उसमें न केवल इमारतें ध्वस्त होने की चर्चा है अपितु स्पष्ट शब्दों में भूकम्प की चर्चा है। देखो मवाहिबुर्रहमान पृष्ठ-86 (इसी से)

असभ्य लोग यह समझें कि इल्हाम में भूकम्प का शब्द भी मौजूद है।

मेरा कथन - हे अंधे साहिब ! भविष्यवाणी के सामूहिक शब्द ये हैं - "भूकम्प का धक्का **عفت الديار محلها و مقامها**" देखो अख़बार अलहकम 1903 ई. से 1904 ई.। इन दोनों के अर्थ यह हुए कि एक भूकम्प का धक्का लगेगा और उस धक्के से उस देश का एक भाग तबाह हो जाएगा तथा इमारतें गिर जाएंगी तथा मिट जाएंगी। अब बताओ कि क्या हमने मूर्ख लोगों को धोखा दिया है[1] ? या आप असभ्य लोगों को धोखा देते हैं। क्या हमने झूठ बोला है या आप झूठ बोलते हैं ? झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। अख़बार अलहकम मौजूद है उसके दोनों पर्चों को देख लो। यह अख़बार कथित भूकम्प से एक वर्ष पूर्व देश में प्रकाशित हो चुका है। गवर्नमेन्ट में भी पहुंच चुका है। अब बताओ किस द्वेष ने आपको इस झूठ पर तत्पर किया कि आप दावा कर बैठे कि भूकम्प का भविष्यवाणी में वर्णन मौजूद ही नहीं है।

उसका कथन - यह इल्हाम 31 मई 1902 ई. के अलहकम के पृष्ठ कालम 4 पर मौजूद है तथा उसके सामने स्पष्ट तौर पर मोटे कलम से लिखा हुआ है - ताऊन के बारे में

मेरा कथन - इसमें क्या सन्देह है कि यह भूकम्प भी ताऊन का एक परिशिष्ट है और उससे संबंधित है। क्योंकि ख़ुदा तआला ने मुझे बार-बार कह दिया है कि भूकम्प

---

① जैसा कि हम अभी लिख चुके हैं। मेरी पुस्तक 'मवाहिबुर्रहमान' में भी जो 1902 ई. में छप कर प्रकाशित हो गई थी स्पष्ट शब्दों में यह भविष्यवाणी है और भूकम्प का नाम लेकर चर्चा मौजूद है फिर इस स्थिति में मूर्ख तो वे लोग हैं जो इतने स्पष्टीकरण के पश्चात् भी समझते हैं कि भूकम्प की कहां चर्चा है उनको चाहिए कि आंखे खोलकर अख़बार अलहकम 24 दिसम्बर 1903 ई. को पढ़ें और पत्रिका **आमीन** पढ़ें, जो 1901 ई. में प्रकाशित हुई थी और फिर 'मवाहिबुर्रहमान' के पृष्ठ 86 को पढ़ें जो 1902 ई. में प्रकाशित हुई थी और फिर अपनी ईमानी अवस्था पर आंसू बहाएं। (इसी से)

और ताऊन दोनों तेरे समर्थन के लिए हैं। अत: भूकम्प वास्तव में ताऊन से एक सम्बन्ध रखता है क्योंकि ताऊन भी मेरे लिए ख़ुदा तआला की ओर से एक निशान है और इसी प्रकार भूकम्प भी। इसलिए इसी कारण से दोनों का परस्पर संबंध है और दोनों एक ही बात के समर्थक हैं तथा यदि हृदय में यह भ्रम पैदा हो कि इस वाक्य से अभिप्राय वास्तव में ताऊन ही है तो यह भ्रम वास्तव में विकृत है क्योंकि जो वस्तु किसी वस्तु से संबंध रखती है वह वास्तव में उसकी बिल्कुल यथावत् नहीं हो सकती। इसके अतिरिक्त यहां ठोस सन्दर्भ मौजूद है कि इस वाक्य से अभिप्राय वास्तव में ताऊन नहीं है अर्थात् जबकि पूर्व यह इल्हाम मौजूद है कि "भूकम्प का धक्का" तो फिर थोड़ा न्याय और बुद्धि के हस्तक्षेप से स्वयं विचार कर लेना चाहिए कि इमारतों का गिरना और बस्तियों का मिटना क्या यह ताऊन की विशेषताओं में से हो सकता है अपितु ये तो भूकम्प की विशेषताओं में से है। इतनी अधिक शरारत एक संयमी मनुष्य में नहीं हो सकती कि जो अर्थ एक इबारत के शब्दों से पैदा हो सकते हैं और जो उसके अगले-पिछले भाग से प्रकट हो रहे हैं और जो अर्थ घटना के प्रकट होने से खुल गए हैं तथा मानव अन्तरात्मा ने स्वीकार कर लिया है कि जो कुछ प्रकट हुआ है वह वही है जो عَفَتِ الدِّيَارُ के इल्हाम से निकलता है। फिर उसके इन्कार पर आग्रह करे। यदि मान भी लें कि स्वयं मुल्हम ने विवेचना की ग़लती से इस घटना को जो عَفَتِ الدِّيَارُ के इल्हाम से प्रकट होता है ताऊन ही समझ लिया था तो उसकी यह ग़लती कि घटना से पूर्व है विरोधी के लिए कोई तर्क नहीं। संसार में कोई ऐसा नबी या रसूल नहीं गुज़रा जिसने अपनी किसी भविष्यवाणी में विवेचन की ग़लती न की हो। तो क्या वह भविष्यवाणी आपके विचार में ख़ुदा तआला का एक निशान न होगा ? यदि यही कुफ्र हृदय में है तो दबी ज़ुबान से क्यों कहते हो, पूरे तौर पर इस्लाम पर आक्रमण क्यों नहीं करते। क्या किसी एक नबी का नाम ले सकते हो जिसने कभी विवेचन के तौर पर अपनी किसी भविष्यवाणी का अर्थ निकालने में ग़लती नहीं की। तो फिर बताओ कि यदि मान भी लें कि संबंधित शब्द के अर्थ बिल्कुल

ताऊन ही है तो क्या यह आक्रमण समस्त नबियों पर नहीं। عفت الديار के इल्हामी वाक्य पर दृष्टि डाल कर साफ स्पष्ट है कि इस वाक्य से अभिप्राय यह है कि वह ऐसी घटना होगी कि देश के एक भाग की इमारतें गिर जाएंगी और मिट जाएंगी। स्पष्ट है कि ताऊन का इमारतों पर कुछ प्रभाव नहीं होता। इसलिए यदि एडीटर अख़बार अलहकम ने ऐसा लिख भी दिया कि यह वाक्य ताऊन से संबंधित है और संबंध से वह अर्थ समझे जाएं जो आक्षेपक ने किए हैं तो इस बारे में अन्ततः यह कहा जाएगा कि एडीटर अलहकम ने ऐसा लिखने में ग़लती की तथा ऐसी ग़लती स्वयं अंबिया अलैहिस्सलाम से भविष्यवाणियों के समझने में कई बार होती रही है। जैसा कि ذهب وهلى की हदीस बुख़ारी में मौजूद है और उसके शब्द ये हैं -

قال ابو موسٰى عن النبى صلى الله عليه وسلم رئيت فى المنام انّى اهاجر من مكة الٰى ارض بها نخل فذهب وهلى الٰى انها اليمامة اوهجر فاذا هى المدينة يثرب (بخارى جلد ثانى باب هجرة النّبى صلّى الله عليه و سلم واصحابه الى المدينه)[1]

अर्थात् अबू मूसा ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम से रिवायत की है कि आप[स.] ने कहा कि मैंने स्वप्न में देखा कि मैंने मक्का से एक ऐसी पृथ्वी की ओर हिजरत (प्रवास) की है जिसमें खजूरों के वृक्ष हैं। अतः मेरा विचार इस ओर गया कि वह पृथ्वी यमामा या हिज्र की पृथ्वी है परन्तु वह मदीना निकला अर्थात् यसरब। अब देखो आंहज़रत[स.अ.व.] जिनका स्वप्न वह्यी है और जिनकी विवेचना समस्त विवेचनाओं से अधिक उचित, सबसे दृढ़ और सर्वाधिक सही है अपने स्वप्न की यह व्याख्या की थी कि यमामा या हिज्र की ओर हिजरत होगी, परन्तु वह ताबीर सही नहीं निकली। अतः क्या यह भविष्यवाणी आपके विचार में भविष्यवाणी नहीं है ? और क्या आप तैयार हैं कि

---

① बुख़ारी किताबु मनाक़िबुल अन्सार बाब हिजरतुन्नबिय्ये सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम व अस्हाबिही इलल मदीना (प्रकाशक)

आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम पर भी एक प्रहार कर दें। इसलिए जबकि विवेचना की ग़लती में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम भी सम्मिलित हैं तो फिर आप का यह क्या ईमान है कि द्वेष के जोश में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के सम्मान की भी कुछ परवाह नहीं करते तथा ख़ुदा तआला से कुछ शर्म नहीं। फिर सच्चे न्यायवान बन कर और ख़ुदा के भय का ध्यान रखकर عَفَتِ الدِّيَار के शब्दों की ओर देखना चाहिए कि उसके शब्द ताऊन पर चरितार्थ होते हैं या भूकम्प पर। क्या यह ईमानदारी है कि जबकि वादा दी गई घटना के प्रकटन ने عفت الديار के अर्थों को स्वयं स्पष्ट कर दिया फिर भी इस से अभिप्राय ताऊन ही समझें। इस भविष्यवाणी के शब्द स्पष्ट तौर पर पुकार रहे हैं कि वह एक घटना है जिस से इमारतें गिर जाएंगी और देश की बस्तियों का एक भाग मिट जाएगा। यदि आप अरबी नहीं जानते तो किसी अरबी जानने वाले से पूछ लें कि **عفت الديار محلها و مقامها** के क्या अर्थ हैं और यदि किसी पर विश्वास न हो तो इस चरण के अर्थ जो व्याख्याकार ने लिखे हैं वह देख लें और वह अर्थ ये हैं -

اِنْدَرَسَتْ دِيَارُ الْاَحْبَابِ وَانْمَحٰى مَاكَانَ مِنْهَا لِلْحَوْلِ وَمَا كَانَ لِلْاِقَامَةِ

(देखो मुअल्लक़ा चतुर्थ व्याख्या चरण प्रथम)

अर्थात् मित्रों की बस्तियां और उनके घर मिट गए और वे इमारतें मिट गईं जो कुछ दिनों के ठहरने के लिए थीं जैसे सराय या जातियों के दर्शन स्थल तथा वे भवन भी मिट गए जो स्थायी निवास के थे। अब बताइए ये अर्थ ताऊन पर कैसे चरितार्थ हो सकते हैं तथा ताऊन का भवनों के गिरने से क्या संबंध है। इन अर्थों में और ख़ुदा तआला की वह्यी के अर्थों में केवल भूतकाल और भविष्यकाल का अन्तर है। अर्थात् लबीद ने इस स्थान पर भूतकाल के अर्थ दृष्टिगत रखे और ख़ुदा तआला के कलाम में यहां भविष्य के अर्थ हैं जिसका तात्पर्य यह है कि भविष्य में देश के भवनों का एक भाग तथा बस्तियां मिट जाएंगी। न अस्थायी निवास स्थल शेष रहेंगे न स्थायी निवास स्थल। अब बताओ कि क्या ये अर्थ ताऊन पर चरितार्थ हो सकते हैं। अब हठधर्मी करने का क्या लाभ ?

अकारण के हठ दो ही प्रकार के लोग किया करते हैं या तो अत्यन्त मूर्ख या अत्यन्त बेईमान और पक्षपाती। फिर यदि आप वही आरोप प्रस्तुत करें जिसका पहले भी उत्तर दिया गया है अर्थात् यह कि यह भूतकाल की क्रिया है और लबीद[रजि.] ने भूतकाल के अर्थों पर प्रयुक्त किया है। अत: इसका उत्तर पहले भी गुज़र चुका है कि अब यह कलाम लबीद का नहीं है अपितु ख़ुदा तआला का कलाम है। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में अनेकों स्थानों पर महान वैभवशाली भविष्यवाणी को भूतकाल के शब्द से वर्णन किया है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - تَبَّتۡ یَدَاۤ اَبِیۡ لَهَبٍ وَّ تَبَّ مَاۤ اَغۡنٰی عَنۡهُ مَالُهٗ وَمَا كَسَبَ[1] (अल्लहब - 2,3) अब थोड़ा सा न्याय से काम लेकर उत्तर दो कि इस भविष्यवाली के शब्द भूतकाल की क्रिया में हैं या भविष्यकाल की। बुद्धिमान के लिए तो यह एक बहुत लज्जा का अवसर है अपितु ऐसी ग़लती मरने का स्थान हो जाती है जबकि एक व्यक्ति ज्ञान के दावे के बावजूद एक व्यापक बात का इन्कार करे, किन्तु मैं समझ नहीं सकता कि इन उत्तरों को परखने के पश्चात् आप की क्या दशा होगी ? मनुष्य को ऐसा ढंग अपनाने का क्या लाभ जिस से एक ओर सच्चाई को त्याग कर ख़ुदा तआला को अप्रसन्न करे तथा दूसरी ओर अकारण हठ करके शर्मिंदगी तथा बदनामी उठाए। ख़ुदा तआला के कलाम में जो अधिकतर भविष्यवाणियों को भूतकाल की क्रिया में वर्णन किया गया है। इसकी वास्तविक दार्शनिकता यह है कि प्रत्येक घटना जो पृथ्वी पर होने वाली है वह आकाश पर पहले ही हो चुकी होती है। अत: आकाश की दृष्टि से जैसे वह घटना भूतकाल के युग से संबंध रखती है। इसी आधार पर यह बात है कि सामान्य लोगों को भी जो सैकड़ों सच्चे स्वप्न आते हैं तो उन स्वप्नों में भी भविष्य में

---

1 बाइबल में भी अनेकों स्थान पर भावी घटनाओं को भूतकालिक क्रिया में वर्णन किया गया है जैसा कि यह वाक्य बाबिल गिर पड़ा, बाबिल गिर पड़ा। देखो यसइयाह बाब-21, आयत-5, और जैसा कि यह वाक्य - हाय नबूपर कि वह वीरान हो गया। क़रीतीम बदनाम हुआ। देखो यरमियाह बाब-48, आयत-1, (इसी से)

होने वाली बात को भूतकाल के तौर पर वर्णन किया जाता है। उदाहरणतया किसी के घर में जो लड़का पैदा होता है तो दिखलाया जाता है कि लड़का पैदा हो गया या लड़की पैदा हो गई या उसको ऐसी वस्तु मिल गई जिस की ताबीर लड़का है और भविष्यवाणियों को भूतकाल के शब्द पर लाना और भविष्य के अर्थों पर प्रयोग करना न केवल पवित्र क़ुर्आन में है अपितु पहली पुस्तकों में भी प्रचुरता के साथ यह मुहावरा मौजूद है।

عن انس رضی اللہ عنہ قال، قال النبی صلّی اللہ علیہ وسلم خربت خیبر۔ انا اذا نزلنا بساحۃ قوم فساء صباح المنذرین

ख़ैबर पर विजय पाने से पूर्व आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा था कि ख़ैबर ख़राब हो गया और हम जब किसी जाति के आंगन में उतरें। अतः उस जाति की अशुभ सुब्ह है जो डराई गई। इसलिए आप[स.] ने इस स्थान पर भूतकाल की क्रिया का प्रयोग किया और अभीष्ट यह था कि भविष्य में ख़राब होगा।

निष्कर्ष यह कि यह एक भविष्यवाणी थी जो भूतकाल की क्रिया में की गई थी और वास्तव में भविष्यकाल के अर्थ रखती थी। अतः इसी प्रकार यह भी एक भविष्यवाणी है। अर्थात् **عفت الدیار محلها و مقامها** जो भूतकाल की क्रिया में है और अर्थ भविष्यकाल के रखती है और जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं कि **الدیار** से अभिप्राय सामन्यतः **دیار** अभिप्राय नहीं लिया अपितु मित्रों के दियार अभिप्राय लिया है तथा इस स्थान अर्थात् ख़ुदा के कलाम में जो **عفت الدیار محلها و مقامها** है महल से अभिप्राय हिन्दुओं के प्राचीन तीर्थ स्थान हैं अर्थात् वे मन्दिर हैं जो प्राचीन युग से धर्मशाला और कांगड़ा में मौजूद थे, जिनकी नींव का युग कम से कम सोलह सौ वर्ष सिद्ध है और मक़ाम से अभिप्राय वे भवन हैं जो स्थायी निवास के लिए इस क्षेत्र में निर्मित किए गए थे और ख़ुदा तआला ने इस भविष्यवाणी में यह सूचना दी थी कि वह मन्दिर अर्थात् बुतख़ाने भी ध्वस्त हो जाएंगे जिनका ध्वस्त होना एकेश्वरवाद के प्रचार के लिए बतौर भूमिका के है तथा दूसरे भवन भी गिर जाएंगे। अतः ऐसा ही घटित

हुआ। अब जबकि प्रत्यक्ष शब्दों की दृष्टि से भविष्यवाणी प्रकट हो गई तो अब उस से इन्कार करना झक मारना है। प्रत्यक्ष शब्द अधिकार रखते हैं कि अर्थ करने में उनको दृष्टिगत रखा जाए और प्रत्यक्ष से दृष्टि फेरना उस समय सर्वथा मूर्खता है जबकि प्रत्यक्ष रूप में भविष्यवाणी के शब्द पूरे हो जाएं। यदि यह वाक्य मनुष्य का बनाया हुआ झूठ होता अर्थात् यह वाक्य कि عفت الديار محلها و مقامها और इस से अभिप्राय ताऊन होती तो ऐसा झूठ घड़ने वाला यह वाक्य प्रयोग न कर सकता क्योंकि उसको बुद्धि रोकती कि ताऊन के बारे में वह शब्द प्रयोग करे जो ताऊन पर चरितार्थ नहीं आ सकते क्योंकि ताऊन से भवन नहीं गिरते और यदि विवेचना के तौर पर समय से पूर्व सही अर्थ न किए गए तो इसका नाम विवेचना की ग़लती है और समय के पश्चात् जब वास्तविकता खुल गई तब सही अर्थों को न मानना इस का नाम शरारत और बेईमानी और हठधर्मी है।

उसका कथन - हम तो आप से वह इल्हाम पूछते हैं जिसमें आप ने यह ख़बर दी हो कि भूकम्प आएगा, परन्तु ऐसा इल्हाम आप प्रलय तक प्रस्तुत नहीं कर सकते।

मेरा कथन - मैं कहता हूं कि जिस प्रलय को आप दूर समझते थे वह प्रलय (क़यामत) तो आप पर आ गई। देखो अख़बार अलहकम पृष्ठ-15, कालम-2 दिनांक 24 दिसम्बर 1903 ई. जिसमें व्याख्या कर दी गई है कि भूकम्प का धक्का आएगा और फिर पांच माह पश्चात् 31 मई 1904 ई. में इस धक्के की श्रेष्ठता और शक्ति इस ख़ुदा की इस वह्यी में वर्णन की गई है। अर्थात् यह कि عفت الديار محلها و مقامها जिसके अर्थ ये हैं कि वह धक्का ऐसा होगा जिस से इस देश पंजाब के एक भाग की बस्तियां नष्ट हो जाएंगी तथा भवनों का नामोनिशान नहीं रहेगा चाहे वे अस्थायी निवास थे। जैसा कि धर्मशाला और कांगड़ा में हिन्दुओं के पूजा के मंदिर थे और चाहे स्थायी निवास स्थान थे जैसा कि धर्मशाला और कांगड़ा इत्यादि के स्थायी निवास स्थल थे। अब आप बताइये कि यह क़यामत (प्रलय) जिसको आप दूर समझते थे तथा कहते थे

कि ऐसा इल्हाम तुम क़यामत तक प्रस्तुत नहीं कर सकते वह क़यामत आप पर आ गई या नहीं ? प्रत्येक समझ सकता है कि उस क़यामत ने आपको अवश्य पकड़ लिया। क्योंकि जिस भूकम्प की भविष्यवाणी से आप इन्कारी हैं उसका स्पष्ट तौर पर वर्णन 24 दिसम्बर 1903 ई. के अख़बार अलहकम के पृष्ठ 15, कालम 2 में मौजूद है। थोड़ी आंखें खोलो और पढ़ लो और किसी चपनी में पानी डालकर डूब मरो। यही उपरोक्त कथित भूकम्प है जिसकी विशेषताएं प्रकट करने के लिए ख़ुदा की वह्यी **عفت الدیار** पहली वह्यी के बाद उतरी। तो क्या अब तक आप पर क़यामत नहीं आई ? यदि कहो कि क़यामत को तो लोग मर जाएंगे और मैं अब तक जीवित मौजूद हूं तो इसका उत्तर यह है कि वास्तव में आप अपमान की मृत्यु से मर चुके हैं और यह शारीरिक जीवन रूहानी मृत्यु के पश्चात् कुछ वस्तु नहीं। क्या वह व्यक्ति भी जीवित कहला सकता है जिसने बड़ी धूमधाम से यह दावा किया था कि भविष्यवाणी में भूकम्प की कदापि चर्चा नहीं और बड़े अहंकार से इस बात पर आग्रह किया था कि क़यामत तक तुम ऐसी भविष्यवाणी प्रस्तुत नहीं कर सकते जिसमें भूकम्प की चर्चा हो और फिर उसको दिखाया गया कि वह भविष्यवाणी मौजूद है जिसमें स्पष्ट शब्दों में भूकम्प की चर्चा है जो **عفت الدیار** के इल्हाम से भी पांच माह पूर्व 'अलहकम' में प्रकाशित हो चुकी है और इल्हाम **عفت الدیار محلها و مقامها** उसी कथित भूकम्प की श्रेष्ठता वर्णन करता है कि वह ऐसा होगा। इसलिए इस में दोबारा भूकम्प का शब्द लाने की आवश्यकता न थी।

अब बताओ कि ऐसा जीवन भी क्या ख़ाक जीवन है कि एक बात का प्रलय तक न होने का दावा किया और वह बगल में से ही निकल आई -

بمردی کہ تا زیستن مرد را　　　　به از زندگانی بترکِ حیا
جہنم کزو داد فرقان خبر　　　　بسوزد درو کاذبِ بدگہر

जो व्यक्ति अंधा और मुर्दा न हो समझ सकता है कि इस भविष्यवाणी के लिए

जितनी स्पष्टता और वर्णन शक्ति चाहिए वह सब प्रथम श्रेणी पर इस भविष्यवाणी में मौजूद है अपितु इस से बढ़ कर और इस से इन्कार एक ऐसी हठधर्मी है जिससे स्पष्ट समझा जाता है कि ऐसे व्यक्ति को ख़ुदा पर ईमान ही नहीं और यह कुछ नया ढंग नहीं। पहले युगों में भी वे लोग जिन को सच को स्वीकार करना किसी प्रकार स्वीकार न था यही ढंग अपनाते चले आए हैं।

कदाचित् आप द्वेष के आवेग से यह भी आपत्ति कर दें कि ख़ुदा तआला ने भूकम्प के आने की पांच माह पूर्व ख़बर दी जो अलहकम 24 दिसम्बर 1903 ई. को प्रकाशित हुई और फिर भूकम्प के भीषण होने की निशानियां और उसका भयावह परिणाम पांच माह पश्चात् अपनी वह्यी के द्वारा वर्णन किया। एक साथ वर्णन क्यों न किया, किन्तु यदि आक्षेप करें तो यह आक्षेप भी नया नहीं होगा अपितु वही आक्षेप है जो आज से तेरह सौ वर्ष पूर्व ला'नती अबू जहल तथा लानती अबू लहब ने पवित्र क़ुर्आन पर करते हुए कहा था - لَوْ لَا نُزِّلَ عَلَيْهِ الْقُرْاٰنُ جُمْلَةً وَّاحِدَةً[1] अतः ऐसा आक्षेप हृदयों के एक समान होने में सम्मिलित होगा, जिस से एक मुसलमान को बचना चाहिए।

उसका कथन - आपने उस इल्हाम में यह भी नहीं बताया कि भूकम्प (ज़लज़लः) से अभिप्राय क्या है ?

मेरा कथन - ख़ुदा की वह्यी में प्रत्यक्षतः भूकम्प (ज़लज़लः) का शब्द है परन्तु ऐसा भूकम्प (ज़लज़लः) जो प्रलय का नमूना होगा अपितु प्रलय का ज़लज़लः (भूकम्प) होगा और यह कि उससे हज़ारों भवन गिरेंगे, कई बस्तियां मिट जाएंगी और उसका उदाहरण पूर्वकालीन युगों में नहीं पाया जाएगा और अचानक हज़ारों लोग मर जाएंगे तथा ऐसी घटना होगी जो पहले किसी आंख ने नहीं देखी होगी। अतः इस स्थिति में भवनों का गिरना और हज़ारों लोगों का अचानक मर जाना तथा एक विलक्षण बात का प्रकट होना भविष्यवाणी का मूल उद्देश्य है। यद्यपि भविष्यवाणी के प्रत्यक्ष शब्दों में

---

1 अलफ़ुर्क़ान - 33

ज़लज़ल: (भूकम्प) से अभिप्राय निस्सन्देह भूकम्प ही समझा जाता है, किन्तु ख़ुदा तआला के कलाम के साथ शिष्टाचार इसी बात को चाहता है कि हम मूल उद्देश्य को जो एक विलक्षण बात है दृष्टिगत रखें और भूकम्प के विवरण में हस्तक्षेप न करें कि वह किस प्रकार का होगा और किस रंग का होगा। यद्यपि प्रत्यक्ष शब्द यह प्रकट करते हैं कि वह भूकम्प ही होगा। क्योंकि संभव है कि वह कोई अन्य भयंकर आपदा हो जिसका उदाहरण संसार में पहले नहीं देखा गया तथा भूकम्प की कैफ़ियत और विशिष्टता अपने अन्दर रखती हो। उदाहरणतया धंसने के रूप पर हो और कोई भूकम्प महसूस न हो और पृथ्वी उथल-पुथल हो जाए या कोई अन्य विलक्षण आपदा प्रकट हो जिसकी ओर मानव ज्ञान कभी आगे नहीं निकला। अत: बहरहाल वह चमत्कार है। हां यदि वह भयंकर आपदा प्रकट न हुई जो संसार में एक भूकम्प डाल देगी जो ख़ुदा की वह्यी के प्रत्यक्ष शब्दों की दृष्टि से भूकम्प के रूप में होगी अथवा कोई साधारण बात प्रकट हो जिसको संसार हमेशा देखता है जो विलक्षणता और असाधारण नहीं और जो वास्तव में प्रलय का नमूना नहीं और या वह घटना मेरे जीवन में प्रकट न हुई तो नि:सन्देह नगाड़ा बजा कर मुझे झूठा समझो तथा मुझे झुठलाओ। उस महान घटना का उद्देश्य तो यह है कि प्रलय का नमूना होगी तथा संसार को एक पल में तबाह कर जाएगी और हज़ारों लोगों को हमारी जमाअत में सम्मिलित करेगी।

उसका कथन - आपने अवसर देख कर बराहीन अहमदिया की इबारतों को भी भूकम्प पर चरितार्थ किया, हालांकि उन इबारतों में भूकम्प का वर्णन नहीं।

मेरा कथन - यह उसी प्रकार का आक्षेप है जो इस युग में पक्षपाती पादरी पवित्र क़ुर्आन की इस भविष्यवाणी पर करते हैं -

الٓمّٓ ۚ﴿۲﴾ غُلِبَتِ الرُّوۡمُ ۙ﴿۳﴾ فِیۡۤ اَدۡنَی الۡاَرۡضِ وَ ہُمۡ مِّنۡۢ بَعۡدِ غَلَبِہِمۡ سَیَغۡلِبُوۡنَ ۙ﴿۴﴾ [1]

और कहते हैं कि अवसर देखकर यह भविष्यवाणी अपनी अटकल से आंहज़रत

1 अर्रूम - 2 से 4

सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने स्वयं बनाई और रूमी शासन की विजय की भविष्यवाणी केवल इस विचार से की कि रूमी शक्ति वास्तव में बढ़ी हुई थी, युद्ध सामग्री पूरी थी, सेना अनुभवी एवं बहादुर थी तथा ईरानी शासन की स्थिति इसके विपरीत थी। इसलिए वर्तमान स्थिति को देखकर भविष्यवाणी कर दी। अत: मुझे आश्चर्य है कि पादरियों की आदत और प्रकृति आप में कहां से आ गई। अत्याचारी स्वभाव पादरी पवित्र क़ुर्आन की समस्त भविष्यवाणियों पर यही आक्षेप करते हैं जो आप ने किया। तौब: करो ऐसा न हो कि इस समानता से बढ़कर कोई और उन्नति कर लो तथा अपने आक्षेप को तनिक आंख खोलकर देखो कि बराहीन अहमदिया के पृष्ठ-557 में यह भविष्यवाणी है कि ख़ुदा तआला कहता है कि मैं अपना चमत्कार दिखाऊंगा, अपनी क़ुदरत दिखाकर तुझ को उठाऊंगा, संसार में एक नज़ीर (डराने वाला) आया परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया किन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।

فلمّا تجلّٰی ربّہ للجبل جعلہ دکّا۔ قوۃ الرحمن لِعُبَیْدِ اللہِ الصَّمد

अरबी इल्हाम का अनुवाद यह है -

जब ख़ुदा पर्वत पर झलक दिखाएगा तो उसे टुकड़े-टुकड़े कर डालेगा। ख़ुदा ऐसा करेगा ताकि अपने बन्दे की सच्चाई प्रकट करे।

अब विचार करके देखो कि मैंने इसमें अपनी ओर से क्या बनाया। इस स्थान पर ख़ुदा तआला स्वयं एक झलक दिखाने का वादा करता है। जैसा कि तूर पर्वत पर मूसा के लिए चमकार प्रकट हुई और एक ऐसी क़ुदरत के प्रदर्शन का वादा करता है जो विलक्षण तथा तेरी प्रतिष्ठा का कारण होगी, और फिर तीसरी बार यह वादा किया है कि ख़ुदा बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट करेगा। फिर अन्त में इस शक्तिशाली आक्रमण अपनी चमकार तथा शक्ति प्रदर्शन की व्याख्या करता है जिसका ऊपर वर्णन किया है तथा कहा है कि ख़ुदा एक विशेष पर्वत पर तजल्ली (झलक) करेगा और उसके टुकड़े-टुकड़े कर देगा। अब यदि आपकी आंख पक्षपात से कुछ देख नहीं सकती तो किसी

अन्य न्यायप्रिय से पूछ लो कि इस इल्हामी इबारत में कि महान निशान का वादा दिया गया है या विशेष तौर पर हमारी बनावट है और यदि वादा है तो क्या भविष्यवाणी के शब्दों से यही निकलता है कि निशान के तौर पर पर्वत टुकड़े-टुकड़े किया जाएगा या कुछ और निकलता है। रहा यह आक्षेप कि उस समय हमारा मस्तिष्क उस ओर नहीं गया कि वास्तव में पर्वत टुकड़े-टुकड़े हो जाएगा। यह ऐसी ही स्थिति है जैसे आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का मस्तिष्क उस ओर न गया कि जो हिजरत का स्थान कश्फ़ी तौर पर दिखाया गया कि वह मदीना है यमामा या हिज्र नहीं है और जैसा कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लमके मस्तिष्क का उस ओर न जाना कि हुदैबिया वाली यात्रा में मक्का के अन्दर नहीं जा सकेंगे। अतः यदि आप के ऐसे ही आक्षेप हैं जो इस युग के अधम काफिर आंहज़रतसल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की भविष्यवाणियों पर करते हैं तो मुझे चिन्ता लग गई है कि ऐसा न हो कि आप किसी दिन इस्लाम से ही हाथ धो बैठें।

अतः स्मरण रहे कि ख़ुदा तआला ने उपरोक्त भविष्यवाणी में जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 557 में मौजूद है, एक स्पष्ट संकेत के साथ ज़लज़लः (भूकम्प) का वर्णन कर दिया है। क्योंकि आयत فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ[1] उस अवसर की आयत है जबकि ख़ुदा तआला ने तूर पर्वत पर भूकम्प लाकर उसको टुकड़े-टुकड़े कर दिया था। जैसा कि यह वर्णन विस्तृत तौर पर तौरात में मौजूद है। अतः इस स्थिति में आप की इस हरकत का नाम पक्षपात रखें या मूर्खता रखें ? कि आप कहते हैं कि इन इबारतों में ज़लज़लः (भूकम्प) की कहीं चर्चा नहीं। अतः तुम्हें इस बात से भी इन्कार करना चाहिए कि तूर पर्वत भी भूकम्प से टुकड़े-टुकड़े हो गया था।

उसका कथन - عفت الدیار के शे'र के चरण के ये अर्थ हैं कि पूर्वकालीन युग में मकान बरबाद हो गए थे।

मेरा कथन - अल्हम्दो लिल्लाह ! यह तो आपने स्वीकार कर लिया कि عفت

---

1 अलआराफ़ : 144

الديار محلها و مقامهاك के यही अर्थ हैं कि मकानों का गिर जाना तथा बरबाद हो जाना। शेष रहा यह कि आप عفت के शब्द को भूतकाल के अर्थों तक सीमित रखते हैं। इस विचार के खण्डन में हम पवित्र क़ुर्आन के उदाहरण प्रस्तुत कर चुके हैं अपितु इसके लिए तो सम्पूर्ण अरब के निवासी हमारे गवाह हैं। अब बताइए क्या अब भी यह भविष्यवाणी विलक्षण है या नहीं ? यदि यह कहो कि इसमें कोई समय नहीं बताया गया, तो इसका उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला जिन भविष्यवाणियों में यह चाहता है कि उनका समय गुप्त रखा जाए उनमें वह कदापि नहीं बताता कि यह भविष्यवाणी अमुक समय में पूरी होगी। अत: जबकि ख़ुदा तआला स्पष्ट शब्दों में कहता है कि भूकम्प की भविष्यवाणी ऐसे समय में प्रकट होगी जबकि किसी को ख़बर नहीं होगी तथा अचानक वह घटना प्रकट होगी। अत: फिर उस घटना का समय बताया अपने ही कथन का विरोध है। देखो विज्ञापन "अन्निदा" पृष्ठ-14, यदि कहो कि निश्चित किए बिना भविष्यवाणी में विशेषता क्या हुई। यों तो कभी-कभी संसार पर कोई घटना आ जाती है। इसका उत्तर यह है कि यह निश्चय पर्याप्त है कि अल्लाह तआला कहता है कि मेरे जीवन में मेरे सत्यापन के लिए यह घटना होगी तथा उस समय के करोड़ों लोग जीवित होंगे जो यह घटना देख लेंगे तथा घटना ऐसी होगी कि इस देश में पूर्व युगों में उसका उदाहरण नहीं होगा। अत: यह निश्चय पर्याप्त है कि वह प्रलयंकर भूकम्प मेरे जीवन में और अधिकांश विरोधियों के जीवन में आएगा। स्मरण रखो कि तुम्हारी भांति मक्का के विरोधियों ने भी مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ कह कर समय का निर्धारण चाहा था और उनको समय नहीं बताया गया था।

उसका कथन - जो अख़बार इस्लामी मामलों से सहानुभूति रखते हैं उनको चाहिए कि इस लेख को अपने अख़बारों में नक़ल करके लोगों को अवगत कर दें कि ये विज्ञापन झूठे हैं। मिर्ज़ा ने कोई भविष्यवाणी नहीं की थी।

मेरा कथन - अब इसका इसके अतिरिक्त क्या उत्तर दिया जाए कि झूठों पर ख़ुदा

की ला'नत। रहा यह कि अख़बार झुठलाने का लेख प्रकाशित कर दें तो इसकी उस सामर्थ्यवान को कुछ परवाह नहीं जिसने मुझे भेजा है। संसार के कीड़े आकाशीय इरादों में कौन सी हानि पहुंचा सकते हैं। इससे पूर्व अबू जहल 'उस पर ला'नत हो' ने अरब की समस्त जातियों को उकसाया था कि यह व्यक्ति (आंहज़रत[स.अ.व.]) झूठा दावा करता है और मूर्ख लोगों को अपने साथ एकत्र कर लिया था। फिर विचार करो कि उसका परिणाम क्या हुआ ? क्या ख़ुदा तआला का इरादा उसकी शरारतों से रुक गया था अपितु उस दुर्भाग्यशाली का ख़ुदा तआला ने बद्र के युद्ध में निर्णय कर दिया तथा ख़ुदा तआला के सच्चे नबी का धर्म सम्पूर्ण विश्व में फैल गया। इसी प्रकार मैं सच-सच कहता हूं कि कोई अख़बार इस इरादे को जो आकाश पर किया गया है रोक नहीं सकता। ख़ुदा का प्रकोप मनुष्य के प्रकोप से बढ़कर है। यह मुझ पर आक्रमण नहीं अपितु उस ख़ुदा पर आक्रमण है जिसने पृथ्वी और आकाश को पैदा किया। वह चाहता है कि पृथ्वी को पाप से पवित्र करे, फिर उन दिनों को दोबारा लाए जो सच्चाई, ईमानदारी और एकेश्वरवाद के दिन हैं परन्तु वे हृदय जो संसार से प्रेम करते हैं वे नहीं चाहते कि ऐसे दिन आएं। हे मूर्ख ! क्या तू ख़ुदा तआला से मुक़ाबला करेगा। क्या तेरी सामर्थ्य में है कि तू उस से लड़ाई कर सके। यदि यह कारोबार मनुष्य का होता तो तेरे मुकाबले की क्या आवश्यकता थी ? उसको तबाह करने के लिए ख़ुदा पर्याप्त था। किन्तु लगभग पच्चीस वर्ष से यह सिलसिला चला आता है और प्रतिदिन उन्नति पर है और ख़ुदा ने अपने पवित्र **वादों** के अनुसार उसको विलक्षण उन्नति दी है। अवश्य है कि इस से पूर्व कि संसार समाप्त हो जाए ख़ुदा पूर्ण स्तर पर इसको उन्नति प्रदान करे। ख़ुदा ने मेरे सत्यापन के लिए हज़ारों निशान दिखाए जिन के लाखों लोग गवाह हैं। पृथ्वी से भी **निशान** प्रकट हुए तथा आकाश से भी। मित्रों में भी शत्रुओं में भी तथा इस से कोई महीना कम ही खाली जाता होगा कि कोई निशान प्रकट न हो। अब भी **विलक्षण** निशान का वादा है जिसका नाम प्रलयंकर भूकम्प रखा गया है जो संसार को वह हाथ दिखाएगा जिसको संसार ने कभी

नहीं देखा होगा। अतः यदि ख़ुदा का भय है तो क्यों कुछ समय तक सब्र नहीं किया जाता। यह भूकम्प मात्र इसलिए होगा ताकि सच्चे की सच्चाई को प्रकट करे तथा लोगों को अवसर दे ताकि वह सच्चाई को एक चमकते हुए निशान के साथ देख लें। यद्यपि इसके पश्चात् ईमान लाना कुछ सम्मान योग्य न होगा, तथापि स्वीकार करने वाले उस दया से भाग लेंगे जो ईमानदारों के लिए तैयार की गई है।

उसका कथन - क्या अहमद बेग की लड़की का क़िस्सा मिर्ज़ाई इल्हामों की शोभा को दूर नहीं करता ?

मेरा कथन - हे आरोपक साहिब ! क्या पहले व्यर्थ आरोपों की लज्जा आपके लिए कुछ कम थी कि इस व्यर्थ आरोप की लज्जा का भाग भी आपने ले लिया। अब आप कान खोल कर सुनिए कि इस भविष्यवाणी के दो भाग थे तथा दोनों शर्त के साथ थे। एक भाग शर्त के तौर पर अहमद बेग की मृत्यु के बारे में था अर्थात् उसमें यह भविष्यवाणी थी कि यदि वह ख़ुदा तआला की निर्धारित शर्तों का पाबन्द न हो तो तीन वर्ष पूरे होने से पूर्व ही मृत्यु पा जाएगा तथा न केवल वही अपितु उसके साथ अन्य कई मौतें उसके परिजनों की होंगी। अतः चूंकि वह धृष्टता के मार्ग से किसी शर्त का पाबन्द न हो सका, इसलिए ख़ुदा ने उस को निर्धारित समय सीमा पूर्ण होने से पूर्व ही इस संसार से उठा दिया तथा कई अन्य मौतें भी साथ ही हुईं। परन्तु भविष्यवाणी का दूसरा भाग जो अहमद बेग के दामाद के संबंध में था उसमें इस कारण विलम्ब डाला गया कि शेष बचे लोगों ने शर्त के लेख से अपने हृदयों में भय उत्पन्न किया और बहुत भयभीत हुए। यह बात प्रत्येक की समझ में आ सकती है कि दो व्यक्तियों की मृत्यु के बारे में कोई भविष्यवाणी हो तथा उनमें से एक निर्धारित अवधि के अन्दर मर जाए तो स्वाभाविक तौर पर दूसरे के हृदय में भय उत्पन्न हो जाता है। इसलिए वह आवश्यक बात थी कि अहमद बेग के दामाद का गिरोह अहमद बेग की मृत्यु को देखकर अपने हृदयों में बहुत भयभीत होता। अतः ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार जब उन लोगों का भय देखा तो

दामाद की मृत्यु के बारे में जो भविष्यवाणी थी उसमें विलम्ब डाल दिया। इस का उदाहरण ऐसा ही है जैसा कि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम तथा पंडित लेखराम के बारे में जो मृत्यु की भविष्यवाणी थी उसमें प्रकटन में आया। क्योंकि डिप्टी अब्दुल्लाह आथम ने मृत्यु की भविष्यवाणी सुनकर बहुत भय प्रकट किया। इसलिए उसकी मृत्यु में विलम्ब डाल दिया गया और निर्धारित दिनों से कुछ महीने अधिक जीवित रहा। परन्तु लेखराम ने भविष्यवाणी को सुनकर बहुत धृष्टता प्रकट की और अपशब्दों में सीमा से अधिक बढ़ गया इसलिए वह मूल अवधि से पूर्व ही इस संसार से उठाया गया। वास्तविकता यह है कि ऐसी भविष्यवाणियां जो ख़ुदा के रसूल करते हैं जिन में किसी की मृत्यु या विपत्ति की सूचना होती है वह अज़ाब की भविष्यवाणियां कहलाती हैं तथा ख़ुदा का नियम है कि चाहे उनमें कोई शर्त हो या न हो वे तौब: और पापों से क्षमायाचना से टल सकती हैं या उनमें विलम्ब डाल दिया जाता है। जैसा कि यूनुस नबी की भविष्यवाणी में हुआ तथा यूनुस नबी ने जो अपनी जाति के लिए चालीस दिन तक अज़ाब आने का वादा किया था वह अटल वादा था। उसमें ईमान लाने या डरने की कोई शर्त न थी परन्तु इसके बावजूद जब जाति ने विनय तथा रुदन धारण किया तो ख़ुदा तआला ने उस अज़ाब को टाल दिया। समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम की सहमति से यह मान्यता प्राप्त आस्था है कि प्रत्येक विपत्ति जो ख़ुदा तआला किसी व्यक्ति पर उतारने का इरादा करता है वह विपत्ति दान-पुण्य तथा तौब: क्षमायाचना तथा दुआ से दूर हो सकती है। इसलिए यदि वह विपत्ति जिसको उतारने का इरादा किया गया है किसी नबी, रसूल तथा ख़ुदा के मामूर को उससे सूचना दी जाए तो वह अज़ाब की भविष्यवाणी कहलाती है और चूंकि वह विपत्ति है इसलिए ख़ुदा तआला के वादे के अनुसार तौब:, क्षमायाचना, दान-पुण्य, दुआ और विनय से दूर हो सकती है या उसमें विलम्ब पड़ सकता है और यदि वह विपत्ति जो भविष्यवाणी के रूप में प्रकट की गई है दान-पुण्य आदि से दूर न हो सके तो ख़ुदा तआला की समस्त किताबें झूठी ठहरेंगी तथा इससे धर्म की सम्पूर्ण

व्यवस्था अस्त-व्यस्त हो जाएगी। आरोपक ने इस्लाम पर यह बहुत भारी प्रहार किया है और न केवल इस्लाम पर अपितु यह प्रहार समस्त नबियों पर है और यदि यह आक्रमण जानबूझ कर नहीं किया गया तो इस्लाम और शरीअत से उसकी बहुत अनभिज्ञता सिद्ध होती है। ऐसे लोगों से ईमानदारों को सतर्क रहना चाहिए कि मुझ पर आक्रमण करने से उनका इरादा केवल मुझ पर आक्रमण नहीं है अपितु इस्लाम धर्म की उनको कुछ परवाह नहीं। वे इस्लाम के छिपे शत्रु हैं। ख़ुदा तआला अपने धर्म को उनके उपद्रव से सुरक्षित रखे।

इस मूर्ख को यह भी तो ख़बर नहीं कि जैसे ख़ुदा तआला ने अपने आचरण में यह सम्मिलित कर रखा है कि वह अज़ाब की भविष्यवाणी को तौब:, क्षमायाचना, दुआ और दान से टाल देता है उसी प्रकार मनुष्य को भी उसने इन्हीं आचरणों की शिक्षा दी है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन और हदीस से यह सिद्ध है कि हज़रत आइशा[रज़ि.] के बारे में जो कपटाचारियों ने केवल दुष्टता से वस्तु स्थिति के विरुद्ध लांछन लगाया था उस चर्चा में कुछ सरल स्वभाव सहाबा भी भागीदार हो गए थे। एक सहाबी ऐसे थे कि वह हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] के घर से दो समय की रोटी खाते थे। हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने उनकी इस ग़लती पर क़सम खाई थी और अज़ाब के तौर पर प्रतिज्ञा की थी कि मैं इस अनुचित हरकत के दण्डस्वरूप उसको कभी रोटी न दूंगा। इस पर यह आयत उतरी थी -

وَلْيَعْفُوا وَلْيَصْفَحُوا ۗ أَلَا تُحِبُّونَ أَنْ يَغْفِرَ اللّٰهُ لَكُمْ ۗ وَاللّٰهُ غَفُورٌ رَّحِيمٌ ۝٢٣ [1]

तब हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने अपनी इस प्रतिज्ञा को तोड़ दिया और नियमित रूप से रोटी लगा दी। इसी कारण इस्लामी शिष्टाचार में यह सम्मिलित है कि यदि अज़ाब के तौर पर कोई प्रतिज्ञा की जाए तो उस का तोड़ना उत्तम शिष्टाचार में सम्मिलित है। उदाहरणतया यदि कोई अपने सेवक के बारे में क़सम खाए कि मैं उसको पचास जूते अवश्य मारूंगा तो उसकी तौब: और विनय पर क्षमा करना इस्लाम का नियम है ताकि

1 अन्नूर - 23

تخلّق بِاَخۡلَاقِ اللّٰہ (स्वयं को ख़ुदा के शिष्टाचार में ढालना) हो जाए परन्तु वादा भंग करना वैध नहीं। वादा भंग करने पर पूछताछ होगी परन्तु अज़ाब को टालने पर नहीं।

उसका कथन - और भविष्यवाणियों का हाल इससे भी अधिक अस्त-व्यस्त है।

मेरा कथन - हे पक्षपाती मूर्ख ! तुझे कब संयोग हुआ है कि तू मेरी भविष्यवाणियों को ध्यान से देखता और उन सब से अवगत होता तथा तुझे कब संयोग हुआ कि मेरी संगत में रहता तथा मेरे निशानों को अपनी आंखों से देखता। मैं तुझे किस से उपमा दूं। तू उस अन्धे के समान है जो सूर्य के अस्तित्व से इन्कार करता है और अपने अन्धेपन को नहीं देखता। प्रत्येक स्थिति से परिचित व्यक्ति समझ सकता है कि क्या मेरी भविष्यवाणियों का हाल अस्तव्यस्त है या तेरे ईमान का ही हाल अस्तव्यस्त है। बुद्धिमानों के लिए तेरे आरोपों का यही नमूना पर्याप्त है कि जो बात समस्त नबियों के निकट मान्य है और इस्लाम के समस्त फ़िर्क़ों के निकट मान्य है वही बात तेरे निकट आरोप का स्थान है। हाय अफ़सोस ! क्या यही लोग इस्लाम के लीडर बनना चाहते हैं जिन को ख़ुदा की शिक्षा तथा इस्लामी आस्था का भी ज्ञान नहीं। इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन।

हे ज़ालिम आरोपक ! क्या इसी पूंजी पर क़लम उठाई थी ? यद्यपि पक्षपात का जोश था परन्तु अपनी मूर्खता का प्रदर्शन करना क्या आवश्यक था ? प्रत्येक बात बिल्कुल झूठ प्रत्येक सन्देह केवल शैतानी भ्रम। इस ज्ञान एवं जानने के साथ तेरे हृदय में क्यों गुदगुदी उठी कि ख़ुदा तआला की पवित्र वह्यी पर आरोप लगाए। यदि तुम ख़ामोश रहते तो अच्छा था, अकारण पाप खरीदा और जीभ द्वारा अपनी गुप्त मूर्खता पर सब को अवगत कर दिया और पब्लिक में अपनी बदनामी कराई तथा अपनी स्थिति पर शैख़ सा'दी[रह.] का वह उदाहरण चरितार्थ कर लिया जो 'बोस्तान' में है और वह यह है -

یکے نیک خلق و خَلَق پوش بود

کہ در مصر یک چند خاموش بود
جہانے برو بود از صدق جمع
چو پروانہ ہا وقتِ شب گرد شمع
شبے در دِل خویش اندیشہ کرد
کہ پوشیدہ زیر زبان است مَرد
اگر ماند فطنت نہان در سرم
چہ دانند مردم کہ دانش وَرم
سخن گفت و دشمن بدانست و دوست
کہ درمصر ناداں‌تر از وے ہموست
حضورش پریشاں شدد کارزشت
سفر کرد و بر طاقِ مسجد نوشت
در آئینہ گر روئے خود دیدمے
بہ بیدانشی پردہ ندریدمے

अब मैं मुहम्मद इकरामुल्लाह ख़ान साहिब शाहजहांपुरी के उन आरोपों का उत्तर लिख चुका जो दैनिक पैसा अख़बार दिनांक 22 मई, 1905 ई. के पृष्ठ-5 में छपे हैं। किन्तु इसके पश्चात् मेरे मित्र मौलवी अब्दुल करीम साहिब के नाम एक सज्जन ने जिन्होंने अपने पत्र में अपना नाम प्रकट नहीं किया एक पत्र भेजा है और उसमें ख़ुदा तआला का माध्यम डालकर कुछ आरोपों का उत्तर मांगा है जो इन्हीं भविष्यवाणियों के बारे में है। यद्यपि इन आरोपों का उत्तर पर्याप्त तौर पर बराहीन अहमदिया के इसी भाग में आ चुका है, परन्तु चूंकि ख़ुदा तआला को मध्यस्थ करके आरोपक का निवेदन है। इसलिए हम कलाम की पुनरावृत्ति की कुछ परवाह न करके केवल ख़ुदा के लिए आदरणीय सज्जन के आरोपों का उत्तर संक्षेप को दृष्टिगत रखते हुए नीचे देते हैं -

उसका कथन - **عفت الديار محلّها و مقامها ك** का वाक्य जिसे आदरणीय

मिर्ज़ा साहिब अपना इल्हाम और वह्यी कह रहे हैं यह प्राचीन शायर की कविता का चरण है। क्या किसी नबी को कभी ऐसी वह्यी हुई जिसके शब्द शब्दश: वही हों जो उस नबी से पूर्व किसी व्यक्ति के मुख से निकल चुके हों, यदि आप यह सिद्ध कर सकें तो दूसरा आरोप यह होगा कि इस अवस्था में ख़ुदा के कथन और बन्दे के कथन में अन्तर क्या होगा ?

मेरा कथन - इस बारे में हम पहले भी लिख चुके हैं कि अन्य नबियों को तलाश करना कुछ आवश्यक नहीं। स्वयं हमारे नबी[स.अ.व.] पर कुछ ऐसे वाक्य ख़ुदा की वह्यी के उतर चुके हैं जो पहले किसी व्यक्ति के मुख से निकले थे। जैसा कि यह वाक्य क़ुर्आन की वह्यी अर्थात् [1] فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ ये वाक्य पहले अब्दुल्लाह बिन अबी सरह की ज़ुबान से निकला था और वही वाक्य क़ुर्आन की वह्यी में उतरा। देखो तफ़्सीर कबीर छठा भाग-276 मिस्र से प्रकाशित। मूल इबारत यह है -

روى الكلبى عن ابن عباس رضى الله عنهما۔ان عبدالله بن سعد بن ابى سرح كان يكتب هذه الاٰيات لرسول الله صلّى الله عليه وسلّم فلما انتهى الٰى قوله تعالٰى خلقًا اٰخر عجب من ذالك فقال فتبارك الله احسن الخالقين۔ فقال رسول الله صلّى الله عليه وسلّم اُكتب فهٰكذا نزلت، فشكّ عبد الله وقال ان كان محمد صادقًا فيما يقول فانه يوحٰى اِلىَّ كما يوحٰى اليه وان كان كاذبًا فلا خير فى دينه فهرب الٰى مكّة فقيل انه مات على الكفر وقيل انه اسلم يوم الفتح

अनुवाद - यह है कि कल्बी ने इब्ने अब्बास[रज़ि.] से रिवायत की है कि अब्दुल्लाह बिन अबी सरह पवित्र क़ुर्आन की आयतें लिखा करता था। अर्थात् आंहज़रत[स.अ.व.] अपने सामने जैसी आयत उतरती थी उससे लिखवाते थे। अत: जब वह आयत लिखवाई गई जो خلقاً اٰخر तक समाप्त होती है तो अब्दुल्लाह इस आयत से आश्चर्य में पड़ गया तथा अब्दुल्लाह ने कहा فتبارك الله احسن الخالقين आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा यही

---

① अलमोमिनून - 15

लिख ले क्योंकि ख़ुदा ने भी यही वाक्य जो तेरे मुख से निकला है अर्थात् فتبارك الله احسن الخالقين उतार दिया है। अत: अब्दुल्लाह संदेह में पड़ गया कि यह कैसे हो सकता है कि जो मेरी ज़ुबान का वाक्य है वही ख़ुदा का वाक्य हो गया। उसने कहा कि यदि मुहम्मद[स.अ.व.] अपने दावे में सच्चा है तो मुझे भी वही वह्यी होती है जो उसे होती है और यदि झूठा है तो उसके धर्म में कोई भलाई नहीं है। फिर वह मक्का की ओर भाग गया। एक रिवायत यह है कि वह कुफ्र पर मर गया तथा एक यह भी रिवायत है कि वह मक्का-विजय के समय मुसलमान हो गया।

अब देखो अब्दुल्लाह बिन अबी सरह के कलाम से ख़ुदा तआला के कलाम का भावसाम्य हुआ अर्थात् अब्दुल्लाह के मुख से भी यह वाक्य निकला था فتبارك الله احسن الخالقين और ख़ुदा तआला की वह्यी में भी यही आया और यदि कहो कि फिर ख़ुदा तआला के कलाम तथा मनुष्य के कलाम में अन्तर क्या हुआ ? तो प्रथम तो हम इसका यही उत्तर देते हैं कि जैसा कि ख़ुदा तआला ने स्वयं पवित्र क़ुर्आन में कहा है कि परस्पर अन्तर करने के लिए आवश्यक है कि वह कलाम जो ग़ैर का कलाम कहलाता है क़ुर्आन की सूरतों में से किसी सूरह के बराबर हो, क्योंकि चमत्कार के लिए इतना ही विश्वसनीय समझा गया है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन - وَاِنۡ كُنۡتُمۡ فِىۡ رَيۡبٍ مِّمَّا نَزَّلۡنَا عَلٰى عَبۡدِنَا فَاۡتُوۡا بِسُوۡرَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ[1] यह नहीं कहा कि فَاۡتُوۡا بِكَلِمَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ या بِاٰيَةٍ مِّنۡ مِّثۡلِهٖ तथा वास्तव में यह सच है कि ख़ुदा के वाक्य पृथक-पृथक तो वही वाक्य हैं जो काफ़िरों के मुख पर जारी थे। फिर इबारत की रंगीनी, कलाम का अनुक्रम तथा अन्य आवश्यक वस्तुओं की दृष्टि से वही वाक्य सामूहिक तौर पर एक चमत्कार के रूप में हो गए तथा जो चमत्कार ख़ुदा तआला के कामों में पाया जाता है उसकी भी यही निशानी है अर्थात् वह भी अपने सामूहिक रूप से चमत्कार बनता है जैसा कि कलाम सामूहिक रूप से चमत्कार बनता है। हां ख़ुदा

---

[1] अलबक़रह - 24

तआला के मुंह से जो छोटे-छोटे वाक्य निकलते हैं वे अपने उच्च अर्थों की दृष्टि से जो उनके अन्दर होते हैं मानवीय वाक्यों से पूर्णरूपेण अन्तर रखते हैं। यह दूसरी बात है कि मनुष्य उनकी गुप्त वास्तविकताओं तथा आध्यात्म ज्ञानों तक न पहुंचे किन्तु उनके अन्दर गुप्त प्रकाश अवश्य होते हैं जो उन वाक्यों की रूह होते हैं। जैसा कि यही वाक्य فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ[1]- अपनी पिछली आयतों के साथ सम्बन्ध के कारण अपने अन्दर एक विशेष पृथक रंग रखता है अर्थात् उनके अन्दर इस प्रकार की रूहानी फ़िलास्फ़ी भरी हुई है कि वह स्वयं में एक चमत्कार है। जिसका उदाहरण मानव कलाम में नहीं मिलता।

इसका विवरण यह है कि ख़ुदा तआला ने इस सूरह के प्रारंभ में जो सूरह अलमोमिनून है जिसमें यह आयत फ़तबारकल्लाहो अहसनल ख़ालिक़ीन है। इस बात को वर्णन किया है कि मनुष्य छ: श्रेणियों को तय करके जो उसके पालन के लिए आवश्यक हैं अपने रूहानी तथा शारीरिक कमाल तक क्योंकर पहुंचता है। अत: ख़ुदा तआला ने दोनों प्रकार की उन्नति को छ:-छ: श्रेणियों पर विभाजित किया है और छठी श्रेणी को उन्नति की श्रेणी ठहराया है और यह रूहानी अनुकूलता तथा शारीरिक अस्तित्व की उन्नति को ऐसे विलक्षण तौर पर दिखाया है कि जब से मनुष्य पैदा हुआ है कभी किसी मनुष्य का मस्तिष्क इस मारिफ़त के रहस्य की ओर आगे नहीं गया और यदि कोई दावा करे कि आगे गया है तो सिद्ध करना उसकी गर्दन पर होगा कि यह पवित्र फ़िलास्फ़ी किसी मनुष्य की किताब में से दिखा दे तथा यह स्मरण रहे कि वह ऐसा कदापि सिद्ध नहीं कर सकेगा। अत: व्यापक तौर पर यह चमत्कार है कि ख़ुदा तआला ने वह गहरी अनुकूलता जो रूहानी और शारीरिक अस्तित्व की उन उन्नतियों में मौजूद है जो पूर्ण अस्तित्व की श्रेणी तक सामने आती हैं। इन शुभ आयतों में प्रकट कर दी है। जिससे प्रकट होता है कि यह प्रत्यक्ष एवं आन्तरिक कारीगरी एक ही हाथ से प्रकट हुई है जो ख़ुदा तआला का हाथ है।

---

[1] अलमोमिनून - 15

कुछ मूर्ख लोगों ने यह भी ऐतराज़ किया था कि जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने शारीरिक अस्तित्व का वीर्य की अवस्था से लेकर अन्त तक पवित्र क़ुर्आन में नक़्शा खींचा है। यह नक़्शा इस युग की नवीन चिकित्सा अनुसंधानों की दृष्टि से सही नहीं है, परन्तु उनकी मूर्खता है कि इन आयतों के अर्थ से यह समझ लिया कि जैसे ख़ुदा तआला गर्भाशय के अन्दर मानव अस्तित्व को इस प्रकार बनाता है कि पहले एक अंग से पूर्णतया निवृत्त हो जाता है फिर दूसरा बनाता है। ख़ुदा की आयतों का यह उद्देश्य नहीं है अपितु जैसा कि हम ने स्वयं अपनी आंखों से देख लिया है तथा मुज़्ग: से लेकर प्रत्येक अवस्था के बच्चे को देख लिया है। वास्तविक स्रष्टा गर्भाशय के अन्दर समस्त बाह्य एवं आन्तरिक अवयवों को एक ही समय में बनाता है अर्थात् एक ही समय में सब बनते हैं बाद में और पहले नहीं। हां यह सिद्ध होता है कि पहले मनुष्य का सम्पूर्ण अस्तित्व एक जमा हुआ रक्त होता है और फिर उसका कुछ भाग अपने समय पर एक समय में हड्डियां बन जाता है और फिर एक ही समय में इस सम्पूर्ण मज्मूअ: पर एक अतिरिक्त मांस चढ़ जाता है जो समस्त शरीर की खाल कहलाती है जिससे सुन्दरता पैदा होती है तथा इस श्रेणी पर शारीरिक बनावट पूर्ण हो जाती है और फिर प्राण पड़ जाता है। ये वे समस्त अवस्थाएं हैं जो हमने स्वयं अपनी आंखों से देख ली हैं।

अब हम रूहानी छ: श्रेणियों का नीचे वर्णन करते हैं जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला का कथन है -

(۱) قَدۡ اَفۡلَحَ الۡمُؤۡمِنُوۡنَ ۙ﴿۲﴾ الَّذِیۡنَ هُمۡ فِیۡ صَلَاتِهِمۡ خٰشِعُوۡنَ ۙ﴿۳﴾ (۲) وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ عَنِ اللَّغۡوِ مُعۡرِضُوۡنَ ۙ﴿۴﴾ (۳) وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ لِلزَّکٰوۃِ فٰعِلُوۡنَ ۙ﴿۵﴾ (۴) وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ لِفُرُوۡجِهِمۡ حٰفِظُوۡنَ ۙ﴿۶﴾ اِلَّا عَلٰۤی اَزۡوَاجِهِمۡ اَوۡ مَا مَلَکَتۡ اَیۡمَانُهُمۡ فَاِنَّهُمۡ غَیۡرُ مَلُوۡمِیۡنَ ۚ﴿۷﴾ فَمَنِ ابۡتَغٰی وَرَآءَ ذٰلِکَ فَاُولٰٓئِکَ هُمُ الۡعٰدُوۡنَ ۚ﴿۸﴾ (۵) وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَ عَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ ۙ﴿۹﴾ (۶) وَ الَّذِیۡنَ هُمۡ عَلٰی صَلَوٰتِهِمۡ یُحَافِظُوۡنَ ۘ﴿۱۰﴾ (अलमोमिनून-2-10)

और उन के मुकाबले शारीरिक उन्नतियों की श्रेणियां भी छ: ठहरा दी हैं जैसा कि वह इन आयतों के बाद फ़रमाता है :-

(١) ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ (٢) ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً (٣) فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً (٤) فَخَلَقْنَا الْمُضْغَةَ عِظٰمًا (٥) فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا (٦) ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِیْنَ①

जैसा कि हम ऊपर वर्णन कर चुके हैं स्पष्ट है कि रूहानी उन्नति का पहला चरण यह है जो इस आयत में वर्णन किया गया है। अर्थात् قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِیْنَ هُمْ فِیْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ अर्थात् वे मोमिन मुक्ति पा गए जो अपनी नमाज़ और ख़ुदा की याद में विनय और विनम्रता धारण करते हैं तथा आर्द्रता एवं स्वयं को पिघला कर ख़ुदा की याद में व्यस्त होते हैं इस के मुकाबले पर शारीरिक पालन-पोषण और विकास का पहला चरण जो इस आयत में वर्णन किया गया है ثُمَّ جَعَلْنٰهُ نُطْفَةً فِیْ قَرَارٍ مَّكِیْنٍ अर्थात् फिर हम ने मनुष्य को वीर्य बनाया और वीर्य को एक सुरक्षित स्थान में रखा। अत: अल्लाह तआला ने आदम की पैदायश के पश्चात् मानव अस्तित्व की प्रथम श्रेणी का शारीरिक रूप में वीर्य को ठहराया है तथा स्पष्ट है कि वीर्य एक ऐसा बीज है जो संक्षिप्त तौर पर उन समस्त शक्तियों, विशेषताओं, आन्तरिक एवं बाह्य अवयवों तथा समस्त चित्रकारी का समूह होता है जो पंचम श्रेणी पर विस्तृत रूप पर प्रकट हो जाते हैं और छठी श्रेणी पर सर्वांगपूर्ण तौर पर उनका प्रकटन② होता है। इसके साथ ही वीर्य शेष समस्त

① अलमोमिनून - 14-15

② श्रेणियों से अभिप्राय वे श्रेणियां हैं जिनका अभी वर्णन किया गया है। पंचम श्रेणी वह है जब क़ुदरत स्वच्छन्द स्रष्टा द्वारा मानव ढांचा गर्भाशय में पूर्णरूपेण तैयार हो जाता है और हड्डियों पर एक मनोरम मांस चढ़ जाता है। छठी श्रेणी वह है जब उस ढांचे में जान पड़ जाती है तथा जैसा कि वर्णन किया गया है मनुष्य के रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी विनय, विनम्रता, तपन की अवस्था है तथा वास्तव में वह भी संक्षिप्त तौर पर उन

श्रेणियों से अधिक ख़तरे की अवस्था में है। क्योंकि अभी वह उस बीज की भांति है जिसने अभी पृथ्वी से कोई संबंध स्थापित नहीं किया और अभी वह गर्भाशय के आकर्षण से सौभाग्यशाली नहीं हुआ। संभव है वह योनि (भग) में पड़ कर नष्ट हो जाए। जैसा कि बीज प्रायः पथरीली भूमि में पड़कर नष्ट हो जाता है तथा संभव है कि वह वीर्य स्वयं में दोषपूर्ण हो अर्थात् अपने अंदर ही कोई दोष रखता हो तथा पोषण एवं विकासयोग्य न हो तथा उसमें यह योग्यता न हो कि गर्भाशय उसको अपनी ओर आकृष्ट कर ले और केवल एक मुर्दे के समान हो जिसमें कुछ गतिशीलता न हो जैसा कि एक सड़ा-गला बीज पृथ्वी में बोया जाए तथा यद्यपि पृथ्वी उत्तम हो तथापि बीज अपने व्यक्तिगत दोष के कारण विकसित होने योग्य नहीं होता तथा संभव है कि कुछ और रोगों के कारण जिनके विवरण की आवश्यकता नहीं वीर्य गर्भाशय में सम्बन्ध स्थापित न कर सके और गर्भाशय उसको अपने आकर्षण से वंचित रखे। जैसा कि बीज कभी पैरों के नीचे कुचला जाता है या पक्षी उसे चुग लेते हैं या किसी अन्य घटना से नष्ट हो जाता है।

यही विशेषताएं मोमिन के रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी की हैं तथा मोमिन के रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी की वह विनय, आर्द्रता एवं विनम्रता की अवस्था है जो नमाज़ और ख़ुदा के स्मरण में मोमिन को प्राप्त होती है। अर्थात् प्रार्थना, आर्द्रता, विनय, विनम्रता तथा रूह की विनीतता और एक तड़प, करुणा, जलन अपने अन्दर पैदा करना और स्वयं पर एक भय की अवस्था व्याप्त करके महावैभवशाली ख़ुदा की ओर हृदय को झुकाना जैसा कि इस आयत में वर्णन किया गया है - قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ (अलमोमिनून-2,3) अर्थात् वे मोमिन **मनोकामना** प्राप्त कर गए जो अपनी नमाज़ों में तथा हर प्रकार से ख़ुदा को स्मरण करने में विनय और विनम्रता धारण करते हैं तथा आर्द्रता, जलन और स्वयं को पिघलाने, करुणा और हार्दिक व्यथा,

---

समस्त बातों का समूह है जो बाद में खुले तौर पर मनुष्य के रूहानी अस्तित्व में प्रकट होते हैं। (इसी से)

व्याकुलता तथा हार्दिक जोश से अपने रब्ब की स्तुति में व्यस्त होते हैं। यह विनय की अवस्था जिसकी परिभाषा का ऊपर संकेत किया गया है रूहानी अस्तित्व की तैयारी के लिए प्रथम श्रेणी है या यों कहो कि वह प्रथम बीज है जो दासता की भूमि में बोया जाता है और वह संक्षिप्त तौर पर उन समस्त शक्तियों, विशेषताओं, अवयवों, समस्त चित्रकारियों, सौन्दर्य एवं सुन्दरता, नक़्श और तिल तथा रूहानी प्रकृतियों पर आधारित है जो पांचवीं या छठी श्रेणी में पूर्ण मनुष्य (इन्साने कामिल) के लिए प्रत्यक्ष तौर पर प्रकट होते और अपनी मनोहर पद्धति में झलक दिखलाते हैं[1] तथा चूंकि वह वीर्य की भांति रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी है। इसलिए वह क़ुर्आन की आयत में वीर्य की भांति प्रथम श्रेणी पर रखी गई है और वीर्य के मुकाबले पर प्रदर्शित किया गया है अथवा वे लोग जो पवित्र क़ुर्आन में विचार करते हैं समझ लें कि नमाज़ में विनय की अवस्था रूहानी अस्तित्व के लिए एक वीर्य है और वीर्य की भांति रूहानी तौर पर पूर्ण इन्सान की सम्पूर्ण शक्तियों, विशेषताओं तथा उसमें समस्त चित्रकारियां गुप्त हैं और जैसा कि वीर्य उस समय तक ख़तरे के स्थान में है जब तक कि गर्भाशय से संबंध ग्रहण न करे। इसी प्रकार रूहानी अस्तित्व की यह प्रारंभिक अवस्था अर्थात् विनय की अवस्था उस समय तक ख़तरे से खाली नहीं जब तक कि दयालु ख़ुदा से संबंध ग्रहण न करे। स्मरण

---

① पंचम श्रेणी जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं वह है जो इस आयत में वर्णन की गई है अर्थात् وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ (अलमोमिनून-9) तथा छठी श्रेणी जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं वह है जो इस आयत में वर्णन की गई है अर्थात् وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ (अलमोमिनून-10) और यह पंचम श्रेणी शारीरिक श्रेणियों की पंचम श्रेणी के मुकाबले पर होती है जिसकी ओर यह आयत संकेत करती है अर्थात् فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا (अलमोमिनून-15) और छठी श्रेणी शारीरिक श्रेणियों की छठी श्रेणी के मुकाबले पर पड़ी है जिसकी ओर यह आयत संकेत करती है - ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ (अलमोमिनून-15) (इसी से)

रहे कि जब ख़ुदा तआला की दानशीलता किसी कर्म के माध्यम के बिना हो तो वह कृपालता की विशेषता से होता है। जैसा कि जो कुछ ख़ुदा ने पृथ्वी तथा आकाश इत्यादि मनुष्य के लिए बनाए या स्वयं मनुष्य को बनाया यह सब कृपालता के वरदान से प्रकटन में आया, परन्तु जब कोई वरदान किसी कर्म, उपासना (इबादत), तपस्या और परिश्रम के प्रतिफल स्वरूप हो वह दयालुता (रहीमीयत) का वरदान कहलाता है। ख़ुदा का यही नियम आदम के बेटों अर्थात् मनुष्यों के लिए जारी है। अत: जबकि मनुष्य नमाज़ और ख़ुदा के स्मरण में विनय की अवस्था धारण करता है तब स्वयं को रहीमीयत के वरदान के लिए तैयार करता है। अत: वीर्य में तथा रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी में जो विनय की अवस्था है अन्तर मात्र यह है कि वीर्य गर्भाशय के आकर्षण का मुहताज होता है और यह रहीम (दयालु) के आकर्षण की ओर मुहताज होता है और जैसा कि वीर्य के लिए संभव है कि वह गर्भाशय के आकर्षण से पूर्व ही नष्ट हो जाए। इसी प्रकार रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी के लिए अर्थात् विनय की अवस्था के लिए संभव है कि वह रहीम (दयालु ख़ुदा) के आकर्षण और संबंध से पूर्व ही नष्ट हो जाए जैसा कि बहुत से लोग प्रारंभिक अवस्था में अपनी नमाज़ों में रोते और आत्म-विस्मृति करते, नारे लगाते तथा ख़ुदा के प्रेम में भिन्न-भिन्न प्रकार की दीवानगी प्रकट करते हैं और भिन्न-भिन्न प्रकार की प्रेम की अवस्था दिखाते हैं। चूंकि उस कृपालु अस्तित्व से जिस का नाम रहीम है कोई सम्बन्ध पैदा नहीं होता और न उसकी विशेष झलक के आकर्षण से उसकी ओर आकृष्ट होते हैं इसलिए उन की वह सम्पूर्ण जलन, पिघलन तथा वह सम्पूर्ण विनय-अवस्था निराधार होती है और कभी-कभी यहां तक कि प्रथम अवस्था से भी निकृष्ट अवस्था में जा पड़ते हैं। अत: यह विचित्र रुचिकर अनुकूलता है कि जिस प्रकार वीर्य शारीरिक अस्तित्व की प्रथम श्रेणी है और जब तक गर्भाशय का आकर्षण उसकी सहायता न करे वह कुछ वस्तु नहीं। इसी प्रकार विनय-अवस्था रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी है और जब तक रहीम ख़ुदा का आकर्षण उसकी सहायता न करे वह विनय-

अवस्था कुछ भी वस्तु नहीं। इसलिए ऐसे हज़ारों लोग पाओगे कि अपनी आयु के किसी भाग में ख़ुदा की स्तुति तथा नमाज़ में विनय की अवस्था से आनन्द प्राप्त करते, आत्म विस्मृति करते तथा रोते थे। फिर किसी ऐसी ला'नत ने उनको पकड़ लिया कि सहसा कामवासना संबंधी बातों की ओर गिर गए तथा संसार और सांसारिक इच्छाओं की भावनाओं से वह सम्पूर्ण अवस्था खो बैठे। यह नितान्त भय का स्थान है कि प्राय: वह विनय-अवस्था रहीमीयत के संबंध से पूर्व ही नष्ट हो जाती है तथा इस से पूर्व कि रहीम (दयालु) ख़ुदा का आकर्षण उसमें कुछ कार्य करे वह अवस्था नष्ट और समाप्त हो जाती है और ऐसी स्थिति में वह अवस्था जो रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी है उस वीर्य से समानता रखती है कि जो गर्भाशय से संबंध ग्रहण करने से पूर्व ही नष्ट हो जाती है। अत: रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी जो विनय की अवस्था है तथा शारीरिक अस्तित्व की प्रथम श्रेणी जो वीर्य है इस बात में परस्पर समानता रखती हैं कि शारीरिक अस्तित्व की प्रथम श्रेणी अर्थात् वीर्य गर्भाशय के आकर्षण के बिना तुच्छ है और रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी अर्थात् विनय की अवस्था गर्भाशय के आकर्षण के बिना अधम तथा जैसा कि संसार में हज़ारों वीर्य नष्ट होते हैं और वीर्य होने की अवस्था में ही नष्ट हो जाते हैं और गर्भाशय से सम्बन्ध नहीं पकड़ते। इसी प्रकार संसार में विनय की हज़ारों ऐसी अवस्थाएं हैं कि दयालु ख़ुदा से सम्बन्ध नहीं पकड़तीं और नष्ट हो जाती हैं। हज़ारों असभ्य अपने कुछ ही दिनों के विनय, आनंदातिरेक से आत्म-विस्मृति तथा रुदन करने पर प्रसन्न होकर समझते हैं कि हम वली हो गए, ग़ौस हो गए, क़ुतुब हो गए तथा अब्दाल में प्रविष्ट हो गए और ख़ुदा तक पहुंचे हुए हो गए। हालांकि वह कुछ भी नहीं अब तक एक वीर्य है। अभी तो नाम ख़ुदा है सुबह की कली तो छू भी नहीं गई है। खेद कि इन्हीं मूर्खताओं से एक संसार तबाह हो गया। स्मरण रहे कि रूहानी अवस्था की यह पहली श्रेणी जो विनय की अवस्था है भिन्न-भिन्न प्रकार के कारणों से नष्ट हो सकती है जैसा कि वीर्य जो शारीरिक अवस्था की पहली श्रेणी है भिन्न-भिन्न प्रकार की

घटनाओं से नष्ट हो सकती है इन सब कारणों के अतिरिक्त एक व्यक्तिगत दोष भी है। उदाहरणतया इस विनय में कोई शिर्कपूर्ण मिलौनी है या किसी बिदअत की मिलावट है या किसी अन्य व्यर्थ बात की साझेदारी है जैसे काम इच्छाएं तथा अपवित्र काम-भावनाएं स्वयं ज़ोर मार रही हैं या अधम संबंधों ने हृदय को पकड़ रखा है या मुर्दार संसार की व्यर्थ इच्छाओं ने परास्त कर दिया है। अतः इस समस्त अपवित्र रोगों के साथ विनय की अवस्था इस योग्य नहीं ठहरती कि दयालु ख़ुदा उस से संबंध स्थापित कर ले जैसा कि उस वीर्य से गर्भाशय संबंध नहीं पकड़ सकता जो अपने अन्दर किसी प्रकार का दोष रखता है। यही कारण है कि हिन्दू योगियों की विनय अवस्था तथा ईसाई पादरियों की विनम्रता की अवस्था उनको कुछ भी लाभ नहीं पहुंचा सकती और यद्यपि वे तपन एवं विनम्रता में इतने अधिक बढ़ जाएं कि अपने शरीर को भी साथ ही मांस रहित अस्थियां कर दें तब भी दयालु ख़ुदा उनसे सम्बन्ध नहीं रखता। क्योंकि उनकी विनय की अवस्था में एक व्यक्तिगत दोष है और ऐसा ही इस्लाम के वे बिदअती फ़क़ीर जो पवित्र क़ुर्आन का अनुसरण छोड़ कर हज़ारों बिदअतों में ग्रस्त हो जाते हैं, यहां तक कि भंग, चरस और शराब पीने से भी शर्म नहीं करते तथा दुराचार एवं दुष्कर्म भी उनके लिए मां का दूध होते हैं। चूंकि वह ऐसी स्थिति रखते हैं कि दयालु ख़ुदा और उसके सम्बन्ध से कुछ अनुकूलता नहीं रखते अपितु दयालु ख़ुदा के निकट वे समस्त परिस्थितियां घृणित हैं। इसलिए वे अपने प्रकार के आनंदातिरेक से आत्म-विस्मृति, नृत्य, कविता पढ़ना तथा मस्ती इत्यादि के बावजूद दयालु ख़ुदा के सम्बन्ध से अत्यधिक वंचित होते हैं और इस वीर्य की भांति होते हैं जो उपदंश रोग या कोढ़ के रोग से जल जाए तथा इस योग्य न रहे कि गर्भाशय उससे सम्बन्ध पकड़ सके। अतः रहम (गर्भाशय) और रहीम (दयालु) का संबंध या असंबंध एक ही आधार पर है, केवल रूहानी (आध्यात्मिक) और शारीरिक रोगों का अन्तर है और जैसा कि वीर्य कुछ अपने व्यक्तिगत रोगों की दृष्टि से इस योग्य नहीं रहता कि गर्भाशय उस से संबंध ग्रहण कर सके और उसे अपनी ओर

खींच सके। इसी प्रकार विनय की अवस्था जो वीर्य की श्रेणी पर है अपने कुछ व्यक्तिगत रोगों के कारण जैसे अभिमान, अहंकार, दिखावा या अन्य किसी प्रकार की गुमराही के कारण अथवा शिर्क (अनेकेश्वरवाद) इस योग्य नहीं रहती कि दयालु ख़ुदा उससे संबंध पकड़ सके। इसलिए वीर्य की भांति रूहानी अस्तित्व की सम्पूर्ण श्रेष्ठता प्रथम श्रेणी की जो विनय अवस्था है दयालु ख़ुदा के साथ वास्तविक संबंध पैदा करने से सम्बद्ध है जैसा कि वीर्य की सम्पूर्ण श्रेष्ठता गर्भाशय के साथ सम्बन्ध पैदा करने से सम्बद्ध है। अतः यदि इस विनय-अवस्था का उस दयालु ख़ुदा के साथ वास्तविक संबंध नहीं और न वास्तविक संबंध पैदा हो सकता है तो वह अवस्था उस गन्दे वीर्य की भांति है जिस का गर्भाशय के साथ वास्तविक संबंध पैदा नहीं हो सकता। स्मरण रखना चाहिए कि नमाज़ और ख़ुदा की याद में जो कभी मनुष्य को विनय-अवस्था प्राप्त होती है तथा आत्म-विस्मृति एवं रुचि पैदा हो जाती है या आनन्द का आभास होता है। यह इस बात का प्रमाण नहीं है कि उस मनुष्य का दयालु ख़ुदा से वास्तविक संबंध है। जैसा कि यदि वीर्य भग के अन्दर प्रवेश कर जाए और आनन्द भी महसूस हो तो उस से यह नहीं समझा जाता कि उस वीर्य का गर्भाशय से संबंध हो गया है अपितु संबंध के लिए पृथक लक्षण और निशानियां हैं। अतः ख़ुदा की याद में रुचि और शौक़ जिसे दूसरे शब्दों में विनय-अवस्था कहते हैं वीर्य की उस अवस्था के समान है जब वह एक स्खलन (इन्ज़ाल) का रूप पकड़ कर भग के अन्दर गिर जाता है तथा इसमें क्या सन्देह है कि वह शारीरिक अवस्था में एक पूर्णतम आनन्द का समय होता है, परन्तु केवल उस वीर्य की बूंद का अन्दर गिरना इस बात को अनिवार्य नहीं कि उस वीर्य की बूंद का गर्भाशय से सम्बन्ध भी हो जाए और वह गर्भाशय की ओर खींचा जाए। अतः इसी प्रकार आध्यात्मिक (रूहानी) रुचि तथा विनय की अवस्था इस बात को अनिवार्य नहीं कि दयालु ख़ुदा से ऐसे व्यक्ति का सम्बन्ध हो जाए तथा उस की ओर खींचा जाए। अपितु जैसा कि वीर्य कभी व्यभिचार (ज़िना) के तौर पर किसी वैश्या की भग में पड़ता है तो उसमें भी वीर्य

डालने वाले को वही आनन्द प्राप्त होता है जैसा कि अपनी पत्नी के साथ। अतः इसी प्रकार मूर्ति पूजकों तथा सृष्टि उपासकों का विनय एवं विनम्रता तथा रुचि की अवस्था रन्डीबाज़ों के समान है अर्थात् विनय और विनम्रता मुश्रिकों तथा उन लोगों का जो मात्र सांसारिक उद्देश्यों के कारण ख़ुदा को स्मरण करते हैं उस वीर्य से **समानता रखता है** जो व्यभिचारिणी स्त्रियों की भग में जाकर आनंद का कारण होता है। बहरहाल जैसा कि वीर्य के संबंध पकड़ने की योग्यता है विनय की अवस्था में भी संबंध पकड़ने की योग्यता है परन्तु केवल विनय अवस्था तथा आर्द्रता और तपन इस बात का प्रमाण नहीं है कि वह संबंध हो भी गया है जैसा कि वीर्य के रूप में जो उस रूहानी रूप के मुकाबले पर ही अवलोकन प्रकट कर रहा है। यदि कोई व्यक्ति अपनी पत्नी से सहवास करे और वीर्य पत्नी की भग में प्रवेश कर जाए और उसे इस कृत्य से नितान्त आनन्द प्राप्त हो तो यह आनन्द इस बात को सिद्ध नहीं करेगा कि गर्भ अवश्य हो गया है। अतः ऐसा ही विनय, तपन एवं विनम्रता की अवस्था यद्यपि वह कैसा ही आनन्द एवं मस्ती के साथ हो ख़ुदा से संबंध ग्रहण करने के लिए कोई अनिवार्य लक्षण नहीं * है। अर्थात् किसी

---

*प्रारंभिक अवस्था में विनय एवं आर्द्रता के साथ हर प्रकार के व्यर्थ कार्य एकत्र हो सकते हैं, जैसा कि बच्चे में रोने की आदत बहुत होती है और बात-बात में डर जाता तथा विनय और विनम्रता धारण करता है परन्तु इस सब के साथ बचपन में स्वाभाविक तौर पर मनुष्य बहुत सी व्यर्थ बातों तथा व्यर्थ कार्यों की ओर ही प्रेरणा करता है और प्रायः व्यर्थ गतिविधियों तथा व्यर्थ तौर पर उछल-कूद ही उसे पसंद आती है जिसमें प्रायः अपने शरीर को भी कोई आघात पहुंचा देता है। इस से स्पष्ट है कि मनुष्य के जीवन के मार्ग में स्वाभाविक तौर पर पहले व्यर्थ बातें ही आती हैं तथा इस स्तर को तय किए बिना दूसरे स्तर तक वह पहुंच ही नहीं सकता। अतः स्वाभाविक तौर पर वयस्क होने की प्रथम श्रेणी बचपन की व्यर्थ बातों से बचना है। अतः इससे सिद्ध होता है कि सब से पहला संबंध मानव प्रकृति का व्यर्थ बातों से ही होता है। (इसी से)

व्यक्ति में नमाज़ और ख़ुदा को स्मरण करने की अवस्था में विनय, तपन, पिघलना तथा रोना-धोना पैदा होना अनिवार्य तौर पर इस बात को अनिवार्य नहीं कि उस व्यक्ति का ख़ुदा से सम्बन्ध भी है। संभव है कि सब परिस्थितियां किसी व्यक्ति में विद्यमान हों परन्तु अभी उसका ख़ुदा तआला से संबंध न हो जैसा कि व्यापक अवलोकन इस बात पर साक्षी है कि बहुत से लोग नसीहत की मज्लिसों और उपदेश एवं ख़ुदा को स्मरण करने की सभाओं अथवा नमाज़ और ख़ुदा की याद करने की अवस्था में बहुत रोते, झूमते, नारे लगाते तथा तपन और नम्रता प्रकट करते हैं और उनके गालों पर आंसू पानी की भांति बहने लगते हैं अपितु कुछ का रोना तो मुंह पर रखा हुआ होता है। एक बात सुनी और वहीं रो दिया तथापि वे निरर्थक बातों से पृथक नहीं होते तथा बहुत से व्यर्थ कार्य और व्यर्थ बातों तथा व्यर्थ सैर तमाशे उनके गले का हार हो जाते हैं, जिन से समझा जाता है कि कुछ भी उनको ख़ुदा तआला से सम्बन्ध नहीं और न उनके हृदयों में ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता और भय है। अतः यह विचित्र तमाशा है कि ऐसे गन्दे लोगों के साथ भी विनय, तपन और विनम्रता की अवस्था एकत्र हो जाती है और यह नसीहत ग्रहण करने का स्थान है और इस से यह बात सिद्ध होती है कि अकेली विनय और रोना-धोना कि जो व्यर्थ बातें का त्याग किए बिना हो कुछ गर्व करने का स्थान नहीं और न यह ख़ुदा के सानिध्य तथा ख़ुदा से सम्बन्ध का कोई लक्षण है। मैंने बहुत से ऐसे फ़क़ीर स्वयं अपनी आंखों से देखे हैं और इसी प्रकार कुछ अन्य लोग भी देखने में आए हैं कि किसी करुणा युक्त शे'र के पढ़ने या पीड़ादायक दृश्य देखने या कष्टदायक किस्से के सुनने से इतनी शीघ्रता से उनके आंसू गिरने आरंभ हो जाते हैं जैसे कि कुछ बादल इतनी शीघ्रता से अपनी मोटी-मोटी बूंदें बरसाते हैं कि बाहर सोने वालों को रात के समय अवसर नहीं देते कि अपना बिस्तर बिना भीगे अन्दर ले जा सकें। परन्तु मैं अपनी व्यक्तिगत अनुभव से साक्ष्य देता हूं कि मैंने अधिकतर ऐसे व्यक्ति बड़े मक्कार अपितु सांसारिक लोगों से आगे बढ़े हुए पाए हैं तथा कुछ को मैंने ऐसा पापी, बेईमान और हर

पहलू से गुंडा पाया है कि मुझे उनके रोने-धोने की आदत तथा विनय एवं विनम्रता की प्रकृति देखकर इस बात से घृणा आती है कि किसी सभा में ऐसी आर्द्रता और विनम्रता प्रकट करूं। हां किसी समय में विशेष तौर पर यह सदाचारी पुरुषों का लक्षण था, किन्तु अब तो यह शैली मक्कार और धोखेबाज़ लोगों की हो गई है। हरे कपड़े, सर के बाल लम्बे, हाथ में तस्बीह, आंखों से हर दम आंसुओं की झड़ी, होंठों में कुछ थरथराहट जैसे हर समय ख़ुदा की याद ज़ुबान पर जारी है तथा इसके साथ बिदअत की पाबन्दी। ये लक्षण अपने फ़क़ीर होने के प्रकट करते हैं, परन्तु हृदय कोढ़ग्रस्त, ख़ुदा के प्रेम से वंचित सिवाए कुछ के। सत्यनिष्ठ मेरे इस लेख से पृथक हैं जिनकी प्रत्येक बात बतौर जोश और वर्तमान के अनुसार होती है न कि दिखावे और कथन के। बहरहाल यह तो सिद्ध है कि रोना-धोना तथा विनय और विनम्रता सदाचारी पुरुषों के लिए कोई विशिष्ट लक्षण नहीं अपितु यह भी मनुष्य के अन्दर एक शक्ति है जो उचित और अनुचित दोनों परिस्थितियों में गति करती है। मनुष्य कभी एक काल्पनिक कहानी पढ़ता है और जानता है कि यह काल्पनिक तथा उपन्यास का प्रकार है तथापि जब उसके एक पीड़ादायक स्थान पर पहुंचता है तो उसका हृदय अपने अधिकार से बाहर हो जाता है और सहसा आंसू जारी होते हैं जो थमते नहीं। ऐसी पीड़ादायक कहानियां यहां तक प्रभावी पाई गई हैं कि किसी समय स्वयं एक मनुष्य एक दर्द भरा क़िस्सा वर्णन करना प्रारंभ करता है और जब वर्णन करते-करते उस के एक पीड़ा से भरे स्थान पर पहुंचता है तो स्वयं ही उसकी आंखें आंसुओं से भर जाती हैं तथा उसकी आवाज़ भी एक रोने वाले व्यक्ति के रंग में हो जाती है। अन्ततः उसका रोना छलक पड़ता है और जो रोने के अन्दर एक प्रकार की मस्ती और आनन्द है वह उसे प्राप्त हो जाता है और उसे भली भांति ज्ञात होता है कि जिस कारण वह रोता है वह कारण ही गलत और एक काल्पनिक क़िस्सा है। अतः क्यों और क्या कारण है कि ऐसा होता है। इसका यही कारण है कि विनम्रता और रोने-धोने की शक्ति जो मनुष्य के अन्दर मौजूद है उसको एक घटना के सही या ग़लत

होने से कुछ काम नहीं अपितु जब उसके लिए ऐसे साधन पैदा हो जाते हैं जो उस शक्ति को गति देने योग्य होते हैं तो अकारण वह आर्द्रता गति में आ जाती है तथा ऐसे मनुष्य को एक प्रकार की मस्ती और आनन्द पहुंच जाता है यद्यपि वह मोमिन हो या काफ़िर। इसी कारण इस्लामी धर्मशास्त्र के प्रतिकूल सभाओं में भी जो भिन्न-भिन्न प्रकार की बिदअतों पर आधारित होती हैं स्वच्छन्द और निरंकुश लोग जो स्वयं को फ़क़ीरों के भेष में प्रकट करते हैं विभिन्न प्रकार की तुकबन्दी और शे'रों के सुनने तथा आनन्द एवं मस्ती के प्रभाव से नृत्य, आत्म-विस्मृति तथा रोना-धोना आरंभ कर देते हैं और अपने रंग में आनन्द उठाते हैं और विचार करते हैं कि हम ख़ुदा को मिल गए हैं परन्तु यह आनन्द उस आनन्द के समान है जो एक व्यभिचारी को व्यभिचारिणी स्त्री से होता है।

और फिर एक और समानता विनय और वीर्य में है और वह यह कि जब एक व्यक्ति का वीर्य उसकी पत्नी या किसी और स्त्री के अन्दर प्रविष्ट होता है तो उस वीर्य का भग के अन्दर प्रविष्ट होना तथा स्खलन का रूप पकड़ कर जारी हो जाना बिल्कुल रोने के रूप पर होता है जैसा कि विनय की अवस्था का परिणाम भी रोना ही होता है तथा जैसे वीर्य सहसा उछल कर स्खलन का रूप धारण करता है यही स्थिति पूर्ण विनय के समय रोने की होती है कि रोना आंखों से उछलता है और जैसा स्खलन का आनंद कभी वैध तौर पर होता है जबकि मनुष्य अपनी पत्नी से सहवास करता है और कभी अवैध तौर पर जबकि मनुष्य किसी व्यभिचारिणी स्त्री से सहवास करता है। यही स्थिति विनय, विनम्रता तथा रोने-धोने की है अर्थात् कभी विनय एवं विनम्रता मात्र ख़ुदा तआला जो भागीदार रहित तथा एक है के लिए होती है जिसके साथ किसी बिदअत या शिर्क का रंग नहीं होता। अत: वह विनम्रता का आनन्द एक वैध आनन्द होता है परन्तु कभी विनय, विनम्रता तथा उसका आनन्द बिदअतों की मिलावट से या सृष्टि-पूजा तथा मूर्तियों और देवियों की उपासना में भी प्राप्त होता है परन्तु वह आनन्द व्यभिचार के सहवास से समानता रखता है। अत: अकेली विनय, विनम्रता तथा रोना-धोना और उसके आनन्द

ख़ुदा के साथ सम्बन्ध के लिए अनिवार्य नहीं अपितु जिस प्रकार बहुत से ऐसे वीर्य हैं जो नष्ट हो जाते हैं और गर्भाशय उनको स्वीकार नहीं करता। इसी प्रकार बहुत से विनय, विनम्रता और रोने हैं जो मात्र आंखें खोना है और दयालु ख़ुदा उनको स्वीकार नहीं करता। अत: विनय की अवस्था को जो रूहानी अस्तित्व की पहली श्रेणी है वीर्य होने की स्थिति से जो शारीरिक अस्तित्व की पहली श्रेणी है एक खुली-खुली समानता है जिसे हम विस्तारपूर्वक लिख चुके हैं और यह समानता कोई साधारण बात नहीं है अपितु अनादि स्रष्टा (ख़ुदा) की विशेष इच्छा से उन दोनों में सर्वांगपूर्ण समानता है। यहां तक कि ख़ुदा तआला की किताब में भी लिखा गया है कि दूसरे संसार में (परलोक में) भी ये दोनों आनन्द होंगे। परन्तु समानता में इतनी उन्नति कर जाएंगे कि एक ही हो जाएंगे अर्थात् उस संसार में जो एक व्यक्ति अपनी पत्नी से प्रेम और मेल करेगा वह इस बात में अन्तर नहीं कर सकेगा कि वह अपनी पत्नी से प्रेम और मेल करता है या ख़ुदा के प्रेम के अपार दरिया में डूबा हुआ है तथा ख़ुदा तआला से मिलाप करने वालों पर इसी लोक में यह अवस्था छा जाती है जो सांसारिक लोगों और महजूबों के लिए एक बोध से परे बात है।

अब हम यह तो वर्णन कर चुके कि रूहानी अस्तित्व की पहली श्रेणी जो विनय की अवस्था है शारीरिक अस्तित्व की पहली श्रेणी से जो वीर्य है पूर्ण समानता रखती है। तत्पश्चात् यह वर्णन करना आवश्यक है कि रूहानी अस्तित्व की दूसरी श्रेणी भी शारीरिक अस्तित्व की दूसरी श्रेणी से समान और समरूप है। इस का विवरण यह है जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं कि रूहानी अस्तित्व की दूसरी श्रेणी वह है जो इस पवित्र आयत में वर्णन की गई है अर्थात् -

وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ[1]

अर्थात् मोमिन वे हैं जो व्यर्थ बातों, व्यर्थ कामों, व्यर्थ गतिविधियों, व्यर्थ सभाओं,

1 अलमोमिनून : 4

व्यर्थ मेल-मिलाप तथा व्यर्थ सम्बन्धों से पृथक हो जाते हैं और इसकी तुलना में शारीरिक अस्तित्व की दूसरी श्रेणी वह है जिसे ख़ुदा तआला ने अपने प्रिय कलाम में عَلَقَه का नाम दिया है। जैसा कि उसका कथन है ثُمَّ خَلَقْنَا النُّطْفَةَ عَلَقَةً[1] अर्थात् फिर हमने वीर्य को अलक़ा बनाया अर्थात् हमने उसको व्यर्थ तौर पर नष्ट होने से बचा कर प्रभाव और सम्बन्ध से अलक़ा बना दिया। इससे पूर्व वह ख़तरे के स्थान में था तथा कुछ ज्ञात न था कि मानव अस्तित्व बने या नष्ट हो जाए। परन्तु वह गर्भाशय के सम्बन्ध के पश्चात् व्यर्थ होने से सुरक्षित हो गया और उसमें एक परिवर्तन उत्पन्न हो गया जो पहले न था अर्थात् वह एक जमे हुए रक्त के रूप में हो गया और वह तत्त्व भी गाढ़ा हो गया तथा गर्भाशय से उसका एक सम्बन्ध हो गया इसलिए उसका नाम عَلَقَه (अलक़ा) रखा गया और ऐसी स्त्री गर्भवती कहलाने की अधिकारी हो गई और सम्बन्ध के कारण गर्भाशय उसका अभिभावक बन गया और उसकी छत्र-छाया में वीर्य का पोषण एवं विकास होने लगा। किन्तु इस अवस्था में वीर्य ने कुछ अधिक शुद्धता प्राप्त नहीं की। केवल एक जमा हुआ रक्त बन गया और गर्भाशय के सम्बन्ध के कारण नष्ट होने से बच गया तथा जिस प्रकार अन्य रूपों में एक वीर्य व्यर्थ तौर फैलता तथा व्यर्थ तौर पर अन्दर से बह निकलता और कपड़ों को अपवित्र करता था। अब इस सम्बन्ध के कारण बेकार जाने से सुरक्षित हो गया किन्तु अभी वह एक जमा हुआ रक्त था जिसने अभी हल्की अपवित्रता से पवित्रता प्राप्त नहीं की थी। यदि गर्भाशय से उसका यह सम्बन्ध पैदा न होता तो संभव था कि वह भग में प्रवेश कर के गर्भाशय में न ठहर सकता और बाहर की ओर बह जाता, परन्तु गर्भाशय की प्रबंध कुशल-शक्ति ने अपने विशेष आकर्षण से उसको थाम लिया और फिर एक जमे हुए रक्त के रूप पर बना दिया। तब जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं इस सम्बन्ध के कारण अलक़: कहलाया। इससे पूर्व गर्भाशय ने उस पर अपना कोई विशेष प्रभाव प्रकट नहीं किया था और उसी प्रभाव ने

[1] अलमोमिनून : 14

उसे व्यर्थ होने से रोका और उसी प्रभाव से वीर्य की भांति उसमें आर्द्रता भी शेष न रही अर्थात् उसका तत्त्व अधम और पतला न रहा अपितु कुछ गाढ़ा हो गया।

इस अलक़: के मुकाबले पर शारीरिक अस्तित्व की जो दूसरी श्रेणी है रूहानी अस्तित्व की दूसरी श्रेणी वह है जिस की अभी हम ऊपर चर्चा कर चुके हैं जिसकी ओर पवित्र क़ुर्आन की यह आयत संकेत करती है - وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ (अलमोमिनून-4) अर्थात् मुक्ति प्राप्त मोमिन वे लोग हैं जो व्यर्थ कार्यों, व्यर्थ बातों, व्यर्थ गतिविधियों, व्यर्थ सभाओं तथा व्यर्थ संगतों से और व्यर्थ सम्बन्धों से एवं व्यर्थ आवेगों से पृथक हो जाते हैं और उनका ईमान उस श्रेणी तक पहुंच जाता है कि इस सीमा तक की पृथकता उन पर आसान हो जाती है क्योंकि ईमान की उन्नति के कारण उन का एक सीमा तक दयालु ख़ुदा से सम्बन्ध हो जाता है जैसा कि अलक़ा होने की अवस्था में जब वीर्य का सम्बन्ध किसी सीमा तक गर्भाशय से हो जाता है तो वह व्यर्थ तौर पर गिर जाने या बह जाने अथवा किसी अन्य प्रकार से नष्ट हो जाने से सुरक्षा में आ जाता है इल्ला माशा अल्लाह। अत: रूहानी अस्तित्व की इस द्वितीय श्रेणी में दयालु ख़ुदा से संबंध सर्वथा उस सम्बन्ध के समान होता है जो शारीरिक अस्तित्व की द्वितीय श्रेणी पर अलक़: का गर्भाशय से सम्बन्ध हो जाता है। जैसा कि रूहानी अस्तित्व की द्वितीय श्रेणी के प्रकट होने से पूर्व व्यर्थ सम्बन्धों एवं व्यर्थ कार्यों से मुक्ति पाना असंभव होता है और केवल रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी अर्थात् विनय और विनीतता की अवस्था प्राय: बरबाद भी हो जाती है तथा परिणाम बुरा होता है। इसी प्रकार वीर्य भी जो शारीरिक अस्तित्व की प्रथम श्रेणी है अलक़: बनने की अवस्था से पूर्व प्राय सैकड़ों बार व्यर्थ तौर पर नष्ट हो जाता है। फिर जब इस बात के बारे में ख़ुदा का इरादा होता है कि व्यर्थ तौर पर नष्ट होने से उस को बचाए तो उसकी आज्ञा और आदेश से वही वीर्य गर्भाशय में अलक़: बन जाता है तब वह शारीरिक अस्तित्व की द्वितीय श्रेणी कहलाती है। अत: रूहानी अस्तित्व की द्वितीय श्रेणी जो समस्त व्यर्थ बातों तथा समस्त व्यर्थ कार्यों से बचना तथा

व्यर्थ बातों, व्यर्थ सम्बन्धों तथा व्यर्थ आवेगों से पृथक होना है। यह **श्रेणी** भी उसी समय प्राप्त होती है जब दयालु ख़ुदा से मनुष्य का **संबंध** पैदा हो जाए क्योंकि संबंध में ही यह शक्ति और ताक़त है कि दूसरे संबंध को तोड़ती है और नष्ट होने से बचाती है। यद्यपि मनुष्य को अपनी नमाज़ में विनय की अवस्था उपलब्ध हो जाए तो रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी है। फिर भी वह विनय व्यर्थ बातों, व्यर्थ कार्यों, व्यर्थ आवेगों से रोक नहीं सकती जब तक कि **ख़ुदा से वह संबंध** न हो जो रूहानी अस्तित्व की **द्वितीय श्रेणी** पर होता है। उस का उदाहरण ऐसा ही है कि यद्यपि एक मनुष्य अपनी पत्नी से प्रतिदिन कई बार सहवास करे तथापि वह वीर्य नष्ट होने से रुक नहीं सकता जब तक कि गर्भाशय से उसका सम्बन्ध पैदा न हो जाए।

अतः ख़ुदा तआला का यह कहना है وَالَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ इसके यही अर्थ हैं कि मोमिन वही हैं जो स्वयं को व्यर्थ सम्बन्धों से पृथक करते हैं और व्यर्थ सम्बन्धों से स्वयं को पृथक करना ख़ुदा तआला के सम्बन्ध का कारण है* । यद्यपि

---

* व्यर्थ सम्बन्धों से पृथक होना ख़ुदा तआला के सम्बन्ध का कारण इसलिए है कि ख़ुदा तआला ने उन्हीं आयतों में اَفْلَحَ के शब्द के साथ वादा किया है कि जो व्यक्ति ख़ुदा की अभिलाषा में कोई कार्य करेगा वह अपने परिश्रम और प्रयास के अनुसार ख़ुदा को पाएगा और उस से सम्बन्ध पैदा करेगा। अतः जो व्यक्ति ख़ुदा का संबंध प्राप्त करने के लिए व्यर्थ कार्यों को छोड़ता है उसे उस वादे के अनुसार जो शब्द اَفْلَحَ में है एक हल्का सा संबंध ख़ुदा तआला से हो जाता है क्योंकि उसने जो कार्य किया है वह भी बड़ा भारी कार्य नहीं, केवल एक हल्के सम्बन्ध को जो उसका व्यर्थ बात से था त्याग दिया है। स्मरण रहे जैसा कि शब्द اَفْلَحَ प्रथम आयत में मौजूद है। अर्थात् इस आयत में कि قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ यही शब्द दो वाक्यों को मिलाने के तौर पर समस्त भावी आयतों से वादे के तौर पर संबंधित है। अतः यह आयत कि وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ यही अर्थ रखती है कि قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ

व्यर्थ बातों से हृदय को छुड़ाना ख़ुदा से हृदय का लगा लेना है क्योंकि मनुष्य अनश्वर की उपासना (इबादत) के लिए पैदा किया गया है तथा स्वाभाविक तौर पर उसके हृदय में ख़ुदा तआला का प्रेम मौजूद है। इसलिए यही कारण है कि मनुष्य की आत्मा (रूह) को ख़ुदा तआला से एक अनादि सम्बन्ध है जैसा कि आयत ① اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ قَالُوْا بَلٰى से प्रकट होता है और वह सम्बन्ध जो मनुष्य की रहीमियत (दयालुता) की छाया के नीचे आकर अर्थात् इबादतों (उपासनाओं) के माध्यम से ख़ुदा तआला से प्राप्त होता है। जिस सम्बन्ध की प्रथम श्रेणी यह है कि ख़ुदा पर ईमान लाकर प्रत्येक व्यर्थ बात, व्यर्थ कार्य, व्यर्थ सभा, व्यर्थ गतिविधि, व्यर्थ सम्बन्ध, व्यर्थ आवेग से पृथकता धारण की जाए। वह उसी अनश्वर सम्बन्ध को गुप्त शक्ति से क्रियात्मक अवस्था में लाना है कोई नई बात नहीं है और जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं मनुष्य के रूहानी अस्तित्व की प्रथम श्रेणी जो नमाज़ और ख़ुदा को स्मरण करने में विनय की अवस्था आर्द्रता और विनम्रता है, यह श्रेणी स्वयं में केवल चरितार्थ की हैसियत रखती है अर्थात् विनय के लिए वह अनिवार्य बात नहीं है कि व्यर्थ बातों का परित्याग भी साथ ही हो या उस से बढ़कर कोई उच्चकोटि के शिष्टाचार तथा सभ्य आदतें साथ हों अपितु संभव है कि जो व्यक्ति नमाज़ में विनय, आर्द्रता, विनम्रता तथा रोना-धोना धारण करता है चाहे इतना ही कि दूसरे पर भी उस का प्रभाव पड़ता है अभी व्यर्थ बातों, व्यर्थ कार्यों, व्यर्थ गतिविधियों व्यर्थ सभाओं, व्यर्थ सम्बन्धों तथा व्यर्थ कामवासना संबंधी जोशों से उसका हृदय पवित्र न हो। अर्थात् संभव है अभी पापों से उसकी आज़ादी न हो क्योंकि विनय-अवस्था का कभी-कभी हृदय पर आ जाना या नमाज़ में रुचि और हर्ष प्राप्त होना यह और बात है तथा आत्मा की शुद्धि और बात तथा यद्यपि किसी साधक की विनय, प्रार्थना, विनम्रता,

---

هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ और اِفلاح अर्थात् اَفْلَحَ का शब्द प्रत्येक बार ईमान पर एक विशेष अर्थ रखता है और एक विशेष संबंध का वादा देता है। (इसी से)

① अलअ'राफ़ - 173

बिदअत और शिर्क की मिलावट से पवित्र भी हो तथापि ऐसा व्यक्ति जिसका रूहानी अस्तित्व अभी द्वितीय श्रेणी तक नहीं पहुंचा अभी केवल रूहानी क़िब्ल: का प्रण कर रहा है और मार्ग में फिर रहा है और अभी उसके मार्ग में भिन्न-भिन्न प्रकार के जंगल, वन, कांटे और पर्वत तथा तूफान से भरपूर महासागर और ईमान और प्राणों के शत्रु दरिन्दे पग-पग पर बैठे हैं जब तक रूहानी अस्तित्व की द्वितीय श्रेणी तक न पहुंच जाए।

स्मरण रहे कि विनय और प्रार्थना की अवस्था को यह बात कदापि अनिवार्य नहीं है कि ख़ुदा से सच्चा संबंध हो जाए अपितु प्राय: दुष्ट लोगों को भी ख़ुदाई आक्रोश का कोई नमूना देख कर विनय की अवस्था पैदा हो जाती है और ख़ुदा तआला से उनका कुछ भी सम्बन्ध नहीं होता और न व्यर्थ कार्यों से अभी मुक्ति होती है। उदाहरणतया वह भूकम्प जो 4, अप्रैल 1905 ई. को आया था, उसके आने के समय लाखों हृदयों में ऐसा विनय और विनम्रता हुई थी कि ख़ुदा का नाम लेने और रोने के अतिरिक्त अन्य कोई कार्य न था यहां तक कि नास्तिकों को भी अपनी नास्तिकता भूल गई थी और फिर जब वह समय जाता रहा और पृथ्वी स्थिर हो गई तो विनय की अवस्था मिट गई यहां तक कि मैंने सुना है कि कुछ नास्तिकों ने जो उस समय ख़ुदा को स्वीकार करने लगे थे बड़ी बेशर्मी और दिलेरी से कहा कि हमें ग़लती लग गई थी कि हम भूकम्प के दबदबे में आ गए अन्यथा ख़ुदा नहीं है। अत: जैसा कि हम बार-बार उल्लेख कर चुके हैं विनय की अवस्था के साथ बहुत सी मलिनताएं एकत्र हो सकती हैं। यद्यपि वह समस्त भावी विशेषताओं के लिए बीज की भांति है परन्तु इसी अवस्था को पूर्ण समझना स्वयं को धोखा देना है अपितु इसके पश्चात् एक अन्य श्रेणी है मोमिन को जिसकी खोज करनी चाहिए और सुस्त नहीं होना चाहिए जब तक वह श्रेणी प्राप्त न हो जाए और वह वही श्रेणी है जिसे ख़ुदा के कलाम ने इन शब्दों में वर्णन किया है وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَنِ اللَّغْوِ مُعْرِضُوْنَ अर्थात् मोमिन केवल वही लोग नहीं हैं जो नमाज़ में विनय धारण करते तथा विनम्रता प्रकट करते हैं अपितु इन से बढ़कर वे मोमिन हैं जो विनय, और विनम्रता के

बावजूद समस्त व्यर्थ कार्यों तथा व्यर्थ सम्बन्धों से पृथक हो जाते हैं और अपनी विनय की अवस्था को व्यर्थ कार्यों और व्यर्थ बातों के साथ मिलकर व्यर्थ और बरबाद नहीं होने देते और स्वाभाविक तौर पर समस्त व्यर्थ बातों से पृथक हो जाते हैं तथा व्यर्थ बातों एवं कार्यों से उनके हृदयों में एक घृणा उत्पन्न हो जाती है और यह इस बात का प्रमाण होता है कि उनका ख़ुदा से कुछ सम्बन्ध हो गया है क्योंकि एक ओर से मनुष्य तब ही मुख फेरता है जब दूसरी ओर उसका सम्बन्ध हो जाता है। अत: संसार की व्यर्थ बातों, व्यर्थ कार्यों तथा व्यर्थ सैर व तमाशा और व्यर्थ संगतों से निश्चित तौर पर मनुष्य का हृदय उसी समय ठण्डा होता है जब हृदय का दयालु ख़ुदा के साथ सम्बन्ध हो जाए और हृदय पर उसकी श्रेष्ठता और भय विजयी हो जाए। इसी प्रकार वीर्य भी उसी समय व्यर्थ तौर पर नष्ट हो जाने से सुरक्षित होता है जब गर्भाशय से उस का सम्बन्ध हो जाए और गर्भाशय का प्रभाव उस पर विजयी हो जाए और सम्बन्ध के समय वीर्य का नाम अलक़: हो जाता है। अत: इसी प्रकार रूहानी अस्तित्व की द्वितीय श्रेणी भी मोमिन की व्यर्थ बातों से विमुखता है रूहानी तौर पर अलक़: है क्योंकि इसी श्रेणी पर मोमिन के हृदय पर ख़ुदा के भय और श्रेष्ठता व्याप्त होकर उसे व्यर्थ बातों तथा व्यर्थ कार्यों से छुड़ाती है तथा ख़ुदा के भय और उसकी श्रेष्ठता से प्रभावित होकर व्यर्थ बातों तथा व्यर्थ कार्यों को हमेशा के लिए त्याग देना यही वह अवस्था है जिसको दूसरे शब्दों में ख़ुदा के साथ संबंध होना कहते हैं। परन्तु यह सम्बन्ध जो केवल व्यर्थ बातों को त्यागने के कारण ख़ुदा तआला से होता है यह एक हल्का संबंध है, क्योंकि इस श्रेणी पर मोमिन केवल व्यर्थ बात से संबंध विच्छेद करता है परन्तु अपने प्राण की आवश्यक वस्तुओं से तथा ऐसी बातों से जिन पर आजीविका की समृद्धि का भाग है अभी उसके हृदय का संबंध होता है। इसलिए अभी अपवित्रता का एक भाग उसके अन्दर रहता है। इसी कारण ख़ुदा तआला ने रूहानी अस्तित्व की इस श्रेणी को अलक़: से समानता दी है और अलक़: जमा हुआ रक्त होता है जिसमें रक्त होने के कारण एक भाग अपवित्रता का शेष होता

है तथा इस श्रेणी में यह दोष इसलिए रह जाता है कि ऐसे लोग ख़ुदा तआला से पूर्णतया नहीं डरते तथा उनके हृदयों में अल्लाह तआला की श्रेष्ठता और भय पूर्ण रूप से नहीं बैठा। इसलिए केवल अधम और व्यर्थ बातों के त्यागने पर समर्थ हो सकते हैं न कि और बातों पर। अत: विवशतावश इतनी अपवित्रता अपूर्ण लोगों में रह जाती है कि वे ख़ुदा तआला से एक हल्का सा संबंध पैदा करके व्यर्थ बातों से पृथक हो जाते हैं परन्तु उन कार्यों को छोड़ नहीं सकते जिन का छोड़ना हृदय पर बहुत भारी है अर्थात् वे ख़ुदा तआला के लिए उन वस्तुओं को छोड़ नहीं सकते जो कामवासना संबंधी आनन्दों के लिए अनिवार्य सामान हैं। इस वर्णन से स्पष्ट है कि मात्र व्यर्थ बातों से विमुखता ऐसी बात नहीं है जो अत्यधिक प्रशंसनीय हो अपितु यह मोमिन की एक तुच्छ अवस्था है। हां विनय की अवस्था से एक श्रेणी उन्नति पर है।

शारीरिक अस्तित्व की **तृतीय** श्रेणी की तुलना में रूहानी अस्तित्व की **तृतीय श्रेणी** है। इसका विवरण यह है कि शारीरिक अस्तित्व की तृतीय श्रेणी यह है जो इस आयत में वर्णन की गई है — **فَخَلَقْنَا الْعَلَقَةَ مُضْغَةً**[1] अर्थात् इसके पश्चात् हमने अलक़: को बोटी (मांस का टुकड़ा) बनाया। यह वह श्रेणी है जिसमें मनुष्य का शारीरिक अस्तित्व अपवित्रता से बाहर आता है तथा उसमें पहले से किसी सीमा तक कठोरता और सख़्ती भी उत्पन्न हो जाती है क्योंकि वीर्य और जमा हुआ रक्त जो अलक़: है वे दोनों अपने अन्दर एक हल्की अपवित्रता रखते हैं तथा अपने मूल की दृष्टि से भी **مُضْغَةً** की अपेक्षा नर्म और तरल हैं परन्तु मुज़्ग़: जो गोश्त (मांस) का एक टुकड़ा होता है अपने अन्दर पवित्र अवस्था पैदा करता है और अपेक्षाकृत वीर्य तथा अलक़: के मूल तत्त्व में भी एक सीमा तक कठोरता पैदा कर लेता है यही स्थिति रूहानी अस्तित्व की तृतीय श्रेणी की है और रूहानी अस्तित्व की तृतीय श्रेणी वह है जो इस आयत में वर्णन

---

① अलमोमिनून : 15

की गई है - وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوْنَ① इस आयत के अर्थ ये हैं कि वह मोमिन जो पहली दो अवस्थाओं से बढ़कर क़दम रखता है वह केवल बेहूदा और व्यर्थ बातों से ही पृथक नहीं होता अपितु कृपणता (कंजूसी) की अपवित्रता को दूर करने के लिए जो स्वाभाविक तौर पर प्रत्येक मनुष्य के अन्दर होती है ज़कात भी देता है अर्थात् ख़ुदा के मार्ग में अपने माल का एक भाग व्यय करता है। ज़कात का नाम इसीलिए ज़कात है कि मनुष्य उस की अदायगी से अर्थात् अपने माल को जो उसे बहुत प्रिय है ख़ुदा के लिए देने से कृपणता की अपवित्रता से पवित्र हो जाता है और जब कृपणता की अपवित्रता जिस से मनुष्य स्वाभाविक तौर पर बहुत सम्बन्ध रखता है मनुष्य के अन्दर से निकल जाती है तो वह किसी सीमा तक पवित्र होकर ख़ुदा से जो अपने अस्तित्व में पवित्र है एक अनुकूलता उत्पन्न कर लेता है :-

कोई उस पाक से जो दिल लगावे,
करे पाक आप को तब उसको पावे।

यह श्रेणी पहली दो अवस्थाओं में नहीं पाई जाती क्योंकि केवल विनय और प्रार्थना या केवल व्यर्थ बातों को त्यागना ऐसे मनुष्य से भी हो सकता है जिसमें अभी कृपणता की अपवित्रता मौजूद है परन्तु जब ख़ुदा तआला के लिए अपने उस प्रिय माल को त्याग देता है जिस पर उसके जीवन का आधार और जीविका निर्भर है और जो कठिन परिश्रम तथा कष्ट करके कमाया गया है तब कृपणता की अपवित्रता उसके अन्दर से निकल जाती है और उसके साथ ही ईमान में भी एक सख़्ती और कठोरता पैदा हो जाती है और वे दोनों उपरोक्त कथित अवस्थाएं जो उन से पहले होती हैं उनमें यह पवित्रता प्राप्त नहीं होती अपितु एक गुप्त अपवित्रता उनके अन्दर रहती है। इसमें नीति यही है कि व्यर्थ बातों से मुख फेरने में केवल बुराई का त्याग है और बुराई भी ऐसी जिसके जीवन तथा उसकी सुरक्षा के लिए कुछ आवश्यकता नहीं और हृदय पर उसका त्याग करने में कोई

① अलमोमिनून : 5

कठिनाई नहीं परन्तु अपनी मेहनत से अर्जित किया हुआ माल केवल ख़ुदा की प्रसन्नता के लिए देना यह भलाई अर्जित करना है जिस से वह हृदय की अपवित्रता जो सब अपवित्रताओं से निकृष्टतर है अर्थात् कृपणता दूर होती है। इसलिए यह ईमानी अवस्था की तृतीय श्रेणी है जो पहली दो श्रेणियों से अधिक प्रतिष्ठित और उत्तमतर है तथा इसकी तुलना में शारीरिक अस्तित्व के तैयार होने में मुज़्ग़: की श्रेणी है जो पहली दो श्रेणियों वीर्य और अलक़: से श्रेष्ठता में अधिक है और शुद्धता में विशेषता रखता है क्योंकि वीर्य और अलक़: दोनों हल्की अपवित्रता से लिथड़े हुए हैं किन्तु मुज़्ग़: पवित्र अवस्था में है तथा जिस प्रकार गर्भाशय में मुज़्ग़: को वीर्य और अलक़: की अपेक्षा एक उन्नतिशील अवस्था तथा पवित्रता पैदा हो जाती है और वीर्य एवं अलक़: की अपेक्षा उसका गर्भाशय से संबंध भी अधिक हो जाता है और सख़्ती एवं कठोरता भी अधिक हो जाती है। यही अवस्था रूहानी अस्तित्व की तृतीय श्रेणी की है जिसकी परिभाषा ख़ुदा तआला ने यह की है - وَ الَّذِيۡنَ هُمۡ لِلزَّكٰوةِ فٰعِلُوۡنَ[1] अर्थात् मोमिन वे हैं जो अपने नफ़्स को कृपणता से पवित्र रखने के लिए अपना प्रिय माल ख़ुदा के मार्ग में देते हैं और इस कार्य को वे स्वयं अपनी इच्छा से करते हैं। अत: रूहानी अस्तित्व की इस तृतीय श्रेणी में वही तीन विशेषताएं पाई जाती हैं जो शारीरिक अस्तित्व की तृतीय श्रेणी में अर्थात् मुज़्ग़: होने की अवस्था में पाई जाती हैं, क्योंकि यह अवस्था जो कृपणता से पवित्र होने के लिए अपना धन ख़ुदा के मार्ग में व्यय करना और अपने परिश्रम से अर्जित पूंजी केवल अल्लाह के लिए दूसरे को देना उस अवस्था की अपेक्षा जो केवल व्यर्थ बातों तथा व्यर्थ कार्यों से बचना है एक उन्नति प्राप्त अवस्था है और इसमें स्पष्ट एवं व्यापक तौर पर कृपणता की अपवित्रता से पवित्रता प्राप्त होती है और दयालु ख़ुदा से संबंध बढ़ता है क्योंकि अपने प्रिय धन को ख़ुदा के लिए त्यागना व्यर्थ बातों के छोड़ने की अपेक्षा नफ़्स पर अत्यधिक भारी है। इसलिए इस अधिक कष्ट उठाने के कार्य से ख़ुदा से सम्बन्ध भी

1 अलमो'मिनून : 5

अधिक हो जाता है और एक कठिनाई वाला कार्य करने के कारण ईमानी सख़्ती और दृढ़ता भी अधिक हो जाती है।

अब इस के पश्चात् रूहानी अस्तित्व की **चौथी श्रेणी** वह है जिसे ख़ुदा तआला ने इस पवित्र आयत में वर्णन किया है وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِفُرُوْجِهِمْ حٰفِظُوْنَ[1] अर्थात् तृतीय श्रेणी से बढ़कर मोमिन वे हैं जो स्वयं को कामवासना संबंधी भावनाओं तथा निषेध इच्छाओं से बचाते हैं। यह श्रेणी तृतीय श्रेणी से इसलिए बढ़कर है कि तृतीय श्रेणी का मोमिन तो केवल धन को जो उसके हृदय को नितान्त प्रिय और रुचिकर है ख़ुदा के मार्ग में देता है परन्तु **चौथी श्रेणी** का मोमिन वह वस्तु ख़ुदा के मार्ग में क़ुर्बान करता है जो धन से भी अधिक प्रिय और प्यारी है अर्थात् कामवासना संबंधी इच्छाएं। क्योंकि मनुष्य को अपनी कामवासना संबंधी इच्छाओं से इतना अधिक प्रेम है कि वह अपनी कामवासना संबंधी इच्छाओं को पूरा करने के लिए अपने प्रिय धन को पानी की भांति व्यय करता है और हज़ारों रुपए कामभावनाओं की पूर्ति के लिए बरबाद कर देता है और कामभावनाओं को पूरा करने के लिए धन को कुछ भी वस्तु नहीं समझता। जैसा कि देखा जाता है कि ऐसे अपवित्र स्वभाव तथा कृपण लोग जो एक मुहताज भूखे और नंगे को अत्यधिक कृपणता के कारण एक पैसा भी नहीं दे सकते कामवासनाओं की इच्छाओं के जोश में बाज़ारी स्त्रियों को हज़ारों रुपया देकर अपना घर उजाड़ लेते हैं। अतः ज्ञात हुआ कि कामवासना का सैलाब ऐसा तीव्र और भीषण है कि कृपणता जैसी अपवित्रता को भी बहा ले जाता है। इसलिए यह व्यापक बात है कि उस ईमानी शक्ति की अपेक्षा जिसके द्वारा मनुष्य कामवासना संबंधी इच्छाओं के तूफान से बचता है अत्यन्त शक्तिशाली और शैतान का मुकाबला करने में नितान्त कठोर और अत्यन्त स्थायी है, क्योंकि उसका कार्य यह है कि तामसिक वृत्ति और पुराने अजगर को अपने पैरों के नीचे कुचल डालती है और कृपणता तो कामवासना संबंधी इच्छाओं को पूरा करने के जोश में तथा दिखावे

---

[1] अलमोमिनून : 6

और धूम-धाम के समयों में भी दूर हो सकता है, परन्तु यह तूफान जो कामवासना की इच्छाओं के प्रभुत्व से जन्म लेता है यह अत्यन्त तीव्र और देर तक रहने वाला तूफान है जो ख़ुदा की दया के बिना किसी प्रकार दूर हो ही नहीं सकता तथा जिस प्रकार शारीरिक अस्तित्व के समस्त अवयवों में से हड्डी नितान्त कठोर है और उसकी आयु भी बहुत लम्बी है। इसी प्रकार इस तूफ़ान को दूर करने वाली ईमानी शक्ति नितान्त कठोर और आयु भी लम्बी रखती है ताकि ऐसे शत्रु का देर तक मुकाबला करके पैरों के नीचे कुचल सके और वह भी ख़ुदा तआला की दया से। क्योंकि काम भावनाओं का तूफान एक ऐसा भयंकर तथा आपत्तियों से भरा तूफान है कि ख़ुदा तआला की विशेष दया दृष्टि के अतिरिक्त दूर नहीं हो सकता। इसी कारण हज़रत यूसुफ़[अ.] को कहना पड़ा -

وَ مَآ اُبَرِّئُ نَفۡسِیۡ ۚ اِنَّ النَّفۡسَ لَاَمَّارَۃٌۢ بِالسُّوۡٓءِ اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ ؕ[1]

अर्थात् मैं अपनी तामसिक वृत्ति को बरी नहीं करता तामसिक वृत्ति बुराई का अत्यधिक आदेश देने वाली है और उसके आक्रमण से छुटकारा असंभव है। परन्तु यह कि स्वयं ख़ुदा तआला दया कर दे। इस आयत में जैसा कि वाक्य اِلَّا مَا رَحِمَ رَبِّیۡ है नूह के तूफान के वर्णन के समय भी इसी के समान शब्द हैं क्योंकि वहां अल्लाह तआला कहता है - لَا عَاصِمَ الۡیَوۡمَ مِنۡ اَمۡرِ اللّٰہِ اِلَّا مَنۡ رَّحِمَ[2] अत: यह इस बात की ओर संकेत है कि कामवासना संबंधी इच्छाओं का यह तूफान अपनी प्रचंडता और भय में नूह के तूफान के सदृश है।

इस रूहानी श्रेणी के मुकाबले पर रूहानी अस्तित्व की जो चौथी श्रेणी है शारीरिक अस्तित्व की चौथी श्रेणी है जिसके बारे में पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है - **فَخَلَقۡنَا الۡمُضۡغَۃَ عِظٰمًا**[3] अर्थात् फिर हम ने मुज़्ग़: से हड्डियां बनाईं तथा स्पष्ट है कि

---

1 यूसुफ़ - 54

2 हूद - 44

3 अलमोमिनून - 15

हड्डियों में मुज़ग़: अर्थात् बोटी की अपेक्षा अधिक कठोरता और सख़्ती पैदा हो जाती है तथा हड्डी मुज़ग़: की अपेक्षा बहुत देर तक रहने वाली है और हज़ारों वर्ष तक उसका अवशेष रह सकता है। अत: रूहानी अस्तित्व की चौथी श्रेणी में और शारीरिक अस्तित्व की चौथी श्रेणी में समानता प्रकट है क्योंकि रूहानी अस्तित्व की तृतीय श्रेणी की अपेक्षा ईमानी कठोरता और दृढ़ता अधिक है और दयालु ख़ुदा से संबंध भी अधिक। इसी प्रकार शारीरिक अस्तित्व की चौथी श्रेणी में जो हड्डियों का पैदा होना है शारीरिक अस्तित्व की तृतीय श्रेणी की अपेक्षा जो केवल मुज़ग़: अर्थात् बोटी है शारीरिक तौर पर कठोरता और सख़्ती अधिक है और गर्भाशय से संबंध भी अधिक।

फिर चौथी श्रेणी के पश्चात् रूहानी अस्तित्व की **पांचवीं श्रेणी** वह है जिसको ख़ुदा तआला ने इस पवित्र आयत में वर्णन किया है- وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ[1] अर्थात् पांचवीं श्रेणी के मोमिन जो चौथी श्रेणी से बढ़ गए हैं वे हैं जो केवल अपने नफ़्स में यही कमाल नहीं रखते कि तामसिक वृत्ति की इच्छाओं पर विजयी हो गए हैं और उसकी भावनाओं पर उनको महान विजय प्राप्त हो गई है अपितु वह यथाशक्ति ख़ुदा और उसकी प्रजा की समस्त अमानतों तथा समस्त प्रतिज्ञाओं के प्रत्येक पहलू को दृष्टिगत रखकर संयम के सूक्ष्म मार्गों पर क़दम मारने का प्रयास करते हैं और जहां तक शक्ति है उस मार्ग पर चलते हैं। ख़ुदा की प्रतिज्ञाओं से अभिप्राय वे ईमानी प्रतिज्ञाएं हैं जो बैअत और ईमान लाने के समय मोमिन से ली जाती हैं। जैसे शिर्क न करना, अकारण हत्या न करना इत्यादि।

शब्द رَاعُوْنَ जो इस आयत में आया है जिसके अर्थ हैं रियायत रखने वाले। यह शब्द अरब के मुहावरे के अनुसार उस स्थान पर बोला जाता है जहां कोई व्यक्ति अपनी शक्ति और ताक़त के अनुसार किसी बात के बारीक मार्ग पर चलना धारण करता है और उस बात की समस्त बारीकियों पर अमल करना चाहता है और उसका कोई पहलू

---

[1] अलमोमिनून - 9

छोड़ना नहीं चाहता। अत: इस आयत से प्राप्त मतलब यह हुआ कि वह मोमिन जो रूहानी अस्तित्व की पांचवीं श्रेणी पर हैं जहां तक हो सके अपनी वर्तमान शक्ति के अनुसार संयम के बारीक मार्गों पर क़दम मारते हैं और संयम का कोई पहलू जो अमानतों तथा प्रतिज्ञा के संबंध में है ख़ाली छोड़ना नहीं चाहते और सब का ध्यान रखना उनके दृष्टिगत होता है तथा इस बात पर प्रसन्न नहीं होते कि मोटे तौर पर स्वयं को अमानतदार और प्रतिज्ञा में सच्चा ठहरा दें अपितु डरते रहते हैं कि गुप्त तौर पर उनसे कोई बेईमानी प्रकटन में न आए। इसलिए शक्ति के अनुसार अपने समस्त मामलों में ध्यानपूर्वक विचार करते रहते हैं कि ऐसा न हो कि आन्तरिक तौर पर उनमें कोई दोष और ख़राबी हो और इसी रियायत का नाम दूसरे शब्दों में संयम (तक़्वा) है।

सारांश यह है कि वह मोमिन जो रूहानी अस्तित्व में पांचवीं श्रेणी पर हैं वे अपने मामलों में चाहे ख़ुदा के साथ हैं चाहे प्रजा के साथ निरंकुश और स्वच्छन्द नहीं होते अपितु इस भय से कि ख़ुदा तआला के निकट किसी आक्षेप के अन्तर्गत न आ जाएं, अपनी अमानतों और प्रतिज्ञाओं में दूर-दूर का ध्यान रख लेते हैं और हमेशा अपनी अमानतों और प्रतिज्ञाओं की जांच करते रहते हैं और संयम की दूरबीन से उसके आन्तरिक विवरण को देखते रहते हैं ताकि ऐसा न हो कि गुप्त तौर पर उनकी अमानतों और प्रतिज्ञाओं में कुछ ख़राबी हो और उनके पास जो अमानतें ख़ुदा तआला की हैं। जैसे समस्त शक्तियां और समस्त अवयव तथा प्राण, माल और सम्मान इत्यादि उनको यथाशक्ति अपने संयम की पाबन्दी के साथ बड़ी सावधानी से अपने-अपने अवसर पर प्रयोग करते रहते हैं और जो प्रतिज्ञा ईमान लाने के समय ख़ुदा तआला से की है, पूर्ण निष्ठा के साथ यथा सामर्थ्य उसे पूरा करने के लिए प्रयासरत रहते हैं। ऐसा ही प्रजा की जो अमानतें उनके पास हों या ऐसी वस्तुएं जो अमानतों के आदेश में हों उन सब में यथासामर्थ्य संयम की पाबन्दी से कार्यरत होते हैं। यदि कोई विवाद हो जाए तो संयम के दृष्टिगत रख कर उस का निर्णय करते हैं, यद्यपि उस निर्णय में हानि उठा लें। यह

श्रेणी चौथी श्रेणी से बढ़कर इसलिए है कि उसमें यथाशक्ति समस्त कर्मों में संयम के बारीक मार्गों से काम लेना पड़ता है और यथासामर्थ्य समस्त मामलों में प्रत्येक क़दम संयम को दृष्टिगत रख कर उठाना पड़ता है। परन्तु चौथी श्रेणी केवल एक ही मोटी बात है और वह यह कि व्यभिचार और दुष्कर्मों से बचना। प्रत्येक समझ सकता है कि व्यभिचार एक बहुत निर्लज्जता का काम है और उसे करने वाला कामवासना संबंधी इच्छाओं से अंधा होकर ऐसा अपवित्र काम करता है जो मानव नस्ल के वैध सिलसिले में अवैध को मिला देता है और नस्ल नष्ट करने का कारण होता है। इसी कारण शरीअत ने उसको ऐसा भारी पाप ठहराया है कि इसी संसार में ऐसे मनुष्य के लिए शरीअत का दण्ड निर्धारित है। अत: स्पष्ट है कि मोमिन की पूर्णता के लिए केवल यही पर्याप्त नहीं कि वह व्यभिचार से बचे क्योंकि व्यभिचार नितान्त उपद्रव स्वभाव और निर्लज्ज मनुष्यों का काम है और यह एक ऐसा मोटा पाप है जिसको एक मूर्ख से मूर्ख व्यक्ति भी बुरा समझता है तथा उस पर किसी बेईमान व्यक्ति के अतिरिक्त कोई भी दिलेरी नहीं कर सकता। इसलिए इसे त्याग देना एक साधारण सभ्यता है कोई कमाल की बात नहीं परन्तु मनुष्य की सम्पूर्ण रूहानी सुन्दरता तक़्वः (संयम) की समस्त बारीक राहों पर क़दम मारना है *। संयम के बारीक मार्ग रूहानी सुन्दरता के कोमल निशान तथा मनोहर नक़्श

---

*ईमान के लिए विनय की अवस्था बीज के समान है और फिर व्यर्थ बातों को छोड़ने से ईमान अपनी नर्म-नर्म हरियाली निकालता है और फिर अपना माल ज़कात के तौर पर देने से ईमान रूपी वृक्ष की शाखाएं निकल आती हैं जो उसे किसी सीमा तक दृढ़ करती हैं और फिर कामवासना संबंधी इच्छाओं का मुकाबला करने से उन शाखाओं में बड़ी दृढ़ता और कठोरता पैदा हो जाती है फिर अपनी प्रतिज्ञाओं तथा अमानतों की समस्त शाखाओं की सुरक्षा करने से ईमान रूपी वृक्ष तने पर खड़ा हो जाता है और फिर फल लाने के समय एक और शक्ति का उस पर वरदान होता है क्योंकि उस शक्ति से पहले न वृक्ष को फल लग सकता है न फूल। वही शक्ति रूहानी पैदायश की छठी श्रेणी

हैं और स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला की अमानतों और ईमानी संकल्प[1] का यथासंभव ध्यान रखना और सर से पैर तक जितनी शक्तियां तथा अवयव हैं जिनमें प्रत्यक्ष तौर पर आंखें, कान और हाथ और पैर तथा दूसरे अंग हैं तथा आन्तरिक तौर पर हृदय और अन्य शक्तियां तथा शिष्टाचार हैं। उनको जहां तक शक्ति हो यथोचित प्रयुक्त करना और अवैध अवसरों से रोकना और उनके गुप्त आक्रमणों से सतर्क रहना तथा इसी से मुकाबले पर प्रजा के अधिकारों का भी ध्यान रखना। यह वह उपाय है कि मनुष्य की समस्त रूहानी सुन्दरता इस से सम्बद्ध है ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में संयम को लिबास का नाम दिया है। अतः لِبَاسُ التَّقْوٰی (संयम का लिबास) पवित्र क़ुर्आन का शब्द है। यह इस बात की ओर संकेत है कि रूहानी सुन्दरता तथा रूहानी सौन्दर्य तक़्वः (संयम) से ही पैदा होता है और संयम यह है कि मनुष्य ख़ुदा की समस्त अमानतों (धरोहरों) ईमानी संकल्पों तथा इसी प्रकार प्रजा की समस्त अमानतों और संकल्पों का यथासंभव ध्यान रखे अर्थात् उनके बारीक से बारीक पहलुओं पर यथासामर्थ्य पाबंद हो जाए।

यह तो रूहानी अस्तित्व की पांचवी श्रेणी है और इसके मुकाबले पर शारीरिक अस्तित्व की पांचवी श्रेणी वह है जिस का इस पवित्र आयत में वर्णन है - فَكَسَوْنَا

में ख़ल्क़े आख़िर कहलाती है और इसी छठी श्रेणी पर मानव-कमाल के फल और फूल प्रकट होने आरंभ होते हैं और मानव-वृक्ष की रूहानी शाखाएं न केवल पूर्ण हो जाती हैं अपितु अपने फल भी देती हैं। (इसी से)

1 ईमानी संकल्पों से अभिप्राय वे संकल्प हैं जो मनुष्य बैअत और ईमान लाने के समय उनका इक़रार करता है। जैसे यह कि वह हत्या नहीं करेगा, चोरी नहीं करेगा, झूठी गवाही नहीं देगा, ख़ुदा का किसी को भागीदार नहीं ठहराएगा तथा इस्लाम और नबी[स.अ.व.] के अनुसरण पर मरेगा। (इसी से)

اَلۡعِظٰمَ لَحۡمًا[1]। अर्थात् फिर हमने हड्डियों पर मांस चढ़ा दिया तथा शारीरिक बनावट की किसी सीमा तक सुन्दरता दिखा दी। यह विचित्र अनुकूलता है जैसा कि ख़ुदा तआला ने एक स्थान पर रूहानी (आध्यात्मिक) तौर पर संयम को लिबास ठहराया है। इसी प्रकार كَسَوۡنَا का शब्द जो كسوة से निकला है वह भी बता रहा है कि जो मांस हड्डियों पर चढ़ाया जाता है वह भी एक लिबास है जो हड्डियों को पहनाया जाता है। अत: ये दोनों शब्द सिद्ध कर रहे हैं कि जैसा सुन्दरता का लिबास संयम पहनाता है ऐसा ही वह كسوة जो हड्डियों पर चढ़ाया जाता है हड्डियों के लिए एक सुन्दरता की पद्धति प्रदान करती है वहां लिबास का शब्द है और यहां كسوة का, तथा दोनों के अर्थ एक हैं और क़ुर्आन का स्पष्ट आदेश उच्च स्वर में पुकार रहा है कि दोनों का उद्देश्य सुन्दरता है। जैसा कि मनुष्य की रूह पर से यदि संयम का लिबास उतार दिया जाए तो उसकी रूहानी कुरूपता प्रकट हो जाती है इसी प्रकार यदि वह मांस और हड्डियां जो स्वच्छन्द नीतिवान ख़ुदा ने मनुष्य की हड्डियों पर चढ़ाया है, यदि हड्डियों पर से उतार दिया जाए तो मनुष्य का शारीरिक रूप नितान्त घृणित निकल आता है परन्तु पांचवी श्रेणी में चाहे शारीरिक अस्तित्व की पंचम श्रेणी का है और चाहे रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी का है पूर्ण सुन्दरता पैदा नहीं होती क्योंकि उस पर अभी रूह (आत्मा) का वरदान नहीं हुआ। यह बात मौजूद और महसूस है कि एक मनुष्य यद्यपि कैसा ही सुन्दर हो जब वह मर जाता है और उसकी रूह उसके अन्दर से निकल जाती है तो साथ ही उस सुन्दरता में भी अन्तर आ जाता है जो उसको सामर्थ्यवान ख़ुदा की क़ुदरत ने प्रदान किया था। हालांकि समस्त अवयव और समस्त निशान मौजूद होते हैं किन्तु मात्र एक रूह के निकलने से मानव ढांचे का घर एक उजड़ा हुआ और सुनसान सा विदित होता है और चमक-दमक का निशान नहीं रहता। यह अवस्था रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी की है, क्योंकि यह बात भी मौजूद एवं महसूस है कि जब किसी मोमिन में ख़ुदा तआला की

1 अलमोमिनून - 15

ओर से उस रूह का वरदान न हो जो रूहानी अस्तित्व की छठी श्रेणी पर मिलती है और एक विलक्षण शक्ति और जीवन प्रदान करती है तब तक ख़ुदा की अमानतों के अदा करने तथा उनको उचित तौर पर प्रयुक्त करने तथा निष्ठा के साथ उसका ईमानी संकल्प पूरा करने और इसी प्रकार प्रजा के अधिकारों एवं संकल्पों के अदा करने में संयम की वह चमक-दमक पैदा नहीं होती जिसकी सुन्दरता और ख़ूबी हृदयों को अपनी ओर आकृष्ट करे और जिसका प्रत्येक हाव-भाव विलक्षण तथा चमत्कारिक विदित हो अपितु उस रूह से पूर्व संयम के साथ बनावट और दिखावे की एक मिलावट रहती है क्योंकि उसमें वह रूह नहीं होती जो रूहानी सुन्दरता की चमक-दमक दिखला सके और यह सच और बिल्कुल सच है कि ऐसे मोमिन का क़दम जो अभी उस रूह से ख़ाली है पूर्णतया नेकी पर स्थापित नहीं रह सकता अपितु जैसा कि एक हवा के झोंके से मुर्दे का कोई अंग गति कर सकता है और जब हवा दूर हो जाए तो वह मुर्दा यथावत् हो जाता है। इसी प्रकार रूहानी अस्तित्व की षष्ठम श्रेणी की अवस्था होती है, क्योंकि केवल अस्थायी तौर पर ख़ुदा तआला की दयारूपी समीर उसको नेक कार्यों की ओर गति देती है और इस प्रकार उस से संयम के कार्य जारी होते हैं परन्तु अभी नेकी की रूह उसके अन्दर आबाद नहीं होती। इसलिए उसमें वह व्यवहार कुशलता पैदा नहीं होती जो उस रूह के प्रवेश होने के पश्चात् अपनी झलक दिखाती है। अत: रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी यद्यपि संयम की सुन्दरता की एक अपूर्ण श्रेणी प्राप्त कर लेती है परन्तु उस सुन्दरता का कमाल रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी पर ही प्रकट होता है जबकि ख़ुदा तआला का व्यक्तिगत प्रेम रूहानी अस्तित्व के लिए एक रूह की भांति होकर मनुष्य के हृदय पर उतरता और समस्त हानियों का निवारण करता है और मनुष्य अपनी समस्त शक्तियों के साथ कभी पूर्ण नहीं हो सकता, जब तक वह रूह ख़ुदा तआला की ओर से न उतरे। जैसा कि हाफ़िज़ शीराज़ी ने कहा है -

مابدان منزلِ عالی نتوانیم رسید

ہاں مگر لطف تو چوں پیش نہد گامے چند

अनुवाद - हम उस सर्वोच्च पद तक नहीं पहुंच सकते यद्यपि जब तेरी कृपा हो जाए तो पहुंच सकते हैं। (अनुवादक)

फिर पंचम श्रेणी के पश्चात् उस रूहानी अस्तित्व की **छठी श्रेणी** वह है जिसे ख़ुदा तआला ने इस पवित्र आयत में वर्णन किया है - وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ[1] अर्थात् छठी श्रेणी के मोमिन जो पांचवी श्रेणी से बढ़ गए हैं वे हैं जो अपनी नमाज़ों पर स्वयं संरक्षक एवं निगरान हैं अर्थात् वे किसी अन्य के स्मरण कराने के मुहताज नहीं रहे अपितु उन का ख़ुदा तआला से कुछ ऐसा संबंध पैदा हो गया है तथा ख़ुदा की याद उनके लिए कुछ इस प्रकार स्वभाव प्रिय, आराम का केन्द्र तथा जीवन का आधार हो गई है कि वे हर समय उसकी निगरानी में व्यस्त रहते हैं तथा उन का प्रत्येक क्षण ख़ुदा को स्मरण करने में व्यतीत होता है तथा एक पल के लिए भी ख़ुदा के स्मरण से पृथक होना नहीं चाहते।

अब स्पष्ट है कि मनुष्य उसी वस्तु की रक्षा और निगरानी में सम्पूर्ण प्रयास करके हर क्षण लगा रहता है जिसके खोने में अपनी मौत और तबाही देखता है जिस प्रकार एक यात्री एक भोजन-पानी रहित जंगल में यात्रा कर रहा है जिसमें सैकड़ों कोस तक पानी और रोटी मिलने की कोई आशा नहीं। वह अपने पानी और रोटी की जो साथ रखता है बहुत देखभाल करता है और उसे अपने प्राण के समान समझता है क्योंकि वह विश्वास रखता है कि उसके नष्ट होने में उसकी मृत्यु है। अत: वे लोग जो उस यात्री की भांति अपनी नमाज़ों का संरक्षण करते हैं यद्यपि धन की हानि हो या सम्मान की हानि हो या नमाज़ के कारण कोई अप्रसन्न हो जाए नमाज़ को नहीं छोड़ते तथा उसके नष्ट होने के भय में व्याकुल और क्रोधित होते जैसे मर ही जाते हैं। नहीं चाहते कि एक पल भी ख़ुदा के स्मरण से पृथक हों तथा वास्तव में नमाज़ और ख़ुदा के स्मरण को अपना एक

1 अलमोमिनून - 10

आवश्यक आहार समझते हैं जिस पर उनका जीवन निर्भर है। यह अवस्था उस समय उत्पन्न होती है जब ख़ुदा तआला उन से प्रेम करता है और उसके व्यक्तिगत प्रेम का एक भड़कता शोला जिसे रूहानी अस्तित्व के लिए एक रूह कहना चाहिए उनके हृदय पर उतरता है और उनको दूसरा जीवन प्रदान कर देता है तथा वह रूह उनके समस्त रूहानी अस्तित्व को प्रकाश और जीवन प्रदान करती है। तब वे किसी बनावट और कष्ट के बिना ख़ुदा के स्मरण में लीन रहते हैं अपितु वह ख़ुदा जिसने शारीरिक तौर पर मनुष्य का जीवन रोटी और पानी पर निर्भर रखा है वह उनके रूहानी जीवन को जिससे वे प्रेम करते हैं अपने स्मरण के आहार से सम्बद्ध कर देता है। इसलिए वह उस रोटी और पानी को शारीरिक रोटी और पानी से अधिक चाहते हैं और उसके नष्ट होने से भयभीत रहते हैं। यह उस रूह का प्रभाव होता है जो एक शोले की भांति उनमें डाली जाती है जिस से उनमें ख़ुदा के प्रेम की पूर्ण मस्ती उत्पन्न हो जाती है। इसलिए वे ख़ुदा के स्मरण से एक दम के लिए पृथक होना नहीं चाहते। वे उसके लिए कष्ट उठाते और संकट देखते हैं परन्तु उस से एक क्षण भी पृथक होना नहीं चाहते और सांसों की रक्षा करते हैं और अपनी नमाज़ों के रक्षक और संरक्षक रहते हैं। यह बात उन के लिए स्वाभाविक है। क्योंकि वास्तव में ख़ुदा ने अपने प्रेम से परिपूर्ण स्मरण को जिसे दूसरे शब्दों में नमाज़ कहते हैं उनके लिए एक आवश्यक आहार निर्धारित कर दिया है तथा अपने व्यक्तिगत प्रेम से उन पर झलक डाल कर उनको ख़ुदा के स्मरण का एक चित्ताकर्षक आनन्द प्रदान किया है। अतः इस कारण से उनको ख़ुदा का स्मरण प्राण की भांति अपितु प्राण से बढ़कर प्रिय हो गया है तथा ख़ुदा का व्यक्तिगत प्रेम एक नवीन रूह है जो शोले की भांति उनके हृदयों पर पड़ती है और उनकी नमाज़ एवं ख़ुदा के स्मरण को उनके लिए एक आहार की भांति बना देती है। अतः वे विश्वास रखते हैं कि उनका जीवन रोटी और पानी से नहीं अपितु नमाज़ और ख़ुदा के स्मरण से है।

अतः प्रेम से युक्त ख़ुदा का स्मरण जिसका नाम नमाज़ है वह वास्तव में उनका

आहार हो जाता है जिसके अभाव में वे जीवित नहीं रह सकते और जिसका संरक्षण एवं देखभाल वे ठीक उस यात्री की भांति करते रहते हैं जो एक पानी और अन्न रहित जंगल में अपनी थोड़ी सी रोटियों का संरक्षण करता है जो उसके पास हैं तथा अपने थोड़े से पानी को प्राण के साथ रखता है जो उसकी मश्क में है। स्वच्छन्द दानशील ख़ुदा ने मनुष्य की रूहानी उन्नति के लिए यह भी एक श्रेणी रखी हुई है जो व्यक्तिगत प्रेम एवं प्रेम के प्रभुत्व और विजय की अन्तिम श्रेणी है तथा वास्तव में मनुष्य के लिए इस श्रेणी पर प्रेम से परिपूर्ण ख़ुदा का स्मरण जिस का शरीअत की परिभाषा में नमाज़ नाम है आहार का स्थानापन्न हो जाती है अपितु वह बार-बार शारीरिक रूह को भी उस आहार पर न्योछावर करना चाहता है। वह उसके बिना जीवित नहीं रह सकता जैसा कि मछली बिना पानी के नहीं रह सकती तथा ख़ुदा से पृथक होकर एक पल अपनी मौत समझता है तथा उसकी रूह ख़ुदा की चौखट पर हर समय सज्दे में रहती है और उसका समस्त आराम ख़ुदा ही में हो जाता है तथा उसे विश्वास होता है कि मैं यदि एक पल भी ख़ुदा के स्मरण से पृथक हुआ तो फिर मैं मरा। जिस प्रकार रोटी से शरीर में ताज़गी तथा आंख और कान इत्यादि अंगों की शक्तियों में ऊर्जा आ जाती है इसी प्रकार इस श्रेणी पर ख़ुदा का स्मरण जो प्रेम और मुहब्बत के जोश से होता है मोमिन की रूहानी शक्तियों को उन्नति देता है अर्थात् आंख में कश्फ़ की शक्ति नितान्त साफ और सूक्ष्म तौर पर पैदा हो जाती है और कान ख़ुदा तआला के कलाम को सुनते हैं और जीभ पर वह कलाम नितान्त आनंददायक, साफ और शुद्ध तौर पर जारी हो जाता है और सच्चे स्वप्न बड़ी प्रचुरता के साथ होते हैं[1] जो प्रातः उदय होने की भांति प्रकट हो जाते हैं तथा प्रेम के

---

① बहुत से मूर्ख इस भ्रम में ग्रस्त हैं कि हमें भी किसी समय सच्चा स्वप्न आ जाता है या सच्चा इल्हाम हो जाता है तो हम में और ऐसे उच्च कोटि के लोगों में अन्तर क्या हुआ तथा उच्च कोटि के लोगों की क्या विशिष्टता शेष रही। इस का उत्तर यह है कि इतनी शक्ति स्वप्न देखने या इल्हाम के इस उद्देश्य से सामान्य लोगों की प्रकृति में रखी गई

शुद्ध सम्बन्धों के कारण जो ख़ुदा तआला से होता है उनको शुभ संदेश देने वाले स्वप्नों से बहुत सा भाग मिलता है। यही वह श्रेणी है जिस श्रेणी पर मोमिन को महसूस होता है कि उसके लिए ख़ुदा का प्रेम रोटी और पानी का काम देता है। यह नई पैदायश उस समय होती है जब पहले रूहानी ढांचा पूर्णतया तैयार हो जाता है और फिर वह रूह जो ख़ुदा के व्यक्तिगत प्रेम का एक शोला है ऐसे मोमिन के हृदय पर आ पड़ता है तथा मानवता से उच्चतम मान्य शक्ति उसको ले जाती है। यह वह श्रेणी है जिसको आध्यात्मिक तौर पर **ख़ल्क़ आख़िर** कहते हैं। ख़ुदा तआला इस श्रेणी पर अपने व्यक्तिगत प्रेम का भड़कता हुआ शोला जिसे दूसरे शब्दों में **रूह** कहते हैं मोमिन के हृदय पर उतारता है तथा उससे समस्त अंधकारों, अपवित्रताओं और कमज़ोरियों को दूर कर देता है और

है ताकि उनके पास भी उनकी बारीक बातों का किसी सीमा तक नमूना हो जो इस संसार से बहुत दूर की बातें हैं तथा इस प्रकार वे अपने पास एक नमूना देख कर स्वीकार करने की दौलत से वंचित न रहें और उन पर समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो जाए। अन्यथा यदि मनुष्यों की यह स्थिति होती कि वह्यी और सच्चे स्वप्न की वास्तविकता से वे **शेष हाशिया** :- बिल्कुल अपरिचित होते तो इन्कार के अतिरिक्त क्या कर सकते थे। इस स्थिति में किसी सीमा तक असमर्थ थे। फिर जबकि उस नमूने के मौजूद होने के बावजूद वर्तमान युग के दार्शनिक अब तक वह्यी तथा सच्चे स्वप्न का इन्कार करते हैं तो उस समय जन सामान्य का क्या हाल होता जबकि उनके पास कोई नमूना न होता तथा यह विचार कि हमें भी कभी सच्चे स्वप्न आ जाते हैं या कोई सच्चे इल्हाम हो जाते हैं। इससे रसूलों और नबियों की प्रतिष्ठा में कोई अन्तर नहीं आता, क्योंकि ऐसे लोगों के स्वप्न और इल्हाम सन्देह और शंकाओं के धुंए से रिक्त नहीं होते। इसके साथ मात्रा में भी कम होते हैं। अत: जैसा कि एक दरिद्र एक पैसे के साथ एक बादशाह का मुकाबला नहीं कर सकता तथा नहीं कह सकता कि मेरे पास भी माल है और उसके पास भी, ऐसा ही यह मुकाबला भी अधम और सरासर मूर्खता है। (इसी से)

उस रूह के फूंकने के साथ ही वह सुन्दरता जो निम्न श्रेणी पर थी पूर्णता को पहुंच जाती है और मोमिन अपने अन्दर महसूस कर लेता है कि उसके अन्दर एक नई रूह प्रविष्ट हो गई है जो पहले नहीं थी। उस रूह के मिलने से मोमिन को एक अद्‌भुत चैन और संतोष प्राप्त हो जाता है तथा व्यक्तिगत प्रेम एक फ़व्वारे की भांति जोश मारता और उपासना के पौधे को सींचता है तथा वह अग्नि जो पहले एक साधारण गर्मी की सीमा तक थी, इस श्रेणी पर वह पूर्ण रूप से भड़क जाती है। मानव अस्तित्व के सम्पूर्ण कूड़ा-कर्कट को जला कर उस पर ख़ुदा का कब्ज़ा कर देती है और वह अग्नि समस्त अंगों पर छा जाती है। तब उस लोहे के समान जो अग्नि में अत्यधिक स्तर तक गर्म किया जाए यहां तक कि लाल हो जाए तथा अग्नि के रंग पर हो जाए। उस मोमिन से ख़ुदा के लक्षण और कार्य प्रकट होते हैं जैसा कि लोहा भी इस स्तर पर अग्नि के लक्षण और कार्य प्रकट करता है परन्तु यह नहीं कि वह मोमिन ख़ुदा हो गया है अपितु ख़ुदा के प्रेम की कुछ ऐसी ही विशिष्टता है जो प्रत्यक्ष अस्तित्व को अपने रंग में ले आती है और आन्तरिक तौर पर दासता और उसकी कमज़ोरी मौजूद होती है। इस श्रेणी पर मोमिन की रोटी ख़ुदा होता है जिसके खाने पर उसका जीवन निर्भर है तथा मोमिन का पानी भी ख़ुदा ही होता है जिसके पीने से वह मृत्यु से बच जाता है और उसकी शीतल समीर भी ख़ुदा ही होता है जिस से उसके हृदय को आराम पहुंचता है। इस स्थान पर रूपक के तौर पर यह कहना अनुचित न होगा कि ख़ुदा इस श्रेणी के मोमिन के अन्दर प्रवेश करता तथा उसके रोम-रोम में समावेश करता और उसके हृदय को अपना सिंहासन बना लेता है, तब वह अपनी रूह से नहीं अपितु ख़ुदा की रूह से देखता और ख़ुदा की रूह से सुनता और ख़ुदा की रूह से बोलता और ख़ुदा की रूह से चलता और ख़ुदा की रूह से शत्रुओं पर आक्रमण करता है, क्योंकि वह इस श्रेणी पर नास्ति और तबाही के स्थान में होता है और ख़ुदा की रूह उस पर अपने व्यक्तिगत प्रेम के साथ झलक डाल कर उसको दूसरा जीवन प्रदान करती है। अत: उस समय उस पर रूहानी तौर पर यह

आयत चरितार्थ होती है -

ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ①

यह तो रूहानी अस्तित्व की छठी श्रेणी है जिसका ऊपर वर्णन किया गया है। इसके मुकाबले पर शारीरिक पैदायश की छठी श्रेणी है तथा इस शारीरिक श्रेणी के लिए भी वही आयत है जो रूहानी श्रेणी के ऊपर वर्णन हो चुकी है अर्थात् - **ثُمَّ اَنْشَاْنٰهُ خَلْقًا اٰخَرَ ؕ فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحْسَنُ الْخٰلِقِيْنَ** इसका अनुवाद यह है कि जब हम एक पैदायश को तैयार कर चुके, तत्पश्चात् हमने एक और पैदायश से मनुष्य को पैदा किया। **और** के शब्द से यह समझाना अभीष्ट है कि वह ऐसे बोध से परे पैदायश है जिसका समझना मानव-बुद्धि से श्रेष्ठतर है तथा उस के बोध से बहुत दूर अर्थात् रूह जो ढांचे की तैयारी के पश्चात् शरीर में डाली जाती है वह हमने मनुष्य में रूहानी और शारीरिक दोनों तौर पर डाल दी जिस की वास्तविकता अज्ञात है तथा जिसके संबंध में समस्त दार्शनिक और भौतिक संसार के समस्त मुक़ल्लिद आश्चर्यचकित हैं कि वह क्या वस्तु है और जबकि वास्तविकता तक उन को मार्ग न मिला तो अपनी अटकल से प्रत्येक ने तुकें लगाईं। किसी ने रूह के अस्तित्व से ही इन्कार किया तथा किसी ने उसको अनादि तथा अनुत्पत्त समझा। अतः अल्लाह तआला इस स्थान में कहता है कि **रूह** भी ख़ुदा की सृष्टि है परन्तु संसार की समझ से श्रेष्ठतम है और जैसा कि इस संसार के दार्शनिक उस **रूह** से अनभिज्ञ हैं जो शारीरिक अस्तित्व की छठी श्रेणी पर ख़ुदा तआला की ओर से शरीर पर लाभप्रद होती है। उसी प्रकार वे लोग उस रूह से भी अनभिज्ञ रहे कि जो रूहानी अस्तित्व की छठी श्रेणी पर सच्चे मोमिन को ख़ुदा तआला से मिलती है तथा इस बारे में भी विभिन्न मार्ग धारण किए। अधिकांश लोगों ने ऐसे मनुष्यों की पूजा आरंभ कर दी जिनको वह रूह भी दी गई थी तथा उनको अनादि और अनुत्पत्त तथा ख़ुदा समझ लिया और बहुत से लोगों ने इस से इन्कार कर दिया कि इस श्रेणी के लोग भी होते हैं और

① अलमोमिन - 15

मनुष्य को ऐसी रूह भी मिलती है।

परन्तु एक बुद्धिमान इस बात को बहुत जल्द समझ सकता है कि जब मनुष्य सर्वोत्तम सृष्टि है और ख़ुदा ने पृथ्वी के समस्त पशु-पक्षियों पर उसको श्रेष्ठता देकर और सब पर शासन प्रदान करके तथा बुद्धि एवं विवेक प्रदान करके अपनी मारिफ़त की एक प्यास लगा कर अपने उन समस्त कार्यों से बता दिया है कि मनुष्य ख़ुदा के प्रेम और इश्क़ के लिए पैदा किया गया है तो फिर इससे क्यों इन्कार किया जाए कि मनुष्य व्यक्तिगत प्रेम के स्थान तक पहुंचकर उस श्रेणी तक पहुंच जाए कि उसके प्रेम पर ख़ुदा का प्रेम एक रूह की भांति आकर उसकी समस्त कमज़ोरियों को दूर कर दे। जैसा कि अल्लाह तआला ने रूहानी अस्तित्व की छठी श्रेणी के बारे में कहा है - وَ الَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ[1] ऐसा ही मनुष्य से अनश्वर उपस्थिति, तपन एवं विनम्रता तथा दासता व्यवहार में आए तथा इस प्रकार से वह अपने अस्तित्व के मुख्य उद्देश्य को पूरा करे, जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

وَ مَا خَلَقْتُ الْجِنَّ وَ الْاِنْسَ اِلَّا لِيَعْبُدُوْنِ[2]

अर्थात् मैंने इबादत के लिए ही जिन्नों और इन्सानों को पैदा किया है। हां यह इबादत (उपासना) तथा ख़ुदा तआला के सामने अनश्वर उपस्थिति के साथ खड़ा होना व्यक्तिगत प्रेम के अतिरिक्त संभव नहीं और प्रेम से अभिप्राय एक तरफ का प्रेम नहीं अपितु स्त्रष्टा और सृष्टि के दोनों प्रेम अभिप्राय हैं ताकि बिजली की अग्नि के समान जो मरने वाले मनुष्य पर गिरती है और जो उस समय उस मनुष्य के अन्दर से निकलती है मनुष्य होने के दोषों को जला दें और दोनों मिलकर समस्त रूहानी अस्तित्व पर अधिकार कर लें।

यही वह पूर्ण अवस्था है जिस में मनुष्य उन धरोहरों (अमानतों) तथा संकल्प को जिन के वर्णन का रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी में उल्लेख है पूर्णतया अपने-अपने

---

① अलमोमिनून - 10

② अज़्ज़ारियात - 57

अवसर पर अदा कर सकता है केवल अन्तर यह है कि पंचम श्रेणी में मनुष्य मात्र संयम की दृष्टि से स्रष्टा एवं सृष्टि की अमानतों और संकल्पों का ध्यान रखता है तथा इस श्रेणी पर व्यक्तिगत प्रेम की मांग से जो उसे ख़ुदा तआला से हो गया है जिसके कारण ख़ुदा की सृष्टि का प्रेम भी उसमें जोश मारने वाला हो गया है और उस रूह की मांग से जो उस पर ख़ुदा तआला की ओर से उतरता है उन सम्पूर्ण अधिकारों को स्वाभाविक तौर पर उत्तम रूप में अदा करता है तथा इस अवस्था में वह आन्तरिक सुन्दरता जो बाह्य सुन्दरता के मुकाबले पर है उसे उत्तम रूप में प्राप्त हो जाती है क्योंकि रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी में तो अभी वह रूह मनुष्य में प्रविष्ट नहीं हुई थी जो व्यक्तिगत प्रेम से उत्पन्न होती है। इसलिए सुन्दरता की झलक अभी कमाल पर नहीं थी किन्तु रूह के प्रवेश के पश्चात् वह सुन्दरता कमाल को पहुंच जाती है। स्पष्ट है कि मुर्दा सौन्दर्य और जीवित सौन्दर्य एक समान चमक-दमक नहीं रखते।

जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं मानव उत्पत्ति में दो प्रकार के सौन्दर्य हैं। एक व्यवहार कुशलता का सौन्दर्य, और वह यह कि मनुष्य ख़ुदा तआला की समस्त अमानतों तथा सीमाओं को अदा करने में ध्यान रखे कि उनके बारे में कोई बात यथासंभव छूट न जाए। जैसा कि ख़ुदा तआला के कलाम में رَاعُوْنَ का शब्द इसी ओर संकेत करता है। ऐसा ही अनिवार्य है कि मनुष्य प्रजा की अमानतों और प्रतिज्ञाओं के बारे में यही ध्यान रखे अर्थात् ख़ुदा के अधिकारों और प्रजा के अधिकारों में संयम से काम ले। यह लेन-देन की सफ़ाई (व्यवहार कुशलता) है। या यों कहो कि रूहानी सुन्दरता है जो रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी में प्रकट होती है किन्तु अभी पूर्ण रूप से चमकती नहीं और रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी में पैदायश के पूर्ण होने तथा रूह के प्रविष्ट हो जाने के कारण यह सुन्दरता अपनी सम्पूर्ण चमक-दमक दिखा देती है। स्मरण रहे कि रूहानी अस्तित्व की पंचम श्रेणी में रूह से अभिप्राय ख़ुदा का वह व्यक्तिगत प्रेम है जो मनुष्य के व्यक्तिगत प्रेम पर एक शोले की भांति पड़ता और सम्पूर्ण

आन्तरिक अंधकार दूर करता तथा रूहानी (आध्यात्मिक) जीवन प्रदान करता है और उसकी संबंधित वस्तुओं में से **रूहुल क़ुदुस का समर्थन भी पूर्ण तौर पर है।**

मनुष्य की पैदायश में दूसरा सौन्दर्य मुखाकृति (बुश्रा) का सौन्दर्य है। ये दोनों सौन्दर्य यद्यपि रूहानी और शारीरिक पैदायश की पंचम श्रेणी में प्रकट हो जाते हैं परन्तु उनकी चमक-दमक रूह के वरदान के पश्चात् प्रकट होती है और जैसा कि शारीरिक अस्तित्व की रूह शारीरिक ढांचा तैयार होने के पश्चात् मनुष्य के शारीरिक अस्तित्व में प्रविष्ट होती है ऐसा ही रूहानी अस्तित्व की रूह रूहानी ढांचा तैयार होने के पश्चात् मनुष्य के रूहानी अस्तित्व में प्रविष्ट होती है। अर्थात् उस समय जबकि मनुष्य शरीअत का सम्पूर्ण जूआ अपनी गर्दन पर ले लेता है और परिश्रम एवं तपस्या के साथ ख़ुदा तआला के निर्धारित किए हुए सम्पूर्ण दण्डों को स्वीकार करने के लिए तैयार होता है तथा शरीअत का अभ्यास और ख़ुदा की किताब के आदेशों का पालन करने से इस योग्य हो जाता है कि ख़ुदा की रूहानियत उसकी ओर ध्यान दे तथा सर्वाधिक यह कि अपने व्यक्तिगत प्रेम से स्वयं को ख़ुदा तआला के व्यक्तिगत प्रेम का अधिकारी ठहरा लेता है जो बर्फ़ की भांति श्वेत तथा शहद की भांति मधुर है और जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं रूहानी अस्तित्व विनय-अवस्था से आरंभ होता है तथा रूहानी पालन-पोषण एवं विकास की छठी श्रेणी पर अर्थात् उस श्रेणी पर जबकि रूहानी ढांचे के पूर्ण होने के पश्चात् ख़ुदा के व्यक्तिगत प्रेम का शोला मनुष्य के हृदय पर एक रूह की भांति पड़ता है और उसको अनश्वर उपस्थिति की अवस्था प्रदान कर देता है कमाल को पहुंचता है और तभी रूहानी सौन्दर्य अपनी झलक दिखाता है परन्तु यह सौन्दर्य जो रूहानी सौन्दर्य है जिसको अच्छे मामले का नाम दे सकते हैं यह वह सौन्दर्य है जो अपनी आकर्षण शक्तियों के साथ मुखाकृति के सौन्दर्य से बहुत अधिक है, क्योंकि मुखाकृति का सौन्दर्य केवल एक या दो व्यक्तियों के नश्वर प्रेम का कारण होगा जो शीघ्र पतनशील हो जाएगा और उसका आकर्षण नितान्त कमज़ोर होगा, किन्तु वह रूहानी सौन्दर्य जिसको हुस्ने मामला (व्यवहार कुशलता का सौन्दर्य) का नाम दिया गया है वह अपने आकर्षणों में ऐसा कठोर और शक्तिशाली है कि एक संसार

को अपनी ओर आकृष्ट कर लेता है तथा पृथ्वी एवं आकाश का कण-कण उसकी ओर खिंचा जाता है और वास्तव में दुआ की स्वीकारिता की फ़िलास्फ़ी भी यही है कि जब ऐसा रूहानी सौन्दर्य वाला मनुष्य जिसमें ख़ुदाई प्रेम की रूह प्रविष्ट हो जाती है जब किसी असंभव और अत्यन्त कठिन बात के लिए दुआ करता है और उस दुआ पर पूरा-पूरा बल देता है तो चूंकि वह स्वयं में रूहानी सौन्दर्य रखता है, इसलिए ख़ुदा तआला की आज्ञा और आदेश से इस संसार का कण-कण उसकी ओर खींचा जाता है। अत: ऐसे साधन एकत्र हो जाते हैं जो उसकी सफलता के लिए पर्याप्त हों। अनुभव तथा ख़ुदा तआला की पवित्र पुस्तक से सिद्ध है कि संसार के प्रत्येक कण को ऐसे व्यक्ति के साथ स्वाभाविक तौर पर एक प्रेम होता है और उसकी दुआएं उन सम्पूर्ण कणों को अपनी ओर ऐसा आकर्षित करती हैं जैसा कि चुम्बक लोहे को अपनी ओर आकर्षित करता है। अत: असाधारण बातें जिन का ज्ञान किसी भौतिक शास्त्र तथा दर्शनशास्त्र में नहीं, इस आकर्षण के कारण प्रकट हो जाती हैं और वह आकर्षण स्वाभाविक होता है। जब से कि स्वच्छन्द स्रष्टा ने शरीरों के संसार को कणों से बनाया है प्रत्येक कण में वह आकर्षण रखा है और प्रत्येक कण रूहानी सौन्दर्य का सच्चा प्रेमी है तथा ऐसा ही प्रत्येक भाग्यशाली रूह भी। क्योंकि वह सौन्दर्य ख़ुदा का प्रकाश स्थल है। वही सौन्दर्य था जिसके लिए कहा गया -

اُسْجُدُوْا لِاٰدَمَ فَسَجَدُوْٓا اِلَّآ اِبْلِيْسَ[1]

और अब भी बहुत से इब्लीस (शैतान) हैं जो इस सौन्दर्य को नहीं पहचानते परन्तु वह सौन्दर्य बड़े-बड़े कार्य प्रदर्शित करता रहा है।

नूह में वही सौन्दर्य था जिस का सम्मान रखना ख़ुदा तआला को स्वीकार हुआ और समस्त इन्कार करने वालों को पानी के अज़ाब से तबाह किया गया फिर इसके पश्चात् **मूसा** भी वही रूहानी सौन्दर्य लेकर आया जिसने कुछ दिन कष्ट सहन करके अन्तत: फ़िरऔन का बेड़ा डुबोया। फिर सब के पश्चात् समस्त नबियों के सरदार सृष्टि में सर्वोत्तम

① अलबक़रह - 35

हमारे स्वामी हज़रत **मुहम्मद** मुस्तफ़ा सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक महावैभवशाली रूहानी सौन्दर्य लेकर आए जिसकी प्रशंसा में यही पवित्र आयत पर्याप्त है -

دَنَا فَتَدَلّٰى فَكَانَ قَابَ قَوْسَيْنِ اَوْ اَدْنٰى ①

अर्थात् वह नबी ख़ुदा के बहुत निकट चला गया और फिर सृष्टि की ओर झुका और इस प्रकार से दोनों अधिकारों को जो अल्लाह का अधिकार और बन्दों का अधिकार है अदा कर दिया तथा दोनों प्रकार का रूहानी सौन्दर्य प्रकट किया तथा दोनों धनुषों में प्रत्यंचा (वतर) के समान हो गया अर्थात् दोनों धनुषों में जो एक मध्यवर्ती रेखा की भांति हो तथा इस प्रकार उसका अस्तित्व हुआ जैसे कि -
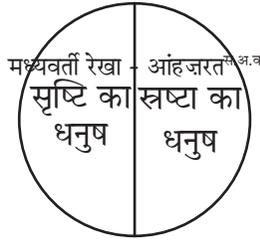
इस सौन्दर्य को अपवित्र प्रकृति वाले तथा अन्धे लोगों ने न देखा जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

يَنْظُرُوْنَ اِلَيْكَ وَهُمْ لَا يُبْصِرُوْنَ ②

अर्थात् वे तेरी ओर देखते हैं परन्तु तू उन्हें दिखाई नहीं देता। अन्तत: वे सब अन्धे हो गए।

इस स्थान पर कुछ मूर्ख कहते हैं कि क्यों कामिल लोगों की कुछ दुआएं स्वीकार नहीं होतीं ? इसका उत्तर यह है कि उनके सौन्दर्य की झलक को ख़ुदा तआला ने अपने अधिकार में रखा हुआ है। अत: जिस स्थान पर यह महान झलक

---

① अन्नज्म - 9,10

② अलआराफ़ - 199

प्रकट हो जाती है और किसी मामले में उन का सौन्दर्य जोश में आता है तथा अपनी झलक दिखाता है तब उस चमक की ओर संसार के कण खिंचे जाते हैं और असंभव बातें घटित होती हैं जिनको दूसरे शब्दों में चमत्कार कहते हैं परन्तु यह रूहानी जोश हमेशा और हर स्थान पर प्रकट नहीं होता तथा बाह्य प्रेरणाओं का मुहताज होता है। यह इसलिए कि जैसा कि कृपालु ख़ुदा निःस्पृह (बेनियाज़) है उसने अपने चुने हुए पुरुषों में भी निःस्पृहता (बेनियाज़) की विशेषता रख दी है अतः वे ख़ुदा की भांति निःस्पृह होते हैं और जब तक कोई पूर्ण विनीतता तथा निष्कपटता के साथ उनकी दया के लिए एक प्रेरणा पैदा न करे उनकी वह शक्ति जोश में नहीं आती तथा अद्भुत यह कि ये लोग समस्त संसार से अधिक दया करने की शक्ति अपने अन्दर रखते हैं, किन्तु उसकी प्रेरणा उनके अधिकार में नहीं होती। यद्यपि वे प्रायः चाहते भी हैं कि वह शक्ति प्रकट हो परन्तु ख़ुदा के इरादे के बिना प्रकट नहीं होती, विशेषतः वह इन्कार करने वालों, कपटाचारियों तथा शिथिल आस्था रखने वालों की कुछ भी परवाह नहीं रखते और उनको एक मृत कीड़े की भांति समझते हैं तथा उनकी निःस्पृहता एक ऐसी प्रतिष्ठा रखती है जैसा कि एक प्रियतम नितान्त सुन्दर बुर्क़े में अपना चेहरा छिपाए रखे तथा इसी निःस्पृहता का एक विभाग यह है कि जब कोई दुष्ट मनुष्य उन पर कुधारणा करे तो कभी निःस्पृहता के जोश से उस कुधारणा को और भी बढ़ा देते हैं क्योंकि अपने आचरण को ख़ुदा के आचरण में ढाले हुए होते हैं जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

فِيْ قُلُوْبِهِمْ مَّرَضٌ ۙ فَزَادَهُمُ اللّٰهُ مَرَضًا[1]

जब ख़ुदा तआला चाहता है कि उन से कोई चमत्कार प्रकट हो तो उनके हृदयों में एक जोश उत्पन्न कर देता है तथा एक बात की प्राप्ति के लिए उनके

1 अलबक़रह - 11

हृदयों में सख़्त व्याकुलता और करुणा पैदा हो जाती है तब वह नि:स्पृहता का बुर्क़: अपने मुख पर से उतार लेते हैं और उनका वह सौन्दर्य जो ख़ुदा तआला के अतिरिक्त कोई नहीं देखता वह आकाश के फ़रिश्तों पर और कण-कण पर प्रकट हो जाता है तथा उन का मुख पर से बुर्क़: उठाना यह है कि वे अपनी पूर्ण निष्ठा और पवित्रता के साथ और उस रूहानी सौन्दर्य के साथ जिसके कारण वे ख़ुदा के प्रिय हो गए हैं उस ख़ुदा की ओर ऐसी विलक्षण के साथ लौटते हैं तथा उनमें ख़ुदा की समृद्धि की एक ऐसी अवस्था पैदा हो जाती है जो ख़ुदा की विलक्षण दया को अपनी ओर आकर्षित करती है और साथ ही इस संसार का कण-कण खिंचा चला आता है और उन की प्रेमाग्नि की गर्मी आकाश पर एकत्र होती तथा बादलों की भांति फ़रिश्तों को भी अपना चेहरा दिखा देती है तथा उनकी पीड़ाएं जो अपने अन्दर बिजली की विशेषता रखती हैं फ़रिश्तों के स्थान में एक शोर डाल देती हैं। तब ख़ुदा तआला की क़ुदरत से वह बादल पैदा हो जाते हैं जिन से ख़ुदा की रहमत का वह मेह बरसता है जिसकी वह इच्छा करते हैं उनकी रूहानियत जब अपने पूरे तपन और पिघलन के साथ किसी समस्या के समाधान के लिए ध्यान देती है तो वह ख़ुदा तआला के ध्यान को अपनी ओर आकर्षित करती है। क्योंकि वे लोग ख़ुदा से व्यक्तिगत प्रेम रखने के कारण ख़ुदा के प्रियतमों में सम्मिलित होते हैं, तब प्रत्येक वस्तु जो ख़ुदा तआला के आदेश के अधीन है उनकी सहायता के लिए जोश मारती है[1] तथा ख़ुदा की रहमत केवल उनकी कामना पूरी करने के लिए एक नवीन

---

[1] काफ़िर और शत्रु भी एक प्रकार से उनकी सहायता करते हैं कि पीड़ा और अत्याचार के साथ उनके हृदय को कष्ट देते और उनकी रूहानियत को जोश में लाते हैं -

تا دل مرد خدا نا مد بدرد
ہیچ قومے را خدا رسوا نہ کرد

(इसी से)

सृष्टि के लिए तैयार हो जाती है और वे बातें प्रकट होती हैं जो संसार के लोगों की दृष्टि में असंभव मालूम होती हैं जिन से पिशाच विद्या (इल्मे सिफ़्ली) अपरिचित मात्र हैं। ऐसे लोगों को ख़ुदा तो नहीं कह सकते किन्तु उनका सानिध्य और प्रेम सम्बन्ध ख़ुदा के साथ कुछ ऐसा श्रद्धा और निष्ठा के साथ होता है जैसे उनमें ख़ुदा उतर आता है तथा आदम की भांति उनमें ख़ुदा की रूह फूंकी जाती है परन्तु यह नहीं कि वे ख़ुदा हैं किन्तु मध्य में कुछ ऐसा सम्बन्ध है जैसा कि लोहे को जबकि वह अग्नि द्वारा सख़्त भड़क जाए तथा उसमें अग्नि का रंग उत्पन्न हो जाए अग्नि से सम्बन्ध होता है। इस स्थिति में समस्त वस्तुएं जो ख़ुदा तआला के आदेश के अधीन हैं उनके आदेश के अधीन हो जाती हैं और आकाश के नक्षत्र, सूर्य एवं चन्द्रमा से लेकर पृथ्वी के समुद्रों तथा वायु एवं अग्नि तक उनकी आवाज़ को सुनते, उनको पहचानते तथा उनकी सेवा में लगे रहते हैं तथा प्रत्येक वस्तु स्वाभाविक तौर पर उनसे प्रेम करती है और सच्चे प्रेमी की भांति उनकी ओर खिंची जाती है सिवाए दुष्ट लोगों के जो शैतान के अवतार हैं। काल्पनिक (मजाज़ी) प्रेम तो एक अशुभ प्रेम है कि एक ओर पैदा होता तथा एक ओर मर जाता है और उसकी नींव उस सौन्दर्य पर है जो पतनशील है तथा उस सौन्दर्य के प्रभाव के अन्तर्गत आने वाले बहुत ही कम होते हैं। परन्तु यह क्या आश्चर्यजनक दृश्य है कि वह रूहानी सौन्दर्य जो व्यवहार कुशलता, श्रद्धा एवं निष्ठा तथा ख़ुदा के प्रेम की झलक के पश्चात् मनुष्य में पैदा होता है, उसमें एक विश्वव्यापी आकर्षण पाया जाता है वह तैयार हृदयों को अपनी ओर इस प्रकार आकर्षित कर लेता है कि जैसे शहद चींटियों को और न केवल मनुष्य अपितु संसार का कण-कण उसके आकर्षण से प्रभावित होता है। सच्चा प्रेम करने वाला मनुष्य जो ख़ुदा तआला से सच्चा प्रेम रखता है वह, वह यूसुफ़ है जिसके लिए इस संसार का कण-कण ज़ुलैख़ा की विशेषता रखता है और अभी उसका सौन्दर्य इस संसार में प्रकट नहीं क्योंकि यह

संसार उसको सहन नहीं करता। ख़ुदा तआला अपनी पवित्र पुस्तक क़ुर्आन में कहता है कि मोमिनों का प्रकाश उनके चेहरों पर दौड़ता है और मोमिन उस सौन्दर्य से पहचाना जाता है जिसका नाम दूसरे शब्दों में नूर (प्रकाश) है।

मुझे एक बार कश्फ़ की अवस्था में पंजाबी भाषा में इसी लक्षण के बारे में यह उचित वाक्य सुनाया गया -

"इश्क़े इलाही वस्से मुंह पर वलियां एह निशानी"

मोमिन का नूर जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन किया गया है वह वही रूहानी सौन्दर्य है जो मोमिन को रूहानी अस्तित्व की छठी श्रेणी पर पूर्ण रूप से प्रदान किया जाता है। शारीरिक सौन्दर्य का एक व्यक्ति या दो व्यक्ति ख़रीदार होते हैं परन्तु यह विचित्र सौन्दर्य है जिसकी खरीदार करोड़ों रूहें हो जाती हैं। इसी रूहानी सौन्दर्य के कारण कुछ लोगों ने **सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी**[रज़ि.①] की प्रशंसा में ये शे'र कहे

---

①स्वाभाविक तौर पर कुछ स्वभावों को कुछ अन्य स्वभावों से अनुकूलता होती है इसी प्रकार मेरी रूह और सय्यद अब्दुल क़ादिर की रूह को प्रकृति के ख़मीर से परस्पर एक अनुकूलता है जिस के बारे में मुझे सही कश्फ़ों द्वारा सूचना मिली है। इस बात पर तीस वर्ष के लगभग समय गुज़र गया है कि जब एक रात मुझे ख़ुदा ने सूचना दी कि उसने मुझे अपने लिए अपना लिया है। तब यह विचित्र संयोग हुआ कि उसी रात एक बुढ़िया को स्वप्न आया जिसकी आयु लगभग अस्सी वर्ष की थी। उसने प्रातः मुझे आकर कहा कि मैंने रात सय्यद अब्दुल क़ादिर जीलानी[रज़ि.] को स्वप्न में देखा है तथा उनके साथ एक अन्य बुज़ुर्ग थे और दोनों हरे लिबास में थे और रात के पिछले भाग का समय था। दूसरा बुज़ुर्ग आयु में उन से कुछ छोटा था। उन्होंने पहले हमारी जामे मस्जिद में नमाज़ पढ़ी और फिर बाहर के आंगन में निकल आए। मैं उनके पास खड़ी थी, इतने में पूरब की ओर से एक चमकता हुआ सितारा निकला। तब उस सितारे को देखकर सय्यद अब्दुल क़ादिर बहुत प्रसन्न हुए

हैं और उन्हें एक नितान्त श्रेणी का सुन्दर और ख़ूबसूरत ठहरा दिया है और वे अश्आर ये हैं -

آن تُرکِ عجم چون ز میٔ عشق طرب کرد
غارت گر پیئے کوفہ و بغداد و حلب کرد
صد لالہ رُخے بود بصد حُسنِ شگفتہ
نازان ہمہ را زیر قدم کرد عجب کرد

और शैख़ सा'दी (उन पर ख़ुदा की रहमत हो) ने भी इस बारे में एक शे'र कहा है जो रूहानी सौन्दर्य पर अधिक चरितार्थ होता है और वह यह है -

صورت گر دیبائے چیں رو صورتِ زیباش بیں
یا صورتے برکش چنیں یا توبہ کن صورت گری

अब यह भी स्मरण रहे कि बन्दा तो व्यवहार कुशलता दिखा कर अपना निष्ठापूर्ण प्रेम प्रकट करता है, परन्तु ख़ुदा तआला उसके मुकाबले पर इतनी अधिकता करता है कि उसकी तीव्र गति के मुकाबले पर उसकी ओर बिजली के समान दौड़ता चला आता है तथा पृथ्वी एवं आकाश से उसके लिए निशान प्रकट करता है तथा उसके मित्रों का मित्र और उसके शत्रुओं का शत्रु बन जाता है और यदि पचास करोड़ लोग भी उसके विरोध पर खड़े हों तो उनको ऐसा अपमानित तथा निराश्रय कर देता है जैसा कि एक मरा हुआ कीड़ा और मात्र एक व्यक्ति के सत्कार के लिए एक संसार को तबाह कर देता है तथा अपनी पृथ्वी और आकाश को उसका सेवक बना देता है तथा उसके कलाम में बरकत डाल देता है और उसके द्वार एवं दीवारों पर नूर (प्रकाश) की वर्षा करता है तथा उसके लिबास और उसकी आजीविका में तथा

और सितारे की ओर सम्बोधन करते हुए कहा अस्सलामो अलैकुम और ऐसा ही उनके साथी ने अस्सलामो अलैकुम कहा और वह सितारा मैं था - **المؤمن یَرٰی و یُرٰی لہ** (इसी से)

उसकी मिट्टी में भी जिस पर उसका क़दम पड़ता है एक बरकत रख देता है तथा उसको असफल होने की स्थिति में मृत्यु नहीं देता और प्रत्येक ऐतिराज़ जो उस पर हो उसका स्वयं उत्तर देता है। वह उसकी आंखें हो जाता है जिन से वह देखता है, उसके कान हो जाता है जिन से वह सुनता है, उसकी जीभ हो जाता है जिस से वह बोलता है, उसके पैर हो जाता है जिन से वह चलता है और उसके हाथ हो जाता है जिन से वह शत्रुओं पर आक्रमण करता है। वह उस के शत्रुओं के मुकाबले पर स्वयं निकलता है और दुष्टों पर जो उसको दुख देते हैं स्वयं तलवार खींचता है, प्रत्येक मैदान में उसे विजय प्रदान करता है तथा उसे अपने प्रारब्ध के गुप्त रहस्य बताता है। अतः उसके रूहानी सौन्दर्य एवं सुन्दरता का पहला खरीदार जो व्यवहार कुशलता और व्यक्तिगत प्रेम के पश्चात् उत्पन्न होता है ख़ुदा ही है। अतः क्या ही दुर्भाग्यशाली वे लोग हैं जो ऐसा युग पाएं तथा उन पर ऐसा **सूर्य** उदय हो और वे अंधकार में **बैठे रहें।**

कुछ मूर्ख लोग बार-बार यह ऐतिराज़ प्रस्तुत करते हैं कि ख़ुदा के प्रियतमों की यह निशानी है कि उनकी प्रत्येक **दुआ** सुनी जाती है और जिस में यह निशानी नहीं पाई जाती वह ख़ुदा के प्रियतमों में से नहीं है[1]। किन्तु खेद कि ये लोग मुंह से तो एक बात निकाल

---

① स्मरण रहे कि मोमिन के साथ ख़ुदा तआला दोस्तों जैसा व्यवहार करता है और चाहता है कि कभी तो वह मोमिन के इरादे को पूरा करे और कभी मोमिन उसके इरादे पर राज़ी हो जाए। अतः एक स्थान पर तो मोमिन को सम्बोधित करके कहता है اُدْعُوْنِیْٓ اَسْتَجِبْ لَكُمْ (अलमोमिन-61) अर्थात् दुआ करो मैं तुम्हारी दुआ स्वीकार करूंगा। इस स्थान पर तो मोमिन की इच्छा पूर्ण करना चाहता है तथा दूसरे स्थान पर मोमिन से अपनी इच्छा मनवाना चाहता है जैसा कि वह कहता है -

وَ لَنَبْلُوَنَّكُمْ بِشَیْءٍ مِّنَ الْخَوْفِ وَ الْجُوْعِ وَ نَقْصٍ مِّنَ الْاَمْوَالِ وَ الْاَنْفُسِ وَ الثَّمَرٰتِ ؕ وَ بَشِّرِ الصّٰبِرِیْنَ ﴿۱۵۶﴾ الَّذِیْنَ اِذَآ اَصَابَتْهُمْ مُّصِیْبَةٌ ۙ قَالُوْٓا اِنَّا لِلّٰهِ وَ

देते हैं परन्तु ऐतिराज़ करने के समय यह नहीं सोचते कि ऐसे मूर्खतापूर्ण ऐतिराज़ ख़ुदा तआला के समस्त नबियों और रसूलों पर आते हैं उदाहरणतया प्रत्येक नबी की यह कामना थी कि उनके युग में समस्त काफिर जो उनके विरोध पर खड़े थे मुसलमान हो जाएं, किन्तु उनकी यह कामना पूरी न हुई, यहां तक कि अल्लाह तआला ने हमारे नबी[स.अ.व.] को सम्बोधित करके कहा لَعَلَّكَ بَاخِعٌ نَّفْسَكَ اَلَّا يَكُوْنُوْا مُؤْمِنِيْنَ[1] अर्थात् क्या तू इस चिन्ता से स्वयं को तबाह कर देगा कि ये लोग क्यों ईमान नहीं लाते।

इस आयत से ज्ञात होता है कि आंहज़रत[स.अ.व.] काफ़िरों के ईमान लाने के लिए इतने कठिन परिश्रम और विनयपूर्वक दुआ करते थे कि आशंका थी कि आप[स.] इस चिन्ता से स्वयं तबाह न हो जाएं। इसलिए ख़ुदा तआला ने कहा कि उन लोगों के लिए इतना ग़म न कर तथा अपने हृदय को इतनी पीड़ाओं का निशाना न बना क्योंकि ये लोग ईमान लाने से लापरवाह हैं तथा इनके लक्ष्य और उद्देश्य और हैं। इस आयत में अल्लाह तआला ने यह संकेत किया है कि हे नबी (अलैहिस्सलाम) ! जितना तू साहस का प्रण तथा पूर्ण ध्यान और विनम्रता से अपनी रूह को कठिनाई में डालकर उनके मार्गदर्शन के लिए दुआ करता है तेरी दुआओं के प्रभावपूर्ण होने में कुछ कमी नहीं है परन्तु दुआ के स्वीकार होने की शर्त यह है कि जिस के पक्ष में दुआ की जाती है वह कठोर पक्षपाती, लापरवाह और गन्दे स्वभाव का व्यक्ति न हो अन्यथा दुआ स्वीकार नहीं होगी और जहां तक ख़ुदा तआला ने मुझे दुआओं के बारे में ज्ञान दिया है वह यह है कि दुआ के स्वीकार होने के लिए तीन शर्तें हैं -

प्रथम - दुआ करने वाला पूर्णतया संयमी हो क्योंकि ख़ुदा तआला का मान्य बन्दा

اِنَّآ اِلَيْهِ رٰجِعُوْنَ (अलबक़रह - 156,157)

खेद कि मूर्ख व्यक्ति केवल एक पहलू को देखता है तथा दोनों पहलुओं पर दृष्टि नहीं डालता। (इसी से)

[1] अश्शौअरा - 4

वही होता है जिसका आचरण संयम हो तथा जिस ने संयम की बारीक राहों को दृढ़तापूर्वक पकड़ लिया हो तथा जो ईमानदार, संयमी और वादे का सच्चा होने के कारण ख़ुदा का मान्य हो तथा ख़ुदा के व्यक्तिगत प्रेम से परिपूर्ण और आबाद हो।

द्वितीय शर्त यह है कि उस के साहस का प्रण और ध्यान इस सीमा तक हो कि जैसे एक व्यक्ति के जीवित करने के लिए स्वयं तबाह हो जाए तथा एक व्यक्ति को कब्र से बाहर निकालने के लिए स्वयं क़ब्र में प्रविष्ट हो जाए। इसमें रहस्य यह है कि ख़ुदा तआला को अपने मान्य बन्दे इससे अधिक प्रिय होते हैं जैसा कि एक सुन्दर बच्चा जो एक ही हो उसकी मां को प्रिय होता है। इसलिए जब कृपालु-दयालु ख़ुदा देखता है कि उसका एक मान्य और प्रिय एक व्यक्ति के प्राण बचाने के लिए रूहानी परिश्रमों, विनयों तथा कठिन तपस्याओं के कारण उस सीमा तक जा पहुंचा है कि निकट है कि उस के प्राण निकल जाएं तो उसको प्रेम संबंध के कारण अप्रिय लगता है कि उसी स्थिति में उसे तबाह कर दे। तब उसके लिए उस दूसरे व्यक्ति का पाप क्षमा कर देता है जिसके लिए वह पकड़ा गया था। अत: यदि वह किसी घातक रोग में ग्रसित है या अन्य किसी विपत्ति में गिरफ़्तार तथा विवश है तो अपनी क़ुदरत से ऐसे सामान पैदा कर देता है जिससे छुटकारा हो जाए तथा कभी उस का इरादा एक व्यक्ति को निश्चित तौर पर तबाह या बरबाद करने पर तय हो चुका होता है, परन्तु जब एक संकटग्रस्त के सौभाग्य से ऐसा व्यक्ति दर्द से भरी विनयों के साथ मध्य में आ जाता है जिसकी ख़ुदा के दरबार में प्रतिष्ठा है तो वह मुक़द्दम: की मिसल जो दण्ड देने के लिए पूर्ण तथा सम्पादित हो चुकी है फाड़नी पड़ती है क्योंकि अब बात ग़ैरों से मित्र की ओर स्थानांतरित हो जाती है और यह क्योंकर हो सके कि ख़ुदा अपने सच्चे मित्रों को अज़ाब दे।

तृतीय शर्त **दुआ की स्वीकारिता** के लिए एक ऐसी शर्त है जो समस्त शर्तों से कठिनतम है कयोंकि उसका पूरा करना ख़ुदा के मान्य बन्दों के अधिकार में नहीं अपितु उस व्यक्ति के अधिकार में है जो दुआ कराना चाहता है और वह यह है कि नितान्त

निष्ठा, पूर्ण आस्था, पूर्ण विश्वास, पूर्ण श्रद्धा तथा पूर्ण दासता के साथ दुआ का अभिलाषी हो और हृदय में यह निर्णय कर ले कि यदि दुआ स्वीकार भी न हो तथापि उसकी आस्था और निष्ठा में अन्तर नहीं आएगा और दुआ करना परीक्षा के तौर पर न हो अपितु सच्ची आस्था के तौर पर हो तथा नितान्त विनयपूर्वक उसके द्वार पर गिरे तथा उसके लिए यथासंभव आर्थिक सेवा से प्रत्येक प्रकार के आज्ञापालन द्वारा ऐसा सानिध्य पैदा करे कि उस के हृदय के अन्दर प्रवेश कर जाए इसके साथ अत्यधिक सुधारणा रखता हो और उसे असीम स्तर का संयमी समझे तथा उसकी पवित्र प्रतिष्ठा के विपरीत एक विचार भी हृदय में लाना कुफ्र समझे। इस प्रकार विभिन्न प्रकार से प्राणों की बाज़ी लगाकर उन पर सच्ची आस्था प्रदर्शित कर दे तथा उसका सदृश संसार में किसी को भी न समझे और प्राण से, धन से, सम्मान से उस पर न्यौछावर हो जाए तथा उसके बारे में किसी भी दृष्टि से मानहानि का कोई वाक्य मुख पर न लाए और न हृदय में। इस बात को उसकी दृष्टि में दृढ़ प्रमाण तक पहुंचा दे कि वह वास्तव में ऐसा ही आस्थावान और मुरीद है। और इसी प्रकार इसके साथ धैर्यपूर्वक प्रतीक्षा करे और यदि पचास बार भी अपने कार्य में असफल रहे फिर भी आस्था एवं विश्वास में सुस्त न हो। क्योंकि यह क़ौम बहुत कोमल स्वभाव रखती है और उन का विवेक चेहरे को देखकर पहचान सकता है कि यह व्यक्ति किस स्तर की निष्कपटता रखता है तथा यह क़ौम नम्र हृदय होने के बावजूद नितान्त निःस्पृह होती है। उनके हृदय ख़ुदा ने ऐसे निःस्पृह पैदा किए हैं कि अभिमानी, स्वार्थपरायण तथा कपटाचारी मनुष्य की कुछ परवाह नहीं करते। इस क़ौम से वही लोग लाभ उठाते हैं जो उनकी इस सीमा तक दासों के समान आज्ञाकारिता धारण करते हैं कि जैसे मर ही जाते हैं परन्तु वह व्यक्ति जो पग-पग पर कुधारणा करता है और हृदय में कोई आक्षेप रखता है तथा पूर्ण प्रेम एवं निष्ठा नहीं रखता वह लाभ के स्थान पर तबाह होता है।

अब हम इस वर्णन के पश्चात् कहते हैं कि ये जो अल्लाह तआला ने मोमिन के

रूहानी (आध्यात्मिक) अस्तित्व के छः स्तर वर्णन करके उनकी तुलना में शारीरिक अस्तित्व के छः स्तर दिखाए हैं। यह एक **ज्ञान संबंधी चमत्कार** है तथा संसार में जितनी पुस्तकें आकाशीय कहलाती हैं या जिन दार्शनिकों ने मनोवृत्ति तथा ब्रह्मज्ञान के बारे में लेख लिखे हैं, अथवा जिन लोगों ने सूफ़ियों की शैली पर आध्यात्म ज्ञान की पुस्तकें लिखी हैं उनमें से किसी का मस्तिष्क इस बात की ओर नहीं गया कि यह तुलना शारीरिक तथा आध्यात्मिक अस्तित्व की दिखाता। यदि कोई व्यक्ति मेरे इस दावे का इन्कारी हो तथा उसका विचार हो कि यह तुलना शारीरिक तथा आध्यात्मिक किसी और ने भी दिखाई है तो उस पर अनिवार्य है कि उस **ज्ञान संबंधी चमत्कार** का सदृश किसी अन्य पुस्तक में से प्रस्तुत करके दिखाए। मैंने तो तौरात, इंजील तथा हिन्दुओं के वेद को भी देखा है परन्तु मैं सच-सच कहता हूं कि इस प्रकार का ज्ञान संबंधी चमत्कार मैंने पवित्र क़ुर्आन के अतिरिक्त किसी पुस्तक में नहीं पाया तथा केवल इसी चमत्कार पर आधारित नहीं अपितु सम्पूर्ण पवित्र क़ुर्आन ऐसे ही चमत्कारों से परिपूर्ण है जिन पर एक बुद्धिमान दृष्टि डालकर समझ सकता है कि यह उसी सर्वशक्तिमान ख़ुदा का कलाम है जिस की शक्तियां धरती तथा आकाश की कारीगरियों में प्रकट हैं। वही ख़ुदा जो अपनी बातों तथा कार्यों में अद्वितीय एवं अनुपम है। फिर जब हम एक ओर पवित्र क़ुर्आन में ऐसे-ऐसे चमत्कार पाते हैं तथा दूसरी ओर आंहज़रत[स.अ.व.] के अनपढ़ होने को देखते हैं और इस बात को अपनी कल्पना में लाते हैं कि आप ने एक अक्षर भी किसी शिक्षक से नहीं पढ़ा था और न आपने भौतिकी और दर्शन से कुछ प्राप्त किया था अपितु आप एक ऐसी जाति में पैदा हुए थे जो सब की सब अनपढ़ और निरक्षर थी और एक पशुओं जैसा जीवन रखती थी इसके साथ ही आप ने माता-पिता के प्रशिक्षण का युग भी नहीं पाया था। अतः इन समस्त बातों को सामूहिक दृष्टि से देखने से पवित्र क़ुर्आन के ख़ुदा की ओर से होने पर एक हमें एक ऐसा चमकता हुआ विवेक मिलता है और उसका ज्ञान संबंधी चमत्कार होना हमारे हृदय में ऐसे विश्वास के साथ भर जाता

है कि जैसे हम उसे देख कर ख़ुदा तआला को देख लेते हैं। अत: जबकि स्पष्ट तौर पर सिद्ध है कि सूरह अलमोमिनून की ये समस्त आयतें जो सूरह के प्रारंभ से लेकर आयत فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ[1] तक हैं ज्ञान संबंधी चमत्कार हैं। अत: इसमें क्या सन्देह है कि आयत فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ ज्ञान संबंधी चमत्कार का एक भाग है तथा चमत्कार का भाग होने के कारण चमत्कार में सम्मिलित है और यही सिद्ध करना था।

और स्मरण रहे कि यह ज्ञान संबंधी चमत्कार उपरोक्त एक ऐसी साफ, व्यापक तथा स्पष्ट सच्चाई है कि अब ख़ुदा तआला के कलाम का मार्गदर्शन तथा स्मरण कराने के पश्चात् बुद्धि भी अपनी बौद्धिक विद्याओं में बड़े गर्व के साथ उसे सम्मिलित करने के लिए तैयार है।

क्योंकि बुद्धि के निकट यह बात स्पष्ट है कि सर्वप्रथम जो एक नेक स्वभाव व्यक्ति के हृदय को ख़ुदा तआला की ओर उसकी जिज्ञासा में एक गति पैदा होती है। वह विनय एवं विनम्रता है तथा विनय से अभिप्राय यह है कि ख़ुदा तआला के लिए विनीतता, सत्कार तथा गिड़गिड़ाने की अवस्था धारण की जाए और उसके मुकाबले पर जो तमोगुण हैं जैसे अभिमान, अहंकार, दिखावा, लापरवाही तथा नि:स्पृहता उन सब को ख़ुदा के भय से त्याग दिया जाए। यह बात नितान्त स्पष्ट और व्यापक है कि जब तक मनुष्य अपने तमोगुणों को नहीं त्यागता उस समय तक उन आचरणों के मुकाबले पर जो उच्चकोटि के आचरण हैं जो ख़ुदा तआला तक पहुंचने का माध्यम हैं उनको स्वीकार नहीं कर सकता क्योंकि वे एक दूसरे के विपरीत एक हृदय में एकत्र नहीं हो सकते। इसी की ओर ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में संकेत करता है। जैसा कि सूरह बक़रह के प्रारंभ में उसने कहा - هُدًى لِّلۡمُتَّقِيۡنَ[2] अर्थात् पवित्र क़ुर्आन उन लोगों के लिए हिदायत है

1 अलमोमिनून - 15

2 अलबक़रत - 3

जो संयमी हैं अर्थात् वे लोग जो अभिमान नहीं करते तथा विनय एवं विनम्रता से ख़ुदा के कलाम में विचार करते हैं वही हैं जो अन्ततः हिदायत पाते हैं। इस स्थान पर यह भी स्मरण रहे कि इन आयतों में छः स्थान पर اَفْلَحَ का शब्द है। पहली आयत में स्पष्ट तौर पर जैसा कि कहा है -

قَدْ اَفْلَحَ الْمُؤْمِنُوْنَ الَّذِيْنَ هُمْ فِيْ صَلَاتِهِمْ خٰشِعُوْنَ[1]

तथा बाद की आयतों में عطف के तौर पर ज्ञात होता है और اَفْلَحَ के शब्दकोशीय अर्थ यह हैं اُصِيْرَ اِلَى الفَلَاحِ अर्थात् उद्देश्य की सफलता की ओर फेरा गया तथा गति दिया गया। अतः इन अर्थों की दृष्टि से मोमिन का नमाज़ में विनय धारण करना उद्देश्य की सफलता के लिए प्रथम गति है जिसके साथ अभिमान एवं अहंकार इत्यादि को त्यागना पड़ता है तथा इसमें उद्देश्य की सफलता यह है कि मनुष्य की प्रवृत्ति विनय का आचरण धारण करके ख़ुदा से संबंध स्थापित करने के लिए उद्यत और तैयार हो जाती है।

दूसरा कार्य मोमिन का अर्थात् वह कार्य जिससे ईमान की शक्ति द्वितीय श्रेणी तक पहुंचती है तथा पहले की अपेक्षा ईमान कुछ दृढ़ हो जाता है सद्बुद्धि के निकट यह है कि मोमिन अपने हृदय को जो विनय की श्रेणी तक पहुंच चुका है व्यर्थ विचारों, व्यर्थ कार्यों से पवित्र करे। क्योंकि जब तक मोमिन यह निम्न स्तर की शक्ति प्राप्त न कर ले कि ख़ुदा के लिए व्यर्थ बातों एवं व्यर्थ कार्यों को न त्याग दे, जो कि कुछ कठिन कार्य नहीं तथा आनन्द रहित पाप है उस समय तक यह अपूर्ण अभिलाषा है कि मोमिन ऐसे कार्यों से पृथक हो सके जिन से पृथक होना हृदय पर बहुत भारी है तथा जिनको करने में हृदय को कोई लाभ या आनन्द है। अतः इससे सिद्ध है कि प्रथम श्रेणी के पश्चात् कि अभिमान को त्यागना है द्वितीय श्रेणी व्यर्थ बातों का त्यागना है। इस श्रेणी पर जो वादा اَفلَحَ शब्द से किया गया है अर्थात् उद्देश्य की सफलता इस प्रकार से पूरी होती है कि

---

[1] अलमोमिनून - 2,3

मोमिन का संबंध जब व्यर्थ कार्यों तथा व्यर्थ बातों से टूट जाता है तो उसका ख़ुदा तआला से एक हल्का सा संबंध हो जाता है तथा ईमान की शक्ति भी पहले से अधिक हो जाती है तथा हल्का सम्बन्ध। इसलिए हमने कहा कि व्यर्थ बातों से सम्बन्ध भी हल्का सा ही होता है। इसलिए हल्का सम्बन्ध छोड़ने से हल्का सम्बन्ध ही मिलता है।

फिर मोमिन का तीसरा काम जिसके द्वारा ईमान की शक्ति तृतीय श्रेणी तक पहुंच जाती है सद्बुद्धि के निकट यह है कि वह ख़ुदा तआला के लिए केवल व्यर्थ कार्यों तथा व्यर्थ बातों को ही नहीं छोड़ता अपना प्रिय माल भी ख़ुदा तआला के लिए छोड़ता है। स्पष्ट है कि व्यर्थ कार्यों के छोड़ने की अपेक्षा धन का छोड़ना हृदय पर अधिक भारी है क्योंकि वह परिश्रम से अर्जित किया हुआ तथा एक काम में आने वाली वस्तु होती है जिस पर समृद्ध जीवन और आराम निर्भर है। इसलिए ख़ुदा के लिए धन का छोड़ना व्यर्थ कार्यों के छोड़ने की अपेक्षा ईमान की शक्ति को अधिक चाहता है और اَفلَحَ शब्द का जो आयत में वादा है उसके यहां यह अर्थ होंगे कि द्वितीय श्रेणी की अपेक्षा इस श्रेणी में ईमान की शक्ति का सम्बन्ध भी ख़ुदा तआला से अधिक हो जाता है तथा इससे हृदय की पवित्रता उत्पन्न हो जाती है क्योंकि अपने हाथ से अपने परिश्रम द्वारा अर्जित किया हुआ धन मात्र ख़ुदा के भय से निकालना हृदय की पवित्रता के अतिरिक्त संभव नहीं।

फिर मोमिन का चौथा कार्य जिस से ईमान की शक्ति चतुर्थ श्रेणी तक पहुंच जाती है सद्बुद्धि के अनुसार यह है कि वह ख़ुदा तआला के मार्ग में केवल धन का त्याग नहीं करता अपितु वह वस्तु जिस से वह धन से भी अधिक प्रेम करता है अर्थात् कामवासना सम्बन्धी इच्छाओं का वह भाग जो अवैध के तौर पर है त्याग देता है हम वर्णन कर चुके हैं कि प्रत्येक मनुष्य अपनी कामवासनाओं संबंधी इच्छाओं को स्वाभाविक तौर पर धन से अधिक प्रिय समझता है और धन को उसके मार्ग में न्योछावर करता है। अतः निस्सन्देह धन का त्याग करने से ख़ुदा के लिए कामवासनाओं की इच्छाओं को त्यागना बहुत भारी है तथा शब्द اَفلَحَ जो इस आयत से भी संबंध

रखता है उसके यहां ये अर्थ हैं कि मनुष्य को जिस प्रकार कामवासना संबंधी इच्छाओं से बहुत अधिक संबंध होता है इसी प्रकार उनको त्यागने के पश्चात् वही दृढ़ सम्बन्ध ख़ुदा तआला से हो जाता है। क्योंकि जो व्यक्ति कोई वस्तु ख़ुदा तआला के मार्ग में खोता है उससे उत्तम पा लेता है -

لُطفِ او ترک طالبان نہ کند
کس بہ کارِ رہش زیاں نہ کند
ہر کہ آن راہ جُست یافتہ است
تافت آن رو کہ سرنتافتہ است

फिर मोमिन का पांचवां कार्य जिससे पंचम श्रेणी तक पहुंच जाता है बुद्धि के अनुसार यह है कि केवल कामवासना संबंधी इच्छाओं का ही परित्याग न करे अपितु ख़ुदा के मार्ग में स्वयं प्रवृत्ति को ही त्याग दे तथा उसको न्योछावर करने के लिए तैयार रहे अर्थात् प्रवृत्ति जो ख़ुदा की अमानत (धरोहर) है उसी मालिक को वापिस दे दे तथा प्रवृत्ति से केवल इतना सम्बन्ध रखे जैसा कि एक अमानत से संबंध होता है तथा तक़्व: (संयम) की बारीकियों को ऐसे तौर पर पूरा करे कि जैसे अपनी प्रवृत्ति, धन तथा समस्त वस्तुओं को ख़ुदा के मार्ग में समर्पित कर चुका है। यह आयत इसी ओर संकेत करती है وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ[1] अत: जबकि मनुष्य के प्राण और धन तथा समस्त प्रकार के आराम ख़ुदा की अमानत[2] हैं जिसे वापस देना अमीन होने के

---

[1] अलमोमिनून - 9

[2] जैसा कि प्रवृत्ति ख़ुदा की अमानत है इसी प्रकार धन भी ख़ुदा तआला की अमानत है। अत: जो व्यक्ति केवल अपने धन में से ज़कात देता है वह धन को अपना धन समझता है, परन्तु जो व्यक्ति धन को ख़ुदा तआला की अमानत समझता है वह अपने समस्त धन को ख़ुदा तआला का धन जानता है और हर समय ख़ुदा के मार्ग में देता है यद्यपि उस पर कोई ज़कात अनिवार्य न हो। (इसी से)

लिए शर्त है। इसलिए प्रवृत्ति के त्याग आदि के यही अर्थ हैं कि यह अमानत ख़ुदा तआला के मार्ग में समर्पित करके इस प्रकार से यह क़ुर्बानी अदा कर दे तथा दूसरे यह कि ईमान के समय जो उसकी ख़ुदा तआला के साथ प्रतिज्ञा थी और जो प्रतिज्ञा और अमानतें उसकी गर्दन पर प्रजा की हैं उन सब को संयम की दृष्टि से इस प्रकार से पूर्ण करे कि वह भी एक सच्ची क़ुर्बानी हो जाए। क्योंकि तक़्व: की बारीकियों को चरम सीमा तक पहुंचाना यह भी एक प्रकार की मृत्यु है और शब्द اَفْلَحَ जो इस आयत से भी संबंध रखता है उसके यहां यह अर्थ हैं कि जब इस श्रेणी का मोमिन ख़ुदा तआला के मार्ग में प्रवृत्ति को व्यय करता है और संयम (तक़्व:) की समस्त बारीकियों को पूर्ण करता है तब ख़ुदा तआला से उसके अस्तित्व पर ख़ुदा तआला के प्रकाश व्याप्त होकर उसे रूहानी सौन्दर्य प्रदान करते हैं जैसे कि मांस हड्डियों पर चढ़कर उनको सुन्दर बना देता है तथा जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं इन दोनों अवस्थाओं का नाम ख़ुदा तआला ने लिबास ही रखा है। संयम का नाम भी लिबास है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - لِبَاسُ التَّقْوٰی[1] तथा जो मांस हड्डियों पर चढ़ता है वह भी लिबास है जैसा कि अल्लाह तआला कहता है فَكَسَوْنَا الْعِظٰمَ لَحْمًا[2] क्योंकि كَسَوْنَا जिससे كَسْوَت का शब्द निकला है लिबास को ही कहते हैं।

अत: स्मरण रहे कि साधना की पराकाष्ठा पंचम श्रेणी है और जब पंचम श्रेणी की अवस्था अपने कमाल (पूर्णता) को पहुंच जाती है तो तत्पश्चात् छठी श्रेणी है जो मात्र एक अनुदान के तौर पर है जो बिना परिश्रम तथा बिना प्रयास के मोमिन को प्रदान की जाती है तथा कमाने का इसमें लेशमात्र भी हस्तक्षेप नहीं और वह यह है कि जैसे मोमिन ख़ुदा के मार्ग में अपनी रूह खोता है तो उसे एक रूह प्रदान की जाती है क्योंकि प्रारंभ से यह वादा है कि जो कोई भी ख़ुदा के मार्ग में कुछ खोएगा वह उसे पाएगा। इसलिए

---

① अलआराफ़ - 27

② अलमोमिनून - 15

रूह को खोने वाले रूह को पाते हैं। अतः चूंकि मोमिन अपने व्यक्तिगत प्रेम से ख़ुदा के मार्ग में अपने प्राण समर्पित करता है इसलिए ख़ुदा के व्यक्तिगत प्रेम की रूह को पाता है, जिसके साथ रूहुल क़ुदुस सम्मिलित होता है। ख़ुदा का व्यक्तिगत प्रेम एक रूह है और मोमिन के अन्दर रूह का काम करता है। इसलिए वह स्वयं रूह है और रूहुल क़ुदुस उससे पृथक नहीं। क्योंकि उस प्रेम तथा रूहुल क़ुदुस में कभी पृथकता हो ही नहीं सकती। इसी कारण हम ने अधिकतर स्थानों में केवल ख़ुदा के व्यक्तिगत प्रेम का वर्णन किया है तथा रूहुल क़ुदुस का नाम नहीं लिया क्योंकि उनकी परस्पर अनिवार्यता है। और जब रूह किसी मोमिन पर उतरती है तो इबादतों का समस्त भार उसके सर से उतर जाता है तथा उसमें एक ऐसी शक्ति और आनन्द आ जाता है कि वह शक्ति बनावट से नहीं अपितु स्वाभाविक जोश से उससे ख़ुदा का स्मरण कराती है तथा उसे प्रेमियों के समान जोश प्रदान करती है। अतः ऐसा मोमिन जिब्राईल अलैहिस्सलाम के समान हर समय ख़ुदा की चौखट के आगे उपस्थित रहता है और उसे ख़ुदा तआला का अनश्वर पड़ोस प्राप्त हो जाता है। जैसा कि ख़ुदा तआला इस श्रेणी के बारे में कहता है وَالَّذِيْنَ هُمْ عَلٰى صَلَوٰتِهِمْ يُحَافِظُوْنَ[1] अर्थात् पूर्ण मोमिन वे लोग हैं कि उनको ऐसी अनश्वर उपस्थिति उपलब्ध होती है कि वे हमेशा अपनी नमाज़ के स्वयं रक्षक रहे हैं। यह उस अवस्था की ओर संकेत है कि इस श्रेणी का मोमिन अपनी रूहानी नित्यता (बक़ा) के लिए नमाज़ को एक आवश्यक वस्तु समझता है और उसे अपना आहार ठहराता है जिसके बिना वह जीवित नहीं रह सकता। यह श्रेणी उस रूह के बिना प्राप्त नहीं हो सकती जो मोमिन पर ख़ुदा की ओर से उतरती है। क्योंकि जब मोमिन अपने प्राण को ख़ुदा तआला के लिए त्याग देता है तो एक दूसरा प्राण पाने का अधिकारी हो जाता है।

इस सम्पूर्ण वर्णन से सिद्ध है कि यह छः श्रेणियां सद्बुद्धि के अनुसार उस मोमिन के मार्ग में पड़ी हैं जो अपने रूहानी अस्तित्व को पूर्णता तक पहुंचाना चाहती हैं तथा प्रत्येक

---

(1) अलमोमिनून - 10

व्यक्ति थोड़े से विचार से समझ सकता है कि मोमिन पर उसकी साधना के समय छ: अवस्थाएं अवश्य आती हैं। कारण यह कि जब तक मनुष्य ख़ुदा तआला से पूर्ण सम्बन्ध नहीं पकड़ता तब तक उसका अपूर्ण नफ़्स पांच ख़राब अवस्थाओं से प्रेम करता है तथा प्रत्येक अवस्था का प्रेम दूर करने के लिए एक ऐसे कारण की आवश्यकता होती है कि वह उस प्रेम पर विजयी हो जाए और नया प्रेम पहले प्रेम का सम्बन्ध विच्छेद कर दे।

अत: प्रथम अवस्था जिस से वह प्रेम करता है यह है कि वह एक असावधानी में पड़ा होता है और उसे ख़ुदा तआला से सर्वथा दूरी होती है और प्रवृत्ति एक कुफ्र के रंग में होती है तथा असावधानी के आवरण उसे अभिमान, लापरवाही तथा क्रूरता की ओर आकर्षित करते हैं और उसमें विनय एवं विनम्रता तथा सत्कार एवं विनीतता तथा ख़ाकसारी का नामोनिशान नहीं होता और वह अपनी इसी अवस्था से प्रेम करता है तथा उस को अपने लिए उचित समझता है। फिर जब ख़ुदा की कृपा उसके सुधार की ओर ध्यान देती है तो किसी घटना के उत्पन्न होने से या किसी विपत्ति के आने से ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता, रोब तथा प्रतिष्ठा का उसके हृदय पर प्रभाव पड़ता है और उस प्रभाव से उस में एक विनय की अवस्था जन्म लेती है जो उसके अभिमान, अवज्ञा तथा असावधानी की आदत को समाप्त कर देती है और उस से प्रेम संबंध तोड़ देती है। यह एक ऐसी बात है जो संसार में हर समय देखने में आती रहती है तथा देखा जाता है कि जब ख़ुदा के भय का कोड़ा किसी भयावह लिबास में उतरता है तो बड़े-बड़े उद्दण्डों की गर्दनें झुका देता है तथा गहरी नींद से जगा कर विनय एवं विनम्रता की अवस्था में ले आता है। यह ख़ुदा की ओर लौटने की प्रथम श्रेणी है जो ख़ुदा की श्रेष्ठता एवं भय को देखने के पश्चात् या किसी अन्य प्रकार से एक नेक स्वभाव रखने वाले व्यक्ति को प्राप्त हो जाती है और यद्यपि वह पहले अपने लापरवाह एवं निरंकुश जीवन से प्रेम ही रखता था परन्तु जब विपरीत प्रभाव उस पहले प्रभाव से अधिक शक्तिशाली पैदा होता है तो उस अवस्था को बहरहाल छोड़ना पड़ता है।

तत्पश्चात् दूसरी अवस्था यह है कि ऐसे मोमिन का ख़ुदा तआला की ओर कुछ लौटना तो हो जाता है परन्तु उस लौटने के साथ व्यर्थ बातों, व्यर्थ कार्यों तथा व्यर्थ व्यवसायों की मलिनता लगी रहती है जिससे वह प्रेम और मुहब्बत रखता है। हां कभी उससे नमाज़ में विनय की अवस्थाएं भी प्रकट होती हैं, परन्तु दूसरी ओर व्यर्थ गतिविधियां भी उसके साथ लगी रहती हैं तथा व्यर्थ सम्बन्ध, व्यर्थ सभाएं तथा व्यर्थ उपहास उसके गले का हार बना रहता है जैसे वह दो रंग रखता है, कभी कुछ, कभी कुछ।

واعظاں کیں جلوہ بر محراب و منبر میکنند
چوں بخلوت مے روند آن کارِ دیگر میکنند

तत्पश्चात् जब ख़ुदा की कृपा उसको नष्ट करना नहीं चाहती तो फिर ख़ुदा की श्रेष्ठता, भय एवं प्रतिष्ठा की एक और झलक उसके हृदय पर उतरती है तो पहली झलक से अधिक तीव्र होती है तथा उससे ईमान की शक्ति तीव्र हो जाती है तथा एक अग्नि के समान मोमिन के हृदय पर गिर कर उसके समस्त व्यर्थ विचारों को एक पल में भस्म कर देती है। ख़ुदा की श्रेष्ठता एवं प्रतिष्ठा की यह झलक उसके हृदय में ख़ुदा का ऐसा प्रेम पैदा करती है कि व्यर्थ कार्यों तथा व्यर्थ व्यवसायों के प्रेम पर विजयी हो जाती है और उन का निवारण करके उनका स्थान ग्रहण कर लेती है और सम्पूर्ण व्यर्थ व्यवसायों से हृदय को शिथिल कर देती है। तब व्यर्थ कार्यों से हृदय में एक घृणा पैदा हो जाती है।

फिर व्यर्थ तथा बेकार कार्यों के निवारण के पश्चात् मोमिन में एक तीसरी ख़राब अवस्था शेष रह जाती है जिसे वह द्वितीय अवस्था की अपेक्षा स्वाभाविक तौर पर उसके हृदय में धन का प्रेम होता है क्योंकि वह अपने जीवन एवं आराम का केन्द्र धन को ही समझता है और उसे प्राप्त करने का साधन केवल अपनी मेहनत और परिश्रम को ही समझता है। इसी करण से उस पर ख़ुदा के मार्ग में धन का त्याग बहुत भारी और कटु होता है।

फिर जब ख़ुदा की कृपा इस महा भंवर से उसे निकालना चाहती है तो उसे ख़ुदा के अन्नदाता होने का ज्ञान प्रदान किया जाता है तथा उसमें ख़ुदा पर भरोसा रखने का बीज बोया जाता है तथा इसके साथ ख़ुदा का भय भी काम करता है तथा जमाली और जलाली दोनों झलकियां उसके हृदय को अपने अधिकार में ले आती हैं तब धन का प्रेम भी हृदय से पलायन कर जाता है और धन देने वाले के प्रेम का बीज हृदय में बोया जाता है और ईमान सुदृढ़ किया जाता है और यह ईमान की शक्ति तृतीय श्रेणी की शक्ति से अधिक होती है क्योंकि यहां मोमिन केवल व्यर्थ बातों का ही परित्याग नहीं करता अपितु उस धन का परित्याग करता है जिस पर अपने समृद्धिशाली जीवन का सम्पूर्ण आधार समझता है। यदि उसके ईमान को ख़ुदा पर भरोसा करने की शक्ति प्रदान न की जाती और वास्तविक अन्नदाता की ओर आंख का द्वार न खोला जाता तो कदापि संभव न था कि कृपणता का रोग दूर हो सकता। अतः यह ईमान की शक्ति न केवल व्यर्थ कार्यों से छुड़ाती है अपितु ख़ुदा तआला के अन्नदाता होने पर एक दृढ़ ईमान पैदा कर देती है तथा हृदय में ख़ुदा पर भरोसा करने का प्रकाश डाल देती है। तब धन जो एक जिगर का टुकड़ा समझा जाता है बहुत आसानी तथा हृदय की प्रफुल्लता के साथ उसे ख़ुदा तआला के मार्ग में देता है और वह कमज़ोरी जो कृपणता की अवस्था में निराशा से जन्म लेती है अब ख़ुदा तआला पर बहुत सी आशाएं होकर वह सम्पूर्ण कमज़ोरी जाती रहती है और धन देने वाले का प्रेम धन के प्रेम से अधिक हो जाता है।

तत्पश्चात् चतुर्थ अवस्था है जिससे तामसिक वृत्ति बहुत अधिक प्रेम करती है जो तृतीय अवस्था से निकृष्टतम है, क्योंकि तृतीय अवस्था में तो केवल धन को अपने हाथ से त्यागना है परन्तु चतुर्थ अवस्था में तामसिक वृत्ति की अवैध इच्छाओं का त्याग करना है स्पष्ट है कि धन का त्याग तामसिक इच्छाओं के त्याग की अपेक्षा मनुष्य पर स्वाभाविक तौर पर सरल होता है। इसलिए यह अवस्था पिछली अवस्थाओं की अपेक्षा बहुत कठोर और ख़तरनाक है तथा स्वाभाविक तौर पर मनुष्य को कामवासना संबंधी

इच्छाओं का सम्बन्ध धन के संबंध की अपेक्षा अधिक प्रिय होता है। यही कारण है कि वह धन को जो उसके विचार में ऐश्वर्य का आधार है बड़ी प्रसन्नता से कामवासनाओं की इच्छाओं के मार्ग में न्योछावर कर देता है। इस अवस्था के भयंकर जोश की साक्ष्य में यह आयत पर्याप्त है -

وَلَقَدْ هَمَّتْ بِهٖ ۚ وَهَمَّ بِهَا لَوْلَآ اَنْ رَّاٰ بُرْهَانَ رَبِّهٖ①

अर्थात् यह ऐसा उद्दण्ड जोश है कि उसका दूर होना किसी शक्तिशाली तर्क का मुहताज है। अत: स्पष्ट है कि ईमान की शक्ति चतुर्थ श्रेणी पर तृतीय श्रेणी की अपेक्षा अधिक शक्तिशाली तथा ज़बरदस्त होती है तथा ख़ुदा तआला की श्रेष्ठता, भय और प्रतिष्ठा का अवलोकन भी पहले की अपेक्षा उसमें अधिक होता है। न केवल इतना अपितु उसमें यह भी नितान्त आवश्यक है कि जिस निषेध आनंद को दूर किया गया है उसके बदले में रूहानी तौर पर किसी आनन्द की भी प्राप्ति हो तथा जैसा कि कृपणता (कंजूसी) को दूर करने के लिए ख़ुदा तआला के अन्न दान करने की विशेषता पर दृढ़ ईमान की आवश्यकता है तथा खाली जेब होने की अवस्था में एक दृढ़ भरोसे की आवश्यकता है ताकि कृपणता (बुख़्ल) भी दूर हो और ग़ैब की विजयों पर आशा भी पैदा हो जाए। इसी प्रकार अपवित्र कामवासना संबंधी इच्छाओं को दूर करने के लिए तथा कामाग्नि से मुक्ति पाने के लिए उस अग्नि के अस्तित्व पर दृढ़ ईमान आवश्यक है जो शरीर तथा रूह दोनों को सख़्त अज़ाब में डालती है तथा उसके साथ उस रूहानी आनंद की आवश्यकता है जो उन मलिन आनंदों से नि:स्पृह और स्वच्छन्द कर देता है। जो व्यक्ति निषेध कामवासना के पंजे में क़ैद है वह एक अजगर के मुख में है जो अत्यन्त घातक विष रखता है। अत: इससे स्पष्ट है जैसा कि व्यर्थ कामों के रोग से कृपणता (कंजूसी) का रोग बड़ा है इसी प्रकार कृपणता के रोग की तुलना में अवैध कामवासना संबंधी इच्छाओं के पंजे में क़ैद होना समस्त विपत्तियों से बड़ी विपत्ति है जो ख़ुदा तआला

① यूसुफ़ - 25

की विशेष दया की मुहताज है और जब ख़ुदा तआला किसी को उस विपत्ति से मुक्ति देना चाहता है तो उस पर अपनी श्रेष्ठता, रोब तथा प्रतिष्ठा की ऐसी झलक डालता है जिससे अवैध कामवासना संबंधी इच्छाएं चूर-चूर हो जाती हैं और फिर सौन्दर्यपूर्ण रूप में अपनी उत्तम प्रेम की रुचि उसके हृदय में डालता है और जिस प्रकार दूध पीता बच्चा दूध छोड़ने के पश्चात् केवल एक रात बड़ी कठिनाई में गुज़ारता है, तत्पश्चात् उस दूध को ऐसा भूल जाता है कि छातियों के सामने भी उसके मुंह को रखा जाए तब भी दूध पीने से घृणा करता है, यही घृणा उस सच्चे को अवैध कामवासना संबंधी इच्छाओं से हो जाती है जिसे कामवासना का दूध छुड़ा कर उसके बदले में एक रूहानी (आध्यात्मिक) आहार दिया जाता है।

फिर चतुर्थ अवस्था के पश्चात् पंचम अवस्था है जिसके दोषों से तामसिक वृत्ति को अत्यधिक प्रेम है, क्योंकि इस श्रेणी पर केवल एक लड़ाई शेष रह जाती है तथा वह समय निकट आ जाता है कि महावैभवशाली ख़ुदा के फ़रिश्ते उस अस्तित्व की सम्पूर्ण आबादी पर विजय प्राप्त कर लें तथा उस पर अपना पूर्ण अधिकार और कब्ज़ा कर लें तथा समस्त कामवासना के क्रम को अस्त-व्यस्त कर दें और कामवासना संबंधी शक्तियों की बस्ती को उजाड़ दें तथा उसके नम्बरदारों को अपमानित एवं पराजित कर के दिखा दें और पहले शासन पर तबाही डाल दें तथा शासन की क्रान्ति पर ऐसा ही हुआ करता है -

اِنَّ الْمُلُوْكَ اِذَا دَخَلُوْا قَرْيَةً اَفْسَدُوْهَا وَ جَعَلُوْٓا اَعِزَّةَ اَهْلِهَآ اَذِلَّةً ۚ وَ كَذٰلِكَ يَفْعَلُوْنَ[1]

और यह मोमिन के लिए एक अन्तिम परीक्षा तथा अन्तिम युद्ध है जिस पर उसकी साधना की समस्त श्रेणियों का अन्त हो जाता है तथा उसकी उन्नति का सिलसिला जो अर्जित करने तथा प्रयास करने से है अन्त तक पहुंच जाता है और मानव प्रयास अपने

---

1 अन्नमल - 35

अन्तिम बिन्दु तक मंज़िल तय कर लेते हैं। तत्पश्चात् केवल अनुदान और कृपा का कार्य शेष रह जाता है जो خلق آخر के संबंध में है और यह पंचम अवस्था चतुर्थ अवस्था से कठिनतम है क्योंकि चतुर्थ अवस्था में तो मोमिन का केवल यह कार्य है कि निषेध कामवासना संबंधी इच्छाओं को त्याग दे परन्तु पंचम अवस्था में मोमिन का कार्य यह है कि प्रवृत्ति को भी त्याग दे और उसको ख़ुदा तआला की धरोहर समझ कर ख़ुदा तआला की ओर वापस करे तथा ख़ुदा के कार्यों में अपनी प्रवृत्ति को समर्पित करके उस से सेवा ले और ख़ुदा के मार्ग में प्रवृत्ति को व्यय करने का इरादा रखे तथा अपनी प्रवृत्ति के अस्तित्व के इन्कार के लिए प्रयास करे। क्योंकि जब तक प्रवृत्ति का अस्तित्व शेष है पाप करने की भावनाएं भी शेष हैं जो संयम के विपरीत हैं तथा जब तक प्रवृत्ति का अस्तित्व शेष है संभव नहीं कि मनुष्य संयम के बारीक मार्गों पर क़दम मार सके या पूर्णतया ख़ुदा की अमानतों, प्रतिज्ञाओं या प्रजा की अमानतों और प्रतिज्ञाओं को अदा कर सके, परन्तु जैसा कि कृपणता को ख़ुदा पर भरोसा करने तथा ख़ुदा के अन्न दान करने पर ईमान लाने के बिना छोड़ नहीं सकता और निषेध कामवासना संबंधी इच्छाएं भय के प्रभुत्व, ख़ुदा की श्रेष्ठता तथा रूहानी आनन्दों के बिना नहीं छूट सकतीं, इसी प्रकार यह महान श्रेणी कि प्रवृत्ति का त्याग करके ख़ुदा तआला की समस्त अमानतें उसको वापस दी जाएं कभी प्राप्त नहीं हो सकतीं, जब तक कि ख़ुदा के प्रेम की एक तीव्र आंधी चलकर किसी को उसके मार्ग में पागल बना दे। वास्तव में यह तो ख़ुदा के प्रेम में मस्त रहने वालों तथा दीवानों के कार्य हैं संसार के बुद्धिमानों के कार्य नहीं -

آسماں بار امانت نتو انست کشید
قرعۂ فال بنام من دیوانہ زدند

इसी की ओर अल्लाह तआला संकेत करता है -

اِنَّا عَرَضۡنَا الۡاَمَانَۃَ عَلَی السَّمٰوٰتِ وَ الۡاَرۡضِ وَ الۡجِبَالِ فَاَبَیۡنَ اَنۡ یَّحۡمِلۡنَہَا وَ

اَشۡفَقۡنَ مِنۡهَا وَ حَمَلَهَا الۡاِنۡسَانُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ ظَلُوۡمًا جَهُوۡلًا[1]

हमने अपनी अमानत को जो अमानत की भांति वापस देनी चाहिए पृथ्वी तथा आकाश की समस्त सृष्टि के समक्ष प्रस्तुत किया। अत: सब ने उस अमानत को उठाने से इन्कार कर दिया तथा उस से डरे कि अमानत के लेने से कोई ख़राबी पैदा न हो, किन्तु मनुष्य ने उस अमानत को अपने सर पर उठा लिया क्योंकि वह ज़लूम और जहूल था। ये दोनों शब्द मनुष्य की प्रशंसा के स्थान में हैं न कि निन्दा के स्थान में तथा इन के अर्थ ये हैं कि मनुष्य की प्रकृति में एक विशेषता थी कि वह ख़ुदा के लिए अपनी प्रवृत्ति पर अत्याचार और कठोरता कर सकता था तथा ख़ुदा की ओर ऐसा झुक सकता था कि अपनी प्रवृत्ति को भुला दे। इसलिए उसने स्वीकार कर लिया कि अपने सम्पूर्ण अस्तित्व को अमानत की भांति पाए और फिर ख़ुदा के मार्ग में व्यय कर दे।

इस पंचम श्रेणी के लिए अल्लाह तआला ने यह जो कहा है -

وَ الَّذِيۡنَ هُمۡ لِاَمٰنٰتِهِمۡ وَ عَهۡدِهِمۡ رٰعُوۡنَ[2]

अर्थात् मोमिन वे हैं तो अपनी अमानतों तथा प्रतिज्ञाओं को दृष्टिगत रखते हैं अर्थात् अमानत को अदा करने तथा प्रतिज्ञा को निभाने के बारे में संयम एवं सावधानी में कोई कमी शेष नहीं छोड़ते। यह इस बात की ओर संकेत है कि मनुष्य की प्रवृत्ति तथा उसकी समस्त शक्तियां और आंख की ज्योति, कानों का सुनना, जीभ का बोलना तथा हाथ पैरों की शक्ति, ये सब ख़ुदा तआला की अमानतें हैं जो उसने प्रदान की हैं तथा वह जिस समय चाहे अपनी अमानतों को वापस ले सकता है। अत: इन समस्त अमानतों का ध्यान रखना यह है कि बारीक से बारीक संयम (तक़्वः) की पाबन्दी से प्रवृत्ति तथा उसकी समस्त शक्तियों एवं शरीर और उसकी समस्त शक्तियों तथा अवयवों का ख़ुदा तआला की सेवा में लगाया जाए इस प्रकार से कि जैसे ये समस्त वस्तुएं उसकी नहीं अपितु ख़ुदा

---

1 अलअहज़ाब - 73

2 अलमोमिनून - 9

की हो जाएं तथा उसकी इच्छा से नहीं अपितु ख़ुदा की इच्छानुसार उन सम्पूर्ण शक्तियों एवं अवयवों की गति और स्थिरता हो और उसकी इच्छा कुछ भी न रहे अपितु उनमें ख़ुदा की इच्छा काम करे तथा उसकी प्रवृत्ति ख़ुदा के हाथ में ऐसी हो कि जैसे मुर्दा जीवित के हाथ में होता है और यह स्वच्छन्दता से कबज़ा हट गया हो तथा उसके अस्तित्व पर ख़ुदा तआला का पूर्ण अधिकार हो जाए यहां तक कि उसी से देखे, उसी से सुने, उसी से बोले तथा उसी से गति करे और उसी से स्थित हो और प्रवृत्ति की बारीक से बारीक मलिनताएं जो किसी सूक्ष्मदर्शी यंत्र से भी दिखाई नहीं दे सकतीं दूर होकर मात्र रूह रह जाए। अतः ख़ुदा का संरक्षण उसे अपनी परिधि में ले ले और अपने अस्तित्व से उसे खो दे तथा अपने अस्तित्व पर उस का कुछ शासन न रहे और सम्पूर्ण शासन ख़ुदा का हो जाए तथा कामवासनाओं के समस्त आवेग समाप्त हो जाएं और उसके अस्तित्व में ख़ुदाई के इरादे जोश मारने लगें। पहला शासन बिल्कुल समाप्त हो जाए और हृदय में दूसरा शासन स्थापित हो और स्वार्थपरायणता का घर वीरान हो तथा उस स्थान पर ख़ुदा तआला के तम्बू लगाए जाएं और ख़ुदा का भय एवं उस की प्रतिष्ठा उन समस्त पौधों को जिनकी सिंचाई प्रवृत्ति के गन्दे झरने से होती थी उस गन्दे स्थान से उखेड़ कर ख़ुदा की प्रसन्नता की पवित्र भूमि में लगा दिए जाएं तथा समस्त कामनाएं और समस्त इच्छाएं और समस्त अभिलाषाएं ख़ुदा में हो जाएं तथा तामसिक वृत्ति के समस्त भवन ध्वस्त करके मिट्टी में मिला दिए जाएं और हृदय में पुनीतता एवं पवित्रता का एक ऐसा पवित्र महल तैयार किया जाए जिसमें ख़ुदा तआला उतर सके तथा उसमें उसकी रूह आबाद हो सके। इस सीमा तक पूर्णता के उपरांत कहा जाएगा कि वे अमानतें जो सच्ची ने'मतें देने वाले (ख़ुदा) ने मनुष्य को दी थीं ने वापस की गईं। तब ऐसे व्यक्ति पर यह आयत चरितार्थ होगी وَ الَّذِيْنَ هُمْ لِاَمٰنٰتِهِمْ وَ عَهْدِهِمْ رٰعُوْنَ① इस श्रेणी पर केवल एक ढांचा तैयार होता है और ख़ुदा की तजल्ली (झलक) की रूह

① अलमोमिनून - 9

जिस से ख़ुदा तआला का व्यक्तिगत प्रेम है, तत्पश्चात् रूहुलक़ुदुस के साथ ऐसे मोमिन के अन्दर प्रविष्ट होती तथा उसे नया जीवन प्रदान करती है और उसे एक नई शक्ति प्रदान की जाती है, यद्यपि यह सब कुछ रूह के प्रभाव से ही होता है किन्तु अभी मोमिन से रूह केवल एक संबंध रखती है तथा अभी मोमिन के हृदय के अन्दर आबाद नहीं होती।

इसके पश्चात् रूहानी अस्तित्व की छठी श्रेणी है। यह वही श्रेणी है जिसमें मोमिन का व्यक्तिगत प्रेम अपनी पूर्णता को पहुंचकर महावैभवशाली ख़ुदा के व्यक्तिगत प्रेम को अपनी ओर आकर्षित करता है तब ख़ुदा तआला का वह व्यक्तिगत प्रेम मोमिन के अन्दर प्रविष्ट होता है तथा उसे अपनी परिधि में लेता है जिस से मोमिन को एक नई एवं विलक्षण शक्ति प्राप्त होती है और वह ईमान की शक्ति ईमान में एक ऐसा जीवन उत्पन्न करती है जैसे एक निर्जीव ढांचे में रूह प्रविष्ट हो जाती है अपितु वह मोमिन में प्रविष्ट होकर वास्तव में एक रूह का कार्य करती है, समस्त शक्तियों में उससे एक प्रकाश पैदा होता है तथा रूहुलक़ुदुस का समर्थन ऐसे मोमिन के साथ होता है कि वे बातें तथा वे ज्ञान जो मानव-शक्तियों से श्रेष्ठतम हैं वे इस श्रेणी के मोमिन पर खोले जाते हैं तथा इस श्रेणी का मोमिन ईमानी उन्नति की समस्त श्रेणियां तय करके उन प्रतिबिम्ब संबंधी विशेषताओं के कारण जो ख़ुदा तआला की विशेषताओं से उसको प्राप्त होती है आकाश पर अल्लाह के ख़लीफ़ा की उपाधि पाता है क्योंकि जिस प्रकार एक व्यक्ति जब दर्पण के सामने खड़ा होता है तो उसके मुख के समस्त निशान नितान्त शुद्धता के साथ दर्पण में प्रतिबिम्बित हो जाते हैं। इसी प्रकार इस श्रेणी का मोमिन जो न केवल प्रवृत्ति का त्याग करता है अपितु अस्तित्व के इन्कार और प्रवृत्ति के त्याग के कार्य को इस श्रेणी की चरम सीमा तक पहुंचाता है कि उसके अस्तित्व में से कुछ भी नहीं रहता और केवल दर्पण का रूप हो जाता है। तब ख़ुदा तआला के अस्तित्व के समस्त निशान तथा समस्त आचरण उसमें दर्ज हो जाते हैं कि वह दर्पण जो एक सामने खड़े होने वाले मुख के समस्त निशान अपने अन्दर ले कर उसके मुख का ख़लीफ़ा हो जाता है। इसी प्रकार एक मोमिन भी प्रतिबिम्ब के तौर पर ख़ुदा के

रूप का द्योतक हो जाता है और जैसा कि ख़ुदा अन्तर्यामी है तथा अपने अस्तित्व में दूर से दूर है ऐसा ही यह पूर्ण मोमिन अपने अस्तित्व में परोक्ष से परोक्ष तथा दूर से दूर होता है। संसार उसकी वास्तविकता तक नहीं पहुंच सकता क्योंकि वह संसार की परिधि से बहुत दूर चला जाता है। यह विचित्र बात है कि ख़ुदा अपरिवर्तनीय तथा जीवित तथा स्थापित रहने वाला है, वह पूर्ण मोमिन के उस पवित्र परिवर्तन के पश्चात् जबकि मोमिन ख़ुदा के लिए अपना अस्तित्व बिल्कुल खो देता है और पवित्र परिवर्तन का एक नया चोला पहन कर उसमें से अपना सर निकालता है, तब ख़ुदा कभी उसके लिए अपने अस्तित्व में एक परिवर्तन करता है परन्तु यह नहीं कि ख़ुदा की अजर-अमर विशेषताओं में कोई परिवर्तन होता है। नहीं अपितु वह अनादिकाल से अपरिवर्तनीय है परन्तु यह केवल पूर्ण मोमिन के लिए क़ुदरत की झलक होती है तथा एक परिवर्तन जिसकी तह तक हम नहीं पहुंच सकते मोमिन के परिवर्तन के साथ ख़ुदा में भी प्रकट हो जाती है किन्तु इस तौर पर कि उसके अपरिवर्तनीय अस्तित्व पर नूतनता की कोई धूल-मिट्टी नहीं बैठती। वह उसी प्रकार अपरिवर्तनीय होता है जिस प्रकार वह अनादिकाल से है, परन्तु यह परिवर्तन जो मोमिन के परिवर्तन के समय होता है यह इस प्रकार का है जैसा कि उल्लेख है कि जब मोमिन ख़ुदा तआला की ओर गति करता है तो ख़ुदा उसकी तुलना में तीव्र गति के साथ उसकी ओर आता है। स्पष्ट है जैसा कि अल्लाह तआला परिवर्तनों से पवित्र है वैसा ही वह गतियों से भी पवित्र है परन्तु ये समस्त शब्द रूपक के तौर पर बोले जाते हैं तथा बोलने की आवश्यकता इस लिए पड़ती है कि अनुभव साक्ष्य देता है कि जैसे एक मोमिन ख़ुदा तआला के मार्ग में नास्ति, मृत्यु तथा स्वयं को समाप्त करके एक नया अस्तित्व बनाता है। उसके इन परिवर्तनों के सामने ख़ुदा भी उसके लिए एक नया ख़ुदा हो जाता है तथा उसके साथ वह मामले करता है जो अन्य के साथ कभी नहीं करता। वह उसे अपनी सत्ता तथा रहस्यों की सैर कराता है जो दूसरे को कदापि नहीं दिखाता और उसके लिए वह कार्य प्रकट करता है कि दूसरों के लिए ऐसे कार्य कभी प्रकट नहीं करता तथा उसकी इतनी सहायता

करता है कि लोगों को आश्चर्य में डाल देता है, उसके लिए विलक्षण कार्य तथा चमत्कार प्रकट करता है तथा हर पहलू से उसे विजयी कर देता है और उसके अस्तित्व में एक आकर्षण शक्ति रख देता है जिस से एक संसार उसकी ओर खिंचा चला जाता है और वही शेष रह जाते हैं जिन पर अनादि दुर्भाग्य का प्रभुत्व है।

अत: इन समस्त बातों से स्पष्ट है कि पूर्ण मोमिन के पवित्र परिवर्तन के साथ ख़ुदा तआला भी उस पर एक नए रूप की झलक से प्रकट होता है। यह इस बात का प्रमाण है कि उसने मनुष्य को अपने लिए पैदा किया है, क्योंकि जब मनुष्य ख़ुदा तआला की ओर लौटना आरंभ करे तो उसी दिन से अपितु उसी क्षण से अपितु उसी दम से ख़ुदा तआला उसकी ओर प्रवृत्त होना आरंभ हो जाता है और वह उसका अभिभावक, समर्थक तथा सहायक बन जाता है और यदि एक ओर समस्त संसार हो तथा एक ओर पूर्ण मोमिन तो अन्तत: विजय उसी की होती है क्योंकि ख़ुदा अपने प्रेम में सच्चा है और अपने वादों में पूरा। वह उसे जो वास्तव में उस का हो जाता है कदापि नष्ट नहीं करता। ऐसा मोमिन अग्नि में डाला जाता है तथा पुण्य-वाटिका में से निकलता है। वह एक भंवर में ढकेल दिया जाता है तथा एक मनोरम उद्यान में से प्रकट होता है। शत्रु उस के विरुद्ध बहुत योजनाएं बनाते तथा उसे मारना चाहते हैं परन्तु ख़ुदा उनके समस्त छल-प्रपंचों एवं योजनाओं को टुकड़े-टुकड़े कर देता है, क्योंकि वह उसके प्रत्येक क़दम के साथ होता है। इसलिए उसका अपमान चाहने वाले अन्तत: अपमानित होकर मरते हैं और असफलता उनका अंजाम होता है। परन्तु वह जो अपने पूर्ण हृदय, पूर्ण प्राण तथा पूर्ण साहस के साथ ख़ुदा का हो गया है वह असफल होकर कभी नहीं मरता तथा उसकी आयु में बरकत दी जाती है। अवश्य है कि वह जीवित रहे तब तक कि अपने कार्यों को पूरा कर ले। समस्त बरकतें निष्कपटता में हैं और समस्त निष्कपटता ख़ुदा को प्रसन्न करने में तथा ख़ुदा की समस्त प्रसन्नता अपनी प्रसन्नता का त्याग करने में। यही मृत्यु है जिसके पश्चात् जीवन है। मुबारक वह जो इस जीवन से भाग ले।

अत: स्पष्ट हो कि हमने जहां तक सूरह अलमोमिनून के उपरोक्त पवित्र आयतों के चमत्कार होने की बारे में लिखना था वह सब हम उल्लेख कर चुके तथा भलीभांति सिद्ध कर चुके कि कथित सूरह के प्रारंभ में मोमिन के रूहानी अस्तित्व की छ: श्रेणियां ठहराई हैं तथा छठी श्रेणी ख़ल्क़ आख़र की रखी है। यही छ: श्रेणियां उपरोक्त सूरह में शारीरिक पैदायश के संबंध में रूहानी पैदायश के पश्चात् वर्णन की गई हैं। यह एक ज्ञान का चमत्कार है तथा ज्ञान संबंधी रहस्य का पवित्र क़ुर्आन से पूर्व किसी पुस्तक में वर्णन नहीं है। अत: इन आयतों का अन्तिम भाग अर्थात् فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ[1] निस्सन्देह एक ज्ञान के चमत्कार की जड़ है क्योंकि वह एक चमत्कारिक अवसर पर चरितार्थ किया गया है तथा मनुष्य के लिए यह बात संभव नहीं कि अपने वर्णन में ऐसा चमत्कारिक रूप पैदा करे और इस पर आयत فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ चरितार्थ करे और यदि कोई कहे कि इस पर क्या तर्क है कि उपरोक्त आयतों में जो तुलना मनुष्य की रूहानी पैदायश की श्रेणियों तथा शारीरिक पैदायश में दिखाई गई है वह ज्ञान का चमत्कार है। तो इसका उत्तर यह है कि चमत्कार उस को कहते हैं कि कोई मनुष्य उसका सदृश बनाने में समर्थ न हो सके या बीते युग में समर्थ न हो सका हो और न बाद में समर्थन होने का प्रमाण हो। अत: हम दावे के साथ कहते हैं कि यह वर्णन मानव उत्पत्ति की बारीक फ़िलास्फ़ी (दार्शनिकता) का जो पवित्र क़ुर्आन में दर्ज है यह एक ऐसा अद्वितीय तथा अनुपम वर्णन है कि उसका उदाहरण इससे पूर्व किसी पुस्तक में नहीं पाया जाता। न इस युग में हमने सुना कि किसी ऐसे व्यक्ति को जो पवित्र क़ुर्आन का ज्ञान नहीं रखता इस दार्शनिकता के वर्णन करने में पवित्र क़ुर्आन से भावसाम्य हुआ हो, जबकि पवित्र क़ुर्आन अपने सम्पूर्ण आध्यात्म ज्ञानों, निशानों तथा सरसता एवं सुबोधता की दृष्टि से चमत्कार होने का दावा करता है तथा ये आयतें पवित्र क़ुर्आन का एक भाग हैं जो चमत्कार के दावे में सम्मिलित हैं। अत: इसका अद्वितीय और अनुपम

---

1 अलमोमिनून - 15

सिद्ध होना चमत्कार के दावे तथा मुकाबले पर बुलाने के बावजूद निस्सन्देह चमत्कार है। आरोपक के शेष आरोपों का उत्तर नीचे लिखा जाता है -

उसका कथन - عَفَتِ الدِّيَارُ مَحَلُّهَا وَ مَقَامُهَا एक प्राचीन काल के शायर के शे'र का एक चरण (मिस्रा') है। क्या किसी नबी को कभी ऐसी वह्यी (ईशवाणी) हुई। जिसके शब्द अक्षरश: वही हों जो उस नबी से पूर्व किसी व्यक्ति के मुख से निकल चुके हों।

मेरा कथन - जैसा कि मैं पहले भी वर्णन कर चुका हूं ऐसी वह्यी स्वयं आंहज़-रत[स.अ.व.] को हुई थी। अर्थात् فَتَبٰرَكَ اللّٰهُ اَحۡسَنُ الۡخٰلِقِيۡنَ यह वह वाक्य है जो अब्दु-ल्लाह बिन अबी सरह के मुख से निकला था और ठीक यही ख़ुदा की वह्यी हुई थी और इसी आज़मायश से दुर्भाग्यशाली अब्दुल्लाह मुर्तद हो गया था। इसलिए ऐसा अब्दुल्लाह मुर्तद के विचारों का अनुसरण है जिससे बचना चाहिए था, तथा यह वाक्य عفت الديار محلها و مقامها यह लबीद[रज़ि.] जो सहाबी थे उनके शे'र का पहला चरण (मिस्रा') है। पूरा शे'र यह है :-

عفت الديار محلّها و مقامها بِمنًى تأبّد غولها فرجامها

इसके अर्थ हैं कि मेरे प्रियजनों के घर ध्वस्त हो गए। उन भवनों का नामोनिशान न रहा जो अस्थायी निवास स्थान थे और न वे भवन रहे जो स्थायी तौर पर रहने के लिए थे। दोनों प्रकार के भवन मिट गए और वे भवन मिना में थे जो नजद की पृथ्वी में है। मिना दो हैं। एक मिना मक्का तथा एक मिना नजद में। यहां मिना से अभिप्राय नजद है फिर शायर कहता है कि उस देश के दो शहर जिनमें से एक का नाम ग़ौल था और दूसरे का नाम रिजाम था ये ध्वस्त होकर ऐसे नष्ट हो गए तथा पृथ्वी के समतल हो गए कि अब इन शहरों के स्थान पर एक जंगल पड़ा है जहां जंगली जानवर हिरण इत्यादि रहते हैं। यह अर्थ उस अरबी शब्द के हैं अर्थात् تَاَبَّدَ के जो शे'र में मौजूद है। تَاَبَّدَ का शब्द اَوَابِد से लिया गया है और اَوَابِد जंगली जानवरों हिरण इत्यादि को कहते हैं

तथा اَوَابِد का शब्द اَبَد से लिया गया है। इसके अर्थ हैं हमेशा जीवित रहने वाले। चूंकि हिरण इत्यादि प्रायः अपनी मृत्यु से नहीं मरते अपितु शिकार किए जाते हैं तथा दूसरे के माध्यम से उनकी मौत आती है। इसलिए उनका नाम اَوَابِد रखा गया।

उसका कथन - यदि मनुष्य के कथन से ख़ुदा के कथन का भी भावसाम्य हो सकता है तो ख़ुदा के कथन और मनुष्य के कथन में अन्तर क्या हुआ ?

मेरा कथन - अभी हम वर्णन कर चुके हैं कि पवित्र क़ुर्आन इन अर्थों से चमत्कार है कि किसी मनुष्य की इबारत को पवित्र क़ुर्आन की एक लम्बी इबारत के साथ जो दस आयत से कम न हो भावसाम्य नहीं हो सकता और पवित्र क़ुर्आन की इतनी इबारत अपने अन्दर उस स्तर की सरसता एवं सुबोधता तथा अन्य आध्यात्म ज्ञान एवं वास्तविकताएं रखती है कि मानवीय शक्तियां उसका सदृश प्रस्तुत नहीं कर सकतीं। इसलिए क़ुर्आन की इबारत इस शर्त के साथ कि दस आयतों की मात्रा से कम न हो चमत्कार है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में इसकी व्याख्या मौजूद है परन्तु एक वाक्य जो अधिक से अधिक एक आयत या दो आयत के बराबर हो। इतने छोटे वाक्य में मनुष्य के कलाम का ख़ुदा के कलाम से प्रत्यक्षतः भावसाम्य हो सकता है परन्तु फिर भी आन्तरिक तौर पर ख़ुदा के कलाम में कुछ गुप्त आध्यात्म ज्ञान तथा एक प्रकार का प्रकाश (नूर) होता है। जैसा कि मनुष्य और हिरण में सामूहिक स्थिति पर दृष्टि डालकर परस्पर अन्तर स्पष्ट है, किन्तु तथापि हिरण की आंख मनुष्य की आंख से समानता रखती है परन्तु फिर भी मनुष्य की आंख में कुछ वे शक्तियां हैं जो हिरण की आंख में कदापि नहीं।

उसका कथन - जब عفت الديار محلّها و مقامها का इल्हाम हुआ तब उसके अन्तर्गत लिखा गया था कि ताऊन के बारे में। परन्तु अब बताया जाता है कि भूकम्प के बारे में है ?

मेरा कथन - عفت الديار के अज़ाब का ताऊन से संबंध रखना उसको बिल्कुल ताऊन नहीं बना सकता। इसके अतिरिक्त यह कथन कि عفت الديار के

वाक्य का ताऊन से संबंध है। यत तो मनुष्य की इबारत है। आपत्ति तब हो सकती है जब ख़ुदा तआला की वह्यी में यह शब्द होता। ख़ुदा तआला की वह्यी तो स्पष्ट कहती है कि यह भूकम्प के बारे में है। देखो वह इल्हाम जो उसी अख़बार 'अलहकम' में दिसम्बर 1903 ई. के अन्त में प्रकाशित हुआ जिसकी इबारत यह है कि "ज़लज़ला का धक्का" फिर पांच माह पश्चात् उसी अख़बार के 31 मई 1904 ई. के पर्चे में दूसरे इल्हाम ने यह व्याख्या की कि عفت الديار محلها و مقامها खेद कि कैसा युग आ गया कि एक ही अख़बार में दो स्थान पर ख़ुदा का कलाम मौजूद है और एक कलाम दूसरे की व्याख्या कर सकता है। उसकी ओर कोई दृष्टि उठा कर नहीं देखता तथा मनुष्य के शब्दों को प्रस्तुत करते हैं जिसकी ग़लती का उत्तरदायी ख़ुदा का कलाम नहीं। मुसलमानों की सन्तान कहलाकर इतना अधिक पक्षपात। ख़ुदा जाने इसका भविष्य में क्या संकट होगा।

इसके अतिरिक्त हमें इस बात से इन्कार नहीं कि समय से पूर्व किसी भविष्यवाणी की पूर्ण वास्तविकता नहीं खुलती तथा संभव है कि मनुष्य की व्याख्या में ग़लती भी हो जाए। इसीलिए संसार में कोई नबी ऐसा नहीं गुज़रा जिसने अपनी किसी भविष्यवाणी के अर्थ बताने में कभी ग़लती न की हो। परन्तु यदि समय से पूर्व विवेचना के तौर पर किसी नबी से अपनी भविष्यवाणी के अर्थ करने में किसी प्रकार की ग़लती हो जाए तो उस भविष्यवाणी की प्रतिष्ठा एवं सम्मान में अन्तर नहीं आएगा। क्योंकि ख़ुदा की भविष्यवाणी एक विलक्षण तथा मानव दृष्टि से बुलन्द तथा मानव विचारों से श्रेष्ठतम है। क्या आप दावा कर सकते हैं कि अन्तर आ जाता है। यदि यही बात है तो मैं आपको ऐसी भविष्यवाणियों की एक लम्बी सूची दे सकता हूं जिनके समझने में दृढ़संकल्प नबियों को ग़लती लगी थी। परन्तु मैं विश्वास रखता हूं कि आप इसके पश्चात् ऐसी आपत्ति कदापि नहीं करेंगे तथा सतर्क हो जाएंगे कि यह आपत्ति कहां तक पहुंचती है। बिल्कुल स्पष्ट है कि जब भविष्यवाणी प्रकट हो जाए और अपने प्रकटन से अपने अर्थ स्वयं

स्पष्ट कर दे तथा उन अर्थों को भविष्यवाणी के शब्दों के सामने रखकर व्यापक तौर पर ज्ञात हो कि वही सच्चे हैं तो फिर उनमें आलोचना करना ईमानदारी नहीं है। क्या यह सच नहीं है कि उपरोक्त इल्हाम के यही अर्थ हैं कि देश के एक भाग के भवन ध्वस्त हो जाएंगे। अत: इस स्थिति में यह इल्हाम अपने प्रत्यक्ष अर्थों की दृष्टि से ताऊन पर क्योंकर चरितार्थ हो सकता है। जिस स्थिति में एक घटना से भवन गिर गए तो वही घटना उस भविष्यवाणी की चरितार्थ होगी। क्या ताऊन में भी भवन गिरा करते हैं। फिर इसके अतिरिक्त इस भविष्यवाणी से पूर्व इल्हाम में जो मात्र पांच माह पूर्व इसी अख़बार में प्रकाशित हो चुका था, स्पष्ट तौर पर ज़लज़ल: (भूकम्प) का शब्द मौजूद है और इल्हामी शब्द ये हैं कि **"ज़लज़ल: का धक्का"** अत: इस में क्या सन्देह है कि उसी अख़बार में एक आने वाले ज़लज़ल: (भूकम्प) की सूचना दी गई है। अब आप स्वयं न्यायकर्ता होकर विचार कर लें कि इल्हाम **عفت الدیار محلّھا و مقامھا** अपने शाब्दिक अर्थों की दृष्टि से इस भूकम्प की भविष्यवाणी पर चरितार्थ होता है जो इस से पूर्व भी वर्णन किया गया था या ताऊन पर। इसके अतिरिक्त भूकम्प की भविष्यवाणी का इस वाक्य से अर्थात् **عفت الدیار** की भविष्यवाणी से जैसा कि अर्थों की दृष्टि से सम्बन्ध है ऐसा ही समय की निकटता की दृष्टि से भी संबंध है और वह यह कि **عفت الدیار** के इल्हाम से पांच माह पूर्व स्पष्ट शब्दों में भूकम्प का इल्हाम हो चुका है तथा दोनों भविष्यवाणियां एक दूसरे के पश्चात् प्रकाशित हो चुकी हैं अर्थात् पहले "भूकम्प का धक्का" और फिर **عفت الدیار محلّھا و مقامھا** इन दोनों के अन्दर ताऊन की कोई चर्चा नहीं।

उसका कथन - यदि इल्हाम **عفت الدیار.....** के बारे में निश्चित तौर पर ज्ञान नहीं दिया गया था कि वह भूकम्प के बारे में है तो फिर ऐसे इल्हाम से लाभ क्या हुआ ?

मेरा कथन - खेद कि आप को ख़ुदा की सुन्नत की कुछ भी ख़बर नहीं। नबी के लिए किसी भविष्यवाणी के किसी विशेष पहलू का निश्चित ज्ञान होना कि अवश्य इसी

पहलू पर प्रकट होगी आवश्यक नहीं। भविष्यवाणी में इस बात का होना आवश्यक है कि उस का भाव विलक्षण हो तथा मानवीय शक्ति तथा छल-प्रपंच उसका मुकाबला न कर सके, परन्तु यह आवश्यक नहीं कि प्रत्येक पहलू से उस भविष्यवाणी की वास्तविकता प्रकट की जाए। तौरात में हमारे नबी[स.अ.व.] के सम्बन्ध में एक आवश्यक भविष्यवाणी केवल गोलमोल है कि **एक नबी मूसा के समान बनी इस्राईल में से उनके भाइयों में से आएगा।**[1]

और कहीं खोलकर नहीं बताया कि बनी इस्माईल में से आएगा तथा उसका यह नाम और उसके पिता का यह नाम होगा। मक्का में पैदा होगा और इतने समयोपरान्त आएगा। इसलिए यहूदियों को इस भविष्यवाणी से कुछ भी लाभ न हुआ। इसी ग़लती से लाखों यहूदी नर्क में जा पड़े। हालांकि पवित्र क़ुर्आन ने इसी भविष्यवाणी की ओर इस आयत में संकेत किया है -

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاہِدًا عَلَیۡکُمۡ کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا[2]

और यहूदी कहते हैं कि मसीले मूसा यसूआ नबी था जो मूसा की मृत्यु के पश्चात् उसका उत्तराधिकारी हुआ तथा ईसाई कहते हैं कि मसीले मूसा ईसा है क्योंकि वह भी मूसा के समान मुक्ति दिलाने वाला होकर आया है। अब बताओ कि तौरात की ऐसी भविष्यवाणी का जिसने कोई स्पष्ट निर्णय नहीं किया, क्या लाभ हुआ ? जिस नबी अलैहिस्सलाम के बारे में भविष्यवाणी थी न यहूदी उसको पहचान सके न ईसाई। दोनों गिरोह सौभाग्य स्वीकार करने से वंचित रहे परन्तु वह ख़ुदा की वह्यी जो मुझ पर उतरी अर्थात् عفت الدیار محلّها و مقامها यह जैसा कि तुम्हारा विचार है संदिग्ध नहीं है। क्योंकि इससे पूर्व उसी अख़बार में यह इल्हाम मौजूद है कि "ज़लज़ल: का धक्का"

1 तौरात में कुछ स्थानों पर बनी इस्राईल को सम्बोधित करके कहा गया है कि वह तुम में से ही आएगा। (इसी से)

2 अलमुज़म्मिल - 16

तत्पश्चात् दूसरी वह्यी عفت الديار محلّها و مقامها उसी भूकम्प की विशेषताएं वर्णन करती है जिसका पहले इसी अख़बार में वर्णन हो चुका है। यह भविष्यवाणी ताऊन पर किसी प्रकार चरितार्थ नहीं हो सकती। ये दोनों वह्यी एक ही अख़बार में केवल पांच माह के समय के फासले के साथ मौजूद हैं अर्थात् 'अलहकम' में। अब बताओ कि क्या यह हठधर्मी है या नहीं कि ऐसी महान भविष्यवाणी को जो दो बार एक ही अख़बार में स्पष्ट तौर पर भूकम्प का नाम तथा उसकी विशेषताएं वर्णन करके उस महान घटना की सूचना देती है निरर्थक और व्यर्थ ठहराई जाए। यदि यही बात है तो फिर आप का इस्लाम पर स्थापित रहना ही कठिन है। विश्वसनीय तफ़्सीरों में लिखा है कि जब यह आयत उतरी -

سَيُهْزَمُ الْجَمْعُ وَ يُوَلُّوْنَ الدُّبُرَ[1]

तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने कहा कि मुझे मालूम नहीं कि यह भविष्यवाणी किस अवसर के संबंध में है और फिर जब बद्र के युद्ध में महान विजय प्राप्त हुई तो आप ने कहा कि अब मालूम हुआ कि यह भविष्यवाणी इसी महान विजय की सूचना देती थी। एक बार आप[स.] ने कहा कि मुझे अंगूर का एक गुच्छा दिया गया है कि यह अबू जहल के लिए है। मैं हैरान था कि अबू जहल का ऐसा अंतः कुटिल (ख़बीस) तत्त्व है कि वह स्वर्ग में प्रवेश करने योग्य नहीं तथा इसके कुछ भी अर्थ समझ में नहीं आए। अन्ततः वह भविष्यवाणी इस प्रकार पूरी हुई कि अबू जहल का बेटा इकरमा मुसलमान हो गया। एक बार आपने ख़ुदा की एक वह्यी के अनुसार मदीना से मक्का की ओर एक लम्बी यात्रा की तथा ख़ुदा की वह्यी में यह सूचना दी गई थी कि मक्का के अन्दर प्रवेश करेंगे। ख़ाना काबः का तवाफ़ (परिक्रमा) करेंगे परन्तु समय नहीं बताया गया था किन्तु आंहज़रत[स.अ.व.] ने केवल विवेचना के आधार पर उस यात्रा का कष्ट उठाया और यह विवेचना सही नहीं निकली तथा मक्का में प्रवेश न कर सके। अतः इस स्थान पर भविष्यवाणी के समझने

1 अलक़मर - 46

में ग़लती हुई जिस से कुछ सहाबा परीक्षा में पड़ गए।

इसी प्रकार हज़रत ईसा[अ.] को ख़ुदा ने सूचना दी थी कि तू बादशाह होगा उन्होंने ख़ुदा की इस वह्यी से संसार की बादशाहत समझ ली और इसी आधार पर हज़रत ईसा[अ.] ने अपने हवारियों को आदेश दिया कि अपने कपड़े बेच कर हथियार खरीद लो। परन्तु अन्त में ज्ञात हुआ कि यह हज़रत ईसा का बोधभ्रम था और बादशाहत से अभिप्राय आकाशीय बादशाहत थी न कि पृथ्वी की बादशाहत। मूल बात यह है कि पैग़म्बर भी मनुष्य ही होता है और उसके लिए यह दोष की बात नहीं कि अपनी किसी विवेचना में ग़लती करे। हां वह ग़लती पर स्थापित नहीं रखा जा सकता तथा किसी समय अपनी ग़लती पर अवश्य सतर्क किया जाता है। नबी की भविष्यवाणी को हमेशा उसके विलक्षण भाव की दृष्टि से देखना चाहिए। यदि भविष्यवाणी का प्रकटन किसी विशेष रूप पर न हो तथा किसी दूसरे पहलू पर प्रकट हो जाए और मूल बात जो उस भविष्यवाणी का विलक्षण होना है वह दूसरे रूप में भी पाया जाए तथा घटना प्रकट होने के पश्चात् प्रत्येक बुद्धिमान की समझ में आ जाए कि भविष्यवाणी के यही सही अर्थ हैं जो घटना ने अपने प्रकटन से स्वयं स्पष्ट कर दिए हैं तो उस भविष्यवाणी की श्रेष्ठता तथा प्रतिष्ठा में कुछ भी अन्तर नहीं आता उस पर अकारण आलोचना करना कुटिलता और बेईमानी तथा हठधर्मी होती है।

उसका कथन - एक गोल बात कह देना कि कोई आपदा आने वाली है परन्तु उस का विवरण न बताना कि क्या आपदा है तथा कब आने वाली है भविष्यवाणी नहीं अपितु अभिहास (तमस्ख़ुर) है तथा प्रत्येक व्यक्ति ऐसा कह सकता है।

मेरा कथन - इसके अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। ऐसे विरोधी को चाहिए कि इतना ही कह दे कि ऐसी आपदा नहीं आएगी फिर आप स्वयं सोच लें कि यह भविष्यवाणी गोल मोल कैसे हुई जबकि इसमें स्पष्ट तौर पर भूकम्प का नाम भी मौजूद है कि उसमें देश का एक भाग मिट जाएगा और यह भी मौजूद है कि वह मेरे

जीवन में आएगा तथा उसके साथ यह भी भविष्यवाणी है कि वह उनके लिए प्रलय का नमूना होगा, जिन पर यह भूकम्प आएगा। यदि यह गोल मोल है तो फिर खुली-खुली भविष्यवाणी किस को कहते हैं ? यह कहना कि उसमें समय नहीं बताया गया, यह आप केवल इस्लाम पर नहीं अपितु समस्त आकाशीय किताबों पर प्रहार करते हैं। पवित्र क़ुर्आन में अधिकतर ऐसी ही भविष्यवाणियां हैं जिनमें कोई समय नहीं बताया गया। तौरात में बुख़्तनसर और तीतूस रूमी के संबंध में जो भविष्यवाणी थी उसमें कौन सा समय बताया गया था। ऐसा ही तौरात में जो मूसा के मसील (समरूप) के आने के संबंध में जो भविष्यवाणी थी उसमें किस समय की क़ैद लगाई गई थी तथा इंजील की भविष्यवाणियां जो भूकम्पों तथा युद्धों के बारे में हैं, क्या आप बता सकते हैं कि उनमें किसी समय को बताया गया है ? फिर यह भविष्यवाणी जो मसीह मौऊद के आने के बारे में है जिसमें आप लोग हज़रत ईसा बिन मरयम को पुनः पृथ्वी पर लाना चाहते हैं उसमें ख़ुदा तआला ने आप को किस समय की सूचना दे रखी है ताकि दूर से आने वाले के लिए कुछ क़दम अभिनन्दन की नीयत से आप आगे रखें और यदि अधिक नहीं तो वायुमंडल के अत्यन्त शीतल भाग तक ही स्वागत करें और लिहाफ़ इत्यादि साथ ले लें। काश आप लोगों ने विचार किया होता कि ऐसे ऐतिराज़ केवल मुझ पर नहीं ये तो आपके समस्त ऐतिराज़ इस्लाम पर और नऊज़ुबिल्लाह पवित्र क़ुर्आन पर पड़ते हैं अपितु यह तो समस्त पूर्व नबियों पर प्रहार है। मूल बात यह है कि जब एक भविष्यवाणी स्वयं में विलक्षण हो या किसी ऐसे परोक्ष (ग़ैब) पर आधारित हो जिसका ज्ञान मानव-शक्ति से श्रेष्ठतर है तथा भविष्यवाणी में स्पष्ट तौर पर यह दावा हो कि इस देश में ऐसी घटना सैकड़ों वर्ष तक कभी प्रकट नहीं हुई तथा वास्तव में प्रकटन में न आई हो। फिर वह घटना अपने दावे के अनुसार प्रकट हो जाए तो फिर ऐसी विलक्षण भविष्यवाणी पर ऐतिराज़ करना बेईमानों का कार्य है जिनको ख़ुदा और सच्चाई की परवाह नहीं और ऐसे दुर्भाग्यशाली सदैव हृदय की निर्दयता के कारण प्रत्येक नबी पर ऐतिराज़ करते रहे हैं।

भला आप ही बताएं कि इस भूकम्प के बारे में जिस धूमधाम से भविष्यवाणी में सूचना दी गई है क्या आप दो हज़ार वर्ष तक इस देश में उसका कोई उदाहरण प्रस्तुत कर सकते हैं ? स्मरण रहे कि यह केवल एक भविष्यवाणी नहीं अपितु ख़ुदा ने मेरे माध्यम से बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में बार-बार इसकी सूचना दी है। "मवाहिबुर्रहमान" में इसकी सूचना मौजूद है। '**आमीन**' पत्रिका में इसकी सूचना मौजूद है और अख़बार '**अलहकम**' के कई पर्चों में विभिन्न इल्हामों में इसकी सूचना मौजूद है फिर भी आप के विचार में यह भविष्यवाणी गोलमोल है। अब इसका क्या इलाज इन्ना लिल्लाहे व इन्ना इलैहि राजिऊन। इस्लाम पर जिन अनुचित प्रहारों का करना अन्य धर्मावलम्बियों का कार्य था अब वे प्रहार स्वयं मुसलमान करते हैं। यदि धर्म को समर्थन का सौभाग्य प्राप्त नहीं था तो कम से कम विचार करके प्रहार करते। मुफ़्त का पाप तथा अन्त में झूठे निकलना क्या यह संयम है ?

یکے برسر شاخ وبُن مے بُرید

यदि इस्लामी प्रकाश हृदय में होता तो स्वयं समझ जाते अपितु दूसरों को उत्तर देते।

उसका कथन - जनाब मुक़द्दस मिर्ज़ा साहिब ने दोबारा भूकम्प आने की सूचना दी है परन्तु साथ ही यह भी कहा है कि मुझे जानकारी नहीं दी गई कि वह कोई भूकम्प है या कोई अन्य भयंकर आपदा है तथा मुझे बताया नहीं गया कि ऐसी घटना कब होगी ?

मेरा कथन - मेरे इस वर्णन पर कोई ऐतिराज़ नहीं हो सकता क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में अरबों के लिए जो एक अज़ाब का वादा दिया गया था, अल्लाह तआला ने उस अज़ाब का कोई स्पष्टीकरण नहीं किया कि किस प्रकार का अज़ाब होगा। केवल यह कहा कि ख़ुदा सामर्थ्यवान है कि वह आकाश से अज़ाब उतारे या पृथ्वी से भेजे या काफ़िरों को मुसलमानों की तलवार का स्वाद चखाए। अब इन आयतों में आंहज़रत[स.अ.व.] स्वयं इक़रार करते हैं कि मुझे जानकारी नहीं दी गई कि वह किस प्रकार का अज़ाब होगा और जब पूछा गया कि वह अज़ाब कब आएगा तो आपने कोई तिथि नहीं बताई।

जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में कहा है -

وَ يَقُوْلُوْنَ مَتٰى هٰذَا الْوَعْدُ اِنْ كُنْتُمْ صٰدِقِيْنَ ﴿٢٦﴾ قُلْ اِنَّمَا الْعِلْمُ عِنْدَ اللّٰهِ ۖ وَ اِنَّمَاۤ اَنَا نَذِيْرٌ مُّبِيْنٌ ﴿٢٧﴾ ①

अर्थात् काफ़िर पूछते हैं कि यह दावा पूरा कब होगा ? यदि तुम सच्चे हो तो अज़ाब की तिथि बताओ। उनको कह दे कि मुझे कोई तिथि मालूम नहीं यह ज्ञान ख़ुदा को है मैं तो केवल डराने वाला हूं।

फिर काफ़िरों ने पुनः अज़ाब की तिथि पूछी तो उनको यह उत्तर मिला -

وَ اِنْ اَدْرِيْۤ اَقَرِيْبٌ اَمْ بَعِيْدٌ ②

अर्थात् उनको कह दे कि मैं नहीं जानता कि अजाब निकट है या दूर है।

अब हे सुनने वालो ! स्मरण रखो कि यह बात सच है तथा बिल्कुल सच है और उसको मानने के बिना चारा नहीं कि ख़ुदा तआला की भविष्यवाणियां कभी प्रत्यक्ष तौर पर पूरी होती हैं और कभी रूपक के तौर पर। अतः किसी नबी या रसूल को यह साहस नहीं कि प्रत्येक स्थान तथा प्रत्येक भविष्यवाणी में यह दावा कर दे कि इस तौर से यह भविष्यवाणी पूरी होगी। हां यद्यपि जैसा कि हम उल्लेख कर चुके हैं। इस बात का दावा करना नबी का अधिकार है कि वह भविष्यवाणी जिसको वह वर्णन करता है विलक्षण है या मानव ज्ञान से बहुत दूर है। यदि पंजाब में हर सदी में भी ऐसा भूकम्प आ जाया करता जैसा कि 4 अप्रैल 1905 ई. को आया तो इस स्थिति में भी यह भविष्यवाणी कुछ वस्तु न होती। क्योंकि समस्त लोग इस बात को कहने का अधिकार रखते थे कि पंजाब में सदैव ऐसे भूकम्प आते हैं। यह कोई अनहोनी बात नहीं है। किन्तु जबकि पिछला भूकम्प इस विलक्षण तौर पर प्रकट हुआ जैसा कि भविष्यवाणी ने विलक्षण तौर पर वर्णन किया था। अतः फिर ये समस्त ऐतिराज़ व्यर्थ हो गए। इसी प्रकार भविष्य के

---

① अलमुल्क - 26,27

② अलअंबिया - 110

भूकम्प के बारे में जो भविष्यवाणी की गई है वह कोई साधारण भविष्यवाणी नहीं। यदि वह अन्त में साधारण बात निकली या मेरे जीवन में उसका प्रकटन न हुआ तो मैं ख़ुदा तआला की ओर से नहीं। मुझे ख़ुदा तआला सूचना देता है कि वह आपदा जिसका नाम उसने ज़लज़ल: (भूकम्प) रखा है प्रलय का नमूना होगा तथा उसका प्रकटन पहले से बढ़कर होगा। इसमें कुछ सन्देह नहीं कि इस भविष्यवाणी में भी पहली भविष्यवाणी के समान बार-बार भूकम्प का शब्द ही आया है अन्य कोई शब्द नहीं आया तथा प्रत्यक्ष अर्थों का प्रत्यक्ष से हटकर तावील किए हुए अर्थों की अपेक्षा अधिक अधिकार है परन्तु जैसा कि समस्त अंबिया (नबी) ख़ुदा के प्रतिपालन तथा उसके ज्ञान की विशालता के सम्मान को दृष्टिगत रखते रहे हैं उस सम्मान की दृष्टि से तथा अल्लाह के नियम को दृष्टिगत रखकर यह कहना पड़ता है कि यद्यपि प्रत्यक्षत: ज़लज़ल: का शब्द आया है किन्तु संभव है कि वह कोई अन्य आपदा हो जो अपने अन्दर ज़लज़ल: (भूकम्प) का रंग रखती हो। यदि नितान्त भयंकर आपदा हो जो पहले से भी अधिक विनाशकारी हो जिसका भयानक प्रभाव मकानों पर भी पड़े ❋। यह भविष्यवाणी तिथि और समय न लिखने से झूठी नहीं हो सकती, क्योंकि इसके साथ अन्य इतने स्पष्टीकरण हैं जो तिथि और समय लिखने से नि:स्पृह करते हैं। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है कि वह

❋ मसीह मौऊद के बारे में जो यहूदियों को भविष्यवाणी के तौर पर ख़बर दी गई थी कि वह नहीं आएगा जब तक कि इल्यास नबी दोबारा आकाश से न उतरे परन्तु आकाश से तो कोई नहीं उतरा और हज़रत ईसा[अ.] ने दावा कर दिया कि वह मौऊद मसीह मैं हूं और इल्यास नबी से अभिप्राय यह्या नबी है जो मुझ से पूर्व आ चुका। अत: इल्यास नबी के दोबारा आने की भविष्यवाणी यहूदी जिस की प्रतीक्षा में थे तथा अब तक हैं। हज़रत यह्या के प्रकटन से बतौर रूपक पूरी हो गई। इससे स्पष्ट है कि भविष्यवाणियों में कभी ऐसा भी हो जाता है कि ख़ुदा तआला प्रत्यक्ष से दृष्टि हटा कर रूपक के रंग में अपने वादे को पूरा कर देता है। (इसी से)

ज़लज़ल: (भूकम्प) तेरे ही जीवन में आएगा तथा उस के आने से तेरी स्पष्ट विजय होगी और लोगों की एक बड़ी संख्या तेरी जमाअत में सम्मिलित हो जाएगी तथा तेरे लिए वह आकाशीय निशान होगा। तेरे समर्थन के लिए ख़ुदा स्वयं उतरेगा और अपने अद्‌भुत कार्य दिखाएगा जो संसार ने कभी नहीं देखे तथा लोग दूर-दूर से आएंगे और तेरी जमाअत में सम्मिलित होंगे। वह ज़लज़ल: (भूकम्प) पहले ज़लज़ल: से बढ़कर होगा और उसमें प्रलय के लक्षण प्रकट होंगे तथा संसार में एक क्रान्ति पैदा करेगा। ख़ुदा कहता है कि मैं उस समय आऊंगा जब हृदय कठोर हो जाएंगे और भूकम्प आने के विचार से लोग सन्तोष प्राप्त कर लेंगे। ख़ुदा का कथन है कि मैं गुप्त तौर पर आऊंगा तथा मैं ऐसे समय में आऊंगा कि किसी को भी ख़बर नहीं होगी अर्थात् लोग अपने सांसारिक कारोबार में बड़े परिश्रम और सन्तोषपूर्वक व्यस्त होंगे कि सहसा वह आपदा उतरेगी तथा इससे पूर्व लोग सांत्वना से बैठे होंगे कि भूकम्प नहीं आएगा और स्वयं को निर्भय एवं अमन में समझ लिया होगा तब अचानक यह आपदा उन के सरों पर टूट पड़ेगी किन्तु ख़ुदा का कहना है कि वह बसन्त के दिन होंगे। सूर्य बसन्त के प्रातःकाल में उदय होगा और पतझड़ की शाम में अस्त कर देगा। तब कई घरों में मातम (मृत्यु-शोक) पड़ेगा क्योंकि उन्होंने समय को नहीं पहचाना। भविष्य-ज्ञान तक किसी ज्योतिषी तथा किसी भूगर्भ शास्त्री के दावेदार की पहुंच नहीं तथा किसी को मालूम नहीं कि कल क्या होगा। परन्तु जिस ख़ुदा ने यह सब कुछ पैदा किया है वह अपनी प्रजा की तह से परिचित है।

उसका कथन - जिस स्थिति में पवित्र क़ुर्आन में दोनों ज़लज़लों (भूकम्पों) की ख़बर है फिर यह क्यों कहा जाता है कि कदाचित् वह भूकम्प हैं या कोई अन्य आपदा है ?

मेरा कथन - मैंने तो बार-बार कह दिया कि पवित्र क़ुर्आन कि प्रत्यक्ष शब्दों के तथा उस ख़ुदा की वह्यी के जो मुझ पर हुई भूकम्प की ही ख़बर देते हैं परन्तु ख़ुदा का नियम हमें विवश करता है कि तावील करने की संभावना भी दृष्टिगत रहे। अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में एक जाति के लिए एक स्थान में कहता है وَ زُلۡزِلُوۡا زِلۡزَالًا

شَدِيْدًا[1] अर्थात् उन पर भयंकर भूकम्प आया। हालांकि उन पर कोई भूकम्प नहीं आया था। अत: दूसरी आपदा का नाम यहां ज़लज़ल: रखा गया। अल्लाह तआला का कथन है وَ مَنْ كَانَ فِيْ هٰذِهٖٓ اَعْمٰى فَهُوَ فِي الْاٰخِرَةِ اَعْمٰى[2] अर्थात् जो व्यक्ति इस संसार में अंधा होगा वह दूसरे संसार (परलोक) में भी अन्धा ही होगा। यह भी एक भविष्यवाणी है परन्तु इसके वे अर्थ नहीं हैं जो प्रत्यक्ष शब्दों में समझे जाते हैं। ख़ुदा के विशाल ज्ञान पर ईमान रखना तथा अपने ज्ञान को उसके बराबर न ठहराना नबियों तथा रसूलों की विशेषता है। पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत[स.अ.व.] को काफ़िरों पर विजय पाने का वादा दिया गया था, परन्तु जब बद्र का युद्ध आरंभ हुआ जो इस्लाम का प्रथम युद्ध था तो आंहज़रत[स.अ.व.] ने रोना और दुआ करना प्रारंभ किया तथा दुआ करते-करते आंहज़रत[स.अ.व.] के मुख से ये शब्द निकले -

اَللّٰهم اِن اهلكتَ هٰذه العِصابة فَلن تُعبد فِي الاَرضِ أَبَدًا

अर्थात् हे मेरे ख़ुदा ! यदि आज तू ने इस जमाअत को (जो केवल तीन सौ तेरह लोग थे) तबाह कर दिया तो फिर प्रलय तक कोई तेरी उपासना नहीं करेगा। इन शब्दों को जब हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने आंहज़रत[स.अ.व.] के मुख से सुना तो कहा कि हे अल्लाह के रसूल ! आप इतना बेचैन क्यों होते हैं ख़ुदा तआला ने तो आपको ठोस वादा दे रखा है कि मैं विजय प्रदान करूंगा। आप[स.] ने कहा कि यह सच है किन्तु उसकी नि:स्पृहता पर मेरी दृष्टि है। अर्थात् किसी वादे का पूरा करना ख़ुदा तआला पर अनिवार्य अधिकार नहीं है। अत: समझना चाहिए कि जबकि रसूलुल्लाह[स.अ.व.] ने ख़ुदा के प्रतिपालन के सम्मान की पद्धति का इस सीमा तक ध्यान रखा तो फिर समस्त नबियों की इस मान्य आस्था से क्योंकर मुख फेर लिया जाए कि कभी ख़ुदा तआला की भविष्यवाणी प्रत्यक्ष शब्दों पर पूरी होती है और कभी रूपक के रंग में और लाक्षणिक अर्थ में पूरी हो जाती है। इस आस्था का मुकाबला

1 अलअहज़ाब - 12

2 बनी इस्राईल - 73

मूर्खता है। यह कहना कि जिस भविष्यवाणी के न प्रत्यक्ष शब्दों पर भरोसा है और न उसका समय बताया गया। वह भविष्यवाणी कैसे हुई ? यह अधम जीवन का विचार है तथा इससे यह समझा जाता है कि ऐसे व्यक्ति को अल्लाह के नियम की कुछ भी ख़बर नहीं। सच तो यह है कि जब एक भविष्यवाणी अपने अन्दर कोई श्रेष्ठता, शक्ति तथा विलक्षण सूचना रखती हो तथा ख़ुदा का हाथ स्पष्ट तौर पर उसमें प्रकट होने के समय दिखाई दे जाए तो हृदय उसे स्वयं स्वीकार कर लेते हैं और कोई व्यक्ति तिथि इत्यादि की चर्चा नहीं करता। वास्तव में यह विवाद तथा आपत्ति समय से पूर्व है। वह समय तो आने दो बाद में आपत्ति करना। समय से पूर्व शेर मचाना अच्छा नहीं। प्रकट होने के समय भविष्यवाणी स्वयं बता देगी कि वह साधारण बात है या असाधारण।

उसका कथन - जबकि आपके कथनानुसार पवित्र क़ुर्आन में भी दो ज़लज़लों (भूकम्पों) की खबर है। अत: अब तो आने वाली आपदा के भूकम्प होने में सन्देह का स्थान न रहा।

मेरा कथन - पवित्र क़ुर्आन में यह आयत है - يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ[1] अर्थात् उस दिन पृथ्वी एक सख्त व्याकुलतापूर्ण गति करेगी तथा पृथ्वी में एक सख्त एवं तीव्र व्याकुलता पैदा होगी। तत्पश्चात् पृथ्वी में एक और व्याकुलता पैदा होगी जो पहले के पश्चात् प्रकट होगी। इन आयतों के प्रत्यक्ष शब्दों में भूकम्प की कोई चर्चा नहीं, क्योंकि शब्दकोश में رجفان सख्त व्याकुलता को कहते हैं अत: बोला जाता है رَجَفَ الشَّيْءُ अर्थात् اِضْطَرَبَ اِضْطِرَابًا شَدِيْدًا परन्तु पृथ्वी की व्याकुलता प्राय: भूकम्प ही होता है। इसलिए हमने यहां दृढ़ कल्पना के तौर पर भूकम्प के अर्थ किए हैं अन्यथा संभव है कि यह व्याकुलता किसी अन्य घटना के कारण हो भूकम्प के कारण न हो या इस व्याकुलता से कोई अन्य आपदा अभिप्राय हो। अत: यहां भी वही बात स्थापित रही जो पहले हम वर्णन कर चुके हैं अर्थात् यह आयत भी भूकम्प पर ठोस

---

1 अन्नाज़िआ'त - 7,8

प्रमाण नहीं। यद्यपि दृढ़कल्पना यही है कि इस स्थान पर تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ से भूकम्प ही अभिप्राय है। अल्लाह ही बहुत जानता है। हमने अपनी भविष्यवाणी के शब्दों के कब और किस समय ये अर्थ किए हैं कि उन से अभिप्राय भूकम्प नहीं है। किन्तु संभव है कि ख़ुदा के अनादि नियम के अनुसार इन शब्दों से कोई और ऐसी भयंकर, विलक्षण तथा अत्यन्त विनाशकारी आपदा अभिप्राय हो जो अपने अन्दर भूकम्प का रूप एवं विशेषता रखती हो, क्योंकि ख़ुदा तआला के कलाम में अधिकतर रूपक भी पाए जाते हैं जिन से विद्वानों को इन्कार नहीं परन्तु प्रत्यक्ष शब्दों का सर्वप्रथम अधिकार है तथा उन भविष्यवाणियों के प्रत्यक्ष शब्द भूकम्प को ही सिद्ध करते हैं।

आक्षेप करने वाले साहिब ने बार-बार यह प्रश्न किया है कि भविष्यवाणी करने वाले ने न भूकम्प के शब्द को निश्चित तौर पर भूकम्प ही ठहराया है और न समय बताया है। फिर इस स्थिति में यह भविष्यवाणी क्या हुई ? यों तो प्रलय तक कोई न कोई घटना हो जाएगी तथा सरल होगा कि उसी को अपनी भविष्यवाणी ठहरा दें।

आश्चर्य की बात है कि हम बार-बार कहे जाते हैं कि दृढ़ कल्पना के तौर पर हमारी भविष्यवाणियों में ज़लज़ल: से अभिप्राय भूकम्प ही है और यदि वह न हो तो ऐसी विलक्षण आपदा अभिप्राय है जो ज़लज़ले से अत्यन्त अनुकूलता रखती हो तथा उसके अन्दर पूर्णरूपेण ज़लज़ले का रूप मौजूद हो। फिर भी आक्षेपक साहिब की इतने शब्दों से सन्तुष्टि नहीं होती। मुझे मालूम नहीं कि ऐसे भ्रमों के साथ उनकी इस्लाम पर क्योंकर सन्तुष्टि हो गई है। प्रत्येक को मालूम है कि नबियों की भविष्यवाणियों के बारे में इतना ही पर्याप्त समझा गया है कि वे विलक्षण एवं मानव शक्तियों से श्रेष्ठतर हों या यह कि किसी ऐसे ग़ैब (परोक्ष) पर आधारित हों जो मानवीय भविष्यवाणी से उच्चतर हो। जब एक भविष्यवाणी विलक्षण होने के तौर पर वर्णन की जाए जिसे वर्णन करते समय किसी बुद्धि और बोध को यह विचार न हो कि ऐसी बात होने वाली है तथा स्पष्ट तौर पर वह एक असाधारण बात हो जिसकी गुज़र चुके सैकड़ों वर्षों में कोई उदाहरण न पाया जाए और न

भविष्य में उसके प्रकटन होने के लक्षण प्रकट हों और वह भविष्यवाणी सच्ची निकले तो सद्‌बुद्धि आदेश देती है कि ऐसी भविष्यवाणी अवश्य ख़ुदा की ओर से समझी जाएगी, अन्यथा समस्त नबियों की भविष्यवाणियों का इन्कार करना पड़ेगा। अब तनिक कान खोलकर सुन लो कि भविष्य में आने वाले भूकम्प के बारे में मेरी जो भविष्यवाणी है उसे ऐसा समझना कि उसके प्रकट होने की कोई भी सीमा निर्धारित नहीं की गई। यह विचार सर्वथा ग़लत है जो मात्र विचार की कमी, पक्षपात की अधिकता तथा जल्दबाज़ी से पैदा हुआ है, क्योंकि ख़ुदा की वह्यी ने मुझे बारम्बार सूचना दी है कि वह भविष्यवाणी मेरे जीवन में तथा मेरे ही देश में और मेरे ही लाभ के लिए प्रकट होगी और यदि वह केवल साधारण बात हो जिसके सैकड़ों उदाहरण आगे-पीछे मौजूद हों तथा यदि कोई ऐसी विलक्षण बात न हो जो क़यामत के लक्षण प्रकट करे तो फिर मैं स्वयं इक़रार करता हूं कि उस को भविष्यवाणी न समझो, उसको अपने कथनानुसार अभिहास ही समझो। अब मेरी आयु सत्तर वर्ष के लगभग है और तीस वर्ष की अवधि गुज़र गई कि ख़ुदा तआला ने मुझे स्पष्ट शब्दों में सूचना दी थी कि तेरी आयु अस्सी वर्ष की होगी और यह कि पांच-छ: वर्ष अधिक या पांच-छ: वर्ष कम। अत: इस स्थिति में यदि ख़ुदा तआला ने इस भयंकर आपदा को प्रकट करने में बहुत ही विलम्ब डाल दिया तो अधिकाधिक सोलह वर्ष है क्योंकि अवश्य है कि यह घटना मेरे जीवन में प्रकट हो जाए[1]। किन्तु भविष्यवाणी का तात्पर्य यह नहीं कि पूरे सोलह वर्ष तक इस भविष्यवाणी का प्रकटन विलम्ब में पड़ा रहेगा अपितु संभव है कि आज से एक दो वर्ष तक या इस से भी पूर्व यह भविष्यवाणी प्रकट हो जाए

---

① ख़ुदा तआला का एक यह भी इल्हाम है - "फिर बहार आई ख़ुदा की बात फिर पूरी हुई।" इस से विदित होता है कि कथित भूकम्प के समय बसन्त के दिन होंगे और जैसा कि कुछ इल्हामों से समझा जाता है संभवत: वह प्रात:काल होगा या उसके निकट, संभवत: वह समय निकट है जबकि वह भविष्यवाणी प्रकट हो जाए और संभव है कि ख़ुदा उसमें कुछ विलम्ब कर दे। (इसी से)

और न ख़ुदा तआला का यह वादा है कि मेरी आयु अस्सी वर्ष से अधिक अवश्य हो जाएगी अपितु इस बारे में जो वाक्य ख़ुदा की वह्यी में है उसमें गुप्त तौर पर एक आशा दिलाई गई है कि यदि ख़ुदा चाहे तो अस्सी वर्ष से भी अधिक आयु हो सकती है तथा वादे के संबंध में वह्यी के जो प्रत्यक्ष शब्द हैं वे तो चुहत्तर और छियासी के अन्दर-अन्दर आयु को निर्धारित करते हैं। बहरहाल यह मुझ पर आरोप है कि मैंने इस भविष्यवाणी के समय की कोई भी सीमा निर्धारित नहीं की तथा ख़ुदा तआला बारम्बार अपनी वह्यी में कह रहा है कि हम तेरे लिए यह निशान दिखाएंगे। उन को कह दे कि यह निशान मेरी सच्चाई का साक्षी होगा। मैं तेरे लिए उतरूंगा और तेरे लिए अपने निशान दिखाऊंगा मैं उस समय तेरे पास अपनी सेनाएं लेकर आऊंगा जबकि किसी को ख़बर नहीं होगी तथा उस समय को कोई नहीं जानता परन्तु ख़ुदा और जैसा कि मूसा के समय में हुआ कि फ़िरऔन और हामान उस समय तक धोखे में रहे जब तक कि नील दरिया के तूफान ने उन को पकड़ा, ऐसा ही अब भी होगा और फिर कहा- तू मेरी आंखों के सामने कश्ती (नौका) तैयार कर तथा अत्याचारियों की सिफारिश न कर तथा उन का अनुशंसक न बन कि मैं उन सब को डुबोऊंगा। इसी प्रकार ख़ुदा के अन्य स्पष्ट इल्हाम हैं तथा सब का सारांश यह है कि यह भविष्यवाणी मेरे जीवन में और मेरे ही समय में प्रकट होगी और उसकी यह निश्चित एवं निर्धारित सीमा है जिस से वह बाहर नहीं जा सकती, परन्तु मालूम नहीं कि महीनों के बाद प्रकट होगी या सप्ताहों के बाद अथवा वर्षों के पश्चात्। बहरहाल वह सोलह वर्ष से अधिक नहीं होगी। यह ऐसी ही बात है जैसा कि क़ुर्आन की आयतों के परिणाम निकालने से ज्ञात होता है कि संसार की आयु हज़रत आदम से लेकर सात हज़ार वर्ष है और इसमें से हमारे समय तक छ: हज़ार वर्ष गुज़र चुके हैं जैसा कि सूरह 'वलअस्र' के अददों से ज्ञात होता है तथा चन्द्रमा के हिसाब के अनुसार अब हम सातवें हज़ार में हैं और जो मसीह मौऊद छठे हज़ार के अन्त पर स्थापित होना था वह स्थापित हो चुका * है और यह जो कहा

* ख़ुदा ने आदम को छठे दिन शुक्रवार (जुमा) अस्र के समय पैदा किया तौरात,

जाता है कि प्रलय का समय ज्ञात नहीं। इसके ये अर्थ नहीं कि ख़ुदा ने प्रलय के संबंध में मनुष्य को संक्षिप्त ज्ञान भी नहीं दिया अन्यथा प्रलय के लक्षण भी वर्णन करना एक व्यर्थ कार्य हो जाता है क्योंकि जिस वस्तु को ख़ुदा तआला इस तौर पर गुप्त रखना चाहता है

क़ुर्आन तथा हदीसों से यही सिद्ध है और ख़ुदा तआला ने मनुष्यों के लिए सात दिन निर्धारित किए हैं तथा उन दिनों के मुकाबले पर ख़ुदा का प्रत्येक दिन हज़ार वर्ष का है उसके अनुसार परिणाम निकाला गया है कि आदम से संसार की आयु सात हज़ार वर्ष है और छठा हज़ार जो छठे दिन के सामने है वह द्वितीय आदम के प्रादुर्भाव का दिन है अर्थात् प्रारब्ध यों है कि छठे हज़ार के अन्दर संसार से धार्मिक रूह समाप्त हो **शेष हाशिया :-** जाएगी और लोग अत्यन्त लापरवाह तथा धर्महीन हो जाएंगे। तब मनुष्य के रूहानी सिलसिले को स्थापित करने के लिए मसीह मौऊद आएगा और वह पहले आदम की भांति छठे हज़ार के अन्त में जो ख़ुदा का छठा दिन है प्रकट होगा। अतः वह प्रकट हो चुका और वह यही है जो उस लेख के अनुसार सच्चाई का प्रचार कर रहा है। मेरा नाम आदम रखने से यहां यह अभीष्ट है कि मानव जाति का पूर्ण सदस्य आदम से ही प्रारंभ हुआ है और आदम पर ही समाप्त हुआ। क्योंकि इस संसार की बनावट बारी-बारी से आने वाली है और घेरे का कमाल इसी में है कि जिस बिन्दु से आरंभ हुआ है उसी बिन्दु पर समाप्त हो जाए अतः ख़ातमुल ख़ुलफ़ा का आदम नाम रखना आवश्यक था और इसी कारण जैसा कि आदम जुड़वां पैदा हुआ था, मेरी पैदायश भी जुड़वां है और जिस प्रकार आदम जुमा (शुक्रवार) के दिन पैदा हुआ था, मैं भी जुमा के दिन ही पैदा हुआ था, जिस प्रकार आदम के बारे में फ़रिश्तों ने ऐतिराज़ किया था मेरे बारे में भी ख़ुदा की वह्यी उतरी जो यह है **قالُوا أَتَجْعَلُ فِيْهَا مَنْ يُّفْسِدُ فِيْهَا۔ قَالَ اِنِّیْ اَعْلَمُ مَا لَا تَعْلَمُوْنَ** तथा जिस प्रकार आदम के लिए सज्दह का आदेश हुआ मेरे बारे में भी ख़ुदा की वह्यी में यह भविष्यवाणी है - **يَخِرُّوْنَ عَلَى الْاَذْقَانِ سُجَّدًا رَبَّنَا اغْفِرْ لَنَا اِنَّا كُنَّا خَاطِئِيْنَ** (इसी से)

उसके लक्षण वर्णन करने की भी क्या आवश्यकता है, अपितु ऐसी आयतों का तात्पर्य यह है कि प्रलय का विशेष समय तो किसी को मालूम नहीं परन्तु ख़ुदा ने गर्भ के दिनों की भांति लोगों को इतना ज्ञान दे दिया है कि सातवें हज़ार के गुज़रने तक इस पृथ्वी के रहने वालों पर प्रलय आ जाएगी। इसका उदाहरण ऐसा ही है कि प्रत्येक मनुष्य का बच्चा जो पेट में हो नौ माह और दस दिन तक अवश्य पैदा हो जाता है तथापि उसके पैदा होने का विशेष समय ज्ञात नहीं इसी प्रकार क़यामत भी सात हज़ार वर्ष तक आ जाएगी। परन्तु उसके आने की घड़ी विशेष मालूम नहीं। तथा यह भी संभव है कि सात हज़ार वर्ष पूरे होने के पश्चात् दो तीन सदियां बतौर टूट-फूट के अधिक हो जाएं जो गणना में नहीं आ सकतीं।

ऐतिराज़ करने वाले का यह दूसरा ऐतिराज़ कि यह दावा नहीं किया गया कि वास्तव में ज़लज़लः (भूकम्प) है। यह ऐतिराज़ भी समझ की कमी से पैदा हुआ है, क्योंकि हम बार-बार लिख चुके हैं कि वह्यी के प्रत्यक्ष शब्दों से ज़लज़लः (भूकम्प) ही विदित होता है और दृढ़ कल्पना यही है कि वह ज़लज़लः (भूकम्प) है और पहला भूकम्प इस पर साक्ष्य भी देता है और पवित्र क़ुर्आन की यह आयत भी इसकी समर्थक है कि يَوْمَ تَرْجُفُ الرَّاجِفَةُ تَتْبَعُهَا الرَّادِفَةُ[1]* तथापि ख़ुदा तआला की किताबें भी हमारा ध्यान इस ओर आकृष्ट करती हैं कभी ऐसी भविष्यवाणियां रूपक के तौर पर भी पूरी होती हैं परन्तु उनमें विलक्षण होने तथा असाधारण घटना का रंग शेष रहता है तथा हमारा मत तो यही है कि सौ में से नव्वे कारण तो यही बताते हैं कि वास्तव में वह भूकम्प है न कि कुछ और। क्योंकि इसमें पृथ्वी का हिलना तथा भवनों के ध्वस्त होने का भी वर्णन है। यह तो हमारी विवेचना है और तत्पश्चात् ख़ुदा तआला के गुप्त भेदों

---

* उस दिन पृथ्वी अत्यन्त व्याकुल होकर हरकत करेगी, तत्पश्चात् एक और व्याकुलतापूर्ण हरकत (गति) करेगी अर्थात् प्रलय के निकट दो भयंकर भूकम्प आएंगे। पहले के पश्चात् दूसरा भूकम्प आएगा। (इसी से)

① अन्नाज़िआत - 6,7

को ख़ुदा तआला भलीभांति जानता है तथा संभव है कि आगे चलकर वह हम पर इस से अधिक स्पष्ट कर दे कि वह हर बात पर समर्थ है।

आप का यह कहना कि हज़रत ईसा ने अपनी भविष्यवाणियों में जिन भूकम्पों का वर्णन किया था उन्होंने उनकी कोई प्रत्यक्ष से हटकर व्याख्या नहीं की। इसलिए वे भविष्यवाणियां अपने अन्दर एक निर्धारण रखती हैं। आप का यह कथन विचित्र है तथा विचित्र मत स्पष्ट है कि उन भविष्यवाणियों में हज़रत ईसा ने किसी भयावह, घातक तथा विलक्षण भूकम्प की चर्चा नहीं की। जिस देश में हज़रत ईसा रहते थे उस देश में तो बहुत कम ही ऐसा वर्ष गुज़रता होगा कि भूकम्प न आता हो। इतिहास से सिद्ध है कि उस देश में हमेशा भूकम्प आते रहे हैं तथा भीषण भूकम्प भी आते रहे हैं। हज़रत ईसा ने अपने जीवन में जब वह उस देश में थे अभी कश्मीर की ओर यात्रा नहीं की थी[1] कई

---

①हम सिद्ध कर चुके हैं कि हज़रत ईसा का जीवित आकाश पर जाना मात्र गप है अपितु वह सलीब से बचकर गुप्त तौर पर ईरान तथा अफ़ग़ानिस्तान का भ्रमण करते हुए कश्मीर में पहुंचे और एक लम्बी आयु वहां व्यतीत की। अन्त में मृत्यु प्राप्त करके श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में दफ़्न हुए और अब तक आप की क़ब्र वहीं पर है। يُزَارُ وَ يُتَبَرَّكُ بِهٖ तथा आप की सलीब पर मृत्यु नहीं हुई। शरीर पर कुछ घाव आए थे जिनका उपचार मरहम-ए-ईसा से किया गया था तथा उस मरहम का नाम इसी कारण मरहम-ए-ईसा रखा गया*। (इसी से)

* जिस प्रकार हमारे सरदार आंहज़रत[स.अ.व.] उहद के युद्ध में घायल हुए थे तथा आप[स.] के शुभ मस्तक पर तलवारों के कई घाव आए थे और सर से पांव तक रक्त रंजित हो गए थे, इसी प्रकार अपितु इससे भी बहुत कम घाव हज़रत ईसा को सलीब पर आए थे। फिर नहीं मालूम कि मूर्ख लोगों को हज़रत ईसा से कैसा मुश्रिकों जैसा प्रेम है कि आंहज़रत[स.अ.व.] के घाव तो स्वीकार कर लेते हैं किन्तु हज़रत ईसा का घायल और ज़ख़्मी होना उनकी शान से उच्चतर समझते हैं तथा शोर मचाते हैं कि उनके संबंध में ऐसा क्यों

भूकम्प स्वयं देखे होंगे। अत: मैं नहीं समझ सकता कि इन साधारण घटनाओं का नाम भविष्यवाणी क्यों रखा जाए। इसलिए जिस अभिहास को आप ने मेरी भविष्यवाणियों में खोजना चाहा तथा विफल रहे। यदि आप हज़रत ईसा की उन भविष्यवाणियों में खोजते तो बिना किसी परिश्रम के आपको तुरन्त मिल जाता। यह भी सही नहीं है कि हज़रत ईसा ने ज़लज़ल: का नाम ज़लज़ल: ही रखा, कोई अलग से व्याख्या नहीं की। क्या आप मुझे हज़रत ईसा का कोई ऐसा वाक्य दिखा सकते हैं जिसमें लिखा हो कि इन भविष्यवाणियों में ज़लज़ल: (भूकम्प) ही है कोई रूपक नहीं तथा हज़रत ईसा द्वारा प्रमाणित करने के बिना केवल आप का कथन क्योंकर स्वीकार किया जाए, क्योंकि हज़रत ईसा की भविष्यवाणियों पर दृष्टि डालकर सिद्ध हो चुका है कि वे समस्त रूपक के तौर पर हैं जैसा कि हज़रत ईसा ने दावा किया था कि मैं यहूदियों का बादशाह हूं। इस दावे पर रोम की सरकार में जासूसी हुई कि यहूदी तो रोम के शासन के अधीन हैं परन्तु यह व्यक्ति दावा करता है कि यहूदी मेरी प्रजा हैं और मैं उनका बादशाह हूं। इस पर जब रोम की सरकार ने उत्तर मांगा तो आप ने कहा कि मेरी बादशाही इस संसार की नहीं अपितु बादशाही से अभिप्राय आकाश की बादशाहत है। अब देखिए कि प्रारंभ में स्वयं हज़रत ईसा का विचार था कि मुझे पृथ्वी की बादशाहत मिलेगी और उसी विचार पर शस्त्र भी खरीदे गए थे परन्तु अन्तत: वह आकाश की बादशाहत निकली। अत: क्या यह असंभव है कि ज़लज़ल: से अभिप्राय भी उनकी कोई आकाशीय बात हो अन्यथा शाम (सीरिया) देश में तो हमेशा ज़लज़ले (भूकम्प) आते ही हैं। ऐसी पृथ्वी के संबंध

कहते हो। उनको समस्त संसार से पृथक एक विशेषता देना चाहते हैं। वही आकाश पर चढ़कर पुन: पृथ्वी पर उतरने वाले, वही इतनी लम्बी आयु पाने वाले। परन्तु ख़ुदा ने उनको पैदायश में भी अकेला नहीं रखा अपितु कई सगे भाई तथा सगी बहनें उनकी एक ही मां से थीं, परन्तु हमारे नबी[स.अ.व.] केवल अकेले थे। न कोई दूसरा भाई था न बहन। (इसी से)

में भूकम्प की भविष्यवाणी करना एक विरोधी की दृष्टि में अभिहास का ही स्थान है ऐसा ही हज़रत ईसा ने कहा था कि मेरे बारह हवारी स्वर्ग में बारह तख्तों पर बैठेंगे। यह भविष्यवाणी भी इंजील में मौजूद है। किन्तु उन हवारियों में से एक अर्थात् यहूदा इस्क्रियूती मुर्तद (धर्म विमुख) होकर मर गया। अब बताओ बारह तख़्तों की भविष्यवाणी किस प्रकार सही हो सकती है। यदि आप कोई जोड़-तोड़ कर सकते हैं तो हमें भी समझा दें। हम कृतज्ञ होंगे। यहां तो किसी रूपक के लिए भी कोई स्थान नहीं। इसी प्रकार हज़रत ईसा ने कहा कि इस युग के लोग अभी नहीं गुज़रेंगे कि मैं वापस आऊंगा। अत: जो लोग उसे आकाश पर चढ़ाए बैठे हैं क्या ईसाई और क्या मुसलमान। इस बात का उत्तर देना उनका दायित्व है कि उन्नीस शताब्दियां तो गुज़र गई परन्तु अभी तक हज़रत ईसा वापस नहीं आए तथा उन्नीस शताब्दियों तक जो लोग अपनी आयु पूरी कर चुके थे वे सब मिट्टी में मिल गए परन्तु अब तक किसी ने हज़रत ईसा को आकाश से उतरते न देखा। फिर वह वादा कहां गया कि इस युग के लोग अभी जीवित होंगे कि मैं वापस आ जाऊंगा। अत: ऐसी भविष्यवाणियों पर जिसने गर्व करना है निस्सन्देह करे हम तो पवित्र क़ुर्आन के वर्णन के अनुसार हज़रत ईसा को सच्चा नबी मानते हैं अन्यथा उस इंजील की दृष्टि से जो मौजूद है उसकी नबुव्वत की भी ख़बर नहीं। ईसाई तो उनकी ख़ुदाई को रोते हैं परन्तु हमें उनकी नुबुव्वत ही का सिद्ध करना पवित्र क़ुर्आन के माध्यम के अतिरिक्त एक असंभव बात विदित होती है। यद्यपि यह सच है कि ईसाइयों ने इंजील की कुछ ऐसी हड्डी-पसली तोड़ी है कि अब उसकी बुरी-अच्छी बात का कुछ विश्वास न रहा। परन्तु अक्षरांतरण को स्वीकार करने के पश्चात् भी हज़रत ईसा की भूकम्प वाली भविष्यवाणी मुसलमानों के निकट सिरे से ही विश्वसनीय नहीं, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन में हज़रत ईसा की इस भविष्यवाणी की कुछ भी चर्चा नहीं। अत: क्योंकर तथा किस माध्यम से उसे सही मान लिया जाए। खेद कि आपने मेरी भविष्यवाणियों के खंडन में जितने हाथ-पांव मारे हैं और ख़ुदा के भय को छोड़कर नाख़ूनों तक ज़ोर लगाया है कि

किसी प्रकार प्रजा की दृष्टि में इन भविष्यवाणियों को आप अधम सिद्ध कर दें। आपने यह निरानंद पाप मुफ़्त में ख़रीद लिया और यदि तर्कों का खण्डन करने में कुछ सफलता होती तो और नहीं तो ईसाइयों की दृष्टि में ही आप प्रशंसनीय ठहरते। चुप रहना भी एक सौभाग्य था, मुख खोलकर क्या लिया। आप ने यह मुझ पर प्रहार नहीं किया है अपितु उस ख़ुदा पर प्रहार किया है जिसने मुझे भेजा है। खेद कि केवल हृदय की क्रूरता तथा प्रसिद्धि की कामना ने अधिकांश लोगों को मेरे विरोध में खड़ा किया है अन्यथा मेरे दावे तथा मेरे तर्कों का समझना कुछ कठिन न था। अब तक हज़ारों निशान प्रकट हो चुके और पृथ्वी एवं आकाश ने भी साक्ष्य दिए, परन्तु जिन के हृदयों पर मुहरें हैं वे विरोध से पृथक नहीं हुए। उन्होंने ख़ुदा से एक अज़ाब मांगा है जो समय पर आएगा। वे लोग जो ख़ुदा का मुकाबला कर रहे हैं यदि वे इस से पूर्व मर जाते तो उनके लिए अच्छा था। किन्तु पक्षपात और अहंकार की मदिरा ने उनको मस्त कर रखा है तथा वे दिन आते हैं कि ख़ुदा उनको होश में लाएगा।

अब हम मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी के कुछ सन्देहों का निवारण करते हैं जो उन्होंने दिनांक 19 जून 1905 ई. के पैसा अख़बार में प्रकाशित किए हैं :-

उसका कथन - वह लिखता है (अर्थात् यह विनीत) कि मैंने बराहीन अहमदिया में इस भूकम्प की सूचना दी थी तथा लिखा था कि पर्वत फट जाएंगे। यह ऐसा झूठ है जिसका कोई अन्त नहीं।

मेरा कथन - क्या आप को इस बात में कुछ सन्देह है कि बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 516 में यह इबारत मौजूद है -

فَلَمّا تَجَلّٰی رَبُّہٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَہٗ دَکًّا۔ وَاللّٰہُ مُوْھِنُ کَیْدِ الْکَافِرِیْنَ وَلِنَجْعَلَہٗ اٰیۃً لِّلنَّاسِ وَ رَحْمَۃً مِنّا وَکَانَ اَمْرًا مَّقْضِیًّا

अर्थात् जब इस ख़ाकसार का रब्ब एक विशेष पर्वत पर तजल्ली (झलक) डालेगा तो उसको टुकड़े-टुकड़े कर देगा और ख़ुदा इन्कार करने वालों की चालाकी को शिथिल

कर देगा और हम पर्वत की इस घटना को लोगों के लिए एक निशान बनाएंगे और मोमिनों के लिए यह दया का कारण होगा। यह बात प्रारंभ से निर्णित थी। अर्थात् पूर्व नबियों ने सूचना दी थी कि मसीह मौऊद के समय में ऐसे भयंकर भूकम्प आएंगे। इसी प्रकार मैं पुनः पूछता हूं कि क्या आप को इस बात में कुछ सन्देह है कि बराहीन अहमदिया पृष्ठ 557 में इसी घटना के संबंध में ख़ुदा की यह दूसरी वह्यी है -

فلمّا تجلّٰى ربّهٗ للجبل جعلهٗ دكًّا۔ قُوَّةُ الرَّحْمٰنِ لِعُبَيْدِ اللهِ الصَّمَدِ۔

(अनुवाद) जब उसका (अर्थात् इस ख़ाकसार का) रब्ब पर्वत पर तजल्ली करेगा तो उसको टुकड़े-टुकड़े कर देगा। यह ख़ुदा की शक्ति से होगा अपने बन्दे के समर्थन में अर्थात् उसकी सच्चाई प्रकट करने के लिए।

अब जबकि ये दोनों इबारतें बराहीन अहमदिया में मौजूद हैं और उनमें स्पष्ट शब्दों में यह वादा भी है कि ख़ुदा निशान दिखाएगा तथा सहायता और समर्थन करेगा। फिर इस बारे में जो कुछ विज्ञापन में लिखा गया सफेद झूठ क्योंकर हो गया। क्या पर्वत का फट जाना भूकम्प पर अनिवार्य तर्क नहीं ? और क्या यहां स्पष्ट तौर पर यह वादा नहीं कि हम पर्वत के फट जाने को अपने इस बन्दे के लिए निशान बनाएंगे और यह घटना ख़ुदा की सहायता एवं समर्थन को सिद्ध करेगी तथा क्या व्याख्या के लिए इस से बढ़कर कोई अन्य शब्द हो सकते हैं जो पृष्ठ 516 में कहे गए हैं - وَلِنَجْعَلَهٗ اٰيَةً لِّلنَّاسِ अर्थात् हम पर्वत के टुकड़े-टुकड़े हो जाने की घटना को लोगों के लिए एक निशान बनाएंगे। ऐसा ही इस से बढ़कर और क्या व्याख्या हो सकती है जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 557 में की गई है। क्योंकि पहले पर्वत के टुकड़े-टुकड़े करने का वादा किया फिर कहा - قوّة الرحمٰن لِعُبَيد الله الصمد अर्थात् यह ख़ुदा की शक्ति से होगा उसके बन्दे के समर्थन और सहायता के लिए। जिस व्यक्ति ने अब भी इन व्याख्याओं के बावजूद ऐसी स्पष्ट भविष्यवाणी को सफेद झूठ समझा है उसके बारे में इसके अतिरिक्त क्या कहें कि स्वयं उनकी आंखें सफेद हो गई हैं कि प्रकाशमान दिन को वह

रात समझता है। इसके अतिरिक्त पवित्र क़ुर्आन में जिस अवसर पर यह आयत है वह अवसर भी तो भूकम्प को ही सिद्ध करता है क्योंकि अब तक तौरात से सिद्ध होता है कि जब हज़रत मूसा को क़ुदरत का चमत्कार दिखाने के लिए पर्वत फटा था उस समय भी भूकम्प ही आया था। इतने अधिक साक्ष्यों के पश्चात् भी यदि कोई नहीं मानता तो दो स्थितियों से खाली नहीं। या तो उसकी ज्ञानेन्द्रियों (हवास) में खराबी है तथा आंख की दृष्टि में दोष है या अत्यन्त पक्षपात के पर्दे ने उसे इस सामर्थ्य से वंचित कर दिया है कि वह प्रकाश को देखकर फिर उसे स्वीकार कर सके। इसके अतिरिक्त प्रत्येक बुद्धिमान जानता है कि पर्वत का फट जाना भी भूकम्प के लिए अनिवार्य है। इस घटना का भूकम्प पर निश्चित एवं आवश्यक प्रमाण है तो फिर मौलवी साहिब क्योंकर कहते हैं कि ज़लज़ल: (भूकम्प) का इस स्थान पर भी वर्णन नहीं। क्या पर्वत भूकम्प के बिना भी फटा करते हैं ? मौलवी साहिब की बुद्धि पर ये कैसे पत्थर पड़ गए कि उनको खुली-खुली बात समझ नहीं आती। सत्तर वर्ष तक पहुंच कर फिर बचपन का बुद्धूपन प्रकट होने लगा। फिर इसके साथ जबकि यह भी मौजूद है कि इस घटना को हम निशान बनाएंगे और इस से उस मामूर की सहायता और समर्थन करेंगे तो ऐसे व्यक्ति के अतिरिक्त कि जिसके हृदय पर दुर्भाग्य का ज़ंग जम गया हो इस बात से कौन इन्कार कर सकता है कि यह पर्वत का फटना जिस का बराहीन अहमदिया में वर्णन है कोई ऐसी घटना है जिसको ख़ुदा अपने मामूर के लिए निशान बनाएगा। जैसा कि उसी स्थान पर उसने बतौर वादा कहा है ولنجعله اٰيَةً لِّلنّاس अर्थात् हम उसे लोगों के लिए निशान बनाएंगे।

उसका कथन - सरकार और पब्लिक बराहीन अहमदिया के कथित पृष्ठों को देखें कि क्या यह इबारत कहीं पाई जाती है। इस धोखेबाज़ी तथा छल का कोई अन्त नहीं।

मेरा कथन - इस साहस, धृष्टता तथा उद्दण्डता के सामने हम इसके अतिरिक्त क्या लिख सकते हैं कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। ख़ुदा के बन्दे ! अन्ततः कभी मरना

है, कभी तो उस पल का ध्यान करो जब चन्द्रा (जान निकलने) का ग़रग़रा आरंभ होगा। क्या ये दोनों अरबी इबारतें जिनका मैंने अपने विज्ञापन में हवाला दिया है, बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 516 और 557 में मौजूद नहीं है ? इतना झूठ और यह आयु। बराहीन अहमदिया संसार में प्रसारित हो चुकी है केवल आपकी बग़ल में नहीं। फिर इस धृष्टता और शरारत से लाभ क्या। क्या यह सच नहीं कि इन आयतों में पर्वत फट जाने की चर्चा है ? क्या यह सच नहीं कि उसी इल्हाम में ख़ुदा तआला कहता है कि हम पर्वत का फट जाना लोगों के लिए निशान बनाएंगे और कुछ के लिए यह निशान रहमत का कारण होगा ? और क्या यह सच नहीं कि इन इल्हामों में अल्लाह तआला कहता है कि यह निशान अपने बन्दे के समर्थन तथा सहायता के लिए प्रकट करेंगे ? और या यह सच नहीं कि जो इल्हाम पृष्ठ 557 बराहीन अहमदिया में अरबी में है उसके सर पर उर्दू में यह इल्हाम है - **दुनिया में एक नज़ीर आया पर दुनिया ने उसको स्वीकार न किया परन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा तथा बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा**[1]। क्या इन समस्त इबारतों को इकट्ठे तौर पर देखने

---

[1] ख़ुदा तआला की पहली किताबों में कुछ भविष्यवाणियां इसी भविष्यवाणी के समानार्थी हज़रत ईसा[अ.] के बारे में हैं जिन में लिखा है कि उनको यहूदी स्वीकार नहीं करेंगे। जैसा कि इंजील में भी इन्हीं भविष्यवाणियों के हवाले से लिखा है कि जिस पत्थर को मिस्त्रियों ने रद्द किया वही कोने का सिरा हुआ अर्थात् इस्राईली नबियों का ख़ातमुलअंबिया हुआ। अत: उन्हीं भविष्यवाणियों के अनुसार यह भविष्यवाणी है क्योंकि ख़ुदा का कथन है कि लोगों ने तो उसको स्वीकार न किया परन्तु मैं स्वीकार करूंगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर दूंगा। अत: आवश्यक है कि संसार समाप्त न हो जब तक ये समस्त बातें प्रकट हो जाएं और जैसा कि इंजील में है कि जिस पत्थर को मिस्त्रियों ने रद्द किया वही कोने का सिरा हुआ। इसी कारण ख़ुदा ने मुझे कहा कि वे तो तुझे रद्द (अस्वीकार) करते हैं परन्तु मैं तुझे ख़ातमुल ख़ुलफ़ा

से सिद्ध नहीं होता कि पर्वत का फटना जो बराहीन अहमदिया में लिखा गया है उसके साथ ही कथित पुस्तक में यह भी लिख दिया गया है कि यह एक भविष्यवाणी है। हां इससे इन्कार नहीं हो सकता कि समय से पूर्व हम बराहीन अहमदिया की उस भविष्यवाणी को निर्धारित नहीं कर सके कि यह किस पहलू पर प्रकट होगी तथा यह एक ऐसी बात है जिसमें समस्त अंबिया सम्मिलित हैं। परन्तु मैंने न बराहीन अहमदिया में और न किसी अन्य पुस्तक में इस बात से इन्कार किया है कि यह भविष्यवाणी है तथा क्योंकर इन्कार कर सकता, वहां तो स्पष्ट तौर पर बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 516 में लिखा है -

وَلِنَجْعَلَهٗ اٰيَةً لِّلنَّاس و رَحْمَةً مِّنَّا

कि हम पर्वत का फट जाना लोगों के लिए एक निशान बनाएंगे और फिर पृष्ठ - 557 में स्पष्ट लिखा है **قوّة الرحمٰن لعُبَيد الله الصمد** अर्थात् पर्वत का फट जाना ख़ुदा की शक्ति से होगा अपने बन्दे की सहायता के लिए। अत: इस स्थान पर किसी दुष्ट पापी व्यक्ति के अतिरिक्त जिसे ईमान, ख़ुदा तथा दण्ड के दिन की कुछ भी परवाह न हो कौन इस बात का इन्कार कर सकता है कि यह भविष्यवाणी है और इसमें एक निशान का वादा है तथा जबकि ख़ुदा तआला ने उसका नाम 'निशान' रखा है तथा वादा किया है कि हम किसी समय उसको लोगों के हित में प्रकट करेंगे। फिर किस में शक्ति है कि वह कहे कि यह निशान नहीं और यह भविष्यवाणी नहीं। हमारा यह इक़रार कि हम बराहीन अहमदिया के युग में इस भविष्यवाणी को किसी पहलू पर निर्धारित नहीं कर सकते इससे विरोधी को कुछ लाभ नहीं पहुंच सकता क्योंकि नबी के लिए समय से पूर्व प्रत्येक भविष्यवाणी को निर्धारित करना आवश्यक नहीं और इस पर हम इसी पुस्तक में पहले पर्याप्त बहस कर चुके हैं। हमें उसे बार-बार लिखने की आवश्यकता नहीं

बनाऊंगा। इस बारे में ख़ुदा की वह्यी कई विभिन्न इबारतों में है यदि सब लिखी जाएं तो विस्तार होगा। (इसी से)

اگر در خانہ کس است حرفے بس است۔

उसका कथन - इन तीनों वाक्यों में कृष्ण क़ादियानी ने झूठ बोला है अर्थात् एक उपरोक्त पहला वाक्य जिसका उत्तर हो चुका है। दूसरे यह कहना कि ज़लज़ल: से पीछे बार-बार यह विचार किया कि मैंने बड़ा पाप किया[1] कि जैसा कि प्रकाशित करने का हक़ था भूकम्प की भविष्यवाणी को प्रकाशित न किया और तीसरे यह कहना कि यद्यपि मैं उस समय जानता था कि मेरा लिखना हृदयों को एक उचित सावधानी की ओर नहीं

---

1 मौलवी मुहम्मद हुसैन साहिब ने मेरे इस वाक्य पर बड़ी प्रसन्नता प्रकट की है कि मुझे

शेष हाशिया : बार-बार विचार आया कि मैंने बहुत बड़ा पाप किया। मौलवी कहलाकर उनको यह ज्ञात नहीं कि मनुष्य की मारिफ़त का कमाल इसी में है कि मनुष्य अपने महान रब्ब के समक्ष हर समय स्वयं को दोषी ठहराए। यह नबियों की सुन्नत है। वह शैतान है जो ख़ुदा के समक्ष विनय धारण न करे। नबी जो रोते-चीखते और नारे लगाते रहे, यह तपन और विनम्रता इसी कारण थी कि वे समझते थे कि हम ने पाप किया कि जैसा कि प्रचार का हक़ था हम से अदा न हो सका। अपने स्वामी के सामने सम्पूर्ण सौभाग्य इसी में है कि उस दोष का इक़रार करें। अत: हमारे नबी करीम[स.अ.व.] की सम्पूर्ण क्षमायाचना इसी आधार पर है कि आप बहुत ही डरते थे कि जो सेवा मेरे सुपुर्द की गई है अर्थात् प्रचार-सेवा तथा ख़ुदा के मार्ग में पूर्ण प्रयत्न की सेवा उसको यथायोग्य मैं अदा नहीं कर सका। जबकि उस सेवा को आंहज़रत[स.अ.व.] के बराबर किसी ने अदा नहीं किया। परन्तु ख़ुदा की श्रेष्ठता का भय और रोब आप के हृदय में बहुत ही अधिक था। इसीलिए निरन्तर क्षमा-याचना आप का कार्य था। तौरात में भी है - "तब मूसा ने शीघ्रता से पृथ्वी पर सर झुकाया और बोला कि हे ख़ुदावन्द ... हमारे पाप और ख़ताएं क्षमा कर" (ख़ुरूज 9/34) साउल नबी कहता है - "मैंने पाप किया कि मैंने ख़ुदावन्द के आदेश को टाल दिया" देखो स्मवाईल - अध्याय 25 आयत 15। दाऊद नबी ख़ुदा तआला को सम्बोधित करके कहता है कि - "मैंने तेरा पाप किया।" देखो ज़बूर अध्याय 3 आयत 5। (इसी से)

ले जाएगा तथापि उस शोक ने मेरे हृदय को घेरा कि जो ख़बर मुझे सर्वज्ञ एवं दूरदर्शी ख़ुदा से प्राप्त हुई थी उसे मैंने पूर्णरूपेण प्रकाशित नहीं किया।

मेरा कथन - कुधारणा एक ऐसी बात है कि इसका कोई उपचार नहीं, अन्यथा स्पष्ट है कि यदि एक व्यक्ति को इस बात का ज्ञान दिया जाए कि अमुक तबाही किसी गिरोह पर आने वाली है और वह उस जाति को उस तबाही से यथायोग्य सावधान न कर सके और साथ ही उसे यह भी विश्वास हो कि मेरा कहना, न कहना उनको बराबर होगा परन्तु फिर भी उस तबाही के पश्चात् उसके हृदय को अवश्य आघात पहुंचेगा कि काश वे लोग मेरी आवाज़ को सुनते और बच जाते। मैं विचार करता हूं कि यह विशेषता प्रत्येक हृदय में है किन्तु संभव है कि इस युग के कुछ मौलवियों के हृदय ऐसे हों कि ख़ुदा ने उन में से यह विशेषता छीन ली हो और यदि यह भ्रम गुज़रे कि क्योंकर विश्वास करें कि साहिबे इल्हाम (इल्हाम वाले) को विश्वास हो गया था कि इल्हाम عفت الديار محلّها و مقامها से अभिप्राय भूकम्प है। इसका उत्तर हम पहले लिख चुके हैं कि यह एक ऐसा साफ़ इल्हाम है कि इस के अर्थों पर अवगत होने से एक बच्चे को भी विश्वास हो सकता है कि यह एक भयंकर घटना की भविष्यवाणी है जिसका प्रभाव भवनों पर होगा। इससे एक वर्ष पांच माह पूर्व अलहकम अख़बार में 1903 ई. के दिसम्बर अन्त के पर्चे में स्पष्ट शब्दों में भूकम्प की भविष्यवाणी मौजूद है। फिर 'मवाहिबुर्रहमान' प्रकाशित 1902 ई. में भी यही भूकम्प की भविष्यवाणी मौजूद है। फिर पत्रिका 'आमीन' प्रकाशित 1901 ई. में भी यही भूकम्प की भविष्यवाणी मौजूद है। फिर इतनी निरन्तरता के बावजूद कोई बुद्धिमान क्योंकर विचार कर सकता है कि हम इस भविष्यवाणी से बिल्कुल अनभिज्ञ थे। हां जैसा कि मेरा मत है बार-बार यह भी कह चुका हूं कि भविष्यवाणियों में निश्चित तौर पर यह दावा नहीं हो सकता कि उनका प्रकटन एक ही पहलू पर अवश्य होगा। संभव है कि सर्वज्ञ एवं नीतिवान ख़ुदा उनके प्रकटन के लिए कोई अन्य पहलू धारण करे, जिसमें वही श्रेष्ठता और शक्ति तथा भयावह रूप पाया

जाए जिसे यह भविष्यवाणी सिद्ध करती हो।

फिर जबकि मुझ को भविष्यवाणी عفت الديار محلها و مقامها की श्रेष्ठता और तीव्रता पर पूरा-पूरा विश्वास था और मैं उसे पूरे ईमान से ख़ुदा तआला का कलाम समझता था और उसके प्रकटन ने मुझ पर खोल दिया था जैसा कि भविष्यवाणी के प्रत्यक्ष शब्द थे उसी प्रकार वह घटित भी हो गई। तो क्या वह समय नहीं था कि मानव जाति के लिए मेरी हमदर्दी जोश मारती और मैं प्रयत्न करता कि भविष्य में भूकम्प से बचने के लिए लोग तौबा और क्षमायाचना तथा किसी उत्तम प्रबन्ध की ओर ध्यान दें। क्या मैंने यह बुरा काम किया कि जिस विपत्ति का मुझे विश्वास दिया गया था उस विपत्ति से बचने के लिए मैंने लोगों को सूचित कर दिया और क्या मनुष्य में यह स्वाभाविक बात नहीं कि किसी विपत्ति पर सूचित होकर मानव जाति की हमदर्दी के लिए उस का हृदय जोश मारता है। हां कुछ क़साई स्वभाव लोग होते हैं कि उनको दूसरे की पीड़ा और संकट की कुछ भी परवाह नहीं होती। अत: मैं ऐसे लोगों को मनुष्य नहीं समझता।

उसका कथन - इसलिए उससे (अर्थात् मुझ से) यह मूर्खता हुई कि स्वयं को एक बड़े पाप का करने वाला मान लिया, जिससे अपने नुबुव्वत के मूल दावे की जड़ काट दी।

मेरा कथन - यहूदियों की भांति आप जितना चाहें अक्षरांतरण करें। हम आपको क्या कह सकते हैं वरन् जो लोग ख़ुदा तआला से डरते हैं वे रसूल और नबी होने के बावजूद इक़रार करते हैं कि वे यथायोग्य प्रचार का कर्त्तव्य पूरा न कर सके[1] तथा इसी को वह महा पाप समझते हैं तथा इसी विचार से वह नारे लगाते, रोते और दर्द से भर जाते हैं और हमेशा क्षमा याचना करते रहते हैं किन्तु नीरस मौलवी जिन के दामन में

---

[1] आंहज़रत[स.अ.व.] का कथन है - مَا عَبَدْنَاكَ حَقَّ عِبَادَتِكَ अर्थात् हे हमारे ख़ुदा तेरी इबादत का जो हक़ था हम से अदा नहीं हो सका। क्या आप यहां यह एतिराज़ करेंगे जबकि आंहज़रत[स.अ.व.] स्वयं इबादत करने में असमर्थ थे तो दूसरों को क्यों नसीहत करते थे। खेद। (इसी से)

हड्डियों के अतिरिक्त कुछ नहीं वह इस रूहानियत का क्या जानते हैं। निष्पाप होने की सांत्वना किसी नबी ने भी प्रकट नहीं की। संसार में जो सर्वश्रेष्ठ रसूल तथा ख़ातमुर्रुसुल गुज़रा है उसके मुख से भी यही निकला -

رَبَّنَا اغۡفِرۡ لَنَا ذُنُوۡبَنَا وَ بَاعِدۡ بَيۡنَنَا وَ بَيۡنَ خَطَايَانَا

तथा आंहज़रत[स.अ.व.] हमेशा कहते थे कि सूरह 'हूद' ने मुझे बूढ़ा कर दिया और आप सब से अधिक क्षमा याचना किया करते थे तथा कहा करते थे कि मैं दिन में सत्तर बार क्षमा याचना करता हूं। ख़ुदा तआला ने आप के पक्ष में कहा -

اِذَا جَآءَ نَصۡرُ اللّٰهِ وَ الۡفَتۡحُ وَ رَاَيۡتَ النَّاسَ يَدۡخُلُوۡنَ فِيۡ دِيۡنِ اللّٰهِ اَفۡوَاجًا
فَسَبِّحۡ بِحَمۡدِ رَبِّكَ وَ اسۡتَغۡفِرۡهُ ؕ اِنَّهٗ كَانَ تَوَّابًا[1]

यह सूरह आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के निधन के निकट समय में उतरी थी और इसमें ख़ुदा तआला ज़ोर देकर अपनी सहायता एवं समर्थन तथा धर्मोद्देश्यों के पूर्ण होने की सूचना देता है कि अब तू हे नबी ख़ुदा की पवित्रता तथा यशोगान कर और ख़ुदा से क्षमा याचना कर। वह क्षमा करने वाला है। इस अवसर पर क्षमा का वर्णन करना यह इसी बात की ओर संकेत है कि सब प्रचार का कार्य समाप्त हो गया, ख़ुदा से दुआ कर कि यदि प्रचार की बारीकियों में कोई भूल हुई हो तो ख़ुदा उसे क्षमा कर दे। मूसा भी तौरात में अपनी ग़लतियों को स्मरण करके रोता है और जिसको ईसाइयों ने ख़ुदा बना रखा है किसी ने उससे कहा कि हे नेक उस्ताद। तो उसने उत्तर दिया कि तू मुझे क्यों नेक कहता है। नेक कोई नहीं परन्तु ख़ुदा। समस्त वलियों का यही आचरण रहा है। सब ने क्षमा याचना को अपना आचरण ठहराया है। शैतान के अतिरिक्त -

فرس کشتہ چنداں کہ شب راندہ اند
سحر گہ خروشاں کہ وا ماندہ اند

उसका कथन - वह (अर्थात् यह ख़ाकसार) बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी

---

① सूरह अन्नस्र - 2 से 4

को सच्चा करने और उस पर भूकम्प का रंग चढ़ाने तथा इस माध्यम से अपना भविष्यवेत्ता होना तथा नुबुव्वत की धाक जमाने के उद्देश्य से इस बात का दावेदार हो गया है कि बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी से बड़ी स्पष्टता से ख़ुदा की ओर से मुझे यह सूचना मिल चुकी थी कि इस से भूकम्प अभिप्राय है तथापि मैंने क़ौम की गालियों और कुधारणा के भय से उसे गुप्त रखा और अरबी का उर्दू में अनुवाद करके प्रकाशित न किया तथा मैं इस कार्य से ख़ुदा के महा पाप का कर्ता हुआ और पच्चीस वर्ष तक इसी पाप पर स्थापित और अड़ा रहा।

मेरा कथन - मौलवी साहिब आज आपने अक्षरांतरण में यहूदियों के भी कान काटे। मौलवी कहलाना और इतनी स्पष्ट इबारत के अर्थ वर्णन करने में जान बूझ कर बेईमानी करना, क्या यह उन लोगों का काम हो सकता है जो हिसाब के दिन पर ईमान लाते हैं। मैंने अपने विज्ञापन में कब और कहां लिखा है कि मैं पच्चीस वर्ष तक इस पाप पर स्थापित और अड़ा रहा कि बराहीन अहमदिया के अरबी इल्हाम का अनुवाद प्रकाशित न किया। बराहीन अहमदिया के पृष्ठ 516 और 557 खोल कर देखो दोनों स्थानों में अरबी इल्हामों का अनुवाद मौजूद है। फिर मैं क्योंकर कह सकता था कि मैंने अरबी इल्हाम का अनुवाद उर्दू में करके प्रकाशित न किया और पच्चीस वर्ष तक इसी पाप पर स्थापित रहा तथा अड़ा रहा। क्या कोई बुद्धिमान विश्वास कर सकता है कि इसके बावजूद कि इन दोनों इल्हामों का जो बराहीन अहमदिया के पृष्ठ - 516 तथा पृष्ठ - 557 में लिखे हैं साथ ही उर्दू अनुवाद भी लिखा हुआ है फिर मैं विज्ञापन में यह लिखता कि उन इल्हामों का अनुवाद बराहीन अहमदिया में मैंने नहीं लिखा अपितु यह वर्णन तो मेरे विज्ञापन 11 मई 1905 ई. में उस अरबी इल्हाम के संबंध में था जो अलहकम 31 मई 1904 ई. में बिना अनुवाद प्रकाशित किया गया था अर्थात् इल्हाम - عفت الديار محلّها و مقامها जिसका अनुवाद उर्दू में नहीं लिखा गया था। मौलवी साहिब ने यह अक्षरांतरण इस उद्देश्य से किया ताकि मुझ पर यह आरोप लगाएं

कि जैसे मैंने जान बूझ कर पच्चीस वर्ष तक बराहीन अहमदिया के अरबी इल्हाम का अनुवाद न किया और गुप्त रखा।

इसके अतिरिक्त भूकम्प के बारे में तो बराहीन अहमदिया में दो भविष्यवाणियां थीं एक पृष्ठ-516 में लिखी थी और दूसरी पृष्ठ-557 में लिखी थी तथा मेरे 11 मई 1905 ई. के विज्ञापन में बराहीन अहमदिया की वे दो भविष्यवाणियां अभिप्राय हैं तो उसमें यह इबारत नहीं होनी चाहिए थी कि अरबी भविष्यवाणी का भी अनुवाद नहीं हुआ था अपितु यह इबारत होनी चाहिए थी कि अरबी की दो भविष्यवाणियों का अनुवाद भी नहीं हुआ था। फिर भी ऐसा लिखना झूठ होता क्योंकि दोनों अरबी भविष्यवाणियों का अनुवाद बराहीन अहमदिया में मौजूद है जो व्यक्ति चाहे देख ले।

इसके अतिरिक्त यह विज्ञापन दिनांक 11 मई 1905 ई. जिस पर मौलवी साहिब यह आलोचना करते हैं अभी संसार से लुप्त नहीं हो गया, बहुत से लोगों के पास मौजूद होगा उसकी मूल इबारत यह है - उस भूकम्प के पश्चात् मुझे बार-बार यह विचार आया कि मैंने बड़ा पाप किया कि मैंने इस भविष्यवाणी को यथायोग्य प्रकाशित न किया क्योंकि यह भविष्यवाणी केवल उर्दू के दो अख़बारों तथा दो पत्रिकाओं में प्रकाशित हुई थी और यह भी भूल हुई थी कि अरबी भविष्यवाणी का अनुवाद भी नहीं हुआ था। अब बिल्कुल स्पष्ट है कि बराहीन अहमदिया की अरबी भविष्यवाणियां जो पृष्ठ 516 और पृष्ठ 557 में दर्ज हैं न उर्दू के दो अख़बारों में प्रकाशित हुईं और न ही उन का अनुवाद किया गया, न किसी अन्य पत्रिका में उनका वर्णन हुआ अपितु वह भविष्यवाणी जो दो उर्दू अख़बारों में दर्ज हुई थी और जिसका अरबी से उर्दू में अनुवाद नहीं हुआ था वह यही भविष्यवाणी - عفت الدیار محلّها و مقامها है क्योंकि वह दो अख़बारों के अतिरिक्त जिनमें से एक अलहकम 21 मई 1905 ई. है दो पत्रिकाओं में भी दर्ज हो चुकी थी अर्थात् उसको मौलवी मुहम्मद अली साहिब एम.ए. ने अपनी दोनों पत्रिकाओं में 20 मार्च 1904 ई. को प्रकाशित कर दिया था। अत: हाशिए में उनका अपने हाथ से लिखा

हुआ नोट दर्ज है[1]। तब तनिक आंख खोलकर प्रथम आप मौलवी साहिब के नोट को पढ़ लें और फिर शर्म से डूब जाएं, और कुछ कहने की आवश्यकता नहीं। ख़ुदा के बन्दे ! इतनी चालाकी तो वे यहूदी भी नहीं करते होंगे जिन के बारे में अल्लाह तआला कहता है - يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ[2] फिर आप ने अपनी मौलवियत का यह कैसा नमूना दिखाया ? मैं सोच नहीं सकता कि आप ऐसे नादान थे जिन्होंने बहुत भोलेपन से इबारत के समझने में गलती की। आप बराहीन अहमदिया की समीक्षा लिख चुके थे और आप को भलीभांति ज्ञात था कि बराहीन अहमदिया के वे अरबी इल्हाम जिनका मैंने अपने विज्ञापन में वर्णन किया है वे बिना अनुवाद के नहीं लिखे गए और आप को अच्छी तरह ज्ञात था कि बराहीन अहमदिया के उन अरबी इल्हामों का वर्णन न तो हमारे सिलसिले के इन दो अख़बारों 'अलहकम' और 'अलबद्र' में किया गया है और न ऐसी दो पत्रिकाएं हमारे सिलसिले में किसी ने लिखीं जिन में बराहीन अहमदिया के उन इल्हामों का कुछ वर्णन हो। फिर जब कि बराहीन अहमदिया के उन अरबी इल्हामों का बराहीन अहमदिया में अनुवाद मौजूद है और न किसी अख़बार और न किसी पत्रिका में उनका वर्णन है और न वह केवल एक भविष्यवाणी है ताकि विज्ञापन 11 मई 1905 ई. की यह इबारत उस पर चरितार्थ हो सके कि अरबी भविष्यवाणी का अनुवाद भी नहीं हुआ था अपितु वे दो भविष्यवाणियां हैं। अत: ऐसी स्थिति में शरीअत

---

① सय्यिदी ! अस्सलामो अलैकुम वरहमतुल्लाह व बरकातुहू। यह इल्हाम عفت الديار محلّها و مقامها मार्च की दोनों पत्रिकाओं में प्रकाशित हो चुका था और पत्रिका के पृष्ठ - 126 में लिखा है। इसी इल्हाम को पढ़कर तथा फिर भूकम्प की ख़बर अख़बारों में पढ़कर चार्ल्स सौराइट अब्दुल हक़ ने जो उस समय न्यूज़ीलैंड में था पत्र लिखा था जिसमें भूकम्प के द्वारा इस इल्हाम के पूर्ण होने पर बहुत ही प्रसन्नता प्रकट की थी। (मुहम्मद अली)

2 अलमाइदह - 14

के अनुसार आप से मांग है कि आप ने इतना झूठ क्यों बोला ? कदाचित् जो करमदीन के मुकद्दमे में मेरे मुकाबले पर मौलवियों ने हित के लिए झूठ बोलने के वैध होने का फ़त्वा दिया था। इस पर आपने भी अमल किया। बहरहाल आप बताएं कि आपने क्यों वह वर्णन जो عفت الدّيار محلّها و مقامها के बारे में था बराहीन अहमदिया के उन दो इल्हामों पर मढ़ दिया जो पृष्ठ 516 तथा पृष्ठ 557 में मौजूद है क्या आप लोगों की यही मौलवियाना हैसियत में सच्चाई और ईमानदारी है कि आप ने ऐसा झूठ बनाया तथा आप के हृदय में ख़ुदा का कुछ भय न आया ? केवल इसी पर बस नहीं अपितु आप केवल शरारत और चालाकी से अपने इस लेख में अपनी ओर से एक इबारत लिखते हैं और फिर लोगों पर यह सिद्ध करना चाहते हैं कि जैसे वह इबारत जो आपने मेरी ओर सम्बद्ध की है वास्तव में मेरी ही क़लम से निकली है। अतः वह इबारत जो आप ने केवल छल से मेरी ओर सम्बद्ध कर दी है वह यह है "बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी से मुझे बहुत सफाई के साथ ख़ुदा की ओर से यह ख़बर मिल चुकी थी कि इस से भूकम्प अभिप्राय है तथापि मैंने क़ौम की गालियों एवं कुधारणा की आशंका से उसे गुप्त रखा और अरबी का अनुवाद उर्दू में करके प्रकाशित न किया। मैं इस कार्य से ख़ुदा का बड़ा दोषी हुआ और पच्चीस वर्ष तक इस पाप पर स्थापित तथा अड़ा रहा।"

हे झूठ घड़ने वाले अधम ! क्या अब भी हम न कहें कि झूठे पर ख़ुदा की ला'नत, जिसने स्वयं इबारत बनाकर मेरी ओर सम्बद्ध कर दी। **हे कठोर हृदय अन्यायी ! तुझे मौलवी कहला कर शर्म न आई कि तूने अकारण मुझ पर इतना अधिक झूठ बोला। क्या तू दिखा सकता है कि मेरे 11 मई 1905 ई. के विज्ञापन में या किसी अन्य विज्ञापन में अथवा किसी पत्रिका में यह इबारत मौजूद है जो तूने लिखी। झूठों पर ख़ुदा की ला'नत।**

यहां उन लोगों को सावधान रहना चाहिए कि जो ऐसे लोगों को मौलवी या ईमानदार समझ कर उनके कथन पर अमल करने के लिए तैयार होते हैं। यह स्थिति है इन लोगों

की ईमानदारी की। झूठे के कलाम में विरोधाभास अवश्य होता है। इसलिए इन मौलवी साहिब का यह वर्णन भी विरोधाभास से भरा हुआ है। इसलिए कथित अख़बार के पृष्ठ-5 कालम-3 में पन्द्रहवीं तथा चौबीसवीं पंक्ति में मेरे विज्ञापन की यह इबारत लिखते हैं कि -

"मैंने बराहीन अहमदिया में इस भूकम्प की सूचना दी थी और यद्यपि उस समय इस विलक्षण बात की ओर मस्तिष्क प्रवृत्त न हो सका। अब इन भविष्यवाणियों पर दृष्टि डालने से विदित होता है कि भविष्य में आने वाले भूकम्प के बारे में थीं जो उस समय दृष्टि से ओझल रह गईं।"

अब पाठकगण स्वयं देख लें कि इस उपरोक्त इबारत का यही तात्पर्य है कि उस युग में कि जब बराहीन अहमदिया के लिखने का युग था, मस्तिष्क इस ओर प्रवृत्त न हो सका कि ज़लज़ले से अभिप्राय वास्तव में भूकम्प है और यह बात उस समय दृष्टि से ओझल रही और अब पच्चीस वर्ष के पश्चात् जब भूकम्प प्रकट हुआ तो अब ज्ञात हुआ कि बराहीन अहमदिया की वे भविष्यवाणियां भविष्य में आने वाले भूकम्प के बारे में थीं।

यह तो उन्होंने मेरी ओर से इक़रार लिखा है और बिल्कुल सही है, क्योंकि मैंने अपने विज्ञापन النداء من وحی السماء में जो 21 अप्रैल 1905 ई. को प्रकाशित हुआ था वास्तव में यह इबारत विज्ञापन के पृष्ठ 7, प्रकाशित नवल किशोर प्रेस लाहौर में लिखी है। अत: पूरी इबारत यह है -

"स्मरण रहे इन दोनों भूकम्पों का वर्णन मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया में भी मौजूद है जो आज से पच्चीस वर्ष पूर्व अधिकांश देशों में प्रकाशित की गई थी, यद्यपि उस समय इस विलक्षण बात की ओर मस्तिष्क न जा सका, किन्तु अब उन भविष्यवाणियों पर दृष्टि डालने से व्यापक तौर पर विदित होता है कि वे भविष्य में आने वाले भूकम्पों के बारे में थीं जो उस समय दृष्टि से ओझल रह गईं।

अब इस विज्ञापन के विपरीत केवल छल और झूठ घड़ने से मौलवी मुहम्मद हुसैन

साहिब ने जो दावा मेरी ओर सम्बद्ध किया है और अपनी ओर से एक इबारत बना कर मेरी ओर सम्बद्ध की है वह इबारत हम पुनः लिख देते हैं। और वह यह है -

"बराहीन अहमदिया की भविष्यवाणी से मुझे बड़ी स्पष्टता से यह सूचना मिल चुकी थी कि इस से अभिप्राय भूकम्प है तथापि मैंने क़ौम की गालियों एवं कुधारणा की आशंका से उसे गुप्त रखा और अरबी का अनुवाद उर्दू में करके प्रकाशित न किया और मैं इस कृत्य से ख़ुदा के बड़े पाप का करने वाला हुआ और पच्चीस वर्ष तक उसी पाप पर स्थापित और अड़ा रहा।"

अब दर्शकगण न्याय की दृष्टि से कहें कि क्या यह वर्णन जो कथित मौलवी साहिब ने मेरी ओर सम्बद्ध किया है यह मेरे विज्ञापन 21 अप्रैल 1905 ई. की इबारत के विपरीत है या नहीं जिसे अभी मैंने नक़ल कर दिया है क्योंकि मैं कथित विज्ञापन में स्पष्ट तौर पर लिख चुका हूं कि उस विज्ञापन से पूर्व जो बराहीन अहमदिया से पच्चीस वर्ष पश्चात् मैंने 11 मई 1905 ई. को प्रकाशित किया है मस्तिष्क इस बात की ओर नहीं गया था कि ज़लज़ले से अभिप्राय वास्तव में प्रत्यक्ष तौर पर भूकम्प है अपितु पच्चीस वर्ष के पश्चात् भूकम्प के आने पर उन इल्हामों के अर्थ खुले।

अतः जबकि ये दोनों वर्णन परस्पर विरोधाभासी हैं और मैं उन में से केवल एक वर्णन को स्वीकार करता हूं जो मौलवी साहिब के इस लेख में भी उन्हीं के हाथ से लिखा जा चुका है अर्थात् यह कि मैं पच्चीस वर्ष तक बराहीन अहमदिया के इल्हाम पृष्ठ-516 और पृष्ठ-557 को किसी एक पहलू पर निश्चित न कर सका तो इसमें क्या सन्देह है कि उस समय तक दूसरा वर्णन केवल मौलवी साहिब का बनाया हुआ झूठ समझा जाएगा। जब तक कि वह मेरी किसी पुस्तक या विज्ञापन में से यह सिद्ध करके न दिखा दें कि यह कथित इबारत मैंने किसी स्थान पर लिखी है और या किसी स्थान पर मैंने यह लिखा है कि मैं पच्चीस वर्ष तक उस पर स्थापित और अड़ा रहा कि इसके बावजूद कि बराहीन अहमदिया के युग से भूकम्प के बारे में मुझे निश्चित ज्ञान हो चुका था फिर मैंने

इस ख़बर को गुप्त रखा।

अब हे दर्शक गण ! ख़ुदा के लिए अपनी मृत्यु को स्मरण करके ईमानदारी से मुझे बताओ कि जो व्यक्ति इतना अधिक झूठ घड़ता तथा झूठी इबारतें बना कर मेरी ओर सम्बद्ध करता है क्या वह किसी डांट-फटकार और शरई दण्ड का पात्र है या नहीं ? बताओ और प्रतिफल पाओ और यह भी मात्र ख़ुदा के लिए कहें कि क्या यह व्यक्ति जो इस प्रकार की चपलता से छल करता है इस योग्य है कि भविष्य में इसे मौलवी के नाम से पुकारा जाए और क्या उचित नहीं कि उलेमा की एक सभा आयोजित करके इसको बुलाया जाए और इस से पूछा जाए कि यह काल्पनिक इबारत जो उसने मेरी ओर सम्बद्ध की है मैंने किस पुस्तक या पत्रिका में उसे लिखा है। मौलवी कहला कर यह झूठ घड़ना तथा यह अक्षरांतरण और यह बेईमानी, यह झूठ, यह दिलेरी और यह चपलता। इन बातों की कल्पना करके शरीर कांपता है। क्या मुझे काफ़िर और बेईमान कहने वाले आंहज़रत[स.अ.व.] की वह हदीस जिसमें लिखा है कि अन्तिम युग के अधिकांश मौलवी यहूदियों के मौलवियों से समानता पैदा कर लेंगे कि यदि किसी यहूदी ने मां से भी व्यभिचार किया होगा तो वे भी कर लेंगे[1]।

---

① अन्तिम युग के वे उलेमा जिन को आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने इस उम्मत के यहूदी बताया है वे विशेषत: इसी प्रकार के यहूदी हैं जो मसीह मौऊद के विरोधी और प्राणों के शत्रु तथा उसकी तबाही की चिन्ता में व्यस्त हैं और उसे काफ़िर, बेईमान, दज्जाल कहते हैं तथा यदि उनके लिए संभव हो तो उसे सलीब देने के लिए तैयार हैं क्योंकि यहूदियों के फ़क़ीही और फ़रीसी हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम से इसी प्रकार का व्यवहार करते थे और उन्हें क़त्ल करना चाहते थे परन्तु जो उलेमा इस प्रकार के नहीं हैं उनको हम इस उम्मत के यहूदी नहीं कह सकते अपितु जो लोग हज़रत ईसा के शत्रुओं की भांति मुझे दज्जाल, काफ़िर और बेईमान कहते हैं वही यहूदी हैं और मैं उनको यहूदी नहीं कहता अपितु ख़ुदा का कलाम उन्हें यहूदी कहता है। यह बात तो

इसके बावजूद कि बटालवी साहिब ने इतना अधिक झूठ बोलकर तथा बेईमानी और अक्षरांतरण करके मुझे दु:ख दिया है फिर भी यदि वह मेरी किसी पुस्तक में वह इबारत जो उन्होंने मेरी ओर सम्बद्ध की है और लिखा है कि जैसे मैं पच्चीस वर्ष तक इसी पाप पर स्थापित और अड़ा रहा, दिखा दें तो मैं नकद पचास रुपए उनको दे सकता हूं अन्यथा मेरी ओर से यह वाक्य पर्याप्त है कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत !

उसका कथन - किसी सच्चे नबी या मुल्हम के लक्षण नहीं हैं कि जिस बात के प्रचार का ख़ुदा उसको आदेश दे वह जान बूझ पर पच्चीस वर्ष तक गुप्त रखे तथा उसका प्रचार न करे।

मेरा कथन - इस घड़े हुए झूठ का उत्तर गुज़र गया तथा मैं वर्णन कर चुका हूं कि मैंने किसी विज्ञापन में यह दावा नहीं किया कि यह बराहीन अहमदिया की ये दो भविष्यवाणियां जो लिखी गई हैं अर्थात् فَلَمَّا تَجَلّٰى رَبُّهٗ لِلْجَبَلِ جَعَلَهٗ دَكًّا उनके मूल उद्देश्य की ओर उसी युग में मेरा मस्तिष्क उस ओर चला गया था। अपितु बार-बार लिख चुका हूं कि पच्चीस वर्ष के पश्चात् उन अर्थों की वास्तविकता खुली और यदि पहले से मुझ पर वास्तविकता खुलती तो फिर उस इल्हाम के उस अनुवाद में जो बराहीन अहमदिया में लिखा गया क्यों ग़लती होती।

फिर इस नादान मौलवी के इस कथन पर मुझे आश्चर्य होता है कि वह कहता है

विवशता की है कि जिस स्थिति मैं सच्चा हूं न कि काफ़िर, न दज्जाल, न बेईमान हूं। अत: जो व्यक्ति सच्चे मसीह को ऐसे शब्दों से याद करता है उसको आंहज़रत[स.अ.व.] यहूदी ठहराते हैं। यदि मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब मुझे बेईमान, काफ़िर और दज्जाल नहीं ठहराते तथा वध करने योग्य नहीं समझते तो हम उनको यहूदी नहीं कहते और यदि वह मुझे इन शब्दों से याद करते हैं और ख़ुदा जानता है कि मैं सच्चा मसीह हूं तो इस स्थिति में वह स्वयं आंहज़रत[स.अ.व.] की हदीस का चरितार्थ बन कर स्वयं को यहूदी बनाते हैं और मुझे कहते हैं कि तुम क्यों ईसा बने। इस का उत्तर यही है कि आप लोगों के कारण। यदि आप यहूदी न बनते तो मेरा नाम यह न होता। (इसी से)

कि सच्चे नबी या मुल्हम का यह निशान नहीं है कि जिस बात के प्रचार का ख़ुदा उसे आदेश दे वह जान बूझ पर पच्चीस वर्ष तक उसे गुप्त रखे। उस नादान को अब तक यह भी मालूम नहीं कि तब्लीग़ (प्रचार) ख़ुदा के आदेशों के संबंध में होती है न कि ऐसी भविष्यवाणी के बारे में जिनके प्रकाशित करने के लिए मुल्हम मामूर भी नहीं अपितु अधिकार रखता है चाहे उनको प्रकाशित करे या न करे। इसके अतिरिक्त जबकि उस भविष्यवाणी की वास्तविकता अभी मुझ पर प्रकट नहीं हुई थी तो इस बात के लिए मैं विवश न था कि उसके अर्थ और उद्देश्य लोगों पर प्रकट करता तथा जितना विवेचना के तौर पर मेरे विचार में आया मैंने बराहीन अहमदिया में उन भविष्यवाणियों का अनुवाद प्रकाशित कर दिया। अत: मैंने तब्लीग़ (प्रचार) में कौन सी भूल की لَا يُكَلِّفُ اللّٰهُ نَفْسًا اِلَّا وُسْعَهَا[1] यदि यह बात होती कि बराहीन अहमदिया की उन भविष्यवाणियों की वह वास्तविकता जो 4 अप्रैल 1905 ई. के भूकम्प के पश्चात् मुझ पर खुल गई बराहीन अहमदिया को प्रकाशित करने के समय में ही मुझे ज्ञात होती तो यद्यपि मैं उसे प्रकाशित करने के लिए मामूर न था तथापि मैं मानवजाति की सहानुभूति के लिए यथासंभव उस की वास्तविकता से लोगों को सूचित करता।

उसका कथन - यह विचित्र पाप का बहाना पाप से अधिक निकृष्ट है कि भविष्यवाणियों के अर्थ समझने में सामान्य लोग तो सामान्य लोग, नबी भी विवेचना के समय ग़लती कर बैठते हैं।

मेरा कथन - इन्हीं बातों से तो आप का बेईमान पेशा होना सिद्ध होता है। मैं भली भांति जानता हूं कि आप दूध पीते बच्चे नहीं आप हदीस के ज्ञान से ऐसे अनभिज्ञ नहीं जिनको प्रथम श्रेणी के मूर्ख कहना चाहिए। आप ऐसे पागल नहीं जिनकी ज्ञानेन्द्रियां बिल्कुल काम नहीं करतीं, तो फिर यह बेईमानी है या कोई अन्य बात है कि आप उस से इन्कार करते हैं कि नबियों से कोई इज्तिहादी (विवेचनात्मक) ग़लती नहीं हो सकती।

---

① अलबक़रह - 287

सब जानते हैं कि निस्सन्देह ग़लती हो सकती है परन्तु वे हमेशा उस ग़लती पर स्थापित नहीं रखे जा सकते, मैं इस बारे में इसी परिशिष्ट में बहुत कुछ लिख चुका हूं पुनरावृत्ति की आवश्यकता नहीं है।

उसका कथन - किसी भविष्यवाणी के झूठा होने का आरोप जब आप पर लगता है तो उस आरोप को उसी सिद्धान्त से दूर कर दिया जाता है।

मेरा कथन - हे मौलवी साहिब ! ख़ुदा आप को हिदायत दे और वह दिन लाए कि आप के नेत्र खुलें। आप उस व्यक्ति के समान जिसकी गर्दन के पीछे बहुत बड़ा फोड़ा हो, इस कारण वह हमेशा पृथ्वी की ओर झुका रहे आकाश की ओर दृष्टि न उठा सके आकाशीय प्रकाशों से वंचित हैं तथा उन से कुछ लाभ प्राप्त नहीं करते। अब तक दस हज़ार से भी अधिक ख़ुदा तआला मेरे समर्थन में निशान प्रकट कर चुका है जो प्रकाशमान दिन के समान पूरे हो गए हैं परन्तु आप के विचार में प्रत्येक भविष्यवाणी झूठी निकलती रही है, जैसे मैं झूठ को सच बनाने के लिए तावीलें करता हूं। अब यहां भी इसके अतिरिक्त क्या कहूं कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। जो व्यक्ति मेरी संगत में चालीस दिन भी रहता है वह कोई न कोई ख़ुदा तआला का निशान देख लेता है। इसी कारण हज़ारों ख़ुदा के बन्दे इस ओर झुक गए हैं तथा आप के द्वेष, कृपणता तथा हमेशा झूठ बोलने से एक संसार हमारी ओर आ गया है और आता जाता है और आप के मुख की फूंकों से कुछ भी बिगड़ न सका। ख़ुदा ने मेरे लिए आकाश में सूर्य एवं चन्द्र ग्रहण किया, परन्तु आपके विचार में वह हदीस ग़लत है। मैं चौदहवीं सदी के सर पर आया और ख़ुदा की कृपा से मुहद्दिसों की प्रस्तावित शर्त के अनुसार सदी के चौथे भाग तक मेरा जीवन पहुंच गया परन्तु आप के विचार में यह हदीस भी ग़लत तथा लिखा था कि मसीह मौऊद के समय में प्लेग पड़ेगी और वह भयंकर होगी परन्तु आपके विचार में यह हदीस भी ग़लत। लिखा था कि उस समय सूर्य में एक निशान प्रकट होगा। अत: अब तक प्रकट है और दूरदर्शी यंत्र से देखा जाता है, परन्तु आप के

विचार में यह हदीस भी ग़लत और हदीस में आया था कि उन दिनों पुच्छल तारा उदय होगा। अतः लम्बा समय हुआ उस तारे का उदय हो चुका परन्तु आप के विचार में यह हदीस भी ग़लत और लिखा था कि वह मसीह मौऊद इसी उम्मत में से होगा और वह दमिश्क़ से पूरब की ओर अवतरित होगा, परन्तु आप के विचार में यह हदीस भी ग़लत, और लिखा था कि मसीह मौऊद के समय में ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी तथा उसमें यह भी संकेत था कि उस युग में मदीना की ओर से मक्का तक रेल की सवारी जारी हो जाएगी, परन्तु आपके विचार में यह हदीस भी ग़लत। अतः जबकि पैग़म्बर सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की हदीसें आप के विचार में ग़लत हैं तो मेरी भविष्यवाणियों को ग़लत कहने के समय आप क्यों शर्म करने लगे[1]।

अपितु हदीस और मेरी भविष्यवाणियों की चर्चा तो पृथक रही आप तो मुसलमान कहला कर पवित्र क़ुर्आन से ही विमुख हैं। ख़ुदा तआला का कथन है कि ईसा मृत्यु पा गया और आप ने उसे जीवित ठहरा कर आकाश के किसी कमरे में बैठा रखा है। क्या ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ओर से नहीं कहा - فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ[2] क्या इसके ये अर्थ नहीं हैं कि मुझे मृत्यु देने के पश्चात् तू ही उन का निगरान था और क्या इन समस्त आयतों पर दृष्टि डालने से स्पष्ट तौर पर सिद्ध नहीं होता कि हज़रत ईसा ख़ुदा तआला के प्रश्न का उत्तर देते हैं कि मैं जब तक अपनी उम्मत में था मैं उनके कर्मों का साक्षी था और उनकी परिस्थितियों का ज्ञान रखता था फिर जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो इसके पश्चात् तू ही उनका निगरान और संरक्षक था। अतः क्या इन आयतों का नितान्त स्पष्ट तौर पर यह विशेष अर्थ नहीं है कि मेरी उम्मत मेरे जीवन में नहीं बिगड़ी अपितु मेरी मृत्यु के पश्चात् बिगड़ी तथा मृत्यु के पश्चात्

---

① कुछ हदीसों में यह भी आया है कि उस युग में लोग हज करने से रोके जाएंगे परन्तु ये सब हदीसें आप के विचार में ग़लत हैं क्योंकि उन से मेरे दावे का प्रमाण मिलता है। (इसी से)

② अलमाइदह - 118

मुझे मालूम नहीं कि उन की क्या दशा हुई और क्या धर्म धारण किया। अत: ख़ुदा तआला के इस कलाम से स्पष्ट है कि यदि मान लिया जाए कि हज़रत ईसा अब तक जीवित हैं तो साथ ही यह भी मानना पड़ेगा कि ईसाई भी अब तक बिगड़े नहीं और सच्चे धर्म पर स्थापित हैं क्योंकि हज़रत ईसा अपनी उम्मत का सीधे मार्ग पर होना अपने जीवित रहने तक सम्बद्ध करते हैं तथा इस बात का इन्कार करते हैं कि मैंने यह शिक्षा दी है कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा करके माना करो और ख़ुदा के दरबार में कहते हैं कि जब तक मैं अपनी उम्मत में था मैंने उनको वही शिक्षा दी जिसका तूने मुझे निर्देश दिया था और जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो बाद की परिस्थितियों का मुझे कुछ ज्ञान नहीं। इन आयतों से स्पष्ट तौर पर यह भी ज्ञात होता है कि हज़रत ईसा दोबारा संसार में नहीं आएंगे अन्यथा अनिवार्य होता है कि प्रलय के दिन वह ख़ुदा तआला के समक्ष झूठ बोलेंगे, क्योंकि यदि वह प्रलय से पूर्व संसार में दोबारा आए होते तो इस स्थिति में उन का यह कहना कि मुझे कुछ ज्ञान नहीं कि मेरी उम्मत ने मेरे पश्चात् क्या आस्था धारण की स्पष्ट झूठ ठहरता है, क्योंकि जो व्यक्ति दोबारा संसार में आए और स्वयं अपनी आंखों से देख जाए कि उसकी उम्मत बिगड़ चुकी है और न केवल एक दिन अपितु निरन्तर चालीस वर्ष तक उनके कुफ्र की अवस्था देखता रहे वह क्योंकर प्रलय के दिन ख़ुदा तआला के सामने कह सकता है कि अपनी उम्मत की स्थिति से अनभिज्ञ हूं। अत: स्पष्ट है कि आप की यह आस्था कि हज़रत ईसा जीवित हैं और फिर दोबारा पृथ्वी पर आएंगे। स्पष्ट और साफ़ तौर पर पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों के विपरीत है परन्तु फिर भी आप इस आस्था को नहीं छोड़ते। अत: इस स्थिति में आप पर क्या खेद करना कि आप मेरे सैकड़ों निशानों को देखकर उनसे इनकारी हुए जाते हैं तथा जिस प्रकार एक व्यक्ति को मिट्टी खाने की आदत हो जाती है वह उत्तम व्यंजनों के प्रस्तुत किए जाने के बावजूद फिर भी मिट्टी खाने की ओर ही प्रेरित होता है। यही दशा आप की हो रही है। यह भी झूठ है कि आप यह कहते हैं कि हदीसों की दृष्टि से हम हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को

जीवित समझते हैं। सही बुख़ारी जिसे आप पवित्र क़ुर्आन के पश्चात् हदीसों की पुस्तकों में सर्वाधिक प्रमाणित ठहराते हैं उसमें तो स्पष्ट लिखा है कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम ने मे'राज की रात हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम को उन मुर्दा रूहों में देखा जो इस संसार से गुज़र चुकी हैं अपितु हज़रत यह्या के पास जो मृत्यु पा चुके हैं उन का स्थान पाया। अब ख़ुदा के बन्दे ख़ुदा तआला का कुछ तो भय करना चाहिए। यदि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम बिना रूह क़ब्ज़ किए जाने के यों ही पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए थे तो उनको रूहों से क्या संबंध था जो मृत्यु के पश्चात् दूसरे लोक में पहुंच चुकी हैं। उनके लिए तो कोई पृथक मकान या कमरा चाहिए था जिसमें शारीरिक जीवन व्यतीत करते, न कि नश्वर संसार के रहने वालों के पास चले जाते जो मृत्यु का स्वाद चख चुके हैं। अतः यह कितना बड़ा झूठ है जो आप के गले का हार हो रहा है ऐसे व्यक्ति को आप जीवित ठहराते हैं जो उन्नीस सौ वर्ष से मृत्यु पा चुका है। जब तक ख़ुदा तआला ने इस रहस्य को नहीं खोला था तब तक तो हर एक असमर्थ था। अब जब कि हकम (निर्णायक) आ गया और वास्तविकता स्पष्ट हो गई तथा पवित्र क़ुर्आन की दृष्टि से हज़रत ईसा की मृत्यु सिद्ध हो गई और हदीसों की दृष्टि से मुर्दा रूहों में उनके रहन-सहन पर गवाही मिल गई तथा ख़ुदा के कथन से तथा आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के कर्म से अर्थात् देखने से हज़रत ईसा का मृत्यु प्राप्त होना पूर्ण तौर पर सिद्ध हो गया अपितु मुस्लिम और सही बुख़ारी की हदीस से यह भी सिद्ध हो गया कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा तथा इस मसीह ने भी हकम होने की हैसियत से पवित्र क़ुर्आन तथा उन हदीसों के अनुसार गवाही दी तो अब भी न मानना, बताओ क्या यह ईमानदारी है या बेईमानी। फिर ऐसे मनुष्य पर खेद क्या करें कि वह हमारे निशानों को नहीं मानता, जबकि उसने न ख़ुदा के कथन को माना और न आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की गवाही को स्वीकार किया और न चाहा कि ख़ुदा तआला से भय करके अपनी ग़लती को त्याग दे तो ऐसा मनुष्य यदि मुझ पर झूठ बांधे तो मुझे क्यों खेद करना चाहिए। एक की गलती दूसरे के लिए प्रमाण नहीं हो सकती। यदि फैज आ'वज के युग में ऐसा विचार

हृदयों में आ गया था कि हज़रत ईसा जीवित आकाश पर चले गए हैं तो वह प्रमाण योग्य नहीं है। ख़ैरुल क़ुरून के युग में इस विचार का नामो निशान न था, अन्यथा सहाबा[रज़ि.] इस बात पर क्यों सहमत हो जाते कि समस्त अंबिया मृत्यु पा चुके हैं। क्योंकि जब रसूलुल्लाह[स.अ.व.] का निधन हुआ तो कुछ सहाबा का यह भी विचार था कि आप का निधन नहीं हुआ तथा पुनः संसार में वापस आएंगे और मुनाफ़िक़ों (कपटाचारियों) की नाक और कान काटेंगे तो उस समय हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि.] ने सब को मस्जिदे नबवी में एकत्र किया और यह आयत पढ़ी

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ[1]

अर्थात् आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम एक नबी हैं तथा उन से पूर्व समस्त अंबिया मृत्यु पा चुके हैं। तब सहाबा[रज़ि.] जो सब के सब मौजूद थे समझ गए कि आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम निस्सन्देह मृत्यु पा गए तथा उन्होंने विश्वास कर लिया कि **कोई नबी भी जीवित नहीं** और किसी ने कोई आपत्ति नहीं की कि हज़रत ईसा इस अर्थ से बाहर हैं और वह अब तक जीवित हैं। क्या यह संभव था कि रसूलुल्लाह सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के प्रेमी इस बात पर सहमत हो सकते कि उनका नबी तो छोटी सी आयु में मृत्यु पा गया और ईसा छः सौ वर्ष से जीवित चला आता है तथा प्रलय तक जीवित रहेगा अपितु वे तो इस विचार से जीवित ही मर जाते। अतः इसी कारण से हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने उन सब के समक्ष उनको यह आयत पढ़ कर सांत्वना दी وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ[2] इस आयत ने सहाबा के हृदयों को ऐसा प्रभावित किया कि वे मदीना के बाज़ारों में यह आयत पढ़ते फिरते थे जैसे उसी दिन वह उतरी थी। **इस्लाम में यह इज्माअ (सर्वसम्मति) समस्त इज्माओं से प्रथम था कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं।** किन्तु हे मौलवी साहिब ! आप को सहाबा के इस इज्माअ से क्या मतलब, आपका मत तो द्वेष है न कि इस्लाम।

इस्लाम धर्म ऐसी मिथ्या आस्थाओं से दिन-प्रतिदिन **तबाह** होता जाता है परन्तु

---

①②आले इमरान - 145

आप लोग खामोश हैं -

رونقِ دیں عقائدت بُردہ
دشمناں شاد و یار آزردہ

ज्ञात होता है कि इस इज्माअ (सर्व सम्मति) से पूर्व जो समस्त नबियों की मृत्यु पर हुआ, कुछ नादान सहाबी जिन को बुद्धिमत्ता से कुछ भाग प्राप्त न था वे भी इस आस्था से अपरिचित थे कि समस्त अंबिया मृत्यु पा चुके हैं। इसी कारण से सिद्दीक़[रज़ि.] को इस आयत को सुनाने की आवश्यकता पड़ी। इस आयत को सुनने के पश्चात् सब ने विश्वास कर लिया कि पहले समस्त लोग क़ब्रों में प्रवेश कर चुके हैं। इसी कारण से हस्सान बिन साबित[रज़ि.] ने कुछ **शे'र** आंहज़रत[स.अ.व.] के निधन पर शोक व्यक्त करने में बनाए जिसमें उस ने इसी ओर संकेत किया है और वे ये हैं -

كنت السّواد لناظرى فعمى عليك الناظر
من شاء بعدك فليمت فعليك كنت احاذر

(अनुवाद) तू मेरी आंखों की पुतली था। अत: मैं तो तेरे मरने से अंधा हो गया। अब तेरे पश्चात् जो चाहे मरे (ईसा हो या मूसा हो) मुझे तो तेरे ही मरने का भय था। अत: ख़ुदा तआला उसे अच्छा प्रतिफल प्रदान करे प्रेम इसी का नाम है[1]।

---

①हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़[रज़ि.] का इस उम्मत पर इतना बड़ा उपकार है कि उसका धन्यवाद नहीं हो सकता। यदि वह समस्त सहाबा[रज़ि.] को मस्जिद-ए-नबवी में एकत्र करके यह आयत न सुनाते कि पहले समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं तो यह उम्मत तबाह हो जाती, क्योंकि ऐसी स्थिति में उस युग के उपद्रवी उलेमा यही कहते कि सहाबा[रज़ि.] का भी यही मत था कि हज़रत ईसा जीवित हैं परन्तु जब सिद्दीक़ अकबर[रज़ि.] का कथित आयत प्रस्तुत करने से इस बात पर समस्त सहाबा का इज्मा हो चुका कि समस्त पहले नबी मृत्यु पा चुके हैं अपितु इस इज्मा पर शे'र बनाए गए। अबू बक्र की रूह पर ख़ुदा तआला हज़ारों रहमतों की वर्षा करे, उसने समस्त लोगों को तबाही से बचा लिया। इस

और यदि लेशमात्र इन्साफ हो तो ज्ञात होगा कि स्वयं हज़रत मसीह अलैहिस्सलाम इस आस्था के विरोधी थे कि कोई आकाश पर जाकर फिर संसार में आता है। इसीलिए जब उनसे इल्यास नबी के दोबारा आने के बारे में यहूदियों ने पूछा और पुस्तकें दिखाईं कि लिखा है कि इल्यास दोबारा संसार में आएगा। तब इल्यास के आने के पश्चात् वह मसीह मौऊद आएगा जिस के आने का यहूदियों को वादा दिया गया था तथा बताया गया था कि वह उनका ख़ातमुल अंबिया होगा। तो ईसा अलैहिस्सलाम ने उनका यह आरोप सुनकर कहा कि यूहन्ना नबी जो तुम में मौजूद है और मुझ से पहले आ चुका है यही इल्यास है जिसने स्वीकार करना हो स्वीकार करे। आपका यह कथन यहूदियों को बहुत ही बुरा लगा तथा उन्हें काफ़िर, बिदअती और उम्मत की सर्वसम्मति के विरुद्ध एक बात कहने वाला ठहराया। अत: वर्तमान में एक पुस्तक एक बड़े यहूदी ने लिखी है जो मेरे पास मौजूद है उसमें वह हज़रत ईसा[अ.] को झूठा सिद्ध करने के लिए बहुत शोर डालता है और उन को वह (हम ख़ुदा से शरण चाहते हैं) महा झूठा, काफ़िर और नास्तिक कहता है तथा लोगों

इज्माअ में समस्त सहाबा सम्मिलित थे। उनमें से एक सदस्य भी बाहर न था। यह सहाबा का प्रथम इज्माअ था और अत्यन्त धन्यवाद योग्य कार्यवाही थी और अबू बक्र[रज़ि.] तथा मसीह मौऊद की परस्पर एक समानता है और वह यह कि पवित्र क़ुर्आन में ख़ुदा तआला का वादा दोनों के बारे में यह था कि जब एक भय की अवस्था इस्लाम पर छा जाएगी और धर्म के विमुख होने का क्रम आरंभ होगा तब उनका प्रकटन होगा। अत: हज़रत अबू बक्र और मसीह मौऊद के समय में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम की मृत्यु के पश्चात् सैकड़ों मूर्ख अरब मुर्तद हो गए थे और केवल दो मस्जिदें शेष थीं जिनमें नमाज़ पढ़ी जाती थी। हज़रत अबू बक्र ने उन्हें दोबारा इस्लाम पर स्थापित किया और ऐसा ही मसीह मौऊद के समय में कई लाख लोग इस्लाम से मुर्तद होकर ईसाई बन गए और ये दोनों अवस्थाएं पवित्र क़ुर्आन में वर्णित हैं अर्थात् भविष्यवाणी के तौर पर इस का वर्णन है।

के सामने इस बात की अपील करता है और कहता है कि तुम स्वयं न्यायकर्ता बन कर विचार करो कि ख़ुदा ने जिस स्थिति में अपनी पुस्तक में यह सूचना दी थी जैसा कि मलाकी ग्रन्थ में लिखा है, जिसके सही और ख़ुदा की ओर से होने का उस व्यक्ति को इक़रार है कि यहूदियों का मसीह मौऊद नहीं आएगा जब तक कि इल्यास नबी दोबारा संसार में आकाश से उतर कर न आए। और मालूम है कि अब तक इल्यास नबी आकाश से नहीं उतरा जिसका उतरना मसीह मौऊद से पहले आवश्यक है तो हम उसे क्योंकर सच्चा मसीह मौऊद समझ लें। क्या हम अपने ईमान को नष्ट कर दें या तौरात से विमुख हो जाएं, क्या करें जबकि खुले-खुले शब्दों में मलाकी नबी ने ख़ुदा तआला से वह्यी पा कर हमें सूचना दी है कि अवश्य है कि मसीह मौऊद यहूदियों में पैदा न हो जब तक ख़ुदा के वादे के अनुसार इल्यास नबी दोबारा संसार में न आए। तो फिर यह व्यक्ति यहूदियों का मसीह मौऊद क्योंकर हो सकता है[1]। और जबकि ऐसी स्पष्टता से इल्यास नबी के दोबारा आने

---

[1] यहूदियों का यह मत है कि मसीह दो हैं (1) एक वह मसीह जो पहले आने वाला है जिसके लिए यह शर्त है कि उस से पहले इल्यास दोबारा संसार में आएगा। यही मसीह था जिसके बारे में हज़रत ईसा ने दावा किया कि वह मैं हूं परन्तु यहूदी विद्वानों ने इस दावे को स्वीकार न किया और कहा कि यह दावा ख़ुदा की किताब के स्पष्ट आदेशों के विपरीत है। कारण यह कि जैसा कि ख़ुदा की किताब बताती है कि इल्यास दोबारा आकाश से पृथ्वी पर नहीं आया। हज़रत ईसा ने बार-बार कहा कि ऐसी इबारतें रूपक के तौर पर होती हैं और यहां इल्यास से अभिप्राय यह्या अर्थात् यूहन्ना नबी है परन्तु चूंकि यहूदी कट्टर प्रत्यक्ष बातों को मानने वाले थे उन्होंने इस व्याख्या को स्वीकार न किया और अब तक इसी कारण से हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं करते और बहुत निरादर करते हैं (2) दूसरा मसीह जिनकी यहूदियों को प्रतीक्षा है वह है जिसके बारे में उनकी आस्था है कि वह छठे हज़ार के अन्त में आएगा। इसलिए आजकल यहूदियों में नितान्त व्याकुलता है क्योंकि चन्द्रमा के हिसाब के अनुसार आदम से अब तक छठा हज़ार समाप्त हो गया और अब

की ख़बर मसीह मौऊद के आने वे पूर्व हमें मिली है जिसकी कोई तावील (प्रत्यक्ष अर्थों से हटकर व्याख्या) नहीं हो सकती तो फिर यदि हम बनावटी तौर पर प्रत्यक्ष से हट कर इस भविष्यवाणी की कुछ व्याख्या कर दें तो यह बहुत बड़ी बेईमानी होगी। हमें ख़ुदा ने अपनी किताब में यह तो नहीं बताया कि मसीह मौऊद से पहले इल्यास नबी का कोई मसील (समरूप) आएगा अपितु उसने तो स्पष्ट तौर पर हमें खबर दी है कि स्वयं इल्यास ही दोबारा आकाश से उतरेगा, तो फिर ऐसी स्पष्ट ख़बर से हम क्योंकर इन्कार कर दें और फिर अन्त में लिखता है कि यदि ख़ुदा ने प्रलय के दिन हम से पूछा कि तुम ने इस व्यक्ति अर्थात् यसू बिन मरयम को क्यों स्वीकार न किया तथा क्यों उस पर ईमान न लाए तो हम मलाकी नबी की किताब उसके सामने प्रस्तुत कर देंगे।

अत: यहूदियों की सदैव से यह आस्था है कि उनका सच्चा मसीह मौऊद जो पहला मसीह मौऊद है तभी आएगा जब उस से पूर्व इल्यास नबी दोबारा संसार में आएगा परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ने उन की एक न सुनी और उनको यही कहा कि उस आने वाले से अभिप्राय यूहन्ना नबी है। यही हज़रत ईसा[अ.] का फैसला है जिसके विरुद्ध आप लोगों ने शोर मचा रखा है। क्या इल्यास नबी दोबारा संसार में आ गया ताकि हज़रत ईसा भी दोबारा आ जाएं ? अपितु यदि किसी व्यक्ति का दोबारा संसार में आना वैध है तो इस से हज़रत ईसा सच्चे नबी नहीं ठहर सकते और उनकी नुबुव्वत झूठी होती है, क्योंकि

सातवां हज़ार चल रहा है परन्तु वह मसीह मौऊद अब तक नहीं आया। ईसाइयों के अन्वेषकों की भी यही आस्था थी कि उनमें मसीह का दोबारा आना छठे हज़ार के अन्त में होगा। अब यह भी निराशा में पड़ गए क्योंकि छठे हज़ार का अन्त हो गया अन्तत: उन्होंने निराश होकर यह राय प्रकट की कि कलीसिया को ही मसीह समझ लो और आने वाले से हाथ धो बैठे। अत: यहूदियों के विचार में मसीह दो हैं और अन्तिम मसीह मौऊद छठे हज़ार के अन्त में अपने वाला था वह उनके नज़दीक पहले मसीह से बहुत श्रेष्ठ और तेजस्वी है, किन्तु वे तो दोनों मसीहों से वंचित रहे। न वह मिला न वह मिला। (इसी से)

ऐसी स्थिति में स्वीकार करना पड़ता है कि उन्होंने अकारण अपनी बात बनाने के लिए यह्या नबी को इल्यास बना दिया अन्यथा इल्यास अभी आकाश से नहीं उतरा था। क्या बुद्धिमान के लिए इल्यास नबी के दोबारा आने का क़िस्सा जिसके कारण कई लाख यहूदी हज़रत ईसा को अस्वीकार करके नर्क में प्रवेश कर गए नसीहत का स्थान नहीं ?

जबकि इल्यास नबी जिसका आकाश से उतरना हज़रत ईसा के दावे की सच्चाई के लिए एक लक्षण निर्धारित किया गया था आकाश से नहीं उतरा, तो अब वही मार्ग इस युग के मुसलमान क्यों धारण करते हैं जिसके कारण इस से पूर्व यहूदी काफ़िर हो गए। यदि आकाश से उतरना ख़ुदा की सुन्नत में सम्मिलित होता तो इल्यास के मार्ग में कौन से पत्थर पड़ गए थे कि इसके बावजूद कि ख़ुदा की किताब में उसके उतरने का वादा था फिर भी उतर न सका और हज़रत ईसा को यहूदियों के मुकाबले पर लज्जित होना पड़ा और अन्ततः यह्या नबी को इल्यास नबी का मसील (समरूप) ठहरा कर यहूदियों की व्यर्थ बातों से पीछा छुड़ाया।

विचार करना चाहिए कि ईसा[अ.] को यहूदियों के इन वाद-विवादों से कितना दुःख पहुंचता होगा जबकि बार-बार कहते थे कि तू किस प्रकार सच्चा मसीह हो सकता है जबकि तुझ में मसीह मौऊद के लक्षण नहीं पाए जाते, क्योंकि ख़ुदा की किताब स्पष्ट शब्दों में कहती है कि मसीह मौऊद नहीं आएगा जब तक उस से पहले इल्यास नबी दोबारा संसार में न आ जाए। इस तर्क में प्रत्यक्षतः यहूदी सच्चे थे क्योंकि इल्यास आकाश से नहीं उतरा था और न अब तक आकाश से उतरा। मालूम होता है कि यहूदियों ने धृष्टताओं एवं उद्दण्डताओं में इतना अधिक साहस किया उसका यही कारण था कि ख़ुदा की किताब के प्रत्यक्ष शब्दों की दृष्टि से जो मसीह मौऊद का लक्षण था वह लक्षण हज़रत मसीह में न पाया गया और हज़रत मसीह अपने हृदय में समझ चुके थे कि मेरा उत्तर केवल व्याख्यात्मक है जिसे यहूदी स्वीकार नहीं करेंगे। इसलिए उन्होंने नर्म शब्दों में कहा कि जिस इल्यास ने दोबारा संसार में आना था वह यही यह्या

बिन ज़करिया है चाहो तो स्वीकार करो। इसी प्रकार आकाश पर चढ़ने और उतरने का हमारे नबी[स.अ.व.] से चमत्कार मांगा गया था जिसका पवित्र क़ुर्आन में वर्णन है। अन्ततः उनके स्पष्ट उत्तर दिया गया तथा ख़ुदा ने कहा -

قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ هَلۡ کُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوۡلًا①

और ईसाइयों को यहूदी अब तक परेशान किया करते हैं कि यदि ईसा यथार्थ में मसीह मौऊद था तो उस से पूर्व इल्यास नबी क्यों नहीं उतरा। ईसाई हमेशा इस आरोप से निरुत्तर रहे हैं तथा उनके समक्ष बात नहीं कर सकते।

अतः हमारे विरोधियों को इल्यास नबी के दोबारा आने की भविष्यवाणी से नसीहत प्राप्त करनी चाहिए। ऐसा न हो कि उन का अंजाम यहूदियों की भांति हो परन्तु समरूपता पूर्ण करने के लिए यह भी आवश्यक था जैसा कि उन पहले यहूदियों ने हज़रत इल्यास के दोबारा आने के बारे में हज़रत ईसा से बहुत झगड़ा किया था तथा उनको अधर्मी, काफ़िर और नास्तिक ठहराया था। इसी प्रकार हज़रत ईसा के दोबारा आने में उन लोगों का मुझ से भी झगड़ा होता। ये नादान समझते नहीं कि जिस व्यक्ति के दोबारा आने के लिए रोते हैं और मुझे गालियां निकालते हैं, वही मेरे दावे की उन पर डिग्री करता है, क्योंकि ठीक इस वर्णन के अनुसार जो हज़रत ईसा के दोबारा आने के बारे में इन लोगों के सामने प्रस्तुत करता हूं। हज़रत ईसा का यही वर्णन यहूदियों के सामने था और जिस प्रकार ख़ुदा ने मेरा नाम ईसा रखा है इसी प्रकार ख़ुदा ने यह्या नबी का नाम इल्यास रख दिया था और यही उदाहरण जो वर्णन हो चुका है एक ईमानदार के लिए संतोषजनक है।

ख़ुदा का भी कथन है -

فَسۡـَٔلُوۡۤا اَهۡلَ الذِّکۡرِ اِنۡ کُنۡتُمۡ لَا تَعۡلَمُوۡنَ②

और यहूदी तो एक सीमा तक असमर्थ भी थे, क्योंकि यहूदियों के युग में अभी

---

① बनी इस्राईल - 94

② अलअंबिया - 8

किसी मनुष्य के दोबारा आने में ख़ुदा तआला की किताबों में निर्णय नहीं हुआ था, किन्तु अब तो निर्णय हो चुका। क्या इल्यास नबी मलाकी नबी की भविष्यवाणी के अनुसार दोबारा संसार में आ गया ताकि ये लोग भी हज़रत ईसा के दोबारा आने की आशा रखें तथा सही हदीसों में तो दोबारा आने का कोई शब्द भी नहीं, केवल नुज़ूल (उतरने) का शब्द है जो केवल मान और सम्मान के लिए आता है। प्रत्येक प्रिय मेहमान के संबंध में कह सकते हैं कि जब वह आएंगे तो वह हमारे यहां उतरेंगे। तो क्या इस से यह समझा जाता है कि वह आकाश से वापस आएंगे ? वापस आने के लिए अरबी भाषा में 'रुजू' का शब्द है न कि नुज़ूल का। बहुत खेद है कि अकारण यह आस्था जो ईसाई धर्म की सहायता करती है, मुसलमान कहलाने वालों के गले का हार हो गई।

हमारे विरोधी लज्जित और निरुत्तर होकर अन्त में यह बहाना प्रस्तुत कर देते हैं कि हमारे बुज़ुर्ग ऐसा ही कहते चले आए हैं। नहीं सोचते कि वे बुज़ुर्ग निर्दोष न थे अपितु जैसा कि यहूदियों में बुज़ुर्गों ने भविष्यवाणियों के समझने में ठोकर खाई उन बुज़ुर्गों ने भी ठोकर खाली और ख़ुदा तआला की नीति एवं हित से ऐसी ही एक ग़लत आस्था उन में फैल गई जैसी कि यहूदियों में यह आस्था फैल गई थी कि इल्यास नबी दोबारा आकाश से उतरेगा और यहूदियों के बुज़ुर्ग बड़े प्रेम और रुचि से इल्यास नबी के दोबारा आने की प्रतीक्षा में थे। उनकी पद्यों तथा गद्यों में बड़े दर्द और आत्मविस्मृति से प्रतीक्षा की आशाएं पाई जाती हैं तथा तुम्हारे बुज़ुर्ग तो निर्दोष न थे किन्तु इसके बावजूद कि उनमें नबी और ख़ुदा से वह्यी पाने वाले भी थे सब ग़लती में ग्रस्त रहे और यह आस्था गुप्त रही कि इल्यास नबी के दोबारा आने से कोई अन्य नबी अभिप्राय है न यह कि वास्तव में इल्यास ही उतरेगा और उस समय तक कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अवतरित हुए किसी नबी या वली को यह गुप्त रहस्य समझ न आया कि इल्यास के दोबारा आने से अभिप्राय यह्या नबी है न कि यथार्थ में इल्यास। अत: यह कोई नई बात नहीं कि इस उम्मत के कुछ बुज़ुर्ग किसी एक बात के समझने में धोखा खाएं और विचित्र यह है कि इस समस्या में

उन बुज़ुर्गों की सहमति नहीं। बहुत से ऐसे उलेमा गुज़रे हैं कि वे हज़रत ईसा की मृत्यु को मानते हैं उनमें से हज़रत इमाम मालिक[रज़ि.] भी हैं जैसा कि लिखते हैं —

قد اختلف فی عیسٰی علیه السلام هل هو حیّ او میّت و قال مالك مات

अर्थात् हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में मतभेद है कि वह जीवित है या मर गया तथा मालिक[रज़ि.] ने कहा है कि वह मर गया है और मुहियुद्दीन इब्ने अरबी साहिब अपनी एक पुस्तक में जो उनकी अन्तिम पुस्तक है लिखते हैं कि ईसा तो आएगा, परन्तु बुरूज़ी (सदृश) तौर पर अर्थात् इस उम्मत का कोई और व्यक्ति ईसा की विशेषता पर आ जाएगा। सूफ़ियों का यह निर्णित मसअला है कि कुछ कामिल लोग इसी तौर पर दोबारा संसार में आ जाते हैं कि उनकी रूहानियत किसी और पर झलक डालती है तथा इस कारण से वह दूसरा व्यक्ति जैसे पहला व्यक्ति ही हो जाता है। हिन्दुओं में भी ऐसा ही सिद्धान्त है तथा ऐसे व्यक्ति का नाम वे **अवतार** रखते हैं।

और यह विचार कि कोई जीवित व्यक्ति आकाश पर चला गया या लुप्त हो गया। यह भी एक प्राचीन विचार पाया जाता है, जिसके पहले युगों में कुछ और अर्थ थे और फिर मूर्खों ने समझ लिया कि वास्तव में कोई व्यक्ति पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला जाता है और फिर आता है। सय्यद अहमद साहिब बरेलवी के बारे में भी उन के गिरोह के लोगों में कुछ ऐसे ही विचार आज तक फैले हुए हैं, जैसे वह भी हज़रत ईसा की भांति दोबारा आएंगे और यद्यपि वह प्रथम आगमन में हज़रत ईसा की भांति असफल रहे परन्तु दूसरी बार ख़ूब तलवार चलाएंगे। मूल बात यह है कि जो लोग बड़े-बड़े दावे करके संसार से असफल और निराश चले गए उन के दोषों को छिपाने के लिए ये बातें बनाई गईं।

हमारे नबी[स.अ.व.] के बारे में कोई आस्था नहीं रखता कि आप भी दोबारा आएंगे, क्योंकि आप[स.] ने अपने प्रथम आगमन में ही काफ़िरों को वह हाथ दिखाए कि अब तक याद करते हैं तथा पूर्ण सफलता के साथ आप का देहावसान हुआ।

और ज्ञात होता है कि इब्नुल अरबी साहिब अन्तिम आयु में अपने पहले कथनों से

लौट गए थे। इसलिए उन का अन्तिम बयान पहले बयान से विपरीत है। इसी प्रकार सूफ़ियों के कुछ अन्य फ़िर्क़े खुले तौर पर हज़रत ईसा की मृत्यु को मानते हैं और हम अभी वर्णन कर चुके हैं कि आंहज़रत[स.अ.व.] के निधन के समय सहाबा का इस पर इज्मा (सर्वसम्मति) हो गया था कि पूर्व अंबिया जिन में हज़रत ईसा भी सम्मिलित है मृत्यु पा चुके हैं। उनमें से एक भी जीवित नहीं। फिर जैसे-जैसे इस्लाम धर्म में **मूर्खता** और बिदअत फैलती गईं, यह बिदअत भी धर्म का एक अंग हो गई कि हज़रत ईसा मुर्दा रूहों की जमाअत में से निकल कर फिर संसार में वापस आएंगे। इस आस्था ने इस्लाम को बहुत हानि पहुंचाई है, क्योंकि समस्त संसार में से केवल एक ही मनुष्य को यह विशेषता प्रदान की है कि आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ चला गया और किसी युग में उसी शरीर के साथ वापस आएगा। यह आस्था हज़रत ईसा को ख़ुदा बनाने की पहली ईंट है क्योंकि उनको एक विशेषता दी गई है जिसमें कोई अन्य भागीदार नहीं। ख़ुदा इस्लाम के चेहरे से शीघ्र यह दाग़ दूर करे। आमीन।

अन्त में मैं मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब को केवल ख़ुदा को ध्यान में रखते हुए नसीहत करता हूं कि आप आयु के अन्तिम पड़ाव में हैं अब ख़ुदा तआला के मुकाबले पर व्यर्थ चालाकियों को त्याग दें। आप ने बहुत ज़ोर लगाया, हर प्रकार का छल किया तथा प्रकाश को बुझाने के लिए लज्जनीय योजनाओं से काम लिया परन्तु अन्तत: असफल रहे। यदि मैं झूठ बनाने वाला होता तो आप का कहीं न कहीं हाथ पड़ जाता और मैं कब का तबाह हो जाता। ऐसा व्यक्ति जो प्रतिदिन ख़ुदा पर झूठ बोलता है और स्वयं ही एक बात बनाता है और फिर कहता है कि यह ख़ुदा की वह्यी है जो मुझे हुई है। ऐसा अधम व्यक्ति तो कुत्तों और सुअरों तथा बन्दरों से भी अधिक बुरा होता है। फिर कब संभव है कि ख़ुदा उसकी सहायता करे। यदि यह कारोबार मनुष्य का होता और ख़ुदा की ओर से न होता तो इसका नामोनिशान न रहता। पच्चीस वर्ष अपितु इस से अधिक समय गुज़र गया, जब मैंने दावा किया था कि मैं ख़ुदा तआला की ओर से

हूं। यद्यपि इस दावे पर एक संसार के विरोध का जोश रहा, परन्तु हे मौलवी साहिब ! आप ने तो मुझे कष्ट देने के प्रयास में कोई कमी नहीं छोड़ी। आप न केवल प्रजा को अपितु हमेशा अंग्रेज़ी सरकार को भी धोखा देते रहे कि यह व्यक्ति झूठ बनाने वाला और गवर्नमेन्ट का अशुभचिन्तक है। मुझ पर क़त्ल जैसे गंभीर मुकद्दमे किए गए और आप ऐसे मुक़द्दमों को सिद्ध कराने के लिए स्वयं साक्षी बन कर कचहरी में उपस्थित हुए तथा मुझ पर कुफ्र के फ़त्वे लिखाए और लोगों को मुझ से विमुख करना चाहा। यह उस युग की बात है जबकि मेरे साथ बहुत थोड़े लोग थे और आप की विरोधी कोशिशों के बावजूद कई लाख लोग मेरे साथ हो गए। यदि मैं ख़ुदा तआला की ओर से न होता तो मुझे तबाह करने के लिए आपकी कोशिशों की आवश्यकता न थी। मैं स्वयं अपने झूठ बनाने तथा कर्मों के दण्ड से तबाह हो जाता। यह बात सद्बुद्धि स्वीकार नहीं कर सकती कि एक झूठ बनाने वाले को एक ऐसी लम्बी ढील दी जाए कि जो आंहज़रत[स.अ.व.] के अवतरण के समय से भी अधिक हो, क्योंकि इस प्रकार से अमन उठ जाता है तथा सच्चे और झूठे में परस्पर कोई अन्तर नहीं रह जाता। भला इस बात का तो उत्तर दो कि जब से मैंने दावा किया है मेरे विरुद्ध फौजदारी के कितने मुक़द्दमे किए गए और प्रयत्न किया गया कि मुझे गिरफ़्तार कराएं। आपने ऐसे मुक़द्दमों के समर्थन में कोई कमी नहीं छोड़ी, परन्तु क्या किसी मुक़द्दमे में आप या आप का गिरोह सफल भी हुआ ? यदि मैं सच्चा न होता तो क्या कारण कि प्रत्येक स्थान तथा प्रत्येक अवसर पर ख़ुदा तआला झूठे की सहायता करता रहा और जो सच्चे कहलाते थे प्रत्येक मैदान में उनका मुंह काला होता रहा। बद्दुआएं करते-करते सज्दों में उनकी नाक घिस गई, किन्तु दिन प्रतिदिन ख़ुदा मेरी सहायता करता रहा तथा मेरे मुकाबले पर उनकी कोई दुआ स्वीकार न हुई और आप का तो अब तक यह आचरण रहा है कि बार-बार घटना के विपरीत बातें मेरे बारे में अपनी पत्रिकाओं और अख़बारों में लिखवा कर अंग्रेज़ी सरकार को उकसाते और मुझे से बदगुमान करना चाहते हैं। ऐसी चपलताओं से क्या हो सकता है। आप

स्मरण रखें कि आप इन चपलताओं में सदैव असफल रहेंगे, कोई बात पृथ्वी पर नहीं हो सकती जब तक आकाश पर निर्णय न पाए।

इस **उपकारी सरकार** के बारे में मेरे हृदय में कोई बुरा इरादा नहीं है। मैं जवान था और अब बूढ़ा हो गया। हमेशा से मैंने अपनी बहुत सी पुस्तकों में बार-बार यही प्रकाशित किया है कि इस **सरकार** के हमारे ऊपर बहुत से उपकार हैं कि उसकी छत्रछाया में हम स्वतंत्रतापूर्वक अपने **प्रचार** का कार्य पूरा करते हैं। आप जानते हैं कि प्रत्यक्ष सामानों की दृष्टि से आप के रहने के लिए और भी देश हैं और यदि आप इस देश को छोड़ कर मक्का या मदीना या क़ुस्तुनतुनिया में चले जाएं तो समस्त देश आपकी विचारधारा तथा पथ के अनुसार हैं परन्तु यदि मैं जाऊं तो मैं देखता हूं कि वे सब लोग मेरे लिए बतौर दरिन्दों के हैं, इल्ला माशा अल्लाह। ऐसी स्थिति में स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला का यह मुझ पर उपकार है कि ऐसी सरकार की छत्रछाया में मुझे भेजा गया है जिसकी पद्धति हृदय को कष्ट देना नहीं, और अपनी प्रजा को अमन देती है, किन्तु इसके बावजूद मैं केवल एक ही अस्तित्व पर भरोसा रखता हूं तथा उसी के गुप्त अधिकारों में से जानता हूं कि उसने इस सरकार को मेरे बारे में हमदर्द बना रखा है और किसी दुष्ट जासूस का ज़ोर नहीं चलने दिया तथा मैं आशान्वित हूं कि इससे पूर्व कि मैं इस संसार से गुज़र जाऊं मैं अपने उस वास्तविक स्वामी के अतिरिक्त अन्य किसी का मुहताज नहीं हूंगा और वह प्रत्येक शत्रु से अपनी शरण में रखेगा।

فَالحمد للّٰہ اوّلًا و اٰخرًا و ظاھرًا و باطنًا ھو ولیّ فی الدّنیا و الاٰخرۃ وھو نعم المولٰی و نعم النّصیر

और मैं विश्वास रखता हूं कि वह मेरी सहायता करेगा और मुझे कदापि-कदापि नष्ट नहीं करेगा। यदि समस्त संसार मेरे विरोध में हिंसक पशुओं से अधिक निकृष्ट हो जाए तब भी वह मेरी सहायता करेगा। मैं असफलता के साथ कदापि क़ब्र में नहीं जाऊंगा क्योंकि मेरा ख़ुदा हर क़दम में मेरे साथ है और मैं उसके साथ हूं। मेरे अन्त:करण

का उसे जो ज्ञान है किसी अन्य को नहीं। यदि समस्त लोग मुझे छोड़ दें तो ख़ुदा एक और क़ौम पैदा करेगा जो मेरे सहायक होंगे। मूर्ख विरोधी विचार करता है कि मेरे छल-प्रपंचों से यह बात बिगड़ जाएगी और सिलसिला अस्त-व्यस्त हो जाएगा, परन्तु मूर्ख नहीं जानता कि जो आकाश पर निर्णय पा चुका है पृथ्वी की शक्ति में नहीं कि उसे मिटा सके। मेरे ख़ुदा के आगे पृथ्वी और आकाश कांपते हैं। ख़ुदा वही है जो मुझ पर अपनी पवित्र वह्यी उतारता है और ग़ैब (परोक्ष) के रहस्यों से मुझे अवगत कराता है, उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं। आवश्यक है कि वह इस सिलसिले को चलाए और बढ़ाए तथा उन्नति दे। जब तक वह पवित्र और अपवित्र में अन्तर करके न दिखाए। प्रत्येक विरोधी को चाहिए कि यथासंभव इस सिलसिले को मिटाने के लिए प्रयत्न करे और नाख़ूनों तक ज़ोर लगाए, फिर देखे कि अन्ततः वह विजयी हुआ अथवा ख़ुदा। इससे पूर्व अबू जहल और अबू लहब और उनके सहयोगियों ने सच को मिटाने के लिए क्या-क्या ज़ोर लगाए थे परन्तु अब वे कहां हैं ? वह फ़िरऔन जो मूसा को मारना चाहता था अब उसका कुछ पता है ? अतः निश्चित समझो कि सच्चा नष्ट नहीं हो सकता। वह फ़रिश्तों की सेना के अन्दर फिरता है। दुर्भाग्यशाली वह जो उसे न पहचाने।

आप विचार करें कि आप के वह मुजद्दिद साहिब कहां गए जिन को आप ने मुजद्दिद की उपाधि दी थी। यदि आकाश में उनकी यह उपाधि होती तो वह अपने कथनानुसार जिसको उन्होंने हुजजुल किरामा में प्रकाशित किया है, इस सदी से पच्चीस वर्ष तक जीवित रहते परन्तु वह तो सदी के प्रारंभ में ही मृत्यु पा गए और जिसे आप झूठा कहते हैं उसने सदी का लगभग चौथा भाग पा लिया है।

मैं आपको मात्र ख़ुदा के लिए पुनः स्मरण कराता हूं कि यों तो प्रत्येक नबी का विरोधी यही दावा करता है कि उस नबी से कोई चमत्कार प्रकट नहीं हुआ और न उसकी कोई भविष्यवाणी पूरी हुई। जैसा कि हम यहूदियों की पुस्तकों में हज़रत ईसा के संबंध में देखते हैं और यही हम ईसाइयों की पुस्तकों में अपने नबी[स.अ.व.] के संबंध में लिखा

हुआ पाते हैं, परन्तु मैं आपको एक भला मशवरा देता हूं कि दरिन्दगी की पद्धति छोड़ कर अब भी आप मेरे बारे में छान-बीन कर लें प्रथम पुस्तकीय तौर पर मुझ से प्रमाण ले लें कि क्या यह आवश्यक नहीं कि इस उम्मत का मसीह इसी उम्मत में से होना चाहिए और फिर दूसरे यह देख लें कि मेरे दावे के समर्थन में मुझ से कितने निशान प्रकट हुए हैं तथा जो कुछ कहा जाता है कि अमुक भविष्यवाणी पूरी न हुई यह मात्र बनाया हुआ झूठ[1] है अपितु समस्त भविष्यवाणियां पूरी हो गईं तथा मेरी भविष्यवाणी पर कोई ऐसा आरोप नहीं हो सकता जो पहले नबियों की भविष्यवाणियों पर जो मूर्ख और बेईमान लोग नहीं कर चुके।

यदि ख़ुदा तआला का भय हो तो आप लोग समझ सकते हैं कि मेरे साथ आप का मुकाबला संयम से दूर है क्योंकि आप लोगों का दस्तावेज़ केवल वे हदीसें हैं जिन में से कुछ बनावटी और कुछ कमज़ोर तथा उनमें से कुछ ऐसी हैं जिनके अर्थ आप लोग नहीं समझते, परन्तु आपके मुकाबले पर मेरा दावा पूर्ण विवेक के साथ है और जिस वह्यी

---

① जिस स्थिति में पवित्र क़ुर्आन अर्थात् आयत فلمّا توفّيتنى से हज़रत ईसा की मृत्यु सिद्ध है और सही बुख़ारी में इब्ने अब्बास[रज़ि.] से مُتَوَفِّيْكَ के ये अर्थ लिखे हैं कि مُمِيتك तथा शाह वलीउल्लाह साहिब भी "फौज़ुल कबीर" में مُتَوَفِّيْكَ के अर्थ مُمِيتك लिखते हैं तथा पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि रफ़ा तवफ़्फ़ा के बाद है, क्योंकि अल्लाह तआला कहता है - يٰعِيْسٰى اِنِّىْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ (आले इमरान-56) यह नहीं कहा कि يا عيسٰى انى رافعك الىّ و متوفّيك और अपनी ओर से पवित्र क़ुर्आन के शब्दों में उनके स्थान से फेरना इस आयत का चरितार्थ बनता है कि يُحَرِّفُوْنَ الْكَلِمَ عَنْ مَّوَاضِعِهٖ (अलमाइदह - 14) और कोई सही हदीस सिद्ध नहीं हुई जो अनुमति देती हो कि इस आयत में رافعك पहले है और مُتوفّيك बाद में। इस स्थिति में हज़रत ईसा की मृत्यु हर प्रकार से सिद्ध है कि आने वाला ईसा उम्मती है जैसा कि सही बुख़ारी में है कि اِمَامُكُمْ مِنْكُمْ और मुस्लिम में है कि اَمَّكُمْ مِنْكُمْ (इसी से)

ने मुझे सूचना दी है कि हज़रत ईसा[अ.] की मृत्यु हो चुकी है और आने वाला मसीह मौऊद यही ख़ाकसार है उस पर मैं ऐसा ही ईमान रखता हूं जैसा कि मैं पवित्र क़ुर्आन पर ईमान रखता हूं और यह ईमान केवल सुधारणा से नहीं अपितु ख़ुदा की वह्यी के प्रकाश ने जो सूर्य के समान मुझ पर चमका है मुझे यह ईमान प्रदान किया है। जिस विश्वास को ख़ुदा ने विलक्षण निशानों की निरन्तरता तथा विश्वसनीय आध्यात्म ज्ञानों की प्रचुरता से तथा दैनिक निश्चित वार्तालाप एवं सम्बोधनों से चरमोत्कर्ष तक पहुंचा दिया है उसे मैं क्योंकर अपने हृदय से बाहर निकाल दूं। क्या मैं इस आध्यात्म ज्ञान की ने'मत तथा सही ज्ञान को अस्वीकार कर दूं जो मुझे दिया गया है या वे आकाशीय निशान जो मुझे दिखाए जाते हैं मैं उन से मुख फेर लूं या मैं अपने स्वामी और अपने मालिक की आज्ञा से अवज्ञाकारी हो जाऊं, क्या करूं। मुझे ऐसी स्थिति से हज़ार बार मरना उचित है कि वह जो अपने सौन्दर्य एवं सुन्दरता के साथ मुझ पर प्रकट हुआ है उस से विमुख हो जाऊं। यह सांसारिक जीवन कब तक तथा ये संसार के लोग मुझ से क्या वफ़ादारी करेंगे ताकि मैं उनके लिए उस प्रिय मित्र को छोड़ दूं। मैं भली भांति जानता हूं कि मेरे विरोधियों के हाथ में केवल एक छाल है जिसमें कीड़ा लग गया है। वे मुझे कहते हैं कि मैं गूदे (सार) को छोड़ दूं और ऐसी छाल को ले लूं। मुझे डराते और धमकियां देते हैं परन्तु मुझे उसी प्यारे की सौगंध है जिसे मैंने पहचान लिया है कि मैं इन लोगो की धमकियों की कुछ भी परवाह नहीं करता। मुझे दूसरे के साथ प्रसन्नता की अपेक्षा उसके साथ शोक उत्तम है, मुझे उसके साथ मौत उत्तम है उसकी अपेक्षा कि उसको छोड़कर लम्बी आयु हो। जिस प्रकार आप लोग दिन को देखकर उसे रात नहीं कह सकते, इसी प्रकार वह प्रकाश जो मुझे दिखाया गया मैं उसे अंधकार नहीं समझ सकता, जबकि आप अपनी उन आस्थाओं को त्याग नहीं सकते जो केवल सन्देहों एवं भ्रमों का संग्रह है तो मैं उस मार्ग को क्योंकर त्याग सकता हूं जिस पर हज़ारों सूर्य चमकते हुए दिखाई देते हैं। क्या मैं पागल और दीवाना हूं कि इस अवस्था में जबकि ख़ुदा तआला ने मुझे प्रकाशमान निशानों के साथ

सच दिखा दिया है, फिर भी मैं सच को स्वीकार न करूं। मैं ख़ुदा तआला की क़सम खा कर कहता हूं कि मेरी संतुष्टि के लिए मुझ पर हज़ारों निशान प्रकट हुए हैं, जिन में से कुछ को मैंने लोगों को बताया और कुछ को बताया भी नहीं और मैंने देखा कि यह निशान ख़ुदा तआला की ओर से हैं तथा अन्य कोई उस भागीदार रहित एक ख़ुदा के अतिरिक्त उन पर समर्थ नहीं।

मुझे इसके अतिरिक्त क़ुर्आन का ज्ञान दिया गया तथा हदीसों के सही अर्थ मुझ पर खोले गए। फिर मैं ऐसे प्रकाशमान मार्ग को त्याग कर विनाश का मार्ग क्यों धारण करूं ? मैं जो कहता हूं पूर्ण विवेक के साथ कहता हूं और जो कुछ आप लोग कहते हैं वह केवल कल्पना है - اِنَّ الظَّنَّ لَا يُغْنِيْ مِنَ الْحَقِّ شَيْـًٔا[1] और इस का उदाहरण ऐसा ही है कि जैसे एक अंधा एक ऊंची-नीची भूमि में अंधकार में चलता है और नहीं जानता कि कहां क़दम पड़ता है। अत: मैं उस प्रकाश को छोड़कर जो मुझे दिया गया है अंधकार को क्योंकर ले लूं ? जबकि मैं देखता हूं कि ख़ुदा मेरी दुआएं सुनता तथा मेरे लिए बड़े-बड़े निशान प्रकट करता है तथा मुझ से वार्तालाप करता और अपने परोक्ष के रहस्यों से मुझे अवगत करता है तथा शत्रुओं के मुक़ाबले पर अपने शक्तिशाली हाथ के साथ मेरी सहायता करता है और प्रत्येक मैदान में मुझे विजय प्रदान करता है तथा पवित्र क़ुर्आन के आध्यात्म ज्ञानों तथा वास्तविकताओं का मुझे ज्ञान देता है। तो मैं ऐसे सामर्थ्यवान और प्रभुत्वशाली ख़ुदा को त्याग कर उसके स्थान पर किसे स्वीकार कर लूं।

मैं अपने पूरे विश्वास के साथ जानता हूं कि ख़ुदा वही सामर्थ्यवान ख़ुदा है जिसने मुझ पर झलक डाली। अपने अस्तित्व से, अपने कलाम से और अपने काम से मुझे सूचित किया और मैं विश्वास रखता हूं कि वे क़ुदरतें जो मैं उस से देखता हूं और वह परोक्ष का ज्ञान जो मुझ पर प्रकट करता है और वह शक्तिशाली हाथ जिस से मैं प्रत्येक ख़तरनाक अवसर पर सहायता पाता हूं वे उसी कामिल और सच्चे ख़ुदा की विशेषताएं

---

[1] अन्नज्म - 29

हैं जिसने आदम को पैदा किया और जो नूह पर प्रकट हुआ तथा तूफ़ान का चमत्कार दिखाया। वह वही है जिस ने मूसा को सहायता दी जबकि फ़िरऔन उसे मारना चाहता था, वह वही है जिसने समस्त नबियों के सरदार हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम को काफ़िरों और मुश्रिकों के षड्यंत्रों से बचा कर पूर्ण विजय प्रदान की। उसी ने इस अन्तिम युग में मुझ पर झलक डाली।

कुछ मूर्ख जो दुष्ट और अधम हैं कहते हैं कि वह शैतान होगा जो तुम पर प्रकट हुआ। इन पर प्रलय तक ख़ुदा की ला'नत हो। ये मूर्ख नहीं जानते कि शैतान सब पर विजयी नहीं परन्तु वह ख़ुदा जो अपने कलाम और काम के साथ मुझ पर प्रकट हुआ वह सब पर विजयी है। कोई है जो उसका मुक़ाबला करे। विरोधी मुर्दे हैं और शत्रु मरे हुए कीड़े हैं, कोई नहीं जो उन क़ुदरतों का मुकाबला कर सके जो उसके कलाम और काम के द्वारा मुझ पर प्रकट होती हैं। वह समस्त विशेषताओं और पूर्ण क़ुदरतों के साथ विशेष्य है। पृथ्वी और आकाश में उसका कोई दूसरा नहीं, वह जो प्रतिदिन मुझ पर प्रकट होता तथा मुझे अपनी क़ुदरतें दिखाता और अपने गहरे से गहरे भेद मुझ पर प्रकट करता है। यदि उसके अतिरिक्त पृथ्वी या आकाश में कोई और भी ख़ुदा है तो तुम उसका प्रमाण दो, किन्तु तुम कदापि प्रमाण नहीं दे सकते। मैं देख रहा हूं कि उसके अतिरिक्त कोई ख़ुदा नहीं। वही एक है जिसने पृथ्वी और आकाश बनाए। जबकि वह मुझ पर सूर्य के समान चमक रहा है तथा उसने मुझे पूर्ण विवेक प्रदान किया और अपनी क़ुदरतें दिखा कर, मुझे सच्चा ज्ञान प्रदान कर अपने अस्तित्व का मुझे ज्ञान दे दिया है तो मैं उसे कैसे छोड़ सकता हूं। मेरे लिए प्राण का त्यागना इससे अधिक आसान है कि मैं उस ख़ुदा को त्याग दूं जिसने मुझे अपना जल्वा दिखाया।

अंधा शत्रु यों ही बकवास करता है उसे ख़ुदा की ख़बर नहीं, उसका हृदय कोढ़ी है और आंखें दृष्टि से वंचित। उन लोगों का ज्ञान केवल इस सीमा तक है कि कल्पनाओं की मूर्ति की पूजा कर रहे हैं। जो कुछ है उनके निकट यही मूर्ति है। इससे आगे उनके

भाग्य में कुछ नहीं। उस ख़ुदा से जो अपनी ताज़ा क़ुदरतों से पहचाना जाता है ये लोग मात्र वंचित हैं और उस अंधे के समान जो आगे क़दम रखता है तथा नहीं जानता कि आगे नीचाई है या ऊंचाई तथा पवित्र पृथ्वी है या अपवित्र, इन लोगों की गति है।

और ये लोग नादानी से एक पहलू पर बल देते हैं और दूसरा पहलू भुला देते हैं। कहते हैं कि ईसा उतरेगा और वह उम्मती बन जाएगा। अत: इनके कथन और ख़ुदा के कथन में अन्तर यह है कि ये लोग तो ईसा को उम्मती बनाते हैं और ख़ुदा उम्मती को ईसा बनाता है। अत:① यह ऐसा अन्तर नहीं था जिसकी ग़लती दूर न हो सके। जबकि ख़ुदा तआला की क़ुदरत एक उम्मती को ईसा बना सकती थी और इस प्रकार से इस उम्मत की श्रेष्ठता बनी इस्राईल पर प्रकट हो सकती थी। तो फिर क्या आवश्यक था कि ईसा बिन मरयम को आकाश से उतारा जाए और ख़ुदा के वादे के विपरीत किया जाए (कि कोई गया हुआ दोबारा संसार में नहीं आ सकता②) हज़रत ईसा बनी इस्राईल का

---

① विचार नहीं करते कि जिस स्थिति में तुमने हज़रत ईसा[अ.] का नाम उम्मती रख दिया, फिर यदि ख़ुदा तआला एक उम्मती का नाम ईसा रख दे तो उस पर क्या आपत्ति हो सकती है। क्या हदीस امامکم منکم के यही अर्थ नहीं कि आने वाला ईसा, हे उम्मती लोगो ! तुम में से है न कि किसी अन्य जाति में से।

② अल्लाह तआला का कथन है - فِيۡهَا تَحۡيَوۡنَ وَ فِيۡهَا تَمُوۡتُوۡنَ وَ مِنۡهَا تُخۡرَجُوۡنَ (अलआराफ़-26) अर्थात् तुम पृथ्वी पर ही जीवन व्यतीत करोगे तथा पृथ्वी पर ही तुम्हारी मृत्यु होगी और पृथ्वी से ही निकाले जाओगे। फिर यह क्योंकर संभव था कि एक व्यक्ति सैकड़ों वर्ष तक आकाश पर जीवन व्यतीत करे। ख़ुदा तआला कहता है - وَ لَكُمۡ فِى الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ (अलबक़रह - 37) कि तुम्हारे ठहरने का स्थान पृथ्वी ही रहेगी, फिर क्योंकर हो सकता है कि हज़रत ईसा के ठहरने का स्थान सैकड़ों वर्ष से आकाश पर हो। ख़ुदा तआला का कथन है اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ كِفَاتًا (अलमुरसलात-26) अर्थात् पृथ्वी को हमने ऐसा बनाया है कि प्रत्येक को अपनी ओर खींच रही है तथा

अन्तिम ख़लीफ़ा था अतः एक उम्मती को ईसा ठहराना इसके ये अर्थ थे कि वह भी इस उम्मत का अन्तिम ख़लीफ़ा होगा तथा इस उम्मत के यहूदी उस पर भी आक्रमण करेंगे और उसे स्वीकार न करेंगे, परन्तु एक पैग़म्बर को उम्मती ठहराने में कौन सी नीति है ? यों तो पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि प्रत्येक नबी आंहज़रत[स.अ.व.] की उम्मत में सम्मिलित है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - لَتُؤْمِنُنَّ بِهٖ وَ لَتَنْصُرُنَّهٗ (आले इमरान - 82) अतः इस प्रकार समस्त अंबिया अलैहिमुस्सलाम आंहज़रत[स.अ.व.] की उम्मत हुए और फिर हज़रत ईसा को उम्मती बनाने के क्या अर्थ हैं ? तथा कौन सी विशिष्टता ? क्या वह अपने पहले ईमान से विमुख हो गए थे जो समस्त नबियों के साथ लाए थे ताकि (हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) यह दण्ड दिया गया कि पृथ्वी पर उतार कर दोबारा ईमान का नवीनीकरण करा लिया जाए, परन्तु दूसरे नबियों के लिए वही पहला ईमान पर्याप्त रहा। क्या ऐसी कच्ची बातें इस्लाम से उपहास हैं या नहीं ?

बात स्पष्ट थी कि जिस प्रकार यहूदियों के ख़िलाफ़त के सिलसिले के अन्त पर ईसा आया था जिसे उन्होंने अस्वीकार किया, इसी प्रकार प्रारब्ध था कि इस्लामी ख़िलाफ़त के सिलसिले के अन्त पर एक ख़लीफ़ा पैदा होगा जिसे मुसलमान रद्द करेंगे और स्वीकार न करेंगे। इसी कारण वह ईसा कहलाएगा कि वह ख़ातमुल ख़ुलफ़ा है तथा ईसा की भांति अस्वीकार किया गया है। जैसा कि अल्लाह तआला इस समानता को प्रकट करने के लिए बराहीन अहमदिया में स्वयं कहता है कि -

"संसार में एक नज़ीर (डराने वाला) आया, परन्तु संसार ने उसे स्वीकार न किया, किन्तु ख़ुदा उसे स्वीकार करेगा और बड़े शक्तिशाली आक्रमणों से उसकी सच्चाई प्रकट कर देगा।"

अतः बात तो साधारण थी। प्रत्येक व्यक्ति ऐसी समानता के समय एक व्यक्ति का

प्रत्येक शरीर को अपने अधिकार में रखती है, फिर यह क्योंकर हो सकता है कि हज़रत ईसा पृथ्वी के अधिकार से बाहर चले गए। (इसी से)

ऐसा नाम रख देता है। अकारण बात का बतंगड़ बनाया गया।

यदि हमारे विरोधी अपनी आस्था केवल इस सीमा तक रखते कि ईसा मसीह आएगा तो अवश्य, परन्तु इन्जील की शिक्षा पर स्थापित होगा। वह मुसलमानों के वैध और अवैध का पाबन्द न होगा और अपने तौर पर नमाज़ भी अलग पढ़ेगा और पवित्र क़ुर्आन के स्थान पर नमाज़ में इंजील को पढ़ेगा तथा स्वयं को स्थायी तौर पर पैग़म्बर समझता होगा न कि उम्मती। इसलिए ऐसा आचरण प्रकट नहीं करेगा जिस से उसे उम्मती कहा जाए, अपितु वह तौरात और इंजील का पाबन्द तथा उसी मार्ग का अनुयायी होगा। ऐसी स्थिति में प्रतिप्रश्न योग्य यह बात ठहरती है कि क्या ऐसा व्यक्ति दोबारा आकर इस्लाम के लिए लाभप्रद हो सकता है जो अपनी क्रियात्मक परिस्थितियों से दिखाता है कि वह इस्लाम से बिल्कुल पृथक तथा उसका विरोधी है तथा बिल्कुल स्पष्ट है कि ऐसे मनुष्य का आना मुसलमानों के लिए अच्छा नहीं, क्योंकि जब वह इतने पद वाला मनुष्य होकर इस्लामी पद्धति से स्वयं को पूर्णतया विरोधी प्रकट करेगा और उस प्रकार नमाज़ नहीं पढ़ेगा जिस प्रकार मुसलमान नमाज़ पढ़ते हैं और पवित्र क़ुर्आन के स्थान पर लोगों को इंजील सुनाएगा तथा वे वस्तुएं खाएगा जो मुसलमान नहीं खाते और मदिरापान करेगा। तब निस्सन्देह ऐसे व्यक्ति का अस्तित्व इस्लाम के लिए बड़ी ख़राबी का कारण होगा तथा निकट होगा कि उसमें और मुसलमानों में कुछ लड़ाई-झगड़ा हो जाए तथा ऐसा ख़तरनाक अस्तित्व मुसलमानों के लिए एक ठोकर का कारण होगा और आश्चर्य नहीं कि ईसाई होने आरंभ हो जाएं।

परन्तु यदि ईसा आते ही सच्चे हृदय से ला इलाहा इल्लल्लाह मुहम्मदुर्रसूलुल्लाह पढ़ेगा तथा उस नमाज़ का पाबन्द होगा जो मुसलमान पढ़ते हैं तथा उस रोज़े का पाबन्द जो मुसलमानों को सिखाया गया तथा प्रत्येक वैध-अवैध में इस्लाम पर चलेगा। अतः इस स्थिति में क्या सन्देह है कि वह स्वयं को उम्मती ठहरा देगा क्योंकि उम्मतियों के सरों पर कुछ सींग तो नहीं होते। जब उम्मत होने के समस्त कार्य पूर्ण किए तो उम्मती बन गए। इसलिए जब

ईसा अलैहिस्सलाम को तौरात की शिक्षा छुड़ा कर उम्मती बनाया गया तो फिर ऐसी अवस्था में प्रतिप्रश्न योग्य यह बात होगी कि वह ईसा जो यहूदियों के नबियों का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा था फिर उसी को उम्मती बना कर **मुहम्मदी** धर्म का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा बनाया। क्या इस से वह ख़ुदा की नीति पूरी हो सकती है जिस का इरादा किया गया है।

और यह बात सब बुद्धिमानों पर स्पष्ट है कि ख़ुदा तआला ने बनी इस्माईल में से बनी इस्राईल के मुकाबले में एक सिलसिला स्थापित करके यह चाहा कि हर प्रकार से इस सिलसिले को इस्राईली सिलसिले के समान और सदृश करे। इसलिए उसने इसी इरादे से हमारे सरदार तथा स्वामी आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम को मूसा का मसील (समरूप) बनाया, जैसा कि वह कहता है - اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاهِدًا عَلَيْكُمْ كَمَاۤ اَرْسَلْنَاۤ اِلٰى فِرْعَوْنَ رَسُوْلًا[1] अर्थात् हमने इस रसूल को उस रसूल के समान भेजा जो फ़िरऔन की ओर से भेजा गया था और फिर सिलसिले के अन्त में यह आवश्यक था कि इस उम्मत का ख़ातमुल ख़ुलफ़ा ईसा का मसील हो जो ईसा के समान चौदहवीं सदी में मूसा के मसील के पश्चात् प्रकट हो क्योंकि मूसा के सिलसिले का अन्तिम ख़लीफ़ा ईसा था जो उसके चौदह सौ वर्ष पश्चात् प्रकट हुआ। और फिर वे इस्राईली सिलसिले के यहूदी थे जिन्होंने ईसा को स्वीकार न किया इसलिए ख़ुदा के कलाम ने यह भी वादा दिया कि इस उम्मत में भी अन्तिम युग में जो मसीह मौऊद का युग होगा यहूदियों के आचरण वाले लोग पैदा हो जाएंगे।

अब जबकि स्पष्ट है कि मूसा का मसील बिल्कुल मूसा नहीं है और अन्तिम युग के यहूदी आचरण रखने वाले बिल्कुल यहूदी नहीं तो फिर क्या कारण है कि आने वाला वही ईसा उतर आया जो पहले गुज़र चुका था। ऐसा समझना तो ख़ुदा की किताब के विपरीत है, क्योंकि ख़ुदा तआला ने सूरह फ़ातिहा में यह निर्णय कर दिया है कि इस उम्मत के कुछ गिरोह बनी इस्राईल के क़दम पर चलेंगे और इस उम्मत के कुछ लोग उन यहूदियों के पद

---

① अलमुज़्ज़म्मिल - 16

चिन्हों पर चलेंगे जिन्होंने हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं किया था और सलीब देना चाही थी जो मग़ज़ूब अलैहिम ठहरेंगे। इसीलिए ख़ुदा तआला ने पांच समय की नमाज़ में भी यही दुआ सिखाई, जैसा कि अल्लाह तआला सूरह फ़ातिहा में यह शिक्षा देता है -

اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ ۙ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَ لَا الضَّآلِّيْنَ (अल फ़ातिहा- 6-7)

अत: अनअम्ता अलैहिम से अभिप्राय यहूदियों के नबी हैं और मग़ज़ूब अलैहिम से अभिप्राय वे यहूदी हैं जिन्होंने हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं किया था। इस आयत से स्पष्ट है कि इस उम्मत में ऐसे यहूदी आचरण वाले भी होने वाले हैं जो हज़रत ईसा के समय थे। अत: अवश्य है कि उनके साथ इसी उम्मत में से एक ईसा भी हो जिसके इन्कार से वे उस प्रकार के यहूदी बन जाएंगे जो मग़ज़ूब अलैहिम हैं। अब वे लोग जो मेरी भर्त्सना करते हैं कि तूने स्वयं को ईसा क्यों बनाया। वास्तव में यह लक्षण उनकी ओर ही लौटता है क्योंकि यदि वे यहूदी न बनते तो मैं भी ईसा न बनता, किन्तु अवश्य था कि ख़ुदा का कलाम पूरा होता। विचित्र मूर्ख हैं। यहूदी बनने के लिए स्वयं तैयार हैं परन्तु ईसा को बाहर से लाते हैं।

सारांश यह कि इस्माईली सिलसिले की इमारत बिल्कुल इस्राईली सिलसिले के अनुसार बनाई गई है। यही हिकमत है कि इस सिलसिले का ईसा भी बनी इस्माईल के वंश में से नहीं है क्योंकि मसीह भी बनी इस्राईल में से नहीं आया था। कारण यह कि बनी इस्राईल में से कोई उसका पिता न था केवल मां इस्राईली थी। यही समानता यहां मौजूद है। मैं वर्णन कर चुका हूं कि मेरी कुछ माताएं सादात में से थीं और ख़ुदा की वह्यी ने भी मुझ पर यही प्रकट किया है तथा जिस प्रकार हज़रत ईसा ने पिता के द्वारा रूह प्राप्त नहीं की थी, इसी प्रकार मैंने भी ज्ञान और मा'रिफ़त की रूह किसी रूहानी पिता से अर्थात् उस्ताद से प्राप्त नहीं की थी। अत: इन समस्त बातों में मुझ में और हज़रत ईसा में बहुत समानता है। इसलिए ख़ुदा तआला ने

इस्राईली सिलसिले के मुकाबले पर इस्माईली सिलसिला स्थापित करके ईसा बनने के लिए मुझे चुन लिया। इस्लामी सिलसिले के प्रारंभ में हमारे सरदार मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि व सल्लम हैं जिन का नाम मूसा रखा गया, जिन के माता-पिता दोनों कुरैश थे और सिलसिले के अन्त में यह ख़ाकसार है जो केवल मां की ओर से क़ुरैश है जिसका नाम ईसा रखा गया।

مردمِ نا اہل گو یندم کہ چوں عیسیٰ شدی
بشنو از من ایں جوابِ شاں کہ اے قومِ حسود
چوں شمارا شد یہود اندر کتابِ پاک نام
پس خدا عیسیٰ مرا کرد است از بہرِ یہود
ورنہ از روئے حقیقت تخمِ ایشاں نیستید
نیز ہم من ابن مریم نیستم اندر وُجود
گر نہ بودندے شما۔ مارا نبودے ہم اثر
از شما شد ہم ظہورم پس زِ غوغاہا چہ سُود
ہرچہ بود از نیک و بد در دینِ اسرائیلیاں
آں ہمہ در ملّت احمد نقوشِ خود نمود
قومِ مادر ہر قدم ماند بقومِ موسوی
بعض زیشاں صالحان و بعض دیگر چوں غدود
چونکہ موسیٰ شد نبیِّ ما۔ کہ صدرِ دینِ ماست
لاجرم عیسیٰ شدم آخر ازاں ربّ ودود
نیز ہم اینجا یہودِ بد گہر پیدا شدند
تا بیا زا رند عیسیٰ را چو آں قومے کہ بود
الغرض آں ذوالمنن در ہر صلاح و ہر فساد
ہمچو اسرائیلیاں بر قوم ما ہر در کشود

چوں خدا نامِ رسولِ پاک ما موسیٰ نہاد
نام شد بوجہل را فرعون چوں کینش فزود
پس در اوّل چوں کلیم آمد بحکمِ کردگار
ہم پئے تکمیل عیسیٰ را در آخر شد وُرود

بعد ازیں روتا فتن از مقتضائے شقوت است
ورنہ ایں گفتارِ ما ہر شک و شبہت را ربود
پس چہ حاصل تیر ہا انداختن برصادقاں
ہر کہ از بد باز ناید نار را گردد و قُود

अनुवाद - (1) मूर्ख लोग मुझे कहते हैं कि तू ईसा क्योंकर हो गया
मुझ से उनका उत्तर सुन जो यह है कि हे ईर्ष्यालु जाति,

(2) चूंकि क़ुर्आन में तुम्हारा नाम यहूदी रखा गया है, इसलिए ख़ुदा ने मुझे यहूदियों के लिए ईसा बना दिया।

(3) अन्यथा वास्तव में तुम उन यहूदियों के बीज से नहीं तथा मैं भी शारीरिक तौर पर इब्ने मरयम नहीं हूं।

(4) यदि तुम न होते तो हमारा निशान भी न होता केवल तुम्हारे कारण मेरा प्रादुर्भाव हुआ, फिर शोर मचाने से क्या लाभ।

(5) यहूदियों के धर्म में जो अच्छी-बुरी बातें मौजूद थीं वे सब अहमद के धर्म में भी पैदा हो गई।

(6) हमारी उम्मत हर बात में मूसा की उम्मत के समान है। उनमें से कुछ अच्छे हैं और कुछ गिल्टियों की भांति ख़राब।

(7) चूंकि हमारा नबी हमारे धर्म का शिरोमणि मूसा का मसील (समरूप) था। इसलिए मैं भी दयालु ख़ुदा की ओर से ईसा बना दिया गया।

(8) इस उम्मत में भी अकुलीन यहूदी पैदा हो गए ताकि वे भी पिछली जाति की भांति इस ईसा को सताएं।

(9) अत: उस उपकारी ख़ुदा ने हर नेकी तथा हर बदी (बुराई) में यहूदियों की भांति हमारी क़ौम पर भी हर प्रकार का द्वार खोल दिया।

(10) चूंकि ख़ुदा ने हमारे पवित्र रसूल का नाम मूसा रखा तो जब अबू जहल की शत्रुता बढ़ गई तो उसका नाम फ़िरऔन ठहराया गया।

(11) अत: जब इस उम्मत के प्रारंभिक काल में ख़ुदा के आदेश से एक कलीम (वार्तालाप करने वाला मूसा) आया तो पूर्णता के लिए अन्तिम युग में एक ईसा उतर गया।

(12) यह बात समझकर भी विमुखता धारण करना दुर्भाग्य की बात है अन्यथा हमारी इन बातों ने तो तेरा प्रत्येक सन्देह एवं आशंकाओं को दूर कर दिया है।

(13) अत: सच्चों पर तीर चलाने का क्या लाभ ! क्योंकि जो बुराई को न छोड़े वह नर्क का ईंधन बनता है।[1]

सारांश यह कि मैं सच्चाई पर हूं तथा क़ुर्आन और हदीसों के स्पष्ट आदेशों के अनुसार मेरा दावा है तथा मेरी सच्चाई के हज़ारों निशान साक्षी हैं और भविष्य में भी सत्याभिलाषी के लिए निशानों का द्वार बन्द नहीं और जो कुछ विरोधियों की ओर से कहा जाता है कि अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। यह उनका अंधापन है अन्यथा समस्त भविष्यवाणियां पूरी हो चुकी हैं तथा कुछ पूरी होने वाली हैं। हां चूंकि उनकी दृष्टि द्वेष की धूल के कारण मोटी है, इसलिए वे भविष्यवाणियां जो बहुत ही स्पष्ट हैं वे उन्हें स्वीकार करनी पड़ती हैं तथा जो भविष्यवाणियां किसी सीमा तक बारीक दृष्टि की मुहताज हैं वे उनके विचार में जैसे पूरी नहीं हुईं। किन्तु ऐसी भविष्यवाणी संभवत: दस

---

[1] उपरोक्त सभी फ़ारसी शे'रों का अनुवाद हज़रत मीर मुहम्मद इस्माईल साहिब[रज़ि.] के दुर्रे समीन फ़ारसी के उर्दू अनुवाद से हिन्दी में रूपांतरण किया गया है। (अनुवादक)

हज़ार में से एक हो। अतः उस हृदय पर ला'नत का कितना बड़ा दाग़ है कि दस हज़ार भविष्यवाणियों से कुछ लाभ नहीं उठाता और बार-बार एक कुत्ते की भांति भौं भौं करता है कि अमुक भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई और न केवल इतना अपितु निर्लज्जतापूर्वक इसके साथ गालियां भी देता है। ऐसा मनुष्य यदि किसी पूर्व नबी के समय में भी होता तो क्या उसे स्वीकार कर लेता ? कदापि नहीं, क्योंकि प्रत्येक नबी की कोई न कोई भविष्यवाणी काफ़िरों पर संदिग्ध रही है।

हे मूर्ख ! प्रथम द्वेष का आवरण अपनी आंख से उठा तब तुझे ज्ञात हो जाएगा कि सब भविष्यवाणियां पूरी हो गईं। ख़ुदा तआला की सहायता एक तेज़ और तीव्र दरिया की भांति विरोधियों पर आक्रमण कर रही है, किन्तु खेद कि इन लोगों को कुछ भी आभास नहीं होता। पृथ्वी ने निशान दिखाए तथा आकाश ने भी और मित्रों में भी निशान प्रकट हुए हैं और शत्रुओं में भी। परन्तु अंधे लोगों के विचार में अभी कोई निशान प्रकट नहीं हुआ परन्तु ख़ुदा इस को अपूर्ण नहीं छोड़ेगा, जब तक वह पवित्र और अपवित्र में अन्तर करके न दिखा दे।

विरोधी चाहते हैं कि मैं मिट जाऊं और उनका कोई ऐसा दांव चल जाए कि मेरा नामो निशान न रहे परन्तु वे इन इच्छाओं में असफल रहेंगे तथा असफलता के साथ मरेंगे और उनमें से बहुत से मेरे देखते-देखते मर गए तथा क़ब्रों में निराशाएं ले गए। किन्तु ख़ुदा मेरी समस्त मनोकामनाएं पूरी करेगा। ये मूर्ख नहीं जानते कि जब मैं अपनी ओर से नहीं अपितु ख़ुदा की ओर से इस युद्ध में व्यस्त हूं तो मैं क्यों नष्ट होने लगा तथा कौन है जो मुझे हानि पहुंचा सके। यह भी स्पष्ट है कि जब कोई किसी का हो जाता है तो उसको भी उस का होना ही पड़ता है।

कुछ लोग यह कहते हैं कि यद्यपि यह सच है कि सही बुख़ारी और मुस्लिम में यह लिखा है कि आने वाला ईसा इसी उम्मत में से होगा, परन्तु सही मुस्लिम में स्पष्ट शब्दों में उसका नाम नबीउल्लाह रखा है। फिर हम क्योंकर स्वीकार कर लें कि वह इसी

उम्मत में से होगा।

इसका उत्तर यह है कि यह सम्पूर्ण दुर्भाग्य धोखे से पैदा हुआ है कि नबी के वास्तविक अर्थों पर विचार नहीं किया गया। नबी के अर्थ केवल ये हैं कि ख़ुदा से वह्यी के माध्यम से ख़बर पाने वाला हो तथा ख़ुदा के वार्तालाप एवं संबोधन के गौरव से गौरवान्वित हो। उसके लिए शरीअत का लाना आवश्यक नहीं और न यह आवश्यक है कि शरीअत वाले रसूल का अनुयायी न हो। अतः एक उम्मती को ऐसा नबी ठहराने से कोई ख़राबी अनिवार्य नहीं होती, विशेषतया इस स्थिति में कि वह उम्मती अपने अनुकरणीय नबी से वरदान पाने वाला हो अपितु खराबी इसी अवस्था में अनिवार्य होती है कि इस उम्मत को आंहज़रत[स.अ.व.] के पश्चात् प्रलय तक ख़ुदा के वार्तालाप से वंचित ठहरा दिया जाए। वह धर्म, धर्म नहीं है और न वह नबी, नबी है जिसके अनुकरण से मनुष्य ख़ुदा तआला से इतना निकट नहीं हो सकता कि ख़ुदा के वार्तालापों से गौरवान्वित हो सके। वह धर्म ला'नती और घृणा करने योग्य है जो यह सिखाता है कि केवल कुछ पुस्तकीय बातों पर मानवीय उन्नति निर्भर है और ख़ुदा की वह्यी आगे नहीं अपितु पीछे रह गई है और जीवित एवं जीवन को स्थापित रखने वाले ख़ुदा की आवाज़ सुनने और उसके वार्तालापों से बिल्कुल निराशा है और यदि ग़ैब (परोक्ष) से कोई आवाज़ भी किसी के कान तक पहुंचती है तो वह ऐसी संदिग्ध आवाज़ है कि कह नहीं सकते कि वह ख़ुदा की आवाज़ है या शैतान की। अतः ऐसा धर्म इसकी अपेक्षा कि उसको रहमानी कहें शैतानी कहलाने के अधिक योग्य होता है। धर्म वह है जो अंधकार से निकालता और प्रकाश में लाता है तथा मनुष्य द्वारा ख़ुदा के पहचानने को मात्र क़िस्सों तक सीमित नहीं रखता अपितु उसे एक मा'रिफ़त का प्रकाश प्रदान करता है। इसलिए सच्चे धर्म का अनुयायी यदि स्वयं तामसिक वृत्ति के आवरण में न हो ख़ुदा तआला के कलाम को सुन सकता है। अतः एक उम्मती को इस प्रकार का नबी बनाना सच्चे धर्म की अनिवार्य निशानी है।

यदि नबी के यह अर्थ हैं कि उस पर शरीअत उतरे अर्थात् वह नई शरीअत लाने वाला

हो तो ये अर्थ हज़रत ईसा पर चरितार्थ नहीं होंगे क्योंकि वह मुहम्मदी शरीअत को निरस्त नहीं कर सकते। उन पर कोई ऐसी वह्यी नहीं उतर सकती जो पवित्र क़ुर्आन को निरस्त करे अपितु उनके दोबारा लाने से यह भ्रम होता है कि कदाचित् उनके द्वारा इस्लामी शरीअत में कुछ परिवर्तन एवं संशोधन किया जाएगा नबी के यदि ये अर्थ किए जाएं कि महावैभवशाली ख़ुदा उस से वार्तालाप एवं सम्बोधन रखता है तथा कुछ ग़ैब के रहस्य उस पर प्रकट करता है तो यदि एक उम्मती ऐसा नबी हो जाए तो इसमें हानि क्या है, विशेषत: जबकि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में अधिकांश स्थानों पर यह आशा दिलाई है कि एक उम्मती ख़ुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधन से गौरवान्वित हो सकता है तथा ख़ुदा तआला को अपने वलियों से वार्तालाप एवं सम्बोधन होते हैं अपितु इसी ने'मत को प्राप्त करने के लिए सूरह फ़ातिहा में जो पांच समय की नमाज़ में पढ़ी जाती है यही दुआ सिखाई गई है اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ صِرَاطَ الَّذِيْنَ اَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ तो किसी उम्मती को इस ने'मत के प्राप्त होने से क्यों इन्कार किया जाता है ? क्या सूरह फ़ातिहा में वह ने'मत जो ख़ुदा तआला से मांगी गई है जो नबियों को दी गई थी वह दीनार और दिरहम हैं ? स्पष्ट है कि अंबिया अलैहिमुस्सलाम को ख़ुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधन की ने'मत प्रदान हुई थी जिसके द्वारा मा'रिफ़त (आध्यात्म ज्ञान) अटल विश्वास की श्रेणी तक पहुंच गई थी और वार्तालाप की झलक दर्शन की स्थानापन्न हो गई थी। अत: यह जो दुआ की जाती है कि हे ख़ुदावंद ! हमें वह मार्ग दिखा जिस से हम भी उस ने'मत के वारिस हो जाएं। इसके अतिरिक्त इसके और क्या अर्थ हैं कि हमें भी वार्तालाप एवं सम्बोधन का गौरव प्रदान कर।

कुछ मूर्ख यहां कहते हैं कि इस दुआ के मात्र ये अर्थ हैं कि हमारे ईमान सुदृढ़ कर और शुभ कर्मों की सामर्थ्य प्रदान कर तथा हम से वह कार्य करा जिस से तू प्रसन्न हो जाए, परन्तु ये मूर्ख नहीं जानते कि ईमान का सुदृढ़ होना या शुभ कर्मों को करना तथा ख़ुदा तआला की इच्छानुसार चलना ये समस्त बातें पूर्ण मा'रिफ़त का परिणाम हैं। जिस हृदय को ख़ुदा तआला की मा'रिफ़त में से कुछ भाग नहीं मिला वह हृदय सुदृढ़ ईमान तथा शुभ

कर्मों से भी वंचित है। मा'रिफ़त से ही हृदय में ख़ुदा तआला का भय पैदा होता है तथा मा'रिफ़त से ही ख़ुदा तआला का प्रेम हृदय में जोश मारता है, जो संसार में भी देखा जाता है कि प्रत्येक वस्तु का भय अथवा प्रेम मा'रिफ़त से ही पैदा होता है। यदि अंधकार में एक बबर शेर तुम्हारे पास खड़ा हो और तुम्हें उसका ज्ञान न हो कि यह शेर है अपितु यह विचार हो कि यह एक बकरा है तो तुम्हें उस का कुछ भी भय नहीं होगा और जब भी तुम्हें ज्ञात हो जाए कि यह तो शेर है तो तुम हतबुद्धि होकर उस स्थान से भाग जाओगे। इसी प्रकार यदि तुम एक हीरे को जो एक जंगल में पड़ा हुआ है जो कई लाख मूल्य का है केवल एक पत्थर का टुकड़ा समझोगे तो तुम उसकी कुछ भी परवाह नहीं करोगे, परन्तु यदि तुम्हें ज्ञात हो जाए कि इस शान और श्रेष्ठता रखने वाला हीरा है तब तो तुम उसके प्रेम में पागल हो जाओगे। तथा यथासंभव उस की प्राप्ति के लिए प्रयास करोगे। अतः ज्ञात हुआ कि समस्त प्रेम और भय मा'रिफ़त पर निर्भर है। मनुष्य उस छेद में हाथ नहीं डाल सकता जिसके बारे में उसे ज्ञात हो जाए कि उसके अन्दर एक ज़हरीला सांप है और न उस मकान को छोड़ सकता है जिसके बारे में उसे विश्वास हो जाए कि उसके नीचे एक बड़ा भारी ख़ज़ाना दफ़्न है। जब चूंकि प्रेम और भय का समस्त आधार मा'रिफ़त पर है। इसलिए मनुष्य ख़ुदा की ओर भी पूर्णरूप से उस समय झुक सकता है जबकि उसकी मा'रिफ़त (ज्ञान) हो। प्रथम उसके अस्तित्व का पता चले और फिर उसकी विशेषताएं और उसकी पूर्ण क़ुदरतें प्रकट हों। इस प्रकार की मा'रिफ़त कब प्राप्त हो सकती है इसके अतिरिक्त कि किसी को ख़ुदा तआला के वार्तालाप एवं संबोधन का गौरव प्राप्त हो और ख़ुदा के ख़बर देने से इस बात पर विश्वास आ जाए कि वह अन्तर्यामी है तथा ऐसा सामर्थ्यवान है कि जो चाहता है करता है। अतः वास्तविक ने'मत (जिस पर ईमान की शक्ति तथा शुभ कर्म निर्भर हैं) ख़ुदा तआला का वार्तालाप एवं सम्बोधन है जिसके द्वारा प्रथम उसका पता लगता है, फिर उसकी क़ुदरतों का ज्ञान होता है फिर उस ज्ञान के अनुसार मनुष्य उन क़ुदरतों को स्वयं अपनी आंखों से देख लेता है। यही वह ने'मत है जो नबियों को दी गई

थी। फिर इस उम्मत को आदेश हुआ कि इस ने'मत को तुम मुझ से मांगो कि मैं तुम्हें भी दूंगा। अत: जिसके हृदय में यह प्यास लगा दी गई है कि उस ने'मत को प्राप्त करे तो निस्सन्देह वह उसे वह ने'मत प्राप्त होगी।

किन्तु वे लोग जो ख़ुदा तआला से लापरवाह हैं ख़ुदा तआला उन से लापरवाह है, ख़ुदा तआला का वार्तालाप एवं सम्बोधन यही तो मारिफ़त की एक जड़ है तथा समस्त बरकतों का उद्गम है। यदि इस उम्मत पर यह द्वार बन्द होता तो सौभाग्य के समस्त द्वार बन्द होते, किन्तु ख़ुदा के वार्तालापों एवं सम्बोधनों से उस प्रकार के वाक्य अभिप्राय नहीं हैं जिनके बारे में स्वयं मुल्हम असमंजस में हो कि क्या वे शैतानी हैं या रहमानी। ऐसे बरकत रहित वाक्य जिनमें शैतान भी भागीदार हो सकता है शैतानी ही समझने चाहिएं क्योंकि ख़ुदा तआला का प्रकाशमान, मुबारक तथा आनंददायक वाक्य शैतान के वाक्यों से समान नहीं हो सकते। जिन हृदयों में पूर्ण पवित्रता के कारण शैतान का कुछ भाग नहीं रहता उनकी वह्यी में भी शैतान का कुछ भाग नहीं रहता और शैतान उन ही अपवित्र हृदयों पर उतरता है जो शैतान की भांति अपने अन्दर अपवित्रता रखते हैं। पवित्रात्माओं पर पवित्र का कलाम उतरता है और अपवित्रात्माओं पर अपवित्र का।

यदि एक मनुष्य अपने इल्हाम में आश्चर्यचकित है तथा नहीं जानता कि वह शैतान की ओर से है या ख़ुदा की ओर से। ऐसे मनुष्य का इल्हाम उसके प्राण के लिए एक विपत्ति है क्योंकि संभव है कि वह उस इल्हाम के आधार पर कि भले को बुरा ठहरा दे जबकि वह इल्हाम शैतान की ओर से हो तथा संभव है कि किसी बुरे को भला ठहरा दे, जबकि वह सर्वथा शैतानी शिक्षा हो तथा यह भी संभव है कि एक बात को जो उसे इल्हाम द्वारा ज्ञात हुई है ख़ुदा का आदेश समझ कर पालन करे हालांकि वह आदेश शैतान ने दिया हो तथा इसी प्रकार यह भी संभव है कि एक आदेश शैतान का आदेश समझ कर त्याग दे हालांकि वह ख़ुदा तआला का आदेश हो।

बिल्कुल स्पष्ट है कि एक ठोस निर्णय के अतिरिक्त अर्थात् इस बात के अतिरिक्त कि

हृदय इस विश्वास से परिपूर्ण हो कि वास्तव में यह ख़ुदा का आदेश है, उसके करने के लिए पूर्ण दृढ़ता प्राप्त नहीं हो सकती, विशेषत: कुछ बातें ऐसी होती हैं कि प्रत्यक्ष शरीअत को उन पर कुछ आपत्ति भी होती है जैसा कि ख़िज़्र के कार्य पर प्रत्यक्ष शरीअत को सर्वथा आपत्ति थी। नबियों की समस्त शरीअतों में से किसी शरीअत में यह आदेश नहीं कि एक निर्दोष बच्चे का वध कर दो। इसलिए यदि ख़िज़्र को यह विश्वास न होता कि यह वह्यी ख़ुदा की ओर से है तो वह कभी वध न करता, और यदि मूसा की मां को विश्वास न होता कि उसकी वह्यी ख़ुदा तआला की ओर से है तो अपने बच्चे को कभी दरिया में न डालती।

अब स्पष्ट है कि ऐसा इल्हाम किस प्रकार गर्वयोग्य हो सकता है तथा किस प्रकार उसकी हानि से मनुष्य सुरक्षित रह सकता है जिसके संबंध में कभी तो उसका यह विचार है कि वह ख़ुदा तआला की ओर से है और कभी यह विचार है कि शैतान की ओर से है। ऐसा इल्हाम तो प्राण और ईमान के लिए घातक है अपितु एक विपत्ति है जिस से कभी न कभी वह तबाह हो सकता है। ख़ुदा तआला ऐसा नहीं है कि अपने उन बन्दों को जो तामसिक वृत्ति के संबंधों से पृथक होकर मात्र ख़ुदा के हो जाते हैं और उसकी प्रेमाग्नि से ख़ुदा के अतिरिक्त समस्त को जला देते हैं वह अपने ऐसे बन्दों को शैतान के जाल में गिरफ़्तार करे। सच तो यह है कि जिस प्रकार प्रकाश और अंधकार में अन्तर है उसी प्रकार शैतानी भ्रमों तथा ख़ुदा तआला की पवित्र वह्यी में अन्तर है।

कुछ नीरस मुल्लाओं को इन्कार में यहां तक अतिशयोक्ति है कि वे कहते हैं कि ख़ुदा के वार्तालापों का द्वार ही बन्द है और इस दुर्भाग्यशाली उम्मत के भाग्य में ही यह नहीं कि यह ने'मत प्राप्त करके अपने ईमान को पूर्ण करे और फिर ईमान के आकर्षण से शुभ कर्म करे।

ऐसे विचारों का उत्तर यह है कि यदि यह उम्मत वास्तव में ऐसी ही अभागी, अंधी और उम्मतों में से बुरी उम्मत है तो ख़ुदा ने इसका नाम ख़ैरुल उमम (उम्मतों में से सब से अच्छी उम्मत) क्यों रखा अपितु सच बात यह है कि वही लोग मूर्ख और नासमझ हैं जो ऐसे विचार रखते हैं वरन् जिस प्रकार ख़ुदा तआला ने इस उम्मत को वह दुआ

सिखाई है जो सूरह फ़ातिहा में है, इसके साथ ही उसने यह इरादा भी किया है कि इस उम्मत को वह ने'मत प्रदान भी करे जो नबियों को प्रदान की गई थी अर्थात् ख़ुदा का वार्तालाप एवं संबोधन जो समस्त ने'मतों का उद्गम है। क्या ख़ुदा तआला ने यह दुआ सिखाकर केवल धोखा ही दिया है तथा ऐसी बेकार एवं निकृष्ट उम्मत में क्या अच्छाई हो सकती है जो बनी इस्राईल की स्त्रियों से भी गई गुज़री है।

स्पष्ट है कि हज़रत मूसा की मां और हज़रत ईसा की मां दोनों स्त्रियां थीं और हमारे विरोधियों के कथनानुसार नबिय्या नहीं थीं तथा ख़ुदा तआला के विश्वसनीय वार्तालाप और संबोधन उन्हें प्राप्त थे और अब यदि इस उम्मत का एक व्यक्ति आत्मशुद्धि में इतना अधिक पवित्र हो कि इब्राहीम का हृदय पैदा कर ले और ख़ुदा तआला का इतना आज्ञाकारी हो कि सम्पूर्ण कामवासनाओं का चोला उतार कर फेंक दे तथा ख़ुदा तआला के प्रेम में इतना आसक्त हो कि अपने अस्तित्व से विरक्त हो जाए तब भी वह इतने परिवर्तन के बावजूद मूसा की मां की भांति ख़ुदा की वह्यी नहीं पा सकता। क्या कोई बुद्धिमान ख़ुदा तआला की ओर ऐसी कृपणता सम्बद्ध कर सकता है। अब हम इस के अतिरिक्त क्या कहें कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत।

वास्तविकता यह है कि जब ऐसे लोग सर्वथा संसार के कीड़े हो गए और इस्लाम की पहचान केवल पगड़ी, दाढ़ी, ख़त्ना और जीभ से कुछ इक़रार और परम्परागत नमाज़ रोज़ा रह गयी तो ख़ुदा तआला ने उनके हृदयों को विकृत कर दिया और आंखों के आगे हज़ारों अंधकारों के पर्दे आ गए और हृदय मर गए तथा उनके हाथ में रूहानी जीवन का कोई जीवित आदर्श न रहा। विवश होकर उनको ख़ुदा के वार्तालापों से इन्कार करना पड़ा। यह इन्कार वास्तव में इस्लाम से इन्कार है किन्तु चूंकि हृदय मर चुके हैं, इसलिए ये लोग महसूस नहीं करते कि हम किस अवस्था में पड़े हुए हैं।

ये मूर्ख नहीं जानते कि यदि यही अवस्था है तो फिर इस्लाम और अन्य धर्मों में अन्तर क्या रहा। यों तो ब्रह्म समाज वाले भी ख़ुदा तआला को भागीदाररहित कहते हैं तथा आवागमन

को भी नहीं मानते तथा कोई शिर्क नहीं करते और प्रतिफल दिवस को भी मानते और ला इलाहा इल्लल्लाह के भी इक़रारी हैं, फिर जबकि इन समस्त बातों में ब्रह्म समाज वाले भागीदार हैं तो ऐसी स्थिति में कि मुसलमानों की उन्नति भी उसी सीमा तक है तो इन में और ब्रह्म समाज वालों में क्या अन्तर है। अत: यदि इस्लाम धर्म (हम ख़ुदा की शरण चाहते हैं) कोई विशेष ने'मत प्रदान नहीं करता तथा मानवीय विचारों तक ही अन्त होता है तो ऐसी स्थिति में वह धर्म ख़ुदा की ओर से नहीं कहा जा सकता। भला एक व्यक्ति इस्लाम की प्रत्येक पवित्र आस्था के अनुसार अपनी आस्था रखता है परन्तु आंहज़रत[स.अ.व.] को झूठ बनाने वाला समझता है कि जैसा कि ब्रह्म समाज वाले समझते हैं तो इस विचार के मुसलमान उसके समक्ष अपने धर्म की अपेक्षाकृत क्या विशेषता प्रस्तुत कर सकते हैं जो मात्र क़िस्से कहानियां न हो अपितु एक ऐसी मौजूद और महसूस ने'मत हो जो उन को दी गई तथा उनके अतिरिक्त को नहीं दी गई। इसलिए हे दुर्भाग्यशाली और अभागी जाति ! वह वही ने'मत है जो ख़ुदा के वार्तालाप एवं संबोधन हैं जिन के द्वारा ग़ैब के ज्ञान प्राप्त होते तथा ख़ुदा की समर्थन करने वाली शक्तियां प्रकट होती हैं तथा ख़ुदा की वे सहायताएं जिन पर ख़ुदा की वह्यी की मुहर होती है प्रकट होती हैं और वे लोग उस मुहर से पहचाने जाते हैं। इसके अतिरिक्त कोई अन्तर नहीं। जब तुम स्वयं स्वीकार करते हो कि ख़ुदा दुआओं को सुनता है। हे सुस्त ईमान वालो ! और हृदयों के अंधो ! जबकि वह सुन सकता है तो क्या वह बोल नहीं सकता ? और जबकि सुनने में उसकी कोई मान-हानि नहीं तो फिर अपने बन्दों के साथ बोलने से उसकी क्यों मान-हानि हो गई ? अन्यथा यह आस्था रखो कि जैसा कि कुछ समय से ख़ुदा के इल्हाम पर मुहर लग गई है वैसा ही उसी से ख़ुदा के सुनने पर भी मुहर लग गई है और अब ख़ुदा नऊज़ुबिल्लाह गूंगों-बहरों में सम्मिलित है। क्या कोई बुद्धिमान इस बात को स्वीकार कर सकता है कि इस युग में ख़ुदा सुनता तो है परन्तु बोलता नहीं। फिर इसके पश्चात् यह प्रश्न होगा कि क्यों नहीं बोलता। क्या जीभ पर कोई रोग लग गया है परन्तु कान रोग से सुरक्षित हैं जबकि वही बन्दे हैं तथा वही ख़ुदा है और ईमान की पूर्णता के लिए वही आवश्यकताएं हैं

अपितु इस युग में हृदयों पर जो नास्तिकता विजयी हो गई है बोलने की उतनी ही आवश्यकता थी जितने सुनने की। फिर क्या कारण कि सुनने की विशेषता तो अब तक है परन्तु बोलने की विशेषता निलंबित हो गई है।

खेद कि चौदहवीं सदी में से बाईस वर्ष गुज़र गए और हमारे दावे की अवधि इतनी लम्बी हो गई कि जो लोग मेरे दावे के प्रारंभिक युग में अभी पेट में थे, उनकी सन्तान भी जवान हो गई, परन्तु आप लोगों को अभी समझ में न आया कि मैं सच्चा हूं। बारम्बार यही कहते हैं कि हम तुम्हें इस कारण नहीं मानते कि हमारी हदीसों में लिखा है कि तीस दज्जाल आएंगे।

हे दुर्भाग्यशाली जाति ! क्या तुम्हारे भाग में दज्जाल ही रह गए। तुम प्रत्येक ओर से इस प्रकार तबाह किए गए जिस प्रकार एक खेती को रात के समय किसी अजनबी के पशु तबाह कर देते हैं। तुम्हारी आन्तरिक परिस्थितियां भी बहुत ख़राब हो गईं और बाह्य आक्रमण भी चरम सीमा को पहुंच गए। सदी के सर पर (प्रारंभ में) जो मुजद्दिद आया करते थे, वह बात कदाचित् नऊज़ुबिल्लाह ख़ुदा को भूल गई कि अब की बार यदि सदी के सर पर भी आया तो तुम्हारे कथनानुसार एक दज्जाल आया। तुम धूल में मिल गए परन्तु ख़ुदा ने तुम्हारी ख़बर न ली, तुम बिदअतों में डूब गए परन्तु ख़ुदा ने तुम्हारी सहायता न की। तुम में से रूहानियत जाती रही। श्रद्धा एवं निष्ठा की गंध न रही सच कहो अब तुम में रूहानियत कहां है, ख़ुदा के संबंध के निशान कहां। धर्म तुम्हारे विचार में क्या है ? मात्र मुंह की चालाकी और उपद्रवयुक्त झगड़े। द्वेष के जोश तथा अंधों की भांति प्रहार। ख़ुदा की ओर से एक सितारा निकला, परन्तु तुम ने उसे नहीं पहचाना तथा तुमने अंधकार को अपनाया। इसलिए ख़ुदा ने तुम्हें अंधकार में ही छोड़ दिया।

अत: इस अवस्था में तुम में तथा अन्य जातियों में क्या अन्तर है ? क्या एक अंधा अंधों में बैठकर कह सकता है कि तुम्हारी दशा से मेरी दशा अच्छी है।

हे मूर्ख जाति ! मैं तुम्हें किस से उपमा दूं। तुम उन अभागों के समान हो जिन के घर के निकट एक दानशील ने एक बाग़ लगाया और उसमें हर प्रकार का फलदार वृक्ष लगाया तथा

उसके अन्दर एक मधुर नहर जारी कर दी जिसका पानी अत्यन्त मीठा था। उस बाग़ में बड़े-बड़े छायादार वृक्ष लगाए जो हज़ारों लोगों को धूप से बचा सकते थे। तब उस जाति की उस दानशील ने दा'वत की जो धूप में जल रही थी तथा कोई छाया न थी और न कोई फल था, न जल था ताकि वे छाया में बैठें और फल खाएं और जल पिएं, परन्तु उस अभागी जाति ने उस दा'वत (निमंत्रण) को अस्वीकार किया तथा उस धूप में भीषण गर्मी, प्यास तथा भूख से मर गए। इसलिए ख़ुदा तआला कहता है कि उनके स्थान पर मैं दूसरी जाति को लाऊंगा जो उन वृक्षों की शीतल छाया में बैठेगी और उन फलों को खाएगी तथा उस पानी को पिएगी। ख़ुदा ने उदाहरण के तौर पर पवित्र क़ुर्आन में क्या ख़ूब कहा है कि ज़ुलक़रनैन ने एक जाति को धूप में जलते हुए पाया तथा उनमें और सूर्य में कोई ओट न थी और उस जाति ने ज़ुलक़रनैन से कोई सहायता न मांगी इसलिए वह उसी विपत्ति में ग्रस्त रही, किन्तु ज़ुलक़रनैन को एक अन्य जाति मिली जिन्होंने ज़ुलक़रनैन से शत्रु से बचने के लिए सहायता मांगी। अत: उनके लिए एक दीवार बनाई गई। जिससे वे शत्रु की लूटमार से बच गए।

अत: मैं सच-सच कहता हूं कि पवित्र क़ुर्आन की भविष्य की भविष्यवाणी के अनुसार वह ज़ुलक़रनैन मैं हूं जिसने प्रत्येक जाति की सदी को पाया और धूप में जलने वाले वे लोग हैं जिन्होंने मुसलमानों में से स्वीकार नहीं किया और कीचड़ के झरने तथा अंधकार में बैठने वाले ईसाई हैं जिन्होंने सूर्य को दृष्टि उठा कर भी नहीं देखा और वह जाति जिनके लिए दीवार बनाई गई वह मेरी जमाअत है। मैं सच-सच कहता हूं कि वही हैं जिन का धर्म दुश्मनों की लूट मार से बचेगा। प्रत्येक नींव जो कमज़ोर है उसे शिर्क एवं नास्तिकता खाती जाएगी परन्तु इस जमाअत की बड़ी दीर्घ आयु होगी तथा शैतानी गिरोह उन पर प्रभुत्व नहीं पाएगा। उन का तर्क तलवार से अधिक तेज़ और भाले से अधिक अन्दर घुसने वाला होगा और वह प्रलय तक प्रत्येक धर्म पर विजयी होते रहेंगे।

हाय अफ़सोस उन मूर्खों पर जिन्होंने मुझे नहीं पहचाना। वे कैसी अंधी आंखें थीं जो सच्चाई के प्रकाश को देख न सकीं। मैं उनको दिखाई नहीं दे सकता क्योंकि पक्षपात

ने उनकी आंखों को अंधा कर दिया। हृदयों पर ज़ंग है और आंखों पर आवरण। यदि वे सच्ची खोज में लग जाएं और अपने हृदयों को शत्रुता से पवित्र कर दें, दिन के रोज़े रखें और रातों को उठकर नमाज़ में दुआएं करें, रोएं और नारे लगाएं तो आशा है कि दयालु ख़ुदा उन पर प्रकट कर दे कि मैं कौन हूं। चाहिए कि ख़ुदा की निजी निःस्पृहता से डरें।

जब यहूदियों ने आंहज़रत[स.अ.व.] को स्वीकार न किया तथा द्वेष और शत्रुता को नहीं छोड़ा तो ख़ुदा ने उनके हृदयों पर मुहरें लगा दीं तथा उनमें सैकड़ों धर्माचार्य तथा फ़रीसी यहूदी वर्ग (जो परम्पराओं के पुजारी थे) और तौरात के विद्वान थे तथापि न वे वास्तविकता को समझ सके और न ख़ुदा ने किसी स्वप्न या इल्हाम के द्वारा उन पर सच्चाई प्रकट की। अतः चूंकि इस उम्मत का भी उन्हीं के पद चिन्हों पर आचरण है इसलिए उनकी आंख कदापि नहीं खुल सकती और न वे मुझे पहचान सकते हैं जब तक उन्हें सच्चा संयम प्राप्त न हो। मुख की व्यर्थ बातों से ख़ुदा प्रसन्न नहीं होता। उसकी दृष्टि हृदयों पर है। प्रत्येक जो अपनी किसी बेईमानी को छिपाता है वह उसकी गहरी दृष्टि से छिपा नहीं सकता। संयमी वही है जो ख़ुदा की साक्ष्यों से संयमी सिद्ध हो क्योंकि संयमी ख़ुदा की दया के आंचल में ऐसा होता है जैसा कि एक प्रिय बच्चा अपनी मां के आंचल में। संसार उसे मारने के लिए उस पर टूट पड़ता है और द्वार तथा दीवार हर एक उसको डंक मारता है परन्तु ख़ुदा उसको बचा लेता है और जैसा कि जब सूर्य उदय होता है तो उसकी खुली-खुली किरणें पृथ्वी पर गिरती हैं, इसी प्रकार ख़ुदा तआला के समर्थन और सहायता खुले तौर पर संयमी के साथ होती हैं। वह उसके शत्रुओं का शत्रु होता है तथा उनकी आंखों के सामने संयमी को सम्मान देता है जिसका वे अपमान चाहते थे। वह न नष्ट होता है और न ही बर्बाद होता है जब तक कि अपना कार्य पूर्ण न कर ले तथा उसका विरोध एक तेज़ तलवार की धार पर हाथ मारना है।

ترىٰ نصر ربّى كيف يأتى و يظهرٌ و يسعٰى الينا كل من هو يُبصرٌ

मेरे ख़ुदा की मदद को तू देखता है कि क्योंकर आ रही है और प्रकट हो रही है तथा प्रत्येक जो आंखें रखता है हमारी ओर दौड़ता चला आता है।

اتعلم مفتریًا کمثلی مؤیّدًا   و یقطع ربی کلما لا یثمرٗ

क्या तू किसी ऐसे झूठ घड़ने वाले को जानता है जो मेरे समान ख़ुदा के समर्थन से समर्थित हो तथा मेरे ख़ुदा की यह आदत है कि प्रत्येक शाखा जो फल नहीं लाती वह काट देता है।

تقولون کذّاب و قد لاح صدقنا   بآیٍ تجلّت لیس فیھا تکدّرٗ

तुम कहते हो कि यह व्यक्ति झूठा है हालांकि मेरा सत्य प्रकट हो चुका। उन निशानों के साथ सत्य प्रकट हुआ जिनमें कोई गन्दगी नहीं।

و ھل یستوی ضَوًا نھارٌ و لیلۃٌ   فکیف کذوبٌ و الصدوق المُطھّرٗ

और क्या दिन और रात प्रकाश में समान हो सकते हैं अत: एक झूठा और वह सच्चा जो पवित्र किया गया है समान हो जाएंगे।

ففکّر و لا تعجل علینا تعصّبًا   و ان کنت لا تخشٰی فکذّب و زوّرٗ

अत: विचार कर और हम पर शीघ्रता के साथ आक्रमण न कर और यदि तू नहीं डरता तो झूठ बोलते हुए झुठला।

و کفّر و ما التکفیر منک ببدعۃٍ   کمثلک قال السا بقون فدمّروا

और मुझे काफ़िर कह तथा तेरी ओर से काफ़िर कहना कोई नई निकाली हुई बात नहीं, तेरी तरह पहले इन्कार करने वाले भी काफ़िर कहते रहे हैं और अन्तत: तबाह किए गए।

و ھٰذا ھو الوقت الذی لک نافع   فتب قبل وقتٍ فیہ تُدعٰی و تحضرٗ

और यही समय है जो तुझे लाभ दे सकता है। अत: उस समय से पूर्व पश्चाताप कर कि जिसमें तू बुलाया जाए और उपस्थित किया जाए।

و قد کبّدت شمس الھدٰی و امورنا   انارت کیاً قوت و انت تُعفّرٗ

और हिदायत का सूर्य सर पर आ गया और हमारे कार्य याक़ूत (मोती) की भांति चमक उठे और तू उन्हें धूमिल करना चाहता है।

و لو لا ثلٰث فيك تغلي لجئتني فمنهن جهل ثم كبر مثوّرٌ

और यदि तुझ में तीन आदतें जोश न मारतीं तो तू मेरी ओर आ जाता। उनमें से एक तो असभ्यता है और दूसरी अभिमान जो जोश मार रहा है।

و اٰخر اخلاقٍ يبيدك سمّها هوالخوف من قومٍ بحُمقٍ تنفّروا

तथा तीसरा आचरण जिस का विष तुझे तबाह कर रहा है वह उस क़ौम से भय है जो अपनी मूर्खता के कारण नफ़रत करते हैं।

و من كان يخشى الله لا يخشى الورٰى هوالشجرة الطوبٰى ينُورويُثمرٌ

और जो व्यक्ति ख़ुदा से डरता है वह लोगों से नहीं डरता, वह वृक्ष मुबारक है फूल और फल लाता है।

و من كان بالله المهيمن مؤمنًا علٰى نائبات الدهر لا يتفكّرٌ

और जो व्यक्ति निगरान ख़ुदा पर ईमान लाता है वह समय की घटनाओं से कुछ भी चिन्तित नहीं होता।

سلامٌ علٰى قومٍ رؤا نَور دوحتى فراق نواظر هم وللقطف شمّروا

और उस क़ौम पर सलाम जिसने मेरे वृक्ष की केवल एक कली देखी तथा वह कली उन्हें अच्छी लगी और फलों को तोड़ने के लिए तैयार हो गए।

فايّ غبى انت يا ابن تصلّفٍ ترىٰ ثمراتى كلها ثم تُقصِرٌ

अत: हे उपहास के बेटे ! तू कैसा मूर्ख है कि मेरे सारे फलों को तो देखता है और फिर आलस्य करता है।

سيهد يك ربّى بعد غيٍّ و شِقوةٍ و ذٰلك من وحى اتانى فاُخبرٌ

शीघ्र ही ख़ुदा तुझे गुमराही के बाद हिदायत देगा और यह मुझे ख़ुदा तआला की वह्यी से ज्ञात हुआ है। अत: मैं सूचित करता हूं।

و نحن علمنا المنتهٰی من ولیّنا　　فَقرّت به عَیْنِی و کنت اُذکّرٗ

और मुझे तेरे कार्य का अंजाम अपने मित्र ख़ुदा तआला से मालूम हुआ अत: इस से मेरी आंख को ठंडक पहुंची तथा मैं स्मरण कराता रहा।

وَ وَاللّٰہ لَا انسٰی زَمانَ تعلّق　　و لیس فؤادی مثل ارضٍ تحجّرٗ

और ख़ुदा की क़सम मैं सम्बन्ध के समय को भूलता नहीं तथा मेरा हृदय ऐसा नहीं जैसा कि पृथ्वी पथरीली होती है।

اریٰ غیظ نفسی لاثبات لغلیہٖ　　کموجٍ من الرجّاف یعلو و یحدرٗ

मैं अपने क्रोध को देखता हूं कि उसको कुछ स्थिरता नहीं वह दरिया की उस लहर की भांति है जो एक पल में चढ़ता और उतरता है।

اذا احسن الانسان بعد اساء ۃٍ　　فننسی الاساء ۃ و المحاسن نَذکرٗ

जब मनुष्य बदी के बाद नेकी करे तो हम बदी को भुला देते हैं और नेकियों को याद रखते हैं।

و ان قلتُ مُرًّا فی کلامٍ لطالما　　رأیتُ أذًی منکم و قلبی مکسّرٗ

और यदि मैंने किसी बात में कुछ कड़वा कहा है तो मैं एक लम्बे समय तक तुम से कष्ट उठाता रहा तथा मेरा हृदय चूर चूर है।

و ما جئتکم الّامن اللّٰہ ذی العُلٰی　　و ما قلتُ الّاکلّما کنتُ أوْمرٗ

तथा मैं ख़ुदा तआला की ओर से आया हूं अपनी ओर से नहीं और मैंने वही कहा है जो ख़ुदा ने मुझे आदेश दिया।

وان شاء لم اُبعَث مقام ابن مریم　　وللّٰہِ فی اقدارہٖ ما یُحیّرٗ

और यदि ख़ुदा चाहता तो मैं इब्ने मरयम के स्थान पर अवतरित न होता तथा ख़ुदा के अपने प्रारब्ध में ऐसी-ऐसी बातें हैं जो आश्चर्य चकित कर देती हैं।

و لایُسئلُ الرحمٰن عن امرٍ قضٰی ویسئل قومٌ ضلّ عمّا تخیّروا

और ख़ुदा अपने कार्यों के बारे में पूछा नहीं जाता तथा वह क़ौम जो गुमराह हो जाए उस से पूछा जाता है कि ऐसा कार्य क्यों किया।

کذٰلك عادتهٗ جرت فی قضائهٖ فیختار ما یُعمی عیونا و یَأْطَرٗ

उसकी आदत अपने इरादे में इसी प्रकार जारी है। अत: वह ऐसी बात अपनाता है जिन से आंखें अंधी हो जाती हैं और टेढ़ी कर देता है।

و ما کان لی ان اترك الحق خیفةً جوادٌ لنا عند الوغٰی یَتَمَطَّرٗ

और मैं ऐसा नहीं हूं कि सच्चाई को डर कर छोड़ दूं। हमारा वह घोड़ा है जो युद्ध के समय शीघ्रता के साथ चलता है।

و قالوا اذا ماالحرب طال زمانها لنا الفتح فانظر کیف دُقّوا و کُسّروا

जब एक लड़ाई लम्बी हो गई तो वे कहने लगे कि विजय हमारी है। अत: देख कि वे किस प्रकार पीसे गए।

و ما ان رَأَینا فی المیادین فتحهم و من غرّه حولٌ رأیناه یُدبرٗ

और हमने मैदानों में उनकी विजय नहीं देखी और जिसे किसी शक्ति ने अभिमानी किया हमने उसे पीठ फेरते देखा।

رَأَینا عنایة حِبّنا عند اُثرةٍ و کل صدیقٍ فی الشدائد یُخبرٗ

हम ने अपने मित्र की दया को कठिनाई के समय देखा तथा प्रत्येक मित्र कठिनाइयों के समय आज़माया जाता है।

أَری النفس لا تدری لغوبًا بسبُله و ما اَن أَرَاهَا عند خوف تأَخّرٗ

मैं अपने आप को देखता हूं कि उसके मार्गों में रुकता नहीं तथा मैं भय के समय उसे पीछे हटते हुए नहीं देखता।

و اِنّی نسیت الھمّ والغمّ والبلا　　　اذا جاء نی نصرٌ ووحی یُبشرٗ

और मैंने चिन्ता, शोक और विपत्ति को भुला दिया जब उसकी सहायता तथा शुभ सन्देश देने वाली वह्यी मेरे पास आई।

و اِنّا بِفضل اللہ نطوی شعابنا　　　علٰی ھاجراتٍ مثل ریح تُصَرصِرٗ

और हम ख़ुदा की कृपा से अपना मार्ग तय कर रहे हैं ऐसे ऊंटों पर जो तीव्र वायु के समान चलते हैं।

لھن قوائم کالجبال کأَنّھا　　　سفائن فی بحر المعارف تمخرٗ

उन ऊंटनियों के पैर पर्वतों की भांति हैं जैसे कि वे नौकाएं हैं जो मा'रिफ़त के दरिया में तैरती हैं।

تَدلّت علینا الشمس شمس المعارف　　　فکنا بضوء الشمس نمشی و ننظرٗ

मा'रिफ़तों (आध्यात्म ज्ञानों) का सूर्य हमारी ओर झुक गया। अत: हम सूर्य के प्रकाश के साथ चलते और देखते हैं।

رأینا مراداتٍ تعسّر نیلھا　　　ترجّز غیثٌ بعد مکثٍ یحذّرٗ

हमने वे मनोकामनाएं पाईं जिनका पाना कठिन था। उस विलम्ब के बाद जो भयभीत करता था बादल ने धीरे-धीरे हमारी ओर गति की।

علٰی ھٰذہ نیف و عشرین حجۃً　　　اذا اختارنی ربّی فکنت اُبشّرٗ

इस बात पर बीस वर्ष से ऊपर कई वर्ष गुज़र गए जबकि ख़ुदा ने मुझे चुन लिया और मुझे शत्रु सन्देश दिया।

فقال سیأْتیك الأُناس و نصرتی　　　و من کل فجٍّ یأتینّ وتُنصرٗ

अत: उसने कहा कि लोग तेरी ओर आएंगे और तेरी सहायता करेंगे तथा प्रत्येक मार्ग से लोग तेरी ओर आएंगे और तुझे सहायता दी जाएगी।

فتلك الوفود النازلون بدارنا هو الوعد من ربّی و ان شئت فاذکرٗ

ये समूह के समूह लोग जो हमारे घर में उतरते हैं। यह ख़ुदा का वही वादा है और यदि तू चाहे तो याद कर।

و ان کنت فی ریبٍ و لا تؤمنَن بهٖ و تحسبُ کذبًا ما اقول و اسطرٗ

और यदि तू सन्देह में है तथा उस पर ईमान नहीं लाता और तू मेरी बात एवं लेख को झूठ समझता है।

فاِنّا کتبنا فی البراهین کلّه امورٌ علیها کنت من قبل تعثرٗ

अत: हमने यह सब इल्हाम बराहीन अहमदिया में लिख दिए हैं। यह वे बातें हैं जिन्हें तू पहले से जानता है।

فلا تتبع أَهواء نفسٍ مُبِیدةٍ ولا تختر الزّوراءَ عمدًا فتخسرٗ

अत: तू तबाह करने वाली मनोवृत्ति का अनुयायी न बन और टेढ़े मार्ग को न अपना वरन् तू हानि उठाएगा।

أَتعلم هیِّنًا عَثْرَة الله ذِی العُلیٰ و اِنّ حسامَ الله بالمَسّ یبترٗ

क्या तू ख़ुदा से युद्ध करना आसान समझता है जो महा प्रतापी है और ख़ुदा की तलवार छूने के साथ ही क़त्ल कर देती है।

وَ اِن کنت أَزمعتَ النِّضال تَهوّرًا فنأتی کما یأْتی لصید غَضنفرٗ

और यदि तूने युद्ध करने का ही प्रण कर लिया है तो हम इस प्रकार आएंगे जैसे कि शिकार के लिए शेर आता है।

لنا اُثرةٌ فِی الله مَورٌ مُعبّد اذا ما اُمرنا منه لا نتأخّرٗ

तथा हमारे लिए असमृद्धि ख़ुदा के मार्ग में एक इस्तेमाल किया हुआ मार्ग है। जब हमें आदेश हो जाए तो हम विलम्ब नहीं करते।

انترك قول الله خوفًا من الورىٰ انخشٰی لئام الحيِّ جبنًا و نحذرٗ

क्या लोगों के भय से हम ख़ुदा के कथन को त्याग दें क्या हम डरपोक होकर कमीने लोगों के कबीले से डरें।

یری الله بادیهم و تحت ادیمهم ولو من عیون الخلق یُخفٰی و یُسترٗ

ख़ुदा उन के बाहर और अन्दर की ख़ूब जानता है यद्यपि लोगों की आंखों से वे परिस्थितियां गुप्त रखी जाएं।

فلا تذهبَن عیناك نحو عمائمٍ و ما تحتها الّا رء وس تُزوّرٗ

अत: ऐसा न हो कि तू उन की पगड़ियों को देखे, उनके नीचे ऐसे सर हैं जो छल कर रहे हैं।

أَتطلب دنیا هم و تبلٰی ریاضها و تنسٰی ریاضًا لیس فیها تغیّرٗ

क्या तू उनके संसार को चाहता है और वे बाग़ खराब और जीर्ण हो जाएंगे। क्या तू उन बागों की अवहेलना करता है जिन में परिवर्तन नहीं आएगा।

و انت تظنّ بی الظنون تغیّظًا وَ اِنّی بریئٌ من امورٍ تصوّرٗ

और तू अपने क्रोध से मुझ पर कई बोधभ्रम करता है तथा मैं उन बातों से पवित्र हूं जो तेरी कल्पना में हैं।

نزلتُ بحرّ الدار دار مهیمن و تالله انّك لا ترانی و تهذرٗ

मैं अपने ख़ुदा के घर के मध्य में हूं और ख़ुदा की क़सम तू मुझे देखता नहीं और यों ही बकवास करता है।

أَنَا اللیث لا أَخشی الحمیر و صوتهم و کیف و هم صیدی و للصید اَزء رٗ

मैं शेर हूं और गधों का आवाज़ से नहीं डरता तथा क्योंकर डरूं वे तो मेरे शिकार हैं और शिकार के लिए मैं नारे लगाता हूं।

أَ تُذعِرنی بالفانیات جهالةً و اِنّ اذی الدنیا یمرّ و یَطمرٌ

क्या तू मुझे नश्वर वस्तुओं से डराता है यह तो मूर्खता है और निश्चय ही संसार का कष्ट गुज़र जाता है तथा मिट जाता है।

و لسنا علی الاعقاب موتٌ یردّنا ولو فی سبیل اللّٰہ نُدمٰی و نُنحرٌ

और हम ऐसे नहीं हैं कि कोई मौत हमें ख़ुदा के मार्ग से हटा दे यद्यपि कि हम ख़ुदा के मार्ग में घायल हो जाएं या ज़िब्ह किए जाएं।

تنکّر وجه الجاهلین تغیّظًا اذا اُعثروا من موت عیسٰی و اُخبروا

क्रोध के कारण असभ्य लोगों का मुख बिगड़ गया जब उनको हज़रत ईसा के मरने की सूचना दी गई।

و قالوا کذوبٌ کافرٌ یتبع الھوٰی و حثّوا علیٰ قتلی عوامًا و عَیّروا

और उन्होंने कहा कि झूठा काफ़िर है काम संबंधी इच्छाओं का अनुसरण करता है तथा मेरे क़त्ल के लिए लोगों को उठाया और डांट-डपट की।

فضاقت علینا الارض من شرّ حزبھم ولو لا ید المولیٰ لکنّا نُتَبَّرٗ

अत: उनके गिरोह की शरारत से पृथ्वी हम पर तंग हो गई। यदि ख़ुदा तआला का हाथ न होता तो हम तबाह हो जाते।

فلم یُغن عنھم مکرھم حِیْن أَشرقت شموس عنایات القدیر فادبروا

उनके छल ने उनको कुछ लाभ न दिया जबकि ख़ुदा की मेहरबानियों के सूर्य चमके और वे लोग पीठ फेर कर भाग गए।

رجَعنا و قد رُدّت الیھم رماحھم قَضَی الأَمرَ حِبٌّ لایُبَاریه منکرٌ

हम वापस आए और उनके भाले उनकी ओर वापस किए गए उस मित्र ने निर्णय कर दिया जिस का कोई इन्कारी मुकाबला नहीं कर सकता।

من الضغن و الشحناء یھذون کُلّھم   و اَمری مبینٌ واضحٌ لو تفکّروا

वे सब के सब द्वेष और शत्रुता से बकवास कर रहे हैं और मेरी बात प्रकाशमान और स्पष्ट है यदि वे सोचें।

و اصل التنازع و التخالف بیننا   رخیمٌ قلیلٌ ثُمَّ باللّغو یُکثر[1]

तथा हम में और उनमें जो मतभेद है वास्तव में वह बहुत थोड़ा और संक्षिप्त है फिर वे व्यर्थ विचारों के साथ उसे बढ़ा देते हैं।

جنحنا لسلمٍ شائقین لسلمھم   و جئنا بمُرّانٍ اذا ما تشذّروا

उनकी सुलह की रुचि में हम सुलह (मैत्री) के लिए झुक गए और जब वे लड़ने के लिए तैयार हुए तो हम भाले के साथ निकले।

اری اللّٰہ اٰیاتٍ و لٰکن نفوسھم   نفوسٌ معوّجۃ کنارٍ تسعّرٗ

ख़ुदा ने कई निशान दिखाए परन्तु उनके हृदय बहुत टेढ़े हैं और उस आग के समान हैं जो भड़कती है।

و لسنا نحب تضاغنا عند سلمھم   و مَن جاء نا سلمًا فانا نُوقّرٗ

और यदि वे सुलह चाहते हैं तो हम युद्ध पसन्द नहीं करते। यदि कोई सुलह का अभिलाषी होकर आए तो हम उसका सम्मान करते हैं।

---

1 اصل التنازع فی عیسٰی علیہ السلام اعنی فی انّہ هل ھو حیّ او میت فذٰلك امر واضح لقوم یتفکرون قال اللّٰہ تعالیٰ یٰعِیْسٰۤی اِنِّیْ مُتَوَفِّیْکَ وَ رَافِعُکَ اِلَیَّ (اٰل عمران:۵۶) فقدّم التوفّی علی الرفع کما انتم تقرءون۔ فھٰذا حکم اللّٰہ۔ و من لم یحکم بما انزل اللّٰہ فاولٰٓئك ھم الکافرون۔ و لا ینبغی لاحدٍ ان یّحرّف کلم اللّٰہ عن مواضعھا و قد لعن اللّٰہ المحرفین کما انتم تعلمون۔ثمّ الشاھد الثانی قولہ تعالیٰ فَلَمَّا تَوَفَّیْتَنِیْ (المائدہ:۱۱۸) فطوبیٰ لقومٍ یتدبّرون۔ ثم الشاھد الثالث من القراٰن قولہ تعالیٰ وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ (اٰل عمران:۱۴۵) فبأیّ حدیثٍ بعدہٗ تؤمنون۔ و لقد رأی عیسٰی نبیّنا صلی اللّٰہ علیہ وسلم لیلۃ المعراج فی الاموات ثم انتم تکفرون۔

و من هرنا فنعافه بجزائهٖ و مَن جاء نا سلمًا فبالسلم نَحضرٗ

और जो हम से नफ़रत करे हम उससे नफ़रत करते हैं और जो सुलह के साथ हमारे पास आए तो हम सुलह के साथ आते हैं।

و كان عدوى بعضهم فى مساء هم فاضحوا بايمانٍ و رُشْدٍ وابصروا

और उनके कुछ लोग अपनी शाम के समय मेरे शत्रु थे फिर दिन चढ़ते ही उन्हें ईमान और हिदायत प्राप्त हुई तथा देखने लगे।

و قد زادنى فى العلم و الحلم جهلهم و سكّنتُ نفسى عند غيظ يكرّرٗ

उनकी मूर्खता ने मेरा ज्ञान और शालीनता को बढ़ा दिया और उनके क्रोध से मेरे हृदय में जोश थम गया वह क्रोध जो बार-बार किया जाता है।

و اعجبنى غيظ العِدا و جنونهم أَرَاهم كقومٍ من غبوقٍ تخمروا

और शत्रुओं के क्रोध एवं जुनून ने मुझे आश्चर्य में डाल दिया है मैं उनको उस क़ौम की भांति देखता हूं जो रात को शराब पीकर नशे में चूर होते हैं।

تبصر عدوى هل ترى من مزوّرٍ يؤيّده ربّى كمثلى و ينصرٗ

हे मेरे शत्रु ! ख़ूब ध्यान से देख क्या कोई ऐसा धोखेबाज़ है जिस की मेरी तरह ख़ुदा तआला सहायता और समर्थन करता हो।

تبصّر و انّ العمر ليس بدائمٍ كلانا و ان طال الزمان سيندر

आंख खोल कि आयु हमेशा नहीं रहेगी तथा हम में से प्रत्येक यद्यपि समय लम्बा हो जाए एक दिन मृत्यु होगी।

فمالك لا تخشى الحسيب و ناره و مالك تختار الجحيم و تُؤثرٗ

अत: तुझे क्या हो गया कि तू ख़ुदा के हिसाब रखने वाले से नहीं डरता तथा तुझे क्या हो गया कि नर्क को अपना रहा है।

أَتجعل تكفيری لكفرك مُوجبًا و لا تتّقی یومًا الی القبر یَهصِرٗ

क्या तू मुझे काफ़िर कह कर स्वयं को कुफ्र का कारण बनाता है और उस दिन से नहीं डरता जो क़ब्र की ओर खींचेगा।

اذا بُغتَ فی الدنیا من العیش باردًا فمالك لا تبغی المعادَ و تَنترٗ

और जबकि तू सांसारिक जीवन में आराम चाहता है। अत: तुझे क्या हो गया है कि आख़िरत का आराम नहीं चाहता और सुस्त हो जाता है।

فان كنت جوعان الهدی فتحرّنا الا اننا نقری الضیوف و ننحرٗ

अत: यदि तू हिदायत का भूखा है तो हमारी ओर आ। हम मेहमानों को निमंत्रण देते हैं और उनके लिए ज़िब्ह करते हैं।

إِذَا أَشرقت شمس الهدی و ضیاء ها تجلّٰی فلیس الفخران صرت تُبصرٗ

जब हिदायत का सूर्य चमका और उसका प्रकाश स्पष्ट हो गया तो यह गर्व की बात नहीं कि तू देखने लगे।

و لو كان خوف الله مثقال ذرةٍ لو افیتنی والسَیلَ بالصدقِ تعبرٗ

यदि एक कण के बराबर भी ख़ुदा का भय होता तो तू मेरे पास आता तो अपनी श्रद्धा के साथ अपने नफ़्स से बाढ़ को दूर करता।

بلَمَّاعةٍ قَفرٍ رضیت جهالةً و تسعٰی لفانیةٍ و فی الدین تُقصِرٗ

मरुभूमि जो हरियाली से खाली है उससे तू प्रसन्न हो गया और तू नश्वर संसार के लिए दौड़ रहा है और धर्म में तू कमी करता है।

أَثَرتَ غبارًا للاناس لیحسبوا وجودی مُضِلًّا للورٰی ولیَكفروا

तूने लोगों के लिए एक धूल उठाई ताकि मेरे अस्तित्व को गुमराह करने वाला समझें और इन्कारी हो जाएं।

فأَلْهَمَ لی ربّی قلوبًا لیرجعوا　　الیّ فصرنا مرجع الخلق فانظرٗ

अत: मेरे ख़ुदा ने हृदयों में इल्हाम किया ताकि वे मेरी ओर आएं। अतएव हम लोगों के आने का केन्द्र बन गए। अत: तू देख ले।

کبَیْتٍ اذا طاف المُلبّون حوله　　اُزارُ ولی تؤذی النفوس و تُنْحَرٗ

अत: जिस प्रकार लोग काब: का तवाफ़ (परिक्रमा) करते हैं मैं दर्शन किया जाता हूं और मेरी जमाअत के लोग मेरे लिए कष्ट दिए जाते और ज़िब्ह किए जाते हैं।

تریدون توھینی و ربّی یُعزّنی　　تریدون تحقیری و ربّی یُوقّرٗ

तुम मेरा अपमान चाहते हो तथा मेरा ख़ुदा मुझे सम्मान देता है और तुम मेरा तिरस्कार चाहते हो और मेरा ख़ुदा मेरी महानता प्रकट करता है।

أَ تبغی بمکرك ذلّتی و ھلاکتی　　فذٰلك قصدٌلستَ فیه مظفّرٗ

क्या तू अपने छल के साथ मेरा अपमान और विनाश चाहता है यह वह प्रण है जिसमें तू सफल नहीं होगा।

فدع ایّھا المجنون جھدًا مضیّعا　　کمثلی نخیلٌ باسق لایُبعکَرٗ

अत: हे दीवाने ! इन निरर्थक प्रयास को जाने दे। मुझ जैसी बुलन्द खजूर काटी नहीं जाएगी।

أَ تکفر باللّٰہ الجلیل و قدرہ　　أَتحسب کالشیطان انّك اَقدرٗ

क्या तू ख़ुदा और उसकी क़ुदरत से इन्कार करता है क्या तू शैतान की तरह समझता है कि तू अधिक सामर्थ्यवान है।

تسبّ و ما ادری علٰی ما تسبّنی　　أَتطلب ثَأْرًا ثَأْرَجدٍّ مُدمّرٗ

तू मुझे गालियां देता है और मैं नहीं जानता कि तू क्यों देता है क्या तेरे किसी दादा का वध किया है जिसका तू बदला लेना चाहता है।

ترانی بفضل اللّٰہ مرجع عالمٍ   و هل عند قفر من حمامٍ یُهدّرٗ

तू मुझे देखता है कि मैं ख़ुदा तआला की कृपा से प्रजा के लौटने का स्थल हूं और क्या एक निर्जन पृथ्वी में कबूतर मधुर आवाज़ में गाता है।

و لا یستوی عبد شقی و مقبل   لحاك الحسیبُ تری القبول و تنكرٗ

एक वंचित तथा एक मान्य दोनों बराबर नहीं हो सकते। ख़ुदा तेरी भर्त्सना करे तू स्वीकारिता को देखता है और फिर इन्कारी होता है।

و انت الذی قلّبت كل جریمةٍ   عَلَیَّ كَأَنّی شرّ ناسٍ و أَفجرٗ

और तू वह है जिसने समस्त अपराध मुझ पर उल्टा दिए जैसे मैं सब से अधिक बुरी सृष्टि और सर्वाधिक दुराचारी हूं।

فمالك لا تخشی الحسیب و قهره   و این تقاةٌ تدّعی یا مُزوّرٗ

अतः तुझे क्या हो गया कि तू हिसाब लेने वाले ख़ुदा से नहीं डरता। तथा तेरा संयम कहां गया जिसका तू दावा करता था।

و انّكَ ان عادیتنی لا تضرّنی   و ان صِرتَ ذِئبًا او بغیظٍ تنمّرٗ

और यदि तू शत्रुता करे तो मुझे हानि नहीं पहुंचा सकेगा। यद्यपि तू भेड़िया हो जाए या चीता बन जाए।

وماالدّهر الّا تارتان فمنهما   لك التارة الاولٰی باخریٰ نؤَزّرٗ

और युग के लिए केवल दो नौबते हैं। अतः प्रथम नौबत तेरी है और दूसरी हमारी जिसमें हमें सहायता दी जाएगी।

و ما النفس یا مسكین الّا ودیعةٌ   و لا بُدّ یومًا ان تُردّ و تحضرٗ

और हे निराश्रय प्राण तू एक अमानत है। एक दिन अवश्य है कि तू वापस किया जाए और उपस्थित किया जाए।

أَتبغی الحیاۃ و لا ترید ثمارھا　　و ما ھی الّا لعنۃٌ لو تفکّرٗ

क्या तू जीवन चाहता है और उसके फल नहीं चाहता और फल के बिना जीवन ला'नत है यदि तू विचार करे।

اغرّتك دنیاك الدنیّۃ زینۃً　　حذارِ من الموت الذی ھو یبدرٗ

क्या तेरे निर्लज्ज संसार ने तुझे अभिमानी कर दिया, उस मृत्यु से डर जो सहसा तुझ पर आ जाएगी।

تُرید ھوانی کل یومٍ ولیلۃ　　و تبغی لوجهٍ مشرقٍ لَو یُغبّرٗ

प्रत्येक दिन और रात तू मेरा अपमान चाहता है और प्रकाशमान मुख के लिए तू चाहता है कि वह धूमिल हो जाए।

و انّا و انتم لا نغیب من الذی　　یَرَی کلما ننوی و ما نتصوّرٗ

तथा मैं और तुम उस हस्ती से गुप्त नहीं हैं जो हमारे वे समस्त विचार देखता है जो हमारे हृदय में हैं।

و ما المَرء اِلّا کالحباب وجوده　　فان شئتَ نَم فالموت کالصبح یُسفرٗ

और इन्सान तो केवल बुलबुले के समान अस्तित्व रखता है। अत: यदि चाहे तो सो जा, मृत्यु प्रात: की भांति प्रकट हो जाएगी।

لدی النخل و الرّمان تنقف حنظلًا　　فایّ غبیّ منك فی الدّھر اکبرٗ

तू खजूर और अनार को छोड़ कर हंज़ल (इन्दरायन एक कड़वा फल) को तोड़ रहा है। इसलिए तुझ से अधिक दुर्भाग्यशाली और कौन होगा।

و این ضیاء الصدق ان کنت صادقًا　　و کل صدوقٍ بالعلامات یظھرٗ

यदि तू सच्चा है तो सच्चाई का प्रकाश कहां है तथा प्रत्येक सच्चा लक्षणों से प्रकट होता है।

اتؤذی عباداللہ یا عابد الھَوٰی و لا تتّقی ربًّا علیمًا و تجسرٗ

हे ख़ुदा के बन्दे ! क्या तू ख़ुदा के बन्दों को दु:ख देता है और सर्वज्ञ (अलीम) ख़ुदा से नहीं डरता और दिलेरी दिखाता है।

اولٰئك قومٌ قد تولّٰی امورھم قدیرٌ یُوالیھم ویھدی و ینصرٗ

यह एक क़ौम है कि उनके कार्यों का अभिभावक एक सामर्थ्यवान है जो उसी से मित्रता रखता है और उन्हें निर्देश देता है तथा मदद देता है।

و تااللہ للایّام دَورٌ و نوبۃٌ فجئنا بایّام الھدی و نُذکّرٗ

और ख़ुदा की क़सम दिनों के लिए एक घटना चक्र और बारी है। अत: हम हिदायत के दिनों में आए और हिदायत का मार्ग स्मरण कराते हैं।

تری بدعات الغیّ و النَقْعَ ساطعًا و ما انا الّا غیث فضلٍ فاَمطُرٗ

तू गुमराही की बिदअतों को तथा क्रोध में आई धूल को देखता है और मैं दया वृष्टि हूं जो बरस रहा हूं।

و لستُ بفظٍّ کاھرٍ غیر انّنی اذا استنفرا لا عدائُ بالکَھرِ اَنفِرٗ

और मैं गालियां देने वाला और कटु स्वभाव नहीं हूं परन्तु जिस समय शत्रु कटु स्वभाव के नफ़रत करते हैं तो मैं भी नफ़रत करता हूं।

رأینا الأَعاصیر الشدیدۃ والاذٰی وصرنا کوحشٍ عند قومٍ یُکَفّرٗ

हमने घोर आंधियां देखीं तथा दु:ख देखा तथा हम काफ़िर कहने वालों की दृष्टि में हिंसक पशुओं की भांति ठहरे।

و ما نحذر الأَمر الذی ھو واقع من اللہ مولانا ولو کان خنجرٗ

और हम उस बात से नहीं डरते कि हमारे ख़ुदावन्द की ओर से वह घटित होने वाली है और यद्यपि वह तलवार हो।

كفى الله علمًا بالعباد و سِرّهم   فلا تقف ظنًّا لستَ فيه تبصّرً

बन्दों के रहस्यों का विशेष ज्ञान ख़ुदा को है। अत: तू ऐसी कल्पना का अनुसरण न कर जिसमें तुझे विवेक नहीं।

و ما كنتَ فى ايذاء نفسى مُقصّرًا   تمنّيتَ عند جدارنا لو تسوّرً

और तूने मुझे कष्ट देने में कोई कमी नहीं की, तूने मेरी दीवार के पास चाहा कि दीवार से छलांग लगा कर चला जाए।

و والله اِن اُجعَل عليك مسلّطًا   فاِنّ يدِى عمّا يجازيك تُقصِرً

और ख़ुदा की क़सम यदि मुझे तुझ पर अधिकृत कर दिया जाए तो मेरा हाथ तुझे दण्ड देने से असमर्थ रहेगा।

و والله لى فى باطن القلب مُضمَرٌ   سريرة اِشفاق و لو انت تُنكِرً

और ख़ुदा की क़सम मेरे हृदय में हमदर्दी की आदत छिपी हुई है यद्यपि तू इन्कार करे।

أتَتْنِيَ أمورٌ منك قد شقّ وقعها   علىّ و لا كالسّيف بل هى أبهرً

तेरी कुछ बातें मुझ तक पहुंचीं हैं जो मुझे बहुत बुरी लगीं जो काटने में तलवार की भांति अपितु उस से भी अधिक।

و ما كان لى ان اترك الحق خيفةً   انا المنذر العُريان لِلّٰه اُنذرً

और मैं वह नहीं हूं कि सच को डर कर त्याग दूं। मैं एक स्पष्ट तौर पर डराने वाला हूं तथा मात्र ख़ुदा के लिए डराने वाला हूं।

و ان كنت تزرينا فنبغى لك الهُدٰى   صبرنا و ان تُغرى العدا او تهتّرً

और यदि तू हमारे दोष निकालता है तो हम तेरे लिए हिदायत चाहते हैं और हम धैर्य करते हैं यद्यपि तू शत्रुओं को हम पर उकसाए या हमारा अनादर करे।

و ان کنت منّی تشتکی فی مقالةٍ فما هو اِلّا دون سیفٍ تُشهّرُ

और यदि तू मुझ से किसी कलाम के बारे में शोकग्रस्त है तो वह उस तलवार से बहुत कम है जो तू खींच रहा है।

فلا تجز عَن من کلمةٍ قلتَ ضعفها و انّك للایذاء بالسوء تجهرُ

अत: ऐसे वाक्य से अधीरता न कर कि उस से दोगुने तू कह चुका है और कष्ट के लिए खुले खुले तौर पर सताता है।

اضیف الینا مِن عمایاتِ قومنا فساد و کفر و افترائٌ مُجعثرٌ

फ़साद, कुफ़्र तथा झूठ घड़ना जो एकत्र किया गया था क़ौम के अंधेपन के कारण हमारी ओर सम्बन्ध किया गया।

کَأَنَّا جعلنا عادةً کل لیلةٍ نُرقّع ثوب الافتراء و نَنشرُ

जैसे कि हमने यह आदत बना रखी है कि प्रत्येक रात हम ख़ुदा पर झूठ घड़ने का कपड़ा जोड़ते हैं और प्रसिद्धि दे देते हैं।

صبرنا علیٰ ایذاء هم و عُواء هم و کلّ خفیٍّ فی العواقب یظهرُ

हमने उन की यातना देने तथा बकवास पर धैर्य किया तथा प्रत्येक गुप्त बात अन्तत: प्रकट हो जाती है।

عجبتُ لِاَعْدَاءِی یصولون کلهم و لو کان منهم جاهلٌ أَوْ مزوّرٌ

मुझे शत्रुओं से आश्चर्य होता है कि सब मुझ पर आक्रमण कर रहे हैं यद्यपि उनमें से कोई मूर्ख हो या झूठ को सजाने वाला हो।

وهل یصقل الایمان او یکشف العمٰی أَقَاوِیلُ قومٍ لیس معهم تطهّرُ

ऐसी क़ौम के कथन क्या ईमान को चमका सकते हैं या अंधेपन को दूर कर सकते हैं जिनके साथ पवित्रता नहीं।

يفرّون منّى و الظنونُ تعفّنت و ما اَن ارى اهل النهٰى يستنفرٗ

मुझसे वे लोग भागते हैं और उन के गुमान सड़ गए तथा मैं बुद्धिमान को नहीं देखता कि जो मुझ से नफ़रत करे।

و اوذِيتُ من عُمى و لكن كمثلهم تعامٰى عنادًا من رأيناه ينظرٗ

और मैंने अंधों से दु:ख उठाया परन्तु उनकी तरह वह व्यक्ति भी बनावट से अंधा हो गया जिसको हम जानते हैं कि वह देखता है।

ترى الارض والاموال مبلغ هَمِّهم و زرعًا و دين الله نبتٌ مُشَرشَرٗ

तू देखेगा कि उनका परमोद्देश्य भूमि, धन और खेती है तथा ख़ुदा का धर्म उस बोटी (मांस के टुकड़े) की तरह हो गया है जिसे ऊपर से पशु खा लें।

و تدرى اليهودَ و ما رؤا فى مآلهم كذالك فيهم سنّةٌ لا تغيّرٗ

और तू यहूदियों को जानता है और यह कि उनकी क्या दशा हुई इसी प्रकार उस क़ौम में ख़ुदा का नियम है जो बदला नहीं जाएगा।

أَرَى كل يومٍ فى الفجور زيادةً يقِلّ صلاح الناس و الفسق يكثرٗ

मैं प्रतिदिन व्यभिचारों में वृद्धि देखता हूं। योग्यता कम है और पाप बढ़ता जाता है।

أَرَى كلّهم مُستأْنسين بظلمةٍ و فسقٍ و عن دارالعفاف تقتروا

मैं उनको देखता हूं कि अंधकार के साथ प्रेम करने लगे हैं तथा दुराचारों के साथ हिल गए हैं और पाकदामनी से दूर हो रहे हैं।

شعرتُ لهم لمّا رأيت مزيةً لهم فى ضلال و اعتسافٍ تخيّروا

मैंने उनके लिए ये बातें कविता में लिखीं जबकि मैंने उनमें गुमराही और सीमा का उल्लंघन करने में अतिक्रमण देखा।

يريدون ان اُعفٰى و اُفنٰى و اُبتر   و ما هو الّا هَرّ كلبٍ فيهطرٗ

वे चाहते हैं कि मैं मिटा दिया जाऊं और मार दिया जाऊं और कष्ट दिया जाऊं परन्तु यह केवल एक कुत्ते की आवाज़ है जो अन्तत: मारा जाता है।

و من كان نجمًا كيف يخفٰى بريقه   و من صار بدرًا لا محالة يبهرٗ

और जो सितारा हो उसका प्रकाश क्योंकर छिप सके और जो चौदहवीं रात का चन्द्रमा बन गया वह विजयी हो जाएगा।

و انّى ببرهانٍ قوىٍّ دعوتُهم   و انّى من الرحمٰن حَكَمٌ مُغَذْمِرٗ

और मैंने एक शक्तिशाली तर्क के साथ उनको बुलाया है और मैं ख़ुदा की ओर से मतभेदों का निर्णय करने वाला आया हूं।

و قد جئتُ فى بدر المئين ليعلموا   كما لى و نورى ثم هم لم يَبْصُرُوا

और मैं उनके पास चौदहवीं सदी में आया जो सदियों की बद्र (चौदहवीं रात का चन्द्रमा) है ताकि वे मेरा कौशल और प्रकाश जान लें। फिर वे नहीं देखते।

أَلالَيت شعرى هل رؤامن تجسّسٍ   من الكذب فى امرى فكيف تصوّرٗ

काश उन्हें समझ होती क्या उन्होंने जासूसी के पश्चात् मेरे काम में कुछ झूठ सिद्ध किया। फिर क्योंकर कल्पना कर ली।

و اِنّ الوَرَى من كلّ فجٍ يجيئنى   و يسعٰى الينا كلّ من كان يُبصرٗ

और प्रजा प्रत्येक मार्ग से मेरे पास आ रही है तथा प्रत्येक देखने वाला मेरी ओर दौड़ रहा है।

و كم من عبادٍ اٰثرونى بصدقهم   على النفس حتّٰى خُوّ فوا ثمّ دُمّروا

बहुत से बन्दे ऐसे हैं जिन्होंने अपनी जान पर मुझे अपना लिया यहां तक कि डराए गए फिर क़त्ल किए गए।

و من حزبنا عبداللطیف فانّہ   اَرَی نور صدقٍ منہ خلق تھکّروا☆

वे हमारे गिरोह में से मौलवी अब्दुल लतीफ़ है क्योंकि उसने अपनी श्रद्धा का प्रकाश ऐसा दिखाया कि जिसे देखकर लोग चकित रह गए।

☆अब्दुल लतीफ़ जिनका शे'र में वर्णन हुआ है वह साहिबज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ के नाम से नामित हैं और काबुल में उन्हें शहज़ादा मौलवी अब्दुल लतीफ़ भी कहते हैं। यह एक बड़े ख़ानदान के रईस, ज्ञानी तथा प्रकाण्ड विद्वान थे, तथा इनके पचास हज़ार के लगभग अनुयायी और शिष्य एवं मुरीद थे। हदीस विद्या की स्थापना तथा प्रकाशन उस देश में आदर्णीय मौलवी साहिब के द्वारा ही बहुत हुआ था और इतने विशाल ज्ञान तथा प्रकाण्ड विद्वान होने के बावजूद कि जिसके कारण वह इन देशों में अद्वितीय समझे जाते थे विनय, विनम्रता उनके स्वभाव में इतनी अधिक थी कि जैसे अहं और अहंकार की शक्ति ही उनमें पैदा नहीं हुई थी। वास्तव में काबुल की पृथ्वी में (जो हृदय की कठोरता, निर्दयता, अभिमान एवं अहंकार में प्रसिद्ध है) ऐसे आवभगत करने वाला तथा सत्यनिष्ठ व्यक्ति का अस्तित्व विलक्षण बात है।

अत: अनादि सौभाग्य मौलवी साहिब को खींचते खींचते क़ादियान में ले आया और चूंकि वह एक दूसरों के हृदय की बात जानने वाला, बेनफ़्स तथा सही विवेक से पूरा हिस्सा रखने वाला व्यक्ति था तथा हदीस और क़ुर्आन के ज्ञान की तरह एक ख़ुदा की प्रदत्त शक्ति उन्हें प्राप्त थी और वह मेरे बारे में कई सच्चे स्पप्न भी देख चुके थे। इसलिए चेहरा देखते ही उन्होंने मुझे स्वीकार कर लिया और पूर्ण प्रफुल्लता से मेरे मसीह मौऊद होने के दावे पर ईमान लाए और प्राण न्योछावर करने की शर्त पर बैअत की और एक ही संगत में ऐसे हो गए जैसे वर्षों से मेरी संगत में थे और न केवल इतना अपितु उन पर ख़ुदा के इल्हाम का सिलसिला भी जारी हो गया और उन पर सच्ची घटनाएं आने लगीं और उन का हृदय ख़ुदा के अतिरिक्त शेष सभी से पूर्णतया धोया गया। तत्पश्चात् वह उस स्थान से ख़ुदा की मा'रिफ़त और प्रेम से परिपूर्ण होकर अपने देश की ओर चले गए। उनके घर पहुंचने पर

جزی اللہ عَنّا دائمًا ذٰلكَ الفتٰی   قضٰی نحبه لِلّٰه فاذکر و فکّرٖ

ख़ुदा हम से उस जवान को प्रतिफल दे वह अपने प्राण ख़ुदा के मार्ग में दे चुका। अतः सोच और चिन्ता कर।

शेष हाशिया :- काबुल के अमीर को सूचना दी गई कि वह क़ादियान गए और बैअत करके आए हैं और अब आस्था रखते हैं कि जो मसीह मौऊद और महदी मा'हूद आने वाला था वही उन का मुर्शिद है। इस मुख़बरी पर राष्ट्र हितों के आधार पर आदरणीय मौलवी साहिब गिरफ़्तार किए गए और उनके पैरों में एक बड़ी ज़ंजीर डाली गई और काबुल के उलेमा ने फ़त्वा दिया कि यदि यह व्यक्ति तौबा न करे तो क़त्ल अनिवार्य है। काबुल के मौलवियों से उन की बहस कराई गई तथा प्रत्येक बात में उन्होंने मौलवियों को निरुत्तर किया फिर यह बहाना किया गया कि यह व्यक्ति जिहाद का भी इन्कारी है और यह आरोप सही था क्योंकि मेरी शिक्षा यही है कि यह समय तलवार चलाने का नहीं है अपितु इस युग में जोशपूर्ण भाषणों अकाट्य तर्कों, प्रकाशमान प्रमाणों तथा दुआओं के साथ जिहाद करना चाहिए। अतः इन अन्तिम आरोप में कथित मौलवी साहिब दोषी ठहर गए। काबुल के अमीर ने कई बार कहा कि आप केवल उस व्यक्ति की बैअत से अलग हो जाएं जो मसीह मौऊद होने का दावा करता है और तलवार के द्वारा जिहाद के मसअले का विरोधी है तो फिर आप बरी हैं अपितु आप का मान-सम्मान और अधिक किया जाएगा किन्तु मौलवी साहिब ने स्वीकार न किया तथा कहा कि मैंने आज ईमान को अपने प्राण पर प्राथमिकता दी है और मैं जानता हूं कि मैंने जिसकी बैअत की है वह सच्चा है और सम्पूर्ण विश्व में उस जैसा दूसरा नहीं और फिर जब उन की तौबा से निराशा हुई तो बड़ी निर्दयता से संगसार कर दिए गए। देखने वाले वर्णन करते हैं कि आज तक उनकी क़ब्र से कस्तूरी की सुगंध आती है। अल्लाह तआला उन पर रहम करे और अपने सानिध्य में स्थान दे। जब वह पकड़े गए तो कहा गया कि सन्तान और पत्नी से मुलाक़ात कर लो। उन्होंने कहा कि मुझे कुछ आवश्यकता नहीं। इन के बारे में एक विशेष पुस्तक प्रकाशित हो चुकी है रज़ियल्लाहो अन्हो। (इसी से)

عباد یکون کمُبسراتٍ وجودهم اذا ما اتوا فالغیث یأتی و یمطرٗ

यह वे बन्दे हैं कि उनका अस्तित्व मानसून की भांति होता है। जब आते हैं तो साथ ही दया वृष्टि आती है।

أَتَعلم اَبْدَالًا سواهم فانهم رمُوا بالحجارةِ فاستقاموا و اَجمروا

क्या तू उनके अतिरिक्त कोई अन्य अब्दाल लोग जानता है क्योंकि वे लोग वे हैं जिन पर पत्थर चलाए गए, किन्तु उन्होंने दृढ़ता धारण की और उन की आन्तरिक स्थिरता यथावत रहीं।

تجلّی علیهم ربهم ربُّ ما بدا فَفرّوا الی النور القدیم و اَبدروا

उन पर उन का ख़ुदा जो समस्त सृष्टियों का ख़ुदा है प्रकट हुआ अत: वे अनश्वर प्रकाश की ओर शीघ्रता से भागे।

تَرَاهُمْ تفیض دموعهم من صَبابةٍ و فی القلب نیرانٌ و رأسٌ مُغبّرٌ

तू देखेगा कि प्रेम के आवेग में उनके आंसू जारी हैं, हृदय में भिन्न-भिन्न प्रकार की अग्नि तथा सर पर धूल है।

انارت بنور الاتقاءِ وجوههم فتعرفهم عیناك لو لا التکدرٗ

उनके मुख संयम रूपी प्रकाश के साथ प्रकाशमान हो गए अत: तेरी आंखें उन्हें पहचान लेंगी यदि मलिनता संलग्न न हो।

یُمِیلُون قلب الخلق نحو نفوسهم بناظرةٍ تصبو الیها الخواطرٗ

लोगों के हृदय अपनी ओर झुका देते हैं उस आंख के साथ कि उसकी ओर हृदय झुकाते हैं।

کانّ حیات القومِ تحت حیاتهم بهم زرع دین الله یبدو و یَجدرٗ

जैसे क़ौम का जीवन उनके जीवन के नीचे है, उनके साथ धर्म का खेत प्रकट होता और अपनी हरियाली निकालता है।

و ان کنت تبغی زَورھم زُربخلّۃ   وجوہٌ من الاغیار تخفٰی و تُسترٗ

अत: यदि तू उनको देखना चाहता है तो मित्रता के साथ देख वे ऐसे मुख हैं जो दूसरों से छिपाए जाते हैं।

کذٰلك طلعت شمسنافی ستارۃٍ   فقلتُ امکثی حتّٰی اُنِیرَ و اَبھرٗ

इसी प्रकार हमारा सूर्य पर्दे में उदय हुआ। अत: मैंने सूर्य से कहा कि ठहर जा जब तक मैं प्रकाशमान हो जाऊं तथा अन्य प्रकाशों पर विजयी।

و لسنا بمستورٍ علٰی عین طالب   یرانا الذی یأتی ویرنو و ینظرٗ

और हम ढूंढने वाले की आंख से गुप्त नहीं हैं। हमें वह व्यक्ति देख लेगा जो आएगा और देखने में हमेशगी धारण करेगा।

و لا جبرَ اِن تکفر و ان کنت مؤمنًا   فحسبك ما قال الکتاب المطھرٗ

और यदि तू इन्कार करे तो तुझ पर कोई जब्र नहीं और यदि तू ईमान लाए तो ईमान के लिए तुझे ख़ुदा की किताब पर्याप्त है।

و واللہ لا انسٰی ھمومًا لقیتُھا   بتکفیر قومی حین اٰذوا و کَفّروا

क़ौम के काफ़िर कहने के कारण ख़ुदा की क़सम मैं उन शोकों को नहीं भूलता जो मैंने देखे और उन्होंने मुझे दु:ख दिया और काफ़िर ठहराया।

علٰی صادقٍ فَأُسٌ من الظلم وَ الْاَذَی   فکیف کذوبٌ من ید اللہ یَسترٗ

सच्चे पर अन्याय और यातना का भाला चल रहा है। अत: झूठा ख़ुदा के हाथ से क्योंकर छिप जाएगा।

علٰی موت عیسٰی صار قومی کحیّۃٍ   وکم من سمومٍ اخرجوھا و اظھروا

ईसा की मृत्यु पर मेरी क़ौम सांप के समान हो गई और बहुत से विष निकाले और प्रकट किए।

توفّٰی عیسٰی ثم بَعدَ وفاتہٖ عرا الموتُ عقل جماعتٍ ما تفکّروا

ईसा मृत्यु को प्राप्त हुआ तत्पश्चात् उस जमाअत की बुद्धि पर मृत्यु आ गई जिन्होंने विचार नहीं किया।

و لو انّ انسانًا یطیر الی السّما لکان رسول اللّٰہ اولٰی و اَجدرٗ

और यदि कोई मनुष्य आकाश की ओर उड़ सकता है तो इस बात के लिए हमारे रसूलुल्लाहस.अ.व. अधिक अधिकार रखते थे।

اتترك قول اللّٰہ قولا مصرحًا و اِنّ کتاب اللّٰہ اَھدٰی وَ اَنورٗ

क्या ख़ुदा के कथन को तू त्याग देता है। ख़ुदा का कलाम बहुत हिदायत देने वाला तथा बहुत प्रकाशमान है।

فدَع ذکر اخبارٍ تُخالف قولہ و ایّ حدیثٍ بعدہ یُستَأثرٗ

अत: उन ख़बरों की चर्चा त्याग दे जो उसके कथन के विपरीत हैं और ख़ुदा का कलाम छोड़कर कौन सी हदीस अमल करने योग्य है।

ودع عنك کبرًا مھلکًا وَ اتَّقِ الرَّدٰی و اِنّ تقاۃ المرء تنجی و تثمرٗ

तू तबाह करने वाले अभिमान को छोड़ दे हलाकत से बच और निश्चय ही संयम मनुष्य को मोक्ष देता और फल लाता है।

أَتصبح کالخفّاش اَعمٰی و ما تَرَی و امّا لدی اللیل البھیم فتُبصرٗ

क्या तू प्रात:काल को उल्लू की भांति अंधा हो जाता है और अंधकारमय रात में देखने लगता है।

اذا ما وجدت الحق بعد ضلالۃٍ فما البر اِلّا ترك ما کنت تؤثرٗ

जब तूने गुमराही के पश्चात् सच्चाई को पा लिया तो नेकी इसी में है कि पहले तू ने जो कुछ धारण कर रखा था वह त्याग दे।

و لا تبغ حَرَزات النفوس و هتكهم　　و هل انت اِلّا دودةٌ يا مزّوِرٌ

हे झूठ को बना संवार के बोलने वाले ! तू ख़ुदा के चुने हुए इन्सानों की मृत्यु एवं मान हानि का इच्छुक न बन तथा तू क्या वस्तु है मात्र एक कीड़ा।

و لو انّ قومی آنسونی لَأَ فْلَحُوا　　مِنَ الذُّلّ فی الدّنیا و فی الدّین عُزّروا

और यदि मेरी क़ौम मुझे देख लेती तो संसार के अपमान से मुक्ति पा लेती और आख़िरत में सम्मान दिया जाता।

و لٰکن قلوبٌ بالیهود تشابهت　　و هٰذا هو النبأ الذی جآء فاذکروا

परन्तु कुछ हृदय यहूदियों के समान हो गए। यह वही ख़बर है जो आ चुकी है। अत: स्मरण करो।

فصِرْتُ لهم عیسٰی اذا ما تهوّدوا　　و هٰذا کفٰی مِنّی لقومٍ تفکّروا

अत: जब वे यहूदी बन गए तो मैं उनके लिए ईसा बन गया और मेरी ओर से इतना कहना पर्याप्त है उनके लिए जो विचार करते हैं।

و قد تَمّ وَعْدُ نبیّنا فی حدیثهٖ　　اذا جاء هم منهم اِمَامٌ یُذَکِّرٗ

और निश्चय ही हमारे नबी[स.अ.व.] का वादा जो हदीस में था पूरा हो गया जबकि मुसलमानों में उन्हीं में से इमाम आया जो नसीहत करता और स्मरण कराता है।

اباروا عوام الناس من سمّ منطقٍ　　و جاء وا ببهتان علینا و زَوّروا

बातों के विष से लोगों को मार दिया और हम पर आरोप लगाए और झूठ बोला।

یقولون ما لا یفعلون خیانَةً　　یخالف فی الحالاتِ بیتٌ و منبرٌ

वे कहते हैं करते नहीं और आध्यात्मिक परिस्थितियों की दृष्टि से उन के घर और उनके मिम्बर (मंच) में बड़ा अन्तर है।

الا رُبّ قوّالٍ یُسِرّك قوله　　ولو تنظرنّ الوجه ساء ك منظرُ

कई बहुत बातें करने वाले ऐसे हैं कि उनकी बात तुझे अच्छी विदित होगी परन्तु जब तू उनका मुख देखेगा तो तुझे वह बुरा प्रतीत होगा।

ترى العين ما هو ظاهرٌ غير كاتم   و ما تنظر العينان ما هو يُسترٌ

आंख केवल उसे देखती है जो प्रकट है गुप्त नहीं तथा गुप्त वस्तु को आंखें देख नहीं सकतीं।

و فيهم و ان قيل اهتدينا غواية   و كبر به ينمو الضلال و يثمرٌ

और उनमें यद्यपि वे कहें कि हम हिदायत पा गए एक गुमराही है तथा अहंकार है जिसके साथ गुमराही पोषण पाती और फल लाती है।

اناسٌ اضا عوا دينهم مِن رعونة   و اَهواءَ دنياهم على الدينِ اٰثروا

वे ऐसे लोग हैं कि उन्होंने अभिमान से धर्म को नष्ट किया तथा सांसारिक इच्छाओं को धर्म के मुकाबले पर धारण कर लिया।

تألّم قلبى من أَعاصير جهلهم   ففى الصدر حُزّازٌ و فى القلب خنجرٌ

उनकी मूर्खता की आंधियों से मेरा हृदय दुखी हो गया। अत: सीने में एक तपन और चुभन है और हृदय में तलवार है।

لهم سَلَفٌ قد اخطأ وا فى بيانهم   فهم اٰثروا آثارهم و تخيّروا

उनके ऐसे बुज़ुर्ग हैं जिन्होंने अपने वर्णन में ग़लती की। अत: उन्होंने उनके लक्षण अपना लिए।

هممنا بخيرٍ ثم ذُقنا جفاء هم   و جئنا بعدلٍ ثم للظلم شَمّروا

हमने नेकी का प्रण किया परन्तु उन से अन्याय देखा। हम न्याय के साथ आए और उन्होंने अत्याचार करना आरंभ कर दिया।

و جدنا الافاعِىّ المبيدة دونهم   و لا مثلهم شرّ العقارب تابرٌ

हम ने तबाह करने वाले सांप उन से कम स्तर पर देखे और दुष्ट बिच्छू उनके समान डंक मारता है।

و مَا نحن اِلّا كالفتيل مذلّة باعينهم بل منه ادنٰى و احقرٗ

और हम उसकी दृष्टि में खजूर की गुठली के मध्य वाले धागे के समान हैं अपितु उससे भी अधिक तुच्छ और निकृष्ट।

فنشكوا الى الله القدير تضرّعًا و مَن مثلُه عندالمصائب ينصرٗ

अत: हम सामर्थ्यवान ख़ुदा की ओर विनयपूर्वक शिकायत ले जाते हैं और संकटों के समय उसके समान कौन सहायता करता है।

رمٰى كل من عادٰى الىّ سهامه فَأَصبحت أَمْشى كالوحيد و اُكفَرٗ

प्रत्येक शत्रु ने मेरी ओर अपने तीर चलाए। अत: मैं अकेला रह गया और काफिर ठहराया गया।

حُسينٌ دفاه القوم فى دشت كربلا و كَلّمنى ظلمًا حُسينٌ اٰخرٗ

एक हुसैन वह था जिसको शत्रुओं ने करबला में क़त्ल किया और एक वह हुसैन है जिसने मुझ को मात्र अत्याचार से घायल किया।

ايا راشقى قد كنتَ تمدح منطقى و تُثنى علىّ باُلفةٍ و تُوقّرٗ

हे मुझ पर तीर चलाने वाले एक समय वह था जब तू मेरी बातों की प्रशंसा करता था और प्रेमपूर्वक मेरी तारीफ़ तथा मेरा सम्मान करता था।

و لِلّٰه دَرّك حين قَرّظتَ مخلصًا كتابى وصرتَ لكلّ ضالٍّ مُخفّرٗ

और तूने मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया का निष्कपटता से क्या खूब रीव्यू (समीक्षा) लिखा था और प्रत्येक गुमराह (पथभ्रष्ट) के लिए पथ-प्रदर्शक हो गया था।

وانت الذى قد قال فى تقريظهٖ كمثل المؤلف ليس فينا غضنفرٗ

और तू वही है जिस ने अपने रीव्यू में लिखा था कि इस लेखक के समान हम में कोई भी धर्म के मार्ग में शेर नहीं

كمثلك مع علمٍ بحالى۔ و فطنةٍ　　عجبتُ لهٗ يبغى الهدٰى ثم ياطرٗ ☆

तुझ जैसा व्यक्ति मेरी दशा से परिचित और बुद्धिमान, आश्चर्य है कि वह हिदायत पर आकर फिर सद्मार्ग छोड़ दे।

قَطعتَ ودادًا قد غرسناه فى الصبا　　و ليس فؤادى فى الوداد يقصِّرٗ

तूने उस मित्रता को काट दिया जिसका वृक्ष हमने बचपन के दिनों में लगाया था परन्तु मेरे हृदय ने मित्रता में कोई कमी नहीं की।

علٰى غير شيئٍ قُلتَ ما قلت عُجلةً
وَ واللّٰہ انّى صادقٌ لا اُزوّرٗ

किसी बात पर तूने नहीं कहा जो कुछ कहा शीघ्रता से और ख़ुदा की क़सम मैं सच्चा हूं मैंने झूठ नहीं बोला।

☆ मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब ने अपनी पत्रिका इशाअतुस्सुन्नः में मेरे बारे में जहां इस बात का इक़रार किया है कि मैं इस युग में धर्म की सहायता में अद्वितीय हूं और इस्लाम धर्म के मार्ग में फ़िदा हूं तथा ख़ुदा के मार्ग में एक अनुपम बहादुर हूं। साथ ही अपने बारे में यह भी इक़रार कर दिया है कि मुझ से अधिक इस व्यक्ति की आन्तरिक हालतों को कोई भी जानने वाला नहीं। इसी से।

मौलवी सय्यद मुहम्मद अब्दुल वाहिद साहिब के कुछ भ्रमों का निवारण[1]

उसका कथन - आयत مَا قَتَلُوْهُ وَمَا صَلَبُوْهُ में यह सन्देह शेष है कि ما صلبوہ के यदि ये अर्थ हैं कि सलीब के द्वारा यहूदियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का वध नहीं किया था तो इस वर्णन में ما قتلوہ का शब्द जो उस पर प्राथमिक है मात्र बेकार हो जाता है और यदि यह कहा जाए कि ما قتلوہ के शब्द को इसलिए बढ़ाया गया है ताकि इस बात को सिद्ध करे कि क़त्ल की नीयत से उनकी टांगें नहीं तोड़ी गई थीं तो इस बात को स्वीकार करने के बाद भी शब्द ما قتلوہ के बाद शब्द ماصلبوہ होना चाहिए था क्योंकि टांगें सलीब से उतारे जाने के बाद तोड़ी जाती हैं। अत: ما قتلوہ के ماصلبوہ से पहले आने का क्या कारण है ? बताएं।

मेरा कथन - स्मरण रहे कि पवित्र क़ुर्आन की ये आयतें हैं जिनमें उपरोक्त वर्णन है -

وَّ قَوْلِهِمْ اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ رَسُوْلَ اللّٰهِ ۚ وَ مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَ مَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا ۝۱۵۸ بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِيْزًا حَكِيْمًا ۝۱۵۹ [2]

अनुवाद - और उनका (अर्थात् यहूदियों का) यह कहना कि हमने मसीह ईसा इब्ने मरयम ख़ुदा के रसूल को क़त्ल कर दिया है, हालांकि न उन्होंने उसको क़तल किया और न सलीब दी अपितु यह मामला उन पर संदिग्ध हो गया और जो लोग ईसा के बारे में मतभेद रखते हैं (अर्थात् ईसाई कहते हैं कि ईसा जीवित आकाश पर उठाया और यहूदी कहते हैं कि हमने उसे मार दिया) ये दोनों गिरोह केवल सन्देह में पड़े हुए हैं,

---

① यह मौलवी साहिब स्थान ब्राह्मण बड़िया, ज़िला टपारा, प्रान्त बंगाला में स्कूल अध्यापक तथा क़ाज़ी हैं। (इसी से)

② अन्निसा - 158,159

वास्तविक स्थिति की उनको कुछ भी ख़बर नहीं तथा उन्हें सही ज्ञान प्राप्त नहीं। केवल अटकलों का अनुसरण करते हैं। अर्थात् न ईसा आकाश पर गया जैसा कि ईसाइयों का विचार है और न यहूदियों के हाथ से मारा गया जैसा कि यहूदियों का विचार है अपितु सही बात एक तीसरी बात है कि वह छुटकारा पाकर एक अन्य देश में चला गया और स्वयं यहूदी विश्वास नहीं रखते कि उन्होंने उसको क़त्ल कर दिया अपितु ख़ुदा ने उसको अपनी ओर उठा लिया और ख़ुदा प्रभुत्व वाला और नीतिवान है।[1]

अब स्पष्ट है कि इन आयतों के सर पर यह कथन यहूदियों की ओर से नक़ल किया गया है कि اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ (अन्निसा - 158) अर्थात् हम ने मसीह ईसा इब्ने मरयम को क़त्ल किया। अत: जिस कथन को ख़ुदा तआला ने यहूदियों की ओर से वर्णन किया है अवश्य था कि प्रथम उसी का खण्डन किया जाता। इसी कारण ख़ुदा तआला ने قتلوا के शब्द को صلبوا के शब्द से पहले वर्णन किया। क्योंकि इस स्थान पर जो दावा यहूदियों की ओर से वर्णन किया गया है वह तो यही है कि- اِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيْحَ عِيْسَى ابْنَ مَرْيَمَ -

तत्पश्चात् यह भी ज्ञात हो कि हज़रत ईसा के वध करने के बारे में कि उन का किस प्रकार वध किया गया। इस बारे में यहूदियों के सदैव से दो मत हैं। एक फ़िर्क़ा तो कहता है कि पहले उनको तलवार के साथ क़त्ल किया गया था फिर उनके शव को लोगों की नसीहत के लिए सलीब पर या वृक्ष पर लटकाया गया तथा दूसरा फ़िर्क़ा यह कहता है कि उनको सलीब दी गई थी और फिर सलीब के पश्चात् उनको क़त्ल किया गया। ये

---

① यहूदियों का यह कहना कि हम ने ईसा को क़त्ल कर दिया। इस कथन से यहूदियों का उद्देश्य यह था कि ईसा का मोमिनों की भांति ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा नहीं हुआ क्योंकि तौरात में लिखा है कि झूठा पैग़म्बर क़त्ल किया जाता है। इसलिए ख़ुदा ने उसका उत्तर दिया है कि ईसा क़त्ल नहीं हुआ अपितु ईमानदारों की भांति उसका रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर हुआ। (इसी से)

दोनों फ़िर्क़े आंहज़रत[स.अ.व.] के समय में मौजूद थे और अब भी मौजूद हैं। अतः यूंकि वध करने के माध्यमों में यहूदियों में मतभेद था। कुछ लोग उन के वध का माध्यम प्रथम क़त्ल ठहरा कर फिर सलीब को मानते थे और कुछ लोग सलीब को क़त्ल पर प्राथमिकता देते थे। इसलिए ख़ुदा तआला ने चाहा कि दोनों फ़िर्क़ों का खण्डन कर दे। परन्तु चूंकि जिस फ़िर्क़े की प्रेरणा से ये आयतें उतरी हैं वह वही हैं जो सलीब से पूर्व क़त्ल की आस्था रखते थे। इसलिए क़त्ल के गुमान का निवारण पहले कर दिया गया और सलीब के विचार का निवारण बाद में।

खेद कि यह भ्रम हृदयों में इसी कारण पैदा होते हैं कि सामान्यतः अधिकांश मुसलमानों को न यहूदियों के फ़िर्क़ों तथा उनकी आस्था से पूर्ण परिचय है और न ईसाइयों की आस्थाओं की पूर्ण जानकारी है। इसलिए मैं उचित समझता हूं कि इस स्थान पर मैं यहूदियों की एक प्राचीन पुस्तक में से जो लगभग उन्नीस सौ वर्ष पूर्व लिखी हुई है और यहां हमारे पास मौजूद है। उनकी इस आस्था के बारे में जो हज़रत मसीह के क़त्ल करने के बारे में उनका एक फ़िर्क़ा रखता है वर्णन कर दूं और स्मरण रहे कि इस पुस्तक का नाम "तौलीदूत यशूअ" है जो एक प्राचीन युग की एक इब्रानी भाषा की पुस्तक जो यहूदियों के कुछ विद्वानों की लिखी हुई है। अतः इस पुस्तक के पृष्ठ-31 में लिखा है — "फिर वे (अर्थात् यहूदी लोग) यसू को बाहर दण्ड के मैदान में ले गए तथा उसको संगसार (पत्थरों द्वारा) करके मार डाला और जब वह मर गया तब उसको काठ पर लटका दिया ताकि उसकी लाश (शव) को जानवर खाएं और इस प्रकार मुर्दे का अपमान हो।"

इस कथन का समर्थन इंजील के इस कथन से भी होता है जहां लिखा है कि "यसू जिसे तुम ने क़त्ल करके काठ पर लटकाया" देखो आ'माल बाब-5 आयत-30*

---

* यहूदी विद्वान जो अब तक मौजूद हैं और बम्बई तथा कलकत्ता में भी पाए जाते हैं ईसाइयों के इस कथन पर कि हज़रत ईसा आकाश पर चले गए बड़ा उपहास करते हैं।

इंजील के इस वाक्य से विदित होता है कि पहले क़त्ल किया फिर काठ पर लटकाया। स्मरण रहे कि जैसी कि पादरियों की आदत है इन्जीलों के कुछ उर्दू अनुवादों

शेष हाशिया - कहते हैं कि ये लोग कैसे मूर्ख हैं जिन्होंने असल बात को समझा नहीं क्योंकि प्राचीन यहूदियों का तो यह दावा था कि जो व्यक्ति सलीब दिया जाए वह अधर्मी होता है और उसकी रूह आकाश पर नहीं उठाई जाती। इस दावे का खण्डन करने के लिए ईसाइयों ने यह बात बनाई कि जैसे हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए हैं ताकि वह दाग़ जो सलीब पर मरने से हज़रत ईसा पर लगता था वह दूर कर दें, परन्तु इस योजना में उन्होंने नितान्त मूर्खता प्रकट की क्योंकि यहूदियों की तो यह आस्था नहीं कि जो व्यक्ति शरीर के साथ आकाश पर न जाए वह अधर्मी और काफ़िर होता है और उसकी मुक्ति नहीं होती क्योंकि यहूदियों की आस्थानुसार हज़रत मूसा[अ.] भी शरीर के साथ आकाश पर नहीं गए। यहूदियों का तर्क तो यह था कि तौरात के आदेशानुसार जो व्यक्ति काठ पर लटकाया जाए उस की रूह आकाश पर नहीं उठाई जाती, क्योंकि सलीब अपराधी लोगों का वध करने का उपकरण है। अतः ख़ुदा इस से पवित्रतम है कि एक पुनीत एवं सत्यनिष्ठ मोमिन का सलीब के द्वारा वध करे। इसलिए तौरात में यही आदेश लिख दिया गया कि जो व्यक्ति सलीब द्वारा वध किया जाए वह मोमिन नहीं और उसकी रूह ख़ुदा तआला की ओर नहीं उठाई जाती अर्थात् ख़ुदा की ओर रफ़ा नहीं होता और जबकि मसीह सलीब के द्वारा वध किया गया तो इससे (ख़ुदा की शरण) यहूदियों के कथनानुसार सिद्ध हो गया कि वह ईमानदार न था और उसकी रूह ख़ुदा तआला की ओर नहीं उठाई गई। अतः उसके मुकाबले पर यह कहना कि मसीह शरीर के साथ आकाश पर चला गया यह मूर्खता है और ऐसे व्यर्थ उत्तर से यहूदियों का आरोप यथावत् स्थापित रहता है, क्योंकि उनका आरोप आध्यात्मिक रफ़ा के बारे में है जो ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा हो न कि शारीरिक रफ़ा के बारे में जो आकाश की ओर हो और पवित्र क़ुर्आन जो ईसाइयों और यहूदियों के मतभेदों का

में इस वाक्य को परिवर्तित करके लिख दिया गया है, परन्तु अंग्रेज़ी इंजीलों में अब तक वही वाक्य है जो अभी हमने नक़ल किया है। बहरहाल यह प्रमाणित बात है कि यहूदियों

शेष हाशिया - निर्णायक है उसने अपने निर्णय में यही कहा कि بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ अर्थात् ख़ुदा ने ईसा को अपनी ओर उठा लिया। स्पष्ट है कि रूह ख़ुदा की ओर उठाई जाती है न कि शरीर। ख़ुदा ने यह तो नहीं कहा कि بل رفعه الله الى السماء अपितु कहा कि بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ और इस स्थान में ख़ुदा तआला का केवल यह काम था कि यहूदियों का आरोप दूर करता जो आध्यात्मिक (रूहानी) रफ़ा के इन्कार में है तथा ईसाइयों की ग़लती का निवारण करता।☆अत: ख़ुदा तआला ने एक ऐसा शब्द कहा जिससे दोनों पक्षों की ग़लती को सिद्ध कर दिया, क्योंकि ख़ुदा तआला का यह कथन

☆ **हाशिए का हाशिया -** यदि ख़ुदा तआला की इन आयतों में अर्थात् بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ में केवल यह वर्णन किया गया है कि हज़रत ईसा[अ.] पार्थिव शरीर के साथ दूसरे या चौथे आकाश पर पहुंचाए गए थे तो हमें कोई बताए कि यहूदियों के इस आरोप का किन आयतों में उत्तर है जो वे कहते हैं कि मोमिनों की भांति हज़रत ईसा का रूहानी रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर नहीं हुआ। यह तो नऊज़ुबिल्लाह पवित्र क़ुर्आन का अपमान है कि यहूदियों का आरोप तो कुछ और था तथा उत्तर कुछ और दिया गया। जैसे ख़ुदा तआला ने यहूदियों का उद्देश्य नहीं समझा। यहूदी तो इस बारे में हज़रत ईसा से कोई विशिष्टतापूर्ण चमत्कार नहीं चाहते थे, उनका तो यही आरोप था कि सामान्य मोमिनों की भांति उनका रफ़ा नहीं हुआ तथा उनका उत्तर तो केवल इन शब्दों में देना चाहिए था कि उनका रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर हो गया है। अत: यदि कथित उपरोक्त आयतों का यह अर्थ नहीं है अपितु आकाश पर बैठाने का अर्थ है तो यह तो यहूदियों के आरोप का उत्तर नहीं है। पवित्र क़ुर्आन के बारे में यह विचार कि प्रश्न और तथा उत्तर और। ऐसा विचार तो कुफ़्र तक पहुंच जाता है, जबकि पवित्र क़ुर्आन का यह भी कर्त्तव्य है कि यहूदियों के उन ग़लत आरोपों का निवारण करे जो उन्होंने हज़रत ईसा पर लगाए

के हज़रत ईसा का वध करने के बारे में दो मत हैं - जिनमें से एक यह है कि पहले क़त्ल किया और फिर सलीब दी। अतः इस मत का खंडन भी आवश्यक था तथा ऐसी

शेष हाशिया - कि بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ केवल यही सिद्ध नहीं करता कि मसीह का आध्यात्मिक रफ़ा (रूहानी रफ़ा) ख़ुदा तआला की ओर हो गया तथा वह मोमिन है अपितु यह भी सिद्ध करता है कि आकाश की ओर उसका रफ़ा नहीं हुआ। क्योंकि ख़ुदा तआला जो शरीर, आकार तथा स्थान की आवश्यकताओं से पवित्र है उसकी ओर रफ़ा होना स्पष्ट बता रहा है कि वह शारीरिक रफ़ा नहीं अपितु जिस प्रकार अन्य समस्त मोमिनों की रूहें उसकी ओर जाती हैं उसी प्रकार हज़रत ईसा[अ.] की रूह भी उसकी ओर गई। प्रत्येक बुद्धिमान जानता है कि पवित्र क़ुर्आन और हदीसों से सिद्ध है कि जब मोमिन का निधन होता है उसकी रूह ख़ुदा की ओर जाती है। जैसा कि ख़ुदा तआला का कथन है - يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿۲۸﴾ ارْجِعِيْۤ اِلٰى رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿۲۹﴾ فَادْخُلِيْ فِيْ عِبٰدِيْ ﴿۳۰﴾ وَ ادْخُلِيْ جَنَّتِيْ ﴿۳۱﴾ (अलफ़ज्र - 28 से 31) अर्थात् हे संतुष्टि प्राप्त रूह ! अपने रब्ब की ओर वापस चली आ, वह तुझ से प्रसन्न और तू उस से प्रसन्न, तथा मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर। यही यहूदियों की आस्था थी कि मोमिन की रूह का रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर होता है तथा अधर्मी और काफ़िर का रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर नहीं होता और वे नऊज़ुबिल्लाह हज़रत ईसा[अ.] को काफ़िर और अधर्मी समझते थे कि इस व्यक्ति ने ख़ुदा पर झूठ बोला है और यह सच्चा नबी नहीं है। यदि

☆**शेष हाशिए का हाशिया -** थे। यहूदियों के उन समस्त आरोपों में से एक आरोप यह भी था कि वे हज़रत ईसा के रूहानी रफ़ा के इन्कारी थे और इस प्रकार से नऊज़ुबिल्लाह उन को काफ़िर ठहराते थे। अतः पवित्र क़ुर्आन का कर्त्तव्य था कि उनको इस आरोप से बरी करता। इसलिए यदि इन आयतों में उसने हज़रत ईसा को इस आरोप से बरी नहीं किया तो पवित्र क़ुर्आन में से अन्य ऐसी आयतें प्रस्तुत करनी चाहिएं जिनमें उसने इस आरोप से हज़रत ईसा को बरी कर दिया है। (इसी से)

विचारधारा रखने वालों की पहली आयत में चर्चा भी की है। अर्थात् इस आयत में कि إِنَّا قَتَلْنَا الْمَسِيحَ عِيسَى ابْنَ مَرْيَمَ (अन्निसा - 158) अत: जबकि दावा यह था कि हमने ईसा को क़त्ल किया तो आवश्यक था कि पहले इसी दावे का खण्डन किया जाता। किन्तु ख़ुदा तआला ने खण्डन को पूर्ण करने के लिए दूसरे फ़िर्क़े का भी इस स्थान पर खण्डन कर दिया जो कहते थे कि हमने पहले सलीब दी। अत: इसके खण्डन के लिए ما صلبوه कह दिया। तत्पश्चात् अल्लाह तआला ने कहा -

وَ لٰكِنْ شُبِّهَ لَهُمْ ؕ وَ اِنَّ الَّذِيْنَ اخْتَلَفُوْا فِيْهِ لَفِيْ شَكٍّ مِّنْهُ ؕ مَا لَهُمْ بِهٖ مِنْ عِلْمٍ اِلَّا اتِّبَاعَ الظَّنِّ ۚ وَمَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا (अन्निसा - 158)

अनुवाद - अर्थात् ईसा न क़त्ल किया गया और न सलीब दिया तथा अपितु उन लोगों पर वास्तविक स्थिति संदिग्ध की गई तथा यहूदी और ईसाई जो मसीह के क़त्ल या रूहानी रफ़ा में मतभेद रखते हैं केवल संदेह में लिप्त हैं। उनमें से किसी को भी सही

शेष हाशिया - सच्चा होता तो उसके आने से पूर्व इल्यास नबी दोबारा संसार में आता। इसलिए वे लोग यही आस्था रखते थे कि हज़रत ईसा की रूह मोमिनों की भांति ख़ुदा तआला की ओर नहीं गई। ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में यहूदियों को झूठा ठहराया और साथ ही ईसाइयों को भी झूठा ठहराया। यहूदियों ने हज़रत ईसा[अ.] पर बड़े-बड़े झूठ बांधे हैं। एक स्थान पर तालमूद में जो यहूदियों की हदीसों की पुस्तक है लिखा है कि यसूअ के शव को जब दफ़्न किया गया तो एक बाग़बान ने जिसका नाम यहूदा इस्क्रियूती था शब को क़ब्र से निकाल कर एक स्थान पर पानी को रोकने के लिए बतौर बांध के रख दिया। यसूअ के शिष्यों ने जब क़ब्र को खाली पाया तो शोर मचा दिया कि वह शरीर के साथ आकाश पर चला गया। तब वह शव महारानी हैलनिया के समक्ष सब को दिखाया गया और यसूअ के शिष्य बहुत शर्मिन्दा हुए। (झूठों पर ख़ुदा की ला'नत)

देखो ज्यूइश इन्साइक्लोपीडिया पृष्ठ-172 जिल्द-7

यह इन्साइक्लोपीडिया यहूदियों की है। (इसी से)

ज्ञान प्राप्त नहीं केवल भ्रमों और सन्देहों में गिरफ़्तार हैं तथा वे स्वयं विश्वास नहीं रखते कि वास्तव में ईसा को क़त्ल कर दिया गया था और यही कारण है कि ईसाइयों में कुछ फ़िर्क़े इस बात को स्वीकार करते हैं कि मसीह का दोबारा आगमन इल्यास नबी की भांति प्रतिबिम्ब के तौर पर है अर्थात् यह आस्था बिल्कुल ग़लत है कि मसीह जीवित आकाश पर बैठा अपितु वास्तव में वह मृत्यु पा चुका है और यह जो वादा है कि अन्तिम युग में मसीह दोबारा आएगा। इस दोबारा आगमन से अभिप्राय एक ऐसे व्यक्ति का आना है जो ईसा मसीह के स्वभाव एवं आचरण पर होगा न यह कि ईसा स्वयं आएगा। अतः पुस्तक "न्यू लाइफ़ आफ़ जीज़िस" जिल्द प्रथम पृष्ठ 410 लेखक डी. एफ. स्ट्रास में इस के संबंध में एक इबारत है जिसको मैं अपनी पुस्तक "तुहफा गोलड़विया" के पृष्ठ-127 में लिख चुका हूं और यहां उसके अनुवाद को पर्याप्त समझा जाता है और वह यह है -

"यद्यपि सलीब के समय हाथ और पांव दोनों पर कीलें मारी जाएं फिर भी बहुत थोड़ा रक्त मनुष्य के शरीर से निकलता है। इसलिए सलीब पर लोग शनैः शनैः अंगों पर ज़ोर पड़ने के कारण कपकपाहट में ग्रस्त होकर मर जाते हैं या भूख से मर जाते हैं। इसलिए यदि मान भी लिया जाए कि लगभग छः घंटे सलीब पर रहने के पश्चात् यसू जब उतारा गया तो वह मरा हुआ था तब भी नितान्त ठोस अनुमान यह है कि वह केवल मौत की सी बेहोशी थी और जब स्वस्थ करने वाली मरहमें तथा नितान्त सुगंधित औषधियां मलकर उसे गुफ़ा की ठण्डी जगह में रखा गया तो उसकी बेहोशी दूर हुई। इस दावे के प्रमाण में सामान्यतः यूसुफ्स की घटना प्रस्तुत की जाती है जहां यूसुफ्स ने लिखा है कि मैं एक बार एक फौजी कार्य से वापस आ रहा था तो मार्ग में मैंने देखा कि कई एक यहूदी क़ैदी सलीब पर लटके हुए हैं। उनमें से मैंने पहचाना कि तीन मेरे परिचित थे। अतः टीटस (समय का शासक) से उनके उतार लेने की अनुमति प्राप्त की और उन्हें तुरन्त उतार कर उनकी देखभाल की तो एक अन्ततः स्वस्थ हो गया, शेष दो मर गए

और पुस्तक "Modern Thought and Christian Believe" के पृष्ठ 455, 457,347 में अंग्रेज़ी में एक इबारत है जिसे हम अपनी पुस्तक तुहफ़ा गोलड़विया के पृष्ठ 138 में लिख चुके हैं। उसका अनुवाद निम्नलिखित है और वह यह है :-

"शलीर मेखर तथा प्राचीन अन्वेषकों का यह मत था कि यसू सलीब पर नहीं मरा अपितु एक प्रत्यक्ष मौत की सी स्थिति हो गई थी तथा क़ब्र से निकलने के पश्चात् कुछ समय तक अपने हवारियों के साथ फिरता रहा और फिर दूसरी अर्थात् वास्तविक मृत्यु के लिए किसी पृथक स्थान की ओर रवाना हो गया।"

यसइयाह नबी की किताब बाब 53 में भी इसकी ओर संकेत है तथा हज़रत ईसा[अ.] की अपनी दुआ भी जो इंजील में मौजूद है यही प्रकट कर रही है जैसा कि उसमें लिखा है - دَعَا بِدُمُوْعٍ جَارِيَةٍ وعَبَرَاتٍ مُتَحَدِّرَةٍ فَسُمِعَ لِتَقْوَاهُ अर्थात् ईसा ने बहुत गिड़गिड़ा कर दुआ की तथा उसके आंसू उसके गालों पर पड़ते थे अत: उसके संयम के कारण वह दुआ स्वीकार हो गई। और "कैरियर डिलासीरा" दक्षिणी इटली के सबसे प्रसिद्ध अख़बार ने निम्नलिखित विचित्र समाचार प्रकाशित किया है -

"13 जुलाई 1879 ई. को यरोशलम में एक बूढ़ा सन्यासी कारेमरा नामक जो अपने जीवन में एक वली प्रसिद्ध था, उसके पीछे उसकी कुछ सम्पत्ति रही तथा गवर्नर ने उसके परिजनों को तलाश करके उनके हवाले दो लाख फ्रेंक (एक लाख पौने उन्नीस हज़ार रुपए) किए जो विभिन्न देशों के सिक्कों में थे और उस गुफ़ा में से मिले जहां वह सन्यासी (राहिब) बहुत समय से रहता था। रुपयों के साथ कुछ काग़ज़ात भी उन परिजनों को मिले जिनको वे पढ़ नहीं सकते थे। इब्रानी भाषा के कुछ विद्वानों को उन काग़ज़ों के देखने का अवसर प्राप्त हुआ तो उनको यह अद्भुत बात ज्ञात हुई कि यह काग़ज़ बहुत ही प्राचीन इब्रानी भाषा में थे। जब उनको पढ़ा गया तो उन में यह इबारत थी।

"पतरस माहीगीर (मछुआरा) यसू मरयम के बेटे का सेवक इस प्रकार से लोगों को

ख़ुदा के नाम में और उसकी इच्छानुसार सम्बोधित करता है" और यह पत्र इस प्रकार समाप्त होता है -

"मैं पतरस माहीगीर ने यसू के नाम में और अपनी आयु के नव्वे वर्ष में ये प्रेम के शब्द अपने स्वामी और मौला यसू मसीह मरयम के बेटे की मृत्यु के तीन ईद फसह बाद (अर्थात् तीन वर्ष पश्चात्) ख़ुदावंद के पवित्र घर के समीप बुलीर के स्थान पर लिखने का निर्णय किया है।"

इन विद्वानों ने परिणाम निकाला है कि यह प्रति पतरस के समय की चली आती है। लन्दन बाइबल सोसाइटी की भी यही राय है कि और उन का अच्छी तरह इम्तिहान कराने के पश्चात् बाइबल सोसाइटी अब उनके बदले चार लाख लीरा (दो लाख साढ़े सैंतीस रुपए) मालिकों को देकर काग़ज़ों को लेना चाहती है।

यसू बिन मरयम की दुआ - उन दोनों पर सलाम हो। उसने कहा - हे मेरे ख़ुदा ! मैं इस योग्य नहीं कि उस वस्तु पर विजयी हो सकूं जिसको मैं बुरा समझता हूं। न मैंने उस नेकी को प्राप्त किया है जिसकी मुझे इच्छा थी परन्तु दूसरे लोग अपने प्रतिफल को अपने हाथ में रखते हैं और मैं नहीं। परन्तु मेरी बुराई मेरे काम में है, मुझ से अधिक बुरी अवस्था में कोई व्यक्ति नहीं है। हे ख़ुदा जो सब से उच्चतर है मेरे पाप क्षमा कर। हे ख़ुदा ! ऐसा न कर कि मैं अपने शत्रुओं के लिए आरोप का कारण हूं। न मुझे अपने मित्रों की दृष्टि में तिरस्कृत ठहरा तथा ऐसा न हो कि मेरा संयम (तक़्वा) मुझे संकटों में डाले, ऐसा न कर कि यही संसार मेरी बड़ी प्रसन्नता का स्थान या मेरा बड़ा उद्देश्य हो तथा ऐसे व्यक्ति को मुझ पर नियुक्त न कर जो मुझ पर दया न करे। हे ख़ुदा जो बहुत दयालु है अपनी दया के लिए ऐसा ही कर। तू उन सब पर दया करता है जो तेरी दया के मुहताज हैं।

उसका कथन - पवित्र आयत **وَ مَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا بَلْ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيْهِ**[1] में यह

---

(1) अन्निसा - 158-159

सन्देश शेष है कि शब्द بَلْ वाक्य رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيۡهِ को ما قتلوه يقينًا के साथ एक विशेष संबंध प्रदान करता है जिस से उन दोनों घटनाओं का परस्पर मिलना समझा जाता है। अतः यह प्रत्यक्षतः इस बात की मांग करता है रफ़ा की घटना का समय क़त्ल की घटना के समय के साथ जुड़ा हुआ और एक हो और दोनों समयों में कुछ फासला न हो। हालांकि हज़रत के मुबारक बयान के अनुसार रफ़ा की घटना का समय और क़त्ल की घटना के समय में बहुत फासला और एक लम्बी अवधि है। इस वर्णन में यदि पवित्र क़ुर्आन की आयत इस प्रकार होती कि ما قتلوه يقينا بل خلّصه الله من ايديهم حيًّا ثُمّ رفعه اليه तब यद्यपि यह अर्थ प्रकट होते।

मेरा कथन - यह सन्देह मात्र सरसरी विचार से आप के हृदय में पैदा हुआ है अन्यथा यदि मूल घटनाएं आप की दृष्टि में होतीं तो यह सन्देह कदापि पैदा न हो सकता। मूल बात तो यह थी कि तौरात के अनुसार यहूदियों की यह आस्था थी कि यदि नुबुव्वत का दावा करने वाला क़त्ल हो जाए तो वह झूठा होता है सच्चा नबी नहीं होता और यदि सलीब दिया जाए तो वह ला'नती होता है और उसका ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा होता तथा यहूदियों का हज़रत ईसा[अ.] के संबंध में यह विचार था कि वह क़त्ल भी किए गए और सलीब भी दिए गए। कुछ कहते हैं कि पहले क़त्ल करके फिर सलीब पर लटकाए गए तथा कुछ कहते हैं कि पहले सलीब देकर फिर उनको क़त्ल किया गया। अतः इन कारणों से यहूदी लोग हज़रत ईसा[अ.] के रफ़ा रूहानी के इन्कारी थे और अब तक इन्कारी हैं तथा कहते हैं कि वह क़त्ल किए गए और सलीब दिए गए। इसलिए उन का ख़ुदा तआला की ओर मोमिनों की भांति रफ़ा नहीं हुआ। यहूदियों की यह आस्था है कि काफ़िर का ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा नहीं होता परन्तु मोमिन मृत्योपरान्त ख़ुदा तआला की ओर उठाया जाता है तथा उनके विचार में हज़रत ईसा सलीब पर मृत्यु पाकर नऊज़ुबिल्लाह काफ़िर और ला'नती हो गए। इसलिए वह ख़ुदा तआला की ओर नहीं उठाए गए। यह बात थी जिसका पवित्र क़ुर्आन ने निर्णय करना था। अतः ख़ुदा तआला

ने इन आयतों से जो ऊपर वर्णन हो चुकी हैं यह निर्णय कर दिया। अतः आयत وَ مَا قَتَلُوۡهُ يَقِيۡنًۢا بَلۡ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيۡهِ इसी निर्णय को प्रकट करती है क्योंकि ख़ुदा की ओर रफ़ा यहूदियों और इस्लाम की आस्थानुसार उस मृत्यु को कहते हैं जो ईमानदारी की स्थिति में हो और रूह ख़ुदा तआला की ओर जाए तथा क़त्ल और सलीब की आस्था से यहूदियों का उद्देश्य यह था कि मृत्यु के समय रूह ख़ुदा की ओर नहीं गई। अतः यहूदियों के क़त्ल के दावे और सलीब का यही उत्तर था जो ख़ुदा ने दिया तथा दूसरे शब्दों में आयत का निष्कर्ष यह है कि यहूदी क़त्ल और सलीब का बहाना प्रस्तुत करके कहते हैं कि ईसा[अ.] की रूह का मरने के समय ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा नहीं हुआ और ख़ुदा तआला उत्तर में कहता है कि अपितु ईसा की रूह का मरने के समय ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा हो गया है। अतः इबारत की व्याख्या यह है कि بل رفعه الله اليه عند موته चूंकि ख़ुदा की ओर से रफ़ा मृत्यु के समय ही होता है अपितु ईमान की स्थिति में जो मृत्यु हो उसका नाम ख़ुदा की ओर रफ़ा है। अतः जैसे यहूदी यह कहते थे कि مات عيسٰى كافرًا غير مرفوع الى الله और ख़ुदा तआला ने यह उत्तर दिया है - بل مات مؤمنًا مرفوعًا الى الله इसलिए بل का शब्द इस स्थान में बेमौक़ा नहीं है अपितु अरबी भाषा के मुहावरे के सर्वथा अनुकूल है। यहूदियों की यह ग़लती थी कि वे विचार करते थे कि जैसे हज़रत ईसा[अ.] वास्तव में सलीब पर मृत्यु पा गए हैं, इसलिए वे एक ग़लती से दूसरी ग़लती में पड़ गए कि मृत्यु के समय उनके ख़ुदा की ओर रफ़ा से इन्कार कर दिया किन्तु ख़ुदा तआला ने कहा कि वह क़त्ल और सलीब पर कदापि नहीं मरे तथा मृत्यु के समय उन का रफ़ा ख़ुदा तआला की ओर हुआ है। अतः इस कलाम की शैली में कोई कठिनाई नहीं और بل का शब्द इन अर्थों की दृष्टि से कदापि-कदापि बेमौक़ा नहीं अपितु जिस स्थिति में यहूदी और मुसलमान परस्पर सहमत हैं कि ख़ुदा की ओर रफ़ा कहते ही उसको हैं कि मृत्योपरान्त मनुष्य की रूह ख़ुदा तआला की ओर जाए तो इस स्थिति में इस स्थान में किसी दूसरे अर्थों की गुंजायश ही नहीं।

यह भी स्मरण रहे कि जिस युग के बारे में पवित्र क़ुर्आन का यह वर्णन है कि ईसा न क़त्ल हुआ और न सलीब पर मरा, उसी युग के बारे में यह भी वर्णन है कि उसके मरने के पश्चात् ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा हुआ है। इसलिए उस स्थान पर بل का शब्द उस समय के लिए है न कि अब तक के लिए। अतः आयत के अर्थ का सारांश यह है कि उस युग में हज़रत ईसा[अ.] न क़त्ल हुए न सलीब पर मृत्यु हुई अपितु स्वाभाविक मृत्यु के पश्चात् उन का रफ़ा ख़ुदा की ओर हुआ, जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में वादा था कि يٰعِيۡسٰٓى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ[1] और तवफ़्फ़ा स्वाभाविक मृत्यु देने को कहते हैं जैसा कि 'कश्शाफ़' के लेखक ने इस आयत की व्याख्या में अर्थात् तफ़्सीर انّى متوفّيك में लिखा है انّى مميتك حتف انفك पवित्र क़ुर्आन की यह आयत يٰعِيۡسٰٓى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ सम्पूर्ण विवाद का निर्णय करती है, क्योंकि हमारे विरोधी यह कहते हैं कि हज़रत ईसा[अ.] का रफ़ा जीवन की अवस्था में हुआ और ख़ुदा तआला इस आयत में कहता है कि मृत्यु के पश्चात् रफ़ा हुआ। अतः खेद है उस जाति पर जो ख़ुदा की किताब के स्पष्ट आदेश के विपरीत दावा करते हैं तथा पवित्र क़ुर्आन तथा समस्त पहली किताबें और समस्त हदीसें वर्णन कर रही हैं कि मृत्यु के पश्चात् वही रफ़ा होता है जिसे रफ़ा रूहानी कहते हैं जो प्रत्येक मोमिन के लिए मृत्योपरान्त आवश्यक है। कुछ ईर्ष्यालु यहां निरुत्तर होकर कहते हैं कि आयत को इस प्रकार पढ़ना चाहिए कि يٰعِيۡسٰٓى اِنِّىۡ رَافِعُكَ اِلَىَّ وَ مُتَوَفِّيۡكَ जैसे ख़ुदा तआला से यह ग़लती हो गई कि उसने مُتَوَفِّيۡكَ को رَافِعُكَ से पहले कर दिया तथा यह कहा कि يٰعِيۡسٰٓى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ हालांकि कहना यह था कि يٰعِيۡسٰٓى اِنِّىۡ رَافِعُكَ اِلَىَّ وَ مُتَوَفِّيۡكَ। हाय अफ़सोस द्वेष कितनी कठोर विपत्ति है कि उसके समर्थन के लिए ख़ुदा की किताब में अक्षरांतरण करते हैं। यह अक्षरांतरण की क्रिया वही दूषित क्रिया है जिस से यहूदी ला'नती कहलाए और उनकी शक्लें विकृत की गईं। अब ये लोग पवित्र क़ुर्आन के अक्षरांतरण पर तत्पर हैं। यदि यह वादा न होता कि

---

① आले इमरान - 56

إِنَّا نَحۡنُ نَزَّلۡنَا الذِّكۡرَ وَ إِنَّا لَهٗ لَحٰفِظُوۡنَ[1] तो इन लोगों से यह आशा थी कि आयत إِنِّيۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ إِلَيَّ के स्थान पर पवित्र क़ुर्आन में इस प्रकार लिख देते कि - يٰعِيۡسٰى إِنِّيۡ رَافِعُكَ إِلَيَّ وَ مُتَوَفِّيۡكَ परन्तु इस प्रकार का अक्षरांतरण भी असंभव था, क्योंकि ख़ुदा तआला ने इस आयत में चार वादे किए हैं जैसा कि उसका कथन है -

يٰعِيۡسٰى إِنِّيۡ مُتَوَفِّيۡكَ❶ وَ رَافِعُكَ❷ إِلَيَّ وَ مُطَهِّرُكَ❸ مِنَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡا وَ جَاعِلُ الَّذِيۡنَ❹ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا إِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ

ये चार वादे जिन पर नम्बर लगा दिए गए हैं और जैसा कि सही हदीसों तथा स्वयं पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है। वादा مطهّرك من الّذين كفروا जो वादा रफ़ा के बाद था, आंहज़रत[स.अ.व.] के प्रादुर्भाव होने से पूरा हो गया, क्योंकि आप ने हज़रत ईसा[अ.] के दामन को इन अनुचित आरोपों से पवित्र किया जो यहूदियों तथा ईसाइयों ने उन पर लगाए थे। इस प्रकार यह चौथा वादा अर्थात् وَ جَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا إِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ इस्लाम की विजय एवं वैभव से पूर्ण हो गया। अत: यदि متوفّيك के शब्द को पीछे किया जाए और शब्द رافعك الىّ को पहले किया जाए जैसा कि हमारे विरोधी चाहते हैं तो ऐसी स्थिति में वाक्य رافعك الىّ वाक्य مطهّرك से पहले नहीं आ सकता, क्योंकि वाक्य مطهّرك का वादा पूरा हो चुका है तथा हमारे विरोधियों के कथनानुसार متوفيك का वादा अभी पूरा नहीं हुआ और इसी प्रकार यह वाक्य متوفيك वादा وَ جَاعِلُ الَّذِيۡنَ اتَّبَعُوۡكَ فَوۡقَ الَّذِيۡنَ كَفَرُوۡۤا إِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ के पहले भी नहीं आ सकता क्योंकि वह वादा भी पूरा हो चुका है और प्रलय के दिन तक उसका दामन लम्बा है। अत: इस स्थिति में तवफ़्फ़ा का शब्द यदि आयत के सर पर से उठा दिया जाए तो उसको किसी दूसरे स्थान में प्रलय से पूर्व रखने का कोई स्थान नहीं। अत: इस से तो यह अनिवार्य आता है कि हज़रत ईसा[अ.] प्रलय के पश्चात् मृत्यु पाएंगे तथा पहले मरने से यह क्रम बाधक है। अब देखना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन का यह चमत्कार है कि हमारे विरोधी

---

① अलहिज्र - 10

यहूदियों की भांति पवित्र क़ुर्आन के अक्षरांतरण पर तत्पर तो हुए परन्तु समर्थ नहीं हो सके और कोई स्थान दिखाई नहीं देता जहां वाक्य رَافِعُكَ को अपने स्थान से उठा कर उस स्थान पर रखा जाए। प्रत्येक स्थान इस प्रकार से पूर्ण हो चुका है कि हस्तक्षेप की गुंजायश नहीं तथा वास्तव में यही एक आयत अर्थात् आयत يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَرَافِعُكَ اِلَىَّ सत्याभिलाषी के लिए पर्याप्त है। जिस से सिद्ध होता है कि वह रफ़ा जिस पर हमारे विरोधियों ने शोर मचा रखा है वह मृत्योपरान्त है न कि मृत्यु से पूर्व। क्योंकि ख़ुदा की साक्ष्य से यह बात सिद्ध है और ख़ुदा की साक्ष्य को स्वीकार न करना ईमानदार का काम नहीं। जबकि क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशानुसार रफ़ा मृत्यु के पश्चात् है। अत: इस से स्पष्ट है कि यह वही रफ़ा है जिसका प्रत्येक ईमानदार के लिए मृत्योपरान्त ख़ुदा तआला का वादा है।

विचित्र बात यह है कि ख़ुदा तआला का वाक्य رافعك الیّ को वाक्य متوفّیك के पश्चात् वर्णन किया है तथा ये लोग वाक्य رافعك को पहले रखते हैं और वाक्य متوفّیك को बाद में लाते हैं ताकि किसी प्रकार हज़रत ईसा जीवित आकाश पर बिठाए जाएं। अत: इस स्थिति में यहूदी लोग अक्षरांतरण करने में क्या विशेषता रखते हैं ! सिवाए इसके कि यदि इसी प्रकार यहूदियों की भांति उन लोगों को अपने अधिकार से पवित्र क़ुर्आन को आगे-पीछे करने का अधिकार है तो फिर पवित्र क़ुर्आन की ख़ैर नहीं। भला कोई ऐसी हदीस तो प्रस्तुत करें जिसमें उनको यह अनुमति दी गई हो कि वाक्य رافعك الیّ पहले पढ़ लिया करो और वाक्य متوفّیك बाद में। यदि क़ुर्आन और हदीस से ऐसी अनुमति सिद्ध नहीं होती तो फिर उस ला'नत से क्यों नहीं डरते जो इन से पूर्व यहूदियों के भाग में आ चुकी है।

उसका कथन - आप के वर्णन के अनुसार हज़रत ईसा सलीब से मुक्ति पाकर कश्मीर की ओर चले गए थे। अत: प्रथम तो उस युग में कश्मीर तक पहुंचना कुछ सरल बात न थी विशेषत: गुप्त तौर पर और फिर यह आरोप है कि उनके पास हवारी क्यों एकत्र न हुए और हज़रत ईसा जीवित कब्र में रहने की भांति छिपे रहे।

मेरा कथन - जिस ख़ुदा ने हज़रत ईसा[अ.] को कश्मीर की ओर जाने का निर्देश दिया था वही उनका मार्ग-दर्शक हो गया था। अत: नबी के लिए यह कौन सी आश्चर्य की बात है कि वह किस प्रकार कश्मीर पहुंच गया और यदि ऐसा ही आश्चर्य करना है तो एक अधर्मी इस बात से भी आश्चर्य कर सकता है कि हमारे नबी[स.अ.व.] क्योंकर हिजरत के समय इसके बावजूद कि काफ़िर ग़ारे-सौर के सर पर पहुंच गए थे परन्तु फिर भी उनकी आंखों में छिपे रहे। अत: ऐसे आरोपों का यही उत्तर है कि ख़ुदा की विशेष कृपा जो विलक्षण तौर पर नबियों के साथ होती है उनको बचाती और उनका मार्गदर्शन करती है। रही यह बात कि यदि हज़रत ईसा[अ.] कश्मीर में गए थे तो हवारी उनके पास क्यों न पहुंचे। तो इसका उत्तर यह है कि ज्ञान के अभाव से वस्तु का अभाव अनिवार्य नहीं होता। आपको किस प्रकार ज्ञात हुआ कि नहीं पहुंचे ? हां चूंकि वह यात्रा गुप्त तौर पर थी[1] जैसा कि हमारे नबी[स.अ.व.] की यात्रा हिजरत के समय गुप्त तौर पर थी। इसलिए वह यात्रा एक बड़े क़ाफ़िल: के साथ उचित नहीं समझी गई थी। जैसा कि स्पष्ट है कि हमारे नबी[स.अ.व.] ने जब मदीना की ओर हिजरत (प्रवास) की थी तो केवल हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] साथ थे तथा उस

---

① अंबिया अलैहिमुस्सलाम के बारे में भी ख़ुदा का एक नियम है कि वे अपने देश से हिजरत (प्रवास) करते हैं जेसा कि यह वर्णन सही बुख़ारी में भी मौजूद है। अत: हज़रत मूसा ने भी मिस्र के किनआन की ओर हिजरत की थी और हमारे नबी[स.अ.व.] ने भी मक्का से मदीना की ओर हिजरत की थी। अत: अवश्य था कि हज़रत ईसा भी इस सुन्नत को अदा करते। अत: उन्होंने सलीब की घटना के पश्चात् कश्मीर की ओर हिजरत की। इंजील में भी इस हिजरत की ओर संकेत है कि नबी अपमानित नहीं किन्तु अपने देश में। यहां नबी से अभिप्राय उन्होंने अपने अस्तित्व को लिया है इसलिए यहां ईसाइयों के लिए शर्म का स्थान है कि वे उन्हें नबी नहीं अपितु ख़ुदा ठहराते हैं। हालांकि नबी वह होता है जो ख़ुदा से इल्हाम पाता है। अत: ख़ुदा ओर नबी का अलग-अलग होना आवश्यक है। (इसी से)

समय भी दो सौ कोस की दूरी तय करके मदीना में जाना आसान बात न थी और यदि आंहज़रत[स.अ.व.] चाहते तो साठ-सत्तर आदमी अपने साथ ले जा सकते थे, परन्तु आप ने केवल अबू बक्र को अपना साथी बनाया। इसलिए नबियों के रहस्यों में हस्तक्षेप करना एक अनुचित हस्तक्षेप है। यह किस प्रकार मालूम हुआ कि बाद में भी हवारी हज़रत ईसा[अ.] से मिलने के लिए हिन्द देश में नहीं आए अपितु ईसाई इस बात को स्वयं मानते हैं कि कुछ हवारी उन दिनों में हिन्द देश में अवश्य आए थे तथा थूमा हवारी का मद्रास में आना। अब तक मद्रास में प्रति वर्ष उसकी यादगार में ईसाइयों का एक समारोह मेले की भांति होना, यह ऐसी बात है कि किसी परिचित पर गुप्त नहीं अपितु हम लोग जिस क़ब्र को श्रीनगर कश्मीर में हज़रत ईसा की क़ब्र कहते हैं, ईसाइयों के बड़े-बड़े पादरी समझते हैं कि वह किसी हवारी की क़ब्र है। हालांकि क़ब्र वाले ने अपनी किताब में लिखा है कि मैं नबी हूं, शाहज़ादा हूं और मुझ पर इंजील उतरी थी तथा कश्मीर की प्राचीन ऐतिहासिक पुस्तकें जो हमारे हाथ आईं उनमें लिखा है कि यह एक नबी बनी इस्राईल में से था जो शहज़ादा नबी कहलाता था और अपने देश से हिजरत करके कश्मीर में आया था तथा उन पुस्तकों में जो आने की तिथि लिखी है उस से विदित होता है कि इस बात पर अब हमारे युग में उन्नीस सौ वर्ष गुज़र गए जब यह नबी कश्मीर में आया था और हम ईसाइयों को इस प्रकार दोषी करते हैं कि जबकि तुम्हें इक़रार है कि इस क़ब्र का व्यक्ति जो श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में दफ़्न है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का हवारी था परन्तु उसकी पुस्तक में लिखा है कि वह नबी था और शहज़ादा था तथा उस पर इंजील उतरी थी। अतः इस अवस्था में वह हवारी क्योंकर हो गया। क्या कोई हवारी कह सकता है कि मैं शहज़ादा हूं तथा नबी हूं और मुझ पर इंजील उतरी है। अतः कुछ सन्देह नहीं कि यह क़ब्र जो कश्मीर में है हज़रत ईसा[अ.] की क़ब्र है तथा जो लोग उनको आकाश में बिठाते हैं उन पर स्पष्ट रहे कि वह कश्मीर में अर्थात् श्रीनगर मुहल्ला ख़ानयार में सोए हुए हैं। जैसा कि ख़ुदा तआला ने अस्हाबे कहफ़ को एक लम्बी अवधि तक छिपाया था, इसी प्रकार हज़रत ईसा[अ.] को छिपा रखा तथा अन्त

में हम पर वास्तविकता खोल दी। ख़ुदा तआला के कामों में ऐसे सहस्त्रों नमूने हैं और ख़ुदा तआला की आदत नहीं है कि किसी को पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर बिठा दे।

उसका कथन - हदीसों में उतरने वाले ईसा को नबीउल्लाह के नाम से पुकारा गया है तो क्या क़ुर्आन और हदीस से सिद्ध हो सकता है कि मुहद्दिस को भी नबी कहा गया है।

मेरा कथन - अरबी और इब्रानी भाषा में नबी के अर्थ केवल भविष्यवाणी करने वाले के हैं, जो ख़ुदा तआला से इल्हाम पाकर भविष्यवाणी करे। अत: जबकि पवित्र क़ुर्आन के अनुसार ऐसी नुबुव्वत का द्वार बन्द नहीं है जो आंहज़रत[स.अ.व.] के वरदान एवं अनुसरण के माध्यम से किसी मनुष्य को ख़ुदा तआला वार्तालाप एवं संबोधन का सम्मान प्राप्त हो और वह ख़ुदा की वह्यी के द्वारा गुप्त बातों पर सूचना पाए तो फिर ऐसे नबी इस उम्मत में क्यों नहीं होंगे। इस पर क्या तर्क है ? हमारा मत नहीं है कि ऐसी नुबुव्वत पर मुहर लग गई है। केवल उस नुबुव्वत का द्वार बन्द है जो शरीअत के नवीन आदेश साथ रखती हो या ऐसा दावा हो जो आंहज़रत[स.अ.व.] के अनुसरण से पृथक होकर दावा किया जाए, परन्तु ऐसा व्यक्ति जो उसे एक ओर ख़ुदा तआला की वह्यी में उम्मती भी ठहराता है फिर दूसरी ओर उसका नाम नबी भी रखता है। यह दावा पवित्र क़ुर्आन के आदेशों के विरुद्ध नहीं है क्योंकि वह नुबुव्वत उम्मती होने के कारण वास्तव में आंहज़रत[स.अ.व.] की नुबुव्वत का एक प्रतिबिम्ब है कोई स्थायी नुबुव्वत नहीं और यदि आप हदीसों पर पूर्ण रूप से विचार करते तो यह ऐतिराज़ आप के हृदय में उत्पन्न न होता। आप कहते हैं कि उतरने वाले ईसा को हदीसों में अल्लाह का नबी कहा गया है। मैं कहता हूं उसी उतरने वाले ईसा की हदीसों में उम्मती भी तो कहा गया है[1] क्या आप पवित्र क़ुर्आन तथा हदीसों से बता सकते हैं कि ईसा इब्ने मरयम जो रसूल गुज़रा है उस का

---

①उम्मती उस व्यक्ति को कहते हैं जो आंहज़रत के अनुसरण के बिना किसी प्रकार भी अपने कमाल को नहीं पहुंच सकता। अत: क्या हज़रत ईसा[अ.] के बारे में यह कल्पना की जा सकती है कि वह उस समय तक अपूर्ण ही रहेंगे जब तक पुन: संसार में आकर आंहज़रत[स.अ.व.] की उम्मत में सम्मिलित नहीं होंगे और आप का अनुसरण नहीं करेंगे। (इसी से)

नाम किसी स्थान पर उम्मती भी रखा गया है ? अत: बिल्कुल स्पष्ट है कि यह ईसा जो उम्मती भी कहलाता है और नबी भी कहलाता है यह ईसा और है, वह ईसा नहीं है जो बनी इस्राईल में गुज़रा है जो एक स्थायी नबी था, जिस पर इंजील उतरी थी, उसे आप उम्मती क्योंकर बना सकते हैं। सही बुख़ारी में जहां आने वाले ईसा का नाम उम्मती रखा गया है उस का हुलिया भी पहले ईसा के विपरीत ठहराया गया है। हां यदि आने वाले ईसा के बारे में हदीसों में केवल नबी का शब्द प्रयोग होता तथा उसका नाम उम्मती न रखा जाता तो धोखा लग सकता था परन्तु अब तो सही बुख़ारी में आने वाले ईसा के बारे में साफ़ लिखा है कि امامکم منکم (इमामोकुम मिन्कुम) अर्थात् हे उम्मतियों ! आने वाला ईसा भी केवल एक उम्मती है न और कुछ। ऐसा ही सही मुस्लिम में भी इसके बारे में ये शब्द हैं कि "इमामुकुम मिन्कुम"। अर्थात् वह ईसा तुम्हारा इमाम होगा और तुम में से होगा। अर्थात् एक व्यक्ति उम्मत में से होगा।

अब जबकि इन हदीसों से सिद्ध है कि आने वाला ईसा उम्मती है। तो ख़ुदा के कलाम में उसका नाम नबी रखना उन अर्थों में नहीं है जो एक स्थायी नबी के लिए प्रयुक्त होते हैं अपितु यहां केवल यह अभीष्ट है कि ख़ुदा तआला उस से वार्तालाप और सम्बोधन करेगा और परोक्ष की बातें उस पर प्रकट करेगा। इसलिए उम्मती होने के बावजूद वह नबी भी कहलाएगा और यदि यह कहा जाए कि इस उम्मत पर प्रलय तक वार्तालाप, संबोधन एवं ख़ुदा की वह्यी का द्वार बन्द है तो फिर इस स्थिति में कोई उम्मती नबी क्योंकर कहला सकता है, क्योंकि नबी के लिए आवश्यक है कि ख़ुदा उससे वार्तालाप करे ? तो इसका उत्तर यह है कि इस उम्मत पर यह द्वार कदापि बन्द नहीं है और यदि इस उम्मत पर यह द्वार बन्द होता तो यह उम्मत एक मुर्दा उम्मत होती तथा ख़ुदा तआला से दूर और पृथक होती और यदि इस उम्मत पर यह द्वार बन्द होता तो क़ुर्आन में यह दुआ क्यों सिखाई जाती कि اِهۡدِنَا الصِّرَاطَ الۡمُسۡتَقِيۡمَ صِرَاطَ الَّذِيۡنَ اَنۡعَمۡتَ عَلَيۡهِمۡ तथा आंहज़रत[स.अ.व.] को जो ख़ातमुल अंबिया कहा गया है उसके ये अर्थ नहीं हैं कि आप के पश्चात् ख़ुदा के वार्तालाप एवं सम्बोधन का द्वार बन्द है। यदि ये अर्थ होते तो यह उम्मत एक ला'नती उम्मत होती जो शैतान की भांति हमेशा से ख़ुदा तआला से दूर

और पृथक होती अपितु ये अर्थ हैं कि ख़ुदा तआला से सीधे तौर पर वह्यी का वरदान पाना बन्द है और यह ने'मत आंहज़रत[स.अ.व.] के अनुसरण के बिना किसी को प्राप्त होना असंभव तथा निषिद्ध है और यह स्वयं आंहज़रत[स.अ.व.] का गर्व है कि उनके अनुसरण में यह बरकत है कि जब एक व्यक्ति पूर्ण रूप से आप का अनुसरण करने वाला हो तो वह ख़ुदा के वार्तालाप और सम्बोधनों से सम्मानित हो जाए। ऐसा नबी क्या सम्मान और क्या पद और क्या प्रभाव और क्या पवित्र शक्ति अपने अन्दर रखता है जिसके अनुसरण का दावा करने वाले केवल अंधे और नेत्रहीन हों और ख़ुदा तआला अपने वार्तालाप एवं सम्बोधनों से उनकी आंखें न खोले, यह कितनी व्यर्थ और झूठी आस्था है कि ऐसा विचार किया जाए कि आंहज़रत[स.अ.व.] के पश्चात् ख़ुदा की वह्यी का द्वार हमेशा के लिए बन्द हो गया है और भविष्य में प्रलय तक उसकी कोई भी आशा नहीं। केवल क़िस्सों की पूजा करो। अत: क्या ऐसा धर्म कुछ धर्म हो सकता है जिसमें सीधे तौर पर ख़ुदा का कुछ पता नहीं लगता जो कुछ हैं क़िस्से हैं और यद्यपि कोई उसके मार्ग में अपने प्राण भी न्योछावर करे, उसे प्रसन्न करने में आत्मसात हो जाए तथा प्रत्येक बात पर उसको धारण कर ले तब भी वह उस पर अपनी पहचान का मार्ग नहीं खोलता तथा वार्तालाप एवं सम्बोधनों से उसे सम्मानित नहीं करता।

मैं अल्लाह तआला की क़सम खाकर कहता हूं कि इस युग में ऐसे धर्म से मुझ से अधिक अप्रसन्न अन्य कोई न होगा। मैं ऐसे धर्म का नाम शैतानी धर्म रखता हूं न कि रहमानी तथा मैं विश्वास रखता हूं कि ऐसा धर्म नर्क की ओर ले जाता है और अन्धा रखता है और अंधा ही मारता है अंधा ही क़ब्र में ले जाता है परन्तु मैं साथ ही दयालु, कृपालु ख़ुदा की क़सम खा कर कहता हूं कि इस्लाम ऐसा धर्म नहीं है अपितु संसार में केवल **इस्लाम** ही अपने अन्दर यह विशेषता रखता है कि वह हमारे सरदार तथा स्वामी **आंहज़रत[स.अ.व.] के सच्चे एवं पूर्ण अनुसरण की शर्त पर अपने वार्तालाप से सम्मानित करता है।** इसी कारण से तो हदीस में आया है कि - عُلَمَاءُ اُمَّتِی کَاَنْبِیَاءِ بَنِیْ اِسْرَائِیْل अर्थात् मेरी उम्मत के उलेमा-ए-रब्बानी बनी इस्राईल के नबियों की भांति हैं। इस हदीस में भी रब्बानी उलेमा को एक ओर

उम्मती कहा और दूसरी ओर नबियों से उपमा दी है।

स्वयं स्पष्ट है कि जब ख़ुदा तआला हमेशा से अपने बन्दों से वार्तालाप करता आया है, यहां तक कि बनी इस्राईल में स्त्रियों को भी ख़ुदा तआला के वार्तालाप एवं सम्बोधन का गौरव प्राप्त हुआ है। जैसे हज़रत मूसा की मां और मरयम सिद्दीक़ा को, तो फिर यह उम्मत कैसी दुर्भाग्यशाली और अभागी है कि उसके कुछ पुरुष बनी-इस्राईल की स्त्रियों के समान भी नहीं। क्या कल्पना की जा सकती है कि यह एक ऐसा युग आ गया है कि इस युग में ख़ुदा तआला सुनता तो है परन्तु बोलता नहीं। यदि ग़रीब बन्दों की दुआएं सुनने में उसकी कुछ मान-हानि नहीं तो बोलने में क्या मान-हानि है।

स्मरण रहे कि ख़ुदा तआला की विशेषताएं कभी निलंबित नहीं होतीं। अत: जैसा कि वह हमेशा सुनता रहेगा, ऐसा ही वह हमेशा बोलता भी रहेगा। इस तर्क से अधिक स्पष्ट और कौन सा तर्क हो सकता है कि ख़ुदा तआला के सुनने की भांति बोलने का सिलसिला भी कभी समाप्त नहीं होगा। इस से सिद्ध होता है कि एक गिरोह हमेशा ऐसा रहेगा जिन से ख़ुदा तआला वार्तालाप एवं सम्बोधन करता रहेगा और मैं नहीं समझ सकता कि नबी के नाम पर अधिकांश लोग क्यों चिढ़ जाते हैं। जिस स्थिति में यह सिद्ध हो गया है कि आने वाला मसीह इसी उम्मत में से होगा, फिर यदि ख़ुदा तआला ने उसका नाम नबी रख दिया तो हानि क्या हुई। ऐसे लोग यह नहीं देखते कि उसी का नाम उम्मती भी तो रखा गया है तथा उम्मतियों की समस्त विशेषताएं उसमें रखी गई हैं। अत: यह मिश्रित नाम एक पृथक नाम है तथा कभी हज़रत ईसा इस्राईली इस नाम से नामित नहीं हुए। मुझे ख़ुदा तआला ने मेरी वह्यी में बार-बार उम्मती कह कर भी पुकारा है और नबी कह कर भी पुकारा है। इन दोनों नामों के सुनने से मेरे हृदय में नितान्त आनन्द पैदा होता है और मैं धन्यवाद करता हूं कि इस मिश्रित नाम से मुझे सम्मानित किया गया है। इस मिश्रित नाम के रखने में यह नीति विदित होती है ताकि ईसाइयों पर एक भर्त्सना का कोड़ा लगे कि तुम ईसा बिन मरयम को ख़ुदा बनाते हो। किन्तु हमारा नबी[स.अ.व.] इस श्रेणी

का नबी है कि उसकी उम्मत का एक व्यक्ति नबी हो सकता है तथा ईसा कहला सकता है, हालांकि वह उम्मती है।

उसका कथन - महदी मौऊद की विशेषता में जो कुछ हदीसों में **من وُلد فَاطِمَة** आया है तथा कुछ में **من عترتی** और कुछ में **مِنۡ اَهۡلِ بَيۡتِى** भी आया है और यह भी आया है **يُواطِئُ اِسۡمه اِسۡمِى** तथा **اسم ابيه اسم ابى** अत: इनमें से प्रत्येक की क्या व्याख्या है वर्ण करें।

मेरा कथन - मेरा यह दावा नहीं है कि मैं वह महदी हूं जो **من ولد فاطمة** तथा **من عترتی** इत्यादि का चरितार्थ है अपितु मेरा दावा तो मसीह मौऊद होने का है तथा मसीह मौऊद के लिए किसी मुहद्दिस का कथन नहीं कि वह बनी फ़ातिमा इत्यादि में से होगा। हां इसके साथ जैसा कि समस्त मुहद्दिस कहते हैं, मैं भी कहता हूं कि महदी मौऊद के बारे में जितनी हदीसें हैं समस्त ज़ख़्मी और संदिग्ध हैं, उनमें से एक भी सही नहीं तथा उन हदीसों में जितना झूठ मिलाया गया है किसी अन्य हदीस में ऐसा झूठ नहीं बांधा गया। अब्बासी ख़लीफ़ों इत्यादि के युग में ख़लीफ़ों को इस बात की बहुत रुचि थी कि स्वयं को महदी ठहराएं। अत: इसी कारण से कुछ हदीसों में महदी को बनी अब्बास में से ठहराया और कुछ में बनी फ़ातिमा में से तथा कुछ हदीसों में यह भी है कि **رجل من اُمّتی** कि वह एक व्यक्ति मेरी उम्मत में से होगा। परन्तु वास्तव में समस्त हदीसें किसी विश्वास के योग्य नहीं। यह केवल मेरा ही कथन नहीं अपितु अहले सुन्नत के बड़े-बड़े उलेमा यही कहते चले आए हैं। उन हदीसों की तुलना में यह हदीस बहुत सही है जो इब्ने माजा ने लिखी है कि **لَا مَهۡدِىَّ اِلّا عِيۡسٰى** अर्थात् कोई महदी नहीं केवल ईसा ही महदी है जो आने वाला है।

उसका कथन - आंहज़रत[स.अ.व.] की भविष्यवाणियां जिनमें उलेमा ने भी तावील (प्रत्यक्ष अर्थों से हटकर व्याख्या) की है। प्राय: ऐसी पाई जाती हैं जो बतौर स्वप्न के प्रकट हुई हैं ..... अन्त तक।

मेरा कथन - इस आरोप को मैं नहीं समझ सका, इसलिए उत्तर से विवशता है।

उसका कथन - सांसारिक लोग तो अन्तर्दृष्टि नहीं रखते। इसलिए उन लोगों का हज़रत मसीह मौऊद को न पहचानना कुछ आश्चर्य की बात नहीं परन्तु जो लोग ख़ुदा के वली और आरिफ़ लोग (ब्रह्म ज्ञानी) हैं उन लोगों को तो हज़रत को इल्हाम इत्यादि द्वारा पहचानना आवश्यक है जैसा कि स्वर्गीय क़ाज़ी सनाउल्लाह पानीपती पत्रिका 'तज़्किरातुलमआद' में इमाम महदी मौऊद के बारे में लिखते हैं कि ابدال از شام و عصائب از عراق آمدہ باوے بیعت کنند कि शाम के अब्दाल तथा इराक़ के क़बीले आएंगे और बैअत करेंगे।

मेरा कथन - ये समस्त कथन इस आधार पर हैं कि महदी मौऊद बनी फ़ातिमा से या बनी अब्बास से आएगा तथा अब्दाल और क़ुतुब उसकी बैअत करेंगे परन्तु मैं अभी उल्लेख कर चुका हूं कि बड़े मुहद्दिसों का यही मत है कि महदी की हदीसें सब ज़ख़्मी और संदिग्ध अपितु अधिकतर बनावटी हैं तथा उनका लेशमात्र भी विश्वास नहीं। कुछ इमामों ने उन हदीसों के खण्डन के लिए विशेष पुस्तकें लिखी हैं और बड़ी दृढ़ता से उनका खण्डन किया है। जब स्थिति यह है कि स्वयं महदी का आना ही सन्देह और आशंका में है तो फिर अब्दाल का बैअत करना कब एक विश्वसनीय बात हो सकती है। जब मूल ही सही नहीं तो शाखाएं कब सही ठहर सकती हैं। इसके अतिरिक्त अब्दाल के सर पर सींग तो नहीं होते। जो लोग अपने अन्दर परिवर्तन पैदा कर लेते हैं वही ख़ुदा तआला के निकट अब्दाल कहलाते हैं। यदि आप ही परिवर्तन पैदा कर लें तथा लोगों की भर्त्सना एवं फटकार से लापरवाह होकर सच्चाई पर बलिदान हो जाएं तो आप ही अब्दाल में सम्मिलित हैं।

मेरी जमाअत में अधिकांश लोग ऐसे हैं जिन्होंने इस सिलसिले के लिए बहुत कष्ट सहन किए हैं तथा बहुत अपमानों का सामना किया। क्या वे अब्दाल नहीं हैं ? शैख़ अब्दुर्रहमान अमीर अब्दुर्रहमान के सामने इस सिलसिले के लिए गला घोंट कर मारा गया और उसने एक बकरी की भांति स्वयं को ज़िब्ह करा लिया। क्या वह अब्दाल में सम्मिलित न था ? इसी प्रकार मौलवी साहिबज़ादा अब्दुल लतीफ़ जो मुहद्दिस और

धर्म के प्रकाण्ड विद्वान तथा काबुल के उलेमा में सर्वश्रेष्ठ थे, इस सिलसिले के लिए संगसार[1] किए गए तथा बार-बार समझाया गया कि उस व्यक्ति की बैअत त्याग दो, पहले से अधिक सम्मान होगा, परन्तु उन्होंने मरना स्वीकार किया और पत्नी तथा छोटे-छोटे बच्चों की भी कुछ परवाह न की और उनका शव चालीस दिन तक पत्थरों में पड़ा रहा। क्या वह अब्दाल में से न थे ? और अभी मैं ख़ुदा तआला की कृपा से जीवित हूं तथा अल्लाह तआला के बड़े-बड़े वादे हैं। पता नहीं कितने और किन-किन देशों से पवित्र हृदय लोग मेरी जमाअत में प्रवेश करेंगे। इसके अतिरिक्त मसीह मौऊद के लक्षणों में यह लिखा है कि उलेमा उसे स्वीकार नहीं करेंगे किसी अब्दाल की बैअत का वर्णन भी नहीं।

उसका कथन - चूंकि हज़रत का अब तक कोई ऐसा प्रभाव स्पष्ट तौर पर प्रकट नहीं हुआ है और दो-तीन लाख लोगों का हज़रत के सिलसिले में प्रवेश करना जैसे दरिया में से एक बूंद है। इसलिए यदि स्पष्ट प्रभाव के प्रकट होने तक कोई इन्कार के बिना सिलसिले में सम्मिलित होने में विलम्ब तथा देर करे तो यह वैध होगा या नहीं ?

मेरा कथन - विलम्ब और देर भी एक प्रकार का इन्कार है। रही यह बात कि अब तक बहुत से लोग ईमान नहीं लाए, यह इस बात का तर्क नहीं हो सकता कि दावा सिद्ध नहीं। यदि कोई मामूर तर्क और निशान अपने साथ रखता है तो किसी के ईमान न लाने से उसका दावा कमज़ोर नहीं हो सकता। इसके अतिरिक्त यह भी देखना चाहिए कि आंहज़रत[स.अ.व.] के निधन तक जो लोग सच्चे हृदय से ईमान लाए थे वे डेढ़ लाख से अधिक न थे। अत: क्या उनकी कमी से आंहज़रत[स.अ.व.] की नुबुव्वत संदिग्ध हो सकती है ?

वास्तविकता यह है कि सच्चे नबी की सच्चाई के लिए ईमान लाने वालों की बहुलता शर्त नहीं है। हां अकाट्य तर्कों द्वारा समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण करना शर्त है।

---

① जिसे पत्थर मार-मार कर मार दिया जाए। (अनुवादक)

इसलिए यहां नुबुव्वत की पद्धति के अनुसार समझाने का अन्तिम प्रयास पूर्ण हो चुका है, अतः आंहज़रत[स.अ.व.] की भविष्यवाणी के अनुसार देश में दो बार सूर्य एवं चन्द्रग्रहण हो चुका है जो मसीह मौऊद के प्रकट होने का लक्षण था। इसी प्रकार एक नवीन सवारी रेल जो ऊंटों की स्थानापन्न हो गई है, जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में है - وَ اِذَا الۡعِشَارُ عُطِّلَتۡ[1] अर्थात् वह अन्तिम युग जब ऊंटनियां बेकार की जाएंगी और जैसा कि मुस्लिम की हदीस में मसीह मौऊद के प्रकट होने के लक्षणों में से है - وليترکن القلاص فلا یُسعٰی علیھا अर्थात् तब ऊंटनियां बेकार हो जाएंगी और उन पर कोई सवार न होगा। अतः स्पष्ट है कि वह युग आ गया और यह भी लिखा गया था कि उस युग में भूकम्प आएंगे। अतः वे भूकम्प भी लोगों ने देख लिए और जो शेष हैं वे भी देख लेंगे तथा लिखा गया था कि आदम अलैहिस्सलाम से छः हज़ार वर्ष के अन्त पर वह मसीह मौऊद पैदा होगा। अतः इसी समय में मेरा जन्म हुआ है। इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन ने इस ओर संकेत किया था कि वह मसीह मौऊद हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की भांति चौदहवीं सदी में प्रकट होगा[2]।

---

① अत्तक्वीर - 5

② यद्यपि ईसाइयों ने ग़लती से यह लिखा कि यसू मसीह हज़रत मूसा के पश्चात् पन्द्रहवीं सदी में प्रकट हुआ था, परन्तु उन्होंने यह ग़लती की है। यहूदियों के इतिहास से सर्वसम्मति से यह सिद्ध है कि यसू अर्थात् हज़रत ईसा मूसा के पश्चात् चौदहवीं सदी में प्रकट हुआ था और वही कथन सही है यद्यपि समानता सिद्ध करने के लिए पूर्ण अनुकूलता आवश्यक नहीं हुआ करती। जैसा कि यदि किसी व्यक्ति को कहें कि यह शेर है तो यह आवश्यक नहीं कि शेर के समान उसके पंजे और खाल हो तथा पूंछ भी हो और आवाज़ भी शेर की भांति हो अपितु एक व्यक्ति को दूसरे का समरूप ठहराने में एक सीमा तक समानता पर्याप्त होती है। इसलिए यदि ईसाइयों का कथन स्वीकार कर लें कि हज़रत ईसा हज़रत मूसा से पन्द्रहवीं सदी में हुए थे तथापि हानि नहीं क्यों चौदहवीं और पन्द्रहवीं सदी संलग्न हैं और इतना अन्तर युग की समानता में कुछ हानि

अत: मेरा प्रकटन चौदहवीं सदी में हुआ अर्थात् जैसा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मूसा से चौदहवीं सदी में पैदा हुए थे। मैं भी आंहज़रत[स.अ.व.] के युग से चौदहवीं सदी में प्रकट हुआ हूं और इस अन्तिम युग के संबंध में ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में ये सूचनाएं भी दी थीं कि संसार में बहुत सी पुस्तकें एवं पत्रिकाएं प्रकाशित हो जाएंगी ओर जातियों के परस्पर मेल-मिलाप के लिए मार्ग खुल जाएंगे, नदियों से बहुत बड़ी संख्या में नहरें निकलेंगी तथा बहुत सी नवीन खानें पैदा हो जाएंगी, लोगों में धार्मिक मामलों में बहुत से विवाद पैदा होंगे और एक जाति दूसरी जाति पर आक्रमण करेगी। इसी मध्य आकाश से एक बिगुल फूंका जाएगा अर्थात् ख़ुदा तआला मसीह मौऊद को भेज कर धर्म के प्रचार के लिए एक झलक दिखाएगा। तब इस्लाम धर्म की ओर प्रत्येक देश में नेक स्वभाव लोगों में एक प्रेरणा जन्म लेगी और जिस सीमा तक ख़ुदा तआला का इरादा है सम्पूर्ण भूमण्डल के नेक लोगों को इस्लाम पर एकत्र करेगा तब अन्त होगा। अत: ये समस्त बातें प्रकट हो गईं। इसी प्रकार सही हदीसों में आया था कि वह मसीह मौऊद सदी के सर पर आएगा तथा वह चौदहवीं सदी का मुजद्दिद होगा। अत: ये समस्त लक्षण भी इस युग में पूरे हो गए तथा लिखा था कि वह अपने जन्म की दृष्टि से दो सदियों में जुड़ेगा तथा दो नाम पाएगा और उसका जन्म दो खानदानों से जुड़ेगा और चौथी दोगुनी विशेषता यह कि जन्म में भी जोड़े के तौर पर पैदा होगा। अत: ये समस्त निशान प्रकट हो गए। क्योंकि दो सदियों से जुड़ना अर्थात् ज़ुलक़रनैन (दो सदियों वाला) होना मेरे संबंध में ऐसा सिद्ध है कि किसी जाति की निर्धारित सदी ऐसी नहीं है जिसमें मेरी पैदायश उस जाति की दो सदियों पर आधारित नहीं। इसी प्रकार ख़ुदा तआला की ओर से मैंने दो नाम पाए। मेरा

शेष हाशिया :- नहीं पहुंचाता, परन्तु हम यहां यहूदियों के कथन को प्राथमिकता देते हैं जो कहते हैं कि यसू अर्थात् हज़रत ईसा हज़रत मूसा के पश्चात् बिल्कुल चौदहवीं सदी में नुबुव्वत का दावेदार हुआ था क्योंकि उनके हाथ में जो इबरानी तौरात है वह ईसाइयों के अनुवादों की अपेक्षा सही है। (इसी से)

एक नाम उम्मती रखा गया, जैसा कि मेरे नाम ग़ुलाम अहमद से प्रकट है। दूसरे मेरा नाम प्रतिबिम्ब के तौर पर नबी रखा गया जैसा कि ख़ुदा तआला ने बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में मेरा नाम अहमद रखा और मुझे इसी नाम से बार-बार पुकारा। यह इस बात की ओर संकेत था कि मैं प्रतिबिम्ब के तौर पर (ज़िल्ली तौर पर) नबी हूं[1]। अत: मैं उम्मती भी हूं और ज़िल्ली तौर पर नबी भी हूं। इसी की ओर वह ख़ुदा की वह्यी भी संकेत करती है जो बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में है।

كُلّ برکۃٍ من محمدٍ صلی اللّٰہ علیہ و سلم فتبارك من علّم و تعلّم

अर्थात् प्रत्येक बरकत आंहज़रत[स.अ.व.] की ओर से है। अत: बहुत बरकत वाला वह मनुष्य है जिसने शिक्षा दी अर्थात् आंहज़रत[स.अ.व.] फिर इसके पश्चात् बहुत बरकत वाला है वह जिस ने शिक्षा प्राप्त की अर्थात् यह ख़ाकसार। अत: पूर्ण अनुसरण के कारण मेरा नाम उम्मती हुआ और नुबुव्वत का पूर्ण प्रतिबिम्ब प्राप्त करने से मेरा नाम नबी हो गया। इसलिए इस प्रकार से मुझे दो नाम प्राप्त हुए। जो लोग बार-बार आपत्ति करते हैं कि सही मुस्लिम में आने वाले ईसा का नाम नबी रखा गया है उन पर अनिवार्य है कि यह हमारा बयान ध्यानपूर्वक पढ़ें, क्योंकि जिस मुस्लिम में आने वाले ईसा का नाम नबी रखा गया है उसी मुस्लिम में आने वाले ईसा का नाम उम्मती भी रखा गया है तथा न केवल हदीसों में अपितु पवित्र क़ुर्आन से भी यही सिद्ध होता है क्योंकि सूरह तहरीम में स्पष्ट तौर पर वर्णन किया गया है कि इस उम्मत के कुछ लोगों का नाम मरयम रखा गया है और फिर शरीअत के पूर्ण अनुसरण के कारण उस मरयम में ख़ुदा की ओर से रूह फूंकी

---

① कोई व्यक्ति यहां नबी होने के शब्द से धोखा न खाए। मैं बार-बार लिख चुका हूं कि यह वह नुबुव्वत नहीं है जो एक स्थायी नुबुव्वत कहलाती है कि कोई स्थायी नबी उम्मती नहीं कहला सकता, किन्तु मैं उम्मती हूं। अत: यह केवल ख़ुदा तआला की ओर से एक सम्मानित नाम है जो आंहज़रत[स.अ.व.] के अनुसरण से प्राप्त हुआ ताकि हज़रत ईसा से समानता पूर्ण हो। (इसी से)

गई तथा रूह फूंकने के पश्चात् उस मरयम से ईसा पैदा हो गया। इसी आधार पर ख़ुदा तआला ने मेरा नाम ईसा बिन मरयम रखा, क्योंकि एक युग मुझ पर केवल मरयमी अवस्था में गुज़रा और फिर जब वह मरयमी अवस्था ख़ुदा तआला को पसन्द आ गई तो फिर मुझ में उसकी ओर से एक रूह फूंकी गई। उस रूह फूंकने के पश्चात् मैं मरयमी अवस्था में उन्नति करके ईसा बन गया जैसा कि मेरी पुस्तक बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में विस्तृत तौर पर इस का वर्णन मौजूद है, क्योंकि बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में प्रथम मेरा नाम मरयम रखा गया जैसा कि ख़ुदा तआला का कथन है -

يا مريم اسكن انت و زوجك الجنّة

अर्थात् हे मरयम ! तू और वह जो तेरा साथी है दोनों स्वर्ग में प्रवेश करो और फिर उसी बराहीन अहमदिया में मुझे मरयम की उपाधि देकर कहा है - نَفختُ فيكِ مِنْ رُوْحِ الصِّدْقِ अर्थात् हे मरयम मैंने तुझ में सच्चाई की रूह फूंक दी। अत: रूपक के तौर पर रूह का फूंकना उस गर्भ के समान था जो मरयम सिद्दीक़ा को हुआ था और फिर उस गर्भ के पश्चात् अन्तत: पुस्तक में मेरा नाम ईसा रख दिया जैसा कि कहा कि يَا عِيسٰى اِنِّى مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ अर्थात् हे ईसा मैं तुझे मृत्यु दूंगा और मोमिनों की भांति मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा। इस प्रकार पर मैं ख़ुदा की पुस्तक में ईसा बिन मरयम कहलाया। चूंकि मरयम एक उम्मती सदस्य है और ईसा एक नबी है। अत: मेरा नाम मरयम और ईसा रखने से यह प्रकट किया गया कि मैं उम्मती भी हूं और नबी भी, परन्तु वह नबी जो अनुसरण की बरकत से ज़िल्ली तौर पर (प्रतिबिम्ब स्वरूप) ख़ुदा तआला के निकट नबी है और मेरा नाम ईसा बिन मरयम होना वही बात है जिस पर मूर्ख ऐतिराज़ करते हैं कि हदीसों में तो आने वाले ईसा का नाम ईसा बिन मरयम रखा गया है, परन्तु यह व्यक्ति तो इब्ने मरयम नहीं है और इस की मां का नाम मरयम न था तथा नहीं जानते कि जैसा कि सूरह तहरीम में वादा था मेरा नाम पहले मरयम रखा गया और फिर ख़ुदा की कृपा ने मुझ में रूह फूंकी अर्थात् अपनी एक विशेष झलक से उस मरयमी अवस्था

से एक दूसरी अवस्था पैदा की और उसका नाम ईसा रखा और चूंकि वह अवस्था मरयमी अवस्था से पैदा हुई। इसलिए ख़ुदा ने मुझे ईसा बिन मरयम के नाम से पुकारा। अतः इस प्रकार से मैं ईसा बिन मरयम बन गया। इसलिए यहां मरयम से अभिप्राय मरयम नहीं है जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मां है अपितु ख़ुदा ने एक रूहानी समानता की दृष्टि से जो मरयम ईसा की मां के साथ मुझे प्राप्त थी, मेरा नाम बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में मरयम रख दिया। फिर मुझ पर एक दूसरी झलक डालकर उसको रूह फूंकने से समानता दी। फिर जब वह रूह प्रकटन में आई तो रूह की दृष्टि से मेरा नाम ईसा रखा। अतः इसी के अनुसार मुझे ईसा बिन मरयम के नाम से नामित किया गया।

यहां इस रहस्य को भी समझ लेना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन में यह आयत अर्थात् يٰعِيۡسٰٓى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ[1] हज़रत ईसा[अ.] के पक्ष में थी परन्तु बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में यह आयत मेरे पक्ष में उतारी गई। इसका कारण यह है कि जिस प्रकार कि हज़रत ईसा पर कुफ़्र का फ़त्वा लगा कर उनके बारे में यहूदियों की यही अवस्था थी कि उनकी रूह ख़ुदा की ओर नहीं उठाई गई। यही आस्था क़ौम के विरोधियों की मेरे बारे में है अर्थात् वे कहते हैं कि यह व्यक्ति काफ़िर है। इसकी रूह ख़ुदा तआला की ओर नहीं उठाई जाएगी। उनके खण्डन के लिए ख़ुदा तआला मुझे कहता है कि मृत्योपरान्त मैं तेरी रूह अपनी ओर उठाऊंगा तथा यह जो कहा اِنِّی متوفّیك इसमें एक अन्य भविष्यवाणी गुप्त है और वह यह कि तवफ़्फ़ा अरबी भाषा में इस प्रकार की मृत्यु देने को कहते हैं जो स्वाभाविक मृत्यु हो, क़त्ल या सलीब द्वारा न हो जैसा कि विद्वान ज़मख़शरी ने अपनी तफ़्सीर 'कश्शाफ़' में आयत یا عیسٰی انّی متوفّیك के अन्तर्गत यह व्याख्या लिखी है - انّی ممیتك حتف انفك अर्थात् मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु के साथ मारूंगा। अतः चूंकि ख़ुदा तआला जानता था कि मेरे क़त्ल और सलीब के लिए

[1] आले इमरान - 56

भी वह प्रयत्न किया जाएगा जो हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए किया गया। इसलिए उसने बतौर भविष्यवाणी मुझे भी सम्बोधित करके यही कहा कि يا عيسٰى انّى متوفيك इसमें यही संकेत था कि मैं क़त्ल और सलीब से बचाऊंगा। स्पष्ट है कि मेरे क़त्ल और सलीब के लिए बहुत प्रयत्न हुए, जैसा कि मेरे क़त्ल के लिए क़ौम के उलेमा ने फ़त्वे दिए और एक झूठा मुक़द्दमा फांसी दिलाने के लिए मुझ पर बनाया गया जिसमें अभियोक्ता पादरी डाक्टर मार्टिन क्लार्क था तथा समस्त गवाहों में से एक मौलवी अबू सईद मुहम्मद हुसैन साहिब बटालवी थे और आरोप यह था कि इस व्यक्ति ने अब्दुल मजीद नामक व्यक्ति को डाक्टर मार्टिन क्लार्क की हत्या करने के लिए भेजा था। अत: मेरे विरुद्ध पूर्ण तौर पर गवाहियां गुज़र गईं। परन्तु ख़ुदा ने मुझे मुक़द्दमे से पूर्व ही सूचना दी थी कि ऐसा मुक़द्दमा होगा और मैं तुझे बचाऊंगा। वह वह्यी लगभग साठ या सत्तर या अस्सी लोगों को मुकद्दमा से पूर्व सुनाई गई थी। अत: ख़ुदा ने अपनी पवित्र वह्यी के अनुसार इस झूठे आरोप से सम्मान के साथ मुक्ति दी। अत: वे समस्त प्रयास जो मुझे फांसी दिलाने के लिए थे जिस प्रकार कि यहूदियों ने हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए किए थे।

विचित्र बात यह है कि जैसा पैलातूस रूमी ने (जो उस क्षेत्र का गर्वनर था जहां हज़रत मसीह थे) यहूदियों को कहा था कि मैं इस व्यक्ति अर्थात् ईसा का कोई पाप नहीं देखता जिसके कारण उसको सलीब दूं। ऐसा ही उस जज ने जिसकी अदालत में मुझ पर क़त्ल का मुकद्दमा दायर था, जिसका नाम डगलस था और हमारे ज़िले का डिप्टी कमिश्नर था। मुझे सम्बोधित करके कहा कि मैं आप पर क़त्ल का कोई आरोप नहीं लगाता तथा बड़ी विचित्र बात यह है कि जिस प्रकार हज़रत ईसा के साथ एक चोर भी सलीब दिया गया था। जिस दिन मेरे बारे में इस ख़ून के मुकद्दमा का फैसला हुआ उसी दिन उसी अदालत में एक मुक्ति सेना का ईसाई चोर भी प्रस्तुत हुआ, जिसने कुछ रुपया चुराया था। अत: मेरे बारे में ख़ुदा तआला का यह कहना कि يٰعِيْسٰى اِنِّيْ مُتَوَفِّيْكَ وَ رَافِعُكَ اِلَيَّ

यह एक भविष्यवाणी थी जिसमें यह संकेत किया गया था कि हज़रत ईसा के समान मेरे क़त्ल के लिए भी कुछ योजनाएं बनाई जाएंगी तथा उन योजनाओं में शत्रु असफल रहेंगे।

तीसरी बात जो मुझे दो पर आधारित करती है मेरी क़ौम की स्थिति है और जैसा कि प्रत्यक्ष तौर पर सुना गया है मैं पिता के अनुसार क़ौम का मुग़ल हूं किन्तु कुछ मेरी दादियां सादात में से थीं, परन्तु ख़ुदा तआला ने मुझे पिता की दृष्टि से फ़ारसी नस्ल से बताया है और मां के अनुसार मुझे फ़ातिमी ठहराया है और वही सच है जो वह कहता है।

चौथी बात जो मुझे दो पर आधारित करती है वह यह है कि मैं जुड़वां पैदा हुआ था। मेरे साथ एक लड़की थी जो मुझ से पहले पैदा हुई थी।

हम पुनः अपने उद्देश्य की ओर लौटते हुए कहते हैं कि यह बिल्कुल ग़लत और धोखा लगना है कि हदीसों में मसीह मौऊद के बारे में नबी का नाम देख कर यह समझा जाए कि वह हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम ही हैं, क्योंकि उन्हीं हदीसों में यद्यपि आने वाले ईसा का नाम नबी रखा गया है परन्तु उसके साथ एक ऐसी शर्त लगा दी गई है कि उस शर्त की दृष्टि से संभव ही नहीं कि उस नबी से अभिप्राय हज़रत ईसा इस्राईली हों क्योंकि नबी नाम रखने के बावजूद उस ईसा को उन्हीं हदीसों में उम्मती भी ठहराया गया है और जो व्यक्ति उम्मती की वास्तविकता पर ध्यानपूर्वक दृष्टि डालेगा वह निश्चित तौर पर समझ लेगा कि हज़रत ईसा को उम्मती ठहराना एक कुफ्र है क्योंकि उम्मती उसको कहते हैं जो आंहज़रत[स.अ.व.] के अनुसरण के बिना तथा पवित्र क़ुर्आन के अनुसरण के बिना मात्र अपूर्ण, गुमराह और अधर्मी हो और फिर आंहज़रत[स.अ.व.] तथा पवित्र क़ुर्आन के अनुसरण से उसे ईमान और कमाल प्राप्त हो। स्पष्ट है कि ऐसा विचार हज़रत ईसा[अ.] के बारे में करना कुफ्र है क्योंकि यद्यपि वह अपनी श्रेणी में आंहज़रत[स.अ.व.] से कैसे ही कम हों, परन्तु नहीं कह सकते कि जब तक वह दोबारा संसार में आकर आंहज़रत[स.अ.व.] की उम्मत में सम्मिलित हों तब तक नऊज़ुबिल्लाह वह गुमराह और अधर्मी हैं या वह अपूर्ण हैं और उनका आध्यात्म ज्ञान अपूर्ण है। इसलिए मैं अपने विरोधियों को निश्चित

तौर पर कहता हूं कि हज़रत ईसा उम्मती कदापि नहीं हैं यद्यपि वह अपितु समस्त अंबिया आंहज़रत[स.अ.व.] की सच्चाई पर ईमान रखते थे परन्तु वे उन हिदायतों (निर्देशों) के अनुयायी थे जो उन पर उतरी थीं और सीधे तौर पर ख़ुदा ने उन पर अपनी झलक प्रदर्शित की थी। यह कदापि नहीं था कि आंहज़रत[स.अ.व.] का अनुसरण आप की रूहानी शिक्षा से वे नबी बने थे ताकि वे उम्मती कहलाते। उनको ख़ुदा तआला ने पृथक पुस्तकें दी थीं और उनको निर्देश था कि उन पुस्तकों का पालन करें और कराएं। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन इस पर साक्षी है। अतः इस अत्यन्त स्पष्ट साक्ष्य की दृष्टि से हज़रत मसीह मौऊद क्योंकर ठहर सकते हैं। चूंकि वह उम्मती नहीं इसलिए वह उस प्रकार के नबी भी नहीं हो सकते जिस का उम्मती होना आवश्यक है। इसी प्रकार ख़ुदा तआला ने मेरे लिए सैकड़ों निशान प्रदर्शित किए जिनमें कुछ इस बराहीन अहमदिया के भाग में भी दर्ज हैं।

उसका कथन - हज़रत की आयु इस समय कितनी है ? जो ख़ुशख़बरी देते हैं कि हज़रत के द्वारा इस्लाम अत्यन्त उन्नति करेगा। क्या वह उन्नति हज़रत के जीवन में आएगी या क्या ? इस की व्याख्या का अभिलाषी हूं।

मेरा कथन - आयु का सही अनुमान तो ख़ुदा तआला जानता है परन्तु जहां तक मैं जानता हूं इस समय तक जो सन् हिज्री 1323 है मेरी आयु सत्तर वर्ष के लगभग है। واللّٰہ اعلم और मैं नहीं कह सकता कि इस्लाम की पूर्ण रूप से उन्नति मेरे जीवन में होगी या मेरे पश्चात्। हां मैं विचार करता हूं कि धर्म की पूर्ण रूप से उन्नति किसी नबी के जीवन में नहीं हुई अपितु नबियों का यह कार्य था कि उन्होंने उन्नति का एक सीमा तक नमूना दिखा दिया और फिर उनके पश्चात् उन्नति प्रकट हुईं। जैसा कि हमारे नबी[स.अ.व.] समस्त संसार के लिए तथा प्रत्येक काले और गोरे के लिए भेजे गए थे, किन्तु आप के जीवन में गोरे अर्थात् यूरोपियन जाति को तो इस्लाम से कुछ भी भाग न मिला, एक भी मुसलमान न हुआ और जो काले थे उनमें से केवल अरब द्वीप में इस्लाम फैला

और मक्का की विजय के पश्चात् आंहज़रत[स.अ.व.] का निधन हुआ। अत: मैं विचार करता हूं कि मेरे बारे में भी ऐसा ही होगा। मुझे ख़ुदा तआला की ओर से बार-बार यह क़ुर्आनी वह्यी हो चुकी है وَ اِمَّا نُرِيَنَّكَ بَعۡضَ الَّذِىۡ نَعِدُهُمۡ اَوۡ نَتَوَفَّيَنَّكَ[1] इस से मुझे यही आशा है कि सफलता का कोई भाग मेरे जीवन में प्रकट होगा।

उसका कथन - हदीसों में किसी प्राणी का चित्र खींचने में सख़्त अज़ाब का वादा है किन्तु आप के चित्र जो प्रकाशित किए गए हैं उनसे विदित होता है कि हज़रत इसको वैध समझते हैं।

मेरा कथन - मैं इस बात का घोर विरोधी हूं कि कोई मेरा चित्र खींचे और उसे मूर्ति पूजकों की भांति अपने पास रखे या प्रकाशित करे। मैंने कदापि ऐसा आदेश नहीं दिया कि कोई ऐसा करे तथा मुझ से अधिक मूर्ति पूजा और चित्र पूजा का शत्रु नहीं होगा, परन्तु मैंने देखा है कि आजकल यूरोप के लोग जिस व्यक्ति की पुस्तक को देखना चाहें प्रथम चाहते हैं कि उसका चित्र देखें क्योंकि यूरोप के देश में सामुद्रिक शास्त्र (इल्म क़ियाफ़:) बहुत उन्नत है और प्राय: केवल उन का चित्र देखकर पहचान सकते हैं कि ऐसा दावा करने वाला सच्चा है या झूठा। तथा वे लोग हज़ारों कोस की दूरी के कारण मुझ तक नहीं पहुंच सकते और न मेरा चेहरा देख सकते हैं। इसलिए उस देश के क़ियाफ़: शास्त्र के जानने वाले चित्र द्वारा मेरी आन्तरिक परिस्थितियों पर विचार करते हैं। कई ऐसे लोग हैं जिन्होंने यूरोप और अमरीका से मुझे पत्र लिखे हैं तथा अपने पत्रों में लिखा है कि हमने आप के चित्र को ध्यानपूर्वक देखा और सामुद्रिक विद्या के द्वारा हमें स्वीकार करना पड़ा कि जिसका यह चित्र है वह झूठा नहीं है। अमरीका की एक स्त्री ने मेरे चित्र को देखकर कहा कि यह यसू अर्थात् ईसा[अ.] का चित्र है। अत: इस उद्देश्य से तथा उस सीमा तक मैंने इस पद्धति के जारी होने में हित की दृष्टि से खामोशी धारण की وانّما الاعمال بالنّيات तथा मेरा मत यह नहीं है कि चित्र का अवैध होना

---

① यूनुस - 47

अटल है। पवित्र क़ुर्आन से सिद्ध है कि जिन्नों का वर्ग हज़रत सुलेमान[अ.] के लिए चित्र बनाता था तथा आंहज़रत[स.अ.व.] को जिब्राईल अलैहिस्सलाम ने हज़रत आइशा[रज़ि.] का चित्र एक रेशमी कपड़े पर दिखाया था और पानी में कुछ पत्थरों पर जानवरों के चित्र प्राकृतिक तौर पर छप जाते हैं और यह उपकरण जिसके द्वारा अब चित्र लिया जाता है आंहज़रत[स.अ.व.] के युग में आविष्कृत नहीं हुआ था और यह बहुत आवश्यक उपकरण है जिसके द्वारा कुछ रोगों का पता लग सकता है। चित्र खींचने का एक और उपकरण निकला है जिसके द्वारा मनुष्य की समस्त हड्डियों का चित्र खींचा जाता है तथा जोड़ों के दर्द और गठिया इत्यादि रोगों का पता लगाने के लिए इस उपकरण द्वारा चित्र खींचते हैं और रोग की वास्तविकता ज्ञात होती है। इसी प्रकार फोटो के द्वारा संसार के समस्त प्राणियों यहां तक कि भिन्न-भिन्न प्रकार की टिड्डियों के चित्र तथा हर प्रकार के जीवों और पक्षियों के चित्र अपनी पुस्तकों में छाप दिए हैं जिससे ज्ञान में उन्नति हुई है। अत: क्या अनुमान हो सकता है कि वह ख़ुदा जो ज्ञान की प्रेरणा देता है वह ऐसे उपकरण का प्रयोग करना अवैध ठहरा दे जिसके द्वारा बड़े भयंकर रोगों का पता चलता है तथा सामुद्रिक विद्या का ज्ञान रखने वालों के लिए हिदायत पाने का एक माध्यम हो जाता है। ये समस्त मूर्खताएं हैं जो फैल गई हैं। हमारे देश के मौलवी शाही चेहरा अंकित सिक्कों, रुपयों, दुवन्नियां, चवन्नियां तथा अठन्नियां अपनी जेबों और घरों में से क्यों बाहर नहीं फेंकते, क्या उन सिक्कों पर चित्र नहीं ? खेद कि ये लोग अकारण अनुचित बातें करके विरोधियों को इस्लाम पर उपहास का अवसर देते हैं। इस्लाम ने समस्त व्यर्थ कार्य और ऐसे कार्य जो शिर्क के समर्थक हैं अवैध किए हैं न कि ऐसे कार्य जो मानव ज्ञान को उन्नति देते और रोगों को पहचानने का साधन ठहरते तथा सामुद्रिक विद्या के विशेषज्ञों को हिदायत के निकट कर देते हैं परन्तु इसके बावजूद मैं कदापि पसन्द नहीं करता कि मेरी जमाअत के लोग ऐसी आवश्यकता के बिना जो कि विवश करती है वे मेरे चित्र को सामान्य तौर पर प्रकाशित करना अपना व्यवसाय बना लें क्योंकि इसी प्रकार शनै:

शनैः बिदअतें पैदा हो जाती हैं और शिर्क तक पहुंचती हैं, इसलिए मैं अपनी जमाअत को यहां भी नसीहत करता हूं कि उनके लिए संभव हो ऐसे कार्यों से बचें। कुछ लोगों के मैंने कार्ड देखे हैं और उनके पीछे एक किनारे पर अपना चित्र देखा है। मैं ऐसे प्रकाशन का बहुत विरोधी हूं और मैं नहीं चाहता कि हमारी जमाअत का कोई व्यक्ति ऐसा कार्य करे। एक उचित और लाभप्रद उद्देश्य के लिए कार्य करना और बात है तथा हिन्दुओं की भांति जो अपने बुज़ुर्गों के चित्र जगह-जगह दीवारों पर लगाते हैं यह और बात है। हमेशा देखा गया है कि ऐसे व्यर्थ कार्य शिर्क की ओर ले जाने वाले हो जाते हैं और उनसे बड़ी-बड़ी खराबियां जन्म लेती हैं जिस प्रकार हिन्दुओं और ईसाइयों में पैदा हो गईं और मैं आशा रखता हूं कि जो व्यक्ति मेरी नसीहतों को श्रेष्ठता और आदर की दृष्टि से देखता है और मेरा सच्चा अनुयायी है वह इस आदेश के पश्चात् ऐसे कार्यों से पृथक रहेगा अन्यथा वह मेरी हिदायतों के विपरीत स्वयं को चलाता है और शरीअत के मार्ग में उद्दण्डता से कदम रखता है।

कुछ ऐसे लोगों ने जिनको न धर्म की कुछ खबर है और न मेरी परिस्थितियों का कुछ ज्ञान, केवल कृपणता और नासमझी के मार्ग से ऐसे आरोप भी मेरे बारे में प्रकाशित किए हैं जिन से यदि कुछ सिद्ध होता है तो केवल यही कि वे लोग जितना अपनी संसार प्राप्ति के लिए तथा सांसारिक पद पाने के लिए प्रयास करते हैं उनका हज़ारवें भाग के बराबर भी धर्म की ओर उनका ध्यान नहीं, उनके आरोप सुनकर अत्यधिक आश्चर्य होता है कि ये लोग मुसलमान कहला कर इस्लाम से सर्वथा अनभिज्ञ हैं।

अतः विचार करना चाहिए कि उनके ये आरोप किस प्रकार के हैं। उदाहरणतया वे कहते हैं कि यह एक योजना है जो धन एकत्र करने के लिए बनाई गई है और उनके सहयोगी वेतन पाते हैं। अब वह व्यक्ति जो हृदय में ख़ुदा तआला का कुछ भय रखता है विचार कर ले कि क्या यह वही कुधारणा नहीं जो हमेशा से हृदयों के अंधे नबियों पर करते आए हैं। फ़िरऔन ने हज़रत मूसा पर भी कुधारणा की तथा अपने लोगों को

सम्बोधित करके कहा कि इस व्यक्ति का मूल उद्देश्य यह है कि तुम लोगों को भूमि से पृथक करके स्वयं अधिकार कर ले। ऐसा ही यहूदियों ने हज़रत ईसा के बारे में यही राय स्थापित की कि यह व्यक्ति धोखेबाज़ है तथा नुबुव्वत के बहाने से हम लोगों पर शासन करना चाहता है और हमारे नबी[स.अ.व.] के संबंध में काफ़िर कुरैश ने भी यही कुधारणा की जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में उनके इस कथन का उल्लेख है اِنَّ هٰذَا لَشَیۡءٌ یُّرَادُ[1] अर्थात् इस दावे में तो कोई कामवासना संबंधी उद्देश्य है। अतः ऐसे आरोप करने वालों पर हम क्या अफ़सोस करें वे पहले इन्कारियों का आचरण प्रदर्शित कर रहे हैं। सत्याभिलाषी की यह प्रकृति होनी चाहिए कि वह दावे में ध्यानपूर्वक देखे और तर्कों पर हार्दिक न्याय से दृष्टि डाले और वह बात मुख पर लाए जो बुद्धि, ख़ुदा के भय तथा न्याय चाहती है न कि यह कि छान-बीन से पूर्व ही यह कहना आरंभ कर दे कि यह सब कुछ धन अर्जित करने के लिए एक छल बनाया गया है।

फिर उनका एक आरोप यह भी है कि भविष्यवाणियां पूरी नहीं हुईं। इस आरोप के उत्तर में तो केवल इतना लिखना पर्याप्त है कि झूठों पर ख़ुदा की ला'नत। यदि वे मेरी पुस्तकों को ध्यानपूर्वक देखते या मेरी जमाअत के शिक्षित एवं जानकार लोगों से पूछते तो उन्हें ज्ञात होता कि अब तक कई हज़ार भविष्यवाणियां पूर्ण हो चुकी हैं तथा उन भविष्यवाणियों के पूर्ण होने के केवल एक दो गवाह नहीं अपितु हज़ारों लोग गवाह हैं। अकारण झुठलाने से क्या लाभ ! क्या ऐसी बातों से हज़रत ईसा का दोबारा आना अनुमान के निकट हो जाएगा ? हज़रत ईसा के दोबारा आने से तो हाथ धो बैठना चाहिए। प्रत्येक विरोधी विश्वास रखे कि अपने जीवन में वह चन्द्रावस्था तक पहुंचेगा और मरेगा परन्तु हज़रत ईसा को आकाश से उतरते नहीं देखेगा। यह भी मेरी एक भविष्यवाणी है जिसकी सच्चाई का प्रत्येक विरोधी अपनी मृत्यु के समय साक्षी होगा। जितने मौलवी और मुल्लां हैं और प्रत्येक वैरी जो मेरे विरुद्ध कुछ लिखता है वे सब स्मरण रखें कि वे इस आशा से असफल मरेंगे कि वे हज़रत ईसा को आकाश से उतरते देख

---

① अस्साद - 7

लें वे कदाचित उनको उतरते नहीं देखेंगे यहां तक कि बीमार होकर मृत्यु की अन्तिम सांस तक पहुंच जाएंगे और इस संसार को अत्यन्त परेशान होकर छोड़ेंगे। क्या यह भविष्यवाणी नहीं ? क्या वे कह सकते हैं कि यह पूरी नहीं होगी ? अवश्य पूरी होगी। फिर यदि उनकी सन्तान होगी तो वह भी स्मरण रखें कि इसी प्रकार वे भी असफल मरेंगे और कोई व्यक्ति आकाश से नहीं उतरेगा। तत्पश्चात् यदि सन्तान की सन्तान होगी तो वे भी इस असफलता में भाग लेंगे तथा उनमें से कोई हज़रत ईसा को आकाश से उतरते नहीं देखेगा।

कुछ मूर्ख कहते हैं कि अहमद बेग के दामाद के संबंध में भविष्यवाणी पूरी नहीं हुई। वे नहीं समझते कि यह भविष्यवाणी भी अब्दुल्लाह आथम के बारे में भविष्यवाणी की भांति शर्त वाली थी तथा उसमें ख़ुदा तआला की वह्यी उसकी मन्कूहा (पत्नी) की नानी को सम्बोधित करके यह थी - توبی توبی فانّ البلاء علیٰ عقبك अर्थात् हे स्त्री तौबा-तौबा कर कि तेरी लड़की की लड़की पर विपत्ति आने वाली है। अत: जब स्वयं अहमद बेग इस भविष्यवाणी के अनुसार जिसकी यह भविष्यवाणी एक शाखा है निर्धारित समय सीमा के अन्दर मृत्यु पा गया। तो जैसा कि मानव प्रकृति की विशेषता है समस्त संबंधियों के हृदयों में भय पैदा हुआ और वे भयभीत हुए और गिड़गिड़ाए। इसलिए ख़ुदा ने इस भविष्यवाणी के प्रकट होने से विलम्ब कर दिया और यह तो शर्त के साथ भविष्यवाणी थी। जैसा कि अब्दुल्लाह आथम की मृत्यु के संबंध में भी सशर्त भविष्यवाणी थी जिसकी मृत्यु पर लगभग ग्यारह वर्ष गुज़र गए, परन्तु यूनुस नबी ने अपनी जाति के तबाह होने के बारे में भविष्यवाणी की थी। उसमें तो कोई शर्त न थी परन्तु वह जाति भी तौबा करने तथा क्षमा-याचना करने के कारण बच गई। हम बार-बार कह चुके हैं कि अज़ाब की भविष्यवाणियां पश्चाताप तथा क्षमा-याचना से विलम्ब में पड़ सकती हैं अपितु निरस्त हो सकती हैं। जैसा कि यूनुस की जाति के बारे में जो तबाह करने का वादा था केवल पश्चाताप से टल गया, परन्तु खेद कि इस युग के ये लोग कैसे अंधे हैं कि उनको बार-बार ख़ुदा की किताब के अनुसार उत्तर दिया जाता है फिर भी

नहीं समझते। क्या उनके विचार में यूनुस नबी सच्चा नबी नहीं था जिसकी भविष्यवाणी बिना किसी शर्त के थी और अटल भविष्यवाणी थी कि चालीस दिन में उसकी जाति अज़ाब से तबाह की जाएगी। परन्तु वह जाति तबाह नहीं हुई, किन्तु यहां तो ऐसा आरोप नहीं आता था जैसा कि हज़रत यूनुस[अ.] की भविष्यवाणी पर आता था। यहां तो अब्दुल्लाह आथम और अहमद बेग तथा उसके दामाद की मृत्यु के बारे में सशर्त भविष्यवाणियां थीं। आश्चर्य है कि चार भविष्यवाणियों में से तीन भविष्यवाणियां पूरी हो चुकीं तथा अब्दुल्लाह आथम और अहमद बेग तथा लेखराम, लम्बा समय हुआ कि भविष्यवाणियों के अनुसार इस संसार से कूच कर गए, फिर भी ये लोग आरोप से नहीं रुकते।

यह भी आपत्ति करते हैं कि अहमद बेग की लड़की के लिए भांति-भांति की आशा देने से क्यों प्रयत्न किया गया। नहीं समझते कि वह प्रयत्न इस उद्देश्य से था कि वह प्रारब्ध इस प्रकार से स्थगित हो जाए और अज़ाब टल जाए। यही प्रयत्न अब्दुल्लाह आथम तथा लेखराम के लिए भी किया गया था। यह कहां से ज्ञात हुआ कि किसी भविष्यवाणी को पूरा करने के लिए कोई वैध प्रयत्न करना अवैध है। कुछ ध्यानपूर्वक तथा शर्म से विचार करो कि क्या आंहज़रत[स.अ.व.] को पवित्र क़ुर्आन में यह वादा नहीं दिया गया था कि अरब की मूर्ति पूजा समाप्त की जाएगी और मूर्ति पूजा के स्थान पर इस्लाम स्थापित होगा तथा वह दिन आएगा कि ख़ाना काबः की कुंजियां आंहज़रत[स.अ.व.] के हाथ में होंगी, जिसको चाहेंगे देंगे और यह सब कुछ ख़ुदा स्वयं करेगा परन्तु फिर भी इस्लाम के प्रचार के लिए ऐसा प्रयास किया गया कि जिसके विवरण की आवश्यकता नहीं अपितु सही हदीस में है कि यदि कोई स्वप्न देखे और उसके प्रयास से वह स्वप्न पूरा हो सके तो उस स्वप्न को अपने प्रयास द्वारा पूर्ण कर लेना चाहिए।

अलख़िताबुल मलीह फ़ी तहक़ीक़ अलमहदी वल मसीह
जो
मौलवी रशीद अहमद गंगोही की व्यर्थ बातों का संग्रह है
के सन्देहों का उत्तर

इस पुस्तक में जहां तक लेखक से हो सका मुझे झुठलाने के लिए बहुत हाथ-पैर मारे हैं तथा अपने विचार को बल देने के लिए बहुत सी घटना के विरुद्ध बातों से काम लिया है। यह पुस्तक सर्वथा कच्ची, निर्मूल एवं निरर्थक विचारों तथा झूठी बातों से भरी हुई है और मैं जानता हूं कि इस के खण्डन की कुछ भी आवश्यकता नहीं तथा ऐसा व्यक्ति जो पवित्र क़ुर्आन और हदीस का कुछ ज्ञान रखता है उसके लिए इस बात की आवश्यकता नहीं कि इस पुस्तक का खण्डन लिखा जाए, परन्तु चूंकि मैंने सुना है कि मौलवी रशीद अहमद साहिब के मुरीद सहारनपुर के आस-पास के क्षेत्र में इस विचार से कि यह लेख उनके जीवन के दिनों की यादगार है बड़े प्रेम के साथ उसको पढ़ते हैं। इसलिए मैंने उचित समझा कि ऐसे लोगों को धोखे से बचाने के लिए उन कुछ आवश्यक आरोपों का उत्तर दिया जाए जिनके कारण उस क्षेत्र के अनपढ़ और अशिक्षित लोग गुमराही के भंवर में ग्रस्त हो गए हैं और इस मिथ्या और असत्य बातों के संग्रह पर आधारित पुस्तक पर गर्व करते हैं।

मैं यहां सत्याभिलाषियों पर एक सीधा मार्ग खोलने के लिए उचित समझता हूं कि जो विवादित मूल समस्या है पहले उस पर कुछ प्रकाश डाला जाए। अत: वह यह है कि हमारे विरोधी जिनमें से मौलवी रशीद अहमद भी हैं यह आस्था रखते हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु नहीं हुई और वह किसी उद्देश्य के लिए पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए हैं[1] तथा किसी समय प्रलय से पूर्व संसार में दोबारा

---

①स्वप्नफल (ता'बीर) बताने वालों ने लिखा है कि जो व्यक्ति स्वप्न में यह देखे कि वह जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चला गया है उसकी यही ता'बीर होगी

उतरेंगे किन्तु यह नहीं बताते कि वह कौन सा उद्देश्य था जिसके लिए वह जीवित आकाश पर उठाए गए ? क्या केवल यहूदियों के हाथ से प्राण बचाना अभीष्ट था या कोई अन्य बात थी ? तथा नहीं बता सकते कि अब तक जो दो हज़ार वर्ष के लगभग हो चुके हैं वह क्यों आकाश पर हैं। क्या अभी तक यहूदियों के गिरफ़्तार करने का कुछ धड़का हृदय में शेष है ? नहीं बता सकते कि उनको क्यों यह विशिष्टता दी गई कि समस्त नबियों के विपरीत वह इतने समय तक कि अब दो हज़ार वर्ष की अवधि हो गई आकाश पर हैं और फिर किसी समय आंहज़रत[स.अ.व.] की भविष्यवाणी के अनुसार पृथ्वी पर उतरेंगे तथा नहीं बता सकते कि ऐसे शारीरिक रफ़ा और फिर नुज़ूल (उतरने) में ख़ुदा का क्या हित था ? क्या यहूदियों के पकड़ने का भय या कुछ और, तथा नहीं बता सकते कि ऐसे व्यक्ति को यह आकाश पर चढ़ने और उतरने की विशिष्टता क्यों दी गई जिसके बारे में अल्लाह तआला जानता था कि वह ख़ुदा बनाया जाएगा और चालीस करोड़ प्रजा उसकी ओर यह विलक्षण चमत्कार सम्बद्ध होने के कारण उसे ख़ुदा का बेटा अपितु ख़ुदा मानेंगे। ये लोग यद्यपि बहुत बल देकर कहते हैं कि हज़रत ईसा मरे नहीं अपितु जीवित हैं किन्तु नहीं बता सकते कि ख़ुदा की सुन्नत (नियम) के विपरीत पवित्र क़ुर्आन के किस स्पष्ट आदेश से उन का जीवित रहना सिद्ध है ? किन्तु वह आस्था जिस ने मुझे विवेक के साथ स्थापित किया है कि वह यह है हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम अन्य मनुष्यों के समान मानव आयु पाकर मृत्यु-प्राप्त हो गए हैं तथा आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ चढ़ जाना और फिर किसी समय पार्थिव शरीर के साथ उतरना उन पर यह सब आरोप हैं। अल्लाह तआला का कथन है -

---

शेष हाशिया :- कि वह अपनी स्वाभाविक मौत से मरेगा अर्थात् विरोधियों के क़त्ल करने के इरादे से सुरक्षित रहेगा। अत: कुछ आश्चर्य नहीं कि ऐसा स्वप्न हज़रत ईसा ने भी देखा हो और फिर मूर्ख लोगों ने स्वप्न की ता'बीर पर दृष्टि न रख कर वास्तव में आकाश पर पार्थिव शरीर के साथ जाना समझ लिया हो। (इसी से)

قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ هَلۡ كُنۡتُ اِلَّا بَشَـرًا رَّسُوۡلًا①

अत: मूल समस्या जो हल होने तथा निर्णय योग्य है वह यही है कि क्या यह सच है कि ख़ुदा के नियम के विरुद्ध वास्तव में हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ गए थे और यदि यह बात पवित्र क़ुर्आन के असंदिग्ध, स्पष्ट आदेश से सिद्ध हो जाए कि हज़रत ईसा[अ.] वास्तव में पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाए गए थे तो फिर उनके उतरने के बारे में किसी बहस की आवश्यकता नहीं, क्योंकि जो व्यक्ति पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जाएगा उसका वापस आना क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशानुसार आवश्यक है। अत: यदि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए हैं तो वापस आने में क्या सन्देह है। कारण यह कि यदि दोबारा पृथ्वी पर आने के लिए किसी अन्य कार्य के लिए उनकी कुछ आवश्यकता न हो परन्तु फिर भी मरने के लिए उनका आना अवश्य होगा, क्योंकि आकाश पर क़ब्रों का कोई स्थान नहीं तथा पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश से सिद्ध है कि प्रत्येक मनुष्य पृथ्वी पर ही मरेगा और पृथ्वी में ही दफ़्न किया जाएगा और पृथ्वी से ही निकाला जाएगा। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

مِنۡهَا خَلَقۡنٰكُمۡ وَ فِيۡهَا نُعِيۡدُكُمۡ وَ مِنۡهَا نُخۡرِجُكُمۡ تَارَةً اُخۡرٰى②

यद्यपि यह संभव है कि आकाश से बीमार होकर आएं या मार्ग में बीमार हो जाएं और फिर पृथ्वी पर आकर मृत्यु हो जाए। यह हमने इसलिए कहा है कि हदीसों से सिद्ध है कि आने वाला ईसा ज़ाफ़रानी रंग (पीले रंग) की दो चादरों में उतरेगा और समस्त ता'बीर बताने वालों की सहमति से ता'बीर की दृष्टि से पीले रंग की चादर से बीमारी अभिप्राय होती है।

मैं कई बार वर्णन कर चुका हूं कि **मैं जो ख़ुदा की ओर से मसीह मौऊद हूं।**

---

① बनी इस्राईल - 94

② ताहा - 56

हदीसों में मेरे शारीरिक लक्षणों में से ये दो लक्षण भी लिखे गए हैं क्योंकि पीले रंग की चादर से बीमारी अभिप्राय है और जैसा कि मसीह मौऊद के बारे में हदीसों में दो पीले रंग की चादरों का वर्णन है ऐसी ही मुझे दो बीमारियां लगी हुई हैं। एक बीमारी शरीर के ऊपरी भाग में है जो ऊपर की चादर है और वह दौरान-ए-सर (सर चकराना) है जिसकी तीव्रता के कारण किसी समय मैं पृथ्वी पर गिर जाता हूं और हृदय का रक्त-संचार कम हो जाता है और भयावह अवस्था पैदा हो जाती है। दूसरी बीमारी शरीर के नीचे के भाग में है कि मुझे पेशाब के बार-बार आने की बीमारी है। दिन में पन्द्रह या बीस बार तक जाना पड़ता है, और कभी दिन-रात में सौ बार के लगभग जाना पड़ता है, इससे भी बहुत कमज़ोरी हो जाती है। अत: ये पीले रंग की दो चादरें हैं जो मेरे हिस्से में आ गई हैं। जो लोग मुझे स्वीकार नहीं करते उनको तो बहरहाल मानना पड़ेगा कि हज़रत ईसा उतरने के समय आकाश से यह उपहार लाएंगे कि दो बीमारियां उन्हें लगी होंगी। एक शरीर के ऊपरी भाग में और दूसरी शरीर के नीचे के भाग में होगी।

यदि कोई यह कहे कि इन चादरों से असली चादरें ही अभिप्राय हैं तो फिर इसका तात्पर्य यह होगा कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उतरने के समय हिन्दुओं के जोगियों की भांति पीले रंग की दो चादरों में उतरेंगे, किन्तु ये अर्थ उन अर्थों के विपरीत हैं जो स्वयं आंहज़रत[स.अ.व.] ने अपने कश्फ़ों के बारे में किए हैं। जैसा कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने अपने हाथों में दो कड़े देखे थे और उसकी ताबीर दो झूठे नबी बताए थे और गाएं ज़िब्ह होते देखी थीं। इसकी ता'बीर अपने सहाबा[रज़ि.] की शहादत बताई थी और हज़रत उमर[रज़ि.] की एक कमीज़ देखी थी उसकी ता'बीर तक़्वा (संयम) की थी। अत: इस हदीस में भी आंहज़रत[स.अ.व.] की पुरानी सुन्नत के अनुसार दो पीली चादरों की वह ता'बीर न की जाए जो इस्लाम के समस्त महान ता'बीर बताने वालों ने सर्वसम्मति से की है, जिन में से एक भी इस ता'बीर का विरोधी नहीं और वह यही ता'बीर है कि दो ज़र्द चादरों से अभिप्राय दो बीमारियां हैं और मैं ख़ुदा तआला की सौगंध खाकर कह सकता हूं कि मेरा अनुभव

भी यही है कि और अनेकों बार जिसकी मैं गणना नहीं कर सकता मुझे स्वप्न में अपने बारे या किसी अन्य के बारे में जब कभी ज्ञात हुआ कि पीली चादर शरीर पर है तो इस से बीमार होना प्रकटन में आया है। अत: यह अन्याय है जैसा कि **मुतवफ़्फ़ीका** के शब्द के अर्थ हज़रत ईसा के बारे में समस्त संसार के विचार के विपरीत किए जाते हैं इसी प्रकार दो पीली चादरों के बारे में भी वे अर्थ किए जाएं जो आंहज़रत[स.अ.व.] आप के सहाबा[रज़ि.], उनके अनुयायियों तथा उनके भी पश्चात् आने वालों और अहले बैत के इमामों के वर्णित अर्थों के विपरीत हों।

अत: सारांश यह है कि यहां नितान्त आवश्यक बहस यह है कि क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की वास्तव में मृत्यु हो गई अथवा नहीं, क्योंकि यदि यह बात सिद्ध है कि वह पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर चले गए हैं तो जैसा कि अभी हम वर्णन कर चुके हैं। उनका पृथ्वी पर आना बहरहाल महदी के सम्मिलित होने के लिए या केवल मरने के लिए आवश्यक है। यह मूल बहस है जिसके निर्णय से समस्त विवाद का निर्णय हो जाता है तथा जिस पक्ष के हाथ में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के जीवन या मृत्यु के शक्तिशाली तर्क हैं वही पक्ष सत्य पर है, फिर इस बहस का निर्णय हो जाने के पश्चात् दूसरी आंशिक बहसें अनावश्यक हो जाती हैं अपितु पराजित पक्ष के अन्य बहाने स्वयं खण्डित हो जाते हैं। अत: सत्याभिलाषी के लिए नितान्त आवश्यक यही समस्या है जिस पर उसे पूर्ण ध्यान से विचार करना आवश्यक है।

यहां खेद का स्थान तो यह है कि इसके बावजूद कि पवित्र क़ुर्आन ने स्पष्ट शब्दों में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु हो जाने का वर्णन किया है तथा आंहज़रत[स.अ.व.] ने स्पष्ट शब्दों में हज़रत ईसा का उन रूहों में सम्मिलित हो जाने का वर्णन किया है जो इस संसार से गुज़र चुकी हैं तथा सहाबा[रज़ि.] ने स्पष्ट इज्मा के साथ इस निर्णय पर सहमति प्रकट की है कि समस्त अंबिया मृत्यु पा चुके हैं।* फिर भी हमारे विरोधी बार-बार हज़रत

* आंहज़रत[स.अ.व.] की मृत्यु के पश्चात् सहाबा[रज़ि.] को आपकी मृत्यु से बहुत आघात पहुंचा

ईसा के जीवित रहने का वर्णन करते हैं पवित्र क़ुर्आन को छोड़ते हैं, सहाबा के इज्मा को छोड़ते हैं और अपने बाप-दादाओं की ग़लती को दृढ़तापूर्वक पकड़ते हैं तथा उनके

शेष हाशिया - था और उसी आघात के कारण हज़रत उमर[रज़ि.] ने कुछ कपटाचारियों की बातें सुन कर कहा था कि आंहज़रत[स.अ.व.] दोबारा संसार में आएंगे और कपटाचारियों के नाक-कान काटेंगे। चूंकि यह विचार ग़लत था, इसलिए प्रथम हज़रत अबू बक्र सिद्दीक़, हज़रत आइशा सिद्दीक़ा के घर आए और आंहज़रत[स.अ.व.] के मुंह पर से चादर उठा कर मस्तक मुबारक को चूमा और कहा اَنْتَ طَيِّبٌ حَيًّا و مَيِّتًا لَنْ يَّجْمَعَ اللّٰهُ عَلَيْكَ الْمَوْتَيْنِ اِلَّا مَوْتَتَكَ الْاُوْلٰى अर्थात् तू जीवित और मृत होने की अवस्था में पवित्र है। अल्लाह तआला तुझ पर दो मौतें कदापि जमा नहीं करेगा परन्तु पहली मृत्यु। इस कथन का तात्पर्य यही था कि आंहज़रत[स.अ.व.] संसार में वापस नहीं आएंगे और फिर समस्त सहाबा[रज़ि.] को मस्जिद-ए-नबवी में एकत्र किया तथा शुभ संयोग से उस दिन समस्त सहाबा[रज़ि.] जो जीवित थे, मदीना में मौजूद थे,सब को एकत्र करके हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] ने मिंबर पर चढ़ कर यह आयत पढ़ी -

وَ مَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ (आले इमरान - 145)

अर्थात् आंहज़रत[स.अ.व.] केवल नबी हैं और आप से पहले सब नबी मृत्यु पा चुके हैं। अतः क्या आंहज़रत[स.अ.व.] मृत्यु पा जाएं या क़त्ल किए जाएं तो तुम लोग धर्म को छोड़ दोगे ? यह पहला इज्मा (सर्वसम्मति) था जो सहाबा[रज़ि.] में हुआ। जिससे सिद्ध हुआ कि समस्त नबी मृत्यु पा चुके हैं जिन में हज़रत ईसा भी सम्मिलित हैं और यह कहना कि خَلَتْ के अर्थों में जीवित आकाश पर जाना भी सम्मिलित है, यह सर्वथा हठधर्मी है क्योंकि अरब के समस्त शब्दकोश देखने से कहीं सिद्ध नहीं होता कि जीवित आकाश पर जाने के लिए भी خَلَتْ का शब्द आ सकता है। इसके अतिरिक्त यहां अल्लाह तआला ने خَلَتْ के अर्थ दूसरे वाक्य में स्वयं वर्णन कर दिए हैं क्योंकि कहा

पास इस बात का लेशमात्र भी प्रमाण नहीं कि हज़रत ईसा की मृत्यु नहीं हुई और अन्तिम युग में वह दोबारा संसार में आएंगे। केवल वह ईर्ष्या उनको विरोध पर तत्पर कर रही है कि जो हमेशा के कारण अभिमानी लोगों के हृदयों में उत्पन्न हो जाया करती है। यदि कष्ट कल्पना के तौर पर यह बात भी मध्य में होती कि मेरे तर्कों के मुकाबले पर हज़रत ईसा के जीवित रहने पर उनके पास पवित्र क़ुर्आन या हदीस की दृष्टि से कुछ तर्क होते तब भी संयम की मांग यह होना चाहिए थी कि वे लोग ऐसे व्यक्ति के मुकाबले पर जो ठीक आवश्यकता के समय में तथा ठीक सदी के सर पर आया है और अपना दावा शक्तिशाली निशानों से सिद्ध करता है कुछ लज्जा और शर्म करो। क्योंकि ख़ुदा तआला ने उन का नाम तो हकम (निर्णायक) नहीं रखा ताकि मसीह मौऊद के मुक़ाबले पर अपनी बात को तथा अपने कथन को वे प्राथमिकता दें अपितु मसीह मौऊद का नाम

शेष हाशिया - - اَفَاْئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ अतः خَلَتْ (ख़लत) के अर्थ दो रूपों में सीमित कर दिए। एक यह कि स्वाभाविक मृत्यु से मरना, दूसरे क़त्ल किया जाना अन्यथा व्याख्या यों होनी चाहिए थी -

اَفَإِن مَّات اَوْ قُتِلَ اَوْ رَفَعَ اِلَى السَّمَاءِ مَعَ جِسْمِهِ الْعَنْصَرِى

अर्थात् यदि मर जाए या क़त्ल किया जाए या शरीर के साथ आकाश पर उठा दिया जाए। यह तो सुबोधता के विरुद्ध है कि विरोधियों के कथनानुसार जितने अर्थों पर خَلَتْ का शब्द आधारित था उनमें से केवल दो अर्थ लिए और तीसरे की चर्चा तक न की। इसके अतिरिक्त हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] का मूल उद्देश्य यह था कि आंहज़रत दूसरी बार संसार में नहीं आएंगे। जैसा कि आंहज़रत के मस्तक पर चुम्बन लेने के समय हज़रत अबू बक्र ने उसकी व्याख्या भी कर दी थी। तो बहरहाल विरोधी को स्वीकार करना पड़ेगा कि हज़रत ईसा किसी प्रकार भी संसार में नहीं आ सकते, यद्यपि कष्ट-कल्पना के तौर पर जीवित हों, अन्यथा सिद्ध करने का उद्देश्य असत्य हो जाएगा। यह सहाबा का इज्मा वह बात है जिस से इन्कार नहीं हो सकता। (इसी से)

हकम रखा है। अत: संयम की शर्त यह थी कि यदि कुछ काल्पनिक तर्क उनके पास होते भी तब भी ऐसे व्यक्ति के मुकाबले पर जो निश्चित शरीअत के तर्क प्रस्तुत करता है तथा आकाशीय निशान दिखाता है अपने तर्कों को छोड़ देते। किन्तु खेद कि वे लोग यहूदियों के पद चिन्हों पर चलते हैं और केवल झूठ का समर्थन करते हैं। मैं तो ख़ुदा तआला की ओर से 'हकम' होकर आया हूं किन्तु वे मुझ पर हकम बनना चाहते हैं।

अब हम इस बात का उल्लेख करने की ओर ध्यान देते हैं कि वास्तव में हज़रत ईसा इलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं और उनके जीवित रहने की आस्था पवित्र क़ुर्आन और सही हदीसों के विरुद्ध है।

अत: स्मरण रखना चाहिए कि पवित्र क़ुर्आन स्पष्ट शब्दों में उच्च स्वर में कह रहा है कि ईसा अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मृत्यु पा चुका है जैसा कि एक स्थान पर तो ख़ुदा तआला वादे के तौर पर कहता है يٰعِيۡسٰۤى اِنِّىۡ مُتَوَفِّيۡكَ وَ رَافِعُكَ اِلَىَّ[1] तथा दूसरी आयत में इस वादे के पूर्ण होने की ओर संकेत करता है जैसा कि उसका यह कथन है -

وَ مَا قَتَلُوۡهُ يَقِيۡنًۢا بَلۡ رَّفَعَهُ اللّٰهُ اِلَيۡهِ[2]

पहली आयत के ये अर्थ हैं कि हे ईसा ! मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु दूंगा[3] अर्थात्

---

① आले इमरान - 56

② अन्निसा - 158-159

③ ज्ञात रहे कि अरबी भाषा में शब्द توفّی केवल मृत्यु देने को नहीं कहते हैं जो क़त्ल और सलीब के द्वारा या अन्य बाह्य कारणों से न हो। इसीलिए 'कश्शाफ़' के लेखक ने जो लिसान अरब का विद्वान है, इस स्थान में اِنّی متوفّیك की व्याख्या में लिखा है कि اِنِّیۡ مُمِیۡتُكَ حَتۡفَ اَنۡفِك अर्थात् मैं तुझे स्वाभाविक मृत्यु दूंगा। इसी आधार पर 'लिसानुल अरब' तथा 'ताजुलउरूस' में लिखा है -

توفّی المیّت استیفاء مُدّته التی وفیت له و عدّد ایّامه و شهوره و اَعوامه فی الدنیا

अर्थात् मरने वाले की توفی से अभिप्राय यह है कि उसके स्वाभाविक जीवन के

क़त्ल और सलीब के द्वारा तेरी मृत्यु नहीं होगी और मैं तुझे अपनी ओर उठाऊंगा। अत: यह आयत तो बतौर एक वादे के थी और दूसरी उपरोक्त आयत में उस वादे के पूर्ण करने की ओर संकेत है जिसका अनुवाद व्याख्या सहित यह है कि यहूदी स्वयं निश्चय ही आस्था नहीं रखते कि उन्होंने ईसा को क़त्ल किया है और जब क़त्ल सिद्ध नहीं तो फिर स्वाभाविक मृत्यु सिद्ध है जो प्रत्येक मनुष्य के लिए आवश्यक है। अत: इस स्थिति में जिस बात को यहूदियों ने अपने विचार में हज़रत ईसा के ख़ुदा की ओर रफ़ा के लिए रोक ठहराया था अर्थात् क़त्ल और सलीब वह रोक खंडित हुई और ख़ुदा ने अपने वादे के अनुसार उनको ही अपनी ओर उठा लिया।

और यहां इस बात पर हठ करना व्यर्थ है कि توفّی के अर्थ मारना नहीं।① क्योंकि इस बात पर अरबी शब्दकोश के समस्त इमाम सहमति रखते हैं कि जब एक कर्ता पर अर्थात् किसी व्यक्ति का नाम लेकर توفّی का शब्द उस पर प्रयुक्त किया जाए, उदाहरणतया कहा जाए توفّی اللہ زیدًا तो इसके यही अर्थ होंगे कि ख़ुदा ने ज़ैद को

शेष हाशिया - समस्त दिन, महीने और वर्ष पूरे किए जाएं और यह अवस्था तब ही होती है जब स्वाभाविक मृत्यु हो, क़त्ल द्वारा न हो। (इसी से)

① सही बुख़ारी में भी जो ख़ुदा की किताब के बाद सबसे अधिक प्रमाणित पुस्तक कहलाती है توفّی के अर्थ मारना ही लिखा है, क्योंकि हज़रत इब्ने अब्बास[रज़ि.] से आयत یٰعِیۡسٰۤی اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡکَ के बारे में यह रिवायत लिखी है कि اِنِّیۡ مُمِیۡتُکَ और इमाम बुख़ारी ने भी अपना यही मत प्रकट किया है क्योंकि वह इसके समर्थन में एक अन्य हदीस लाए हैं जिसका सारांश यह है कि आंहज़रत[स.अ.व.] का कथन है कि जैसा कि ईसा प्रलय के दिन कहेगा कि जो लोग मेरी उम्मत में से बिगड़ गए हैं वे मेरी मृत्यु के पश्चात् बिगड़े हैं। मैं भी यही कहूंगा कि जो लोग मेरी उम्मत में से बिगड़े हैं वे मेरी मृत्यु के पश्चात् बिगड़े हैं। अत: ऐसी स्थिति में توفّی के शब्द का कर्ता ख़ुदा और कोई नाम लेकर कर्म हो तो अवश्य मारना ही अर्थ होते हैं जिस से इन्कार का कोई उपाय नहीं। (इसी से)

मार दिया। इसी कारण से शब्दकोश के विद्वान ऐसे अवसर पर दूसरे अर्थ लिखते ही नहीं केवल मृत्यु देना लिखते हैं। अत: 'लिसानुल अरब' में हमारे वर्णन के अनुसार यह वाक्य है - توفّى فلان و توفّاه الله اذا قبض نفسه و فى الصّحاح اذا قبض روحه अर्थात् जब यह बोला जाएगा कि توفّى فلان या यह कहा जाएगा توفّاه الله तो इसके केवल यही अर्थ होंगे कि अमुक व्यक्ति मर गया और ख़ुदा ने उसे मार दिया। इस स्थान पर 'ताजुलउरूस' में यह वाक्य लिखा है - تُوُفِّىَ فَلانٌ اذا مات अर्थात् تُوُفِّىَ فَلانٌ उस व्यक्ति के बारे में कहा जाएगा जब वह मर जाएगा। दूसरा वाक्य 'ताजुल उरूस' में यह लिखा है कि تَوَفَّاهُ الله عَزَّ وَجَلَّ :اِذَا قَبَضَ نَفْسَهٗ अर्थात् यह वाक्य कि تَوَفَّاهُ الله عَزَّ وَجَلَّ उस स्थान पर बोला जाएगा जब ख़ुदा किसी की रूह निकालेगा तथा सिहाह में लिखा है تَوَفَّاهُ اللّٰهُ قَبَضَ رُوْحَه अर्थात् इस वाक्य تَوَفَّاهُ الله के ये अर्थ हैं कि अमुक व्यक्ति की रूह को ख़ुदा तआला ने क़ब्ज़ (निकाल) कर लिया है और यथासंभव सिहाह सित्त: और अन्य हदीसों पर दृष्टिपात किया तो विदित हुआ कि आंहज़रत[स.अ.व.] के कलाम तथा सहाबा[रज़ि.] के कलाम और सहाबा के बाद के लोगों तथा इन पश्चात् वालों के पश्चात् के अनुयायियों के कलाम में कोई एक उदाहरण भी ऐसा नहीं पाया जाता जिस से सिद्ध होता हो कि किसी कर्ता पर توفّى का शब्द आया हो अर्थात् किसी व्यक्ति का नाम लेकर توفّى का शब्द उसके बारे में प्रयोग किया गया हो और ख़ुदा कर्ता और वह व्यक्ति कर्म ठहराया गया हो तथा इस स्थिति में उस वाक्य के अर्थ मृत्यु देने के अतिरिक्त कोई किए गए हों अपितु प्रत्येक स्थान में जब नाम लेकर किसी व्यक्ति के बारे में توفّى का शब्द प्रयोग किया गया है और उस स्थान पर ख़ुदा कर्ता ओर वह व्यक्ति कर्म है जिसका नाम लिया गया तो उस से यही अर्थ अभिप्राय लिए गए हैं कि वह मृत्यु पा गया है। अत: मुझे हदीसों से ऐसे तीन सौ से अधिक उदाहरण मिले हैं जिन से सिद्ध हुआ कि जहां कहीं توفّى के शब्द का ख़ुदा कर्ता हो और वह व्यक्ति कर्म जो जिसका नाम लिया गया है जो उस स्थान पर केवल मृत्यु देने के अर्थ हैं न कि कुछ

और। किन्तु पूर्ण खोज के बावजूद मुझे एक भी हदीस ऐसी नहीं मिली जिसमें توفّی की क्रिया का ख़ुदा कर्ता हो और कर्म संज्ञा अर्थात् नाम लेकर किसी व्यक्ति को कर्म ठहराया गया हो तथा उस स्थान पर मृत्यु देने के अतिरिक्त कोई अन्य अर्थ हों।

इसी प्रकार जब पवित्र क़ुर्आन पर प्रारंभ से लेकर अन्त तक दृष्टिपात किया गया तो उस से भी यही सिद्ध हुआ जैसा कि आयत تَوَفَّنِیْ مُسْلِمًا وَّ اَلْحِقْنِیْ بِالصّٰلِحِیْنَ[1] और आयत وَ اِمَّا نُرِیَنَّکَ بَعْضَ الَّذِیْ نَعِدُھُمْ اَوْ نَتَوَفَّیَنَّکَ[2] इत्यादि आयतों से सिद्ध है और फिर मैंने अरब के कवियों के संग्रहों की मात्र इस उद्देश्य से छानबीन की तथा असभ्यता और इस्लामी युग के शे'र बहुत ध्यानपूर्वक देखे। उन्हें देखने में काफी समय व्यय हुआ परन्तु मैंने उन में भी एक उदाहरण भी ऐसा न पाया कि जब ख़ुदा توفّی के शब्द का कर्ता हो और एक संज्ञा कर्म हो अर्थात् कोई व्यक्ति उसका नाम लेकर कर्म ठहराया गया हो तो ऐसी स्थिति में मार देने के अतिरिक्त कोई अन्य अर्थ हों। तत्पश्चात् मैंने अरब के अधिकांश विद्वजनों और साहित्यकारों से मालूम किया तो उनसे भी यही ज्ञात हुआ कि आज के दिनों तक सम्पूर्ण अरब में यही मुहावरा प्रचलित है कि जब एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति के बारे में वर्णन करता है कि توفّی اللہ فلانا तो उसके अर्थ निश्चित तौर पर यही समझे जाते हैं कि अमुक व्यक्ति को ख़ुदा तआला ने मार दिया और जब एक अरब को दूसरे अरब की ओर से एक पत्र आता है और उसमें उदाहरणतया यह लिखा हुआ होता है कि توفّی اللہ زیدًا तो उस का यही अर्थ समझा जाता है कि ख़ुदा तआला ने ज़ैद को मार दिया। अत: इतनी छान-बीन के पश्चात् जो अटल विश्वास तक पहुंच गई है, इस मामले का निर्णय हो गया है और देखी तथा महसूस की गई बातों के स्तर तक पहुंच गया कि एक व्यक्ति जिस के बारे में इस प्रकार से توفّی का शब्द प्रयोग किया जाए, उसके यही अर्थ होंगे कि वह

---

[1] यूसुफ़ - 102

[2] यूनुस - 47

व्यक्ति मृत्यु पा गया है न कि कुछ और। चूंकि इसी प्रकार से تَوَفّٰى शब्द पवित्र क़ुर्आन में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के बारे में दो स्थानों पर प्रयोग हुआ है। अतः निश्चित और ठोस तौर पर ज्ञात हुआ कि वास्तव में हज़रत ईसा[अ.] मृत्यु पा चुके हैं और उनका रफ़ा वही है जो रूहानी रफ़ा होता है और उनकी मृत्यु क़त्ल या सलीब के द्वारा नहीं हुई है। जैसा कि ख़ुदा तआला ने पवित्र क़ुर्आन में ख़बर दी है अपितु वह अपनी स्वाभाविक मृत्यु से निधन प्राप्त कर चुके हैं।

'लिसानुल अरब' तथा अन्य शब्दकोशों की पुस्तकों से स्पष्ट है कि अरबी भाषा का एक अद्वितीय इमाम जिसके सामने किसी को नकारने की गुंजायश नहीं अर्थात् प्रकाण्ड विद्वान ज़मख़शरी[1] आयत اِنِّیْ مُتَوَفِّیْكَ के यही अर्थ करता है कि اِنِّی مُمِیتك حَتف اَنفك अर्थात् हे ईसा मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मृत्यु से मारूंगा حتف अरबी शब्दकोश में मृत्यु को कहते हैं और انف नाक को कहते हैं। अरबों में प्राचीनकाल से यह आस्था चली आती है कि मनुष्य के प्राण नाक के मार्ग से निकलते हैं। इसलिए स्वाभाविक मृत्यु का नाम उन्होंने حتف انف रख दिया तथा अरबी भाषा में تَوَفّٰى के शब्द का वास्तविक प्रयोग स्वाभाविक मृत्यु के स्थान पर होता है और जहां कोई व्यक्ति क़त्ल के द्वारा मरे वहां क़त्ल का शब्द प्रयोग करते हैं और यह ऐसा मुहावरा है जो किसी अरबी जानने वाले पर गुप्त नहीं। हां यह अरब के लोगों का नियम है कि कभी ऐसे शब्द

---

[1] स्पष्ट रहे कि इस स्थान पर हमने जो ज़मख़शरी को प्रकाण्ड विद्वान और इमाम के नाम से याद किया है वह शब्दकोश के विशेषज्ञ की दृष्टि से है, क्योंकि इसमें कुछ सन्देह नहीं कि यह व्यक्ति अरबी भाषा के शब्दकोशों तथा उनके प्रयोग के स्थान, अवसर, उनके सुबोध एवं असुबोध शब्दों तथा उत्तम और व्यर्थ एवं पर्याय शब्दों के अन्तरों, विशेषताओं, उनके जोड़ने तथा उनके प्राचीन एवं नवीन शब्दों, व्याकरण और सरस शैली के सूक्ष्म नियमों में विशेषज्ञ और इन सब बातों में इमाम और समय का प्रकाण्ड विद्वान था न कि किसी अन्य बात में। (इसी से)

को जो अपनी मूल बनावट में उसके किसी विशेष स्थान के लिए प्रयोग होता है एक अनुकूलता स्थापित करके किसी अन्य स्थान पर भी प्रयुक्त कर देते हैं अर्थात् उसका प्रयोग विशाल कर देते हैं और जब ऐसी अनुकूलता मौजूद न हो तो फिर आवश्यक होता है कि ऐसी स्थिति में वह शब्द अपनी बनावट पर प्रयुक्त हो। अतः इस स्थान पर जो प्रकाण्ड विद्वान ज़मख़शरी ने आयत اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡکَ के अन्तर्गत यह लिखा है कि اِنّی متوفیك حتف انفك अर्थात् हे ईसा मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मौत से मृत्यु दूंगा। इन अर्थों के करने में प्रकाण्ड विद्वान ज़मख़शरी ने केवल शब्द توفی के प्रयोग करने की पद्धति पर दृष्टि नहीं रखी अपितु मुकाबले पर इस आयत को देखकर कि ماقتلوہ یقینا तथा इस आयत को देखकर कि ماقتلوہ و ماصلبوہ इस बात पर शक्तिशाली अनुकूलता देखी कि इस स्थान पर متوفّیك के शब्द का प्रयोग अपनी मूल बनावट पर आवश्यक और अनिवार्य है अर्थात् यहां इसके ये अर्थ हैं कि हे ईसा मैं तुझे तेरी स्वाभाविक मृत्यु से मारूंगा। इसी कारण से उसने आयत اِنِّیۡ مُتَوَفِّیۡکَ की यह व्याख्या की कि اِنّی مُمِیتك حتف انفك अर्थात् मैं तुझे स्वाभाविक मौत से मारूंगा।[①] अतः इमाम ज़मख़शरी की गहरी दृष्टि प्रशंसनीय है कि उन्होंने توفّی शब्द के केवल मूल प्रयोग पद्धति पर निर्भर नहीं रखा अपितु मुकाबले पर पवित्र क़ुर्आन की इन आयतों पर दृष्टि डालकर कि ईसा क़त्ल नहीं किया गया और न सलीब दिया गया शब्द की मूल बनावट की दृष्टि से متوفّیك की व्याख्या कर दी और ऐसी व्याख्या भाषा विज्ञान के

---

① चूंकि यहूदियों की आस्थानुसार किसी नबी का रफ़ा रूहानी स्वाभाविक मृत्यु पर आधारित है तथा क़त्ल और सलीब रफ़ा रूहानी का बाधक है। इसलिए ख़ुदा तआला ने प्रथम यहूदियों के खण्डन के लिए यह वर्णन किया कि ईसा के लिए स्वाभाविक मृत्यु होगी और फिर चूंकि रफ़ा रूहानी स्वाभाविक मृत्यु का एक परिणाम है। इसलिए शब्द مُتَوَفِّیۡکَ के पश्चात् رافعك الیّ लिख दिया ताकि यहूदियों के विचारों का पूर्णतया खण्डन हो जाए। (इसी से)

विशेषज्ञ के अतिरिक्त प्रत्येक नहीं कर सकता। स्मरण रहे कि प्रकाण्ड विद्वान ज़मख़शरी 'लिसानुल अरब' का मान्य विद्वान है तथा इस कलाम में उसके समक्ष बाद में आने वाले समस्त लोग नतमस्तक हैं तथा शब्दकोश की पुस्तकों के लेखक उसके कथन को प्रमाण में लाते हैं जैसा कि ताजुलउरुस का लेखक भी जगह-जगह उसके कथन को प्रमाण के तौर पर प्रस्तुत करता है।

अब दर्शकगण समझ सकते हैं कि जब आयत مَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا और आयत مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ केवल توفّی के शब्द के स्पष्टीकरण के लिए वर्णन की गई है, कोई नवीन विषय नहीं है अपितु केवल यह व्याख्या अभीष्ट है जैसा कि शब्द متوفّيك में यह वादा था कि ईसा को उसकी स्वाभाविक मृत्यु से मारा जाएगा, ऐसा ही वह स्वाभाविक मृत्यु से मर गया। न किसी ने क़त्ल किया और न किसी ने सलीब दिया। अत: यह विचार भी जो यहूदियों के हृदय में उत्पन्न हुआ था कि ईसा नऊज़ुबिल्लाह ला'नती है तथा उसका रूहानी रफ़ा नहीं हुआ साथ ही असत्य सिद्ध हो गया, क्योंकि इस विचार का सम्पूर्ण आधार केवल क़त्ल और सलीब पर था और इसी से यह परिणाम निकाला गया था कि नऊज़ुबिल्लाह हज़रत ईसा ला'नती और ख़ुदा के दरबार से धिक्कृत हैं, जिनका ख़ुदा तआला की ओर रफ़ा नहीं हुआ। अत: चूंकि ख़ुदा तआला ने متوفّيك के शब्द के साथ यह साक्ष्य दी कि ईसा अपनी स्वाभाविक मृत्यु से मरा है और फिर ख़ुदा ने इसी को पर्याप्त न समझा अपितु متوفّيك के शब्द का जो मूल उद्देश्य था अर्थात् स्वाभाविक मृत्यु से मरना इस उद्देश्य की आयत مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ और आयत مَا قَتَلُوْهُ يَقِيْنًا के साथ पूर्ण रूप से व्याख्या कर दी, क्योंकि जिस व्यक्ति की मृत्यु क़त्ल इत्यादि बाह्य साधनों द्वारा नहीं हुई उसके बारे में यही समझा जाएगा कि वह स्वाभाविक मृत्यु से मरा है। अत: इस में कोई सन्देह नहीं कि वाक्य مَا قَتَلُوْهُ وَ مَا صَلَبُوْهُ का वाक्य متوفّيك के शब्द के लिए बतौर व्याख्या आया है और जब क़त्ल तथा सलीब का न होना सिद्ध हुआ तो इस कथन के अनुसार

कि اذا فات الشرط فات المشروط، رفع الی اللہ (जब शर्त समाप्त हो जाए तो जिसके लिए शर्त की गई थी वह भी समाप्त हो जाता है) हज़रत ईसा का ख़ुदा की ओर रफ़ा सिद्ध हो गया और यही अभीष्ट था।

अब हम पुनः अपने पहले कलाम की ओर लौटते हुए कहते हैं कि यह बात प्रमाणित है कि जहां किसी कलाम में توفّی के शब्द में ख़ुदा तआला कर्त्ता हो और कोई व्यक्ति नाम लेकर उस कर्त्ता का कर्म ठहराया दिया जाए, ऐसे वाक्य के हमेशा यह अर्थ होते हैं कि ख़ुदा तआला ने उस व्यक्ति को मार दिया है या मरेगा, कोई अन्य अर्थ कदापि नहीं होते। काफी समय पूर्व मैंने इसी प्रमाणित बात पर एक विज्ञापन दिया था कि जो व्यक्ति इस के विपरीत किसी हदीस या अरब के मान्य दीवान से कोई ऐसा वाक्य प्रस्तुत करेगा जिसमें इसके बावजूद कि توفّی के शब्द का कर्त्ता ख़ुदा हो तथा कोई संज्ञावाचक कर्म हो अर्थात् कोई ऐसा व्यक्ति कर्म हो जिसका नाम लिया गया हो, किन्तु इस बात के बावजूद यहां मृत्यु देने के अर्थ न हों तो मैं उसे इतना ... इनाम दूंगा। इस विज्ञापन का आज तक किसी ने उत्तर नहीं दिया अब पुनः समझाने के अन्तिम प्रयास को पूर्ण करने के लिए दो सौ रुपए नक़द का विज्ञापन देता हूं कि यदि कोई हमारा विरोधी हमारे इस वर्णन को निश्चित और ठोस नहीं समझता तो वह सही हदीसों या प्राचीन कवियों के कथनों में से जो मान्य हों और जो अरब के भाषाविद तथा अपनी कला में मान्य हों कोई एक ऐसा वाक्य प्रस्तुत करे जिसमें توفّی के शब्द का कर्त्ता ख़ुदा तआला हो और कर्म कोई संज्ञावाचक हो जैसे ज़ैद, बकर या ख़ालिद इत्यादि तथा इस वाक्य के अर्थ असंदिग्ध तौर पर कोई और हों, मृत्यु देने के अर्थ न हों तो ऐसी स्थिति में ऐसे व्यक्ति को दो सौ रुपया नक़द दूंगा। ऐसे व्यक्ति को केवल यह सिद्ध करना होगा कि वह हदीस जिसे वह प्रस्तुत करता है वह हदीस सही और नबवी है या प्राचीन अरब शायरों में से किसी ऐसे शायर का कथन है जिसका अरब की भाषा शैली में विशेषज्ञ होना मान्य है। यह प्रमाण देना भी आवश्यक होगा कि उस हदीस का निश्चित तौर पर या उस शे'र से

हमारे दावे के विपरीत अर्थ निकलते हैं और उन अर्थों से जो हम लेते हैं वह लेख खराब होता है अर्थात् वह हदीस या वह शे'र उन अर्थों पर ठोस प्रमाण है क्योंकि यदि उस हदीस या उस शे'र में हमारे अर्थों की भी संभावना है तो ऐसी हदीस या ऐसा शे'र कदापि प्रस्तुत करने योग्य न होगा क्योंकि किसी वाक्य को बतौर उदाहरण प्रस्तुत करने के लिए उस विरोधी लेख का ठोस प्रमाण होना शर्त है। कारण यह कि जिस स्थिति में सैकड़ों ठोस तौर पर प्रमाणित उदाहरणों से सिद्ध हो चुका है कि توفّی का शब्द उस स्थिति में कि ख़ुदा तआला उसका कर्त्ता और कोई व्यक्तिवाचक संज्ञा अर्थात् कोई नाम लेकर मनुष्य उसका कर्म हो तो मृत्यु देने के अतिरिक्त उस कर्म का किसी दूसरे अर्थों पर आ ही नहीं सकता तो फिर उन निरन्तर प्रचुर उदाहरणों के विरुद्ध जो व्यक्ति दावा करता है तो यह प्रमाण देना उस का दायित्व है कि वह ऐसा कोई स्पष्ट उदाहरण हो ठोस तौर पर सिद्ध करता हो हमारे दावे के विरुद्ध प्रस्तुत करे।

فَاِنْ لَّمْ تَفْعَلُوْا وَ لَنْ تَفْعَلُوْا فَاتَّقُوا النَّارَ الَّتِیْ وَقُوْدُهَا النَّاسُ وَ الْحِجَارَةُ ①

हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर प्रमाण ख़ुदा तआला का यह कथन है - بل رفعه الله اليه क्योंकि पवित्र क़ुर्आन और हदीसों के अनुसरण से यह ज्ञात होता है कि رفع الی الله (ख़ुदा की ओर रफ़ा) जो رفعه الله اليه (अल्लाह ने उसे अपनी ओर उठा लिया)के वाक्य से स्पष्ट है कि मृत्यु की अवस्था के अतिरिक्त किसी अवस्था के बारे में नहीं बोला जाता, जैसा कि अल्लाह तआला पवित्र क़ुर्आन में कहता है

يٰۤاَيَّتُهَا النَّفْسُ الْمُطْمَئِنَّةُ ﴿٢٨﴾ ارْجِعِیْۤ اِلٰی رَبِّكِ رَاضِيَةً مَّرْضِيَّةً ﴿٢٩﴾ فَادْخُلِیْ فِیْ عِبٰدِیْ ﴿٣٠﴾ وَ ادْخُلِیْ جَنَّتِیْ ﴿٣١﴾ ②

अर्थात् हे सात्विक वृत्ति जो ख़ुदा से आराम प्राप्त है अपने ख़ुदा की ओर वापस चली आ इस अवस्था में कि ख़ुदा तुझ से प्रसन्न और तू ख़ुदा से प्रसन्न और मेरे बन्दों

---

① अलबक़रह - 25

② अलफ़ज्र - 28 से 31

में प्रविष्ट हो जा तथा मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर जा।

अब स्पष्ट है कि यह अल्लाह तआला का कथन कि ख़ुदा की ओर वापस चली आ मुसलमानों में से कोई इसके ये अर्थ नहीं करता कि जीवित पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर जाकर बैठ। अपितु आयत اِرۡجِعِیۡۤ اِلٰی رَبِّكِ के अर्थ मृत्यु के ही लिए जाते हैं। अतः जब कि ख़ुदा तआला की ओर वापस जाना पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश के अनुसार मृत्यु है तो फिर ख़ुदा की ओर उठाया जाना जैसा कि आयत بل رفعه الله اليه से स्पष्ट होता है क्यों मृत्यु नहीं।[1] यह तो न्याय और बुद्धि तथा संयम के

---

①इसी प्रकार पवित्र क़ुर्आन की बहुत सी अन्य आयतें हैं जिनसे असंदिग्ध तौर से यही ज्ञात होता है कि ख़ुदा की ओर रफ़ा और ख़ुदा की ओर लौटने के शब्द हमेशा मृत्यु ही के लिए आया करते हैं। जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में अल्लाह तआला का कथन है -

قُلۡ یَتَوَفّٰىكُمۡ مَّلَكُ الۡمَوۡتِ الَّذِیۡ وُكِّلَ بِكُمۡ ثُمَّ اِلٰی رَبِّكُمۡ تُرۡجَعُوۡنَ (अस्सज्दह - 12)

अर्थात् वह फ़रिश्ता तुम्हें मृत्यु देगा जो तुम पर नियुक्त है और फिर तुम अपने रब्ब की ओर वापस किए जाओगे और जैसा कि पवित्र क़ुर्आन के एक अन्य स्थान पर कहता है -

كُلُّ نَفۡسٍ ذَآئِقَةُ الۡمَوۡتِ ۟ ثُمَّ اِلَیۡنَا تُرۡجَعُوۡنَ (अलअन्कबूत - 58)

अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति मृत्यु का स्वाद चखेगा और फिर हमारी ओर वापस किए जाओगे और जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है وَّ رَفَعۡنٰهُ مَكَانًا عَلِیًّا (मरयम - 58) अर्थात् हमने उसे अर्थात् उस नबी को उच्च श्रेणी के स्थान पर उठा लिया। इस आयत की व्याख्या यह है कि जो लोग मृत्योपरान्त ख़ुदा तआला की ओर उठाए जाते हैं उनके लिए कई श्रेणियां होती हैं। अतः अल्लाह तआला कहता है कि हमने इस नबी को उठाने के पश्चात् अर्थात् मृत्यु देने के पश्चात् उस स्थान पर उच्च पद दिया। नवाब सिद्दीक़ हसन ख़ान अपनी तफ़्सीर फ़त्हुलबयान में लिखते हैं कि इस स्थान पर रफ़ा से अभिप्राय रफ़ा रूहानी है जो मृत्यु के पश्चात् होता है अन्यथा यह अनिवार्य होता कि वह नबी मरने के लिए पृथ्वी पर आए। खेद इन लोगों को आयत اِنّی متوفّیك ورافعك الیّ में ये अर्थ

विरुद्ध है कि जो अर्थ क़ुर्आन के स्पष्ट आदेशों से सिद्ध और सही होते हैं उन्हें त्याग दिया जाए तथा जिन अर्थों और जिस मुहावरे का अपने पास कोई भी प्रमाण नहीं उस पहलू को अपनाया जाए। क्या कोई बता सकता है कि رفع الی اللہ (ख़ुदा की ओर रफ़ा) के अर्थ अरबी भाषा और अरब वर्णन शैली में मृत्यु दिए जाने के अतिरिक्त कोई अन्य अर्थ भी हैं ? हां इस मृत्यु से ऐसी मृत्यु अभिप्राय है जिसके पश्चात् रूह ख़ुदा तआला की ओर उठाई जाती है। जैसे मोमिनों की मृत्यु होती है। यही मुहावरा ख़ुदा तआला की पहली पुस्तकों में मौजूद है।

उपरोक्त आयत में जो कहा गया है فَادۡخُلِیۡ فِیۡ عِبٰدِیۡ जिसके अर्थ पहले वाक्य के साथ मिलाने से यह हैं कि ख़ुदा की ओर वापस आ जा और फिर ख़ुदा के बन्दों में सम्मिलित हो जा। इस से सिद्ध होता है कि कोई व्यक्ति पूर्व रूहों में प्रवेश नहीं कर सकता जब तक मृत्यु न पाए। अत: जबकि पवित्र क़ुर्आन के स्पष्ट आदेश के अनुसार पूर्व रूहों में प्रवेश करना मृत्यु के अतिरिक्त असंभव और निषिद्ध है तो फिर हज़रत ईसा[अ.] मृत्यु पाए बिना हज़रत यह्या[अ.] के पास क्योंकर दूसरे आकाश पर जा बैठे ?

यहां यह बारीकी भी स्मरण रहे कि उपर्युक्त आयत में ख़ुदा तआला ने यह भी कहा है وَ ادۡخُلِیۡ جَنَّتِیۡ जिस के अर्थ इस वाक्य को सम्पूर्ण आयत के साथ मिलाने से ये होते हैं कि "हे सात्विक वृत्ति (आराम प्राप्त नफ़्स) ! अपने ख़ुदा की ओर वापस आ जा। तू उस से राज़ी और वह तुझ से राज़ी तथा मेरे बन्दों में सम्मिलित हो जा और मेरे स्वर्ग में प्रवेश कर।" अत: जबकि आंहज़रत[स.अ.व.] के उस अवलोकन से जो मे'राज की रात में आप को हुआ यह सिद्ध है कि पवित्र क़ुर्आन की इस आयत के अनुसार नबियों और रसूलों की रूहें जो संसार से गुज़र चुकी हैं वे दूसरे संसार (परलोक) में एक ऐसी

शेष हाशिया :- भूल जाते हैं, हालांकि इस आयत में पहले مُتوفّیك का शब्द मौजूद है और इसके बाद رافعك का। अत: जबकि केवल رافعك के शब्द में मृत्यु के अर्थ लिए जा सकते हैं तो مُتوفّیك और رافعك के अर्थ मृत्यु क्यों नहीं हैं ? (इसी से)

जमाअत की भांति है जो अविलम्ब पहले मृत्यु प्राप्त गिरोह में जा मिलती हैं और उनमें सम्मिलित हो जाती हैं। जैसा कि आयत فادخلی فی عبادی का आशय है। फिर इन आयतों का अन्तिम वाक्य अर्थात् وادخلی جنّتی भी यही चाहता है कि वे ख़ुदा के समस्त बन्दे अविलम्ब स्वर्ग में प्रवेश करें और जैसा कि आयत فادخلی فی عبادی का भाव कोई प्रत्याशित बात नहीं जो एक लम्बे समय के पश्चात् प्रकट हो अपितु सत्यनिष्ठों के मरने के साथ ही अविलम्ब उस का प्रकटन होता है अर्थात् एक जमाअत जो बाद में मरती है पहले मृत्यु प्राप्त लोगों से अविलम्ब जा मिलती है। अतः इस प्रकार अनिवार्य होता है कि आयत का दूसरा वाक्य अर्थात् وادخلی جنّتی वह भी अविलम्ब प्रकट होता हो अर्थात् प्रत्येक व्यक्ति जो शुद्ध और पवित्र मोमिनों में से मृत्यु पाए वह भी अविलम्ब स्वर्ग में प्रवेश कर जाए। यही बात सत्य है जैसा कि पवित्र क़ुर्आन के दूसरे स्थानों[1] में

---

①यहां प्रत्यक्षतः यह आरोप अनिवार्य रूप से आता है कि जबकि प्रत्येक शुद्ध और पवित्र मोमिन जिनकी गर्दन पर पाप और अवज्ञा का कोई बोझ नहीं वे अविलम्ब स्वर्ग में प्रवेश कर जाते हैं, तो ऐसी स्थिति में शरीरों का उठाया जाना तथा उसके समस्त संबंधित साधनों से इन्कार अनिवार्य हो जाता है क्योंकि जब स्वर्ग में प्रवेश कर चुके तो फिर आयत - وَّ مَا هُمۡ مِّنۡهَا بِمُخۡرَجِيۡنَ (अलहिज्र - 49) उनका स्वर्ग से निकलना निषेध है। अतः इस से शरीरों को उठाने (एकत्र करने) तथा आख़िरत की घटनाओं का सम्पूर्ण कारख़ाना असत्य हुआ। इसका उत्तर यह है कि ऐसी आस्था कि पवित्र मोमिन अविलम्ब स्वर्ग में प्रवेश कर जाते हैं यह मेरी ओर से नहीं अपितु यही आस्था है जिस की पवित्र क़ुर्आन ने शिक्षा दी है और पवित्र क़ुर्आन में जो दूसरी शिक्षा है कि शरीर एकत्र किए जाएंगे और मुर्दे जीवित होंगे वह भी सत्य है और हम उस पर ईमान लाते हैं। अन्तर केवल यह है कि स्वर्ग में प्रवेश करना केवल इज्माली (प्रतिरूप के) रूप में है तथा इस स्थिति में जो मोमिनों को मृत्योपरान्त अविलम्ब शरीर दिए जाते है वे शरीर अभी अपूर्ण हैं परन्तु शरीरों को उठाने का दिन महा तजल्ली का दिन है और उस दिन पूर्ण शरीर मिलेंगे और

भी इस की व्याख्या है। ☆

इन सब में से एक वह स्थान है जहां अल्लाह तआला कहता है - قِيْلَ ادْخُلِ الْجَنَّةَ। (यासीन - 27) अर्थात् कहा गया है कि तू स्वर्ग में प्रवेश कर जा। इसी प्रकार और बहुत से स्थान हैं जिन का लिखना विस्तार का कारण होगा, जिन से सिद्ध होता है कि शुद्ध और पवित्र लोगों की रूहें मृत्योपरान्त ही स्वर्ग में प्रवेश कर जाती हैं। इसी प्रकार बहुत सी हदीसों से यही बात सिद्ध होती है और शहीदों की रूहों का स्वर्ग के मेवे खाना ये तो ऐसी प्रसिद्ध हदीसें हैं कि किसी से गुप्त नहीं हैं। ख़ुदा तआला का भी कथन है

وَلَا تَحْسَبَنَّ الَّذِيْنَ قُتِلُوْا فِيْ سَبِيْلِ اللّٰهِ اَمْوَاتًا ؕ بَلْ اَحْيَآءٌ عِنْدَ رَبِّهِمْ يُرْزَقُوْنَ

(आले इमरान - 170)

अर्थात् जो लोग ख़ुदा तआला के मार्ग में मारे जाते हैं उनके बारे में यह मत सोचो कि वे मुर्दा हैं अपितु वे जीवित हैं, ख़ुदा तआला से उनको आजीविका मिलती है। पहली

शेष हाशिया :- स्वर्गवासियों का सम्बन्ध किसी अवस्था में स्वर्ग से पृथक नहीं होगा। एक रूप से वे स्वर्ग में होंगे तथा एक रूप से ख़ुदा के सम्मुख आएंगे। क्या वे शहीद लोग जो हरी चिड़ियों की भांति स्वर्ग में फल खाते हैं क्या वे चिड़ियां स्वर्ग से बाहर निकल कर ख़ुदा के सम्मुख प्रस्तुत नहीं होंगी ? विचार करो। (इसी से)

☆ स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए शरीर आवश्यक है परन्तु यह आवश्यक नहीं कि वह पार्थिव शरीर हो अपितु ऐसा शरीर चाहिए कि जो पार्थिव न हो, क्योंकि स्वर्ग के फल इत्यादि भी पार्थिव नहीं अपितु वह नवीन सृष्टि है। इसलिए शरीर भी नवीन सृष्टि होगा जो पहले शरीर से भिन्न होगा, परन्तु मोमिनों के लिए मृत्योपरान्त शरीर का मिलना आवश्यक है और इस पर न केवल जन्नती (स्वर्गीय) का शब्द सिद्ध करता है अपितु मे'राज की रात में आंहज़रत[स.अ.व.] ने नबियों की केवल रूहें नहीं देखीं अपितु सब के शरीर देखे और हज़रत ईसा का शरीर उन से भिन्न प्रकार का न था। (इसी से)

पुस्तकों से भी यही सिद्ध होता है। अत: जबकि शुद्ध एवं पवित्र लोगों की रूहों का स्वर्ग में प्रवेश करना सिद्ध है तथा स्पष्ट है कि स्वर्ग वह स्थान है जिसमें भिन्न-भिन्न प्रकार की भौतिक ने'मतें भी होंगी और भांति-भांति के मेवे होंगे तथा स्वर्ग में प्रवेश के यही अर्थ हैं कि वे ने'मतें खाए। इस अवस्था में केवल रूह का स्वर्ग में प्रवेश करना निरर्थक और व्यर्थ है। क्या यह स्वर्ग में प्रवेश करके एक वंचित की भांति बैठी रहेगी और स्वर्ग की ने'मतों से लाभ प्राप्त नहीं करेगी। अत: आयत وادخلی جنّتی स्पष्ट बता रही है कि मोमिन को मृत्योपरान्त एक शरीर प्राप्त होता है।[1] इसी कारण से समस्त इमाम और

---

① स्पष्ट हो कि ईसाइयों की भी यही आस्था है कि यसू मसीह अर्थात् ईसा पार्थिव शरीर के साथ नहीं उठाया गया अपितु मृत्यु के पश्चात् उसे एक प्रतापी शरीर मिला था। अत: खेद अपितु अत्यन्त खेद की फैज आ'वज (गुमराही का ज़माना) के मुसलमान जो तीसरी सदी के बाद पैदा हुए वे न तो इस समस्या के बारे में सहाबा[रज़ि.] की आस्था रखते हैं क्योंकि समस्त सहाबा का इस बात पर इज्मा हो गया था कि समस्त पहले अंबिया मृत्यु पा चुके हैं जिनमें हज़रत ईसा भी सम्मिलित हैं और न ये लोग इस समस्या में यहूदियों से सहमत हैं क्योंकि यहूदी नऊज़ुबिल्लाह हज़रत ईसा को लानती ठहराकर केवल उनके रूहानी रफ़ा के इन्कारी हैं जो मृत्यु के पश्चात् मोमिन के लिए आवश्यक है, क्योंकि काठ पर लटकाए जाने का परिणाम केवल रूहानी रफ़ा से वंचित रहना तथा ला'नती बनना है न कि कुछ और। ये लोग न तो इस समस्या में ईसाइयों से सहमत हैं क्योंकि ईसाई हज़रत ईसा के शारीरिक रफ़ा को तो मानते हैं परन्तु उन लोगों की भांति पार्थिव शरीर के रफ़ा को नहीं मानते अपितु प्रतापी शरीर के रफ़ा को मानते हैं जो उनके विचार में मृत्यु के पश्चात् हज़रत ईसा को मिला। अत: हम इस बात का इन्कार नहीं कर सकते कि मृत्यु के पश्चात् हज़रत ईसा को प्रतापी शरीर मिला हो जो पार्थिव शरीर नहीं है क्योंकि वह प्रत्येक सच्चे मोमिन को मृत्यु के पश्चात् मिलता है, जैसा कि आयत وَادخلی جنّتی इस पर साक्षी है। क्योंकि अकेली रूह स्वर्ग में प्रवेश करने योग्य नहीं।

महान सूफ़ी लोग इस बात को मानते हैं कि जो मोमिन शुद्ध और पवित्र होते हैं वे मृत्यु के पश्चात् ही एक पवित्र और प्रकाशमय शरीर पाते हैं, जिसके द्वारा वे स्वर्ग की ने'मतों से आनन्द उठाते हैं और स्वर्ग को केवल शहीदों के लिए विशिष्ट करना एक अन्याय है अपितु एक कुफ्र है। क्या कोई सच्चा मोमिन यह धृष्टतापूर्ण बात मुंह पर ला सकता है कि आंहज़रत[स.अ.व.] अभी तक स्वर्ग के बाहर हैं जिन के मज़ार के नीचे स्वर्ग है, परन्तु

शेष हाशिया :- अतः इसमें हज़रत ईसा की कोई विशिष्टता नहीं। हां ईसाइयों की यह ग़लती है कि जो यह आस्था रखते हैं कि वह प्रतापी शरीर सलीबी मृत्यु के पश्चात् हज़रत ईसा को मिला था क्योंकि हज़रत ईसा सलीब पर कदापि नहीं मरे अन्यथा वह नऊज़ुबिल्लाह अपने लिए यूनुस नबी का उदाहरणत प्रस्तुत करने में झूठे ठहरते हैं तथा ला'नत के अर्थ के चरितार्थ बनते हैं क्योंकि मलऊन वह होता है जिसका हृदय शैतान के समान ख़ुदा से विमुख हो जाए और वह ख़ुदा का शत्रु हो जाए और शैतान की भांति ख़ुदा के दरबार से धिक्कृत होकर ख़ुदा का धृष्ट हो जाए, तो क्या यह अर्थ हज़रत ईसा के बारे में ले सकते हैं ? कदापि नहीं, और क्या कोई ईसाई यह धृष्टता कर सकता है कि सलीब पाने के पश्चात् हज़रत ईसा ख़ुदा से विमुख हो गए थे और शैतान से संबंध पैदा कर लिए थे। जब से संसार की उत्पत्ति हुई है ला'नत का यही अर्थ ठहराया गया है जिस पर समस्त जातियों की सहमति है। किन्तु खेद ईसाइयों ने कभी इस अर्थ पर विचार नहीं किया अन्यथा हज़ार विमुखता से उस मत का परित्याग करते। इसके अतिरिक्त जिन घटनाओं को इंजीलों ने प्रस्तुत किया है उनसे स्पष्ट है कि सलीब से मुक्ति पाने के पश्चात् हज़रत ईसा के केवल पार्थिव शरीर को देखा गया, जैसा कि जब धूमा हवारी ने सन्देह किया कि ईसा सलीब से मुक्ति पाकर कैसे आ गया ? तो हज़रत ईसा ने प्रमाण देने के लिए उसे अपने घाव दिखाए और धूमा ने उन घावों में उंगली डाली। अतः क्या संभव है कि प्रतापी शरीर में भी घाव मौजूद रहे ? और क्या हम कह सकते हैं कि प्रतापी शरीर भी मिला, फिर भी घावों से मुक्ति न हुई अपितु प्रतापी शरीर वह था जो कश्मीर में मृत्यु पाने के पश्चात् मिला। (इसी से)

वे लोग जिन्होंने आप के द्वारा ईमान और संयम की श्रेणी प्राप्त की वे शहीद होने के कारण स्वर्ग में हैं और स्वर्ग के मेवे खा रहे हैं अपितु सच तो यह है कि जिसने ख़ुदा तआला के मार्ग में अपने प्राणों को समर्पित कर दिया वह शहीद हो चुका। अत: ऐसी अवस्था में हमारे नबी[स.अ.व.] सर्वप्रथम शहीद हैं। अत: जब यह बात सिद्ध है तो हम भी कहते हैं कि मसीह भी शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया (किन्तु इस पार्थिव शरीर के साथ नहीं अपितु उस शरीर के साथ जो इससे भिन्न है) और फिर ख़ुदा तआला के बन्दों में सम्मिलित हुआ और स्वर्ग में प्रवेश किया। इस अवस्था में हमारा और हमारे विरोधियों का विवाद केवल शाब्दिक विवाद निकला। अब जबकि इस अवस्था पर शरीर के साथ रफ़ा सिद्ध हुआ तो इसके बाद क्या आवश्यकता है कि समस्त नबियों को एक पवित्र शरीर प्रदान करने के बारे में ख़ुदा तआला की मान्य सुन्नत से मुख फेर कर हज़रत ईसा को पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया जाए और यदि यह आस्था हो कि उनको भी मृत्योपरान्त एक प्रकाशमय (नूरानी) शरीर मिला था जैसा कि हज़रत इब्राहीम, हज़रत मूसा और हज़रत यह्या इत्यादि नबियों को मिला था और उसी शरीर के साथ वे ख़ुदा तआला की ओर उठाए गए तो हम इससे कब इन्कार करते हैं। इस प्रकार के शरीर के साथ हज़रत मसीह का आकाश पर जाना हमें तन-मन से स्वीकार है -

چشم ما روشن و دلِ ما شاد

यद्यपि उपरोक्त पवित्र आयतें हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु पर स्पष्ट और अकाट्य आदेश हैं तथापि यदि पवित्र क़ुर्आन को ध्यानपूर्वक देखा जाए तो विदित होगा कि और भी ऐसी बहुत सी आयतें हैं जिन से हज़रत ईसा[अ.] की मृत्यु सिद्ध होती है। अत: उनमें से एक आयत यह है -

وَمَا مُحَمَّدٌ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ
اَفَا۟ئِنْ مَّاتَ اَوْ قُتِلَ انْقَلَبْتُمْ عَلٰۤى اَعْقَابِكُمْ ؕ ☆

☆ आले इमरान - 145

अर्थात् हज़रत मुहम्मद सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम केवल एक रसूल हैं और उन से पहले सब रसूल मृत्यु पा चुके हैं। अत: यदि वह मृत्यु पा गए या क़त्ल किए गए तो तुम इस्लाम धर्म छोड़ दोगे और जैसा कि अभी मैं वर्णन कर चुका हूं यह सही नहीं है कि خلت का शब्द अन्य समस्त नबियों के लिए तो मृत्यु देने के लिए आता है परन्तु हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के लिए इन अर्थों में आता है कि ख़ुदा तआला ने उनको पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठा लिया। यह दावा सर्वथा प्रमाण रहित है। इस पर कोई प्रमाण प्रस्तुत नहीं किया गया अपितु जहां-जहां पवित्र क़ुर्आन में خلت (ख़लत) का शब्द आया है मृत्यु के अर्थों में ही आया है तथा कोई व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन से एक भी ऐसा उदाहरण प्रस्तुत नहीं कर सकता कि इन अर्थों पर आया हो कि कोई व्यक्ति पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर उठाया गया। इसके अतिरिक्त जैसा कि मैं अभी वर्णन कर चुका हूं, ख़ुदा तआला ने इन्हीं आयतों में **ख़लत** के शब्द की स्वयं व्याख्या कर दी है और ख़लत के अर्थ को केवल मृत्यु और क़त्ल में सीमित कर दिया है। यही पवित्र आयत है जिसके अनुसार सहाबा[रज़ि.] की इस बात पर सर्वसम्मति (इज्मा) हो गई थी कि समस्त नबी और रसूल मृत्यु पा चुके हैं तथा उनमें से कोई संसार में वापस आने वाला नहीं अपितु इस इज्मा का मूल उद्देश्य यही था कि संसार में वापस आना किसी के लिए संभव नहीं तथा इस इज्मा से उस विचार का निवारण अभीष्ट था कि जो हज़रत उमर[रज़ि.] के हृदय में आया था कि आंहज़रत[स.अ.व.] फिर संसार में वापस आएंगे और कपटाचारियों के नाक और कान काटेंगे। इस स्थिति में स्पष्ट है कि यदि इस्लाम में किसी नबी का संसार में वापस आना स्वीकार किया जाता तो इस आयत के पढ़ने से हज़रत उमर[रज़ि.] के विचार का निवारण असंभव होता तथा ऐसी स्थिति में आंहज़रत[स.अ.व.] की भी मानहानि थी। अपितु ऐसी स्थिति में हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] का इस आयत को पढ़ना ही यथोचित न था। इसलिए यह आयत भी वह महान आयत है कि जो हज़रत ईसा[अ.] की मृत्यु की उच्च स्वर में घोषणा कर रही है। فالحمد للہ علیٰ ذالك

फिर एक और आयत है जिस से हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु सिद्ध होती

है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

مَا الْمَسِيْحُ ابْنُ مَرْيَمَ اِلَّا رَسُوْلٌ ۚ قَدْ خَلَتْ مِنْ قَبْلِهِ الرُّسُلُ ؕ وَ اُمُّهٗ صِدِّيْقَةٌ ؕ كَانَا يَاْكُلٰنِ الطَّعَامَ ؕ[1]

अर्थात् ईसा मसीह एक रसूल है उस से पहले सब रसूल मृत्यु पा चुके हैं और उसकी मां एक सच्ची स्त्री थी और दोनों जब जीवित थे रोटी खाया करते थे।

इस आयत में अल्लाह तआला हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़ुदाई का खण्डन करता है और कहता है कि उस से पहले सब रसूल मृत्यु पा चुके हैं। फिर इसके बावजूद यह विचार कि मसीह जीवित आकाश पर बैठा है असत्य है। अत: इस तर्क से किस प्रकार उस की ख़ुदाई सिद्ध की जाती है ? क्योंकि यह तर्क ही व्यर्थ है अपितु सत्य यह है कि मृत्यु ने किसी को नहीं छोड़ा, सब मर गए। **दूसरा तर्क** उसका ख़ुदा का बन्दा होने पर यह है कि उसकी मां थी जिससे वह पैदा हुआ और ख़ुदा की कोई मां नहीं। **तीसरा तर्क** उसका ख़ुदा का बन्दा होने पर यह है कि जब वह और उसकी मां जीवित थे दोनों खाना खाया करते थे और ख़ुदा खाना खाने से पवित्र है अर्थात् खाना परिवर्तन पाने का स्थानापन्न होता है और ख़ुदा इससे श्रेष्ठतर है कि उसमें परिवर्तन पाने की विशेषता हो, परन्तु मसीह खाना खाता रहता था। अत: यदि वह ख़ुदा है तो क्या ख़ुदा का अस्तित्व भी परिवर्तन पाता रहता है ? यह इस बात की ओर संकेत है कि भौतिक विज्ञान के अनुसंधान की दृष्टि से मनुष्य का शरीर तीन वर्ष तक बिल्कुल परिवर्तित हो जाता है और पहले अंग परिवर्तित होकर दूसरे अंग उसका स्थान ले लेते हैं परन्तु ख़ुदा में यह दोष कदापि नहीं। यह तर्क है जिसे ख़ुदा तआला हज़रत ईसा के मनुष्य होने पर लाया है।

किन्तु खेद उन लोगों पर कि जो हज़रत ईसा को आकाश पर पहुंचा कर फिर आस्था रखते हैं कि उनके अस्तित्व में मनुष्यों की भांति यह विशेषता नहीं कि उनमें परिवर्तन का क्रम जारी रहे तथा उनको परिवर्तन का स्थानापन्न भोजन द्वारा मिलता है

---

1 अलमाइदह - 76

के बिना उनका अस्तित्व समाप्त होने से सुरक्षित रहा होगा। इस प्रकार से वे ख़ुदा के उस प्रमाण और तर्क का खण्डन करना चाहते हैं जो उपरोक्त आयत में उसने स्थापित किया है अर्थात् ख़ुदा तो हज़रत ईसा[अ.] के मनुष्य होने का यह तर्क देता है कि अन्य मनुष्यों की भांति वह भी भोजन का मुहताज था और बिना भोजन के उसका शरीर स्थापित नहीं रह सकता था अपितु परिवर्तन के स्थानापन्न की आवश्यकता थी। किन्तु ये लोग जो हज़रत ईसा को पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर पहुंचाते हैं, वे यह आस्था रखते हैं कि उन का अस्तित्व बिना भोजन के स्थापित रह सकता है तो जैसे वे ख़ुदा की इच्छा के विरुद्ध हज़रत ईसा की ख़ुदाई का एक तर्क प्रस्तुत करते हैं क्योंकि जिस बात से ख़ुदा तआला इन्कार करता है कि वह बात मसीह में मौजूद नहीं कि जिस से उसे ख़ुदा ठहराया जाए। ये लोग कहते हैं कि इसमें वह बात मौजूद है। अतः यह ख़ुदा के पूर्ण प्रमाण का अपमान है जो वह हज़रत ईसा के मनुष्य होने के लिए प्रस्तुत करता है। यदि यह बात सच है कि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर होने के बावजूद भोजन खाने के मुहताज नहीं तथा उनका शरीर ख़ुदा के अस्तित्व के समान स्वयं स्थापित रह सकता है तो यह तो उन के ख़ुदा होने का एक प्रमाण है जो ईसाई हमेशा से प्रस्तुत किया करते हैं तथा इसके उत्तर में यह कहना पर्याप्त नहीं कि पृथ्वी पर तो वह भोजन किया करते थे यद्यपि कि वह आकाश पर नहीं करते क्योंकि विरोधी कह सकता है कि पृथ्वी पर वह केवल अपनी इच्छा से खाते थे, मनुष्यों के समान भोजन के मुहताज न थे और यदि मुहताज होते तो आकाश पर भी अवश्य मुहताज होते। मुझे बार-बार इस जाति पर खेद आता है कि ख़ुदा तो हज़रत मसीह का भोजन करना उनके मनुष्य होने पर प्रमाण लाए और ये लोग आस्था रखें कि यद्यपि हज़रत मसीह ने तीस वर्ष तक पृथ्वी पर खाना खाया परन्तु आकाश पर उन्नीस सौ वर्ष से बिना खाना खाने के जीवित हैं।

फिर एक और प्रमाण हज़रत ईसा की मृत्यु पर पवित्र क़ुर्आन की यह आयत है जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है - فِيْهَا تَحْيَوْنَ وَ فِيْهَا تَمُوْتُوْنَ وَ مِنْهَا

تُخۡرَجُوۡنَ [1](अलआराफ़ - 26) (अनुवाद) तुम (हे आदम के बेटो) पृथ्वी में जी जीवन-यापन करोगे और पृथ्वी में ही मरोगे और पृथ्वी में से ही निकाले जाओगे। अतः इतने स्पष्ट आदेश के बावजूद क्योंकर संभव है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम पृथ्वी पर रहने की बजाए लगभग दो हज़ार वर्ष या इस से भी अधिक किसी अज्ञात समय तक आकाश पर रहें। ऐसी स्थिति में तो पवित्र क़ुर्आन का असत्य होना अनिवार्य आता है।

फिर हज़रत ईसा की मृत्यु पर एक और तर्क पवित्र क़ुर्आन की यह आयत है

وَ لَكُمۡ فِي الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰى حِيۡنٍ (अलबक़रह - 37)

(अनुवाद) और तुम्हारे ठहरने का स्थान पृथ्वी ही होगी और मृत्यु के दिनों तक तुम पृथ्वी पर ही अपने आराम की वस्तुएं प्राप्त करोगे। यह आयत भी पहली वर्णित आयत समानार्थी है। अतः किस प्रकार संभव है कि हज़रत ईसा पृथ्वी पर जो मनुष्यों

---

[1] जैसा कि हम वर्णन कर चुके हैं हज़रत ईसा का स्वयं अपना एक इक़रार है जो उनकी मृत्यु पर साक्षी है, क्योंकि वह ख़ुदा तआला के इस प्रश्न के उत्तर में कि हे ईसा ! क्या तू ने ही लोगों को शिक्षा दी थी कि मुझे और मेरी मां को ख़ुदा मानो। यह उत्तर देते हैं जो पवित्र क़ुर्आन में दर्ज है अर्थात् यह आयत -

وَ كُنۡتُ عَلَيۡهِمۡ شَهِيۡدًا مَّا دُمۡتُ فِيۡهِمۡ ۚ فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِىۡ كُنۡتَ اَنۡتَ الرَّقِيۡبَ عَلَيۡهِمۡ

(अलमाइदह - 118)

अर्थात् मैं तो उसी समय तक उन पर साक्षी था जब तक मैं उनके बीच था और जब तूने मुझे मृत्यु दे दी तो फिर उनका संरक्षक तू ही था। इस उत्तर में हज़रत ईसा ईसाइयों की हिदायत को अपने जीवन से सम्बद्ध करते हैं। अतः हज़रत ईसा अब तक जीवित हैं तो इस से अनिवार्य होता है कि ईसाई सच पर हैं और इस आयत فَلَمَّا تَوَفَّيۡتَنِىۡ से यह भी सिद्ध होता है कि हज़रत ईसा प्रलय से पूर्व दोबारा संसार में नहीं आएंगे, अन्यथा नऊज़ुबिल्लाह यह अनिवार्य आता है कि वह ख़ुदा तआला के सामने झूठ बोलेंगे कि मुझे अपनी उम्मत के बिगड़ने की कुछ भी ख़बर नहीं। (इसी से)

के रहने का स्थान है केवल तेतीस वर्ष तक जीवन व्यतीत करें परन्तु आकाश पर जो मनुष्यों के रहने का स्थान नहीं दो हज़ार वर्ष तक या इस से भी अधिक किसी अज्ञात समय तक निवास करें। इस से तो सन्देह होगा कि वह मनुष्य नहीं हैं, विशेषत: इस स्थिति में कि ऐसी मनुष्य होने से श्रेष्ठतम विशेषताएं दिखाने में कोई दूसरा मनुष्य उन का भागीदार नहीं।

फिर एक और प्रमाण हज़रत ईसा की मृत्यु पर पवित्र क़ुर्आन की यह आयत है -

اَللّٰهُ الَّذِیۡ خَلَقَكُمۡ مِّنۡ ضُعۡفٍ ثُمَّ جَعَلَ مِنۡۢ بَعۡدِ ضُعۡفٍ قُوَّةً ثُمَّ جَعَلَ مِنۡۢ بَعۡدِ قُوَّةٍ ضُعۡفًا وَّ شَيۡبَةً (अर्रूम - 55)

(अनुवाद) अर्थात् ख़ुदा वह ख़ुदा है जिसने तुम्हें कमज़ोरी से पैदा किया फिर कमज़ोरी के बाद शक्ति दे दी, फिर शक्ति के बाद कमज़ोरी और वृद्धावस्था दी। अब स्पष्ट है कि यह आयत सम्पूर्ण मनुष्यों के लिए है यहां तक कि समस्त नबी इसमें सम्मिलित हैं और स्वयं हमारे नबी[स.अ.व.] जो नबियों के सरदार हैं वह भी इस से बाहर नहीं। आप पर भी वृद्धावस्था के लक्षण प्रकट हो गए थे और मुबारक दाढ़ी में कुछ बाल सफेद हो गए थे और आप स्वयं अपनी अन्तिम आयु में वृद्धावस्था की कमज़ोरी के लक्षण अपने अन्दर महसूस करते थे, परन्तु हमारे विरोधियों के कथनानुसार हज़रत ईसा इस से भी बाहर हैं। वे कहते हैं कि यह एक विशेषता उनकी है जो विलक्षण है और यही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़ुदाई पर एक प्रमाण है। अत: हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़ुदाई पर केवल एक प्रमाण नहीं अपितु पांच प्रमाण हैं जो ईसाइयों के विचार में हमारी क़ौम के विरोधियों की आस्थानुसार यहां मौजूद हैं जिसका खण्डन उस विशेषता के खण्डन के बिना संभव नहीं, क्योंकि जिस स्थिति में हज़रत ईसा ही अपने अस्तित्व में यह विशेषता रखते हैं कि वह पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए कोई दूसरा इन्सान उनका भागीदार नहीं। और फिर दूसरी यह विशेषता भी रखते हैं कि सैकड़ों वर्ष तक दाना-पानी के बिना आकाश पर जीवित रहने वाले वही ठहरे। जिसमें उन का कोई इन्सान भागीदार नहीं। और फिर तीसरी यह विशेषता रखते हैं आकाश पर इतनी अवधि तक

वृद्धावस्था और कमज़ोरी से सुरक्षित रहने वाले वही ठहरे जिसमें उनका कोई मनुष्य भागीदार नहीं। चौथी विशेषता यह रखते हैं कि लम्बी अवधि के पश्चात् आकाश से फ़रिश्तों के साथ उतरने वाले वही ठहरे जिसमें उनका एक मनुष्य भी भागीदार नहीं। अत: विचार करना चाहिए कि ये चार विशेषताएं जो केवल उनके अस्तित्व में स्वीकार की जाती हैं और उनमें वह भागीदार-रहित तथा एक समझे जाते हैं यह आस्था लोगों के लिए कितनी अधिक परीक्षा का कारण हो सकती है[1] तथा ख़ुदा बनाने वालों के लिए कितने अधिक कारण मिलते हैं जो स्वयं

---

①इसके अतिरिक्त हमारे विरोधी मुसलमान दुर्भाग्य और मूर्खता के कारण हज़रत ईसा के लिए एक पांचवीं विशेषता भी स्थापित करते हैं और वह यह है कि समस्त नबियों में से शैतान के स्पर्श से भी वही पवित्र हैं अन्य कोई नबी शैतान के स्पर्श से पवित्र नहीं। फिर छठी विशेषता यह कि रूहुल क़ुदुस हमेशा उनके साथ रहता था, परन्तु किसी अन्य नबी के साथ ऐसा स्थायी साथ रूहुल क़ुदुस ने नहीं दिया। किन्तु लोगों की यह सारी ग़लतियां है, वे नहीं समझते कि प्रत्येक नबी शैतान के स्पर्श से पवित्र होता है। किन्तु ख़ुदा ने जो यहां अपने रसूल के कथन द्वारा हज़रत ईसा का उसकी मां सहित शैतान के स्पर्श से पवित्र होना वर्णन किया है। इस में नीति यह है कि नऊज़ुबिल्लाह दुर्भाग्यशाली यहूदी हज़रत मरयम सिद्दीक़ा को एक व्यभिचारिणी स्त्री समझते थे और हज़रत ईसा को एक अवैध सन्तान समझते थे और ख़ुदा तआला चाहता था कि उन्हें इन आरोपों से बरी करे। अत: उसने उन्हें इस प्रकार बरी किया कि आंहज़रत[स.अ.व.] ने कह दिया कि वे दोनों शैतान के स्पर्श से पवित्र हैं। अर्थात् व्यभिचार एक शैतानी कर्म है तथा ईसा और मरयम इस शैतानी कर्म से सुरक्षित हैं। यह अभिप्राय नहीं कि केवल वे सुरक्षित हैं तथा अन्य नबी ग्रस्त हैं। इसी प्रकार यहूदियों का विचार था कि अवैध प्रजनन के कारण हज़रत ईसा का मित्र शैतान है, और तौरात की दृष्टि से यही उनकी आस्था थी। अत: इनके खण्डन में रूहुल क़ुदुस का साथ रहना वर्णन किया गया और यह भी सही नहीं कि ईसा में एक यह भी विशेषता है कि उनका जन्म रूहुल क़ुदुस की छाया से हुआ,

मुसलमानों के इक़रार से प्रमाणित हैं। अत: यदि ख़ुदा ने हज़रत ईसा को मृत्यु प्राप्त ठहरा कर उन समस्त विशेषताओं का खण्डन नहीं किया तो खण्डन का दूसरा उपाय यह था कि ख़ुदा तआला ऐसे कुछ उदाहरण प्रस्तुत करता जिससे ज्ञात होता कि इन विलक्षण चमत्कारों में कुछ अन्य मनुष्य भी उसके भागीदार हैं जैसा कि ख़ुदा तआला ने बिन बाप होने में हज़रत आदम का उदाहरण प्रस्तुत कर दिया था परन्तु जबकि ख़ुदा तआला ने न हज़रत ईसा को मृत्यु प्राप्त ठहराया और न उन समस्त विशेषताओं का खण्डन किया। तो ऐसी स्थिति में जैसे ख़ुदा तआला ईसाइयों के तर्क के सामने निरुत्तर हो गया और यदि कहो कि हम यह भी तो कहते हैं कि हज़रत ईसा अन्तिम युग में आकर एक अवधि के पश्चात् मृत्यु पा जाएंगे, तो इस बात को ईसाई स्वीकार नहीं करते। वे तुम्हारे इक़रारों से तुम्हें दोषी करते हैं तथा उन पर अनिवार्य नहीं है कि तुम्हारे तर्क रहित दावे को स्वीकार कर लें, क्योंकि जब हज़रत ईसा प्रलय के दिन तक जीवित हैं और ख़ुदाई के समस्त लक्षण मुर्दों को जीवित करना इत्यादि उनमें मौजूद हों तो संभव है कि मृत्यु से बच रहें तथा ईसाइयों की तो यही आस्था है कि वह आकाश से उतर कर नहीं मरेंगे अपितु ख़ुदा होने की हैसियत से लोगों को प्रतिफल और दण्ड देंगे और जिस स्थिति में तुम्हारे अपने इक़रार से ये चार विशेषताएं हज़रत ईसा में सिद्ध हैं तो ईसाई तो उस स्थिति में आप लोगों पर सवार हो जाएंगे, क्योंकि उनके विचार में ये चार विशेषताएं हज़रत ईसा को ख़ुदा बनाने के लिए पर्याप्त हैं। ख़ुदा तआला के हित से दूर है कि वह ऐसे व्यक्ति को ये चार

शेष हाशिया :- क्योंकि पवित्र क़ुर्आन और तौरात की दृष्टि से यह बात निश्चित हो चुकी है कि कुछ मनुष्य शैतान की छाया से पैदा होते हैं और कुछ मनुष्य रूहुल क़ुदुस की छाया से पैदा होते हैं तथा उनमें पवित्र आदतें होती हैं और वे लोग जो अवैध सन्तान हों वे शैतान की छाया से ही मां के गर्भाशय में अस्तित्व धारण करते हैं। अत: इस बात का खण्डन आवश्यक था कि हज़रत ईसा की पैदायश अवैध नहीं। इसलिए उसके लिए रूहुल क़ुदुस की छाया का इंजील में भी वर्णन किया गया ताकि ज्ञात हो कि वह शैतान की छाया से पैदा नहीं हुए और उनकी पैदायश अवैध नहीं। (इसी से)

विशेषताएं प्रदान करे जिसे चालीस करोड़ लोग ख़ुदा बना रहे हैं। आंहज़रत[स.अ.व.] के युग में ईसाइयों ने हज़रत ईसा की विशेषता के बारे में केवल एक बात प्रस्तुत की थी कि वह बिना बाप पैदा हुआ है तो ख़ुदा तआला ने तुरन्त उस का उत्तर दिया और कहा -

اِنَّ مَثَلَ عِيْسٰى عِنْدَ اللّٰهِ كَمَثَلِ اٰدَمَ ؕ خَلَقَهٗ مِنْ تُرَابٍ ثُمَّ قَالَ لَهٗ كُنْ فَيَكُوْنُ①

अर्थात् ख़ुदा तआला के निकट ईसा का उदाहरण आदम के उदाहरण के समान है। ख़ुदा ने उसे मिट्टी से बनाया फिर कहा कि हो जा। अतः वह ज़िन्दा जीता जागता हो गया अर्थात् ईसा[अ.] का बिना बाप होना उसके लिए कोई विशेष बात नहीं कि जिस से उस का ख़ुदा होना अनिवार्य हो जाए। आदम के मां और बाप दोनों नहीं। अतः जिस स्थिति में ख़ुदा तआला के स्वाभिमान ने यह चाहा कि हज़रत ईसा में बिना बाप होने की विशेषता न रहे ताकि उनकी ख़ुदाई के लिए कोई तर्क न ठहराया जाए। तो फिर क्योंकर संभव है कि ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा में चार विलक्षण विशेषताएं स्वीकार कर ली हों। हां यदि ख़ुदा ने उन विशेषताओं के खण्डन के लिए कुछ उदाहरण प्रस्तुत किए हैं तो वे उदाहरण प्रस्तुत करने चाहिएं अन्यथा मानना पड़ेगा कि ख़ुदा तआला ईसाइयों के दावे का उत्तर नहीं दे सका, क्योंकि ये भी ऐसी विशेषताएं हैं जो ईसाई प्रस्तुत किया करते हैं तथा उन विशेषताओं को हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की ख़ुदाई का प्रमाण ठहराते हैं। अतः जबकि ख़ुदा तआला ने इन चार विशेषताओं को आदम की पैदायश की भांति कोई उदाहरण प्रस्तुत करके खण्डन नहीं किया तो इस से तो यह सिद्ध होता है कि ख़ुदा तआला ने ईसाइयों के दावे को मान लिया है और यदि खण्डन किया है और इन चार विशेषताओं का कोई उदाहरण प्रस्तुत किया है तो पवित्र क़ुर्आन में से वे आयतें प्रस्तुत करो।

उन आयतों में से जो हज़रत ईसा[अ.] की मृत्यु को स्पष्ट तौर पर सिद्ध करती हैं पवित्र क़ुर्आन की एक यह आयत है -

---

① आले इमरान - 60

وَ الَّذِيۡنَ يَدۡعُوۡنَ مِنۡ دُوۡنِ اللّٰهِ لَا يَخۡلُقُوۡنَ شَيۡـًٔا وَّ هُمۡ يُخۡلَقُوۡنَ ؕ اَمۡوَاتٌ غَيۡرُ اَحۡيَآءٍ ۚ وَ مَا يَشۡعُرُوۡنَ ۙ اَيَّانَ يُبۡعَثُوۡنَ (अन्नहल - 21, 22)

अर्थात् अल्लाह के अतिरिक्त जिन लोगों की उपासना की जाती है वे कोई वस्तु पैदा नहीं कर सकते अपितु वे स्वयं पैदा किए गए हैं और वे सब लोग मर चुके हैं जीवित नहीं हैं और नहीं जानते कि कब उठाए जाएंगे।

अत: इस स्थान पर ध्यानपूर्वक देखना चाहिए कि ये आयतें कितनी स्पष्टता से हज़रत मसीह और उन समस्त लोगों की मृत्यु को प्रकट कर रही हैं जिन को यहूदियों तथा ईसाइयों और अरब के कुछ फ़िर्क़े अपने उपास्य ठहराते थे और उन से दुआएं मांगते थे। स्मरण रखो यह ख़ुदा का बयान है और ख़ुदा तआला इस बात से पवित्र और श्रेष्ठतम है कि वास्तविकता के विपरीत बातें कहे। अत: जिस स्थिति में वह साफ और स्पष्ट शब्दों में कहता है कि जितने मनुष्य विभिन्न फ़िर्क़ों में पूजे जाते हैं तथा ख़ुदा बनाए गए हैं वे सब मर चुके हैं, उनमें से एक भी जीवित नहीं। तो फिर कितनी उद्दण्डता और अवज्ञा तथा ख़ुदा के आदेश का विरोध है कि हज़रत ईसा[अ.] को जीवित समझा जाए। क्या हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम उन लोगों में से नहीं हैं जिन को ख़ुदा बनाया गया है या जिन को अपनी कठिनाई के निवारण के लिए पुकारा जाता है अपितु वह उन सब लोगों से प्रथम नम्बर पर हैं, क्योंकि जिस आग्रह और अतिशयोक्ति के साथ हज़रत ईसा के ख़ुदा बनाने के लिए चालीस करोड़ लोग प्रयासरत हैं इसका उदाहरण किसी अन्य फ़िर्क़े में कदापि नहीं पाया जाता।

ये समस्त आयतें जो हमने यहां लिखी हैं हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम की मृत्यु सिद्ध करने के लिए पर्याप्त हैं और फिर जब हम आंहज़रत[स.अ.व.] की पवित्र हदीसों की ओर देखते हैं तो उन से भी यही सिद्ध होता है। केवल अन्तर यह है कि अल्लाह तआला अपने कथनों से हज़रत ईसा[अ.] की मृत्यु पर गवाही देता है और आंहज़रत[स.अ.व.] अपने देखने से हज़रत मसीह की मृत्यु पर गवाही देते हैं। अत: ख़ुदा तआला ने अपने कथन से और

आंहज़रत[स.अ.व.] ने अपने कर्म से अर्थात् देखने से इस बात पर मुहर लगा दी कि हज़रत ईसा मृत्यु पा चुके हैं क्योंकि आंहज़रत[स.अ.व.] अपने देखने से यह गवाही देते हैं कि आपने मे'राज की रात में हज़रत ईसा को आकाश पर उन पूर्व नबियों में देखा है जो इस संसार से गुज़र चुके हैं और दूसरे संसार में पहुंच गए हैं और केवल इतना ही नहीं अपितु जिस प्रकार के दूसरे नबियों के शरीर देखे उसी प्रकार का शरीर हज़रत ईसा का देखा और हम पहले उल्लेख कर चुके हैं कि ऐसा समझना ग़लती है कि पूर्व अंबिया अलैहिमुस्सलाम जो इस संसार से गुज़र चुके हैं उनकी केवल रूहें आकाश पर हैं अपितु उनके साथ प्रकाशमय और प्रतापी शरीर हैं जिन शरीरों के साथ वे मृत्योपरान्त संसार से उठाए गए जैसा कि आयत وَ ادۡخُلِیۡ جَنَّتِیۡ[1] इस बात पर स्पष्ट आदेश है क्योंकि स्वर्ग में प्रवेश करने के लिए शरीर की आवश्यकता है तथा पवित्र क़ुर्आन अनेकों स्थान पर स्पष्टतापूर्वक कहता है कि जो लोग स्वर्ग में प्रवेश करेंगे उनके साथ शरीर भी होंगे कोई अकेली रूह स्वर्ग में प्रवेश नहीं करेगी। अत: आयत وَ ادۡخُلِیۡ جَنَّتِیۡ इस बात पर स्पष्ट आदेश है कि प्रत्येक सत्यनिष्ठ जो मरने के पश्चात् स्वर्ग में प्रवेश करता है उसको मरने के पश्चात् एक शरीर अवश्य मिलता है। फिर दूसरी गवाही शरीर मिलने पर आंहज़रत[स.अ.व.] का देखना है, क्योंकि आप ने मे'राज की रात में आकाश पर केवल नबियों की रूहें नहीं देखीं अपितु उनके शरीर भी देखे और हज़रत मसीह का कोई अनोखा शरीर नहीं देखा अपितु जैसे समस्त नबियों के शरीर देखे, वैसा ही हज़रत मसीह का भी शरीर देखा। अत: यदि मनुष्य अकारण असत्य की उपासना करने पर हठ न करे तो उसके लिए इस बात का समझना बहुत ही सरल है कि हज़रत ईसा जिस शरीर के साथ उठाए गए वह पार्थिव शरीर न था अपितु वह शरीर था जो मरने के बाद प्रत्येक मोमिन को मिलता है क्योंकि पार्थिव शरीर के लिए स्वयं अल्लाह तआला मना करता है कि वह आकाश पर जाए। जैसा कि उसका कथन है -

---

① अलफ़ज्र - 31

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ کِفَاتًا ۙ﴿۲۶﴾ اَحۡیَآءً وَّ اَمۡوَاتًا ۙ﴿۲۷﴾ ①

अनुवाद - अर्थात् क्या हमने पृथ्वी को इस प्रकार से नहीं बनाया कि वह मनुष्यों के शरीरों को जीवित और मृत होने की स्थिति में अपनी ओर आकर्षित कर रही है किसी शरीर को नहीं छोड़ती कि वह आकाश पर जाए।

फिर अन्य स्थान पर कहता है -

قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ هَلۡ کُنۡتُ اِلَّا بَشَرًا رَّسُوۡلًا ②

अर्थात् जब काफ़िरों ने आंहज़रत[स.अ.व.] से आकाश पर चढ़ने की मांग की कि यह चमत्कार दिखा दें कि पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चढ़ जाएं तो उन को यह उत्तर मिला कि قُلۡ سُبۡحَانَ رَبِّیۡ۔۔۔الخ अर्थात् उन को कह दे कि मेरा ख़ुदा उस बात से पवित्र है कि अपने वचन और वादे के विपरीत करे। वह पहले कह चुका है कि कोई पार्थिव शरीर आकाश पर नहीं जाएगा। जैसा कि उसका कथन है -

اَلَمۡ نَجۡعَلِ الۡاَرۡضَ کِفَاتًا ۙ﴿۲۶﴾ اَحۡیَآءً وَّ اَمۡوَاتًا ۙ﴿۲۷﴾ ③

और जैसा कि कहा -

فِیۡهَا تَحۡیَوۡنَ وَ فِیۡهَا تَمُوۡتُوۡنَ ④

और जैसा कि कहा -

وَ لَکُمۡ فِی الۡاَرۡضِ مُسۡتَقَرٌّ وَّ مَتَاعٌ اِلٰی حِیۡنٍ ⑤

अत: यह अरब के काफ़िरों की उद्दण्डता थी कि वे लोग ख़ुदा के वादे और प्रतिज्ञा के विरुद्ध ऐसा चमत्कार मांगते थे तथा भलीभांति जानते थे कि ऐसा चमत्कार नहीं

---

① अलमुरसलात - 26-27

② बनी इस्राईल - 94

③ अलमुरसलात - 26-27

④ अलआराफ़ - 26

⑤ अलआराफ़ - 25

दिखाया जाएगा, क्योंकि यह ख़ुदा तआला के उस कथन के विरुद्ध है जो गुज़र चुका है और ख़ुदा तआला इस से पवित्र है अपनी प्रतिज्ञा को भंग करे और पुन: कहा कि इनको कह दे कि मैं तो एक मानव हूं और ख़ुदा तआला कह चुका है कि मानव के लिए निषेध है कि उसका पार्थिव शरीर आकाश पर जाए हां पवित्र लोग दूसरे शरीर के साथ आकाश पर जा सकते हैं जैसा कि समस्त नबियों, रसूलों तथा मोमिनों की रूहें मृत्यु के पश्चात् आकाश पर जाती हैं तथा उन्हीं के बारे में अल्लाह तआला का कथन है -

مُفَتَّحَةً لَّهُمُ الْاَبْوَابُ①

अर्थात् मोमिनों के लिए आकाश के द्वार खोले जाएंगे। स्मरण रहे कि यदि केवल रूहें होतीं तो उनके लिए لهم का सर्वनाम न आता। अत: यह दृढ़ अनुकूलता इस बात पर है कि मृत्यु के पश्चात् मोमिनों का जो रफ़ा होता है वह शरीर के साथ होता है किन्तु वह शरीर पार्थिव नहीं है अपितु मोमिन की रूह को एक और शरीर मिलता है जो पवित्र और प्रकाशमय होता है तथा उस दु:ख और दोष से सुरक्षित होता है जो पार्थिव शरीर की अनिवार्यताओं में से है अर्थात् वह पृथ्वी के आहारों का मुहताज नहीं होता और न पृथ्वी के पानी का मुहताज होता है और समस्त लोग जिनको ख़ुदा तआला के पड़ोस में स्थान दिया जाता है ऐसा ही शरीर पाते हैं तथा हम ईमान रखते हैं कि हज़रत ईसा ने भी मृत्यु के पश्चात् ऐसा ही शरीर पाया था और उसी शरीर के साथ वह ख़ुदा तआला की ओर उठाए गए थे।

कुछ मूर्ख इस स्थान पर यह ऐतिराज़ करते हैं कि जिस स्थिति में पवित्र क़ुर्आन की यह आयत कि كُنْتُ عَلَيْهِمْ شَهِيْدًا مَّا دُمْتُ فِيْهِمْ और आयत فَلَمَّا تَوَفَّيْتَنِيْ كُنْتَ اَنْتَ الرَّقِيْبَ عَلَيْهِمْ स्पष्ट तौर पर बता रही है कि हज़रत ईसा[अ.] ख़ुदा तआला के समक्ष यह बहाना प्रस्तुत करेंगे कि मेरी मृत्यु के पश्चात् लोग बिगड़े हैं न कि मेरे जीवन में। तो इस पर यह आरोप आता है कि यदि यह आस्था सही है कि हज़रत ईसा

① साद - 51

सलीब से बच कर कश्मीर की ओर चले गए थे और कश्मीर में 87 वर्ष की आयु व्यतीत की तो फिर यह कहना कि मेरी मृत्यु के पश्चात् लोग बिगड़ गए सही नहीं होगा अपितु यह कहना चाहिए था कि मेरी कश्मीर यात्रा के पश्चात् बिगड़े हैं। क्योंकि मृत्यु तो सलीब की घटना से 87 वर्ष पश्चात् हुई।

अत: स्मरण रहे कि ऐसा भ्रम केवल विचार की कमी के कारण पैदा होता है अन्यथा कश्मीर की यात्रा इस वाक्य के विपरीत नहीं, क्योंकि **مادمت فیھم** के ये अर्थ हैं कि जब तक मैं अपनी उम्मत में था जो मुझ पर ईमान लाए थे। ये अर्थ नहीं कि जब तक मैं उनकी भूमि में था, क्योंकि हम स्वीकार करते हैं कि हज़रत ईसा सीरिया में से हिजरत करके कश्मीर की ओर चले गए थे परन्तु हम यह स्वीकार नहीं करते कि हज़रत ईसा के साथ तथा कुछ बाद में आप से आ मिले थे। जैसा कि धूमा हवारी हज़रत ईसा के साथ आया था, शेष हवारी बाद में आ गए थे तथा हज़रत ईसा[अ.] ने अपने साथ के लिए एक ही व्यक्ति को चुना था अर्थात् 'धूमा' को, जैसा कि हमारे नबी[स.अ.व.] ने मदीना की ओर हिजरत करने के साथ केवल हज़रत अबू बक्र[रज़ि.] को चुना था। क्योंकि रूमी सरकार हज़रत ईसा[अ.] को देशद्रोही ठहरा चुकी थी और इसी अपराध से पैलातूस भी क़ैसर के आदेश से क़त्ल किया गया था क्योंकि वह गुप्त तौर पर हज़रत ईसा का समर्थक था तथा उसकी पत्नी भी हज़रत ईसा की शिष्या थी। अत: अवश्य था कि हज़रत ईसा उस देश से गुप्त तौर पर निकलते, कोई क़ाफ़िला साथ न लेते। इसलिए उन्होंने इस यात्रा में केवल धूमा हवारी को साथ लिया, जैसा कि हमारे नबी[स.अ.व.] ने मदीना की यात्रा में केवल अबू बक्र[रज़ि.] को साथ लिया था तथा जैसा कि हमारे नबी[स.अ.व.] के शेष सहाबा भिन्न-भिन्न मार्गों से मदीना में आंहज़रत[स.अ.व.] के पास जा पहुंचे थे। ऐसा ही हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम के हवारी भिन्न-भिन्न मार्गों से भिन्न-भिन्न समयों में हज़रत ईसा के पास जा पहुंचे थे और जब तक हज़रत ईसा उन में रहे जैसा कि आयत **مادمت فیھم** का आशय है वे सब लोग एकेश्वरवाद पर स्थापित रहे, हज़रत ईसा[अ.]

की मृत्यु के पश्चात् उन लोगों की सन्तान बिगड़ गई। यह ज्ञात नहीं कि किस पीढ़ी में यह खराबी पैदा हुई। इतिहासकार लिखते हैं कि तीसरी शताब्दी तक ईसाई धर्म अपनी वास्तविकता पर था। बहरहाल ज्ञात होता है कि हज़रत ईसा की मृत्यु के पश्चात् वे समस्त लोग पुन: अपने देश की ओर चले आए, क्योंकि ऐसा संयोग हो गया कि रूम का क़ैसर ईसाई हो गया फिर परदेश में रहना व्यर्थ था।

और यहां यह भी स्मरण रहे कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम का कश्मीर की ओर यात्रा करना ऐसी बात नहीं है जो प्रमाणरहित हो अपितु बड़े-बड़े प्रमाणों से यह बात सिद्ध की गई है यहां तक कि स्वयं शब्द कश्मीर भी इस पर प्रमाण है। क्योंकि शब्द कश्मीर वह शब्द है जिसे कश्मीरी भाषा में 'कशीर' कहते हैं प्रत्येक कश्मीरी इसको कशीर बोलता है। अत: ज्ञात होता है कि वास्तव में यह शब्द इबरानी है कि जो काफ़ और अशीर इबरानी भाषा में सीरिया के देश को कहते हैं और 'काफ़' समानता के लिए आता है। अत: इस शब्द का रूप कअशीर था अर्थात् काफ़ (ك) अलग और अशीर के शब्द से मिल कर बना है और अशीर अलग जिस के अर्थ थे सीरिया देश के समान अर्थात् सीरिया के देश की भांति। और चूंकि यह देश हज़रत ईसा[अ.] का प्रवास स्थान था और वह ठंडे देश के रहने वाले थे, इसलिए ख़ुदा तआला ने हज़रत ईसा को सांत्वना देने के लिए इस देश का नाम कअशीर रख दिया जिसके अर्थ हैं अशीर के देश की भांति। फिर प्रचुरता से प्रयुक्त होने के कारण अलिफ (अ) गिर गया और 'कशीर' रह गया। तत्पश्चात् ग़ैर क़ौमों ने जो कशीर के रहने वाले न थे और न इस देश की भाषा जानते थे उसमें एक मीम (म) बढ़ाकर कश्मीर बना दिया। परन्तु यह ख़ुदा तआला की कृपा और उसकी दया है कि कश्मीरी भाषा में अब तक कशीर ही बोला और लिखा जाता है।

इसके अतिरिक्त कश्मीर देश में अन्य बहुत सी वस्तुओं के अब तक इबरानी नाम पाए जाते हैं अपितु कुछ पर्वतों पर नबियों के नाम का प्रयोग पाया गया है जिन से समझा जाता है कि इबरानी जाति किसी समय में इस स्थान पर अवश्य आबाद रह चुकी है।

जैसा कि सुलेमान नबी के नाम से कश्मीर में एक पर्वत मौजूद है और हम इस दावे को सिद्ध करने के लिए अपनी कुछ पुस्तकों में एक लम्बी सूची प्रकाशित कर चुके हैं जो इबरानी शब्दों तथा इस्राईली नबियों के नाम पर आधारित है जो कश्मीर में अब तक पाए जाते हैं तथा कश्मीर की ऐतिहासिक पुस्तकें जो हम ने बड़े परिश्रम से एकत्र की हैं जो हमारे पास मौजूद हैं उनसे भी विस्तारपूर्वक यह विदित होता है कि एक युग में जो इस समय की गणनानुसार दो हज़ार वर्ष के लगभग गुज़र गया है एक इस्राईली नबी कश्मीर में आया था जो बनी इस्राईल में से था और शाहज़ादा नबी कहलाता था। उसी की क़ब्र मुहल्ला ख़ानयार में है जो यूज़ आसिफ़ की कब्र के नाम से प्रसिद्ध है। अतः स्पष्ट है कि ये पुस्तकें तो मेरे जन्म से बहुत पहले कश्मीर में प्रकाशित हो चुकी हैं। अतः कोई कैसे विचार कर सकता है कि कश्मीरियों ने झूठ घड़कर ये पुस्तकें लिखी थीं। उन लोगों को इस झूठ घड़ने की क्या आवश्यकता थी तथा किस उद्देश्य से उन्होंने एक झूठ बनाया ? और विचित्रतम यह कि वे लोग अब तक अपने सरल स्वभाव से अन्य मुसलमानों की भांति यही आस्था रखते हैं कि हज़रत ईसा पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर चले गए थे और फिर इस आस्था के बावजूद पूर्ण विश्वास के साथ इस बात को जानते हैं कि एक इस्राईली नबी कश्मीर में आया था जो स्वयं को शहज़ादा नबी के नाम से प्रसिद्ध करता था तथा उनकी पुस्तकें बताती हैं कि गणना के अनुसार उस युग को अब उन्नीस सौ वर्ष से कुछ अधिक वर्ष गुज़र गए हैं। यहां कश्मीरियों के सरल स्वभाव से हमें यह लाभ हुआ कि यदि वे इस बात का ज्ञान रखते कि शहज़ादा नबी बनी इस्राईल में कौन था और वह नबी कौन है जिसको अब उन्नीस सौ वर्ष गुज़र गए तो वे कभी हमें ये पुस्तकें न दिखाते। इसलिए मैं कहता हूं कि हमने उनके सरल स्वभाव से बड़ा लाभ उठाया।

इसके अतिरिक्त वे लोग शहज़ादा नबी का नाम यूज़ आसिफ़ बताते हैं। इस शब्द से स्पष्ट होता है कि यसूअ आसिफ़ का बिगड़ा हुआ है। आसिफ़ इबरानी भाषा में उस

व्यक्ति को कहते हैं कि जो क़ौम की खोज करने वाला हो। चूंकि हज़रत ईसा अपनी इस क़ौम की खोज करते-करते कि यहूदियों के कुछ फ़िर्क़े खोए हुए थे कश्मीर में पहुंचे थे। इसलिए उन्होंने अपना नाम यसू आसिफ़ रखा था और यूज़ आसिफ़ की पुस्तक में स्पष्ट लिखा है कि यूज़ आसिफ़ पर ख़ुदा तआला की ओर से इंजील उतरी थी। अत: इतने स्पष्ट तर्कों (प्रमाणों) के बावजूद इस बात से क्योंकर इन्कार किया जाए कि यूज़ आसिफ़ वास्तव में हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम है अन्यथा यह प्रमाण का दायित्व हमारे विरोधियों की गर्दन पर है कि वह कौन व्यक्ति है जो स्वयं को शहज़ादा नबी प्रकट करता था जिसका युग हज़रत ईसा के युग से बिल्कुल अनुकूल है और यह भी ज्ञात हुआ है कि जब हज़रत ईसा कश्मीर में आए तो उस युग के बौद्ध धर्म वालों ने अपनी पुस्तकों में इनकी कुछ चर्चा की है।

एक और शक्तिशाली प्रमाण इस बात पर यह है कि अल्लाह तआला कहता है कि

اٰوَيۡنٰهُمَاۤ اِلٰى رَبۡوَةٍ ذَاتِ قَرَارٍ وَّ مَعِيۡنٍ(अलमोमिनून - 51)

अर्थात् हम ने ईसा और उसकी मां को एक ऐसे टीले पर शरण दी जो आराम का स्थान था और प्रत्येक शत्रु की पहुंच से दूर था और उसका पानी बहुत निर्मल था।

स्मरण रहे कि आवा (اٰوٰى) का शब्द अरबी भाषा में उस स्थान पर बोला जाता है जब एक संकट के बाद किसी व्यक्ति को शरण देते हैं। ऐसे स्थान में जो सुरक्षा का घर होता है अत: वह सुरक्षा-गृह सीरिया देश नहीं हो सकता, क्योंकि सीरिया देश क़ैसरे रूम के आधिपत्य में था और हज़रत ईसा क़ैसर के विद्रोही ठहराए जा चुके थे। अत: वह कश्मीर ही था जो सीरिया देश के समान था और आराम का स्थान था अर्थात् अमन का स्थान था अर्थात् क़ैसर-ए-रूम का उस से कुछ सम्बन्ध न था।

इस स्थान पर कुछ लोग एक और आरोप प्रस्तुत किया करते हैं और वह यह है कि जिस स्थिति में यह वर्णन किया जाता है यह मुहम्मदी सिलसिला मूस्वी सिलसिले के मुकाबले पर स्थापित किया गया है और प्रत्येक अच्छाई बुराई में यह सिलसिला मूस्वी

सिलसिले का उदाहरण अपने अन्दर रखता है तो इस स्थिति में अनिवार्य था कि जैसा कि पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम मूसा का मसील रखा गया है, भविष्यवाणियों में अन्तिम ख़लीफ़ा का नाम ईसा का मसील (समरूप) रखा जाता। हालांकि इंजील और नबी करीम[स.अ.व.] की हदीसों में ख़िलाफ़त के सिलसिले के अन्तिम युग में आने वाले का नाम ईसा इब्ने मरयम रखा गया है ईसा का मसील नहीं रखा।

इस भ्रम का उत्तर यह है कि अवश्य था कि ख़ुदा तआला इस्लाम के प्रारंभ और अन्त के ख़लीफ़ा के बारे में इसी शैली से वर्णन करता जिस शैली से अल्लाह तआला की पहली पुस्तकों में वर्णन किया गया था। अत: यह बात किसी पर गुप्त नहीं कि तौरात में आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम के बारे में जो भविष्यवाणी है वह इन्हीं शब्दों में है कि "ख़ुदा तआला तुम्हारे भाइयों में से मूसा के समान एक नबी स्थापित करेगा" उस स्थान में यह नहीं लिखा कि ख़ुदा मूसा को भेजेगा। अत: अवश्य था कि ख़ुदा तआला पवित्र क़ुर्आन में आंहज़रत[स.अ.व.] के आगमन के बारे में तौरात के अनुसार वर्णन करता ताकि तौरात और पवित्र क़ुर्आन में मतभेद पैदा न होता। अत: इसी कारण से अल्लाह तआला ने आंहज़रत[स.अ.व.] के बारे में कहा -

اِنَّاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلَیۡکُمۡ رَسُوۡلًا ۬ۙ شَاہِدًا عَلَیۡکُمۡ کَمَاۤ اَرۡسَلۡنَاۤ اِلٰی فِرۡعَوۡنَ رَسُوۡلًا[1]

अर्थात् हम ने उसी नबी के समान तुम्हारी ओर यह रसूल भेजा है कि जो फ़िरऔन की ओर भेजा गया था।

परन्तु अन्तिम ख़लीफ़ा के बारे में जिसका नाम ईसा रखा गया है इंजील में यह ख़बर नहीं दी गई कि अन्तिम युग में ईसा का मसील आएगा अपितु यह लिखा है कि ईसा आएगा। अत: अवश्य था कि इंजील की भविष्यवाणी के अनुसार इस्लाम के अन्तिम ख़लीफ़ा का नाम ईसा रखा जाता। ताकि इंजील और आंहज़रत[स.अ.व.] की हदीसों में मतभेद पैदा न होता।

---

① अलमुज़्ज़म्मिल - 16

हां यहां एक सत्याभिलाषी का अधिकार अवश्य है कि वह यह प्रश्न प्रस्तुत करे कि इसमें क्या नीति और हित था कि तौरात में आंहज़रत[स.अ.व.] को केवल मसील-ए-मूसा करके वर्णन किया गया किन्तु इन्जील में स्वयं ईसा करके ही वर्णन कर दिया गया तथा क्यों वैध नहीं कि ईसा से अभिप्राय वास्तव में ईसा ही हो और वही दोबारा आने वाला हो।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम तो किसी प्रकार दोबारा आ नहीं सकते क्योंकि वह मृत्यु पा गए और उनका मृत्यु पा जाना अल्लाह तआला ने पवित्र क़ुर्आन में स्पष्ट शब्दों में वर्णन कर दिया है, फिर आंहज़रत[स.अ.व.] ने हज़रत ईसा[अ.] को उस जमाअत में आकाश पर बैठे हुए देख लिया जो इस संसार से गुज़र चुके हैं। फिर तीसरी साक्ष्य (गवाही) यह कि समस्त सहाबा[रज़ि.] की सर्वसम्मति से सब नबियों का मृत्यु पा जाना सिद्ध हो गया। तत्पश्चात् सद्बुद्धि की गवाही है जो उपरोक्त तीनों गवाहियों की समर्थक है क्योंकि जब से संसार की उत्पत्ति हुई है बुद्धि से इन घटना का कोई उदाहरण नहीं देखा तथा कोई नबी आज तक न कभी पार्थिव शरीर के साथ आकाश पर गया और न वापस आया। अत: चार गवाहियां परस्पर मिल कर ठोस निर्णय देती हैं कि हज़रत ईसा अलैहिस्सलाम मृत्यु पा चुके हैं तथा उनका पार्थिव शरीर के साथ जीवित आकाश पर जाना और अब तक जीवित होना और फिर किसी समय पार्थिव शरीर के साथ पृथ्वी पर आना ये सब उन पर आरोप हैं। खेद कि इस्लाम मूर्ति-पूजा से बहुत दूर था किन्तु अन्तत: इस्लाम में भी मूर्ति-पूजा के रूप में इस आस्था ने जन्म लिया कि हज़रत ईसा को ऐसी विशेषताएं दी गईं जो दूसरे नबियों में नहीं पाई जातीं। ख़ुदा तआला मुसलमानों को इस प्रकार की मूर्ति-पूजा से मुक्ति प्रदान करे। ईसा की मृत्यु में इस्लाम का जीवन है और ईसा के जीवित रहने में इस्लाम की मृत्यु है। ख़ुदा वह दिन लाए कि लापरवाह मुसलमानों की दृष्टि इस सद्मार्ग पर पड़े। आमीन।

अत: कथन का सारांश यह है कि जब ईसा[अ.] की मृत्यु ठोस तौर पर सिद्ध हो चुकी

है तो फिर यह विचार असंदिग्ध तौर पर मिथ्या है कि हज़रत ईसा[अ.] दोबारा संसार में आएंगे। रहा कथित प्रश्न यह कि इस भाग का उत्तर कि एक उम्मती का ईसा नाम रखने में क्या हित था तथा क्यों इंजील और हदीसों में उसका नाम ईसा रखा गया तथा क्यों मसीले मूसा की भांति यहां भी मसीले ईसा के शब्द से याद न किया गया।

इस प्रश्न का उत्तर यह है कि ख़ुदा तआला चाहता था कि एक महान घटना में जो इस्राईली ईसा पर घटित हो चुकी थी इस उम्मत के अन्तिम ख़लीफ़ा को सम्मिलित करे तथा वह इस घटना में इस स्थिति में सम्मिलित हो सकता था कि जब उसका नाम ईसा रखा जाए और चूंकि ख़ुदा तआला चाहता था कि दोनों सिलसिलों की समानता प्रदर्शित करे। इसलिए उस ने आंहज़रत सल्लल्लाहो अलैहि वसल्लम का नाम मसीले मूसा रखा क्योंकि मूसा को जो फ़िरऔन के साथ एक घटना की समानता इसी स्थिति में प्रकट हो सकती थी जब आप[स.] को मसीले मूसा करके पुकारा जाता, किन्तु जो घटना हज़रत ईसा के साथ घटित हुई थी वह इस उम्मत के अन्तिम ख़लीफ़ा में उसी स्थिति में सिद्ध हो सकती थी कि जब उस का नाम ईसा रखा जाता क्योंकि उस ईसा[अ.] को यहूदियों ने केवल इस कारण स्वीकार नहीं किया था कि मलाकी नबी की किताब में यह लिखा गया था कि जब तक इल्यास नबी दोबारा संसार में नहीं आएगा तब तक वह ईसा प्रकट नहीं होगा, परन्तु इल्यास नबी दोबारा संसार में नहीं आया और यूहन्ना अर्थात् हज़रत यह्या को ही इल्यास ठहरा दिया गया। इसलिए यहूदियों ने हज़रत ईसा को स्वीकार न किया । अतः ख़ुदा तआला के प्रारब्ध में समानता पूरी करने के लिए यह निर्णय किया गया था कि अन्तिम युग में इसी उम्मत के कुछ लोग उन यहूदियों के समान हो जाएंगे जिन्होंने आने वाले इल्यास की वास्तविकता को न समझ कर हज़रत ईसा की नुबुव्वत और सच्चाई से इन्कार किया था। अत: ऐसे यहूदियों के लिए किसी ऐसी भविष्यवाणी की आवश्यकता थी जिसमें किसी पूर्व नबी के आगमन का वर्णन होता। जैसा कि इल्यास के बारे में भविष्यवाणी थी और ख़ुदा के प्रारब्ध में निर्णय हो चुका था कि ऐसे यहूदी इस उम्मत में भी पैदा होंगे। अत:

इसीलिए मेरा नाम ईसा रखा गया, जैसा कि हज़रत यह्या का नाम इल्यास रखा गया था। अत: आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ[1] में इसी की ओर संकेत है। इसलिए ईसा के आगमन की भविष्यवाणी इस उम्मत के लिए ऐसी ही थी जैसा कि यहूदियों के लिए हज़रत यह्या के आगमन की भविष्यवाणी। अत: यह नमूना स्थापित करने के लिए मेरा नाम ईसा रखा गया और न केवल इतना अपितु ईसा को झुठलाने वाले जो इस उम्मत में होने वाले थे उन का नाम यहूदी रखा गया। अत: आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ में इन्हीं यहूदियों की ओर संकेत है अर्थात् इस उम्मत के वे यहूदी जो ईसा के इन्कारी हैं तथा उन यहूदियों के समान हैं जिन्होंने हज़रत ईसा को स्वीकार नहीं किया था। अत: इस प्रकार से पूर्ण रूप से समानता सिद्ध हो गई कि जिस प्रकार वे यहूदी जो इल्यास नबी के दोबारा आगमन के प्रतीक्षक थे हज़रत ईसा पर मात्र इस बहाने से कि इल्यास दोबारा संसार में नहीं आया ईमान न लाए। इसी प्रकार ये लोग इस उम्मत के ईसा पर मात्र इस बहाने से ईमान न लाए कि वह इस्राईली ईसा दोबारा संसार में नहीं आया। अत: इन यहूदियों में जो हज़रत ईसा पर ईमान नहीं लाए थे इस कारण से कि इल्यास दोबारा संसार में नहीं आया तथा उन यहूदियों में जो हज़रत ईसा के दोबारा आगमन की प्रतीक्षा में हैं समानता सिद्ध हो गई और यही ख़ुदा तआला का उद्देश्य था और जैसा कि इस्राईली यहूदियों तथा इन यहूदियों में समानता सिद्ध हो गई, इसी प्रकार इस्राईली ईसा तथा इस ईसा में जो **मैं हूं** समानता पूर्णता को पहुंच गई क्योंकि वह ईसा इसी कारण से यहूदियों की दृष्टि से अस्वीकार किया गया कि एक नबी दोबारा संसार में नहीं आया और इसी प्रकार यह ईसा जो **मैं हूं** इन यहूदियों की दृष्टि में अस्वीकार किया गया कि एक नबी दोबारा संसार में नहीं आया तथा स्पष्ट है कि जिन लोगों को हदीसें इस उम्मत के यहूदी ठहराती है जिन की ओर आयत غَيۡرِ الۡمَغۡضُوۡبِ عَلَيۡهِمۡ भी संकेत करती है वे वास्तविक यहूदी नहीं हैं अपितु इसी उम्मत के लोग हैं जिन का नाम यहूदी रखा गया है। इसी प्रकार वह ईसा भी वास्तविक ईसा नहीं है जो बनी

[1] अलफ़ातिहा - 7

इस्राईल का नाम नबी था अपितु वह भी इसी उम्मत में से है और यह ख़ुदा तआला की उस दया और कृपा से दूर है जो इस उम्मत के साथ रखता है वह इस उम्मत को यहूदी की उपाधि तो दे अपितु उन यहूदियों की उपाधि दे जिन्होंने इल्यास नबी के दोबारा आगमन का तर्क प्रस्तुत करके हज़रत ईसा को काफ़िर और महा झूठा ठहराया था किन्तु इस उम्मत के किसी सदस्य को ईसा की उपाधि न दे। तो क्या इस से यह परिणाम नहीं निकलता है कि यह उम्मत ख़ुदा तआला के निकट कुछ ऐसी दुर्भाग्यशाली और अभागी है कि उसकी दृष्टि में दुष्ट और अवज्ञाकारी यहूदियों की उपाधि तो पा सकती है किन्तु इस उम्मत में एक व्यक्ति भी ऐसा नहीं कि ईसा की उपाधि पाए। अत: यही नीति थी कि एक ओर तो ख़ुदा तआला ने इस उम्मत के कुछ लोगों का नाम यहूदी रख दिया और दूसरी ओर एक व्यक्ति का नाम ईसा भी रख दिया।

कुछ लोग केवल मूर्खता से या नितान्त ईर्ष्या तथा धोखा देने के उद्देश्य से हज़रत ईसा[अ.] के जीवित रहने पर इस आयत को बतौर प्रमाण लाते हैं कि وَ اِنۡ مِّنۡ اَهۡلِ الۡكِتٰبِ اِلَّا لَيُؤۡمِنَنَّ بِهٖ قَبۡلَ مَوۡتِهٖ[1] और इस से ये अर्थ निकालना चाहते हैं कि हज़रत ईसा उस समय तक मृत्यु नहीं पाएंगे जब तक समस्त अहले किताब उन पर ईमान न ले आएं। किन्तु ऐसे अर्थ वही करेगा जिसे क़ुर्आन का पूर्ण ज्ञान प्राप्त नहीं है या जो ईमानदारी के मार्ग से दूर है क्योंकि ऐसे अर्थ करने से पवित्र क़ुर्आन की एक भविष्यवाणी असत्य हो जाती है। अल्लाह तआला का पवित्र क़ुर्आन में कथन है -

فَاَغۡرَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ[2]

और फिर दूसरे स्थान पर कहा

وَ اَلۡقَيۡنَا بَيۡنَهُمُ الۡعَدَاوَةَ وَ الۡبَغۡضَآءَ اِلٰى يَوۡمِ الۡقِيٰمَةِ[3]

---

① अन्निसा - 160

② अलमाइदह - 15

③ अलमाइदह - 65

इन आयतों के ये अर्थ हैं कि हम ने क़यामत तक यहूदियों और ईसाइयों में शत्रुता और वैर डाल दिया है। अत: यदि उपरोक्त आयत के ये अर्थ हैं कि प्रलय से पूर्व समस्त यहूदी हज़रत ईसा पर ईमान ले आएंगे तो इस से अनिवार्य होता है कि किसी समय यहूदियों तथा ईसाइयों का परस्पर द्वेष दूर भी हो जाएगा और यहूदी धर्म का बीज पृथ्वी पर नहीं रहेगा। हालांकि पवित्र क़ुर्आन की इन आयतों से तथा अन्य कई आयतों से सिद्ध होता है कि यहूदी धर्म प्रलय तक रहेगा, हां अपमान और विवशता उनके साथ संलग्न रहेगी और वे अन्य शक्तियों की शरण में जीवन व्यतीत करेंगे। अत: उपरोक्त कथित पवित्र आयत का सही अर्थ यह है कि प्रत्येक व्यक्ति जो अहले किताब में से है वह अपनी मृत्यु से पूर्व आंहज़रत[स.अ.व.] पर या हज़रत ईसा पर ईमान ले आएगा। अत: موتہٖ का सर्वनाम अहले किताब की ओर जाती है न कि हज़रत ईसा की ओर। इसी कारण से इस आयत की दूसरी क़िरअत में مَوتہم है। यदि हज़रत ईसा की ओर यह सर्वनाम जाता तो दूसरी क़िरअत में مَوتہم क्यों आता ? देखो तफ़्सीर सनाई कि उसमें बड़े ज़ोर के साथ हमारे इस कथन की पुष्टि मौजूद है और उसमें यह भी लिखा है कि अबू हुरैर:[रज़ि.] के विचार में यही अर्थ हैं किन्तु तफ़्सीर का लेखक लिखता है कि "अबू हुरैर: क़ुर्आन समझने में अपूर्ण है और उसकी समझ पर हदीसविदों को आपत्ति है। अबू हुरैर: में नकल करने का माद्दा थी तथा दिरायत (रावियों का क्रम) समझ-बूझ से बहुत कम भाग रखता था" मैं कहता हूं कि यदि अबू हुरैर:[रज़ि.] ने ऐसे अर्थ किए हैं तो यह उसकी ग़लती है जैसा कि अन्य कई स्थानों में हदीसविदों ने सिद्ध किया है कि जो बातें समझ-बूझ तथा दिरायत से संबंधित हैं अबू हुरैर:[रज़ि.] प्राय: उनके समझने में ठोकर खाता है और ग़लती करता है। यह बात मान्य है कि एक सहाबी की राय शरीअत का प्रमाण नहीं हो सकता। शरीअत का प्रमाण केवल सहाबा[रज़ि.] का इज्मा (सर्वसम्मति) है। अत: हम वर्णन कर चुके हैं कि इस बात पर सहाबा का इज्मा हो चुका है कि समस्त अंबिया मृत्यु पा चुके हैं।

स्मरण रखना चाहिए कि जब आयत قبل موتہٖ की दूसरी क़िरअत قبل موتھم मौजूद है जो हदीसविदों के नियमानुसार सही हदीस का आदेश रखती है अर्थात् ऐसी हदीस जो आंहज़रत[स.अ.व.] से सिद्ध है तो इस स्थिति में मात्र अबू हुरैर: का अपना कथन खण्डन करने योग्य है क्योंकि वह आंहज़रत[स.अ.व.] के अपने कथन की तुलना में अधम और व्यर्थ है और इस पर आग्रह करना कुफ्र तक पहुंचा सकता है और फिर केवल इतना ही नहीं अपितु अबू हुरैर: के कथन से पवित्र क़ुर्आन का मिथ्या होना अनिवार्य हो जाता है, क्योंकि पवित्र क़ुर्आन तो अनेकों स्थान पर कहता है कि यहूदी और ईसाई प्रलय तक रहेंगे उनका पूर्णरूपेण विनाश नहीं होगा और अबू हुरैर: कहता है कि यहूदियों का पूर्णरूपेण विनाश हो जाएगा और यह पवित्र क़ुर्आन के सर्वथा विरुद्ध है। जो व्यक्ति पवित्र क़ुर्आन पर ईमान लाता है उसे चाहिए कि अबू हुरैर: के कथन को एक रद्दी सामान की भांति फेंक दे अपितु चूंकि दूसरी क़िरअत हदीसविदों के नियमानुसार सही हदीस का आदेश रखती है और यहां आयत قبل موتہٖ की दूसरी क़िरअत قبل موتھم मौजूद है जिसे सही हदीस समझना चाहिए। इस स्थिति में अबू हुरैर: का कथन क़ुर्आन और हदीस दोनों के विपरीत है इसमें कोई सन्देह नहीं कि वह असत्य है और जो उसका अनुसरण करे वह उपद्रवी और झूठा है।

समाप्त

उपसंहार

बड़ा महत्त्वपूर्ण उद्देश्य जो इस उपसंहार में लिखने के लिए दृष्टिगत है वह यह है कि पहले चार भागों में जो बातें या जो-जो इल्हाम संक्षेप में वर्णन किए गए हैं या जिन भविष्यवाणियों का उन भागों में वर्णन हो चुका है और वे उस युग में प्रकट नहीं हुईं परन्तु बाद में शनैः शनैः प्रकट हो गईं। उन समस्त बातों के प्रकटन एवं घटित होने का इस उपसंहार में वर्णन किया जाए। और जिन बातों की बात में वास्तविकता खुल गई उस वास्तविकता को वर्णन किया जाए। अतः यह भाग पंचम वास्तव में पहले भागों के लिए बतौर व्याख्या के है और ऐसी व्याख्या करना मेरे अधिकार से बाहर थी। जब तक ख़ुदा तआला समस्त सामान अपने हाथ से उपलब्ध न करता, क्योंकि पहले भागों की इल्हामी भविष्यवाणियों में बहुत से निशानों के प्रकट होने का वादा दिया गया है तथा यह भी वादा है कि ख़ुदा तआला इस विनति को पवित्र क़ुर्आन की वास्तविकताएं एवं मआरिफ़ सिखाएगा तथा उन्हीं भागों में मेरा नाम मरयम, ईसा, मूसा और आदम अपितु समस्त नबियों का नाम रखा गया है और यह रहस्य भी ज्ञात न था कि क्यों रखा गया। इन समस्त बातों का समझना ख़ुदाई शक्ति के बिना मेरे लिए असंभव था। विशेषतः आकाशीय निशानों का प्रकट करना तो वह बात है जो व्यापक तौर पर मानव शक्ति से श्रेष्ठतर एवं उच्चतर है। इन समस्त बातों के प्रकट होने के लिए ख़ुदा तआला के इरादे ने एक समय निश्चित कर रखा था तथा पुस्तक के पंचम भाग का लिखना इन्हीं बातों की व्याख्या पर निर्भर। अतः इस स्थिति में क्योंकर संभव था कि उन बातों के प्रकट होने के बिना जो पूर्व भागों के लिए बतौर व्याख्या के थे **पंचम भाग** लिखा जाता। क्योंकि वही बातें तो पंचम भाग के लिए मूल लेख थे तथा जब स्थगन की अवधि पर चौबीसवां वर्ष आया तो ख़ुदा की कृपा की रहमत (दया) की समीर ने समस्त वे बातें जो बराहीन अहमदिया के पहले भागों में गुप्त और छिपी हुई थीं उन पर प्रत्येक पहलू से प्रकाश डाल दिया।

एक ओर वे प्रतिज्ञात भविष्यवाणियां जिन के प्रकटन की प्रतीक्षा थी, पर्याप्त तौर पर प्रकट हो गईं तथा दूसरी ओर क़ुर्आनी वास्तविकताएं और आध्यात्म ज्ञान जो मारिफ़त को पूर्ण करते थे भली भांति स्पष्ट हो गए तथा उसके साथ ही अंबिया के नामों का रहस्य भी जो पहले चार भागों में गुप्त था अर्थात् वे नबियों के नाम जो मेरी ओर सम्बद्ध किए गए थे उनकी वास्तविकता भी पूर्णतया प्रकट हो गई अर्थात् यह रहस्य भी कि ख़ुदा तआला ने समस्त नबियों का नाम बराहीन अहमदिया के पहले भागों में मेरा नाम क्यों रख दिया है तथा यह रहस्य भी कि अन्त में बनी इस्राईल के ख़ातमुल अंबिया का नाम जो ईसा है और इस्लाम के ख़ातमुल अंबिया का नाम जो **अहमद** और **मुहम्मद**[स.अ.व.] है। यह दोनों नाम भी मेरे नाम क्यों रख दिए ? इन समस्त गुप्त वास्तविकताओं का भी प्रकटन हो गया और आकाश पर मेरा नाम ईसा इत्यादि होना वह रहस्य था जिसको ख़ुदा तआला ने उसी प्रकार सैकड़ों वर्ष तक गुप्त रखा था जैसा कि अस्हाबे कहफ़[1] को गुप्त रखा था तथा अवश्य था कि वे समस्त रहस्य गुप्त रहें जब तक कि वह युग न आ जाए जो प्रारंभ से प्रारब्ध था। जब वह युग आ गया और वे समस्त बातें पूरी हो गईं तो समय आ गया कि पंचम भाग लिखा जाए। अतः इसी बात ने बराहीन अहमदिया की पूर्णता को तेईस वर्ष तक स्थगित रखा था। ये ख़ुदा के रहस्य हैं जिन पर मनुष्य उसके सूचित करने के अतिरिक्त सूचना नहीं पा सकता। प्रत्येक मनुष्य जो इस भाग पंचम को पढ़ेगा वह इस बात के लिए विवश होगा कि यह इक़रार करे कि यदि इन भविष्यवाणियों तथा दूसरे रहस्यों के खुलने से पूर्व भाग पंचम लिखा जाता तो वह पहले भागों की वास्तविकता दिखाने के लिए दर्पण कदापि न ठहर सकता अपितु उसका लिखना मात्र बेमेल तथा असंबद्ध होता। अतः वह ख़ुदा जो नीतिवान तथा अन्तर्यामी है और उसका प्रत्येक कार्य

---

① **अस्हाबे कहफ़** - गुफ़ा वाले, कुछ ईसाई लोग जो एक ख़ुदा को मानने वाले थे जो एशिया कोचक के काफ़िर बादशाह दक़्यानूस के भय से एक गुफ़ा में छिप गए थे और उन्होंने वहां गुप्त तौर पर एक बहुत लम्बी अवधि गुज़ारी। (अनुवादक)

समयबद्ध है उसने यही पसन्द किया कि प्रथम वे समस्त भविष्यवाणियां और समस्त वास्तविकताएं प्रकट हो जाएं जो पहले भागों के समय में अभी प्रकट नहीं हुई थीं फिर बाद में भाग पंचम लिखा जाए ताकि वह उन समस्त बातों के प्रकट और पूर्ण होने की सूचना दे जो पहले गुप्त और छिपी हुई थी। वास्तव में इस पुस्तक के पहले भाग जिस सीमा तक लिखने पर समाप्त हो चुके हैं उनके लिए एक ऐसी प्रत्याशित अवस्था शेष थी जो पंचम भाग की इस शैली के बिना पूर्ण नहीं हो सकती थी क्योंकि उन चार भागों में एक बड़ा भाग भविष्यवाणियों का है जिन में सूचना दी गई हैं कि भविष्य में ख़ुदा ऐसी-ऐसी बातों को प्रकट करेगा और जब तक वे भविष्यवाणियां पूरी न हो जातीं तो क्योंकर कोई समझ सकता था कि वे समस्त इल्हाम जिन में ये भविष्यवाणियां लिखी गई हैं वे ख़ुदा की ओर से हैं और इसी कारण समस्त विरोधी उन भविष्यवाणियों को झुठलाते रहे। ख़ुदा नहीं चाहता था कि उस की भविष्यवाणियों को झुठलाने की दृष्टि से देखा जाए तथा यह बात स्वयं अनुसंधान के नियम से दूर थी कि अभी पूर्व भागों की सच्चाई का प्रमाण न दिया जाए तथा एक असम्बद्ध पंचम भाग लिखा जाए। अत: अवश्य था कि ख़ुदा का प्रारब्ध इस विनीत को पंचम भाग लिखने से उस लम्बी अवधि तक रोके रखे जब तक कि समस्त भविष्यवाणियां तथा अन्य बातें प्रकट हो जाएं जो पहले चार भागों में गुप्त थीं अत: ख़ुदा की प्रशंसा और उपकार कि उस अवधि में जो पूरी तेईस वर्ष थी वे सब बातें प्रकट हो गईं तथा यह सब सामान ख़ुदा ने स्वयं उपलब्ध कर दिया और उन निशानों के प्रकटन के अतिरिक्त ख़ुदा तआला की कश्फ़ी झलकियों ने इस्लाम की वास्तविकता तथा पवित्र क़ुर्आन के कठिन स्थानों को मुझ पर खोल दिया अन्यथा मेरी शक्ति से बाहर था कि मैं उन उच्च बारीकियों को स्वयं ज्ञात कर सकता, किन्तु इस सामान के पैदा होने के पश्चात् मैं इस योग्य हो गया कि पंचम भाग में पहले चार भागों के उन स्थानों की व्याख्या लिखूं जो उस पूर्व युग में मैं लिख नहीं सकता था। अत: मैंने इस पूरे सामान के पश्चात् इरादा किया कि प्रथम इस उपसंहार में इस्लाम की

वास्तविकता लिखूं कि इस्लाम क्या वस्तु है ? तत्पश्चात् पवित्र क़ुर्आन की उच्च एवं श्रेष्ठ शिक्षा का उसकी आयतों के हवाले से कुछ वर्णन करूं और यह व्यक्त करूं कि वास्तव में समस्त क़ुर्आनी आयतों के लिए इस्लाम का अर्थ बतौर केन्द्र के है और समस्त क़ुर्आनी आयतें उसी के गिर्द घूम रही हैं। तत्पश्चात् उन निशानों का वर्णन करूं जिन का मेरे हाथ पर प्रकट होना बराहीन अहमदिया के पूर्व भागों में वादा था जो पवित्र क़ुर्आन के अनुसरण का एक परिणाम हैं। इन सब के पश्चात् उन इल्हामों की व्याख्या लिखूं जिन में मेरा नाम ख़ुदा तआला ने **ईसा** रखा है या दूसरे नबियों के नाम की मुझे संज्ञा दी है अथवा इसी प्रकार अन्य कुछ इल्हामी वाक्य जो व्याख्या के योग्य हैं वर्णन किए हैं। इसलिए उपरोक्त कथित आवश्यकताओं की दृष्टि से इस उपसंहार को चार फ़स्लों पर विभाजित किया गया है -

प्रथम फ़स्ल - इस्लाम की वास्तविकता के वर्णन में

द्वितीय फ़स्ल - पवित्र क़ुर्आन की श्रेष्ठ और पूर्णतम शिक्षा के बारे में।

तृतीय फ़स्ल - उन निशानों के वर्णन में जिनके प्रकटन का बराहीन अहमदिया में वादा था और ख़ुदा ने मेरे हाथ पर वे प्रकट किए।

चतुर्थ फ़स्ल - उन इल्हामों की व्याख्या में जिन में मेरा नाम ईसा रखा गया है या मुझे दूसरे नबियों के नाम दिए गए हैं या ऐसा ही अन्य इल्हामी वाक्य जो व्याख्या योग्य हैं वर्णन किए हैं।

अब इन्शाअल्लाह इसी व्याख्या से चारों फ़स्लों का नीचे वर्णन होगा।

رَبِّ اَنۡطِقۡنَا بِالۡحَقِّ وَ اکۡشِفۡ عَلَیۡنَا الۡحَقَّ وَ اھۡدِنَا اِلٰی حَقٍّ مُّبِیۡنٍ

اٰمین ثُمَّ اٰمین

नीचे वे विभिन्न याद्दाश्तें दी जाती हैं
जो
हज़रत अक़्दस ने इस लेख के संबंध में लिखी थीं और आप के मसौदों से उपलब्ध हुईं।

पवित्र क़ुर्आन की आयतें जो इस लेख में इन्शाअल्लाह लिखी जाएंगी -

لَآ اِكْرَاهَ فِي الدِّيْنِ ۙ قَدْ تَّبَيَّنَ الرُّشْدُ مِنَ الْغَيِّ ① ☆

اِنْ تُبْدُوا الصَّدَقٰتِ فَنِعِمَّا هِيَ ۚ وَ اِنْ تُخْفُوْهَا وَ تُؤْتُوْهَا الْفُقَرَآءَ فَهُوَ خَيْرٌ لَّكُمْ ؕ وَ يُكَفِّرُ عَنْكُمْ مِّنْ سَيِّاٰتِكُمْ ؕ ②

यदि तुम प्रकट करो दान को तो वह अच्छा है और यदि तुम दान को गुप्त रखो तो वह बहुत ही अच्छा है। ऐसा दान तुम्हारी बुराइयां दूर करेगा। पृष्ठ - 60

اَلَّذِيْنَ يُنْفِقُوْنَ اَمْوَالَهُمْ بِالَّيْلِ وَ النَّهَارِ سِرًّا وَّ عَلَانِيَةً فَلَهُمْ اَجْرُهُمْ عِنْدَ رَبِّهِمْ ۚ وَ لَا خَوْفٌ عَلَيْهِمْ وَ لَا هُمْ يَحْزَنُوْنَ ③

وَ اِذَا سَاَلَكَ عِبَادِيْ عَنِّيْ فَاِنِّيْ قَرِيْبٌ ؕ اُجِيْبُ دَعْوَةَ الدَّاعِ اِذَا دَعَانِ ۙ فَلْيَسْتَجِيْبُوْا لِيْ وَ لْيُؤْمِنُوْا بِيْ لَعَلَّهُمْ يَرْشُدُوْنَ ④

ताकि उन का भला हो। पृष्ठ - 37, सूरह अलबक़रह पार: 2, चाहिए कि मेरे आदेशों को स्वीकार करें और मुझ पर ईमान लाएं ताकि उन का भला हो।

☆ नोट - ये पृष्ठों के सन्दर्भ उस क़ुर्आन मजीद के हैं जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम के पास लिखने के समय मौजूद था।

① अलबक़रह - 257

② अलबक़रह - 272

③ अलबक़रह - 275

④ अलबक़रह - 187

فَاذۡکُرُوا اللّٰہَ کَذِکۡرِکُمۡ اٰبَآءَکُمۡ اَوۡ اَشَدَّ ذِکۡرًا ①

पृष्ठ - 41, सूरह - अलबक़रह पार: 2 तुम प्रेम से भरे हुए हृदय के साथ ख़ुदा को स्मरण करो जैसा कि तुम अपने बापों को स्मरण करते हो।

وَ مِنَ النَّاسِ مَنۡ یَّشۡرِیۡ نَفۡسَہُ ابۡتِغَآءَ مَرۡضَاتِ اللّٰہِ ؕ وَ اللّٰہُ رَءُوۡفٌۢ بِالۡعِبَادِ ②

पृष्ठ-42, पार: 2 अलबक़रह। कुछ ऐसे हैं कि अपने प्राणों को ख़ुदा के मार्ग में बेच देते हैं ताकि किसी प्रकार वह राज़ी हो।

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوا ادۡخُلُوۡا فِی السِّلۡمِ کَآفَّۃً ۪ وَ لَا تَتَّبِعُوۡا خُطُوٰتِ الشَّیۡطٰنِ ؕ اِنَّہٗ لَکُمۡ عَدُوٌّ مُّبِیۡنٌ ③

हे ईमान वालो ! ख़ुदा के मार्ग में अपनी गर्दन डाल दो और शैतानी मार्गों को धारण मत करो कि शैतान तुम्हारा शत्रु है। यहां शैतान से अभिप्राय वही लोग हैं जो बुराई की शिक्षा देते हैं।

لَا تَجۡعَلُوا اللّٰہَ عُرۡضَۃً لِّاَیۡمَانِکُمۡ ④

یٰۤاَیُّہَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا لَا تُبۡطِلُوۡا صَدَقٰتِکُمۡ بِالۡمَنِّ وَ الۡاَذٰی ⑤ पृष्ठ-58

کَالَّذِیۡ یُنۡفِقُ مَالَہٗ رِئَآءَ النَّاسِ وَ لَا یُؤۡمِنُ بِاللّٰہِ وَ الۡیَوۡمِ الۡاٰخِرِ ؕ فَمَثَلُہٗ کَمَثَلِ صَفۡوَانٍ عَلَیۡہِ تُرَابٌ فَاَصَابَہٗ وَابِلٌ فَتَرَکَہٗ صَلۡدًا ؕ ⑥ पृष्ठ-58

पवित्र क़ुर्आन में यह विशेष गुण है कि उसकी नैतिक शिक्षा समस्त विश्व के लिए है परन्तु इंजील की नैतिक शिक्षा केवल यहूदियों के लिए है।

---

① अलबक़रह - 201

② अलबक़रह - 208

③ अलबक़रह - 209

④ अलबक़रह - 225

⑤ अलबक़रह - 265

⑥ अलबक़रह - 265

इस वर्णन में कि पवित्र क़ुर्आन दूसरी उम्मतों के सदाचारी लोगों की प्रशंसा करता है -

لَيْسُوْا سَوَآءً ۭ مِنْ اَهْلِ الْكِتٰبِ اُمَّةٌ قَآىِٕمَةٌ يَّتْلُوْنَ اٰيٰتِ اللّٰهِ اٰنَآءَ الَّيْلِ وَ هُمْ يَسْجُدُوْنَ ﴿۱۱۴﴾ يُؤْمِنُوْنَ بِاللّٰهِ وَ الْيَوْمِ الْاٰخِرِ وَ يَاْمُرُوْنَ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهَوْنَ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُسَارِعُوْنَ فِي الْخَيْرٰتِ ۭ وَ اُولٰٓىِٕكَ مِنَ الصّٰلِحِيْنَ ﴿۱۱۵﴾ ①

يٰٓاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لَا تَتَّخِذُوْا بِطَانَةً مِّنْ دُوْنِكُمْ لَا يَاْلُوْنَكُمْ خَبَالًا ۭ وَدُّوْا مَا عَنِتُّمْ ۚ قَدْ بَدَتِ الْبَغْضَآءُ مِنْ اَفْوَاهِهِمْ ښ وَ مَا تُخْفِيْ صُدُوْرُهُمْ اَكْبَرُ ۭ قَدْ بَيَّنَّا لَكُمُ الْاٰيٰتِ اِنْ كُنْتُمْ تَعْقِلُوْنَ ﴿۱۱۹﴾ هٰٓاَنْتُمْ اُولَآءِ تُحِبُّوْنَهُمْ وَ لَا يُحِبُّوْنَكُمْ وَ تُؤْمِنُوْنَ بِالْكِتٰبِ كُلِّهٖ ۚ وَ اِذَا لَقُوْكُمْ قَالُوْٓا اٰمَنَّا ښ وَ اِذَا خَلَوْا عَضُّوْا عَلَيْكُمُ الْاَنَامِلَ مِنَ الْغَيْظِ ۭ قُلْ مُوْتُوْا بِغَيْظِكُمْ ۭ اِنَّ اللّٰهَ عَلِيْمٌۢ بِذَاتِ الصُّدُوْرِ ﴿۱۲۰﴾ ②

اَلَمْ تَرَ اِلَى الَّذِيْنَ يُزَكُّوْنَ اَنْفُسَهُمْ ۭ بَلِ اللّٰهُ يُزَكِّيْ مَنْ يَّشَآءُ وَ لَا يُظْلَمُوْنَ فَتِيْلًا ③

اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُكُمْ اَنْ تُؤَدُّوا الْاَمٰنٰتِ اِلٰٓى اَهْلِهَا ۙ وَ اِذَا حَكَمْتُمْ بَيْنَ النَّاسِ اَنْ تَحْكُمُوْا بِالْعَدْلِ ۭ اِنَّ اللّٰهَ نِعِمَّا يَعِظُكُمْ بِهٖ ۭ اِنَّ اللّٰهَ كَانَ سَمِيْعًۢا بَصِيْرًا ④

आंहज़रत[स.अ.व.] का फैसला यहूदियों और मुसलमानों में इसके बारे में है।

مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً حَسَنَةً يَّكُنْ لَّهٗ نَصِيْبٌ مِّنْهَا ۚ وَ مَنْ يَّشْفَعْ شَفَاعَةً سَيِّئَةً يَّكُنْ لَّهٗ كِفْلٌ مِّنْهَا ۭ وَكَانَ اللّٰهُ عَلٰى كُلِّ شَيْءٍ مُّقِيْتًا ⑤

और अल्लाह हर वस्तु पर निगरान है।

وَ مَنْ يَّقْتُلْ مُؤْمِنًا مُّتَعَمِّدًا فَجَزَآؤُهٗ جَهَنَّمُ خٰلِدًا فِيْهَا وَ غَضِبَ اللّٰهُ عَلَيْهِ وَ

---

① आले इमरान - 114, 115

② आले इमरान - 119, 120

③ अन्निसा - 50

④ अन्निसा - 59

⑤ अन्निसा - 86

لَعَنَهٗ وَ اَعَدَّ لَهٗ عَذَابًا عَظِيۡمًا[1]

सूर: अन्निसा, पृष्ठ-123, भाग-5

وَلَا تَقُوۡلُوۡا لِمَنۡ اَلۡقٰۤى اِلَيۡكُمُ السَّلٰمَ لَسۡتَ مُؤۡمِنًا[2]

सूरह अन्निसा, पृष्ठ-123

وَمَنۡ اَحۡسَنُ دِيۡنًا مِّمَّنۡ اَسۡلَمَ وَجۡهَهٗ لِلّٰهِ وَ هُوَ مُحۡسِنٌ وَّاتَّبَعَ مِلَّةَ اِبۡرٰهِيۡمَ حَنِيۡفًا[3]

पृष्ठ-130, सूरह अन्निसा, भाग-5, रुकू-18

وَ الصُّلۡحُ خَيۡرٌ[4]

पृष्ठ-130, रुकू-19, सूरह अन्निसा

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡا كُوۡنُوۡا قَوّٰمِيۡنَ بِالۡقِسۡطِ شُهَدَآءَ لِلّٰهِ وَ لَوۡ عَلٰۤى اَنۡفُسِكُمۡ اَوِ الۡوَالِدَيۡنِ وَ الۡاَقۡرَبِيۡنَ[5] भाग-5, सूरह अन्निसा, पृष्ठ-136

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيۡنَ اٰمَنُوۡۤا اٰمِنُوۡا بِاللّٰهِ وَ رَسُوۡلِهٖ وَ الۡكِتٰبِ الَّذِىۡ نَزَّلَ عَلٰى رَسُوۡلِهٖ وَ الۡكِتٰبِ الَّذِىۡۤ اَنۡزَلَ مِنۡ قَبۡلُ ؕ وَ مَنۡ يَّكۡفُرۡ بِاللّٰهِ وَ مَلٰٓئِكَتِهٖ وَ كُتُبِهٖ وَ رُسُلِهٖ وَ الۡيَوۡمِ الۡاٰخِرِ فَقَدۡ ضَلَّ ضَلٰلًۢا بَعِيۡدًا[6] पृष्ठ-132

قُوۡلُوۡۤا اٰمَنَّا بِاللّٰهِ وَ مَاۤ اُنۡزِلَ اِلَيۡنَا..........وَ مَاۤ اُوۡتِىَ النَّبِيُّوۡنَ مِنۡ رَّبِّهِمۡ ۚ لَا نُفَرِّقُ بَيۡنَ اَحَدٍ مِّنۡهُمۡ ۖ وَ نَحۡنُ لَهٗ مُسۡلِمُوۡنَ[7]

पृष्ठ-27, सूरह अलबक़रह

---

[1] अन्निसा - 94

[2] अन्निसा - 95

[3] अन्निसा - 126

[4] अन्निसा - 129

[5] अन्निसा - 136

[6] अन्निसा - 137

[7] अलबक़रह - 137

فَاِنْ اٰمَنُوْا بِمِثْلِ مَآ اٰمَنْتُمْ بِهٖ فَقَدِ اهْتَدَوْا ۚ وَ اِنْ تَوَلَّوْا فَاِنَّمَا هُمْ فِیْ شِقَاقٍ ①

पृष्ठ-27, सूरह अलबक़रह

यदि वे ऐसा ईमान लाएं जैसा कि तुम ईमान लाए तो वे हिदायत पा चुके और यदि ऐसा ईमान न लाएं तो फिर वह ऐसी क़ौम है जो विरोध छोड़ना नहीं चाहती तथा सुलह के इच्छुक नहीं।

رُسُلًا مُّبَشِّرِیْنَ وَ مُنْذِرِیْنَ لِئَلَّا یَكُوْنَ لِلنَّاسِ عَلَى اللّٰهِ حُجَّةٌۢ بَعْدَ الرُّسُلِ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ عَزِیْزًا حَكِیْمًا ② (पृष्ठ-137, सूरह अन्निसा, भाग-6)

اِنَّ الَّذِیْنَ یَكْفُرُوْنَ بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یُّفَرِّقُوْا بَیْنَ اللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ وَ یَقُوْلُوْنَ نُؤْمِنُ بِبَعْضٍ وَّ نَكْفُرُ بِبَعْضٍ ۙ وَّ یُرِیْدُوْنَ اَنْ یَّتَّخِذُوْا بَیْنَ ذٰلِكَ سَبِیْلًا ۙ﴿۱۵۱﴾ اُولٰٓىِٕكَ هُمُ الْكٰفِرُوْنَ حَقًّا ۚ وَ اَعْتَدْنَا لِلْكٰفِرِیْنَ عَذَابًا مُّهِیْنًا ﴿۱۵۲﴾ ③

(पृष्ठ-135, सूरह अन्निसा)

وَ قَدْ نَزَّلَ عَلَیْكُمْ فِی الْكِتٰبِ اَنْ اِذَا سَمِعْتُمْ اٰیٰتِ اللّٰهِ یُكْفَرُ بِهَا وَ یُسْتَهْزَاُ بِهَا فَلَا تَقْعُدُوْا مَعَهُمْ ④ (पृष्ठ-133)

مَا یَفْعَلُ اللّٰهُ بِعَذَابِكُمْ اِنْ شَكَرْتُمْ وَ اٰمَنْتُمْ ؕ وَ كَانَ اللّٰهُ شَاكِرًا عَلِیْمًا ⑤

(पृष्ठ-135, सूरह अन्निसा)

اِنَّمَا الْمَسِیْحُ عِیْسَى ابْنُ مَرْیَمَ رَسُوْلُ اللّٰهِ وَ كَلِمَتُهٗ ۚ اَلْقٰهَاۤ اِلٰى مَرْیَمَ وَ رُوْحٌ مِّنْهُ ۫ فَاٰمِنُوْا بِاللّٰهِ وَ رُسُلِهٖ ۚ وَ لَا تَقُوْلُوْا ثَلٰثَةٌ ؕ اِنْتَهُوْا خَیْرًا لَّكُمْ ⑥

---

① अलबक़रह - 138

② अन्निसा - 166

③ अन्निसा - 151,152

④ अन्निसा - 141

⑤ अन्निसा - 148

⑥ अन्निसा - 172

اَلۡیَوۡمَ اَکۡمَلۡتُ لَکُمۡ دِیۡنَکُمۡ وَ اَتۡمَمۡتُ عَلَیۡکُمۡ نِعۡمَتِیۡ وَ رَضِیۡتُ لَکُمُ الۡاِسۡلَامَ دِیۡنًا ① (पृष्ठ-141)

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡا کُوۡنُوۡا قَوّٰمِیۡنَ لِلّٰہِ شُهَدَآءَ بِالۡقِسۡطِ ۫ وَ لَا یَجۡرِمَنَّکُمۡ شَنَاٰنُ قَوۡمٍ عَلٰۤی اَلَّا تَعۡدِلُوۡا ؕ اِعۡدِلُوۡا ۟ هُوَ اَقۡرَبُ لِلتَّقۡوٰی ۫ وَ اتَّقُوا اللّٰہَ ؕ اِنَّ اللّٰہَ خَبِیۡرٌۢ بِمَا تَعۡمَلُوۡنَ ② (पृष्ठ-143, सूरह अलमाइदह, भाग-6)

اِنَّ اللّٰہَ یَاۡمُرُ بِالۡعَدۡلِ وَ الۡاِحۡسَانِ وَ اِیۡتَآیِٔ ذِی الۡقُرۡبٰی ③

یٰۤاَیُّهَا الَّذِیۡنَ اٰمَنُوۡۤا اِنَّمَا الۡخَمۡرُ وَ الۡمَیۡسِرُ وَ الۡاَنۡصَابُ وَ الۡاَزۡلَامُ رِجۡسٌ مِّنۡ عَمَلِ الشَّیۡطٰنِ فَاجۡتَنِبُوۡهُ لَعَلَّکُمۡ تُفۡلِحُوۡنَ ④ (पृष्ठ-161, सूरह अलमाइदह)

قُلۡ اِنۡ کُنۡتُمۡ تُحِبُّوۡنَ اللّٰہَ فَاتَّبِعُوۡنِیۡ یُحۡبِبۡکُمُ اللّٰہُ ⑤

قُلۡ اِنَّ صَلَاتِیۡ وَ نُسُکِیۡ وَ مَحۡیَایَ وَ مَمَاتِیۡ لِلّٰہِ رَبِّ الۡعٰلَمِیۡنَ ⑥

(पृष्ठ-199, अलअन्आम भाग-8)

قَدۡ اَفۡلَحَ مَنۡ زَکّٰهَا ۪ۙ﴿۱۰﴾ وَ قَدۡ خَابَ مَنۡ دَسّٰهَا ؕ﴿۱۱﴾ ⑦

وَ مَنۡ کَانَ فِیۡ هٰذِهٖۤ اَعۡمٰی فَهُوَ فِی الۡاٰخِرَۃِ اَعۡمٰی ⑧

وَ هُوَ الَّذِیۡ یُرۡسِلُ الرِّیٰحَ بُشۡرًۢا بَیۡنَ یَدَیۡ رَحۡمَتِهٖ ؕ حَتّٰۤی اِذَاۤ اَقَلَّتۡ سَحَابًا ثِقَالًا سُقۡنٰهُ لِبَلَدٍ مَّیِّتٍ فَاَنۡزَلۡنَا بِهِ الۡمَآءَ فَاَخۡرَجۡنَا بِهٖ مِنۡ کُلِّ الثَّمَرٰتِ ؕ کَذٰلِکَ نُخۡرِجُ

---

① अलमाइदह - 4

② अलमाइदह - 9

③ अन्नहल - 91

④ अलमाइदह - 91

⑤ आले इमरान - 32

⑥ अलअन्आम - 163

⑦ अश्शम्स - 10,11

⑧ बनी इस्राईल - 73

الْمَوْتٰى لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ ﴿۵۸﴾ وَ الْبَلَدُ الطَّيِّبُ يَخْرُجُ نَبَاتُهٗ بِاِذْنِ رَبِّهٖ ۚ وَ الَّذِیْ خَبُثَ لَا يَخْرُجُ اِلَّا نَكِدًا ؕ كَذٰلِكَ نُصَرِّفُ الْاٰيٰتِ لِقَوْمٍ يَّشْكُرُوْنَ ﴿۵۹﴾ [1]

नहीं निकलती खेती उनकी परन्तु थोड़ी। पृष्ठ-209, सूरह अलआराफ़, भाग-8

وَ مَاۤ اَرْسَلْنَا فِیْ قَرْيَةٍ مِّنْ نَّبِیٍّ اِلَّاۤ اَخَذْنَاۤ اَهْلَهَا بِالْبَاْسَآءِ وَ الضَّرَّآءِ لَعَلَّهُمْ يَضَّرَّعُوْنَ [2]

(सूरह अलआराफ़, पृष्ठ-215)

और हम ने किसी बस्ती में कोई रसूल नहीं भेजा परन्तु हमने उनको इन्कार की स्थिति में दुर्भिक्ष और विपत्ति के साथ पकड़ा ताकि इस प्रकार वे विनय करें।

ثُمَّ بَدَّلْنَا مَكَانَ السَّيِّئَةِ الْحَسَنَةَ حَتّٰى عَفَوْا وَّ قَالُوْا قَدْ مَسَّ اٰبَآءَنَا الضَّرَّآءُ وَ السَّرَّآءُ فَاَخَذْنٰهُمْ بَغْتَةً وَّ هُمْ لَا يَشْعُرُوْنَ [3]

(पृष्ठ-215, सूरह अलआराफ़, भाग-9)

وَ لَوْ اَنَّ اَهْلَ الْقُرٰۤى اٰمَنُوْا وَ اتَّقَوْا لَفَتَحْنَا عَلَيْهِمْ بَرَكٰتٍ مِّنَ السَّمَآءِ وَ الْاَرْضِ وَ لٰكِنْ كَذَّبُوْا فَاَخَذْنٰهُمْ بِمَا كَانُوْا يَكْسِبُوْنَ [4]

(पृष्ठ-215, अलआराफ़)

اَفَاَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا بَيَاتًا وَّ هُمْ نَآئِمُوْنَ ﴿۹۸﴾ اَوَ اَمِنَ اَهْلُ الْقُرٰۤى اَنْ يَّاْتِيَهُمْ بَاْسُنَا ضُحًى وَّ هُمْ يَلْعَبُوْنَ ﴿۹۹﴾ [5] (पृष्ठ-215)

يَاْمُرُهُمْ بِالْمَعْرُوْفِ وَ يَنْهٰهُمْ عَنِ الْمُنْكَرِ وَ يُحِلُّ لَهُمُ الطَّيِّبٰتِ وَ يُحَرِّمُ عَلَيْهِمُ الْخَبٰٓئِثَ وَ يَضَعُ عَنْهُمْ اِصْرَهُمْ وَ الْاَغْلٰلَ الَّتِیْ كَانَتْ عَلَيْهِمْ ؕ فَالَّذِيْنَ اٰمَنُوْا بِهٖ وَ

---

(1) अलआराफ़ - 58,59

(2) अलआराफ़ - 95

(3) अलआराफ़ - 96

(4) अलआराफ़ - 97

(5) अलआराफ़ - 98,99

عَزَّرُوْهُ وَنَصَرُوْهُ وَاتَّبَعُوا النُّوْرَ الَّذِيْٓ اُنْزِلَ مَعَهٗٓ ۙ اُولٰٓئِكَ هُمُ الْمُفْلِحُوْنَ ﴿۱۵۸﴾[1]

(पृष्ठ-225, अलआराफ़)

यह नबी उन बातों के लिए आदेश देता है जो बुद्धि के विपरीत नहीं हैं और उन बातों से मना करता है जिससे बुद्धि भी मना करती है और पवित्र वस्तुओं को वैध करता है और अपवित्र वस्तुओं को अवैध करता है तथा क़ौमों के सर से वह बोझ उतारता है जिसके नीचे वे दबी हुई थीं और उन गर्दनों के तोक़ों से मुक्ति देता है जिन के कारण गर्दनें सीधी नहीं हो सकती थीं। अत: जो लोग उस पर ईमान लाएंगे और अपने सम्मिलित होने के साथ उसे शक्ति देंगे तथा उसकी सहायता करेंगे और उन नूर की पैरवी करेंगे जो उसके साथ उतारा गया, वह लोक और परलोक की कठिनाइयों से मुक्ति पाएंगे।

قُلْ يٰٓاَيُّهَا النَّاسُ اِنِّيْ رَسُوْلُ اللّٰهِ اِلَيْكُمْ جَمِيْعًا[2]

(पृष्ठ-225, अलआराफ़, भाग-9)

وَالَّذِيْنَ يُمَسِّكُوْنَ بِالْكِتٰبِ وَاَقَامُوا الصَّلٰوةَ ؕ اِنَّا لَا نُضِيْعُ اَجْرَ الْمُصْلِحِيْنَ[3]

(पृष्ठ-228)

और जो लोग दृढ़ता से किताब पकड़ते हैं तथा नमाज़ को क़ायम करते हैं उनके प्रतिफल हम नष्ट नहीं करते।

اَلَسْتُ بِرَبِّكُمْ ؕ قَالُوْا بَلٰى[4] (पृष्ठ-229)

रूहों की शक्तियां जिनमें ख़ुदा तआला का प्रेम पैदा हुआ है गवाही दे रही हैं कि वे ख़ुदा के हाथ से निकली हैं।

अत: यदि यह प्रश्न प्रस्तुत हो कि हम पवित्र क़ुर्आन पर किस प्रकार ईमान लाएं

---

① अलआराफ़ - 158

② अलआराफ़ - 159

③ अलआराफ़ - 171

④ अलआराफ़ - 173

क्योंकि दोनों शिक्षाओं में विरोधाभास है। इसका उत्तर यह है कि कोई विरोधाभास नहीं। वेद की श्रुतियों की हज़ारों तौर पर व्याख्याएं की गई हैं तथा उनमें से एक व्याख्या वह भी है जो क़ुर्आन के अनुसार है।

जो व्यक्ति ख़ुदा से नहीं डरता वह एक सच्ची बात के बारे में ऐसा मुकाबले से व्यवहार करता है कि जैसे उसे मौत की ओर खींचना चाहते हैं और वह अपने प्राण बचा रहा है।

يَاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْٓا اِنْ تَتَّقُوا اللّٰهَ يَجْعَلْ لَّكُمْ فُرْقَانًا وَّ يُكَفِّرْ عَنْكُمْ سَيِّاٰتِكُمْ وَ يَغْفِرْ لَكُمْ ؕ وَ اللّٰهُ ذُو الْفَضْلِ الْعَظِيْمِ①

(अलअन्फ़ाल, पृष्ठ-239)

اِنْ اَوْلِيَآؤُهٗٓ اِلَّا الْمُتَّقُوْنَ②

अनुवाद - हे ईमान वालो ! यदि तुम संयम धारण करो तो तुम में और तुम्हारे ग़ैर में ख़ुदा एक अन्तर रख देगा और तुम्हें पवित्र करेगा तथा तुम्हारे पाप क्षमा कर देगा और तुम्हारा ख़ुदा बड़े फ़ज़्ल वाला है।

याददाश्त - दीन-धर्म केवल मौखिक कहानी नहीं अपितु जिस प्रकार सोना अपने लक्षणों से पहचाना जाता है, इसी प्रकार सच्चे धर्म का अनुयायी अपने प्रकाश से प्रकट हो जाता है।

ख़ुदा तबाह करता है उस व्यक्ति को जो प्रमाण के साथ तबाह हो चुका और जीवित रखता है उस व्यक्ति को जो प्रमाण के साथ जीवित है।

وَ اِنْ جَنَحُوْا لِلسَّلْمِ فَاجْنَحْ لَهَا وَ تَوَكَّلْ عَلَى اللّٰهِ ؕ اِنَّهٗ هُوَ السَّمِيْعُ الْعَلِيْمُ③

(अलअन्फ़ाल, पृष्ठ - 144)

---

① अलअन्फ़ाल - 30

② अलअन्फ़ाल - 35

③ अलअन्फ़ाल - 62

और यदि विरोधी मैत्री के लिए झुकें तो तुम भी झुक जाओ और ख़ुदा पर भरोसा करो।

وَ اِنۡ یُّرِیۡدُوۡۤا اَنۡ یَّخۡدَعُوۡکَ فَاِنَّ حَسۡبَکَ اللّٰہُ ؕ ہُوَ الَّذِیۡۤ اَیَّدَکَ بِنَصۡرِہٖ وَ بِالۡمُؤۡمِنِیۡنَ ①

(सूरह अलअन्फ़ाल, पृष्ठ-244)

और यदि सुलह के समय हृदय में छल रखें तो उस छल के निवारण के लिए ख़ुदा तेरे लिए पर्याप्त है।

اَلَا تُقَاتِلُوۡنَ قَوۡمًا نَّکَثُوۡۤا اَیۡمَانَہُمۡ وَ ہَمُّوۡا بِاِخۡرَاجِ الرَّسُوۡلِ وَ ہُمۡ بَدَءُوۡکُمۡ اَوَّلَ مَرَّۃٍ ؕ اَتَخۡشَوۡنَہُمۡ ۚ فَاللّٰہُ اَحَقُّ اَنۡ تَخۡشَوۡہُ اِنۡ کُنۡتُمۡ مُّؤۡمِنِیۡنَ ②

قُلۡ اِنۡ کَانَ اٰبَآؤُکُمۡ وَ اَبۡنَآؤُکُمۡ وَ اِخۡوَانُکُمۡ وَ اَزۡوَاجُکُمۡ وَ عَشِیۡرَتُکُمۡ وَ اَمۡوَالُ ۣ اقۡتَرَفۡتُمُوۡہَا وَ تِجَارَۃٌ تَخۡشَوۡنَ کَسَادَہَا وَ مَسٰکِنُ تَرۡضَوۡنَہَاۤ اَحَبَّ اِلَیۡکُمۡ مِّنَ اللّٰہِ وَ رَسُوۡلِہٖ وَ جِہَادٍ فِیۡ سَبِیۡلِہٖ فَتَرَبَّصُوۡا حَتّٰی یَاۡتِیَ اللّٰہُ بِاَمۡرِہٖ ؕ وَ اللّٰہُ لَا یَہۡدِی الۡقَوۡمَ الۡفٰسِقِیۡنَ ③ (पृष्ठ-252, अत्तौबः, भाग-10)

وَ صَلِّ عَلَیۡہِمۡ ؕ اِنَّ صَلٰوتَکَ سَکَنٌ لَّہُمۡ ④ (पृष्ठ-268, अत्तौबः, नम्बर 10)

اَلتَّآئِبُوۡنَ الۡعٰبِدُوۡنَ الۡحٰمِدُوۡنَ السَّآئِحُوۡنَ الرّٰکِعُوۡنَ السّٰجِدُوۡنَ الۡاٰمِرُوۡنَ بِالۡمَعۡرُوۡفِ وَ النَّاہُوۡنَ عَنِ الۡمُنۡکَرِ وَ الۡحٰفِظُوۡنَ لِحُدُوۡدِ اللّٰہِ ؕ وَ بَشِّرِ الۡمُؤۡمِنِیۡنَ ⑤

(पृष्ठ-271)

अनुवाद - वे लोग सौभाग्यशाली हैं जो सब कुछ छोड़कर ख़ुदा की ओर आते हैं

---

① अलअन्फ़ाल - 63

② अत्तौबः - 13

③ अत्तौबः - 24

④ अत्तौबः - 103

⑤ अत्तौबः - 112

और ख़ुदा की इबादत में व्यस्त रहते हैं तथा ख़ुदा की प्रशंसा में लगे रहते हैं और उसके मार्ग की मुनादी के लिए संसार में भ्रमण करते हैं तथा ख़ुदा के आगे झुके रहते हैं और सज्दह करते हैं। वही मोमिन हैं जिनको मोक्ष का शुभ सन्देश दिया गया है।

ख़ुदा ने अपने प्रकृति के नियम में संकटों को पांच प्रकारों पर विभाजित किया है अर्थात् संकट के लक्षण जो भय दिलाते हैं और फिर संकट के अन्दर क़दम रखना और फिर ऐसी स्थिति जब निराशा पैदा होती है और फिर अंधकारमय युग संकट का फिर ख़ुदा की दया की सुबह। ये पांच समय हैं जिन का नमूना पांच नमाज़ें हैं।

يٰۤاَيُّهَا الَّذِيْنَ اٰمَنُوْا لِمَ تَقُوْلُوْنَ مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝ كَبُرَ مَقْتًا عِنْدَ اللّٰهِ اَنْ تَقُوْلُوْا مَا لَا تَفْعَلُوْنَ ۝[1]

وَمَنْ اَظْلَمُ مِمَّنِ افْتَرٰى عَلَى اللّٰهِ كَذِبًا اَوْ كَذَّبَ بِاٰيٰتِهٖ[2]

1 अस्सफ़ - 3,4

2 अलअन्आम - 22

नीचे कुछ आरोप और कुछ वास्तविकताएं लिखी जाती हैं जो हुज़ूर अलैहिस्सलाम की याददाश्तों में जो लेख के विषय में आपने लिखी थीं मिली हैं। उन आरोपों के खण्डन करने का तथा उन वास्तविकताओं पर क़ुर्आन की शिक्षानुसार प्रकाश डालने का आप का इरादा था। इसी प्रकार कुछ बातें बुद्ध की पुस्तक से लेने का ज्ञान होता है जो उन दिनों आप के अध्ययन के अन्तर्गत थी, जिसके बारे में आप कुछ लिखना चाहते थे।

(1) जितनी इल्हामी पुस्तकें हैं उनमें कौन सी ऐसी नई बात है जो पहले मालूम न थी।

(2) नबियों ने कौन सी ऐसी विज्ञान की समस्या को हल किया जो पहले हल नहीं थी।

(3) नबियों ने रूह का विवरण और वास्तविकता कुछ नहीं बताई और न भावी जीवन का कुछ हाल बताया। न ख़ुदा का ही विस्तृत हाल वर्णन न कर सके।

भौतिकी की कला में नींद को स्वाभाविक सामानों में रखा है परन्तु अंबिया ने वर्णन किया है कि नींद के और समान थे।

(4) पिछली ग़लतियों का निवारण नहीं किया और न जटिल समस्याओं को सुलझाया अपितु और भी उलझन में डाल दिया।

(5) बुद्ध की नैतिक शिक्षा सब से उत्तम है।

(6) जिस वस्तु से मनुष्य प्रेम करता है उस से यदि पृथक किया जाए तो यही उसके लिए एक अज़ाब हो जाता है।

(7) जिस वस्तु से यदि प्रेम करे यदि वह प्राप्त हो जाए जो यह उसके आराम का कारण हो जाता है وَ حِيْلَ بَيْنَهُمْ وَ بَيْنَ مَا يَشْتَهُوْنَ[1]

(8) इच्छा का मिटाना मोक्ष का साधन है।

(9) संसार में कभी सही ज्ञान से मोक्ष प्राप्त होता है और कभी सही अमल से मोक्ष-प्राप्ति होती है और कभी सही बात कहने से और कभी उचित कर्म से मोक्ष-प्राप्ति होती है तथा कभी मानव जाति से पवित्र एवं शुद्ध व्यवहार मोक्ष का कारण हो जाता है और कभी ख़ुदा से शुभ व्यवहार दु:ख-दर्द छुड़ाता है तथा कभी एक पीड़ा दूसरी

[1] सबा - 55

पीड़ाओं के लिए कफ़्फ़ारः हो जाती है।

(10) सच कहो, झूठ न बोलो, व्यर्थ बातों से बचो तथा अपने कथन एवं कर्म से किसी को हानि न पहुंचाओ। अपने जीवन को पवित्र रखो, चुग़ली मत करो, किसी पर लांछन न लगाओ, कामवासना संबंधी इच्छाओं को स्वयं पर विजयी न होने दो, द्वेष और ईर्ष्या से बचो, बैर से अपने हृदय को साफ़ रखो, अपने शत्रुओं से भी वह व्यवहार न करो जो तुम अपने लिए पसन्द नहीं करते, ऐसी नसीहतें दूसरों को मत करो जिनके तुम पाबन्द नहीं, मारिफ़त की उन्नति में लगे रहो, असभ्यता से हृदय को शुद्ध रखो, शीघ्रता से किसी पर आक्षेप मत करो।

नफ़रत करने से नफ़रत दूर नहीं होती अपितु और भी बढ़ती है। प्रेम नफ़रत को ठंडा करके दूर कर देता है।

لَنْ يَّنَالَ اللّٰهَ لُحُوْمُهَا وَ لَا دِمَآؤُهَا وَ لٰكِنْ يَّنَالُهُ التَّقْوٰى مِنْكُمْ[1]

अर्थात् हृदयों की पवित्रता सच्ची क़ुर्बानी है मांस और रक्त सच्ची क़ुर्बानी नहीं। जिस स्थान पर जनसामान्य जानवरों की क़ुर्बानी करते हैं विशेष लोग हृदयों को ज़िब्ह करते हैं।

परन्तु ख़ुदा ने ये क़ुर्बानियां भी बन्द नहीं कीं ताकि ज्ञात हो कि इन क़ुर्बानियों का भी मनुष्य से संबंध है। ख़ुदा ने स्वर्ग की विशेषताएं इस शैली में वर्णन की हैं कि अरब के लोगों के हृदयों को जो वस्तुएं बहुत प्रिय थीं वही वर्णन कर दी हैं ताकि इस प्रकार से उनके हृदय इस ओर प्रवृत्त हो जाएं और वास्तव में वे वस्तुएं और हैं यही वस्तुएं नहीं। परन्तु अवश्य था कि ऐसा वर्णन किया जाता ताकि हृदय झुकाए जाएं -

مَثَلُ الْجَنَّةِ الَّتِيْ وُعِدَ الْمُتَّقُوْنَ[2]

वह जो अपनी कामभावनाओं की पूर्ति में लगा रहता है वह सर्वथा अपनी जड़ उखाड़ता है और न केवल शरीर को तबाही में डालता है अपितु रूह को भी तबाह करता

---

① अलहज - 38

② मुहम्मद - 16

है परन्तु वह जो सद्मार्ग पर चलता है और कामभावनाओं का अनुसरण नहीं करता वह न केवल अपने शरीर को तबाह होने से बचाता है अपितु अपनी रूह को भी मोक्ष तक पहुंचा देता है -

قَدْ اَفْلَحَ مَنْ زَكّٰىهَا ۝ وَ قَدْ خَابَ مَنْ دَسّٰىهَا ۝ ①

एक गांव में सौ घर थे और केवल एक घर में दीपक जलता था। अतः जब लोगों को ज्ञात हुआ तो वे अपने-अपने दीपक लेकर आए और सब ने उस दीपक से अपने दीपक प्रकाशित किए। इसी प्रकार एक प्रकाश से प्रचुरता हो सकती है। इसी ओर अल्लाह तआला संकेत करता हुआ कहता है -

وَّ دَاعِيًا اِلَى اللّٰهِ بِاِذْنِهٖ وَ سِرَاجًا مُّنِيْرًا ②

मनुष्य तो अपने प्राण का भी मालिक नहीं कहां यह कि वह दौलत का मालिक हो। एक चम्मच शर्बत का आनंद नहीं पा सकता यद्यपि कि कई बार उसमें पड़ता है। शीरीनी (मिठास) हाथों के द्वारा मुंह तक पहुंचती है परन्तु हाथ शीरीनी का स्वाद नहीं पा सकते। इसी प्रकार जिस को ख़ुदा ने ज्ञानेन्द्रियां नहीं दीं वह माध्यम बन कर भी कुछ लाभ नहीं उठाता -

اَللّٰهُ اَعْلَمُ حَيْثُ يَجْعَلُ رِسَالَتَهٗ ③

صُمٌّۢ بُكْمٌ عُمْيٌ فَهُمْ لَا يَرْجِعُوْنَ ④

एक बड़ा आनन्द छोटे आनंद से निःस्पृह कर देता है। जैसा कि अल्लाह तआला का कथन है -

اَلَا بِذِكْرِ اللّٰهِ تَطْمَئِنُّ الْقُلُوْبُ ⑤

---

① अश्शम्स - 10,11

② अलअहज़ाब - 47

③ अलअन्आम - 125

④ अलबक़रह - 19

⑤ अर्रअद - 29

وَلَذِكْرُ اللّٰہِ اَکْبَرُ[1]

(1) ईमान बीज है (2) शुभ कर्म मेह है (3) मुजाहिदे (तपस्याएं) हल हैं जो शारीरिक तथा भौतिक तौर पर किए जाते हैं। वृत्ति कठिन परिश्रम करने वाला बैल है जो राजसिक वृत्ति है, शरीअत उसको चलाने के लिए डंडा है और वह अनाज जो उस से पैदा होता है वह अनश्वर जीवन है।

अस्तित्व से बाहर वह होता है जो सद्‌गुणों से रिक्त हो क्योंकि मनुष्य के सद्‌गुण ही उस का अस्तित्व है। अपने हृदय की भावनाओं को समझने वाले बहुत कम होते हैं। वे जिन वस्तुओं में अपनी समृद्धि देखते हैं वास्तव में वे समृद्धि का कारण नहीं होतीं।

जो व्यक्ति बदी के मुकाबले पर बदी नहीं करता और क्षमा करता है। वह निस्सन्देह प्रशंसनीय है परन्तु इससे अधिक वह प्रशंसनीय है जो क्षमा और प्रतिशोध का बाध्य नहीं अपितु ख़ुदा की ओर से होकर उचित समय पर काम करता है क्योंकि ख़ुदा भी प्रत्येक के यथायोग्य कार्य करता है। जो दण्ड के योग्य है उसे दण्ड देता है जो क्षमा-योग्य है उसे क्षमा प्रदान करता है -

جَزٰٓؤُا سَیِّئَۃٍ سَیِّئَۃٌ مِّثۡلُہَا ۚ فَمَنۡ عَفَا وَ اَصۡلَحَ فَاَجۡرُہٗ عَلَی اللّٰہِ[2]

संसार में दो फ़िर्क़े बहुत हैं। एक तो वह जो न्याय को पसन्द करते हैं तथा दूसरे वह जो उपकार को उपकार की दृष्टि से देखते हैं और तीसरा फ़िर्क़ा वह है कि उन पर सच्ची हमदर्दी का इतना प्रभुत्व हो जाता है कि वह न्याय और उपकार का पाबन्द नहीं रहता अपितु सच्ची हमदर्दी के मार्गदर्शन से यथासमय अमल करता है। जैसा कि मां अपने बच्चे के साथ व्यवहार करती है कि शीरीनी और स्वादिष्ट भोजन भी उसको और फिर यथोचित कड़वी औषधि भी देती है तथा दोनों परिस्थितियों में उसकी ....
मेरे वर्णन में कोई ऐसा शब्द नहीं होगा जो अंग्रेज़ी सरकार के विरुद्ध हो। हम इस सरकार

---

① अलअन्कबूत - 46

② अश्शूरा - 41

के कृतज्ञ हैं क्योंकि हम ने इस से अमन और आराम पाया है। मैं अपने दावे के बारे में इतना वर्णन करना आवश्यक समझता हूं कि मैं अपनी ओर से नहीं अपितु ख़ुदा के निर्वाचन से भेजा गया हूं ताकि मैं लोगों के भ्रमों का निवारण करूं और जटिल समस्याओं का समाधान कर दूं तथा अन्य जातियों को इस्लाम का प्रकाश दिखाऊं। स्मरण रहे कि जैसा कि हमारे विरोधी इस्लाम का एक घृणित रूप प्रदर्शित कर रहे हैं यह रूप इस्लाम का नहीं है अपितु वह एक ऐसा चमकता हुआ हीरा है जिसका प्रत्येक कोना चमक रहा है और जैसा कि एक बड़े महल में बहुत से दीपक (चिराग़) हों और कोई दीपक किसी झरोखे से दिखाई दे और कोई किसी कोने से। यही हाल इस्लाम का है कि उसका आकाशीय प्रकाश एक ही ओर से दिखाई नहीं देता अपितु हर ओर से उसके अनश्वर दीपक दिखाई देते हैं तथा उसकी शिक्षा स्वयं एक दीपक है और उसकी रूहानी शक्ति स्वयं एक दीपक है तथा उसके साथ ख़ुदा की सहायता के जो निशान हैं वह प्रत्येक निशान दीपक है। जो व्यक्ति उसकी सच्चाई को व्यक्त करने के लिए ख़ुदा की ओर से आता है वह भी एक दीपक होता है। मेरी आयु का बड़ा भाग विभिन्न जातियों की पुस्तकों के देखने में गुज़रा है, परन्तु मैं सच-सच कहता हूं कि मैंने किसी दूसरे धर्म की किसी शिक्षा को चाहे उसकी आस्थाओं का भाग और चाहे नैतिक शिक्षाओं का भाग और चाहे घर-गृहस्थी का प्रबन्ध तथा नगरीय व्यवस्था का भाग और चाहे शुभ कर्मों के विभाजन का भाग हो पवित्र क़ुर्आन के वर्णन के पार्श्ववर्ती (हम पहलू) नहीं पाया और मेरा यह कथन इसलिए नहीं कि मैं एक मुसलमान व्यक्ति हूं अपितु सच्चाई मुझे विवश करती है कि मैं यह गवाही दूं और मेरी यह गवाही कुसमय नहीं अपितु ऐसे समय में है जबकि संसार में धर्मों की कुश्ती आरंभ है। मुझे सूचना दी गई है कि इस कुश्ती में अन्ततः इस्लाम की विजय है। मैं पृथ्वी की बातें नहीं कहता, क्योंकि मैं पृथ्वी से नहीं हूं अपितु मैं वही कहता हूं जो ख़ुदा ने मेरे मुंह में डाला है। पृथ्वी के लोग विचार करते होंगे कि कदाचित् अन्ततः ईसाई धर्म विश्व में फैल जाए या बुद्ध धर्म समस्त विश्व पर

छा जाए, परन्तु वे इस विचार में ग़लती पर हैं। स्मरण रहे कि पृथ्वी पर कोई बात प्रकट नहीं होती जब तक वह बात आकाश पर निर्णय न पाए। अतः आकाश का ख़ुदा मुझे बताता है कि अन्ततः इस्लाम धर्म हृदयों पर विजय प्राप्त करेगा। इस धार्मिक युद्ध में मुझे आदेश है कि मैं हुक्म के अभिलाषियों को डराऊं। मेरा उदाहरण उस व्यक्ति का है कि जो एक डाकुओं के ख़तरनाक गिरोह की सूचना देता है जो एक गांव की असावधानी की स्थिति में उस पर डाका मारना चाहता है। अतः जो व्यक्ति उसकी सुनता है वह अपना माल डाकुओं के हस्तक्षेप से बचा लेता है और जो नहीं सुनता वह लूट लिया जाता है। हमारे समय में दो प्रकार के डाकू हैं। कुछ तो बाहर के मार्ग से आते हैं और कुछ अन्दर के मार्ग से, तथा मारा वही जाता है जो अपने माल को सुरक्षित स्थान पर नहीं रखता। इस युग में ईमान रूपी माल को बचाने के लिए सुरक्षित स्थान यह है कि इस्लाम की ख़ूबियों का ज्ञान हो, इस्लाम की रूहानी शक्ति का ज्ञान हो, इस्लाम के जीवित चमत्कारों का ज्ञान हो तथा उस व्यक्ति का ज्ञान हो जो इस्लामी भेड़ों के लिए बतौर चरवाहा नियुक्त किया जाए, क्योंकि पुराना भेड़िया अब तक जीवित है, वह मरा नहीं है। वह जिस भेड़ को उसके चरवाहे से दूर देखेगा वह उसे अवश्य ले जाएगा।

हे ख़ुदा के बन्दो ! आप लोग जानते हैं कि जब सूखा पड़ जाता है और एक लम्बे समय तक मेह नहीं बरसता तो उसका अन्तिम परिणाम यह होता है कि कुंए भी सूखने लग जाते हैं। अतः जिस प्रकार भौतिक तौर पर आकाशीय पानी भी पृथ्वी के पानियों में जोश पैदा करता है उसी प्रकार रूहानी तौर पर जो आकाशीय पानी है (अर्थात् **ख़ुदा की वह्यी**) वही अधम अक़्लों को ताज़गी देता है। अतः यह युग भी इस **रूहानी पानी** का मुहताज था।

मैं अपने **दावे** के संबंध में इतना वर्णन कर देना आवश्यक समझता हूं कि मैं **बिल्कुल आवश्यकता** के समय ख़ुदा की ओर से भेजा गया हूं जब कि इस युग में बहुतों ने यहूदियों का रंग ग्रहण किया और न केवल **संयम और पवित्रता** का परित्याग

किया अपितु उन यहूदियों के समान जो हज़रत ईसा के समय में थे सच्चाई के शत्रु हो गए। तब इसके मुकाबले में ख़ुदा ने मेरा नाम **मसीह** रख दिया। न केवल यह है कि मैं इस युग के लोगों को अपनी ओर बुलाता हूं अपितु स्वयं युग ने **मुझे बुलाया है**।